प्रकासक:

थारू आयोग, नेपाल

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

खिस्सा (बटकोही)

प्रकासक:

थारू आयोग, नेपाल

अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

खिस्सा (बटकोही)

२०८०

प्रकाशकः
थारू आयोग, नेपाल
अनामनगर, काठमाडौं, नेपाल

प्रकासक : थारु आयोग, काठमाण्डौ, नेपाल

संस्करन : पहेनकर (२०८०)

सर्वाधिकार : प्रकासकमे

संख्या :

किताब पाबैवला ठाम : थारु आयोग

का.म. न.पा.वडा नं.-२९, अनामनगर

फोन नं : ०१-५७०५११८, ५७०५११९

टोल फ्रि नम्बर : १६६०-०१-५७-०००

इमेल : info@tharucommission.gov.np

वेबसाइट : http://www.tharucommission.gov.np

सुभकामना सन्देस

तराईके धर्तिपुत्रके रुपम परिचित थारु समुदाय भित्तर परम्परागत रुपम पुस्ता हस्तान्तरन हुइटी जिबित रहटिरलक बहुत धेर लोक साहित्य बा । तर सामाजिक जनजिवनम परिवर्तन आइलसँग यी साहित्यहँ बचैटी रहना धेर मुस्किल फे हो स्याकल बा । यहीं बचाइकलाग सामाजिक जिवन व्यवहारम प्रयोग कर्ना, पठन पाठन व ब्यवसायिक प्रयोगम लन्नाके साथ-साथ आधुनिक प्राविधिके प्रयोग कैक श्रब्य-दृस्य रुपम प्रकासन कैक सुरछित रख्ना जरुरी बा । यिह बात महसुस कैक थारु आयोग से थारू लोक साहित्य संकलनके काम अन्तर्गत दोस्रा प्रकासनके रुपम थारु लोक कथा खिस्सा (बत्कोही) प्रकासन हुइटिरलकम साहित्य प्रेमी आम जनसमुदायम खुसी व गर्वके बात व्यक्त्त करचाहटुँ ।

थारु समाज कृसी पेसाम निर्भर रहटिअइलक समाज हो । उहमार धेरसे थारू लोक साहित्य फे कृसी कामके सेरोफेरोम काम कर्टी मनोरन्जन फे कर्ना व कामम सहजता फे लान देनाके रुपम प्रयोग हुइटिअइलक देखपरठ । थारु खिस्सा (बत्कोही) म अस्तहँ मनोरन्जन व ग्यान देना मेरके छोट-छोट कथा कहानीके संकलन रहल बा । थारु समाजम महिना दिनसम गित गइटी बटोइना नम्मा-नम्मा बत्कोही फे रहल बा । लोक कथा (बत्कोही) केल लिहबेर फे एक्क प्रयासम संकलन व प्रकासन कर सेक्ना सम्भव नै हो । आयोग लगायत साहित्य प्रेमीहुँकनके व्यक्तिगत रुपम निरन्तरके प्रयासले केल यी कामम पुर्नता आइसेकी जौन काम हुइटी फे आइल बा ।

अन्तम यी महत्वपुर्न प्रकासनके कामम विभिन्न किसिमले सहयोग पुगुइया संकलक तथा लेखक ज्यू हुँक्र, पदाधिकारी एवम् कर्मचारीहुँकनके साथ-साथ थारू खिस्सा (बत्कोही)हँ प्रकासन योग्य बनुइया सम्पादक ज्यू हुँकन आयोगके तरफसे हार्दिक धन्यवाद व्यक्त कर चाहटुँ ।

बिष्णु प्रसाद चौधरी
(अध्यक्ष)
थारु आयोग, अनामनगर काठमाडौं ।

सम्पादकिय

नेपाल विविधतासे भोरल मुलुक छेकी । येते बहुते जातजातिसवके बसोवास रहल छै । थारु जात नेपालमे प्राचिन कालसे बस्थै आविरहल आदिवासी भुमिपुत्र छेकी । पुरु मेचीसे ल्याके पछिम महाकालीतक आर भारतके बिहार हे उतराप्रदेसमे थारुसव छिरियाके रहल छै । थारुसवके कला एवं संस्कृती एकदमे समृद्ध आर समुन्नत मानल जेछै । जिवनके उवहड-खावहड सुख-दुखके पल, हँस्नी आर कन्नीसे लोकसाहित्यके भाव बस्ता लदीवग बही रहल छै ।

लोक साहित्यमे रहल बहुत किसिमके विद्यासवके ग्रामिन छेत्रमे बसोवास करेवला लोकमानसले जिवन्त रहल छै । थारु लोक साहित्य आपनेमे एकटा महासागर छेकै । उना साहित्यके संरक्छन करे लगिन मौखिक परम्परासे ओरहै दिनसे चल्थै आविरहल छै । समान्य बोलचालके भसामे दन्त्य कथा या लोक कथाके थारुमे ‘कथा’ या ‘कहानी’ या ‘खिस्सा’ या ‘बटकोही’ कहेके चलन रहल छै । लोककथा युगौं युगसे परम्परागत रुपमे एक पिढीसे दोसर पिढीमे मुखफुकिया रुपमे कहेके चलन चल्थै आवी रहल छै । थारुसव खासकरिके ओरहै दिनसे कृसी पेसा करथै आविरहल छै । खेतके काम ओर्याके घर येलाकेवाद थकित अवस्थामे लोक कथा सुनेके या सुनावेकेवाद आपन थकाइ मेटावेके प्रयत्न करछै ।

खिस्सामे मनोरंजन साधनके सङेसङे समाजिक, राजनितिक अवस्था या सभ्यता सोहो जोडल रहछै । खिस्सासे ग्यान आर्जन करेके अलावा येकरमे रहल पात्रसवसे प्रेरनाके स्रोत सोहो हासिल हेछे । कथाके बहुत विद्यामे बाँटल जेछै । वाल कथाके आपने महत्व छै जकरसे बच्चासवके वृतिविकासमे सहयोग पुगछै । सिक्छाप्रद कथासे ग्यान हासिल हेछै जन त बिरगाथा बोकल खिस्सासे आत्मबल या सहानुभुती सोहो भेटछै । समाजिक खिस्सासे समाजमे घुलमिल करे लगिन सिखल जेछै । प्रेम कथासे मयाप्रेम बढछै । कथासे परिस्थितिके सामना करेके मद्दत सोहो मिलछै आर भक्तिभावके भावना जागृत हेछै । कथा समय आर परिवेसमे भर परछै । लोक कथामे तत्कालिन समाजके जिवन्तता रहछै ।

थारु समाजमे प्राय: करिके राती सुते बखत कथा सुने या सुनावेके प्रचलन रहल छै। दिन कथा सुनलाकेवाद करछुथिया लागछै कहिके जनविस्वास रहल छै। कथा कहेसे पहिना सुनेवलासे कथावाचकके बोलीमे हँ मे हँ मिलावेके सर्तमे कथाके सुरुवात करल जेछै। जेरंङ-

'खिस्सा रे खिस्नी, खिस्सा गेले सोय,

जव सुनेवला हाँ मे हाँ भरे तव खिस्सा होय'।

खिस्सा जव खतम हेछी तकरवाद फेनसे दोहरछी -

"खिस्सा छे झुठा,मगर बातसे सच्चा

कहेवलाझुठा, सुनेवला सच्चा।

आँखी देख्ल कहछौन, कानसे सुन्ल कहछौन,

कहेवलाके मुडापर सोनाके छत्तर

सुनेवलाके मुडापर असी मनके पथल।

खिस्सा खतम पैसा हजम,

खिस्सा गेलो बनमे, बुझीले आपन मनमे"।

थारु समुदाय लोककथामे धनिक हेलाके बावजुद भी सङ्कलन हे प्रकासनमे खासे काम भेल नै देखा येछी। ओखरुमे लोक कथा सङ्कलनके काम कठिन हावेके कारनसे थारु समुदायके ध्यान खासे पुगल नै देखछिन। ओहोमे अखनकर जमानामे सिनेमा,मोवाइल,टेलिफोन,कम्प्युटर आर टि.भी.लगायत सन्चार माध्यमके विकाससङे थरवेटीमे प्रचलित रहल यि खलक कथासवके सुने आर सुनावेके चलन भैठ हेथै ज्या रहल छी जकर चलते लोक कथासव रसेरसे हरावेके अवस्थामे पुगी गेल छै।

येह्याना बातके मध्य नजर राख्थै थारु आयोगसे एकटा निस्चित सर्त राखिके थारु मातृभसाके अप्रकासित लोक कथासव संकलन समबन्धी प्रस्ताव अह्वानके सुचना निकाल्काकेवाद विभिन्न जिल्लासे २० झनसे कथा संकलन

करिके आयोगमे पेस करल्की । थारु भसा बोलेमे एक रुपता नै हावेके कारनसे माननीय सदस्य भोलाराम चौधरीके संयोजकमे सम्बन्धित छेत्रके भसा बुझेवला तिन सदस्य समिती बनल गेलै । महज थारु भसाके मानक तयारी नै हावेके कारनसे आर निखाइ सैलीमे एकरुपता आने लगिन “मध्य-पूर्विया थारु नेपाली शब्दकोष” मे रहल लेखन सैली आर व्याकरनके अधार मानिके सम्पादन करल गेल छै ।

हमरा विस्वास छी यिटा खिस्सा/बटकोहीके मोट्री अखनकर युवापिढीसवके आपन भसाप्रती मोहित करे लगिन त सफल हेवे करतै । येकर सङसङे पाठक वर्ग,सोध अनुसन्धानकर्ता लगायत मानक भसा बनावे लगिन स्रोत समाग्रीके रुपमे सहयोग करतै । खिस्सा प्रकासनके क्रममे सहयोग करेवला आयोगके पदाधिकारीसव, स्रोत व्यक्ति, संकलनकर्ता, सम्पादक टोली, आयोगके कर्मचारी लगायत प्रत्यछ-अप्रत्छ रुपमे सहयोग करेवला सव्हैके हृदयसे धन्यवाद देथै आवेवला दिनमे भरपुर सहयोगके आस करछिन ।

संयोजक

माननीय भोलाराम चौधरी

सदस्य

थारु आयोग

सम्पादक मन्डल

बुद्धसेन चौधरी (सप्तरी)

हरिमाया थनेत (नवलपरासी)

लक्की चौधरी (कैलाली)

बिसय सुची

क्र.सं.	कोन खिसा	संकलनकर्ता के कते	पेज नं.
१.	जुरसितल	ई. लक्ष्मी नारायण चौधरी	१
२.	बचन	सन्तोषी कुमारी चौधरी	८
३.	तकदिर	" "	१२
४.	निसाद	" "	१४
५.	पकठी बुइध्	" "	१७
६.	बगैरिया	" "	२४
७.	बाँनर बाननी	" "	२७
८.	बेल कुमारी रानी	" "	३२
९.	बिध बिधना	" "	३६
१०.	बियौहबी बनरनी	" "	३९
११.	सतभैंया	" "	४८
१२.	नन्नु धामी	नारायण चौधरी	५४
१३.	करमके फल	राम सागर चौधरी	५६
१४.	पैसाके मुख	" "	५८
१५.	सोंच	" "	६०
१६.	धौल धमके त भौर चमके	नन्द लाल चौधरी	६२
१७.	टिप्पा नै नेङरी सुर्रा	" "	६५
१८.	बतक (राजहाँस)	" "	६७
१९.	देवनाथ, भवनाथ	" "	७०
२०.	टिकु दुरा	निर्मला देवी थारु	७६
२१.	दुखनी सुखनी	" "	८०

२२.	चिचु परिहत	निर्मला देवी थारु	८२
२३.	दुहबी सुहबी	” ”	८६
२४.	नढिया, खढिया आ बटेर	” ”	८८
२५.	बदसाहीके धन	” ”	९१
२६.	बाघ आ काँखोर	” ”	९४
२७.	बुद्ध या बाबहन	” ”	९६
२८.	बिरिजभान	” ”	१००
२९.	राजाके बेटी	” ”	१०५
३०.	लोभी बाबहन या नेक नढिया	” ”	१०७
३१.	हाडके चौर	” ”	१०९
३२.	गलत निसाफ	बुद्धसेन चौधरी	११७
३३.	जे जानेसे पहचाने	” ”	१२०
३४.	दरपियाके दाउ	” ”	१२२
३५.	निम आ तेतैर	” ”	१२५
३६.	नोकरसे मालिक	” ”	१२८
३७.	तिरहुत माइझ	” ”	१३०
३८.	बरह	” ”	१३४
३९.	बोलीमे बल	” ”	१३६
४०.	भरमके बिख	” ”	१३८
४१.	भैगना देवता समान	” ”	१४०
४२.	रज बुइधमे चोर बुइध भारी	” ”	१४३
४३.	दलसिंह धामी	” ”	१४६
४४.	फनकलाल आफ्नुनुलाल	” ”	१५०

४५.	सिरिन हसे चिडनी मितिन	हरिमाया थनेत थारु	१५७
४६.	घरहुवा	” ”	१५९
४७.	मनसे	” ”	१६१
४८.	सियार हसे गोह	” ”	१६३
४९.	गोरमी	” ”	१६५
५०.	रोटिक गाछ	” ”	१६८
५१.	ठगवा	” ”	१७१
५२.	रबुतनी चरैया	” ”	१७४
५३.	बनबोका	” ”	१७६
५४.	बेलाबत रानी	” ”	१७८
५५.	सताल सिंह	” ”	१९०
५६.	सदिया और बदिया	दशरथ प्रसाद थारु	१९८
५७.	मेधिया रानी	बम बहादुर थारु	२०१
५८.	सँपराजा	” ”	२०३
५९.	चट्टुर नम्हाँ	सविताश्री चौधरी	२०८
६०.	लेलिया भैया और सज्जन डाडु	” ”	२१०
६१.	पुछ उँखार	सुलोचना चौधरी	२१२
६२.	ढेल मराइ	बौखा डंगौरा	२१६
६३.	सिकरिया	दुर्जन चौधरी	२२०
६४.	रुखवक बैस और सेमरा	” ”	२२४
६५.	बुड्ढी	” ”	२२७
६६.	दिन औ जोन्ह्या	सिताराम चौधरी	२३२
६७.	आँरक गिदरैसे बदला	” ”	२३८
६८.	सोलरा औ बढैया	” ”	२४२

६९.	चमौटा राजा	सिताराम चौधरी	२६०
७०.	बघवक भोज	” ”	२७५
७१.	राजा और बजिर	इन्द्र बहादुर चौधरी	२८०
७२.	राजा नल	” ”	२८८
७३.	करमुवा और सपनो	” ”	२९५
७४.	जिमा लडैती	” ”	३०४
७५.	सदा सुर्का और सदाबिर्छ	” ”	३१४
७६.	दिलबधना	” ”	३२१
७७.	रुवाकी घोडा	” ”	३२४
७८.	करण और लक्ष्मी	” ”	३२८
७९.	राजा और साथ बेटी	” ”	३३०
८०.	दानी राजा	बासमती राना	३३३
८१.	राजा हरी भर्थरी	” ”	३४३
८२.	रानी सारङगा	सागर कुश्मी	३४७
८३.	बुर्हिया ओ गेक्टा	” ”	३५६
८४.	बुर्हिया ओ बुर्हवा	” ”	३६०
८५.	गिडरा	” ”	३६३
८६.	गिडरा ओ गोहुवा	” ”	३६९
८७.	कुटनी बुर्हिया	” ”	३७१
८८.	सरजुल चिरैया	” ”	३७२
८९.	चतुर बर्का भैया	हिम लाल चौधरी	३७६
९०.	बाह्रो बर्दिवा	डा. कृष्णराज सर्वहारी	३७९
९१.	हर जोट्ना मछरिया	” ”	३८१
९२.	डेढ बिट्वा	” ”	३८५
९३.	गुलप्पन रज्वा	” ”	३८९
९४.	हग्गु कहाँ ?	” ”	३९७
९५.	फाडिल प्रयास	” ”	४०४
९६.	दंगिसरन रज्वा	” ”	४०६

❖

जुरसितल

ई. लक्ष्मीनारायन चौधरी
हडिया–५, उदयपुर, नेपाल
Email: lnhudar2040@gmail.com
मोबाईल: 9849467000

बहुत पहिने प्राचिन कालेके बात चियै । एकटा देसमे एकटा बहौत बुधियार राजकुमार छेलै । उ बडा पराक्रमी सेहो रहै । राजकुमार बहौत किसिमके भसा बुझहै छेलै । लोकके भसाके साथेसाथ उ जानवर या चिरै चुरगुनीसबके भसा सेहो बुझहै छेलै । कहल जाइछै-वोकर विद्वताके चर्चा परिचर्चा सगरे त छेलैके, स्वर्गमे सेहो है छेलै । यै बातसे स्वर्गमे रहैबला एकटा कपिल नामक देवताके डाह उठलै । मनुसो भ्याके अतहेक नाम चर्चा । कपिल नामक देवता स्वर्गसे पृथ्वीमे येलै या राजकुमारके भेट करल्कै । कहल्कै तोहर नाम जने तने फैललछौ । तोहे बहौत बिद्वानो चिही । तोरा हम कुछ प्रस्नसब पुछबो तेकर, तोरा जवाफ दैले पर्तो । राजकुमार कहल्कै हेतै हम आपन जाने जवाफ दैके प्रयास करबै । कपिल देवता कहल्कै । ओनङ नै हेतौ तोंहे जवाफ दैले सकबिही त सर्त लगा नै त ठिके छै । राजकुमार बुझहल्कै कथी पुछतै सर्त मानैले मन्जुर भ्या गेलै । सर्त मुताबिक अगर राजकुमार सात दिनके भितरमे कपिल देवताके पुछलहा तिनटा प्रस्नसबके जवाफ नैदेबे सकतै त वोकर (राजकुमारके) गर्दन छेमान भ्या जेतै अर्थात काटल जेतै । महज यदि राजकुमार तिनुटा प्रस्नसबके सही जबाब दैले सफल भ्या जेतै त बदलामे कपिल देवता आपने सिर काइटके राजकुमारके दैतै । दुनु पक्षसे सर्त मानैले मन्जुर भेलै ।

तेकरबाद कपिल देवतासे तिनटा भैरगर प्रस्नसब राजकुमारके सामनेमे राखल गेलै । कपिल देवता आपन रस्ता नापलक ।

दोसर लोक कथा जखाँ राजकुमार वेहेन भारी प्रस्नसबके जवाब दैमे तत्काल नैसकल्कै । सात दिनके महौलत छेलै । राजकुमार बर चिन्तित भ्याके सोंचे लाग्लै । कतबहौक चारुभरा दिमाग या नजर खिर्याके देखै तबो ने ओकरा उ प्रस्नसबके जवाफके कन्सो भेटै । एक दिन बितलै, दुइ दिन बितलै, तेसरो दिन बितलै । तबोने राजकुमारके ओइ प्रस्नके उत्तरके सुराक भेटलै । राजकुमार सोंचे लागलै हमर केहेन मान या सान छै । अगर हम यै प्रस्न सबके जवाफ दैले नै सकबै त हम हाइर जेबै या हमर मुरी सेहो कटबाबे पर्तै । पराजित भ्याके, बेजत हैत मुरी कटेनाइसे बन्हिंया पैहने मैर जेनाइ बेस । ता तैक चारिम दिन बित गेल रहै । अतहेक सोंचैत उ आत्महत्या करैले बोनके रस्ता नापे लाग्लै । जाइत जाइत राजकुमार एकटा विसाल नम्हर, ढांङ्ग गाछके निचामे ठाढ हैले पुगलै । उ सिमरके गाछ रहै । वै गाछके उपरका ठाइरमे एकटा चिल्हौरके (चिरै) खोंता (गुँड) रहै । संजोगके बात चियै, आत्महत्या करैले निकलल राजकुमार गाछके निचामे जिराइले बैठलै । ओकर मनमे बहौत किसिमके बातसब आबै या जाइ । खोंतामे चिल्हौरके दुइटा बच्चा रहै । चुजा बच्चा चिल्हौरसब “भुख लागल, भुख लागल कैहके अरहाके लेल जोर सोरसे हल्ला करैत रहै । महताइर चिल्हौरनी आपन चुजा बच्चा चिल्हौरके फुसियाबैत आस भरोस दैत कहल्कै, तोंसब नै घबरावै, नै औगतावै, चोटै तोरौरके मौस खाइले पाबबिही । तोरौरके निचा ठाढ भेल नौजवान राजकुमारके मौस ख्याके कृत्यकृत्य भ्या जेबही । तोरोरके नै जानै चिही, निचा बैठल नौजवान तिनटा बडभिड (कठिन) पहेलीसबके जबाब दैले नैसक्तै या आत्महत्या करैले बाध्य हेतै । अने राजकुमार त चिरै चुरकुनीके भसा सेहो बुझहै छेलै । उ चिल्हौर आ ओकर बच्चाके बिच हैबला बातके बडी ध्यानसे सुने लाग्लै । वै बातचितके सिलसिलामे माता चिल्हौरनी चुज्जा चिलके देवता या राजकुमारके बिचमे भेलहा सर्तके कथा सुनैल्कै या चुज्जासबके प्रसनके जबाबमे माता चिल्हौरनी कपिल देवतासे पुछलहा तिनुटा कठिन प्रसन सबके (पहेली सबके) उत्तर सेहो कैह देल्कै। गाछके तरमे (निचा) बैठलहा नौजवान राजकुमार तिनुटा कठिन प्रस्नसबके सही उत्तर जाइन गेलै। मनमने खौब प्रसन्न, खुस भेलै या कुछो नै बोइलके चुपचाप वैठनासे घर दिसर टैर देल्कै । तोकल दिन या समय मे कपिल देवता फेरसे राजकुमार लग ऐलै। सभा लागल रहै। राजकुमार कपिल देवतासे पुछलहा तिनुटा प्रस्नसबके सही उत्तर दैमे सफल भेलै ।

कथानुसार देवता बाजीमे (सर्त) हाइर गेलै । सर्तके अनुसार देवता आपन सिर (मुरी) काइटके राजकुमारके देल्कै । मगर कपिल देवताके सिर (मुरी) अचम्भके छेलै। ओकरा राजकुमार राखैले नै सकल्कै। काटल मुरीके पृथ्वीमे राख्ते असिमित आइगके धिधरा हेबे लाग्लै । समुन्दरमे राख्तै त समुन्दर सुइख जेतै, पहाडमे राख्तै त पहाड डैहके (राख) छौरमे परिनत हैवला भेलै। यि बात स्वर्ग तैक पहौंच

गेलै । अतएव वै समस्या सबके समाधान करैले कपिल देवताके सातटा बेटीसब पृथ्वी लोकमे येलै । उ सब एकटा उपाय निकालल्कै । सातो बहैन पालापाली क्याके बापके मुरीके बोकबै कैहके सल्लाह करल्कै । एकटा मेहके रुपमे रहल मेरु पर्वत के चारुभर घुमे लागलै । जेठकी बहैन बोइकके सैबसे पैहने सुरु करल्कै । उ सब बछर दिनके पालो लगेल्कै । वहै दिनसे लबका बछरके सुरु भेलै से जनविस्वास छै । दोसर साल वहै दिन दोसर बहैन एक दोसरके पालो देछै । जे अखैनका बैसाख १ गते चियै । यहै रितसे यि क्रम दोहराबे लागलै । मानल जाइछै, यि क्रम अखैनतैक चैल रहलछै ।

थारु भाषामे जुरल वा जुरके अर्थ हैछै-भाग्य या जुरसितलके मतलब हैछै भाग्यके सितल, सान्त बनेनाइ या निक राखनाइ । वैहनङ्ग जुर एकटा थारु सबद चियै जकर अर्थ हैछै ठन्ढा-सितल । स्वभाविकरुपमे सबसे बेसी ठंन्ढा या सितलताके प्रभाव पाइनेसे करल ज्या सकैछै । जुरसितलके अर्थ ठंन्ढा, सितल, जुर या चिसो कहैवला सबदके प्र्यायीवाची सबद जुरल वा जुरसे सोझहे उद्दरन करल ग्यालछै । येकरा सिरुवा सेहो कहैछै । सुरुके पावेन या सिर (मुरी) मे पाइन ढाइरके मनाबैछै तहौसे यि सिरुवा भेलछै । वहै कपिल देवताके मुरीके सितल आ सान्त करैले सिरुवा/जुरसितलमे पाइन मुरमे ढारल जाइछै सेहो विस्वास क्या सकैचियै । वास्तवमे जुरसितल, सिरुवा कहनाइके अर्थ सुरुजके प्रवेस नछत्र् मन्डलके मेस रासीके सिमा छेत्रमे हेनाइ चियै । तुलनात्मक रुपमे देखल जाइ त यि जुरसितल/ सिरुवा चिन देसके चिङमिङ, भारतके होली, आसामके बिहु या क्रिसिचयन पर्व इस्टर नहाइत वसन्त रितुके आगमन सँङे सँङ नयाँ बछरके उल्लासपुर्न आगमन चियै ।

यि पंक्तिकार थाइलैन्डमे ९ बरस या श्रीलंकामे ४ बरस कार्य कैरके स्वदेस नेपाल लौटलछै । यै दौरानमे पंक्तिकारके नेपालके थारु समुदायमे प्रचलित जुरसितल पावैनके इ लोककथाके थाइलैन्डमे प्रचलित सोंक्रान कथा सँगे तुलना करैके मौका मिललै जे येहेन रहल छेलै । साँचे कहल जाय त नेपालके थारु समुदायमे प्रचलित जुरसितल पावैनके इ लोककथा या थाइलैन्डमे प्रचलित सोंक्रानके कथाके सार निनानमे प्रतिसत हुबहु मिलैछै । फरक या भिन्न्ता कनहिक यै बमौजिम छै । थाइलैन्डके प्राध्यापक तथा इतिहासकार खुन अनुमोन राजधोनद्वारा लिखित -"थाइ संस्कृति संग्रह–५, (१९५०)" एवं प्रचलित सोंक्रानके कथा अनुसार देवताके सिर (मुरी) स्वर्गके कोनो गुफामे राखैछै या सोंक्रानके दिनमे कपिल देवताके सात बैहिनी बेटीसबमेसे एकटा स्वर्गके असंख्य अन्य देवी देवता सबसँगे वै मुरीके बोइकके जुलुसमे सुरुज लखा मेरु पर्वतके परिक्रमा करैत घुमैछै । वै जुलुस परिक्रमाके बादमे देवतागन भोजमे सम्मलित हैछै या भोजके बाद सिरके

(मुरीके) फेरसे गुफाके भितरमे राखल दैछै । ऐगला बरिस वहै सोंक्रानके दिनमे फेनो सिर (मुरीके) बाहर लाबैछै या यैहनङ्ग विधी तरिकासे क्रम चलैत जाइछै, दोहरावैछै । थाइ कथामे कपिल देवताके नाम कबिल महां फ्राम उल्लेख करल ग्यालछै ।

वैहनङ्ग बर्मेली (मयन्मार) कथा सेहो हुबहु मिलैछै । म्यान्मारके थिनज्कयान कथा अनुसार बाजीमे सिर (मुरी) कटाइवला देवताके नाम आसी ब्रह्मा लिखलछै । बर्मेली कथा अनुसार सात बैहैन सबमेसे एक बैहैन सदैव सिर (मुरी) बोइकके चलैत रहैछै या वहै नयाँ बरिस (सोंक्रानके) दिनमे पालो तोकल बैहैन आइबके बाबुके सिर (मुरी) दोसर एक बरिसके लेल बोकैछै या यैहनङ्ग क्रम दोहरावैछै । मोरातुवा विस्वविद्यालय, मोरातुवा (२००९) श्रीलंकाके प्राध्यापक डा. निमाल डिस्लिभाके अनुसार श्रीलंकामे ऐहनङ्ग कथा उपलब्ध छै । यि पावैन श्रीलंका देसभैरमे ५-६ दिनतक धुमधाम या हर्सोल्लासके साथ पाइन छिटके मनावैके चलनछै ।

प्राध्यापक तथा इतिहांसकार फइया अनुमान राजधोन आपन किताब "थाइलैन्ड संस्कृति संग्रह–५, (१९५०)" मे लिखनेछै– "प्रत्येक बरिस इ पावैनके सुरुवातमे थाइ ज्योतिस सास्त्री नछत्र या ग्रहसबके परम्परागतरुपमे नयाँ बरसके सुभ घडी मुहुर्तके गनना कैरके थाइ राजा लग पेस करैछै । थाइ दरबारसे आबद्ध चित्रकार गनना करल सुभ घडी मुहुर्त बमौजिम सोंक्रान देवी या स्वर्गके देवताके सिर भेलहा जुलुस या परिक्रमाके चित्र बनावैछै तथा दरबारके अगल बगल या सार्वजनिक स्थलसबमे प्रदर्सित करैके चलन अखैनियो विद्यमाने छै।" वेह्या कपिल देबताके मुरीके ठन्ढा करैले पाइन मुरीमे ढारैछै । से अखनेतैक चलैत येलछै ।

उपर बर्नित कथाके तुलना कैरके, दाँइजके हमसब सोझहे इ निचोडमे पुइग सकै चियै कि नेपालमे प्रचलित जुरसितलके खिसा, मयन्मारमे थिनग्यान खिस्सा, लाओसके पिमाइ लाउ खिस्सा, कम्बोडियाके चौल चाँम थ्यें खिस्सा या थाइलैन्डके सोंक्रानके कथा सब एक आपसमे पुरापुरी मिलैछै, समान छै, कोनो भिन्नता नैछै एकेछै । भोगौलिक, भासिक या सामाजिक दुरी रैहतो सैब देसमे इ पावैन प्रत्येक बरिस एके समय या एके दिनमे परैछै, एके रंगके लोककथा या एके रंग पाइन छिटके मनाइके तरिका समेटनेछै, से देखल जाइछै । येहेन विस्लेसनसे हम सब यि निस्कर्समे पुइग सकै चियै कि जुरसितल, थिनग्यान, पिमाइ लाउ, आलुथ अवरुदु या सोंक्रान वास्तवमे एकेटा पावैन चियै । ठाम अनुसार नामके मातरे भिन्नता छै ।

एकर बाहेक एहो भि निचोड निकालल ज्या सकैछै कि यि कथा और कुछौ नैचियै अपितु सौर मंडलके बास्तबिकता चियै या कपिल, कबिल महां फा्म वा आसी ब्रह्माके सिर दोसर कुछो नै भ्याके स्वयं सुरुज चियै तथा सात बैहिनी बेटीसब कोइयो नै भ्याके सप्ताहके सात दिनसब चियै । सांच्चै कहल जाइ त वहै समयसे प्राचिनकालके लोकसब सौरमंडलके गहनतम अध्ययन करैले सुरु कैर देने रहै या सायद वहै समयसे समय या भाग्यके गनना करैले ज्योतिस सास्त्रके सुरु भेल रहै ।

उपर उल्लेखित दछिन या दछिन पुरुब एसियाली देससब या नेपालके थारु समुदायमे यि पावैन कनङ्ग मनायल जाइछै तकर वर्नन करैके पहिने उ तिनटा पहेलीसब, प्रस्नसब कथि रहै या वकर सही उत्तर कथी छेलै से जाननाइ जरुरी रहलै । तिनटा कठिनतम पहेलीसब येहेन प्रकार छेलै । निम्न समयमे मनुस्य के भाग्य (रासी) कते रहैछै, कते बास करै छै ?(१) अनगुतमे (प्रभातकालमे) (२) दोपहरमे (मध्यान्हमे) या (३) राइतमे । माता चिल्हौरनी चुज्जा चिलके कपिल देवताद्वारा राजकुमारके पुछलहा उ तिनटा कठिन प्रसनसबके उत्तर निम्न अनुसार देने रहै ।

"मनुष्यस्य भाग्यम् एकः गतिसीलः तन्तुरस्ति । समयानुसारेनेषः चल्यमानः भवति तथा विविध समयेषु एषः भिन्नभिन्नस्थाने अवस्थितो भवति । प्रातःकाले अयं मनुष्यस्य ललाटे, मध्यान्हे सरीरे, रात्रौ चैषः पादौ स्थानान्तरितो भवति । तस्मात् प्रातःकाले मुखप्रक्षालनम्, मध्यान्हे सरीरप्रक्षालनम् व रात्रौ च पादप्रक्षालनम् कृत्वा सयनेन भाग्यं प्रक्षाल्यते सुचते वा इति मान्यतायाः भाग्यं फलतीति जनविसवासः अपि ।"

थारु भसामे मनुसके भाग एकटा गतिसिल तन्तु चियै । समय अनुसार इ सदैव चलायमान रहैछै या विभिन्न समयमे इ अलग अलग स्थानमे अवस्थित हैले पुगैछै । प्रातःकालमे इ मनुसके ललाटमे (मुँह/निधार), मध्यान्हकालमे सरिर (देह) मे, रात्रिकालमे गोड (टाँङ) मे अवस्थित हैले जाइछै । मनुस्यके प्रातःकालमे पाइनसे मुह धवाइनाइ, मध्यान्हकालमे सरिर धवाइनाइ या रात्रिकालमे टाँङ धव्याके सुतैके कारन भाग्यके स्वच्छ, सफा तथा जतन करैके बात बुझहल जाइछै । एहनङ्ग करलासे भाग्य फलित हैछै, चम्कैछै से जनविसवास छै ।

जुरसितल पावैनके एक दिन पैहने थारु समदायके लोकसब आपन आपन घर आँगना, चौक, इनार, पाटी पौवा, मठ मन्दिरके सफा सुग्घर करैछै, फोहोर-कसिंगर डाहैछै या फेंक दैछै । वकर बाहेक आवैबला नयाँ बरिस अर्थात जुरसितल पावैनके दिनमे खाइले विभिन्न किसिमके सवदगर या मिठगर मेवा

मिठाइके परिकारसब तैयार करैछै । ऐहनँ यैगला दिन (एक दिन पैहने) तैयार करलहा सबदगर खाना दोसर एक सालके लेल खाइले पुग्तै या अन्नके परिपुर्नता रहतै से जनविसवास कायम छै । यै पावैनके महत्व यहै सोंच या जनविसवाससे प्रस्ट हैछै ।

यै पावैनके दिनमे थारु समुदायके लोकसब एक दोसरके उपर पाइन छिटके आसिर्वाद लैके या दैके काम करैछै । उमेरमे जेठ (नम्हर) लोकसब आपनसे छोट सबके सिरमे (मुरीमे) पाइन छिटके आसिर्वाद दैछै त कम उमेरके लोकसब आपनसे जेठ लोकसबके गोडमे (टाँङमे) पाइन राइखके ढोग कैरके आसिर्वाद लैके काम करैछै । पाइन छिटके, यै समयमे उस्नताके मातरे कम करैके प्रयास नै करल जाइछै, अपितु आसिर्वाद लैके या दैके काम बुझल जाइछै । येहेन काम करलासे आवैवला लबका बरिस उल्लासमय, सितल, सफल या फलदायी हेतै से विसवास करल जाइछै ।

थाइलैन्डमे यै दिन प्रातःकालसे बाल, युवा र बृद्धसब लबका लबका वस्त्र पिन्हैछै, आपन-आपन गाम वा छेत्रमे अवस्थित बाट मन्दिर, पाटी पौवा तथा बिहारके सफा करैछै । भिछुसबके निमन सबदगर खाना खियाबैछै । बाटमे एकटा नम्हर टेबुल पर दुइ पंक्तिमे भिक्षुके बाटीसब (कचौरा) राखल जाइछै । थाइ लोकसब भिछुके कचौरासबमे स्वादिस्ट भोजन या कचौराके झपनासबमे (बिर्को) फलफुल या मिठाइके परिकारसब परसैछै । वहै दिन दोपहरमे (अपरान्ह) भगवान बुद्धके मुर्तिके स्नान करनाइ या बाट, मठ या बिहार पाइनसे सफा करैके काम करैछै । एकर बाद सुरु हैछै प्रख्यात पाइन छिटैके पावैन–सोंक्रान ।

श्रीलंकामे इ पावैनके समय मे ५–६ दिनके सरकारी छुट्टी हैछै । ऐहनङ लबका बरिस सुभारम्भ म्यान्मार, लाओस या कम्बोडियामे भि हैछै। यै अवसरमे श्रीलंकामे सिंहला सब आपनसे जेठ, नम्हर या भिछुक सबके पानके पता, नरिवलके तेल सिरमे राखैत या आसिर्वाद लैके काम करैछै । यै समयमे घर आँगन, पाटी पौवा, मठ मन्दिर या बिहार सफा करनाइ या भिछुके सबके स्वादिस्ट खाना खियावैके काम करैछै । उ सिंहलासब यै समयके अती सुभ मानैछै या वहैठनासे सुरु करैछै पाइन छिटैके प्रसिद्ध त्योहार आलुथ अवरुदु । साथ-साथे भारतके तामीलनाडु, आसाम, बंगाल, केरल, मनीपुर, उडीसा, पंजाब या तिरिपुरा राज्यमे भि यि नयाँ वर्ष पावैन यहै समयमे मनाइके चलन विद्यमान छै ।

उपर उल्लेखित हरफसे इ बुझाइछै कि बुद्ध धर्मके संगसगै जुरसितल पावैन नेपाल भारत श्रीलंका हैत दखिन पुर्व एसियाके देससब थाइलैन्ड, मयन्मार, लाओस या कम्बोडियामे हजारौ हजार बछर पैहने प्रवेस करने छै । यै पावैनके हमयहाँ

जुरसितल, सोंक्रान, थिनग्यान, चौल चाम थ्यें, पिमाइ लाउ वा आलुथ अवरुद् कहियौ, सब एकेटा चियै, एकेटा खिस्सा (कथा) बोकने, एकेनासके महत्व धारन कैने या, एकेनासके संस्कृती प्रलछित करैछै। यैसे इ प्रमानित हैछै कि "संस्कृती कहियो नै मोरैछै अपितु पल्लवित मुखरित भ्याके आवैछै"।

सप्ताहके सातटा दिन सबके नाम ग्रहसबके नामसे उद्धरन क्याल देखाइ छै या विस्व भैरमे एकर प्रभाव लोकसबके जिवनमे देखा परैछै। तिनटा प्रस्नसब कि बुझाइ छै कि रासी (लग्न अर्थात भाग्य–सिंहलासब के कथनानुसार) समय अनुसार एकटा गतिसिल तन्तु चियै। थाइलैन्डमे बारहो मैहना सबके नाम रासी सबके नाममे (मीन, मेस, कर्कट, मकर, सिंह आदि) राखल गेलछै। यै अध्ययनसे एकटा नयां खोज-अन्वेसन करैके पथ इँकित हैछै। वास्तवमे यै पावैनके निकसे संरकछन, सम्बर्धन, सम्प्रेसन या सँचार करल जाय त दछिन पुर्व एसियाके देससबके बिचमे और थप सामाजिक, साँस्कृतिक, भातृत्व, मित्रता या आपसी समझदारीके विकासमे बढोतरी अवस्य हेतै।

सन्दर्भ सामग्रीसबः

१. प्राध्यापक डा।फ्या अनुमान राजाधोनद्वारा लिखित किताब "थाइलैन्ड संस्कृति संग्रह न–५, ल्वाय कराथोङ्ग–सोंक्रान पर्व" राष्ट्रीय संस्कृति संस्थान, बैंकक, थाइलैन्ड (१९५०)

२. प्राध्यापक डा।निर्मल डिसिल्भा (२००९) मोरातुवा विसवविद्यालय, मोरातुवा, श्रीलंका "व्यक्तिगत अन्तर्वार्ता या जानकारी", कोलम्बो, श्रीलंका।

३. स्व.मोहनलाल हुजदार (१९७०) द्वारा पंक्तिकारके सुनायल या वर्नित पूवी तथा मध्य नेपालके थारु समाजमे प्रचलित अपितु अलिखित जुरसितलके कथाके अधारमे।

४. साभारः इन्टरनेट, युटयुव र समय साक्षेप विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकासित जुरसितल सम्बन्धी लेख रचनासब (२०२२)

बचन

सन्तोषी कुमारी चौधरी

(पल्टु चौधरान विषहैरीया थारु)

चौदण्डीगढी नगरपालिका-१०, हडिया उदयपुर

मोबाईल नं :९८४२९२७७३८

एकटा राजके राजा बड सौखिन छेलै । दरबार भरलपुरल रहै । दरबारमे सवारीले हाथी घोडा छेलै । नोकरचाकर सब दरबारके खटानमे खटले रहै छेलै । राजा साहेबसे जखने जे हुकुम हैछेलै तखने से काम भैरदिन लागलाठी बिरनी बिहाइर करैछेलै । ओइ समयमे गाम समाजमे समस्या हैछेलै त गामैमे पन्चैती कैरके भरसैक मिल्याके समास्याके सामाधान करैके चलन रहै । तै दिनमे अड्डा अदालत, रेडी, टिभी नै हैछेलै । कोनो समाध गाम समाजमे जानकारी दैले राजाके हुकुमसे ढोलाहा पिटाइ छेलै या त गोराइतसे चिकरब्याके कहैले लगाइ छेलै ।

राजाके बेटाबेटी बैढ गेल रहै । जेठ बेटी बियाह करैबला भेलछेलै, बेटीके बियाह करैले राजा बर खोजे लागलै । यै राज, वै राजके राजकुमारके देखल्कै महज आपन बेटी राजकुमारीसंगे जोरा मिलेबाला केकरोने नै देखल्कै । तबो राजा कनहिक दिनसे सोंचै छेलै, विचारै छेलै । बेटीके त बियाह करे परतै महज कोन राजके राजकुमारसङ्गे कैर देबै ? कनंके बर खोजबै ? राजा मनेमन सोंइचके फेरसे यै राजसे वै राज तैक नजैर खिरैलकै । तैयोतक बेटीसंगे जोडा मिलैबला बरके कतौ अनुमान लागबे नैसकल्कै । राजा फेरसे सोंचैछेलै । विचार करै छेलै जे जैहनं छै तकरा तैहनंङ जोरा भगवान जोडी लग्या देछै । हमरो बेटीमे जोडा लागैबला बर कतौने कतौ जरुरे हेतै । से सोंइचके राजा नगरभैर ढोलहा पिटाइल्कै । राजकुमारीसंङगे जोडा मिलेबाला कोइयो बर छै त राजाके दरबारमे हाजिर हेतै

से कैहके ढोलाहा पिटाइल्कै । तकर दोसर दिनसे राजाके जम्या हैले बडसब डरहरा लागल येलै । हम त हम कैहके केहेन केहेन विद्वान मरदसब येलै । येलहासबके राजा एकपाइहसे देखलकै तैयो कोनो बर पसन नै पर्लै । बेटीसंगे जोरा मिलैबाला कोनो बरके नै देखल्कै । ताब त राजाके मन खट्टा भ्यागेलै । "केहेन केहेन गेल त मोछबला येल या मोछबला गेल त निमोछिया येल ।"

केहेन केहेन विद्वान येलै, मोछबला येलै, निमोछिया येलै, तैयौ कोनो बर राजाके पसन नैपरलै । ताब त राजा बर खोजैबला दोसर तरिका विचार करल्कै । राजा दुइ चाइर दिन फेर निकसे सोंचल्कै । फकर मनमे एकटा खिस्सा येलै । खिस्सा जानैवला जरुरे कुछोने कुछो जानैत रहैछै । उ बर बड बुधियार रैहैछै । खिस्सा कैह कैहके सबके बुइध दैत रैहैछै । वैहनंङ बुधियार बर खोजबै कैहके राजा सोंचल्कै । दोसर दिन बर खोजैले येहा तरिका लगाइल्कै । जे कुमार बर खिस्सा (कहानी) बौहौत जानैछै से बर खिस्सा कहैत कहैत राजाके अगहाइले सकतै त वोहै बरसंगे राजकुमारीके वियाह कैर देबै कैहके फेर राजा नगरभैर ढोलहा पिटाइल्कै । राजा स्याहाबसे यि एकटा वचन भेल छेलै । तकर बेहानैसे कुमार बरसब खिस्सा(कहानी सुनाइले "हम त हम, के ककरसे कम कैहके" उपरधस करे लाग्लै । सुन, तोरैके जवान बरसब येनङके उपरधस करनेसे नैहेतौ । सबकोइ खिस्सा कहानी कहैबाला नम्बरके एकटा एकटा चिठा उठा । जकर पल्ला ज्या नम्बरमे हेतौ, ताइये नम्बरमे खिस्सा सुनाइले पाबबिही ।" कैहके राजा कहल्कै ।

दरबारमे येलहा कुमार बर सबके खिस्सा कैहैले राजा पल्ला लग्यादेल्कै । राजा खिस्सा सुनैले बैठलै । राजासंगे बौहौत लोकसब दरबारमे खिस्सा सुनैछेलै । कुमार बरसब आपन आपन पल्लामे खिस्सा सुनाइल्कै । खिस्सा सुनाइत सुनाइत सबके पल्ला भ्यागेलै या खिस्सा ओर्यागेलै । ओतहेक गोडामे एको गोडाने खिस्सा कैहके राजाके अगहाबैले सकल्कै । राजाके एकटा वचन पुरा करैले कोइयोने सकल्कै । खिस्सा कहनाहार लडकासब खिस्सा कैहके राजाके अगहाबे नैसकलाके चल्ते कुमार बरसबके मुह अनहार खोंटखोंट भ्यागेलै या फुच्याके ओइठिनसे चैल गेलै । वोइ लडकासबके राजकुमारीसंगे बियाह करैले मन लागले रैहगेलै । यि बात यै कान वोइ कान बयाबान भेलै ।

राजाके खिस्सा सुन्याके अगहाबैले सकैबाला लडका राजकुमारीसंगे बियाह करेपाबतै । राजाके तरफसे सठनी, डलाभैर सोन पाबतै, एकटा नरहा हाथी पाबतै कैहके सौंसे दुनिया घोलमघोल छेलै ।

कनहिक दिनकेबाद एकटा जवान लडका यैकान वैकान सुनघान सुनल्कै । वोइ जवान लडकाके नाम बुधना छेलै । बुधना बडा बुद्धियार या धिरगर छेलै । बुधना मनैमन सोंच विचार कैरके सौंसे दुनिया नजैर खिरैलकै या आपने आपने असगरे असगरे बाजै छेलै, खिस्सा सुन्याके राजाके अगहाबैले सकेबाला मरद यै दुनियामे कोइनै जन्मल छै ? कोइ नैछै ? केहेन खिस्सा सुइनके अगहाइतै राजा ?

राजकुमारीके वियाहके लेल बुद्धियार लडका भाँज नैलाइगके चल्ते राजा चिन्तामे परल छेलै । सब उपाय लगाइलियै तैयो राजकुमारीसंगे जोडा लागैबला सुन्दर, बुधियार जवान लडका भाँज नैलागलै । आब की उपाय करबै ? कनंके बर खोजबै ? कैहके राजा मनेमन सोंचै विचारैत चिन्तित पैर गेल छेलै । तहै बखतमे पहरुदार खबर लेनेयेलै । राजाके खिस्सा सुन्याके अगहाबैले सकैबला एकटा जवान लडका येलछै । येतहेक खबर सुनतैमातर राजा खुसी भ्याके वोइ जवान लडकाके राजा दरबारमे तुरन्त हाजिर करा, कैहके पहरुदारके हुकुम देल्कै । राजासे हुकुम हैतेमातर पहरुदार दौरके ज्याके बुधना नामके जवान लडकाके बोल्याके दरबारमे हाजिर केल्कै ।

राजा बुधनाके पहैलके नजरमे देखतैमातर खौब खुसी भेलै । राजा सबसे पैहने बुधनाके पुछआछ कैल्कै । तैके बाद बुधनाके खिस्सा सुनाइले हुकुम देल्कै । दरबारमे राज परिवारसंगे बहौत पन्चसब खिस्सा सुनैले कान ठार कैर कैरके बैठल छेलै । बुधना अगामे ज्याके खिस्सा केहे लागलै -
सबसे पैहने एकटा बाधके खिस्सा सुनाइल्कै त राजा या पन्चसब सबके खिस्सा सुनैले निक लागलै । ताब दोसर खिस्सा सुनाइले आदेस देलकै, दोसरो खिस्सा राजकुमारके बिषयमे रहै, सबके सुनैले निक लागलै । तैकेबाद तेसर खिस्सा सुनाइले आदेस देलकै तेसरो खिस्सा सुनाइलकै त सुनैले निक लागलै । यैहनङे चाइरटा, पाँचटा, छटा, सातटा.....या और खिस्सा सुनाइते गेलै, सुनाइते गेलै । एकटा एकटा खिस्सा सुनाइत सुनाइत बुधना बहौत खिस्सा सुन्यासकने छेलै । खिस्सा कहनाहार रस रस थाइक गेलै । तैयो खिस्सा सुनहारसब खिस्सा सुनैले नैअगह्याल छेलै । खिस्सा कहनाहार खिस्सा कैहैत कहैत चिरैके खिस्सा सुनाइले लागलै ।

एकटा बरका बिजुबोन छेलै सरकार । वोइ बिजु बोनमे बहौत बोनैयाँ जनावर या चिरैचुरगुनीसबके बास छेलै सरकार । वोइ बोनमे बर्का बर्का ढांगके झटास(पटास सखुवाके गाछ, करमैनके गाछ , हैर्रा, बेंहराँके गाछ, बोनैयाँ आँम, लतामके गाछ, बोनैयाँ गुवा सुपारीके गाछ, जौमके गाछ, सिमरके गाछ हो छेलै सरकार । ओइ गाछसबमे चिरैचुरगुनीसबके खोंता छेलै । ओइ गाछमे चिरैचुरगुनी परले रैहै छेले

सरकार । बच्चा फोराइले खोंतामे बेराबेरीके चिरैसब अथरी ओगरैछेलै…सरकार । बच्चा फोराइछेलै त पाल कैर कैरके अहरा बिछके चिरैसब जाइछेलै सरकार । यैहनं चिरैसब जिनगी जियैछेलै सरकार । ओइ गाछमे चिरैसब एक बैठै, एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै..एक उरै … सरकार । चिरैसब एक बैठैक उरै सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठैएक उरै…सरकार । चिरैसब एक बैठै…एक उरैसै…रकारै…। येतहेक खिस्सा सुइनके राजा हँ ! हँ ! हँ ! हँ ! बड बेस ! कहल्कै । एकेटा बात सुनैत सुनैत रजाके मन अगह्या गेलै आ कहैछै आइ हम खिस्सा सुइनके अगह्या गेलियै । येतहेक दिनसे खिस्सा कहनारसब खिस्सा सुन्याके राजाके अगहाबैले नैसक्ने छेलै । आइ खिस्सा कहनार बुधना जवान लडका खिस्सा सुन्याके राजाके अगह्या देल्कै । राजाके एकटा मन वचन पुरा भेलै ।

खिस्सा खत्तम पैसा हजम सरकार,

कथना रे कनथी सुन हौ सुननाहार

याब राजकुमारीसङ्गे वियाह करबै

हम खिस्सा कहनाहार ।

तकदिर

-सन्तोषी कुमारी चौधरी

एक राजमे एकटा राजकुमार छेलै । राजकुमार छोटेसे घमन्डी, निडर, फटफटिया छेलै । अलढंगाज जखा ककरोसंगे फटफट फटफट किछो बाइज लै छेलै । राजकुमार दरबाजामे खेलाइछेलै तहै बखतमे पन्डा भिखमंगा येलै । भिखमंगा देहरिमे बैठके, दरबारमे बितलाहा या अगमके बातसब आपने आपनै बाजैछेलै । तहै बखतमे राजकुमार पन्डाके बोली सुनल्कै त लगमे गेलै । हौ पण्डा बाबा तोंहे साँचे अगमजानी जानैचिही ? कैहके राजकुमार पन्डाके पुछलकै त पन्डा हँ हँ जानैचियै कहल्कै । जानैचिही त ले हमर हाथ देखके भविस्यवानी बत्यादे, कैहके राजकुमार चट्टदबर हाथ बढहेल्कै । पन्डा राजकुमारके हाथ देखे लागलै ताब राकुमारके मुहमे ताइकके कहैछै, हौ, बौवा राजकुमार, सौसराइरमे तोरा डहल खुद्दी भुजा ख्यापर्तो । भिखमंगा पन्डा फिस्यौर कहैछै, कैहके राजकुमार नैपत्याइलै । भिखमंगा पन्डा दरबारसे भिखल्याके चैलगेलै । पन्डा राजकुमारके जैहिया हाथ देखदेने छेलै तैहिया वोकरा बियाह नै भेलछेलै । सात बरसकेबाद जाब राज कुमारके बियाह करैके उमेर भेलै ताब पन्डाके बोली मन पाइरके मनैमन सोंचै हम येहेन धनिक राजाके बेटा राजकुमार चियै । हमरा सौसराइरमे डहल भुजा खाइले पर्तै ? यि असम्भब बात भाइये नै सकैछै । राजकुमार मनैमन असगरे खौब सोंच विचार करैछेलै ।

राजकुमारके बियाह कैरदैले राजा कनिया ताके लागलै । यै राजसे वै राज राजा कनिया खोजे गेलै । वै राजके एकटा राजकुमारी राजाके परपसन परलै । लडका लडकी दुनु तरफसे देखा सुनी भेलै । दुनु तरफ से मन्जुरी भेलै त कथा बान्हल्कै, घरदेख, बियाहके लगन ठेकल्कै । राजकुमारके बियाहके तयारी करैले समाजके लोकसब जुइटके लागल छेलै । सबचिज तयारी कैरके बियाहके दिन ढोल पिपही बजाइत हाथी घोरामे चरहल बर बरयाती ज्याके बियाह करल्कै । बिदा भेलै त खटौलीमे कनियाके बोइकके आनल्कै । राज दरबारमे समाजके लोकसब बियाहके भोज खेल्कै, रमझम केल्कै । राजकुमार कनियाके महिना दिन घैरल्कै । तैकेबाद कनिया बर घुराफिरी करेगेलै । राजकुमार वियाह कैरके बाद पहैल्कादाइब सौसराइर गेलछेलै । सौसराइरमे ६ तरुवा ९ भुजुवा छनकमनक पाकैछेलै । चोटगर चोटगर पकाइत पकाइत राइत भ्यागेलै । राजकुमार (बैहनो)के भात खियाइले

साइर भन्सा घर ल्यागेलै आ दरीमे बैठे देल्कै । बहौत किसिमके पकवानसब भात फेरके साइर बैहनोके खाइले देल्कै । तहै बखतमे राजकुमारके सौसराइरमे तोरा डहल खुदी भुजा खाइले लिखलछौ कैहके पन्डाके कहल बोली फमपरलै । राजकुमार खौब जोरसे ठठ्याके हाँसलै । ताब कहैछै ओहो ! बहौत किसिमके परिकार ! कहाँ डहल खुदी भुजा ? उ पन्डा हमरा झुठ कहल्कै, सब झुठ । सब झुठ ।

साइर भात खाइले देल्कै त बैहनो आपनै आपनै बाजैछेलै, झुठ झुठ कैहके बरबर बाजैछेलै । साइर कहैछै, पागल कहाइँके तोरा भुख नैलागलछौ ? खाइले देलियौ त कथिने कथि बाजै छ्या या ठठ्या ठठ्याके हाँसै छ्या । भात नैखेतै । पागल छै, कैहके साइर खिस्याके अगामे खाइले देलहा भात उठ्याके ल्यागेलै । पागल बाजैत रह असगरे, कैहके वोकरा असगरे छोइर देल्कै ।

राजकुमार, तै रिससे टिरैकके सौसराइरसे भाइग गेलै । (सौसराइरके घरसे अन्ते चैलगेलै) । तैहका समयमे अखैनका जखा बिजुली बत्ती नैछेलै । अन्हैरिया राइत अनहार खोंट खोंट छेलै । राजकुमार अन्हारमे बाधेबाध जाइत जाइत गामके बहारमे एकटा बुढियाके खोपरी घरमे पुगलै । एक त अन्हैरीया राइत, दोसर वोइ खोपरी घरमे रहैवाली उ बुढिया अन्हर छेलै । दिनैके वोइ बुढियाके झोलपटाह सुझहै छेलै, राइतके त औरने सुझहैछेलै । दादी गौ ! कुछ कुछ खाइले दे हमरा बडजोर भुख लागल आइछ । राजकुमार बुढियाके कहल्कै । बौवा रौ ! हम बुढिया लोकके घरमे कोनो अन पाइन नैछै । छै त, कन्हिंकरा खुद्दी चौर । खुद्दीके भुजा खेबही ? बुढिया पुछ्लकै त हेतै, दादी गौ ! हम खेबै कैहके राजकुमार बुढियाके कहल्कै । अनहर बुढिया हौंथैर हौंथैरके खुद्दी चौरके भुजा भुजल्कै । भुजा भुजैत भुजैत कनहिंक कनहिंक डैहगेलै । बुढिया वेह्त्या डहल भुजा राजकुमारके खाइले देल्कै । राजकुमार भुख्याल छेलै त भैरपेट खुद्दी चौरके डहल भुजा चरमरके चिब्याके खेल्कै । राइत बड भेल रहै । पाइन पिल्कै या वोहै बुढियाके घरमे छुछे पटियामे सुइत रहलै । सुतैके बखतमे सौसराइरमे डहल खुद्दी भुजा खाइले लिखलछौ कैहके कहल पन्डाके बोली, राजकुमारके फेर याद येलै ।

जकर तकदिरमे जे लिखल रहैछै से तकरे भागमे परैछै । सौसराइरमे डहल खुद्दी भुजा खाइले राजकुमारके तकदिरमे लिखल छेलै त राजकुमार खेल्कै । तकदिरमे लिखल नैमेटल जाइछै । खिस्सा खतम ।

निसाद

- सन्तोषी कुमारी चौधरी

चौदण्डीगढी नगरपालिका-१०, हडिया उदयपुरएक समयमे धन सम्पैतके धाक रवाफ भेलहा एकटा घमन्डी जमिन्दार छेलै। वोकरा दुइटा बेटा छेलै। खेत पातके कोनो कमी मै छेलै। बिगहाके बिगहा खेत छेलै। ओइ जमिन्दारके खेतमे सबसाल बखारीके बखारी धान उब्जै छेलै। अगहन मैहनाके समय चियै। वोकर खेतमे अगहनी धान किताके किता पाकल छेलै। धान केहेन केहेन पाकलै कैहके एकदिन जमिन्दार खेतमे धान देखे गेलै। वोहै बखतमे जमिन्दार जेरके जेर सुगा या और चिरैसबके धान खाइत देखल्कै। देखतै जमिन्दारके मनेमन रिस तामस उठलै। कहैछै यि चिरै हमर धान खेल्कै, यै चिरैके पकैरके मौस खेबै। जमिन्दार चिरैके पकरैले जुइत लगाइल्कै। दोसर दिन जुइत (फना जोइरके) लग्याके जमिन्दार धानके आइरमे गब्दल छेलै या लुकिया लगाइने छेलै। जेरके जेर चिरैसब येलै वोइ जमिन्दारके आइरमे गब्दल नैदेखल्कै। जाब एकजेर चिरै धानमे बैठलै ताब जमिन्दार छट्टदबर दौडलै। एकटा चिरै फनामे पैर गेलै जमिनदार ओकरा पकैर लेल्कै। और चिरैसब उइरगेलै। पकरलहा चिरै उइर जेतै कैहके कसकस्याके डेमन पकरल्कै। चिरै जमिन्दारके बिन्ति करेलागलै, हे ! महाजन तोहें हमरा मुठिमे बडा कसकस्याके पकरने चिही, हमर डेन पाखुर टुटतै, पैखना उखरतै त हम उरैले नैसकबै। खोंतामे हमर कन्यें कन्यें बच्चा छै। उ बच्चासब भुखसे पक पक बेतर बाबैत हेतै, चुइँ चुइँ करैत हेतै, हमरा छोइर दे।

चिरै जमिन्दारके गोर लागैछेलै, विन्ति करैछेलै, तैयोने जमिन्दार ओकरा छोरल्कै। जमिन्दार चिरैके कहैछेलै, तों हमर धान खेनेचिही तोरा घर लज्याके दबियाबाटे काइटके मौस खेबौ। तोरा नैछोरबौ हम। जमिनदार चिरैके पकैरके हाथमे बोकने जाइछेलै त बाटमे एकटा बटोहिया भेटलै, वोहै बटोहियाके चिरै गित गाइब गाइबके कहैछै-

एक सिंस कन्वा खेलियै हौ भैया पकैरके ल्याजाइये ....

पहार पर्वतमे हमर बच्चा कानैत हेतै चुइँ चुइँ....

छोइर दहक हौ ! जमिन्दार भैया कैहके बटोहिया चिरैके छोइर दैले कहल्कै । चिरैचुरगुनी एक सिंस कन्वा खेनेसे नैघटैछै जमिन्दारके धन । कोइयो कुछो केहे ककरो बोली नैसुनल्कै । जमिन्दार चिरैके नैछोरल्कै । जाइत जाइत बाटमे दोसर बटोहिया फेर भेटलै त वोहौ बटोहियाके चिरै फेर कहैछै ।

एक सिंस कन्वा खेलियै हौ भैया पकैरके ल्याजाइये....

पहाड पर्वतमे हमर बच्चा कानैत हेतै चुइँ चुइँ....

छोइर दहक हौ ! जमिन्दार भैया बच्चाबाली चिरै हेतै ताब यनंके विन्ती करैछै । कैहके दोसर बटोहिया जमिन्दारके कहल्कै । यि बच्चाबाली चिरै बच्चा पालैले एक सिंस कन्वा खेनेसे धान नैघटैछै । दया कैरके छोइर दहक यै बच्चाबाली चिरैके । तैयो जमिन्दारके दया नैलाइगलै चिरैके पकरनै छेलै । बाटमे जतहेक बटोहिया भेटलै ततहेकसब बटोहियाके चिरै वैहनङ गित गाइबके कहैत गेलै । तैयो जमिन्दारके मामत नैलागलै । वोइ चिरैके आपन घर लज्याके काइटके मौस बन्याके चोट्टगरसे खेबेटा करल्कै ।

पहाड पर्वतमे वोइ चिरैके खोंतामे बच्चासब महताइर अहरा आइन द्यात कैहके, बाट ताकैरहै । अहराबेगर भुखले भुखले चुइँ चुइँ करैत करैत बच्चासब खोंतामे लैट गेलै । दोसरदिन बच्चासब भुख पियाससे महताइरके बाट ताकते ताकते खोंतैमे मोइर गेलै ।

हबैली सबदिन अजमज चलैछेलै । कनहिक दिनकेबाद जमिनदारके दुनुटा बेटाके अन पाइन नै भावे लागलै । जरबोखार नैलागल छेलै तैयो खेनाइ पिनाइमे मन नै जाइ । चोट्टगर चोट्टगर निक निकुत कैरके दुनुटा बेटाके खाइले दै, तैयो नैख्याल जाइछेलै । अन-पाइन नैरुचैके कारन जमिन्दारके बेटासब बेसक भ्यागेलै । ताब त जमिन्दार बेटासबके सजाह करैके खातिरमे डाक्टर, वैधसे चेकजाँच कराइल्कै, दबाइदारु खियाइल्कै तैयो बेटासबके बेमारी बिस के उन्नैस नैभेलै । ताब जमिन्दार डाक्टरी दबाइ करैले छोइर देलकै । गामैमे जानै सुनैबला धामी झाँखरीसे झराइल्कै, फुकाइल्कै । तैयो बेटासबके बेमारी सजाह नैभेलै । हैत हैत दुनुटा बेटाके कन्ठ सुइख गेलै कठारी लाइग गेलै । कठारी लागल लागल कनहिक दिनकेबाद जमिन्दारके दुनुटा बेटा मोइर गेलै ।

जमिन्दारके घरमे घटलाहा यि घटना सौंसे दुनियाँमे घोलमद्धोल छेलै । यि घटना सुइनके एकटा देवता प्रगट भेलहा धामी वोकर घर येलै । धामी जमिन्दारके दुःखपरल समयमे चित्तभरोस दैत बेटाके मोरन भेलहा सही बात बताइले लागलै- "एक सिंस कन्वा खेलकौ त निर्दोस बच्चाबाली चिरैके तुहें पकरलही । बच्चाबाली चिरैके पकैरके घर लजाइ छेलही त हमरा कसकस्याके नैपकरै हमर डेन पाखुर टुटतै, हम उरैले नैसकबै कैहके तोरा विन्ती करैछेलौ तैयो तुहें चिरैके कसकस्याके पकरने छेलही । हमर बच्चा खोंतामे चुइँ चुइँ कानैत हेतै हमरा छोइर दे कैहके कतहेक विन्ति करल्कौ तैयो चिरैके नैछोरलिही । चिरैके काइटके मौस खेबे करल्ही । चिरैके खोंतामे ओकर बच्चा चुइँ चुइँ करतै करतै भुखले भुखले कन्ठ सुइखके मोइरगेलै । सेह्या निसाद पलौ जमिन्दार तोरा । तोहर घरमे ढेरीके ढेरी अनपाइन छेलौ तैयो नैरुचलौ तोहर बेटासबके, कन्ठ सुइखके सँहजै सँहजै दुनुटा बेटा मोइरगेलौ । चिरै कलैप कलैपके तोरा विन्ती करैछेलौ तैयो चिरैके बात विचार नैकैलिही आपने मनमौजी कैल्ही । तोरा कल्पना पर्लो (पाप लागलौ) । चिरै जतहेक कल्पलौ ततहेक कल्पना जमिनदार तोरा परलौ । तहैसे आइतोहर दुनुटा बेटा मोइर गेलौ । तहैसे तों कल्पैचिही ।"

पहाड पर्वतमे चिरैके खोंतामे चिरैके बच्चा मोरलै त कोइने देखल्कै । जमिनदारके दुनुटा बेटा मोरलै त जमिन्दारके निसाद परलछेलै कैहके सबकोइ देखल्कै । अन्याय कैरके खाइछै त निसाद परैछै । हक लग्याके खाइछै त हक लागैछै । खिस्सा खतम ।

पकठी बुड्ध

–सन्तोषी कुमारी चौधरी

बौवा ताल डिगडिगिया, बौवा ताल डिगडिगिया

मख्या मख्याके बगिया, ख्या तिलजुगिया

खिखरा बुढवा नाइतके लेहरा लग्याके खेलाइत रहै । नाइत कखनो ठेङहुन्याँ ह्याके हाथीहाथी लरैछै त खन ओसरा पकैर पकैरके ठार हैछै । बौवा देह थेग थेगके एकदुइ डेग लरैले सिखैछेलै त खिखरा नाइतके गाइब दैछेलै-

टुनु....मुनु....जा ....बौवा टुन....मुन.......जा

बौवा बर्हैत जा....बौवा लरैत जा....

जतहेक गाइब दैछेलै, ततहेक नाइतके हुवा बर्हैत जाइछेलै । बच्चा लुध धुध खसै फुच फुच उठै फेर लरै । यैहनंङ करैत करैत मैहना दिनकेबाद असलसे लरैले सिखल्कै । जैहियासे असलसे लरेलागलै तैहयासे नाइतके तन्की करते रहे परैछेलै, नेत छट्टदबर लरैतलरैत डगर बाटमे पुइग जाइछेलै । निर्बुघी बच्चाके लागलाठी नजैरमे राखे परैछेलै ।

नाइत जाब बुझ्हैबाला भेलै ताब खोधिया खोधियाके बाबासे पुइछ पुइछके बात बुझ्है छेलै । एक दिन अंङगनामे पटिया विछ्याके खिखरा बुढुवा गित गाइब गाइबके नाइतके खेलाइछेलै-

घुघो जा.... घुघो जा....

बौवा खाइ दुध भात, कुत्ता चाटे येंठ पात

ज.... ज....पात उधियाल जाइ....

त.... त....। बौवा दौरल जाइ....।

ठार हो रे पात मारे दे दुइ लात

लब लब घर उठे ....उठे ....उठे ....।

पुरान पुरान घर खसे ....

गित गाइब गाइबके खेलाइत खेलाइत बुढुवा नाइतके उठ्याके खस्या देलकै त नाइत ठिठ्या.... ठिठ्याके .... हाँसैछेलै । नाइत फेर उइठके लगमे सैटके बैठके,

बाबा गौ ! यै गितके अर्थ कथी हैछै ? हमरा बुझह्याके कहने ? ताब बुझबै, सुन चुपचाप, येकर अर्थ तोहें अखने कन्येंटा चिही । दुधभात खाइचिही । बढहैत बढहैत बर्का हेबही । लब लब जवान हेबही । हमरौके बुढ पुरान भ्याके मोइरजेबौ । तहैसे कहैछै लब लब घर उठे .... उठे ....पुरान पुरान घर खसे .... बुझलिही बात कैहके खिखरा बुढवा बौवाके कहल्कै । सबसब दिन नाइतके अर्थ बुझह्या बुझह्याके सिखाइछेलै । यैहनं सुनैत सुनैत नाइतके बुइध पकठी भेलछेलै । बुढुवा बाबासंगे असल असल बुइध ग्यान सिखके खिखराके नाइत आपन बगैरियासबके सिखाइछेलै । तहैसे खिखराके नाइतके बौहौत बगैरियासब भेल रहै । बगैरियासबमे सबसे बुद्धियार खिखराके नाइते रहै ।

खजन चिरै खजन चिरै बड गुर्का

मामा मारलकै धनुष चर्ह्या

मामा काटलकै दबिया पिज्या

मामी निन्हल्कै तेल झमक्या

मामा खेल्कै मोछ फलक्या

मामी खेल्कै नथिया डोल्या

सौंझका खेनाइ ख्यापिके सबदिन सुतैके बखतमे बाबासंगे खिसा कहानी सुइन सुइनके नाइत सुतैछेलै । जे खिसा कहनी जखनी सुनैछेलै तकर अर्थ पुइछ पुइछके नाइत तखैनियें बुझहैछेलै । नाइत खिस्सा कहानी सुइन सुइनके छोटैसे बडा चनसगर भेलछेलै ।

खिखराके बेटा पुतौह सबदिन बोन, बाधमे काम करैले जाइछेलै । घरके बेगर्ता टारैले हाट बजार सेहो जाइछेलै । तै बखतमे नाइतके भुख पियास लागैछेलै त खियापियाके दोरीमे हिल्याके साह लग्या लग्याके बच्चाके निनलागैबला निनियाँ गित गाइब गाइबके सुताइछेलै ।

या रे निनियाँ या....या....या....

या रे निनियाँ या....या.... या....

बौवाके निनियाँ बाटे बाटे या....

या रे निनियाँ निन पुरी जा....

या रे निनियाँ बाटे बाटे या....

हमर बौवा मारतौ लाते लाते
सुत निनी जा रे बौवा सुत निनी जा....
सुत निनी जा रे बौवा सुतोना देबौ ....।
काजरके कजरौटी सिरहोना देबौ
काठके घोडा खेलोना देबौ
सुत निनी जा रे बौवा निन पुरी जां
बौवाके मैया बौवाके मैया गेलै हटिया....।
हटियासे आइन देतै राङल पटिया
बौवा सुत निनी जा.... बौवा सुत निनी जा....।
बौवाके मैया बौवाके मैया गेलै बजार....।
बजारसे आइन देतै सोनाके हार....
बौवा खौबके लिहार....। बौवा खौबके लिहार....।

दोरीके साहमे निनियाँ गित सुनैत सुनैत नाइत सुइत जाइछेलै । नाइत सुतैछेलै ताब खिखरा बुढुवा अस्लान कैरके भात खाइछेलै । दोरीके साह कम हेछेलै त बुढुवा फेरसे साह लग्या दैछेलै । निन पुइरके सुइतके नाइत उठैछेलै त भैरपेट ख्याके खेलाइत रहैछेलै । बुढुवा दरबजामे नाइतके खेलाइछेलै वोहै बखत डगरबाटे गोराइत चिकरैत जाइछेलै । राजा दरबारसे हुकुम भेलछै, डगरबाट साफसुघर करिहे बेहानके राजा नगरभैर घुमफिर करैले सवारी हेतै । कैहके गोराइत डगरबाटे चिकरैत चिकरैत चैल गेलै ।

राजाके नाम सुन्तैमातर गाँमके लोकसब जैहँ छेलै तैहँ आपन आपन घरके काम छोइर छोइरके डगरबाट साफसुघर कैल्कै । राजा वोइ डगरबाटे येतै तातकमे डगर ढुरढुर चिकन भेल रहै । दर्सन करैले लोकसब डगर कता कता दोबगली ठार भेलै । राजाके दर्सन करैले लोकसब उमजाम करैछेलै तहै उमजाममे खिखरा नाइतके आपन कन्हामे बोइकके ठाढ भेलरहै । राजा येलै त सबकोइ राजाके जय ! जयकार ! करे लागलै । राजा असल छै, राजा सुन्दर छै, राजा देखैले बडा निक छै, ... । सबकोइ असल कैह कैहके राजाके गोड लागैछेलै । वोहै बखतमे खिखराके नाइत राजाके खौब निकसे देखल्कै, विचार कैल्कै । जेहा देखल्कै सेहा

कहल्कै आरे बा ! राजा त कट्टु लगाइने छै तैयो सबकोइ असल कहैछै, कट्टुबला राजा ! हमहुँ गोर लागैचियौ ।

राजा आपन कानसे सुनल्कै, आपन आँइखसे देखल्कै । जे कहल्कै तकर दिसर राजा विचार कैरके फेरो ताकल्कै त देखैछै उमेरमे खिजा, बडा ढिठ महज चनससगर निडर बच्चा । बोंगपकठी छेलै, बच्चा शुद्ध शुद्ध बात जेहा देखल्कै सेहा बताइल्कै । राजा वोइ ढिठ बच्चाके स्यावासी देल्कै । तैहका समयमे राजा नैनिक करैछेलै तैयो निके कैल्कै कैहके जनतासबके स्विकार करे परैछेलै । राजाके विरुद्धमे जनता बाजेले नैपाबैछेलै । जे कोइ राजाके विरुद्धमे बाजैछेलै सेकोइके दन्ड जरिमना या कठोर सजाय भोगैले परैछेलै । राजाके विरुद्धमे बाजैबलाके मृत्यु दन्ड सजाय सेहो देल जाइछेलै । हमर नाइतके पकैरके ल्याजेतै कैहके डरसे खिखरा बुढुवा थरथर काँपैछेलै । महज आइके दन्ड सजायके बदला स्याबासी मिलल रहै खिखराके नाइतके । देखैबला कोइयो लोक औँगरी बताइले नैसकल्कै । कन्हिक दिनके बाद यि घटना सबलोक बिसैर गेलै । खिखराके नाइत कन्येटासे खिस्सा कहानी सुइन सुइनके बुद्धियार भेलछेलै । स्कुल पढहे लागलै त और बुद्धियार भेलै ।

गाम समाजमे माघ फागुन महिना धुमगज्जर सादी बियाह हैछेलै । कर्ताइत लड्का, लड्की तरफसे पर पसन हैछेलै त देखासुनी, उप्यापतर, घरदेख बियाहके दिन ठेकल जाइछेलै । तैहनंङग खिखराके गाँमके एकटा लड्काके दोसर पन्चायतके लड्कीसंङगे बियाहके लगन लागलछेलै । घरदेख, बियाहमे जाइले पटी समाजमे बिन्ती लगाइने छेलै । बरयाती जाइले सातटा बैलगरी जोइरके सारैठ लागल बरयाती जाइछेलै । खिखरा जते जाइछेलै तते नाइतके संगे लजाइ छेलै । एकटा बैलगरीके बहलमान भ्याके नाइतके आपनसंगे बरयाती लेने गेलै । बरयातीसब ढोल, पिपही, माइक बजाइत, नटुवा नाच देखाइत यै गाँमसे वै गाँम कन्नाइत कुटुमके दुवार पुगलै ।

बर बरयातीके स्वागत सत्कारमे समाजके लोकसब खैटके लागल छेलै । बर बरयातीके सिरदुवार लगाइल्कै । बरबरयाती सोचने छेलै सरासैरके कन्यादान हेतै, बियाह हेतै महज से नैभेलै । बियाह सुरु हैसे पैहने कन्नाइत या बराइतत दुनु तरफसे सवाल जवाफ सुरु हैले लागलै । तहै बखतमे कन्नाइत कुटुमके तरफसे गाँमके जेबार

सवाल कैह, कैहके पुछैले लागलै। सुनलजेतै बरयाती कुटुम जी, कन्नाइतके तरफसे अपनेसबके जतहेक सवाल पुछल जेतै ततहेक सवालके जवाफ दैयैले परतै यदि सही जवाफ दैले नैसक्बै त, यि बियाह रुइक जेतै।

सवालके जवाफ दैलै बर बरियाती तयारी करने नैछेलै तैयो भि जवाफ दैले तयार भेलै। कन्नाइत कुटुमके तरफसे सवाल पुछैले सुरु भेलै त बर बरियातीसब जवाफ दैबे लागलै। पुछैत पुछैत बहौत सवालसब पुछल्कै। बर बरियातीसब सही सही जवाफ दैतगेलै। कन्नाइत कुटुमके जेवार सबसे पाछे एकटा सवाल पुछल्कै, बरयाती कुटुम जी यहाँसब ढालसाज कैरके सातटा बैलगरीमे बरयाती येलचियै। याब कहु, यहाँ सबबर बरियाती क्या मन ?

बर बरियातीसब पैहैलका सवालके जवाफ जेहेन चरफरसे देने छेलै तेहेन चरफरसे पछुलका सवालके जवाफ कहैले नैसक्ने छेलै। जवाफ दैबला समय अवधि बितल जाइछेलै बर बरियाती गुदुर फुसुर करे लागलै। तैयो सही जवाफ कहैले कोइयोने सक्नेछेलै। आब हाइर गेलियै कैहके बर बरयातीके मुह सुथन्याल छेलै। बर बरियातीके चेहरा मुहराके सुरखी उदास भ्यागेलै। तहै बखतमे खिखराके पाँजर लागल सैटके बैठल छेलै बोंगपखठी नाइत। उ अन्तिम समयमे चुपेचापे विचार कैरके उइठके कन्नाइतके कहैछै। (तखिनका प्रसन फेर दोहर्याके पुछु त। कन्नाइतके तरफसे वेहा प्रसन फेर दोहर्याके पुछल्कै, बर बरियाती क्या मन ? उ बेदरा लोक (खिखराके नाइत) फटदबर आपन देहना हाथके तिनटा औँगरी निकाइलके देख्याके अर्थ बुझह्याके कहलकै बर बरयाती तीन मन। (प्रसनके सही जवाफ देल्कै कैहके कन्नाइतसब खौब जोरसे थपरी बज्याके बरयातीके स्वागत करल्कै)

बरके मन- कनियाँ सबसे टैरगर हेबौक।

बरके बापके मन- पुतौहके बहौत सठनी साठल आबिहौक।

बरयातीके मन- तरुवा न भुजुवा या माछ मौस पौहँचा डुग्याके खाइले पाबियौलक।

बरयातीसब खुसी भेलै। ढोल पिपही फेरसे बजाइले लागलै। खुसीसे कनियाँ बरके वियाह धुमधामसे भेलै। बरयातीसब पालगरीमे लबकी कनियाँके ल्याके विदा

भेलै। बर बरयाती कनियाँ ल्याके लौटलै। इध विध कैरके कनियाँबरके सिरदुवार लगाइल्कै। बर या बरके बाप खिखरा या खिखराके नाइतके विसेस कैरके वियाह भोज निमनसे खियाके स्याबासी देलकै।

गाममे सबकोइ आपन आपन धनमाल पोसने रहैछै। तैहनङ गाइमाल बकरी छगरी पोसने छेलै खिखरा। भात ख्यापीके नाइत स्कुल चैल जाइछेलै। बेटा पुतौह खसी बकरी सोहैर लग्याके पथार ठोइकके काम करैले खेत चैल जाइछेलै। खिखरा बुढ लोक घरके ओगैर्या रहैछेलै। एकदिन जाब ठिकोठिक दिन भेलै, टटैहया रौद रहै। तैयो काम कैरके बेटापुतौह नै येलै। खिखरा बुढवा बकरीके पियास लागल हेतै कैहके बाल्टिनमे पाइन भोइरके पियाइले टुगरल टुगरल गेलै त देखैछै, रौदसे औल लाइगके बकरी लारुबातु भ्याके छितियाल छै। डोल वोहैठिना राइखके बकरीके छुबलकै त नैमोरल छेलै, हुकहुकी छेलैके। जा तक साँस ता तक आस, बुढवा जैयो नैसकै छेलै तैयो बकरीके बोइकके छहाइरमे आनल्कै। फेर ज्याके डोलके पाइन बोकने येलै। छैत घरी मैत नैफुरलै। हबर हबर जुर पाइनबाटे बकरीके अस्लान क्या देल्कै। बकरीके ठन्डा लागलै त घेचघारसुर ठार कैरके ताकै छेलै मतर एकछनमे देखते देखते मोइर गेलै। बकरीके प्रान छुटतै मातर खिखरा बुढवाके अकबक हर्या गेलै। तहै बखतमे खेतसे काम कैरके बेटा पुतौह येलै। स्कुल छुट्टी भेलै त नाइत सेहो येलै। बाबाके चेहरा उदास देखके नाइत पुछैछै, बाबा गौ ! तोहे आइके कथिले उदास चिही ?

खिखरा बुढवा केहे लागलै, बौवा आपन एकटा करिया बकरी छेलौ सोहो मोइर गेलौ, तहैसे चिन्ता लागल। राजा के हाथी मोर्ने या मुसहरनी के घैला फुटने दुःख बराबैर हैछै। गरिबके घरमे एकटा बकरी मोर्ने से बर्का चिन्ता के बात हैछै। हाथमे पैसा नैछौ। कमाइबिही ताबे फेरसे बकरी किने सकबिही।

नाइत बात विचार कैरके बकरी कनंखे मोरलै से बात बाबासंगे पुइछके ओर से पोर बुझ्हल्कै। बकरी, रौद पाइनके तुल (सन्तुलन) नैमिलाके चल्ते मोरलै से बात बाबाके थाह नैछेलै। यि बात नाइत विग्यान विसयमे पैढके बुझ्ने छेलै। रौद्यालके बखतमे चट्टदबर जुर पाइनसे अस्लान करैले नैहैछै। एके दाइब रौद पाइन सरिर सैहलै नैसकैछै। रौद पाइन जुधलै त बकरी मोइर गेलै। वोहै दिनसे सबके येहेन किसिमके ग्यान भेलै।

खिखरा बुढवा दिनदिने बुढ पुरान भेलै तबो बुर्हौमे एक बेर नाइतसंगे धाम तिरती जाइले लौलसा लागलै । से बात नाइतके सुनाइल्कै । एकदुइ दिनके बाद नाइत योजना बनाइलकै । घरसे चलैके दिन नाइत कहल्कै 'बाबा ! तोहे लाठी टेकैत टेकैत एक दिनमे पुगैले नैसकबिही ले त रसरस चल । बस मोटर चलैबला बाट नैछै थाकल लागतौ त हमे कन्हामे तोरा बोइक लेबौ । कखनो कखनो जिराइत ज्याम, रसरस पुगबे करबै ।'

तिन दिनकेबाद खिखरा बुढुवा नाइत सेंगे तिरित कैरके घुरलछेलै । बिग्गर बाट पैदल आबैछेलै । बुढुवा लाठी टेक टेकके आबैत खोलाकता पुगलै । खोला पार हैके बखतमे नाइत बाबाके चैंच पकैरके पार करेल्कै । बुढुवा एक हाथे लाठी टेकैत पाइन थेगहैत पार हैछेलै । बिच पाइनमे पुगलै त बुढुवाके टाङ गोइह कसकस्याके पकैर लेल्कै । बुढुवा आपन जान बचाइले चट्टदबरके जोरसे कहैछै, अनहर गोइह नैहतन ! पकरैले टाङ त पकरै चिही लाठी ! गोइह बुढुवाके टाङ पकरने छेलै त छट्टदबरके छोइरके लाठी पकैर लेल्कै त बुढुवा बक्कदबरके लाठी छोइर देल्कै । नाइतसंगे खोहाइँ खोहाइँ हबर हबर लदी पार भेलै । बुढुवाके छाती डरसे धक ! धक ! हैछेलै । पाछे बडका साँस फेरलकै । पकठी बुइध छेलै तैं आई गोइहके मुहसे ओइसबके जान बचलै ।   खिस्सा खतम ।

बगैरिया

– सन्तोषी कुमारी चौधरी

“खेनाइ छुटे त छुटे, संङ नैछुटे”

तिन गोरा बगैरिया छेलै । वोकरौरके कैहयो संङ नैछुटै, एकपान तिन खँर हेबे । कखनो चलै त हराजोरी बाइन्हके चलै । टमाटर बगैरिया, अलहु बगैरिया या पियौज बगैरियाके कैहियोने संङ छुटै छेलै ।

कतौ टहले, बुले जाइछेलै त तिनु बगैरिया संङे सङ जाइछेलै । सिरुवा धाम, कोसी धाम,बाबा धाम तिनु बगैरिया मिलके जाइछेलै । कोनो काम करैछेलै त तिनु गोरा मिलके करैछेलै या काम उधैसके करै । एकटा बगैरियाके समस्या परैछेलै त दुनु बगैरिया मिलके उपाय लगाइछेलै । यि तिनु गोरा एक दोसरके बहौत असल बगैरिया छेलै । सबदिन तिनु गोरा मिलान कैरके रैहैछेलै ।

“यै आधुनिक जमानामे लोकसब घर बैठल संसार देखेछै । तोहे हमे कुपाके बेङ कुपैमे रहबिही ? यै खेतबारीमे जनमल्ही, हुर्कल्ही, फुलाइलही, फरलिही या हप्कुनिया, छछ्कुनिया, ठेङहुनिया गुरकुनिया दैत घुमैचिही त यैहै बारी भैर । लोक दुनियाँ देस घुमैछै । आपनौरके चल घुमैले ।” कैहके टमाटर दोसर बगैरियाके कहल्कै । अलहु या पियौज बगैरिया घुमैके नामे खौब खुसी भेलै । हँ हौ ! बगैरिया जाइये परतै घुमैले । कैहके तिनु बगैरिया योजना बनाइल्कै । योजना बनाइत बनाइत राइत भेलै त सुइत रहलै ।

बडका भिनसरै मुर्गा डाँकमे तिनु बगैरिया खुरखुर्याके उठलै त अन्हारे छेलै । झडाझपटा फिरल्कै, मुहकान धबाइल्कै, कुर्रा अछुवाइन करलल्कै, छतालाठी ओरियाइल्कै । तातकमे फट फट बिहान भेलै । तखनिसे लरैत लरैत तिनु बगैरिया घुमैले चैल देलकै । घुमतै घुमतै यै नगरसे वै नगर गेलै । थाकल लाइग जाइ त जिराइछेलै या फेर लरैले लागैछैलै । तिनु बगैरियासब लरैत लरैत सहर पुइग गेलै । सहरके टलक मलक झलक देखके तिनु बगैरिया भुलभुलैया संसारमे भुइल

गेलै । सहरमे जतहेक लोक लरैछेलै ततहेक कनकी बर्का बोस, मोटरसब चलैत देखल्कै । रमहिलरा देखल्कै, वोइमे हिलैले निक लागलै त यहैठिना रह ! आपनौरके सबदिना यै रमहिलरामे हिलैत रहम कैहके एकटा बगैरिया कहल्कै । यहैठिना रहनेसे नैहेतै चल और घुमैले, देस दुनिया देखैलेछै कैहके दोसर बगैरिया कहल्कै ।

तिनुटा बगैरिया घुमैत घुमैत वै जगहसे दोसर जगहमे पुगलै । जाइते जाइते कनङ भेलै कनङ टमाटर पिच्छैर खसलै त गुरैकके रोडमे पुइग गेलै । टमाटर बगैरिया उइठके चट्टदबर कातमे आबैले नैसकल्कै । सनासैन बोस मोटर चलै छेलै त पिच्छैरके रोडमे पुगलाहा टमाटर बगैरिया वोहैठिना बोस मोटरबाटे चिप्यागेलै । टमाटर बगैरिया वैहैठिना मोइरगेलै ताब त अलहु या पियौज दुइटा बगैरिया दुःखी भ्याके कानैछेलै । कानैत कानैत दुनु बगैरिया लैट गेलै त हराजोरी बाइन्हके टुगरैत टुगरैत वैठामसे चैलगेलै ।

एक गोरामे डर, दुई गोरामे भर या तिन गोरामे जतेमन तते चल । आब त दुइये गोरा चिही, तोहे हमर भर या हमे तोहर भर, कैहके अलहु या पियौज दुनुगोरा बगैरिया सुख दुखके बात करैत करैत घुमैछेलै । घुमैत घुमैत एकटा मन्दिरमे भगवानके दर्सन कैरके घुइरके आबैछेलै । आबैत आबैत ढर्काह बाटमे एकटा बडका टरक अलहु बगैरियाके चिपके माइर देल्कै । ताब त पियौज बगैरिया टुगर भ्यागेलै । अहैरिया गौहैरिया कौइयो नैछेलै, पियौज बगैरिया ओंगहैरिय द्याद्याके वोहैठिना लेरपोटा भ्याभ्याके खौब काने लागलै । वैठिना पियौज बगैरियाके लोर पोइछ दैबाला, वोकर दुःख पिर सुइन बुइझ दैबाला कोइने छेलै । कोइने सुनैछेलै तैयो पियौज बगैरिया असगरे कानै या बाजै, हम टुगर भेलियै । हमर दुःख सुख सुनैबला यै दुनियाँमे आब कोइ नैछै । पियौज बगैरिया पैहनेका बात फेर फेर सोंचै छेलै या आपनै आपनै बाजैछेलै । टमाटर बगैरिया मोरलै त अलहु या पियौज दुनु बगैरिया मिलके काननियै या अलहु बगैरिया मोरलै त हम पियौज बगैरिया असगरे लेरपोटा भ्याके कानैचियै । आब हमे पियौज बगैरिया जे मोरबै त के कानतै ? कैहके पियौज बगैरिया चिन्ता फिकिरसे बाइज बाइजके कानैछेलै ।

कानैत कानैत पियौज बगैरिया लैट गेलै, तैयो वोकर मन सान्त नैभेलै । पियौज बगैरिया फेरफेर फर्नाइ छेलै, हम मोरबै त के कानतै ? हम मोरबै त के कानतै ? हम मोरबै त के कानतै ? हमर मोरनमे कानैबला कौइ नैछै । पियौज बगैरिया और जोरसे हुँकैर हुँकैरके बेसी कानैछेलै । लगैबाटे लोकसब सोकसोक खोहाइँ खोहाइँ लरैछेलै तैयो पियौज बगैरियाके बोलीमे कोइयोने कानबात दैछेलै । घटनाभ्याके टमाटर या अलहु दुनुटा बगैरियाके अकालमे स्वर्गबास भेलै त बगैरियासबके बिसराइले पियौज बगैरियाके बडा कठिन परल छेलै ।

बगैरियासबके मोरनसे पियौज बगैरिया टुगरभ्याके सोकसे बेसक भ्या गेलछेलै । वोहै बखतमे उपरका भगवान देखलकै, तिनु बगैरियाके बडा मेधहा मिलान छेलै । दुइटा बगैरियाके मोरनके सोकमे परलाहा पियौज बगैरियाके दुःख देखके भगवान आकासवानी पठाइल्कै, “हे ! पियौज, तोहें टुगर नैचिही, बेसी दुःखी नैहेबै, आब नैकानै । हम भगवान चियै, सबके समान नजरसे देखभाल करैचियै । तोहें मोरबिही त तोहर मोरनमे कानैबला बौहौत लोक छौ । तोरा जे काटतौ, जे मारतौ, उ आपने कानतै । येह्या बात भगवानके तरफसे तोरा बरदान भेलौ ।

आकासवानीसे कहलाहा अतहेक बात सुइनतेमातर पियौज बगैरियाके मन कुछ सान्त भेलै, पियौज बगैरिया एकरती हुबगर भेलै । दुःखसे भुख भारी, दुःख एकरती कम भेलै त खेनाइ दिसर मन गेलै । पियौज बगैरिया खेलकै पिलकै कनहिक बलगरभ्याके असगरे सहरसे लुटुरलुटुर लरैत लरैत सहर बजारसे गाँमदिसर चैलदेल्कै ।

वास्तवमे जे कोइ जखने पियौज काटैछै सेकोइ तखैनियें कानैछै या त तकर आँइखसे लोर गिरबे करैछै ।

खिस्सा खतम ।

बाँनर बनरनी

–सन्तोषी कुमारी चौधरी

एकटा सुन्दर गाँम छेलै । सुन्दर गाँम देखैयेटाले सुन्दर नै बलकी वैठिनाके वातावरनो असल छेलै । वोइ सुन्दर गामके बाधमे बाह्रो मास एकटा लदी (गबी) बैहैछेलै । गाँमके लगैमे एकटा बहौत झौकसल बोन छेलै । वोहै बोनमे खौजरी, दतरङ्गा, जौम लखा बहौत किसिमके बोनैयाँ फलफुल छेलै । वोहै बोनमे बहौत बाँनरसबके बास सेहो छेलै । वोतहेक बाँनरसबमे दुइटा बाँनर बनरनीके बड मिलान रहै । बाँनर बनरनी हरदम मिलान कैरके रहैछेलै । बाँनर जते जाइछेलै ततै बानरनीके पौछ लगाल जाइछेलै ।

बाँनर बानरनी तरैपके यैगाछ तरैपके वैगाछ, लटकैत फटकैत घुइमते फिरते रहैछेलै । बोनमे एकटा बर्का जौमके गाछ सेहो रहै । बडी ढाङ जौमके गाछमे जौम सिसरीघुघरी झोंखे झोंख फरल या पाकल छेलै । वोइ गाछके पाकल पाकल जौम देखके बाँनर बनरनीके खाइले मन लाग्लै । ताब बुढवा बाँनर जैयो नै सकैछेलै तैयो लटैक लटैकके गाछमे चढलै या जौम खाइले लागलै । बुढिया बानरनी कोनो उपायसे गाछमे चढहैले नैसकल्कै ।

भुख्याल बाँनर पाकल पाकल जौम तोइर तोइर खाइछेलै । बानरनी गाछके तरसे बाँनर दिसर उपरमाथे टुकटुक ताकैछेलै । बाँनर चटचट पाकल पाकल जौम तोइर तोइर खाइछेलै या आँठी गिर्या दैछेलै । हमरा जौम खस्या देलक की कैहके बनरनी चट्ट दबर बिछके ताकैछेलै त आँठी देखैछेलै । काइयो दाइब गिर्या दैछेलै त आँठी । हमरो जौम गिर्या दे कैहके बनरनी बाँनरके कहैछेलै । बाँनर जौम तोइरके अपना खाइछेलै या बनरनीके खाइले नै गिराबै छेलै । एकछनमे बानरनी फेर जोरसे कैहैछै, हमरो एकटा जौम गिर्या देने । बनरनी चटचट उपर माथे ताकै के ताकै करैछेलै । जौम खाइत खाइत बाँनरके पेट भोरल जाछेलै या येने गाछके तरमे बनरनी सेप घोइट घोइटके ताकैके ताकैछेलै । वैहनङ करैत करैत गाछके

तरसे उपरमाथे ताकैत ताकैत एकटा फर जौमके आँठी बानरनीके नाकमे ढुइक गेलै । बनरनी बाप बाप करे लागलै । आरे बा ! हमर नाकमे जौमके आँठी ढुइक गेलै ! कनङके निकालबै आब ? नाक छिँ छिँ करै । तैयोने बहराइलै जौमके आँठी । ताब बनरनी काने लागलै । बाँनर गाछसे धल कुइदके हेटहेलै । ताकलकै त देखल्कै साँचे बनरनीके नाकके भुङरामे जौमके आँठी लस्कल छै । बाँनर बनरनीके लेल बौहौत उपाय लगाइल्कै महज बनरनीके नाकमे लस्कल जौमके आँठी निकालैले नै सकल्कै । बनरनी वोहैठिना कानैत कानैत लैट गेलै । भगवान ! भगवान ! बनरनीके बच्या दे भगवान ! कैहके बाँनर भगवानके पुकारैत कौरना करे लागलै ।

छैत घरी मैत नैफुरलै

दोसरदिन कुनो उपाय लागतै कि कैहके बनरनीके ल्याके बाँनर गामदिसर गेलै । गाँममे बौहौत लोक बौहौत उपाय देखैल्कै । बहौत उपायमेसे एकेटा उपायसे समस्या समाधान हेतैजखा लगलै । से उपाय छेलै लौवालग ज्याके बनरनीके नाक चिरके नाकके भुङरामे लस्कल जौमके आँठी निकालैले ।

यै टोलसे वै टोल बाँनर बनरनीके ल्याके हप्सिहाँतभ्याके लौवाके घर पुगलै । बाँनर लौवाके देखतैमातर “गौ ! बाबा, हमर बनरनीके नाकैमे जौमके आँठी लसैक गेलछै, निकाइल दहै ने । लौवा चट्टदबर हँ हेतै हम देखैचियै । लौबा निकसे देखकै या कहलकै । नाक चिरदैले त सकबौ महज फेर कहबिही चिरल नाक जोर लग्यादहै । ताब त जोर लग्यादैले नैसकबौ । तैयो बाँनर कर कैरके बनरनीके नाक चिरके आँठी निकाइलदैले लौवाके कैहतै छेलै । रे ! बाँनर, बनरनीके नाक चिरके त आँठी निकाइल त देबौ । पाछे तोहर बनरनी के कुछो हौतो या मोइर जेतौ त हम लौवाठाकुर तोरा दोसर बनरनी कतेसे देबौ ? नै गौ ! बाबा हमर बनरनी नैमोरतै, तोहें बनरनीके नाक चिरके आँठी निकाइल दैहै ने । बनरनीके निक हेतै कैहके बानर फेरो कहल्कै । ताब लौवा लहरनीके पिज्याके ओहैदने बनरनीके नाक चिरके जौमके आँठी निकाइल देल्कै । जौमके आँठी त निकलकै महज नाकसे दरदर लहु बहराइले लागलै । बनरनीके नाकमे मलहन पट्टी बाइन्हदैले यात नाक

जोर लग्यादैले लौवा नैसकल्कै । लहु बहराइत बहराइत बानरनी मुर्छा पैर गेलै । अचेत भेल भेल वोहै दिन वोहैठिना बनरनी मोइर गेलै । ताब त बाँनर वोहैठिना ओंगहैर ओंगहैरके काने लाग्लै । बाँनर काइन काइनके लौवाठाकुरके फौदली केहे लाग्लै,

बनरनी ला की लहनी ला .....

बनरनी ला की लहनी ला .....

बनरनी ला की लहनी ला .....

बनरनी ला की लहनी ला.....

बाँनर कानै या येह्या फौदली फेर फेर कहै, लौवाठाकुरके सुनैत सुनैत अकछ लागलै त, पुछलकै तोरा लहरनीसे काम चल्तौ रौ ? कि करबिही लहरनी ? बनरनी त मोइर्ये गेलौ । खिस्याके ले ल्या जो लहरनी, कैहके लौवा आपन लहरनी बाँनरके द्यादेल्कै । काम लागे नैलागे लहरनील्याके बाँनर आपन चित्त बुझ्हैल्कै या लौवाठाकुर लगसे चैल देलकै ।

जाइते जाइते बाँनर दोसर टोल पुगलै । बाटे कताके मैटखबामे कन्येटा पसनीसे कुम्हरा माइट खोनै छेलै । बानर मैटखबामे कुम्हरा लग गेलै । हौ ! कुम्हरा भैया तोहर कन्येटा पसनी भोंथर छौ । वै भोंथर पसनीबाटे कनहिंके कनहिंके माइट खोनल जाइछौ, लेत हमर यै चोख लहरनीबाटे खोन, चोटैये बेसीसे बेसी माइट खोनल जेतौ । तोहर लहनी चोख छौ महज बलगर नैछौ । टुइट जेतौ त दोसर लहरनी हम कतेसे देबौ ? तैहैसे हम तोहर लहनी नैलेबौ । कैहके कुम्हरा बाँनरके कहल्कै । बाँनर लेकी ले कैहके जबरजस्ती कुम्हराके माइट खोनैले देल्कै । कुम्हरा वोहै लहरनी बाटे माइट खोनै लागलै । माइट खोनैत खोनैत लहरनी टुइटगेलै । ताब त बाँनर वोहै ठाम काने बाजे लागलै । कुम्हरा भार भरिया बन्याके बैहङ्गामे माइट बोइकके घर जाइले लागलै त बाँनर कानते कानते कुमहारसंङे पौछ लागल कुमहारके घर पुइग गेलै । साँचमे बनेलहा टैरगर घैला, डबा, लालफुची बाँनर

कुम्हराके घरमे देखल्कै । ताब त बाँनर काइन काइनके कुमहारके फौदली केहे लागलै,

लहरनी ला कि लालफुची ला.....

लहरनी ला कि लालफुची ला.....

लहरनी ला कि लालफुची ला.....

लहरनी ला कि लालफुची ला.....

बाँनरके फौदली सुनैत सुनैत कुम्हराके झर्की उठलै या कहल्कै, कथी करबिही लालफुची ? कुम्हार बाँनरके खिस्याके कहलकै । हमर बनरनी मोइरये गेलै, लहरनी छेलै वोहो टुइट गेलै । तहैसे बनरनीके मनपाइर मनपाइरके टैरगर लालफुची लिहारैत रहबै । लालफुची देख देखके रहैले हमरा निक हेतै । दे एकटा लालफुची कैहके बाँनर कुम्हाराके कहल्कै । बाँनरके दुःख सुइनके कुमहारके मामत लागलै आ एकटा लालफुची बाँनरके द्यादेल्कै ।

बाँनर लालफुची ल्याके लिहारैत लिहारैत खुसी हैत बाटे बाट बोन दिसना चले लागलै । जाइते जाइते बाँनर बोनकता रहलहा गुवारके टोलमे पुगलै । एकटा गुवारके ढोङरोमे दुध दुहैत देखलकै । कहैछै, गौ ! गुवार बाबा ढोङरोमे कनहिके दुध आँटैछौ । हमर यै लालफुचीमे बौहौत दुध आँटतौ कैहके बाँनर आपन लालफुची दैलकै । त गुवार नैलेलकै । लालफुची फुइट जेतौ त कतेसे हम तोरा दोसर लालफुची देबौ ? तहैसे हम नैलेबौ तोहर लालफुची । हमरे पुरना ढोङरो बलगर छै, पटकलो जाइछै त नैफुटैछै । तोहर लालफुचीमे दुध दुहैत दुहैत लालफुची फुइटजेतौ त हमर सब दुध भुइँयामे हराइयो जेतै ताब त नै समरलसनक, नै बिछलसनक हेतै सबदुध नास भ्याजेतै । गुवारके बात विचार नैकैरके बाँनर जबरजस्ती आपन लालफुची गुवारके दुधदुहैले द्या देल्कै । गुवार वोहै लालफुचीमे दुध दुहे लागलै । दुहैत दुहैत लालफुचीमे उटुमटुटुम दुध भोइर गेलै । लालफुचीमे बहौत दुध आँटल देखके बानर खौब खुसी छेलै । गुवार लालफुचीके दुध बोइकके गोहालीसे घर लजाइले सिंकमे टाइङके राखलकै । एकछनमे सिंकमे टाङले टाङले

लालफुची फुइटगेलै, सबदुध भुइँयामे हर्यागेलै । हर्याल दुध नै समरल गेलै नै बिछल गेलै, टट्टयाल भुइँया दुध सोइकलेल्कै। देखैटाले टैरगर चिज बलगर नैरहैछै से बात गुवारके बुझ्ध भेलै ।

लालफुची फुइटगेलै त बाँनरके बड दुःख भेलै। बनरनी मोरनके सोकमे लालफुची लिहाइर लिहाइरके जिनगी जिबै कैहके बाँनर सोंचने छेलै । सोंचल बात भङ्ग भ्यागेलै। ताब त बाँनर ओंगहैर ओंगहैरके काने लागलै। काइन काइनके गुवारके दरबजामे फौदली कहे लागलै,

हमरा लालफुची ला की लाल कनियाँ ला... केहे लागलै। बाँनरके बनरनी मोरनके सोक त छेलकै, तहै सोकमे लहनी टुटलै से सोक थपल गेलै, तैकेबाद लालफुची फुटलै से सोक सेहो थपल गेलै। थपै मे थप सोक तिनगुना भेलै। आब त बाँनरके ने बनरनी रहलै, ने लहरनी रहलै, ने लालफुची रहलै ने लाल कनियाँ पाबलकै। गुवार आपन लाल कनियाँ बाँनरके नैदेल्कै । बाँनर फोक्याल रैहगेलै । बाँनर फेर काइन काइनके फौदली कैहतै रैहगेलै-

लालफुची ला कि लाल कनियाँ ला.....

लालफुची ला कि लाल कनियाँ ला.....

लालफुची ला कि लाल कनियाँ ला.....

लालफुची ला कि लाल कनियाँ ला.....

बखरा बाइट के खाइ त राजा के घर जाइ , बखरा बाइट के नैखाइ त डोमके घर जाइ। बाँनर पाकल जौम बखरा बाइटके नैखेल्कै। असगरे असगरे जौमख्याके बाँनरके निसाद पर्लै । बाँनर बनरनीके साथ छुइटगेलै या बाँनर डोम भेलै । खिस्सा खतम ।

बेलकुमारी रानी

–सन्तोषी कुमारी चौधरी

एक राजमे एकटा राजा छेलै । वोइ राजाके रानीके नाम बेलकुमारी छेलै । राजाके या बेलकुमारी रानीके जोडा खौब मिलल रहै । राजा रानीके सन्तानके रुपमे एकटा बेटा जलमलै । रानी राजकुमारके जलम देलकै त राजा बडा खुसी छेलै । दरबारमे राजकुमारके जलम भेलै कैहके राजा भैर नगर ढोल्हा पिटाइल्कै । नगरबासीसब सुनल्कै त सौँसे नगरबासीके लोक खुसी छेलै । नाचगान कैरके खुसी उत्सव मनाइल्कै ।

बच्चा जलमल्हा ६ दिनमे लौवा बाभहनके बोलाइलकै । छबैतिया रानी डगरिन माताके पुजा कैरके बेटाके नाम सित कैहके राखलकै (छठियाहार कैल्कै) । रानी राजकुमार सितके निक नहाइतसे पालनपोसन कैरके हुर्केलकै बढहेलकै । राजकुमार सित हुर्कलै । तैके बाद रानीके गर्भसे मास पुइरके दोसर बेटाके जलम भेलै । पहैलका बेटा राजकुमार सित जलमलै त जनंङ निकनाहाइतसे राजा ढोलहा पिटाइने छेलै । तैहनङ्ग फेरसे दोसरो बेटा राजकुमारके जलम भेलै त नगर भैर ढोलहा पिटाइल्कै । खुसियाली मनाइलकै । दोसर बेटाके नाम बसन्त राखलकै । बेलकुमारी रानी या राजाके सित, बसन्त नामके दुनुटा बेटा कुम्ना कुम्ना मोटगर डटगर टैरगर छेलै । दुनुटा बेटा हुर्कलै त बगैरिया जखा दुनुभाइ दरबारमे खौब कुदै फान्है या खेलाबै । बेलकुमारी रानी आपन दुनुटा बेटाके जैहनंङ तन्की करैत रहैछेलै, तैहनं बगरोके आपन बच्चाके तन्की करैत देखलकै ।

राजा दरबारके घरके चारमे एक जोर बगरा बगरीके खोंता छेलै । राजा रानीके जैहनं मिलान छेलै तैहनङ्ग वोइ बगरा बगरी जोडीके मिलान छेलै । खोंतामे बगराके चाइरटा बच्चा छेलै । बगरा बगरी बडा मेहनतसे अरहा बिछके लाबै आ अपना नैख्याके पैहने बच्चाके खियाबै । ताब पाछे अपना खाइछेलै । बगरा बगरी यैहनं तरहसे आपन बच्चाके पालैपोसै । बगरा बगरी अरहा बिछैके बखतमे एकदिन गुलेतासे चिरै मारैबला सिकारी बगरीके ठिक्याके मारलकै । बगरीके प्रान वहैठिना चैलगेलै । बगरी मोइर गेलै । तैदिनसे बगरा असगरे हप्सिहाँतभ्याके अरहा बिछके बच्चाके पाले लागलै । असगरे बच्चाके पालैले नैसकबै कैहके बगरा दोसर बगरीके खोइजके आनलकै । बगरी लबलबमे बच्चासबके खौब मामत करै । पाछे पाछे बगरीके बच्चा पालैले जतहेक खटे परै, ततहेक रिस तामस उठे लागलै । कोनो

कुछोले बच्चासबके खाइँदखाइँ कर लागल । भैरपेट अरहा खाइले नैदैबे लागलै । लोलबाटे ठोकैच ठोकैचके धरै । कतवोहोक खियाइचियौ त पेट नैभोरैछौ ? केहेन हमहाँतके पेट भेलछऔ कैहके रिस तामससे डेनपाखुर नैबर्हल, बिनउँराख बच्चाके लोलबाटे ठोकैचके खोंतासे धकैलकै निचा गिर्या देलक ।

बच्चासब जहैठिना गिरलै तहैठिन चोट लाइग लाइगके मोइरगेलै । बगरा अरहा बिछके येलै त बच्चासबके खोंतामे नैदेखलकै । भुइँया दिसर ताकलकै त बच्चासब हालत बेहालत अवस्थामे, कोइ कोनौ त कोइ कोनौ मोरल पछरल देखल्कै । बगरीके देखल्कै गालमुह फुल्याके खोंतालग बैठल । मरदके कथिके दरद । बगरी अन्याय करनेछेलै तैयो बगरा एको सवद गाइर माइर नैबाजलै ।

बगरा बगरीके ताल तमेसा बेलकुमारी रानी निकसे देखैत चैल येल छेलै । बगरा बगरीके घटनासे रानी मनोवैग्यानिक चिन्तामे परे लागलै । ओइसबके दर्दनाक दुखान्त घट्ना वोर से पोर तैक बेलकुमारी रानी राजाके निकसे सुनाइल्कै । तैकबाद रानी आपन मनके बात सुनाइले लागलै, आपन यि दुइटा राजकुमार अखनी छोटेछै, होनीसे हम मोइरयो जेबै त राजा स्याहाब दोसर रानी वियाह नैकैरबै । सतमहताइर बच्चासबके बड दुःख दैछै ।

जवानी उमेरमे अखनी नैमोरबिही चिन्ता नैकरै । हम दोसर रानी वियाह नैकरबै, कैहके राजा रानीके चितभरोस देल्कै । राजाके देलहा चित्तभरोसमे रानीके ओतहेक विसवास नैलागलै । रानी दिने दिने मनोवैग्यानिक चिन्तासे लैट चैलगेलै । रानीके मनोवैग्यानिक रोग लागल छेलै तहैसे डाक्टरी उपचार कैरके मनोवैग्यानिक चिन्ता सजाह नैभेलै । रसे रस हुक हुक करैत करैत कठारी लाइगके रानी मोइरगेलै । रानीके काम किरिया बरखी सेहो भेलै ।

पाछे राजाके राजपाट चलाइले समस्या हेबेलाग्लै । राजा दोसर रानी वियाह कैल्कै । राजकुमार सित आ बसन्त दुनुभाइ महताइरबिनाके टुगरभेलै । तैयो छोटैसे ठेकनगर छेलै, काम टहल चट चट करैछेलै । सतमहताइर टहल अर्हाइछेलै त बच्चासब दौरदौरके करैछेलै ताब भैरपेट खाइले पाबैछेलै । सतमहताइर दुनुटा राजकुमारके उच्चकर, खट्बानर, बदमास कैहके राजासङ्गे चुगली लग्या दैछेलै । राजा दरबारसे जाब कोनौ जाइछेलै ताब तहै बखतमे सतमहताइर बच्चासबके मारै, पिटै, भैरपेट खाइले नैदै । एकदिन राजा दरबारमे नै रहै त रानी दुनुटा राजकुमार के खौब माइर मारलकै । भौल,गिदर धरतै मोइरजेतै कैहके सतमहताइर दुनुभाइ सित आ बसन्तके बोनबास भेजल्कै ।

बच्चासब दुनुभाई राजकुमार सित आ बसन्त बोनमे कानैत घुरै । डरसे घर आबैले नैसकै । कानैत कानैत साँझ पैरगेलै । ओकरौके अहैरिया गोहैरिया लोक कोइने

छेलै । दादा ! घुर पजार जारहैये आइग तापबै कैहके भाइ बसन्त दादा सित के कहल्कै । दादाके संगमे आइग पजारैबला झ्ुल चकमै (सलाइ) नैछेलै त भाइके तोंहे यैहैठिना रह कैहल्ककै या अपना गामदिसर आइग मांगैले चैल देल्कै ।

आइग तापैके खातिर भाइके वोनैमे छोइरके गाममे आइबके सित आइग माङ्गने घुरै छेलै । जकर घरमे आइग मांगै छेलै सेहा कोइ अनचिन्हार लोक जहैं तहैं आइग लग्यादेतै कैहके आइग नैदै । आइग मांगैत मांगैत खोंट खोंट अनहार भेलै । हाथ हाथ ने सुझ्है । फेर घुइरके वोनमे भाइलग जाइले नैसकल्कै । वोहै गाममे दादा (सित) यै डेरा वै डेरा आईग मांगैत मांगैत थाइक गेलै । तैयो वोकरा कोइयोने आइग देलकै । सित और दुःखी भ्यागेलै । वोहै दिन दादा या भाइके लाट छुइट गेलै । एक दोसरसे अलग भ्या गेलै ।

सित जै गाँममे आइग मांङगैले येलछेलै तै गाँम पन्चाइतके राजा सबदिन मोरैछेलै त सब सबदिन वोइ गाँमपन्चाइतके राजा फेरल जाइछेलै । तहैदिन गाँमके लोकसब आइग मांगैबला अनचिन्हार लोकके देखल्कै त औझ्का राजा येकरा बना कैहके सल्लाह करल्कै । मोरतै त येह्या मोरतै कैहके गौवाँ लोकसब सहमतिमे वोकरा राजा बन्यादेल्कै । दरबारमे रानीके राजा सबदिन मोरैछेलै मतर रानी नै मोरैछेलै । तैहै रानीके वोइ दिनका राजा सित 'अनचिन्हार लोक' आपन जान बचाइके खातिर राइतके निन नैलाइगके टकटकी लागल छेलै । उ अनचिन्हार लोक राजाके ठाममे रानीसङगे ओंगहैरके सुतलछेलै त रानी सुइतगेलै । घोङ्गरै लागलै । महज राजाके निन नै हैछेलै । चकामे चरहल पुलटी नेसल छेलै । जाब करनिनियाँ राइत भेलै ताब रानीके मुरी से छत्तरबाला नाग बहराइलै । उ नाग रानीके नैडसै छेलै या दोसर गोराके डसै छेलै । नाग जाब वोइ अनचिन्हार राजाके डसैले लागलै ताब राजा चट्टदबरके आपन डाँरसे तरवार घैंचलकै या नागके माइर देल्कै । तहै दिनसे गाँममे सब दिन राजा बनाइत रहैबला समस्या समाधान भ्यागेलै । वोइ राइत राजा नैमोरलै त गाँम समाजके लोक चकित भेलै । गौंवासब राजाके जय जयकार करे लागलै । खुसी से उत्सव मनाइल्कै । वोइ दिनसे जिनगी भैर उ अनचिन्हार लोक (सित) राजा भ्याके राजपाठ करे लागलै । जहै दिनसे राजा भेलै तहै दिनसे राजाके फुर्सद नै हैछेलै । राजपाठ चलाइत चलाइत बहौत बछ्रकेवाद एकदिन राजाके छोटैमे आपन लाट छुटल भाइके याद येलै यि भाइके भेटैले हिक लागलै । हमर भाइ कते छै ? वोनैमे भौल गिदर खेलकै कि जिते छै ? भाइके खोजैबला जुक्ति सोंचल्कै । राजा ढोलहा पिट्याके सौंसे नगर खबर कराइल्कै कि मनुसलोक जतहेक छै सबलोक फन्ना दिन राजदरबारमे आमसभामे सहभागी
हेबे । सौंसे नगरभैर सबलोकके कान कानमे खबर पुगेल्कै । जहै दिन सभा छेलै

तहै दिन सबलोक भ्हैरके आम सभामे सहभागी भेलै । सभामे राजा बाजैले लागलै । सबलोक चुपचाप भ्याके राजाके बोली सुनै । सभामे सहभागी भेल येतहेक लोकसबमे बेलकुमारी रानीके कथा कहैले के जानै चिही ? जानै बला लोक यै मन्चमे आइबके कथा सुना हमर आदेस येह्या चियै, कैहके राजा आमसभामे आदेस देलकै । ओतहेक सहभागीमे बेलकुमारी रानीके कथा कोइयोने जानैछेलै । तहै बखतमे एकटा धनिक लोक खौब जोरसे कहलकै बेलकुमारी रानीके कथा हमर बकरी चर्वा जानै छै । वोइ बकरी चर्वाके नाम गाँमके लोकसब पाँचकौर्या राइखदेने रहै । बेलकुमारीके कथा हम जानै चियै कहतै मातर पाँचकौर्याके बोलहाइट भेलै । पाँचकौर्या मन्चमे गेलै । हर्याल भुतियाल टुगर बेदराके देहहाथ लेरहल घोरहल छेलै । पिन्हलाहा कपरा फाटल पुरान मोइल भ्होइल ढेप्पा साटल छेलै । धियापुता बेदरालोक आमसभामे बहौत लोकके देखके मन्चमे डर से काँपै लागलै । तैयो पाँचकौर्या नामके बेदरा डराइत डराइत बेलकुमारी रानीके कथा केहे लागलै- “एकटा राजमे राजाके रानी छेलै । रानीके नाम बेलकुमारी छेलै । बेलकुमारी रानी टैरगर सुरैतगर ममतगर छेलै । बेलकुमारी रानीके दुइटा बेटा छेलै । जेठका बेटाके नाम सित या छोटका बेटाके नाम बसन्त छेलै । सित आ बसन्त छोटैसे बडा ठेकनगर छेलै । सित आ बसन्त दुनु भाइ छोटे छेलै तैहयै ओकरौरके महताइर (बेलकुमारी रानी) मोइरगेलै । महताइर मोइरगेलै त बाप (राजा) दोसर वियाह कैल्कै । ताब त दुनु भाइके सतमहताइर भेलै । किछ बछ्रके बाद सतमहताइर सित आ बसन्त दुनु भाइके बोनबास देल्कै । बोनबासमे सित आ बसन्त दुनुभाइके लाट छुइटगेलै । तेकरवाद कथी भेलै हम नै जानै चियै । बेलकुमारी रानीके कथा हम येतवेहेक जानैचियै । कैहके पाँकौर्या रुइक गेलै ।” आमसभामे उपस्थित भेलहा सब लोक थपडी बज्याके पाँचकौर्याके स्यबासी देलकै । येतहेक कथा सुइनके राजा पाँचकौर्याके स्याबास कहलकै । “लाट छुटलाहा दाजु भाइ दुनु गोरा सित और बसन्त तोहें आ हमे चिही । भाइ बसन्त तोहें चिही त दादा सित हमे चियौ । तोरा खोजैके खातिरमे हमे यि आमसभा आयोजना करलियै । तहैसे आइ दुनु भाइके भेंट भेलौ ।” यै दुनियाँमे कोइयो लोक हेबे आपन घर परिवारके कथा कहानी (पारिवारिक घट्ना) जानैले परैछै । सित आ बसन्त आपन घरके कथा कहानी जानैछेलै तहैसे दुनु भाइके लाट छुइटके अनचिन्हार भेलो पर फेरसे भेंट भेलै । आबसे दुनु भाइ सबदिन सङ संङ एकेठाम रैहके राजपाट चलाबे लागलै । खिस्सा खतम ।

विध विधना

-सन्तोषी कुमारी चौधरी

गाँमके बहारमे लदी कता एकटा खरहौर रहै । राजकुमारसब सब दिन वोइ खरहौर लगबाटे सिकार खेलाइले बोन जाइछेलै । खरहौरमे विध विधना खरहीके मुरी बाइन्ह बाइन्हके फन्नाके बेटाके फन्नाके बेटीसंङे बियाह हेतै कैहके बाइज बाइजके खरहीके जोडा बान्हैत रहैछेलै । राजकुमार खरहौर लगके बाटबाटे सिकार खेलाइले जाइ त सब सब दिन बुढवा बुढिया (विध विधना)के बाइज बाइजके जोडा बानहैत देखैछेलै । विध विधना बुढवा बुढियाके रुपमे सबदिन नरभुमिके लोकके जोरालगाइत रहैछेलै । यि बुढवा बुढिया विध विधना चियै कैहके राजकुमार नै चिन्हैछेलै । एकदिन राजकुमार लगमे ज्याके बुढुवाके पुछैछै, गौ ! बाबा येहेन टटैहया रौदमे सब सब दिन बाइज बाइजके दुनुगोरा बुढवा बुढिया कथि करैत रहैचिही ? बुढुवा चट्टदबर कहैछै, रौ ! बौवा जोडा लगाइचियै । फल्नाके बेटा फल्नीके बेटीसंङे बियाह हेतै । बुढुवाके कहल यि बात राजकुमारके फिस्यौर लागलै त ले कह बाबा गौ ! हमरा ककरसङ्गे वियाह हेतै ? वोते गाँमके बहारमे धोबिया धोबिनके घर छै । वोकरे बेटीसङ्गे तोरा बियाह हेतौ बुढुवा चट्टदबर राजकुमारके कहलकै । यि बात सुइनके राजकुमार खिस्यागेलै । मनैमन सोंचै हम कहाँके राजकुमार, उ कहाँके अछुत जाइतके बेटी केनं बियाह हेतै ? बियाह भाइये नैसकतै कैहके तै दिनसे राजकुमारके रिस उठलछेलै । रिस अहम घमन्डसे तै दिनसे वोइ धोबिया धोबिनके बेटीके मारैले राजकुमार पिछाकरे लागलै । नौवावस्तर खारकैरके लदीमे लज्याके धोबिया धोबिन नौवाँ धबाइछेलै । कलौवा बखतमे धोबियाके बेटी महताइर बापके कलौ पुगाइले लदी दिसर जाइछेलै । तहै बखतमे सुनसान बाटमे धोबियाके बेटीके पकैरके राजकुमार तरवाइरबाटे वोकर कन्ठमे चिरके (काइटके) माइरके लदीमे भँसिया देल्कै । भाँसल भाँसल यै नगरसे दोसर नगरके ऐरियामे अर्रा लागलै ।

राजकुमार धोबियाके बेटीके माइरके फेकदेलियै कैहके बडा खुसी भेलै । आब त हमर वियाह येहेन अछुत जाइतके बेटीसंङे नैहेतै कैहके मनै मन सोंइचके खुसीसे गदगद छेलै ।

विध विधना बुढुवा बुढियाके रुपमे सब सबदिन भैरदिन खरहौरमे जोडा बाइन्हके साँझके उँरल उँरल आपन गृहिबासमे जाइतखिन लदी कताके साँथमे अर्रा लागल मुर्दा देखलकै ।

रह ! रह ! आरे बा ! यि बडा सुन्दर छौरी मुर्दा भेलछै । येकर भाग तकदिर जोर छै, भागमैत छै, भविस्यमे रानी हेतै येकर करमकपार तकदिरमे लिखलछै, कैहके बुढिया वोइ मोरल मुर्दा छौरीके केहनोके हेबे जियाबैयैले परतै कैहके जियाइले बुढवाके लगाइलकै । वोइ छौरीके जियाइले विध विधना आपन कङगौरिया औङरी चिरके लहु चट्यादेलकै तैकेबाद वोइ मोरल मुर्दाके जिपर्लै, चोटै उ मोरल मुर्दा छौरी खुरखुर्याके उठलै या लदी कता कानल घुरै । वोहै बखतमे लदी कता बाटे माइट खोइनके कुम्हार कुम्हैन चैलआबै छेलै त छौरीके हफानभ्फफ कानैत देखलकै । दैया ! तोहें यै लदी कातमे कथिले कानैचिही ? तोहर घर कते छौ ? तोहे ककर बेटी चिही ? हमरा कह, हम तोहर घर अर्याइत देबौ कैहके कुम्हार पुछलकै । हमरा किछो थाहा नैआइछ कैहके छौरी काइन काइनके कहल्कै । ताब कुम्हार कुम्हैन वोइ छौरीके आपन घर ल्यागेलै । कुम्हार कुम्हैनके सन्तान नैछेलै । आपन कोइखके बेटीजखा वोकरा मामत कैरके पालल्कै । कुम्हार कुम्हैनके बेटी बडा बुधियार छेलै । टोल परौसमे सखिसब सङे बडा मिलान छेलै । जज बर्है तत बडा टैरगर भेल जाइछेलै । गाँममे कुम्हारके बेटी सबसे असल रहै । जाब बेटी जवान भेलै ताब सबके नजर परे लागलै । यै गाँम वै गाँमके दुरासब देखे याबै लागलै ।

राजकुमारके वियाहले लौवा बाभहनके कन्याँ खोजैले राजा आर्हैत देने छेलै । लौवा बाभहन कन्याँ खोजैत खोजैत यै राजसे वै राज गेलै तैयोतक छनगर कनियाँ नैभेटल छेलै । एकटा गाँममे राज दरबारके रानी बनैके छजैबाली सनकके छौरी देखल्कै । लौवा बाभहन खोजिनिती कैल्कै । उ छौरी कुम्हार कुम्हैनके बेटी छेलै । लौवा बाभहन कुम्हारके घर गेलै या बसघरामे बैठके करकुटुम्ब जोरैबाला निकबेजा गफसरक्का करेलागलै । हमरौके यै राजसे वै राज सौंसे दुनिया राजकुमारके बियाहले कनियाँ खोइज सकलियै महज जेहेन खोजै चियै तेहेन कनियाँ कतौ नै देखलियै । हमरौके जेहेन खोजै चियै तेहेन टैरगर गरहनगर छनगर छिमछिमाइर सबसे असल तोहर बेटीके देखलियौ । तोहर बेटीके बियाह राजकुमारसंङे कैरदहै, कैहके लौवा बाभहन कुम्हारके कहल्कै ।

आरे ! बाफरे ! बा ! हमरौके गरिब लोक राजकुमारसङे ढोल बज्याके बेटीके बियाह कैरदैले नैसकबै कैहके कुम्हार जवाफ देलकै । राजकुमारके जोरा तोरे बेटीसंङे मिलैबला छै, दुनु चुइह्ल डाइहके राजकुमारके बियाह राजा साहेब कैरदेतै, तोरौके बेटी दहैने, तोहर पाँच पैसा खर्चा नैहेतौ, कैहके कतहेक कहैत कहैत कुम्हार कुम्हैनसङे बात मिल्याजुल्याके लौवा बाभहन उप्यापतर कैरके कथा बान्हल्कै या लगनके दिन ठेकल्कै ।

राजाके घरमे मोटियाके दु:ख ?

हप्तादिनमे बियाहके सरसमान सबचिज ओरियाके राजकुमारके बियाहके लेल राजदरबारमे तयारी भ्यागेलै । राजकुमार हाथी घोडामे बरियात सज्याके ढोल बज्याके बियाह कैल्कै । राजा दुनु चुइह्ल डाइहके कन्नाइतके समाजके बियाहभोज खियेल्कै या कनियाँके बिदागरी कैरके दरबारमे सिरदुवार लगाइलकै । लब लब भर्खर बियाह करल कनियाँ बर घरैघर कोहबर घरमे छेलै, कतौ नैजाइछेलै ।

वियाह करल छवेमास बरसदिन भेलै ताब राजकुमार सिकार खेलाइले बोन जाइले लागलै त फेर से वोहै बुढवा बुढियाके बाइज बाइजके फल्नाके बेटा फल्नीके बेटीसंङे बियाह हेतै कैहके खरहौरमे खरहीके मुडीके जोडा बान्हैत देखल्कै । राजकुमार खौब लगमे ज्याके गौ ! बाबा हमरा कहने छेलही धोबियाके बेटीसंङे बियाह हेतौ, हम त बियाह करलियै । धोबियाके बेटीसंङे हमर बियाह नैभेलै । तोरौके बान्हल जोडा नैमिलैछौ । राजकुमारके जवाफ दैत- तोहें हमरौके चिन्हैले नैसकलिही, हमरौके साधारन बुढुवा बुढिया नैचियै । हमरौके विध विधना चियै, सब सब दिन बुढुवा बुढियाके रुपमे जोडा बान्हैत रहैचियै । तों नैपतियाइ चिही ? तोहें धोबियाके बेटीके तरबाइरबाटे कन्ठमे चिरके माइरके लदीमे भँस्याके फेकदेलही सेहा छौरी चियौ । ओकरेसे वियाह कैल्ही । नै पत्याइ चिही त जो ताकहे तोहर कनियाँके कन्ठमे चिरल चेखान हेतौ कैहके बुढुवा कहल्कै । राजकुमार बुढुवा बुढियाके बोली सुइनके छक्क पैरगेलै । वोइ दिन सिकार खेलाइले बोन नैज्याके वोहैठिनासे घुइर गेलै । राजकुमार दरबारमे आइबके आपन कनियाँके कन्ठमे ताकलकै त साँचे चिरलाहा चेखान देखल्कै । तै दिनसे राजकुमार पतियाइलै की बच्चा जलमलहा (६ दिनमे) छठियाहारके दिन विध विधना करम कपारमे (तकदिरमे) जे लिखदेने रहैछै से नैमेटल जाइछै । विध विधना जकरा जकरसङे जोडा लग्यादेने रहैछै तकरा तकरेसंङे वियाह हैछै । खिस्सा खतम ।

बियौहबी बनरी

– सन्तोषी कुमारी चौधरी

"चरहल बरहल जवानी मे जिह पाइन सजवाइन"

राजा आपन वियाहके दिन ठेकने छेलै या खुसीसे गदगद छेलै । सब सब दिन राजा आपन वियाहके दिन गनैत छेलै । मनैमन सोंचै हमर हैबाली दिलके रानी बडा टैरगर छै । वोकरा रानी बन्याके आनबै त यि दरबार अन्हारौमे इं(।जोते रहतै । वोकर देखवा सुनुवा बडा असल छै । यैहनं सोंइच सोंइचके दिन गनैत गनैत वियाहके दिन चैल येलै । राजा बियाह के लेल सबचिज ओर्यासक्ने छेलै ।

वियाहके लगनके दिन ढोल बज्याके धुमधामसे राजा बियाह कैल्कै । रानीके बियाह कैरके आइनके दरबारमे सिरदुवार लगाइल्कै । रानी जातक लब लब छेलै तातक राजा कोहबर घरमे ढुकले रहै छेलै । राजा रानीके खौब मामत करैछेलै । रानी दरबारमे कुनो काम, ब्यवहार करैछेलै त राजाके आदर कैरके करैछेलै । रानी राजाके बोली कहियोने मारैछेलै । राजा जे कहैछेलै से काम रानी सरासैरके कैर लैछेलै ।

एक टाङ, एक टाङसे दुई टाङ

दुई टाङसे चाइर टाङ

वियाह करैछै त बेटाबेटी जलमाइके लौलसा सबके रहैछै । तैहडं लौलसा छेलै राजाके । वियाह कैलहा पाँच बछर बितगेलै तैयो तैक राजाके धियापुता नैजलमल छेलै । रानी बाँझ बैहला छै कैहके राजा रानीके नैनिक बोली बचन लगाबे लागलै । राजा हरदम हरदम रानीके उलह्रे ठेसरे करैत रहै । रानीके बोली बचन लग्याके कहुँ सन्तान जलमतै ? सन्तानके खातिरमे राजा दोसर वियाह करैले सोंचल्कै । दोसर वियाह नैकरै कैहके रानी राजाके बारबार हाँटै छेलै । रानीके हाँटला पर भि राजा कहियोने मानल्कै ।

सन्तानके खातिरमे राजा आपन खुसीसे दोसर वियाह कैल्कै । बियौहबी रानीसे दोसर धौरबी रानी मोटगर डटगर पुठगर छेलै । छोटकी रानीसे सन्तान जलमतै कैहके राजा सोंचने छेलै महज दोसरो वियाह कैलहा पाँच बछर बित गेलै तैयो दोसरो रानीमे धियापुता नै भेलै ।

रजाके घरमे मोटियाके दुःख ?

भोरलपुरल दरबारमे राजाके सन्तान नै छेलै । तहै खातिर सुनरी, मोटगर, डटगर, पुठगर कुमारी कनियाँ वियाह करैत-करैत सोरैटा छोटकी रानीसब राजा वियाह कैरसक्ने छेलै । दरबारमे रानीसब अजमज छेलै । महज कोनोटाके कोइखसे सन्तान जल्मैबला छाँटकाँट नैछेलै । सन्तान बेगर राजाके सुरखी उदास छेलै । वोहै बखत दुवारमे भिखमंगा पन्डाबाबा येलै । याल ग्यालके आसविनो करैले छोटकी सुनरी रानीसबके कोनो मतलब नैछेलै, कोनो लौलसा नैछेलै । बियौहबी जेठकी रानी पन्डाके भिख देल्कै । पन्डा भिख ल्याके हाथ उठ्याके कहैछै, जिनगी भैर खुस रिहे, लछमैनिया तोहर कोइखसे धियापुता जल्मैके लछन देखैछौ ।

छोटकी रानीसब टिकली, झोफा, तेल, सिनुर, काजर, अल्ता, ठोरलाली लग्याके चिकनपाटी कैरके पिहपिह भेल रहैछैलै । जखनी तखनी राजाके लोभाइने रहैछेलै । जेठकी रानी निफिकिरसे भैरतार खाइछेलै भैरबुता करैछेलै । हिरभिर जेठकी रानीके सिर । सहँजै सहँजै एकदिन जेठकी रानीके बोखार लागलै । ओछरे बोकरे लागलै । खाइ पियैले नै मन लागे लागलै । नोनगर, तेलगर, माछमौस किछो चिज खाइछेलै त चित्तमे नैरहै । उल्टी भ्या जाइ ।

"यैकान वैकान बयाबान"

जेठकी रानी दोजिबाइह भेलछै कैहके सौंसे दुनिया घोलमघोल भेलै त छोटकी रानीसब येने गुदुरफुसुर वोने गुदुरफुसुर करैत रहे लागलै । जैहियासे जेठकी रानी दोजिबाइह भेलै तैहियासे छोटकी रानीसब कुचाइल चले लागलै । मास पुइगके बच्चा जलमतै तातैकमे छोटकी रानीसब कुबुइध सोंइच सक्ने छेलै । अन्हैरिया पखमे अन्हार खोंट खोंट राइत छेलै । वोहै राइत जेठकी रानीके जलम दरद हेबे लागलै । तहै बखतमे वोकर लगमे जानै, सुनै, बुझैबाली एकटा डगरिन एल छेलै या अखापखा चारुकता छोटकी रानीसब ढेठौर लाइगके टुकटुक ताकै छेलै । जाब जेठकी रानीके जोरजोरसे दरद हेबे लागलै ताब छोटकी रानीसब कुचाइल करे लागलै । छोटकी रानीसब मिलके हबर हबर जेठकी रानीके मुरी पकेरके कोइठके मुहरामे ढुक्यादेलकै । बेटा बेटी जलमबो करतै त ने देखतै ने सुनतै । चोटैये जेठकी रानी छोहाई छोहाईके जेमा बेटा जलमाइलकै महज हमे कथी जलमाइलियै कैहके वोकरा किछो थाह नै भेलै । छोटकी रानीसब कुचाइल कैरके लाइर पुरैन लागले दुनु बच्चाके चेथरामे ओझर्या पोटर्याके दौडैत ज्याके

कुम्हार कुम्हैनके अबाके कोही पतलीमे ढुक्या ढुक्या देलकै । जैसे यि बच्चा डैहजेतै मोइरजेतै कैहके । आ वोहैठिना फुटल भाङ्गल बसना, घैला, डबाके कान्हखापट आइनके जेठकी रानीके लगमे राइखदेल्कै । तकरबाद कोइठके मुहरासे रानीके मुरी बहार कैरदेल्कै या खिस्याके कहल्कै ले देख, अल्छाही...तों त येह्या कान्ह खापट जलमाइलही राजा सुनतौ, देखतौ त की कहतौ...? कि करतौ...? कैहके छोटकी रानीसब गरियाबे लागलै ।

जेठकी रानीके कोइखसे जलमल सन्तानके देखैले राजाके बोलाइट भेलै । राजा येलै देखलकै... देखतै मातर चक देखके भक लाइग गेलै । राजा भक्व्याल छेलै । लौलसा छेलै सन्तान देखैके मतर जेठकी रानी कान्हखापट जलमाइने देखते मातर राजाके मन बिगैर गेलै । कहैछै तोहर कोइखसे जलमल सन्तान... येह्या चियै सन्तान ? राजाके मन बिगरल देखके छोटकी रानीसब और टिहैक टिहैकके जेठकी रानीके सरापे लागलै । राजा कहलकै तोरौरके सान्त भ्याके रह, हम येकरा उपाय लगाइबै । दोसर दिन पराते पहर राजा गामके बहारमे छपरा बनाइले आर्हैत देलकै । जाब छपरा तयार भेलै ताब जेठकी रानीके नाक, कान, झोइट काइटके सजाय देलकै आ वोकरा असगरे दरबारसे वोइ छपरामे बैलाइल्कै । दुई दिनके छबैतिया, भैरनौवा गाइरमे लहुलागल कस बहै, अब्बल सरिर, हकनलोरे कानै छेलै, थरथर काँपै छेलै, अगामाथे लरैले डेग नैउस्कै, तैयौ राजाके मामत नैलागलै जेठकी रानीके दरबारसे बैलाइबे कैल्कै ।

गाँमके बहारमे अहैरियाने गोहैरिया, अरौसियाने परौसिया कोइने । छपरामे जेठकी रानी असगरे जैयो नैसकै तैयो खुदुरबुद्रु सिझ्ह्याके जिजानके खातिर खेनाइपिनाइ खाइछेलै या रहैछेलै । कखनो आपनै आपनै बतहैनी जखा बरबर बाजैत कानैत रहे लागलै । दरबारमे हम राजाके किछोने हराइलियै बिराइलियै तैयौ हमरा राजा सजाय देल्कै कैहके मनपाइर पाइरके जेठकी रानी कानैछेलै । रानीके दु:ख दरद सुनैबला कोइने छेलै, लोर पोइछ दैबला, चित भरोस दैबला कोइने छेलै । जेठकी रानी बिरहैन गाइब गाइबके आपन चित आपनै बुझाइछेलै ।

रजाके भितरी कठोर ...टपटप गिरैये लोर...

छपरामे बास ...भगवानके आस...

किया हो भगवान...! हमर दु:खदरद देख...

निर्दोस हमे भोगैचियै सजाय...दोसीसब करैछै राजपाट...

कुम्हार कम्हैन बासन अबा लगाइने छेलै । घैला, डबा केहेन केहेन पाकलै कहैके ताकेगेलै त देखैछै अबामे सबकता निके पाकल छेलै आ एककता आइग नैसुनगल

छेलै । कुम्हार कुम्हैन दुनुगोरा अबाके लेब उघाइरके देखलकै त कोही पतलीमे लाइर पुरैन लागले बच्चा छेलै । देखतै मातर कुम्हार कम्हैन उल्लफुल भेलै, दुनुपरानी भगवान ! भगवान ! ! भगवान ! ! ! करेलागलै । बेस ढैरगेलै तैयो हमरौके कोइखसे बच्चा नैजलमल छेलै । आई नजैर उठ्याके भगवान हमरौके बच्चा देलक, हाइ ! भगवान ...! धैन भगवान...! कहैत कहैत दुनुटा बच्चाके घर ल्या लाबल्कै । कुमहार कुमहैन दुनुटा बच्चाके गुँहथीमुहँथी, सेवाबर्दाइस कैरके जतनसे बरहाइलकै । दुनुटा बच्चा अङना दरबजामे कुदै फान्है उछरै काठके घोडा खेलाबै । कैहयो टोल परौसमे खेलाबै त कैहयो काठके घोडा खेलाइत खेलाइत राजाके पोखैरमे चैल जाइछेलै । राजाके पोखैरमे एकदिन छोटकी रानीसब अस्लानधियान कैरके पोखैर महारमे रौद तापैत रहै । वोहै बखतमे कुम्हार कुम्हैनके दुनुटा बेटा काठके घोडाके राजाके पोखैरमे पाइन पियाइले येलै । दुनुटा बच्चा आपन-आपन काठके घोडामे चरहल छेलै या एक्के स्वरमे कहैछै -

काठके घोडा सिकीके लगाम

घोडा पाइन पी ...घोडा पाइन पी ...

काठके घोडा सिकीके लगाम

घोडा पाइन पी ...घोडा पाइन पी...

दुनुटा बच्चाके बोली सुइनके छोटकी रानीसब ठठ्या ठठ्याके हाँसै या दुनुटा बच्चाके कहलकै बौवा ! तोरौके अमहक चिही ? लेलटाह चिही ? लेलबारे चिही ? काठके घोरा कहुँ पाइन पितै ? पाइन नैपितौ तोहर घोडा ।

चट्टदबर दुनुटा बच्चा एक्केदाइब कहैछै हँ... हँ... हँ ... देखही हमर काठके घोडा पाइन पियैछै कि नै ? देखही त ! पियासल हमर घोडा घटघट पाइन पियैछै ।

“अनरित के रित आ बानर गाबे गित”

लोक कहुँ फुटल बासनके कान्ह खापट बच्चा जलमाइछै ...? राजाके दरबारमे जेठकी रानी कान्हखापट जलमाइल्कै तोरौरके त देखलिही, देखैबाला तोरौके छेलही । यि बात कतेक पत्याइबाला चियै ? जोहोने पत्याइबाला सेहो पत्याइलै, राजा पत्याइलै और प्रजासब सबकोइ पत्याइलै । मतर हमरौके दुनु भाइ नैपत्याइ चियै ।

दुनुटा बच्चाके बोली, कहलहा बात सुइन सुइनके बिजलीके झटका लागल जखा चमैक चमैक उठलै । छोटकी रानीसब । उ ओकर मुहमे ताकै, उ ओकर मुहमे ताकै । मुह तकातकी कैरके छोटकी रानीसब गुदुरफुसुर करे लागलै । एकटा रानी

कैहैछै, आरे ... बापरे ... बा...! राजादरबारमे आपनौरके गुपचुपे कैलहा काम अगरजानी जखा यि बच्चासब जानैछै। उघार कैरके घोल कैरदेतौ त आपनौरके योजना भङ्ग भ्याजेतौ, आपनौरके बेज्जत हेबही तैहैसे यै दुनियाँमे यि दुनुटा बच्चाके जिवित नैरहे दैले, अखैनियैसे जुइत बुइध लगा। तहाँ ने रहतै बाँस ने बाजतै बौंसली। जुइत बुइध लग्याके दोसर दिनसे छोटकी रानीसब भगल काछने छेलै। जैयोने जरबोखार तैयो खटपरन देने रहै, बेमारीजखा कठारी लागल छेलै। छोटकी रानीसबले राजा दबाइदारु जोगार करल्कै त रानीसब कहैछै, राजा स्याहाब हमरौके बोखार सैर्याके जैर्याके लागल आइछ। यि बोखार दबाइदारुसे सजाह नैहेतै। राजा स्याहाब एकटा साहसी काम कैरके जाब हमरौले यहाँ सेवाकरे सकबै ताब यि बोखार सजाह हेतै नेत बोखार सजाह हैबला छाँटकाँट नैछै। ताब त राजा छोटकी रानी सबके सजाह करैके खातिर जे करैले परतै से करैले तयार भेलै।

कुमहार कुमहैनके दुइटा बेटा भगवान देने छै। वोइ बच्चा सबके कोढ करेजा खेतै ताबे यि बोखार छोटकी रानी सबके सजाह हेतै।

राजा छ पाँच नै बुझ्हल्कै बस लाइग परलै रानीके बोखारके सजाह करैले। कुमहार कुमहैन बेटा दैले नैमानै छेलै। तैयो राजा जबरजस्ती जतहेक पैसा दैले सकल्कै ततहेक पैसा द्याके बच्चासबके आनल्कै। नोकरचाकर दबिया, झटा, बनुख, तरवाइर ल्याके दुनुटा बच्चाके हाथ पकैरके निकुच बोनमे ल्या गेलै। हमरौरके काटतै मारतै कैहके दुनुटा बच्चाके थाह नै भेलै। तैयो आन लोक पकैरके लजाइछेलै त पछामाथे, घरदिसर या बाप महताइर दिसर घुइर घुइर ताइकके ...हुँकैर हुँकैर...बाइज बाइजके ... हेकैच हेकैचके कानै छेलै। पुरलपारल गाल गरहनगर बच्चासब देखैमे राजकुमार सनक छेलै। उ दुनुटा बच्चाके देखके नोकर चाकरके मामत लाइग गेलै या मनैमन सोंचलकै राजासे आदेस भेलछै यि बच्चासबके काइटके कोढ कलेजा लेने आबहे। कहौं लोकके लोक काटतै ...? लोकके लोक काटैले नैहैछै। येहेन निर्दयी काम नै करबै कैहके नोकरसब दमालहर काइटके बर्काढाङ गाछमे हिलरा लग्या देल्कै। वोइ हिलरामे कनिटा पटहैनी द्याके दुनुटा बच्चाके बैठ्याके साह लग्याके हिल्यादेल्कै। नोकरसब बच्चाके नैमारलकै, नैकाटलकै या छोइरदेलकै। दुनुटा बच्चा हिलरामे हिलैछेलै... हिलैछेलै...नोकर चाकरसब वोइठिनासे चैलगेलै। बोनमे बोनैया चिरैचुरगुनी माइरके, चिरैचुरगुनीके कोढ कलेजा एक मोटरी (तिमन/मासु) राजदरबारमे लेनेगेलै। नोकर चाकरसब जाब दरबारमे पुगलै ताब खुसीसे गदगद भ्याके कहैछै राजा साहेब रानीके खातिरमे दुनुटा बच्चाके माइरके कोढ कलेजा आइन सकलियै।

कोंढ कलेजा (तिमन/मासु) चट्टदबरके नोकरसब भनसियाके जिम्मा देलकै। दरबारके भनसियासब चटपटके मरचाइ, लसुन, पचफोरना, पियौज फरन पक्याके, तेल झम्क्याके कोंढ कलेजा निनहल्कै। ताब रानीसबके परसन, दोहरौन, तेहरौन द्याके अघट्याके खियापिया देल्कै। वोइ राइत रानीसब ख्यापिके निचैनसे सुतलै। दोसर दिन पराते पहर उठलै त छोटकी रानीसबके जरबोखार खौब निकसे सजाह भेलछेलै, खनखन करेलागलै। फेरसे सिङ्गारपेटार करेलागलै। सिङ्गारपेटार कैरके पिहपिह देह दनदन करैछेलै। छोटकी रानीसब सजाह भेल देखके राजा खौब मनगर भेलै।

राजा दरबारके चरबाहीसब (गैबार भैंसबार) राजाके दरबारसे गाइ, भैंस, बकरी छगरी चराइले सबदिन बोन जाइछेलै। एकदिन चरबाहीसब चराइत चराइत निकुच बोन ढुइक गेलै। तहै बखतमे चरबाहीसब बडा मधुरगर गित गाबैत अवाज सुनल्कै। चाकचुक खन येने ताकै खन वोने ताकै, तैयो कोइयो मनुस लोकके नैदेखल्कै। महज मनुस लोकके गलाघता गत लग्याल टहङारल गितके अवाज सुनैछेलै।

हिलैचियै हौ हिलैचियै...हिलरा हिलैचियै हिलरा हौ...

दमालहरके हिलरा हौ ...साह लग्याके हिलैचियै..।

जनेभरसे अवाज आबैछेलै तनैभर चरबाहीसब जाइछेलै त बच्चासब दुरुगैसे चरबाहीके देखलकै, राजाके चरबाहीसब चियै कैहके चिन्हलकै। वोइ निकुच बोनमे चरवाहीसब बच्चाके नैदेखने छेलै नैचिन्हने छेलै। बच्चासब फेर गाबे लागलै-

दमालहरके रसैया विधन्ता ...हिलरा हिलै छै विधन्ता ...

चलिये त याबै छै...मोरा बाबाके गैबार...

चलिये त याबै छै...मोरा बाबाके भैंसबार...

आरौतोरी ! हमर बाबाके गैबार भैंसबार कहैछै। चरबाहीसब अकचकाइये उठलै। के हेतै यी बच्चा...? कोनो देखबोने करैचियै अवाजेटा सुनैचियै। खौब लग बिड्याके गेलै ताब देखलकै हिलरा लागल बडा सुन्दर बच्चासब ! चरबाहीसब हाथ छानै छेलै, या बौवा या, कोरामे बोकबौ... हटहो, चल घर ल्याजेबौ...,साँझ परल जाइछै यै निकुच बोनमे भौल गिदर धरतौ। हमरौरके संङे चल घर कैहके चरबाहीसब कहलकै। तैयो बच्चासब नै हेटभेलै। गैबार भैंसबारके मनमे खुदखुद हैछेलै तैयो गाइ भैंस घरदिसर बटिया देल्कै। हाँकैत हाँकैत ज-ज घरदिसर याबै छेलै त-त वोकरौके मनमे और खुदखुद हैछेलै। हे भगवान ! यै बच्चासबके भैर राइत बचाइने राखहे बिहानके हसहैरी आइबके घर ल्याजेबै। वोइ दिन गैबार

भैँसबार बडा अर्तयाल घर पुगलै । दौडके ज्याके सबसे पैहने वेह्या बात राजाके सुनाइलकै । त राजाके फिस्यौर जखा लागलै, नै पत्याइलै । वोइ दिन चरबाहीसबके सुरता लागलछेलै, भैर दिनका भुखल पियासल तैयौ ख्यालपियल नैगेलै, राइतके निन नैलागलै । यै करौटिया वै करौटिया वोङ्हल वोङ्हल राइत कटलै । जाब भिनसर भेलै, पोह फाटलै, फटफट बिहान भैले । राजा नैपत्याल छेलै, तैयो चरबाहीसबके संङ कैरके हसहैरी वोन गेलै । चरबाहीसब अगा अगा, पछा पछा राजा तै पछा गौँवा लोक हसहैरी जाइछेलै । निकुच वोनमे हिलरा लागल बच्चासब लग ज-ज लगच्याल गेलै त-त गितके अवाज सुने लागलै ।

दमालहरके रसैया विधन्ता....हिलरा हिलै छै विधन्ता....

चलिये त याबै छै.... मोरा बाबा....

चलिये त याबै छै ....मोरा जलम दैबाला बाबा....

राजा नै पत्याल छेलै महज देखतै सुनतै मातर चकित भ्यागेलै । हमर बेटा... तारौके हमर बेटा चिही ? आरे ! बा ! कैहया जलमलै हमर बेटा हमरा थाह, नैछै । यै निकुच बोनमे कनङ येलही तोरौके ? राजा कोरा छानैछेलै त हिलरा और उपरमाथे हैछेलै । हिलरा ज-ज उपरमाथे जाइछेलै त-त राजा हुँकैर हुँकैर कानै लागलै । ताब बच्चासब कहल्कै सत्त कर । जाब सत्त करबिही ताब हेट हेबौ । राजाके सही बात थाह नैछेलै तैंसे छोटकी रानीसबके आनैले आर्हैत देलकै । राजा आर्हैत दैते मातर नोकरचाकरसब दौरके ज्याके छोटकी रानीसबके ल्याके आबैछेलै । बच्चासब दुरुगेसे देखलकै त गाबे लागलै-.

दमालहरके रसैया विधन्ता.... हिलरा हिलै छै विधन्ता....

चलिये त आबै छै.... मैंयाके दुसमनियाँ....

चलिये त आबै छै.... मोरा मैंयाके दुसमनियाँ....

बच्चासबके गाबल गित सुइनके राजाके मन खुदखुद हेबै, उठबैठा करै....। के येहेन कुटिचाइल कैल्कै हमरा किछो जान नैआइछ । छोटकी रानीसबके दुस्मनिया कहैछै कनङ दुस्मन भेलै ....? दुध के दुध पाइनके पाइन छुटयाबैले पर्तै कैहके गाँमके बहारमे छपरामे बैल्या देलहा जेठकी रानीके आनैले राजा चट्टदबर आर्हैत देल्कै । आर्हैत दैते मातर दौरल दौरल हप्सिहाँत हैत जेठकी रानीके छपरामे लेनहारसब पुगलै । जेठकी रानी आपन छपरामे बैठके टुकटुक ताकैत छेलै । तहै बखतमे दौरल येल्हा लोकसब हक्सोफक्सो हैत कहैछै, राजासे हुकुम भेलछै । हमरौके तोरा लैले येलचियौ । जेठकी रानीके जैहनङखे अखैनिये लेनेदेने आबैले राजासे हुकुम भेलछै । हमसब रानीके लैले येल चियै । रानी राजाके नाम

सुन्तै मातर जाइले नैमानल्कै । हमर नाक, कान, झोइट काइटके दरबारसे बैल्यादेलक राजा । हम फेर घुइरके राजासडे नैजेबौ । जो तोरौके चैलजो कैहके जेठकी रानी कहल्कै । ताब त लेनहारसब चल की चल जैहनङके जाइयैले परतो कैहके हाथ पकैरके बलधकेल जेठकी रानीके लजाबे लागलै । बाटमे रानी छयाङ्गब्याङ्ग करैछेलै । हाथ झिटैक लैछेलै । हमरा छोइरदे, राजा और मारत कैहके जेठकी रानी कानै छेलै । जेठकी रानी भैरबाट कानतै गेलै । जेठकी रानी राजालग पुगलै महज वोकरा राजा नैमारलकै तैयो रानी हफानझफान कानैछेलै । बच्चासब जेठकी रानीके दुरुगैसे देखलकै त गाबे लागलै -

दमालहरके रसैया विधन्ता.... हिलरा हिलै छै विधन्ता....

चलिये त याबै ....मोरा मैया....।

चलिये त याबै छै....मोरा जलम दैबाली मैया....

बच्चाके गित सुइनके दुधके दुध पाइनके पाइन बेर गेलै । राजा दसोकल जोइरके सत्तेसत्त करल्कै । एक सत्त, दुइ सत, तिन सत, ब्रह्मा विष्नु महेस सत्त जे हमर कहल नैकरे सेकोइ असी नगर दुरके कुन्डमे ज्याके खसे । सत्त कर्तैमातर बच्चासब हिलरासे सरासैर हेट भेलै । राजाके या जेठकी रानीके टाङमे गोर लागल्कै । तकरबाद छोटकी रानीसब मिलके कुचाइल कैरके जेठकी रानीके सताइने छेलै से बात बच्चासब ओर से पोर तैक कैहके सुनाइल्कै । यि बात पैहने ककरौने थाह छेलै, महज जाब बच्चासब सुनाइलकै ताब सबकोइ सुनल्कै या सबकोइके थाह भेलै । छोटकी रानीसबके कुचाइल बेबहार सुइनके राजा या और सबकोइ चकित भेलै । छोटकी रानीसब गोर, सुरैतगर छेलै महज भित्री कठोर छेलै । तहैसे राजा वोहै निकुच बोनमे गुरगुर गैहँर तरहरा खोनाइल्कै । वोहै तरहरामे दुस्मनियाँ छोटकी रानी सबके धकैल-धकैलके खस्याके माइटबाटे तोइप देल्कै । मटियामेट कैरदेल्कै ।

सुरैतगर सुनरी छोटकी रानीसब मटिया मेटगेलै आब जिनगी रहलै बनरीके ।

जेठकी बियौहबी रानी वछरौ वछरसे गाँमके बहारमे कन्येंटा छपरामे रहैत रहैत ...। लत्ताकपरा फाटल ढेपासाट पुरान मोइल झोइल पिन्हने छेलै । देह लेरहल घोरहल, झोइट (केस) झखरमुरी, छुछेटाङ घिनाहमिनाह खेनाइपिनाइसे सुख्याल टट्याल छेलै । देखतै मातर रानीके देह लिरसिराह छेलै तैयो राजाके लिरसिराह नैलागलै, हमर बियौहबी रानी कैहके बडजोर मामत लागलै । चट्टदबर रानीके भैरपाँज पकैरके राजा कहैछै -

सुरैतगर सुरैतेटासे सुन्दर नैहैछै लोक,

असल विचार से जिनगी सुन्दर हैछै ।

सुरैतगर सुरैतबाली बहौत रहैछै ,

सुरैतबाली सब, सबकोई असल नैरहैछै महज,

असल विचार करैबाली सुन्दर रहैछै ।

राजा दुनुपरानी, दुनु जेमाबेटा हराजोरी कैल्कै या हसहैरी सबकोइ संङे संङ वोइ निकुच बोनसे आबे लागलै । आबैत आबैत भैरबाट निकबेजा गफसरक्का करतै येलै । जाब दरबारमे पुगलै ताब बियौहबी रानीके गाल लाइर लाइरके हम आइ गदगद खुसी चियै । बरसो बरससे हमर जरल लौलसा आइ पुरल । इज्जत भारपन जोगाइबाली तुही चिही । हमरसे बडका गल्ती भेलै । आइ खुगलै हमर आँइख । तोहर कुनो दोख नैछेलौ । हमरा माफ कैरदे रानी । बिना सिङ्गार सबसे सुरैतगर असल तुहीँ चिही । छोटकी धौरबी सुरैतगरही रानीसब गुँह गिजलकै । तहैसे छोटकी रानीसब संगे नैचललै हमर जिनगी । आब दरबारमे जिनगी चलाइबै जेठकी बियौहबी रानी, बनरी सङे । हमर ‘बियौहबी बनरी’ सबसे असल कैहके राजा बियौहबी रानीके कहल्कै ।

रोइजके कैलहा धौरबी सुनरी

सैयाँके लिहारी पियारी

खोइजके बियाह कैलहा बियौहबी बनरी

जुगजुग जिनगी भैरके थेंगरी ।

खिस्सा खतम ।

सतभैया

–सन्तोषी कुमारी चौधरी

“जे विरुवा हरियर से नानहै हरियहर”

गोबरधन छोटैसे बडा रेमरु धिरगर छेलै । गोबरधन आपन महताइर बापके एकेटा सन्तान छेलै । जाब तेह्र बछरके ढेर्वा जवान भेलै बुझहैबला भेलै त बापके हर जोतैले, कोदाइर पारैले सहयोग करे लागलै । किसानके बेटा आपन बापके खेती पातीमे हाथ बढहाबे लागलै । बापके सहयोग करैत करैत गोबरधन खेती किसानी काम करैले इलम बुझने छेलै ।

कच्चा सरिरके कोनो ठेकान नै, छनैमे छनरङ्ग । गोबरधनके महताइर बाप दुनुगोराके बोखार लागल रहै । गाँमके धामी-गुनीसे झारफुक कराइलकै, तैयो सजाह नैभेल छेलै । लोकसब कहैछेलै झारपात दबाइ करबिही त बोखार सजाह भ्याजेतौ । घरायसी उपचार करै छेलै । लोकसब जतहेक बत्याके कहैछेलै तैहनङ्ग तरिकासे दबाइ पिस पिसके बेटा महताइर बापके पियाबै छेलै । तैयो गोबरधनके महताइर बापके बेमारी बिसके उन्नैस नैभेल छेलै ।

गोबरधन असगरे घर करतै कि बहार करतै । कि बेमारी बाप महताइरके सेवा बरदाइस करतै ? असगरे दौरके येने दौरके वोने करैछेलै । तैयो ने काम समटल जाइ छेलै । महताइर बापके टहल टिकोरा कैरके बादमे जतहेक सकैछेलै ततहेक काम करैछेलै गोबरधन । महताइर बापके सजाह करैले अखैनकाजखा दबाइ या डाक्टर वैध तैहका दिनमे नैछेलै । गोबरधन आपन महताइर बापके सजाह करैले हर उपाय लगाइलकै । तैयो तैक सजाह हैके छाँटकाँट नैदेखलकै । दिने दिने महताइर बाप लैटके सैट गेलै, कठारी लाइग गेलै । महताइर बापके हालत देखके गोबरधन सुरता फिकिर कैरके ओसराके खुट्टामे ओढैंकके बैठल छेलै ।

रहनेसे नै रहैछै, करने से हैछै । खेतखोला अपना भैरसाल खाइले पुगैबला छेलै । महज महताइरबापके सेवाटहल करैत करैत फुर्सत नै हैछेलै । खेतबारी उठाइले नैभियाबै छेलै तहैसे गोबरधनके खेत बारी खसल रहैछेलै । खेतमे काम

करैले नै सकै छेलै तैसे अन्न नै उब्जल छेलै । घरमे भेलहा अन (धान, चौर) खाइत खाइत ओर्‍याा गेलै ।

गोबरधन पकठी उमेरके नैछेलै । वोकरा आपन समस्या टारैले बर्का पहार भेल छेलै । तैयो चारुदिसर नजैर पसाइरके विचार करलकै त खेत बेचैसे और दोसर उपाय नै देखलकै । गरज परल छेलै । तहैसे दोसर दिन अढियाढडिया दाममे दुइ कट्ठा खेत बेचके ओइ पैसासे दाइल, चौर, नोन, तेल, मरमसला किनबेसाइहके कोनो धरानी आनलकै । पैदल रस्ता दुरके हाट, गोबरधन लरैत लरैत आपने थाकल पिरारल छेलै तैयो सबसे पैहने महताइर बाप लग ज्याके पाइन पियादेलकै । भनसा घरमे सुनगल गोंइठाके आइगमे सन्ठिके तुती पजाइरके चुइल्हमे आँच सुनगेल्कै ।, चटपटके भन्सा कैरके पैहने महताइर बापके खियाइलकै या आपनौ खेलकै । ख्यालपियल भेलै त महताइर, कहैछै बौवा ! तेल लग्याके टाङमे जाँइत दे । आइके हमर टाङ बड टटाइये ।

गोबरधन जाँइत दैछेलै त महताइर पुछैछै, बौवा ! तोहें आइके कते गेल छेलही ? तोहर चालभाँज अन्गुतियेसे नै सुननै छेलियौ । गोबरधन मनैमन सोंचलकै जग्गा बेचलियै से बात कहबै त चिन्तासे मोइर जेतै । कैहके केबरपट्टा हाट गेलछेलियै मैया गौ । वोने से बाप कहैछै,, बौवा ! तोरा असगरे असगरे फिरकी नाच लखा काम करे परैछौ । तोहर वियाह कैरदैबला उमेरमे हमरौके कठारी लागल चियौ । तोहें आपनेसे जो, माइनजनसे पुइछके छनगर कनियाँ खोइजके वियाह कैर दे कैहे । बेटा पुतौहके आर्सिवाद द्याके खुसीसे मोरबै । पुतौहके देखैले हिक लागल आइछ । वोनङ त येतहेक दिनसे नैमोरैचियौ, नैजियैचियौ, हुक्क हुक्क करैछियौ ।

दोसर दिन गोबरधन परातेपहर माइनजनके भेट कैल्कै । आपन सबबात निक बेजा गोबरधन माइनजनके सुनाइलकै । माइनजन दुरपनियो करै छेलै । कुल खन्दानके गोस्टी फर्याबैले जानैछेलै । यै गाँम वैगामके कर्ताइत कनियाँसब माइनजनके ऐर्याल रहैछेलै ।

गोबरधनके घरके हालत स्थिती देखके सुइनके माइनजन बुढवा छत्ता कन्हामे लटक्या लेलकै, हाथमे लाठी लेलकै या कर्ताइत बर गोबरधनके सङ्गे सङ्ग लेनेगेलै । दोसर गाँमके कर्ताइत कनियाँके घर पुगलै । वैठिना आसबिनो निके

कैलकै । माइनजन बुढवाके बडा अर्त्याल देखलकै त कन्नाइत पुछैछै, कहलजाउ हालखबर माइनजन जी । माइनजन आपन तरफ से बराइत 'गोबरधन' के सबबात वोरसेपोर कन्नाइतके बताइलकै या पाछे कहैछै, याब विचार करु यहाँसब । कन्नाइत विचार कैल्कै, अगापछाके बात सोंचल्कै । खाइपियैलै भैरसाल पुगैबाला जग्गा जमिन बरके आपनै छेलै । गोबरधन एकहुला बरके फाँटबखरा लैबला भाइभैयारी नेछै । बराइत भ्याके बरके सङें लेने दुवार पैसके येल माइनजनके कहल बात कन्नाइत कुटुम स्विकारलकै । लड्का लड्की दुनु तरफसे मन्जुर भेलै । एके दिनमे देखासुनी, उप्यापतर, घरदेख भेलै । लगनके कथा बान्हलकै । दोसर दिन कसकुटी कुमरौन भेलै । तेसर दिन वियाह भेलै ।

ल्याद्याके कनियाँ बर सिरदुवार लागलै । घरमे बेमारसे कठारी लागल महताइर बाप खौब जोरा लागल कैहके बेटा पुतौहके देखके आसिर्वाद देलकै । आपन परिवारमे बडका समस्या देखके कनियाँ बर दोसर दिन हबर हबर घुराफिरी कैलकै । परिवारमे समस्या छेलै तहै खातिर दुरागमन नैकैल्कै । मोटाबारे कनियाँ सौसरा बसैछै से नैभेलै ।

गोबरधन आब दुइ परानी भेलै । बाप महताइरके सेवा टहल या खेतबारीके काम करैले कुछ आसान भेलै । गोबरधनके घरबाली येलै त घर इजोत भेलै । ढहल ओसरा, उखलल अङनामे लेब साइटके निप पोइतके अङना घर ढुरढुर चिकन बनेल्कै । पुतौहके सेवा या निनहल नोनगर, तेलगर, चोटगर ख्याके कठारी लागल महताइर बाप कनहिक टनगर भेलै । महज बेसी दिन नैजिलै । महताइरो या बापो अगेपछे कनहिके दिनके भितरमे ओर्या गेलै । गोबरधन महताइर बापके काम किरीया कैल्कै । आनसाल महताइर बाप दुनु गोराके बरखी सेहो एके दाइब कैल्कै ।

गोबरधन बडा मिलनसार छेलै तहैसे दुनु परानी घरके कामधाम मिलके करैछेलै । गोबरधनके घरबाली भारी भेलै त वोतहेक कामधाम करेले नै सकैछेलै । बच्चा जातक पेटमे छेलै तातक गोबरधन असगरे असगरे घर बाहारके भिरगर कामसब आपनै करैछेलै । मास पुइरके गोबरधनके घरबाली एकटा बेटाके जलम देलकै । वोइ समयमे थारु समाजमे जाब बेटा जलमै छेलै । ताब बच्चाके बाप बैहङा खौबजोरसे फेकके घरके छाइन्ह नंहाबैके चलन

छेलै । तैहैसे गोबरधन बैहङा फेकके घर नंहेलकै । बौवा जलमलै कैहके बच्चाके देखैले नाना नानीके समाद पठैलकै । नाना नानी समाद सुनतै मातर खौब खुसी भेलै । दजीलग ज्याके नाइतले फुदनाबला जमा टोपी सियाइलकै या बेटीडेरा गेलै । बच्चाके छठियाहार, बरही भेलै ताब फेरो नाना नानी आपन घर चैल येलै । गोबरधनके बेटा रसे रस बढहे लागलै । भैर अङना हाथी हाथी ठेङहुनियाँ द्याके गुडकै छेलै । बरसदिन भेलै त गोबरधनके बेटा डेगाडेगी लरे गलै । बेटा जाब लडे लागलै ताब बच्चाके ताकतै बिखिन हैछेलै । एकटा बच्चा हुर्कल नै छेलै, दोसर बरससे गोबरधनके दुधकटवे दुधकटवा बच्चा जलमे लागलै । कुछसालमे बच्चा जलमैत जलमैत तुर तुरके सातटा बेटा भेलै । बच्चासब ताकतनकी करैले मुस्किल परै लागलै । तैयो बच्चा जलमते छेलै । कोरपछु एकटा बेटी जलमल छेलै । तहै समयमे गोबरधनके आपन बालबछरके सम्झना येलै । महताइर बाप धियापुता बखतमे गोबरधन बेटाके गित गाइब गाइबके खेलौर लग्याके खेलाइछेलै । गोबरधनके हाथमे -

अट्टा पट्टा बौवाके सातटा बेटा,

हरजोतुवा, गैवार, भैँसवार, डाक्टर, मास्टर,इन्जिनियर, वकिल

खाइत पियैत ग्याल ग्याल बौवा बर्का भ्याल ।

गाइब गाइबके फुस्याके खेलाइ छेलै सेहा बात गोबरधनके जिनगीमे भेलै ।घरमे सौस ने दियादनी सेवा बर्दाइस नैभ्याके या परिवार नियोजनके साधन नैभ्याके दुधकटवे दुधकटवा बच्चा जलैमके बेसक भ्याके गोबरधनके घरबाली अल्पेबेसमे मोइरगेलै । सातटा बेटा या उताने दुधपिया बेटी महताइर बिनाके टुगर भ्यागेलै । जाब एक वरस बितलै गोबरधनके घरबालीके छुतुक ओराइलै तकरबाद जेठका बेटाके वियाह कैरदेलकै । जेठका बेटा पुतौह भाइसबके या बहैनके पालन पोसन निकसे करैछेलै । घरके सबकुछ जेठका बेटापुतौहके जिम्मामे छेलै । जेठका बेटापुतौह आपन जुइत बुइधसे घर चलाइछेलै । एक दिन सँहजै-सँहजै गोबरधनके मोरन भ्यागेलै । छोटैमे सबटा बच्चासब टुगर भ्यागेलै । बेटी त और सबसे छोट या सबसे निर्बुद्धी छेलै ।

घरके हिरभिर जेठका बेटापुतौहके सिर छेलै । चाइर पाँच बरिस तक बहौत निकसे भाइसबके या बहैनके पालन पोसन कैलकै । तैकेबाद भाइ सबके बियाह कैर

देल्कै । बहैन सबसे पाछे जलमलै त उ निर्बुद्धी छेलै । भौजाइसब सङें रहै छेलै, टहल करैछेलै । ननदी भौजाइके निक सम्बन्ध छेलै । जाब जे कमाइके सिलसिलामे सातो भाइ घर छोडइरके गेलै ताब त घरमे निर्बुद्धी ननैदके भौजाइसब सताबे लागलै ।

तखैनका समयमे घर-घरमे टुवेल (कल, धारा) नैछेलै । समगर्दा कुपामे गाँमके सबगोर पियैबला पाइन भोरे जाइछेलै । धान, चुरा ढेकीमे कुटे परैछेलै, चिकस (गहौम, मकाइ, मरुवाके पिठार) जाँतमे पिसे परैछेलै । एकदिन भौजाइ एकसुपा धान कुइटके आन ताब भात खाइले देबौ, नेत भुखले रहिये कहल्कै । कोनोटा भौजाइ चालैनमे पाइन भोइरके आनहें ताब पाइन पियैले देबौ ने त पियासले रिहे कैहल्कै ।

भौजाइ एकसुपा धान कुटे पठाइने छेलै तखनी ननदीके उमेर धान कुटैले सकैबला नैभेल छेलै । बेदरी धियापुत्ता लोक धान कुटैले नैसैकल्कै । ढेकी लग बैठके कानै छेलै । तहै बखतमे एकटा बगरा देखलकै त वइ बगराके मामत लागलै । बगरा लगमे ज्याके कहैछै कथिले तोहे हफान जफान कानै चिही ? यि एकसुपा धान यै ढेकीमे कुटैले नैसकलियै तैहैसे हम कानै चियै कैहके बेदरी बगराके कहल्कै । बगरा कहैछै नैकान, दैया नैकान ! तोहर एकसुपा धान हम फोंइक-फोंइकके चौर बन्यादेबौ । कैहके बगरा बेदरीके आसभरोस देलकै । बगरा चट्टाचैटके सबटा धान फोंइकके गोटोगोट चौर बन्यादेलकै आ पाछे हमर बैन (ज्याला) कैहके बगरा एकटा चौर ख्यालेल्कै ।

ननदी एकसुपा धान कुइटके भौजाइके चौर आइन देल्कै । भौजाइ लाइरचाइरके, लिहाइरके चौर देखलकै खौब छनगर छेलै महज एकटा चौर घटल देखलकै । तै खातिर ननदीके खर्रा बर्हनी बाटे झाइट झइटके बडजोर माइर मारल्कै ।

भौजाइ दोसर दिन ननदीके चालैन देलकै या कहलकै जो एक चालैन पाइन भोइरके आनहें । चालैन ल्याके बेचारी ननदी कुपामे पाइन भोरेगेलै । कुपामे ज्याके हुलुक्क भुलुक्क ताकैछेलै । चालैनमे कनङ्खे पाइन भोरबै कैहके तारभियार करैछेलै । कुपामे ने डोल छेलै, ने उघहैन छेलै । टुगरटापर धियापुता छौडी लोक देहके नौवाँ कटकटमोइल, झोइट झाखुर माखुर 'नैककहल केस' फलकल छेलै । कुपामे एक हुल्की ताकल्कै त वोहै कुपामे खैसके झबाइ डबर डुइग गेलै । कुपामे एकटा बर्का माछ छेलै । कुपाके बर्का माछ वइ छौडीके सप्पदबर गोटे घोइटके ख्यागेलै । माछके पेट फुइलके अफरल छेलै, वइ कुपामे फकफक उन्टै छेलै । तहै बखतमे एकजोर चिल्हवा चिल्हिन कुपामे माछ देखलकै । वइ माछके झपैटके खोंतामे ल्यागेलै । खोंतामे चिलहौरके बच्चा कन्यें कन्यें छेलै । चिलुवा चिलहिन

माछ ठोकइच ठोकइचके बच्चासबके खियाबै छेलै या आपनो , खाइछेलै । खाइत खाइत माछके पेटसे एकटा छौडी लोक बहराइलै । उ छौडी लोक जित्ते छेलै । चिलुवा चिलहिन माछके खेलकै या माछके पेटसे बहरेलहा छौडीके नैखेलकै । चिलवा चिलहिन आपन बच्चाके राखी करैले वोइ छौडीके लगाइने छेलै । जाब चिलुवा चिलहिन अहरा ताके जाइछेलै ताब उ छौडी चिलुवा चिलहिनके खोंतामे बच्चा सबके राखी करैछेलै । चिलुवा चिलहिन जातक आहारा खोइजके नैयेल रहैछेलै तातक बच्चासब चुइँ...! चुइँ...! करैत कानैत रहैछेलै त उ छौडी आपन दुःखविरहैन गित गाइब-गाइबके फुस्याके चिलुवाके बच्चाके राखैछेलै ।

सातो भैया दिन लागी गेलै

सातो भौजैया बडा दुःख दलकै

नैकानै गे चिलहिन मौसीके बेटी

सातो भैया दिन लागी...

बाटे कताके सिसो घारीमे बरका ढाङ करमैनके गाछमे चिलुवा चिलहिनके खोंतामे यैहनङ्ग विरहैन गाइब गाइबके उ छौडी रहैछेलै । विरहैन गितजखा सुरगर अवाज बाट लरैबला बटोहीसब सुनैछेलै । तहैबखतमे (सतभैयाँ) सातो भाइ परदेससे कम्याके घर आबैछेलै त गितके अवाज सुनल्कै । चाकचुक खन अने खन वोने ताके लागलै तैयो कोनो ककरो नै देखलकै । गितके अवाज आपन बहैनके अवाज जखा लागै छेलै । उपर दिसर ताकलकै त सुरसुर ढाङ गाछीमे चिलुवा चिलहिनके खोंता देखल्कै । वहै खोंतासे गितके सुरगर अवाज आबैछै कैहके अनुमान लगाइलकै । तखैनियें सातो भाइ वोइ गाछमे दबिया दने खात खात बन्याके गाछमे चैढके खोंतामे ताकलकै त देखैछै, आपन बहैनके । भैयाके चिनहलकै त बहैन हफानझफान काने लागलै । बहैनके बोकीमे बोइकके चिलुवा चिलहिनके खोंतासे हटकैर लेल्कै । सातो भैया बहैनके आँइखके लोर पोइछ दैत कनङ येहेन हालत भेलौ बच्चादैया तोहर ? कैहके सातोभैया पुछलकै । बहैन हुँकैर हुँकैरके काइन काइनके ओर से पोरतक सबबात बताइल्कै । तै दिनसे सातो भाइ बहैनके पाँजर लग्याके राखलकै, घर ल्यागेलै, खौब मामत कैरके घरैमे रेहे लागलै ।

तैहका कालखन्डमे समाजमे घटलाहा यि सत घटना थारु समाजमे खिस्साके रुपमे (सतभैयाँ खिस्सा) कैहैके चलन रैह येलछै । अखैनका समयमे यि सतभैया खिस्साके स-प्रमान सतभैया तारा राइतके मेघमे उगैछै । थारु समाजमे सतभैया खिस्सा प्रचलित रैह येलछै । राइतके तारा उगलके बखतमे सतभैया तारा कोइयो देखसकैछै । सतभैया तारा कैहके देखैबाला या देखाइबला चलन थारु समाजमे अखैनियो रैह येलछै । खिस्सा खतम ।

नन्नु धामी

-नारायण चौधरी
बर्जु सुनसरी ।

नेपालके कोसी अन्चल सुनसरी जिल्लाके दखिन छेत्र अखैन बर्जु गाउँपालिका नरहा गामके एकटा बहौत नामचलल प्रख्यात धामी गुनी व्यक्ति रहे । जकर नाम नन्कुदास थारु रहै । उ आपन जमानाके बहौत गुनवक्ता रहे । वि.स. १८८७ साल ओकर जलम भेल रहै ।

एक दिन करिब ४ बजे दिसर गाँमके उत्तर पस्चिमके बोन मे कुरहाइर 'कुडारी' ल्याके लकडी काटैल्या गेलै । गाँमके दोसरो मरद लोकसब सङे गेल रहै । लकडी काटैत बखत अनचोकतैमे एकटा बाघ झम्टीके ओकरा धरैले लागलै । नन्कुदास थारू बाघसे लडाइ करे लागलै । दोनोमे बहुत खानतक एक दोसरसे भिडन्त भेलै । ओइ भिडन्तमे बाघ एकरा बहुत ठाममे धैर लेल्कै । नन्कुदास थारू जोर जोरसे हल्ला करल्के । त संङीसब सुनलकै या चारु भरसे दौडके आइबके ओकरा बाघसे छोरेल्कै । यि हल्ला गाम घर तैक पुइग गेलै । गामोघरके आर, मरदलोक सब सुइनके दौडल गेलै । नन्कुदासके उठ्या पुठ्याके बोइकके ओकर घर आनल्कै । गोसाइ घरमे राइख देलकै आ दवा बुटी करिके धामी झाक्री लग्याके झारफुक करै लग्ले । उमहरसे बाघ नैआवी कहिके घरके पछुवारीमे कुछलोक बैठ रहलै ।

नन्कुदासके जे जे घरमे ल्याजाइ बाघो वहा वहा घरके पाछुमे ज्याके बैठ रहै । तिन चार दिन तैक येहेन चलैत रहलै । चार दिनके बाद नन्कुदासके परलोक

भ्यागेले । परलोकके बाद नन्कुदासके दोहमान लदीमे दाहसँस्कार करैले ल्या गेले । बाघ पाछु पाछु लदी तक चैल येलै । गाँमघरके लोगसब यिसब देखके, छक्क परी गेलै । सबकोइ डर्या डर्याके डरा सरा बनेलकै । ओइ सरामे अघिन देल्के । जब कन्जा कन्जा साँझ परै लाग्ले तँ बाघ उ सरा क्या कोडी काडी देल्के आ उ सरासे बचल कुचल चिज सब सायद खैल्कै । कठुवाहीके लोकवेद सब घर दिसर ऐले । घर पुगतै मातर एकजन काँपे लागलै और कहै लागलै कि हमरा आपन अँगनमे पुजा दे । हम बगहेस्वरी चियौ । वोहै दिनसे नन्कुदास थारुके परिवारके अँगनामे निप पोइछके पुजा हेबे लागलै । देवता खेलाइवला कहल्के टाङ हाथ धोइवके हमरा सुमर ब्या त तोरसबके सब काम पुरा हेतौ । मतर हमर धिबेटी कन्या सुमर ब्या त हमर सक्ती नष्ट भ्य जेतो । वेह्या नन्कुदास 'नन्नु धामी' से अखैनियो प्रख्यात छै । वेह्या नन्नु धामीके बगहेस्वरीके नामसे अलग अलग पुजा हैछे ।

एक दिन छक्कन दासके घरनी बहुत बिमार परले, धामीसब तिन दिन तक गुनधुन करालके, मन्तर या झार फुक करलकै । तैयो नै ठिक भेलै । धामी सब हारी हरी के नन्नु धामीके सुमरल्कै । फेनु गुनधुन करलकै त बेमारी ठिक भ्यागेलै । वही दिनसे वकर गुन कम भ्या गेले । महज अखैनियो नन्नु धामीके पुजा हैतै छै ।

खिस्सा खतम ।

करमके फल

संकलक– रामसागर चौधरी,
इटहरी-१२, खनार ।
rs14richaudhary@gmail.com

एकटा बहुत सुन्दर गांव छेलै । डगर बाट साफ सुथरा छेलै । सबके खेती पथारी रहेक । बागबगिचासे भोरल, मनमोहक सेहो रहेक । गांवघर बालबच्चाके किलकारीसे गुन्जमान रहेक । सवैके मोहडनमे मुचकी रहेक । सवैसे मेलजोल, ककरोसेने बैरभाव रहेक । गांवके बहार बडका आँमबारीमे सवाद सवादके आमसब पाकल रहैक ।

एक दिनके बात छेकी एकटा छौडा पेराबाटे लरथ जैक । जेठ महिनामे टिपटिप रौद रहेक । पियासेसे लटी सुखी लहालौट भ्यागेलछेलै । दुरेसे पाकल आँमके झोख देखल्कै । हकरदवर आँम गाछी लगत पुगलै हे उपरमा देखल्कै त सिनुरिया आँम पाकीके लाल टुस टुस बरल रहैक । यिमहर उमहर लजर पसारीके देखल्कै । मतर वोतेकरान ओगराकरेवला नै देखल्कै । आँम ख्याले येहा मौका छेकी कहिके मनमे सोचल हे गाछीमे चढी गेलै । ठारीमे लरकीके हाथ नम्हर्त्या नम्हर्त्याके पाकल आँम एक झोखा तोरल्कै ।

गाछीसे हेठ हेलै । टिपटिप रौद रहेक । पियास लागल रहेक । सुनसान ठाम, गाछीके छहिर हे पुरविया सिरसिर बयार सिह्कैक । वेह्या ठाम बैठीके मज्जासे सवाद सवादके आँम ख्यालागलै । हाथमे लागल रसो चाटी-चुटीके पेट भोरिके खेल्कै । आँमके रस पेटमे पुगलै त वकर चित बड्या आनन्दित हेलै । पेट भोरलासे निन झौकल्कै। कखने निनेलै थाहे ने पेल्कै ।

आँमबला येलै त देखछै चारो महर आँमके ढला हे आंठीके ढेरी लागल। वकरा पित लरहल्लै । पैन्ठी हाथमे रहवेकरैक । निनलमे किनेके पिटवै ? रो जागे दहै तव हम येकरा मज्जा चखछिन कहिके रिसेसे आँख बिमलाल बन्याके घोडर्याके देखलकै । एक छिनमे छौडाके आँख खुगली त देखछी आँमबलाके (बेचरा भागे नहिए पेल्कै) । धडाधड पिठमे पैन्ठी बजडे लागलै । छौडा त दर्देसे बाप बाप करे लाग्लै । पिठीमे पैन्ठीके चोट बजडलै । गोटे पिठीमे फुटले फुटल । पैन्ठीके चोट पिठके सहे परलै । तहुंमे उपरसे गार मारसे वकर चित बड्या दुखलै । ढरढर लोर आँखी से गिरे लागलै ।

बापु गे ! मां गे ! गलती हेलु । आव यिने काम नै करबौ । बडा बिनतिभाव करलक्कै तव ओकरा छोडी देल्कै । वतेसे छुर दवर भाग्लै । तव वे मने मने मनगुनान करेलागलै । ले देखै त ! आम देखल्कै आँख, लरिके गेली ट्यााङ,तोडल्कै हाथ, खेल्कै मुख, अघैलै पेट । मार खेल्कै पिठ । दुखली चित । लोर झरली आँखीसे । ले कहै त घुमिफिरिके करमके फल के पेल्कै ।

पैसाके मुख

- रामसागर चौधरी

तहिया तहिया जंगलाद मुलुक रहैक । तहियाके आदमी इमान, जमान, धरम, मेहनतमे बिस्वास करैक । पढल लिखल कम, गढल बेसी रहैक । घर ब्यबहार करते सिखते जैक । वकरे मधे एकजन बुधवा रहैक । जवानीमे दिनरात जोडतोड मेहनत करिके एकहात बित जमिन जेथा जोडल्की छल । नगदी चाँनी टका भि जोड जाड करल्की छल । समाजमे मान इज्जत कमलकी छल । उपमा देवे परैक त बुधवा ढवक बन कहिके ।

बुधवाके तिनटा बेटा हे दिरा बेटी छेली । समाजिक ब्यबहारमे सवना बेटा बेटीके बिहादान करिके नियारा हेली छल । घरमे एक मत बरिके कामकाज करैक । घर भोरल छेलै । हाँसी खुसीसे घर ब्यबहार कामकाज चलैक । बेटीना सोसरारीमे आपन आपन घर सजलकै । बेटानाके धियापुता हेलै । नाती पोता खेलते बिलते बुधवा खुसीसे मगन रहैक ।

परिवार बढलै, ख्यावला मुख बढलै । काममे ढेसाढेसी हवे लागलै । बुधवा परिवारके अवस्था देखिके गमलकै एक दिन तिनोटा बेटाके बोल्याके कहलके ले देख, सव्हैके बिहादान करिदेन्हुस । धियापुता हेलु । आव अपना अपना करिके खो, आपन घर ब्यबहार कर । हमरुका भ्या भैयारीमे भिने भाग हेन्ही । यिटा संसारेके चलन छेकी । कहवी छी । भ्या भयारी भैंसीके सिंङ जेहा दिन जनमल्या वेह्या दिन भिन ।

बेटा बोलली 'कहलै त ठिके गे बापु ! सल्लाहसे फुटलासे सव दिनके लगिन असले हेतै । मतर हमरुसबके थोरथार पुंजी देव्है तव नी तली पकडती' । बेटानाके बात बुधवा भापलकी हे कहलकी । हेरे ! हमहुसब भिनेभाग हेन्ही छल । येखात बीतके जमिनो देलकीछल या दसटा चाँनी टक्का देलकीछल । हे तोर दादो कहलकीछल- लेरे ! हमे बुढ हेनुस । येह्यारा जमिनमे मेहनत करीके जोतकोड करिह्यान । खैनखरचा येह्यानासे पुगी जेतौ । पैसाके मुख जेहा मुखे घुमतौ वेह्या मखे लरतौ । टक्का पैसानाके असलसे लरहेन, चरहेन, दौडहेन, बढहेन । यिनासे तोरा आदमी बनतो । हे जखने हमे माङउ हमरना मुर घुम्या दिहेन । कुछ बछरके बाद मुरना मांङलकी त घुर्यादेन्ही ।

ले ! हम्हु बुढ हवेलागन्ही । सेह्यासे खेतपथारना बखरा करिके देछुन या थोरथार नगदी एकसयके चाँनी टक्का देछुन । येह्याना खेतपथार के कमैह्यान, खोडह्यान, उपजहेन खैनखरचा पुगी जेतौ । यिना चाँनी टक्काके असलसे लरहेन, चरहेन, दौडहेन, बढहेन । जखने हमे माङउ तव मुरना हमरा घुम्या देवे परतौ । सबझनके सहमती हेलै । वेह्या मुताविक सव्हैके फाँटबखरा करिके देलकै ।

तिनोटा बेटा खुसीसे भिने हेलै । नगदी चाँनी टक्का पेलासे बेटानाके मन कोयबोय हेलै । खेतपथारसे खरचा पुगिये जेतै । यिना त जोरन हेतै ।

सवसे बडका बेटा चतुर छेलै । जहिने नाँ वहिने काम । वे बापके बात कानमे खोसीके राखलकै । देह तोडीके काम करैक । दसझन लगत उठैक बैठेक । दसटा बात सुनैक बुझैक । वे टक्कानाके चलावे, लरावे, दौडावे लागलै । रातदिन टक्का बैढते गेलै ।

मझेलकाके नाँ सुधवा त वकर कामो सुधा। ने बोले ने हारे । आपन काम करकै हे खैक । वकरा बापके कहल मुरना घुमावे परती कहिके डरसे टक्काना खर्चा नै करैक । बस टक्काके माटी तर गाडीके राखल्कै । जहिया माङती तुरन्ते घुम्यादेवी सोचलकै ।

कोरपछुवाके नाँ दुलारु छेलै । वे दुलरूवा हे खेडिया रहेक । जिद करिके लेवे जानैक । जकर चलते ढिपढाप हे खरच करेके लत बाढी गेलछेलै । टक्का जुवामे लरावे चरावे लागली । दा मारैक त तुरुन्ते दुना हवेक । जुवामे जितल टक्का पैसासे सँङहतिया सङे चोखापानीमे उडावे लागलै । जोस बेसी होस कम । बडका बडका डिङ हाँके लागलै त लोकना वकरा फोङिया नाम बखानी देलकै । सव दिन चारआनाके चोखापानी खेते खेते ओरते गेलै ।

कुछ बछरके बाद बुधवा आर झन बुढ हेलै । बेटाना वकर लगत कम आवेज्या लागलै । एक दिन बुधवा बेटानाके उन्नती प्रगती बुझे आर मुरना माङे परलै कहिके बिचार करल्कै । हे बस ! तिनोटा बेटा के बोललकै । बेटाना येली सव्हैके उन्नती प्रगती पुछल्कै । तव मुरना घुम्याके माङल्कै ।

बडखी बेटा चतुरके फुरती हे चेहरा मोहडा धाँय धायँ रहेक । वे तुरुन्ते घरसे आनीके बापके दुइ सय टक्का जिम्मा लग्या देल्कै । सय टक्का मुर हेलु हे आर सय टक्काना लरल चरल बाढलनाके कोसलिया देन्हुस । सुधवा मुरके मुरे घुम्या देल्कै । कोरपछुवा दुलारु फोङिया निसठमारीके हेठे मुडी रहलै । सेह्यासे लोक कहछै, पैसाके मुख जेहा मखे घुमल रहतौ वेह्या मुखे लरतौ । पैसाके मुख भजियलैस ? खिस्सा खतम ।

सोंच

-रामसागर चौधरी

एकटा गाममे तिन झनाके परिवारमे बाप, मां, हे ८/१० बछरके बेटा छेलै । बेटाना उमेर अनुसार कुछकाछ बुझेवला हेलछेलै । तिनो झना एकआपसमे असल मन रहलासे बराबर माया, स्नेह करेक रहैक । मतर तिनो झनके स्वभाव फरक फरक रहैक । दुखम सुखम करिके असलेसे गुजर बसर करैक । बेटाराके बाप माँ दुनु प्रानी खुवे माया करैक । बाप रिसाहा, माँ मुखछाडा हे बेटारा खेंडिया रहैक ।

बापके स्वभाव एकदम रडहा खालके रहैक । मौगीके छुमी छुमी खोनट वचनसे तडाइ रिस उठैक । रिस उठलापर आँख नि देखैक हे मौगीके अनाजार पिटैक । मौगी जोधनिया हे मुखफोहर रहैक । मौगीके कतनो डङावेक तैयो नि छेर छुटैक । मौगीके तह लगावे लगिन हरेक उपाय करलकै मतर वकर बानी नैसपरलै । मौगरा रिरयते गँवाघरवाके बोल्याके आनलकै ।

गाम समाज बैठिके दुनु परानीके कतन्याँ बेर समझ्या बुझ्याके मिलान करिदैक । दुनु झन फेन एकाएके हवेक । बड्या मेलजोल हँसी मजाक, माया स्नेह करैक जेनेकी कुछु नि हेलेस । गँवेलाना परखै नि साकेक जे येकर सियाके दुनु झनमे भारी झगडा हेलैस । कुछ दिनके वाद फेन वहिने घटना दोहराबैक । येकराका दोनो झन एक दोसरसे हार नैमानेवाला छै । दोनो झनमे अहम भाव छै । दोनो जनमे एक दोसरके हर्याके अपना बडकी देखबे चाहछै । यिना बात बुझिके गाउबाला बेवास्ता करेलागलै ।

मौगरा कतनो उपाय करिके भि मरदके जिते नैसकल्कै । एक दिन मौगराके एकटा जुक्ति फुरलै । आजु सार रडहा मरदके झौंक नैझारीके नैहेतै । बड्या हमरा डेङावेस । बिहान सवेरे उठिके मरदवा हर जोते गेल, वोही मौका देखिके घरमे पोसल कुकुरके मारिके सवादसे रान्हीबाढिके कुकुरके तिमन खियावे परतै कहिके मनमने विचार करिके, वस वहिने करेलागलै ।

बेटवा सव देखि रहल छै। बेटा माँके पुछलकै(गे माँ ! कुकुरके तिमन काम रानलैस । माँ डाँटछै- चुप रौ ! कखरो मत कहियो- नैत थुरबो । बेटा सटकदम ।

मरद वेरढरयाके हरजोतीके यलै हे अस्लान करिके भुखल तोडे ख्या बैठलै । आजुखना मौगिके असल ब्यबहार देखिके अतरज लागलै । अस्लाङ खोरेलगिन डोल, गमछा जुकतल। बैठेलगिन पिढिया देल । लोटापानी भोरिके मुचकते येल । वकरा अतरज लागलै यिटा घर हमरे छे कि ? हमरे मौग छे कि ? यिना विचार करिके पुछल्कै- आजु कुन दिन छेकिसे यिने मानभाव ।

मौगरा मुचकी देते कहके(तें बहुत दिनसे तिमन ख्या मन करहै सेह्यासे आजु तिमन राननिस हे कसा थारीमे भात दाल तरकारी तिमन काढिके देलकै बेटा संगे बैठल रहै । बिलैरा पात लगत लुलढुप लुलढुप करैका । ता बेटा खेंडकरे लागली "कहछिन त माँ मारछी, नै कहछिन त बाप कुता खेछी"। खेंडिया बेटा यह्या वात दोहरावे लागलै । बापरा बेटा दिसर देखते कुन खेंड करछै रे ख्या बखत ? बाप जा भात सानते ता बिलैरा तिमन नामे एकटा खर निकालिके भागी गेलै । ता मौगरा कहछै जा बिलैरा येंठ करी देलकौ दोसर पात काढी देबु कहिके थारिरा उठ्याके ल्या जलकै। बाप अकबक परलै ।

कहिनो हावोक माँ, बापके माया बेटाके लागवे करछै । माँ के मारसे बचावे हे बापके कुता तिमन ख्यासे जोगावे लगिन खेंडिया बेटाके मन रहेक। बाप थाहा पेतित माँके डेङते डेङते मोरया देती त हमे मौर हेवी कहिके मनमे डर रहै ।

माँ यिटा बात गौर करिके देखी रहै हे बिलैराके लाठी ल्याके फहियते बैलावे लागले माँ बात बुझल्कै जे रिसपित करलासे घरमे कलह बढछै असल ब्यबहारसे सान्ती रहछै । बापो बच्चाराके सुदबुध देखिके रिसपित ओरली । वेह्या दिनसे मरद हे मौगके सोंच फिरलै । दुनु झना परिवार हिलिमिलिके हाँसी खुसी रहेलागलै । खिस्सा खतम ।

धौल धमके त भौर चमके

नन्द लाल चौधरी

महालक्ष्मी नपा- ५

टिकाथली चौधरी टोल, ललितपुर

मो.९८४१३८७७१३

email nandlal.chy@gmail.com

एक समयके बात चियै। कहैछै सप्तरीमे बड जुलुम समय बितैत रहै। यै जिल्लाके पुरवी सिमानामे तहिया हनुमान नगर सदरमुकाम रहै। यि छेत्र भौर जाइतके गढके नामसे जानल जाय छेलै। यैठना चौबटियामे बडकाटा पिपर के गाढण रहै। माल अड्डा कर कचहरी सब यहैठना रहै। यहै गाछके तरमे जे बाट बटोहीके उपर जे घटना घटै, से दुर्भागसे थारूसबके नामसे जोरल रहै। यैठना, खास कैरके जे यै बाट दने जाय आबै तकरा अपमानित हैले परे। उ कानै नै, मगर वोकरा सब दसा भ्या जाइ। अप्रत्यछ रुपसे यै गैरकानुनी बातके सब जानै, महज लोक जाइनियोके अनजान बनल रहै। यकर चर्चा अड्डो खानामे है। मगर यकर विरोधमे कोयने कुछो बोलै। तै दिनो दिन यि नजायज काम बढले चैलजाइ छेलै।

यैठना जे बिचित्र घटना घटैसे रहै, एकटा घर आ वोइमे राखल एकटा मुरुत। उ मुरुत देखैमे एकटा थारूके प्रतिनिधी कार्टुन रहै। जकर नाक थेपच, आँइख छोट आ कान बडी बडी बन्या देने रहै। पैहरन अनमन थौरे लखा रहै। सबसे अनरितके बात त वोकर मुरीमे मुरेठा तैमें जुत्ता चरह्याके राखल रहै। कहैछै वोइ बाटे कोनो थौर बटोहीके जाइत देखै त भौरसब वोकरा बोलाबै। बोल्याके वोइ घरमे ल्या जाय। कोइ कोइ नै जायले चाहै। त वोकरा उ बदमास भौरसब कहै “जा ने तोहर वोइठनो कुटुम याल छौ भेंट मागै छौ।” हाइर के थौर सबके

वोइठना ज्या परै । ज्या के पुछै "कहाँ छै हमर कुटुम ?" यतेक कहै त मुरमे राखल जुत्ता दने दुइ तिन जुत्ता वोइ मुरुतके माइरके कहै "येहा चियौ तोहर कुटुम ।" यै तरहसे दिने देखार थौरके इज्जत चौबटियामे लिलाम हैछेलै । कोइ कुछो नै कहे सकै । जे भोगे सोहो चुपचाप मुरी तरमाथे कैरके चैल ज्या । मगर कोनो अन्हेर रहौ वोकर अन्त एक दिन हेबे करैछै ।

रसे रसे आइगे लखा यि बात सुनगैत चैल गेलै । यि बात थारू सबके बडका तत्काल समयके जातिय "सभा चौरासीमे" तक पौहचल । सभा गुलजार भ्याके कतौ बैठल रहै । ओइ सभामे माइन्जन, जेबार, गुमस्ता आ पैध मुंह पुरुखसब सैबकोइ ऐल रहै । जतिया लोक दरसक सबके भिड करमान टुटै । सब भिरगर जतिया मामला कुगरु काम सबके जानकारी देल जाय छेलै । यैहनंमे एक अधहेर लोक उइठके ठाढ भेलै आ कहल्कै "हे हमर जतियाके बरका जेबार माइन्जन भर भलादमी सब अगर हमरा कहैके आदेस हैतै त, हम कुछ गम्भिर बात यै महा सभा में राखैले चाहैचियै ।" अतबेहेक में भैरगर आवाज मैन्जनके लोक सब सुनल्कै "हँ हेतै बिना डर भरके सुनाब ।" उ जे कहल्कै से सब ध्यानसे सुनैत गेलै । कहल्कै "हनुमान नगर माल अड्डाके चौबटियामें थारू सबके नाममे बरका गिजानैत भ्या रहल छै । यि सब इज्जतके सवाल चियै । अगर यैहनँ हैत रहल त थौर सबके नाम मटिया मेट भ्या ज्यात ।" उ सब वितलाहा या भोगलहा बात सोरपोर भोरल सभामे सुन्या देल्कै । यि सुइनके सभामे हलचल मचे लाग्लै । सबके एकाएक जनं तामसके ताप बैढ गेलै । महज तत्काल कि करल ज्या कोइने कहे सकल्कै । अतबेहेक में एकटा बुढ सनके लोक उइठके ठाढ भेलै आ सभा से कहल्कै । "अगर सबकोइ हमरा सलाह देबै त हम कुछ बोल्बै ।"" सैब कहल्कै हेतै बोल" "उ बुढ बोले लाग्लै "यकर येकेटा उपाय छै, धौल चौधरी । उ भगवानपुर के रहैवला चियै । सैब मिलके वोकरा कहबै त उ मदत जरुर करतै ।" अगर नै करतै तब ? कोय सभाके तरफ से कहल्कै । "तब हम यकर जिम्मा लैमें तैयार चियै । हमरा सभा जे कहतै, जे सजाय देतै भोगैमे तैयार चियै ।" अतहेत जब उ सभाके सुनैल्कै त वोकरा सभा मन्जुरी द्याके कहल्कै जा वोकरा बोल्याके लाब । अकर बाद तखैनिये उ भगवानपुर तरफ रवाना भ्या गेलै । वोइठना ज्याके धौल चौधरीके सब बात कहल्कै । धौल चौधरी सुनैत मातर तखैनिये तैयार भ्या गेलै कहल्कै "यि थौरके इज्जतके सवाल चियै यकरा जरुर हम ठिक करबै । जा, तों सभाके कहिह हम आइनै काइल सभामें हाजिर भ्याके

बात करबै” उ समधिया तखैनिये लौटके सबबात कैह देलक । तकर बिहानके बरका दन्तार हाथीमें चैढके मुरी में मुरेठा बान्हने धौल चौधरी सभामे हाजिर भेलै । लोक सब वोकरा देखलकै त पुलकित भ्या उठलै । मने मन सोचल्कै आब जरुर कुछ हेतै । उ सैबके गोरलग्गी क्याके एक कात में बैठ रहलै । कनहिक काल में फेनो उइठके पुछल्कै “हमरा यैठना कथिले बोल्याल गेलै ?” माइन्जन कहल्कै “तैहनं जरुरी काम परलै तै सभा आइ खोजल्कै । यि काम दोसर से हेबोनै करतियै” कहैत सब बात वोकरा बिस्तार में सुन्या देल्कै । धौल चौधरी गम्भिर भ्याके सब बात सुनैत गेलै । माइन्जनके बात जब वोर्या गेलै तब उ फैन कहल्कै “हम यि काम करैले तैयार चियै मगर हमर एकटा सर्तछै” सभा पुछल्कै, कोन सर्त ? उ कहल्कै हम जतिया में अखनी नै चियै । हमरा सभासे कारवाही कैरके जातियासे हट्या देनेछै । अगर हमरा जतियामे अखैनिये दर्या लैछै त यि बिरा हम अखैनिये अहैठना उठायमें तैयार चियै ।” माइन्जन जेबार सब मिलके तत्काले सोइचके सब कोइ एके आवाजमे कहल्कै हेतै सबके मन्जुर छै । कहैछै तखैनिये धौल चौधरी फैन घुइमके भगवानपुर पहौंचलै । तखनी वोकरा राज्यके तरफसे सात खुन माफ रहै । निचासे उपर सब कागज पत्तर जुगत्याके एक एक दुरुस्त कैर लेल्कै आ पुरे दल बदल हंसहैरी सहैत घटना हैबला ठाममे पौंहचल । जैठना थौरके नाममे अत्याचार हैछेलै । वोकर सेना मेना धौल चौधरीके जय जयकार करैत सबके ठेकान लगाइत चैल गेलै । जे जहैठनो भेटलै वोकरा माइर लाठीसे सनकुट करैत चैल गेलै । कोनो माइके लालके मुहमे दांत नै जन्मलै जे वोकरा विरोध करतियै । जे बिरोध करै ओहैसना मारल जाय । कोइ कोइ कहैछै, तखनी पुरे भौर सबके मटिया मेट क्या देल्कै । येकेटा जनिजात जे पेटसे रहै तकरा छोइर देल्कै । बिया बास्ते । पाछु बहौत समय के बाद वोहै छोरलाहा बियासे भौरके संख्या फैन बरहैत गेलै । तेकरबाद थौरसबके ओहेन बैजत अखनी तैक सहैले नै परलै । यकरे परिनामस्वरुप अखैनियो तैक गामघरमे लोकोक्ति बनलै “धौल धमके त भौर चमके” । कोनो अत्याचारके एक दिन अन्त हेबे करैछै ।

स्रोत- पवन चौधरी, पटेर्वा सप्तरी । तत्कालिन वार्ड अध्यक्ष ।

टिप्पा नै नेङरी सुर्रा

-नन्द लाल चौधरी

एक देसमे एकटा चमरा कोनो रा गाँममे मे बसै छेलै। उ बडी चतुर छेलै। दिने दिन जुत्ता बन्याके दुरौग बजारमे बेचेले जाय छेलै। वोकर जिवनके सहारा जुत्ता बन्याके बेचनाय मात्रे छेलै। तैं उ सैब दिन बजार जाय छेलै। बजारके बाट बोन लग दने छेलै। पेरामे एक दिन बाघसे ओजरा जैमके भेंट भेलै। पैहने त उ डैर गेलै, मगर पाछे एकटा जुइत सोइचके बाघ दिसन गेलै। लगमे पुगैत मातर बाघके टांङ दिसर इसारा करैत कहल्कै "वोहो, जङ्गलके राजाके केहेन निमन टांग ! येकर जुत्ता हम बनाबे पाबतियै त जङ्गलमे सिकार करैले केहेन सलुक हेतियै !" बाघ खुसी हैत कहल्कै, आब जब येबही त जुत्ता नेने आबिहे कि चमरा हेतै हजुर कहल्कै या ओइसनासे नदुइ एगार भ्या गेलै। चमरा कहुँ बाघके टाङके जुता बनाबे। उ बाघके ठैक लेल्कै आ वोइ बाटे लरैले छोइर देल्कै। ओने बाध असियाल छेलै। जे चमरा कहिया हमरा जुत्ता बन्याके लाइब देतै। चमरा नैयेलै त बाघके मनमे सङ्का उठलै। तैयो बाघ उ येतै कैहके असियाल रहलै। चमरा तैयो नै येलै, त बाघ वोकर घर ताकैत राइतके गाँममे पहौंच गेलै। ओकर बारीमे बैठके चियाचाटी करैत कनसों लेबे लागलै। बरखा झैर लाधने रहै। चमराके घर खर दने छारल रहै। छारलाहा घर टप टप चुबे लागलै। चमराके मालुम भ्या गेलै जे बारीमे बाघ आइबके बैठल छै। उ त बाघले जुत्ता नै बनेने रहै। चमरा आपन घरबालीके कलेमचे कहल्कै रे बुढिया बाघसे त कोनो धरानी बचलियौ। आब टिप्पा खलसे क्यान गेलियै, केनं बचबौ। यि बता सुइनके बाघके मन भारी भ्या गेलै। बाघ कहियोने टिप्पा खलके नाम सुनने रहै। यि टिप्पा खल कोन जानवर चियै। बाघके संका लागे लाग्लै। यतबेहेकमे एकटा बलगर धोबिया हह्याल फफ्याल आपन गदहाके ताकैत राइतके वोनै येलै। ओकर गधहा हर्‌या गेल रहै। धोबिया बडी खिसियाल रहै। उ एकटा मुङ्री हाथमे लेने छेलै। राइतमे बिजली चम्कैत खना उ बाघके बारीमे अनचोकतै

देखल्कै । वोकरा बाघ गधहे लखा लाग्लै । उ फाइनके बाघके उपरमे चरहल आ दनादैन बाघके मुरीमे मारे लाग्लै । बाघ के डर भ्या गेलै । हमरा वोह्या टिप्पा खल पकैर लेलक कैहके हबर हबर बोन दिसना भागे लागलै । बोन दिसन जाइत देखके धोबियाके यि गधहा नै बलकी बाघ चियै कैहके मनमे संका हेबे लाग्लै । उ बहौत डर्या गेलै आ भागैले ताके लाग्लै । लगेमे एकटा घोंइघ वला गाछ देखल्कै । हबर हबर कुइदके ओइ गाछके धोइँधमे ढुइक रहलै । लहुलहान बाघ कनहिक दुर ज्याके गाछे लग बैठ रहलै । भिन्सरके समयमे कोनेसे सुं सुं करैत एकटा नढिया ओइसना पहौंच गेलै । बाघके घायल आ उदास देखके उ पुछे लागल । आरे बाप रे, हौ कथी भेलौ मामा ? तोहर येहेन हालत के कैल्क ? बाघ खिसियाके जबाव देल्कै चुप भ्या जो पाजी । बहौत फुतीनै देखा नेत तुहूं टिप्पा खलके सिकार भ्या जेब्या । नढिया कहैछै, कोने छै हौ टिप्पा खल हमरा देख्या देने हम वोकरा ठिक करबै । बाघ धोबिया घोसरलहा गाछ दिसना देख्याके इसारा कैर देल्कै । नढिया गाछके धोंइधमे गेलै या सुट्ट सिना नेंगरी ढुक्याके टोबे लागलै । ओकर नेङगरीके कुछोने भेटलै । कहाँ छै कोइ यैमे हौ मामा ? तों त वाहिनंङे डेराइत रहै छ । यतबेहेकमे धोइंधमे घोसरल धोबिया नढियाके नेंगरी हाथमे ओझरैलक आ पकैर लेलक । नढिया नेङगरीके ताने लागलै महज चमता ओकर नेङगरीके जोरसे पकडने रहै । पाछै उ आपन दुनु टांङ गाछमे अड्क्याके जोर से खैंचे लागलै । नढिया जोरसे बल करैत छोराइले ताकै । यहै खैंचातानीमे उ बाघके गुहारे लागाबे लागलै, जल्दी आब ने मामा हौ । हमरा छोर्रया द्याने । बाघ आरो बेसी खिसियाके कहल्कै, आब मोर ने, हम नै येबौ । नढिया अन्तिममे दुनु ठेंगहुनियां द्याके समुचे बल लगैल्कै । ओने चमरा सेहो कसकस्याके पकरने रहै । तकर नतिजा भेलै वोकर समुचे नेंगरी छोल्या गेलै । छला आ रुंइयाँ हाथमे सुरकल चैल येलै । नढियाके नेङरीसे गर गर लहु चुबै लागलै । उ बाघ दिसन दौरलै आ हक्सो फक्सो हैत कहैत गेलै यि कोनो टिप्पा खल नै चियौ हौ ममा ! यि त नेङरी सुरर्रा चियौ, भाग हौ मामा ने त तोरो नेंङरी हमरे लखा हेतौ ।

स्रोतः-पवन चौधरी (पिता), पटेर्वा सप्तरी । छोट उमेर में सुनल ।

बतक (राजहाँस)

-नन्द लाल चौधरी

प्राचिन कालमे एकटा थारू राजा रहै । वोकर नाम जस सगरे चारुकता फैलल छेलै । उ एकटा उदार, प्रजापालक आ दानी राजा रहै । वोकर जस किर्ति बहौत दुर तलिक छेलै । सौंसे राज्यमे सुख सान्ति छ्याल रहै । राजपरिवारके सदस्य सब संगे जनता सब सोहो हंसी खुससाथ जिवन विताय छेलै । राजाके महरानी परम सुन्दरी आ सुसिल आचरनके उदाहरन रहै । ओकरा राजा आपन तनमनसे चाहै । ओकर हरेक इच्छाके पुरा करै । तैं महरानी राजाके बहौत प्रिय रहै । दुनु गोटे एकदोसरके अन्तर मनसे चाहै ।

एक राइत आपन महलमे रानी सुतल रहै । सपनामे एकटा दुर्लभ सुवर्न हंस 'हाँस' देखल्कै । जकर रुप यतहेक मनमोहक रहै जे महरानीके मनके सम्यागेलै । सपना टुटैत मातर अकचक्या उठलै मगर हँसके चाहनामे व्याकुल भ्या गेलै । तुरन्त तखैनिये रानी राजाके बोलाइले दासीके पठैल्कै । राजा जब रानी लग येलै त रानीके इच्छा सुइनके चकित रैह गेलै । रानीजे अपुर्व सुन्दर हंसके सपनामे देखने रहै वोकरे तुरन्त लाबैले कहल्कै । रानी सतवैध (संकल्प) सहित कहने रहै जे यि हमर मनके अन्तिम चाहना चियै । यकर विना सांचे हमर जिवन सार्थकनै अधुरा छै । तैं कोनो हालतमे हमरा उ सुन्दर हन्स चाही ।

बिहान अनगुतिये राजा आपतकालीन सभा बोलाइके आदेस देल्कै । राज सभामे राजाके बिसवासी पात्र, गुनी विदवान सब येलै । भरल सभामे रानी द्वारा सपनामे देखलाहा हँसके प्रस्ताव राखल्कै । प्रस्तावके सुइनके पुरे सभा अवाक रैहगेलै । यि एकटा आजिगुजी नै असाधारन सपना रहै । तैहनँ सामान्य हँसके नै दुर्लभ हँसके अर्थात राजहँसके बात रहै । जेकर चर्चा वै राजमे प्रमुख खबरके रुपमे चारुभर गुन्जल छेलै । कोइ कोइ अनुभवी आ बुजुर्ग व्यक्तिजे वोइ हँसके जानकारीके सौभाग्य प्राप्त करने रहै सविस्तार कहैके अपिल कैल्कै ।

उ सम्मानित सभामे कहल्कै महाराज यि बोधिसत्व हँस अर्थात भगवान बुद्धके पहौन्का जलमके रुप चियै । तै येकर सरिर निर्मल तथा सुवर्न छै । सौन्दर्य पावन आ गती सोभायमान रहै छै । यि सैब हँसके राजा राजहँसके रुपमे अती दुर्लभ आ

दर्सनिय छै। वोकर बोली सरस एवँ मिठे नै बलकी कोनो सुन्दरीके पायलके झँकार समान छै। वोकर रहै के ठाम साधारन नै हिमालय पर्वतके सान्त, सुरम्य मानसरोवर मेछै। जैठना यकर साथ मन्तरी सुमुख और सहचर सब रहैछै आ जैठना निल कन्चन पाइनमे असँख्य कमलके फुल फुलाइत रहैछै। यतेक बात सुनैत साथ राजा ब्रम्हदत्त सभामे सबके पुछल्कै जे बोधिसत्व हँस केनँखे येतै ? यकर निमन उपाय कोन हेतै ? एकटा बुढ, भलाआदमी राजाके सल्लाह देल्कै महराज अगर यैठनो मानसरोवरसे बैढके राजसरोवर निरम्याल जाय त यि काम जरुर सफल भ्या सकैछै। राजाके मन माइन गेलै तुरन्त राजमिस्त्री आ वोकर सहायकके बोल्याके आदेस देल्कै। मानसरोवरसे बैढके सुन्दर सरोबरके बना, राजकोससे तोरा बिसेस इनाम मिल्तौ। अगर यि काम तों नै करबिही त बहौत बरका सजाय भुगते परतौ। राजमिस्त्री जिजान लग्याके कमे दिनमे बहौत सुन्दर सरोवरके निर्मान करल्कै। "कहै छै राजाके घर कहौं मटिया दुःख" वोइ मे निर्मल जलके प्रबन्ध भेलै, कुमुदनी (कमल) तथा रंगविरंगके कनकी माछ सब साथे पँछीके जलबिहारके सोहो व्यवस्था भेलै। येहेन राजसरोवर जकर सुनाम चारुभरामे फैले लाग्लै। यि बातके खबर जब मानसरोवरके हँस सब सुनल्कै त वोकरो मन ललच्याबे लाग्लै। कोय कोय उड़इके चैलियो येलै। मन्त्री हँस सुमुख यि देखके दुःखी भेलै तथा सबके चित्त बुजहायके प्रयास करल्कै मगर उ सब नै मानल्कै।

हँस सब राजसरोवरमे आबैके खबर जब राजा सुनल्कै त खुस भेलै मगर बोधिसत्व हँसकेनै आबैके खवरसे दुःखित भेलै। महज यि आसमे छेलै जे सैब हँस येतै तकरबाद हँसराज जरुर येतै। तैं ब्याधा (चिरै फंसाबैवला) के बोल्याके जाल बिछ्याके राखैके आदेस जारी कैल्कै। ब्याधा राजाके आदेस के पालनकरैत तैहनँ कैल्कै। आखिर उ समय चैल येलै जकर बहौत दिनसे आस रहै। बोधिसत्व हँस आपन मन्त्री हँस सुमुख तथा और हँसके साथ साही अन्दाजमे राजसरोवर पहौंचलै। वोकर आइबते मातर सौंसे जलासय स्वर्निम सोभायमान भ्या उठलै। यैठनाके ठाठबाट सजाबट देखके स्वयम् राजाहँस बोधिसत्व आसचरजमे पैर गेलै। आपन मन्त्री सहचर आ साथीके खुस देखके वोहो आपन दुःख बिसैर ग्याल। मगर दुर्भाग छहाइरे लखा वोकर पाछु लागल रहै। सुख चैन कुछे दिनमे वोकर दुःख दरदमे बदैल गेलै। जखनी उ ब्याधाके बलगर जालमे फाँइस गेलै।

बहौत निकलैके कोसिस कैल्कै मगर सफल नैभेलै । अन्तमे आपन दु:खके परबाह नै कैरके औरके बचायले सोचल्कै । सुमुख और साथी सबके तुरन्त चैल जाइले आदेस देल्कै । सबकोइ त चैल गेलै मगर विस्वासी मन्त्री सुमुख बोधिसत्व हँसके छोइरके नैगेलै । उ वोहैठना जालके कातमे वफादार सेवक लखा ब्याधाके बाट ताकैत रहलै । सब कहल्कै चल सुमुख जान बच्याले येहा मौका छौ । मगर उ ककरो बात नैमानल्कै । ब्याधा जलदिये येलै आ दुइटा हँस जालके भितर बाहर देखके खुसीसे झुइम गेलै । उ जलदी बोधिसत्वके जालसे निकालैले चाहल्कै, कि यतबहेकमे बहौत करुन स्वर सुनल्कै । यि सुमुख वोकरा विन्ती कैरके कहने रहै जे हे ब्यधा हँस राजाके छोइर दहै । वोकरा आजाद कैर दहै । वोकरा पकैर के ल्याजेबही त बहौत बडका अनर्थ भ्या जेतै । ब्याधा नै मानल्कै उ यै कामके राजा हमरा बहौत इनाम देतै कहल्कै । त जवाब मे सुमुख कहल्कै तब हमरा पकैरके ल्या चल मगर वोधिसत्वके छोइर दहै । हम वोकरले आपन जानो दैले तैयार चियौ । येहेन आत्मविस्वास आ करुना भोरल याचना ब्याधाके यतहेक असर कैल्कै जे उ दुनुके छोडैले तैयार भ्यागेलै । राजाके आदेसके उलगा करैले तैयार भेलै । यैसे जानो जाइके सजाय भ्या सकै छेलै मगर उ तकर परवाह नै कैल्कै । वोकर भितरके मनुस जाइग गेल छेलै । तैयो उ कुछ सोंचमे छेलै कि बाधिसत्व हँस वोकरा एकटा निमन सल्लाह देल्कै । कहल्कै चल हमहु तोहर सँगे राजमहल जेबै राजाके सबबात कैहके समझेबै । भ्या सकैछै तकरवाद समय दोसर भ्याजाय । उ तिनु मिलके राजमहलमे राजाके सामने हाजिर भेलै । सविस्तार अदवसे बृतान्त सुनैल्कै । राजा येहेन दृस्यके देखके आसचरचकित भ्यागेलै । वोकरा तखनी बिसवास नै हैछेलै मगर असिम बिरता,साहस आ करुनाके अगा राजाके मन मोम लखा पिघैल गेलै । उ ब्याधाके खुसी साथ माफी द्या देल्कै । बोधिसत्व आ सुमुखके आपनसाथ वहै राजमहलमे रहैले अनुरोध कैल्कै । बोधिसत्व आ सुमुख राजाके बात माइनके वोइ दिन त रहलै मगर बिहानके फैन हिमालय मानसरोवर दिसन हँसी खुसी साथ उइडके चैल गेलै । निचोड (विनम्र भाव आ करुना पाखन लखा मनके मोम बन्या सकैछै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- ग्रामीन गुरुजन बुढ पुरानसे ग्यान स्वरुप सुनल ।

देवनाथ, भवनाथ

-नन्द लाल चौधरी

बहौत पैहनेके बात चियै। अखैनका सिरहा जिल्लाके भगवानपुर गाममे दुइ भाइ रहैछेलै। एकटाके नाम देवनाथ आ दोसरके नाम भवनाथ रहै। उ दुनु पहलमान रहै। दुनु विस्वास बन्सके रहै। देवनाथ जेठ आ भवनाथ छोट रहै। दुनु एकसे एकैस बड बिर रहै। वोइ दुनुमे यतहेक मिलान रहै जे एकके बिन दोसर नै रैह सकै। देखैयोमे येके रंग रुप रहै। बेसी नै देखलाहा लोक सब वोकरा जेमा भाइ बुजहै। एकटा अदभुत सक्ती देखायबला पराकरमी रहै त दोसर बलवंत पहलमान। दुनुके नाम जस यहै पार नेपालमे मात्रै नै वोहौ पार भारतमे बहौत दुर तलिक फैलल छेलै। कारन रहै उ जते जाय जितके आबै। उ दुनु हारके मुंह कैहियो ने देखने रहै। जनलोक अनुसार वोकरा दिनाभद्रीके आसिर्वाद प्राप्त रहै। एक दाइब वोकरसे दिना भद्रीके साछात्कार भेल रहै। कहैछै भवनाथ दुइटा अगारी पछारी सडकमे चलैत हाथीमे अलगचित फानैके एक हाथीसे दोसर हाथीमे चढहैके सामर्थ राखै छेलै। यै हाथीसे कुइदके वै हाथीमे चैल जाय। बदमास हाथीयोके उ साइधके आपन बसमे लाइबके मन्यालै। तहैसे वोकर नाम दिनो दिन सगरे फैलैत चैल ग्याल छेलै। येह्या प्रसिद्धीके देख दिनाभद्री वोकरा जांचैले भेष बदैलके येलै। जै दिन वोकरा देवता भेटलै भवनाथ अखराहा में कुस्तीके अभ्यास करैत रहै। वोकर अखराहा बरीटा तेतैरके गाछ लग रहै। अखैन ओइसना गहवर बन्याल गेलछै। वोहै गाछ लग दिनाभद्री एकटा बच्चाके रुपमे प्रगट भेलै। कनियेटा सुन्दर बालकके रुपमे। हांसैत फुरकैत आइबके वोकर आगामे ठाढ भेलै। कुछोने बाजै खाली भवनाथ दिसन ताइकके हांसैत रहै। भवनाथके जब वोकरमे नजैर परलै त वोकरा आसचरज लाग्लै। मनेमन सोचल्कै अतहेक सबेरे यि बच्चा यैठना कथीले येलै ? के चियै ? देखैमे बरी सुन्दर लागैछै। मगर नाकमे पोटा लागल छै। उ पुइछ लेल्कै। तोंहे के चिही बौवा, यैठनो कथीले येलही ? जो वोने खेलाइ हे। उ बच्चा नै गेलै, ठारहे हाँसैत रहलै। तब भवनाथ वोकरा कहल्कै "कथी कहै चिही कहने, कोनो काम छौ ?" तब बच्चा हाँसैत कहल्कै "हँ, हम तोहरसे कुस्ती

खेलैले येल चियौ, लेने तों हमरा पटक" देवनाथ सुइनके चकित भ्या गेलै । वोकर मनमे रङ विरङके सङ्का उब्जे लागलै । एक मन कहै देखै में बच्चा छै कहैछै कुस्ती खेल्बौ । दोसर मन कहै नै, यि कोनो देव पितर चियै । सम्हैर जो भवानथ नेत पाछु पछताबे परतौ । उ बरी दोधारमे पैर गेलै । कुछ देरके बाद उ फैसला कैरिये लेल्कै, मनेमन । "यतहेक दिन हम यैठना अखराहामे खेलैत येलियै कैहियो येहने नै भेलै । आइ जरुर कुछ कारन छै, हमरा कोइ देवंस जाँचैले चाहैछै । उ चट्से कल जोरैत एके टाँग दने ठाढ हैत कहल्कै "हमरा माफी देल जाउ हम वोतहेक बलगर नै चिय, हम तोहर आगु एको छनने टिके सकब । हम हाइर गेलिये" यतहेक सुनैत बाल स्वरुप दिनाभद्री आपन दिव्यरुप में प्रगट भेलै । भवनाथके वरदान दैत कहल्कै " ले बौवा हम तोरा आसिर्वाद दैचियौ । आइसे तों ककरोसे नै हारबिही । सगरे अजेय रहबिही । हम दिनाभद्री चियौ । देखै चिही वोने लगेमे हमर थान छै । आइ तो वोने माथे घुइमके गोर नै लागलिही, सोजहे खेले लागलिही तैं हम तोरा जांचलियौ । मगर तों जाँचमे सफल रहलिही । हम खुस भेलियौ । हमरा तोंहे कैहियो ने भुलिहे । हम तोहर बापो ददाके कुल देवता चियौ ।" अतेक सुइनके भवनाथ दिनाभद्रीके टाङ छुबैले चाहल्कै, मगर तैसे पैहनै उ बिल्या गेल रहै । कहैछै तहै दिन से वोकर जस प्रतिस्ठा दिन दोगुना राइत चौगुना बरहैत चेल गेलै ।

एक समयके बात चियै पहलमानी लडैके बदान (चुनौती) भगवानपुरमे येलै । सगरे ढोलहा पिट्याल गेलै । सुकरातीसे पैहनेके बात रहै । यि बदान राजाके पहलमानसे कुस्ती लडैके रहै । सगरे सोर भ्या गेल रहै, राज पहलमानके जे पछाइर देतै वोकरा राजके तरफसे बहौत बरका मान पदवी आ इनाम मिलतै । सौंसे जिल्ला आ क्षेत्रके पहलमान सब सदरमुकाममे जम्मा भेलै । भवनाथ सोहो तम तैयार भ्याके वोइठना गेलै ।

कहैयोले रजाके पहलमान ! रजाके देहके बान्ह आ काया देखके कतहेक पहलमान सबके मुंहके थुक सुइख गेलै । त कतहेकके तौरमे जि सटे लागलै । तैयो साहस क्याके बौहतो प्रतिद्वन्दी सब डन्ड बैठकी करे । तैयार भ्याके लडै, दम खम देखाबे । महज अचम्मके बात कोनो पहलमान नै राज पहलमानके अगामे टिके

सकलै । जैहनंङ तल ठोकैत आबै वोहनंङ मुरी तर कैने पछरल चैलजाय । राज पहलमानके देहमे माइटोने लागल रहै । देखैवला लोकसब कहै “धौ, यि पहलमानी नै धियापुताके खेल हैछै, कोनो मजा नै आबैछै ।” आखिर उ समय चैलिये येलै जकर बाट सबकोइ ताकै छेलै । ऐलान भेलै “भगवानपुरके पठ्ठा पहलमान भवनाथ चौधरी थारू तैयार हो ।” भवनाथ देव पितरके सुमरैत कलमच एक कातमे आपन सँगवे सँगे बेठल छेलै । आपन नाम सुइनते मातैर उइठके ठाढ भेलै । वोकरा देखके बहुतोकोइ फोकरा परहे लागल “बड बड घोडी भाँसल जाय त नरघोडी पुछे कतहेक पाइन ?” जवाबमे कोइ कहै “देखैमें छोट मगर घाव करे गम्भीर ।” यहै आस निरासके सामना करैत भवनाथ मानसिक रुपसे आपनके तैयार कैल्कै । दोसर पहलमा जेनं सानसिला देखाबै तनं उ नै कैल्कै । एकेबैर अलगचीत फाइन के (जैहनङ चलैत हाथी में कुइद के चरहै) अखराहामे ज्याके ठाढ भ्या गेलै । देखैवाला सबके आँइखमे चमक आ मुहसे वाह निकैल गेलै । राज पहलमान देखके मोछमे ताव दैत भिरैले हाथसे इसारा करल्कै । भवनाथ नै गेलै । कुछ देर ठाढ रहलै कोनो चिज खोजैत । जे चिज उ खोजै छेलै, भाग्यवस से एक कात अखराहा लग राखल छेलै । से छेलै पाकल पजेबा (इंटा)के टुक्रा सब । उ चट दुइ तिन टुक्रा हाथमे लैल्कै आ तरहथी मे येहेनके मिरल्कै जे चराइ मराइ आवाज वैठनाके लोको सब सुनल्कै । राजाके पहलमान सोहो सुनलक । उ आवाज वोइठना पजेबाके नै रहै । सांचे कहल ज्या त राज पहलमानके मान मर्दनके छेलै । वोकर दम्भ तखनी जरुर चकनाचुर भ्याल रहै । वोकर हालत देख लोक संहजै वोकर मनके अनुमान लग्या सकै छेलै । डङकाके चोट आरो वातावरनके भयङकर बन्या रहल छेलै । कुस्तीके नियम अनुसार पैहने दुनु पहलमानके सलामी लैले परैछै । तैं भवनाथ वोकर मर्यादा राखैत सलामी लैले हाथ बरहैल्कै । प्रतिद्वन्दी पहलमान नै चाहैत हाथ बरहैल्कै । येत्या मौकाके फाइदा उठाइत भवनाथ राज पहलमानके हाथ चट् सिन पकैरके दाबल्कै । वोने डंका में जतहेक जोरसे चोट परै यने उ ततहेक जोर से राज पहलमानके हाथ दाबै । हैत हैत अन्तमें यतहेक जोर लग्याके संरसी लखा दाबल्कै । जाबे तक उ चित भ्याके हाइर नै स्वीकार कैल्कै ताबे तक दाबैले नै छोरल्कै । दर्सकके भिरमे जेना खुसीके बाइढ चैल याल छेलै । सब कोइ भवनाथके जोर जोरसे जय जयकार

करे लाग्लै । खुसीसे सैब झुमे लाग्लै । वोकरा राज्यके तरफसे विसेस सम्मान आ इनाम मिललै । राज पहलमानके पदवी सोहो भेटलै ।

देवनाथ जेठका भाइके नाम रहै । जैहनंङ नाम तैहनंङ काम । वोहो आपन सक्तिसे चारु दिसन नाम कमैने रहै । वोकरो नाम आ जसके डंका नेपाल आ भारतमे बरी दुर दुर तक बाजै । एक समय सिमा वोइपारके एकटा नामी जादुगर भगवानपुर ऐल रहै । देवनाथके पोखैर महारमे डिगडिगीया बजाइत जादु देखाबे लाग्लै । खेत रोपनीके भदबरीया समय रहै । बहौत लोक सब जम्मा भेल रहै । कोइ कोइ वोकरा कहनौ रहै । "तों जादु देखायमे सेर चिही त यनौ सवा सेरछै, सम्हैरके काम करिहे, लेनायके देनाय ने पैर जाउ ।" तैयो उ सावधान नै भलै । आरो जोरसे डमरु बजाइत जादु देखाबे लाग्लै । संयोगसे देवनाथ तखनी हरबाहीमे जन लग रहै । यतबेहेकमे एकटा गामके छौरा दौरके ज्याके देवनाथके वोइ जादुगर द्या कहल्कै । देवनाथ वोकर बातके नै सुनल्कै । यि सोइचके टाइर देल्कै जे कोनो गरीब आपन पेट पालैले जादु देखाइछै त हमरा तैसे कोन लेना देना ? कनहिके समय में दोसर छौंरा फेरसे दौरल येलै । उ पहौनकासे बुझनुक रहै । वोहो कहल्कै "मालिक कहैछै कोइ माइका लाल है तो आओ और मुझे अजमालो ।" देवनाथ कहैछै, तेहेन बात ! देवनाथ हरबाहसे जाबी लाबैले कहल्कै आ छौराके जाबी दैत कहल्कै "ले यैमे पाइन भोइरके वोकर लग बाटे जो । जैसे तोरा पाइन लजाइत उ देखौ ।" छौरा अक ने बक वोकर मुहें दिसन ताके लाग्लै । वोकरा विस्वासे नै भेलै । देवनाथ बुइझ गेलै । कनहिक जोरसे कहल्कै । "जोने हम जेनं कहै चियौ तैहनं कर । उ छौरा तैहनं कैल्कै । जाबीमे पाइन भोरल्कै त ओइमे पाइन भोरल गेलै । उ पाइन भोरल जाबी ल्याके जादुगर लग दने जाइछैलै मगर जादुगर एकटा कैटकीके तिर दने वोइ जाबीके पाइन फोइरके बह्या देल्कै । जादुगर अपनाके जित समैझके खुसी हैत और जोर जोरसे डिगडिगीया बजाइत फद्फदाबे लागलै । "हे काली कलकत्तेबाली आज न जाय तेरी वचन खाली, हम भि तुम्हें आज देख लेंगे ।" उ छौरा घुइरके देवनाथ लग येलै आ निरास हैत जाबी देल्कै । देवनाथ आपन इच्छा सक्तिसे सब बात बुइझ गेलै । इटा दाइव उ गम्भिर हैत कुछ फरक कैल्कै । हरबाहके कहल्कै "आब चामके अर्सा ला त रौ ।" अर्सा

हाथमे ल्याके ककरो सुमैरके कुछ मन्तर परहल्कै । देखते देखते अरसा बरका मरदाना चिलहौर भ्या गेलै । अकासमे उरैत उ जादुगर दिसन गेलै आ पोखैर महारके तारके गाछमे बैठ रहलै । जादुगर खौम सानसिला देखाइत जादुमे मस्त रहै । बेटाके काइटके कोंढ करजी निकाइलके लोकके देखाइत रहै । अतबेहेकमे चिलहौर हवासे बात करैत येलै आ झपैटके कोंढ करजी ल्या गेलै । जादुगर सिठियाल रैह गेले । वोकर मन्तर जादु सब पार भ्या गेलै । वोकर बेटा बहोस अवस्थामे रहै । चारु दिसन खलबली मचल आ बेटाके मरल अवस्था देख उ छाती पीटे लागल । जोर जोरसे काने खिजे लागल । यतबेहेकमे एकटा बुढ बुझनुक येलै आ कहल्कै "देखलिही हम तोरा पैहनै चेतैने छेलियौ । तैयो तों नै मानलिही । आब जो वौइठना सबा सेरके पैर परैले । वोह्या तोहर बेरा पार लगेतौ ।" जादुगर कानैत खिजैत देवनाथ लग पौंहचल । दुनु हाथ जोइरके माफी मांगलक । देवनाथ वोकरा माफेटा नै कैल्कै, बरु बेसीये इनाम आ पैसा द्याके पठैल्कै । भारतके जादु देखायवला जहै बाटे येल छेलै फैन वोहै बाट दने हंसी खुसी चैल गेलै ।

देवनाथ देखैमे गम्भिर, सोझ आ धार्मिक स्वभावके रैहतो उ मजकिया रहै । लोकसबके सैबघडी हँसाबैत रहै । कहैछै तैं वोकर जादुके सिकार बेसी तरकारी बेचैवाली कुजरनी सब हेबै । भगवानपुर गामके चलन अनुसार कोइ तरकारी बेचे आबै त पैहने देवनाथके घर दिसन घुइमके कुछ तरकारी चरहाबे परै । तेनं करनेसे वोकर सामान जल्दी बिक जाय । पैसो इच्छाअनुसार नफा हेबै । मगर जे नै चरहाबै अटेरी कैरके चैल जाय, तकरा मोल चुकाबे परै । वोकर तरकारी घेरा रहै त साँप और अलहु भन्टा रहै त बेंङ बैन जाय । बेचैत खना जब ताकै त देखके जि जान सब उइर जाय । कतहेक कुजरनी सब त बाप बाप करैत देवनाथ लग दौरल जाय आ माफी मांगै । मगर देवनाथ हांसैत वोकरा कहै "देखा त कहां छै तोहर ढकियामे साँप ?" डरे थर थर कांपैत ढकिया उघाइरके देखाबै । आसचरजके बात तरकारी जैहनङ के तैहनंङ ढकियामे मौजुद रहै । यि देखके सब लोक हाँसै उल्टे कुजरनी सबके दुतकारे लागै ।

कहै "एकटा भलादमीके तों सब कथीले बदनाम करैचिही ? कुजरा कुजरनीसब तब लाजसे मुर तर कैरके चैल जाय ।

दोसर एकटा रोचक खिस्सामे देवनाथ बरियातमे एक दाइब मौगलान (भारत) गेल रहै । गैरथारूके (बजियानी) बरियातमे बहौत हंसी मजाक हैछै । बरियात सबके बहौत तंगो करैछै । रंग रोगनसे ल्याके गितमे खाइत खना जनिजाइत सब बडे गाइरो परहैछै। खानाके परिकारमे तरुवा गरुवाके बदलामे भिmट्कामे बेसनके चौस लग्याके सन(जुट) आ और दोसर खाद्य पदार्थ सब खायले दैमे नै चुकैछै । यैके बाहेक दिनमे अंगनामे बोल्याके धोती लगायले कहलक आ जनिजाइतसब काजर तक बरियाती सबके लग्या दैछै। संयोगसे येह्या हंसी मजाकके सिकार हैके समय एक बैर देवनाथोके भागमे परलै । वोकरो जनिजाइतसब बरियाती संगे अंगनामे बोलेल्कै । देवनाथ बिच एडनमे ज्याके बैठ रहलै । जनिजाइत सब कोइ कुछ त कोइ कुछ कैहके हंसी मजाक करै । कोइ बजियाइन कहै "कान केहेन सुप्पे सन सन छै !" कोइ कहै "भिmटका दने मोइलके देखहिने बड निक लागतौ" देवनाथ चुपचाप सान्त भावसे वोइ सबके चिया चाटी लै छ्याल । अतबेहेकमे एकटा मौगी चमैकके हाथ देखाइत कहल्कै "रह हम भिmटका लाबैचियै । कानके मोइलके देखबै, केहेन लागैछै । अतहेक कहैत ज्या उठैले कैल्कै कि वोकर पोन पिढीयामे सटल रेह गेलै । वोकरा उठल नैगेलै । लाजके मारल उ बैठले रैह ग्याल । कुछो ने बाजै, वोकरा डरो भ्या गेलै आब केनं ह्यात । दोसर मौगी वोकरा खिसियाके कहल्कै "गे उठ ने कथी भेलौ ? ने त हमरा कह ने, हम मोइलके देख्या दैचियौ ।" अतहेक कैहत वोहो उठैले कैल्कै मगर वोकरो वोह्या हालत भेलै । अन्तमे जे उठैले करै तकरे बिछौना पछामे सटले आबै । सब डरसे खसै परै आ "गै म्या कथी भ्या ग्याल" कैह के बैठ रहै । कोइ त डरके मारे कानेखिजे लागलै । जोर जोर से हल्ला खल्ला हेबे लाग्लै । यि बात रसे रसे भोइर गाम सोर भ्या गेलै । गामके मुख्तियार बुढ पुरान जब सुनल्कै त बुझ्m गेलै जे जरुर देवनाथके करल हेते । जनिजाइत सब जरुर कुछने कुछ बदमासी करने हेतै । ज्याके गामके तरफसे माफी मांडे परलै। तखैनिये सब दौरल गेलै आ कल जोइरके सबके माफी माडैले कहल्कै देवनाथ सबके हाँइसके माफ क्या देल्कै । सबकोइ आपन आपन घर गेलै । देवनाथो सानसे आपन घर चैल येलै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- भगवानपुर भगवती मन्दीर के बृद्ध पुजारी बाबहनसे साथीसब संगे खिसाके रुप में सुनल ।

टिकु दुरा

-निर्मला देवी थारु
सम्भुनाथ नपा- ५
मोहनपुर सप्तरी

एक गाँममे टिकु नामके एकटा लोक रहै । उ दुरपनी करैछेलै । दुरपनी के मतलव लडका आ लडकीके वियाह करैके तालमेल मिलेनाइ हैछै । पुरबके बात पछिम पछमे, पछिमके बात पुरब पछमे, उत्तरके बात दछिन पछमे, दछिनके बात उत्तरके लडका लडकी पछमे सुन्याके मिल्या जुल्याके वियाह निचित करै कराबै छेलै । कनियाँ बर दुनु पन्छके विस्वास बलगर क्याके वियाह सम्पन्न कराबैमे सिताबी रहै । तै दुवारे "टिकुदुरा" ओकर नाम धरैने रहै ।

एक दिन गाँमके सबकोइ बोन ग्याल, पछासे टिकुदुरा संग लागल ग्याल । बोनमे सबकोइ तामा काटैले यने ओने ग्याल, टिकुदुरा सेहो एक दिसर तामा काटे ग्याल । तामा काइटके सबकोइ एकठाम जरभ्याल, महज टिकुदुरा नै याल, साँझ पैरग्याल रहे । त सबकोइ ओकर खोजबिन करेलागल । सबकोइ चाल देबे लागल "हौ टिकुदुरा" "हौ टिकुदुरा" "कोने चहक" "घर चल" । टिकुदुरा बहौत पछुव्याल रेहे, उ नै सुने । वोकरौरके किलोल त सुने बघवा । सबकोइ बुझहलकै टिकुदुरा सायद घर चैल गेलौ । असियाल असियाल सबकोइ

घर चैल येलै। आब बघवा टिकुदुराके खोजे ताके लागल। खोजैत ताकैत बघवाके भेटल टिकुदुरा।

बघवा पुछलक, “तुहीं चिही गौ टिकुदुरा ?”

टिकुदुरा उत्तर देलक, “हँ हमही चियै।”

ताब बघवा टिकुदुराके गोर लागल आ बिन्ती केलक कि “हमरा वियाह कर्रयादे, गौ दुरा बाबा”।

टिकुदुरा कहलक “पहिने हमरा घर ज्यादे, राइत भ्यागेलै”।

बघवा पुछैछै, “हमर वियाह नै भेलछै, कहिया कर्या देबा ?”

टिकुदुरा कहैछै, “तोहरले हम दोसर दिन कनियाँ खोजबौ, ताब तोरा वियाह क्यादेबौ ”।

बघवा कहैछै, “चल तोरा घर तक अरियाइत देबौ”।

टिकुदुरा कहैछै, “नै तों हमरा बोनके बाहर तलिक अरियाइत दै, ओने हम असगरे चैलजेबै”।

एक दिन बघवा, टिकुदुराके घर खोजैत गाँममे चैल ग्याल। लोकसबके माइरके खेलहा ओकर रहलहा गहनासब पोटरीमे सेहो बाइन्ह लेलक। गाँममे ज्याके “गौ टिकुदुरा, गौ टिकुदुरा” कहैत गदह करैत टिकुदुराके घर खोजे लागल। गाँमके लोकसब डरसे घर घर फरकी टाटी लगबे लागल। ओहै असरमे बघवा एकगोरेके पकरलक आ टिकुदुराके घर देख्यादे कैहके विन्ती करलक। त उ लोक डरैत डरैत आगु भ्याल, बघवा पाछुपाछु ग्याल आ टिकुदुराके घर देख्या देलक।

बघवा, “टिकुदुरा गौ, टिकुदुरा गौ, बाहर या गौ” कहे लागल। बघवाके देखके टिकुदुराके घरके बौह बेटी पुतौह सब टिकुदुराके धकैलके घरसे बाहर कैलक, यि कैहके कि तोरे दुरपनीके कारन घरमे बाघ आबै छौ। टिकुदुरा घरसे बाहर निकलल

आ बाघ लाग ग्याल । बघवा कहै छै, “गौ टिकुदुरा हम बहौत गहना गुरियासब तोरा आइन देने चियौ, हमरा जल्दीसे वियाह क्यादे ।”

टिकुदुरा बघवाके हाथसे गहनाके पोटरी लेलक आ कहैछै, “काइल हम बोन येबौ आ तोहर वियाह क्या देबौ, आइ दिनसे तों हमर गाम घरमे नै आबै, लोकसब तोहरसे बड जोर डरमानै छौ ।”

टिकुदुरा गहनाके पोटरी बोकने घर ग्याल त घरके जनिजाइतसब गहना देखके टिकुदुरासे गहना माँगे लागल, त टिकुदुरा कहैछै, “ छिनरोके जन्मलसब बाघ आबैछै हमरा घरसे बाहर धकैल दैछ्या, अखैन हमरसे गहना माङैछ्या ?”

काइलके अनगुते टिकुदुरा खेलकपिलक एकटा बरका बोरा, डोरी लेलक आ बोन चैल देलक । जाइत जाइत एकटा उपाय सोंचलक, “बाघके मारैके” । उ बाघके बोलबे लागल । कुछ देरमे बाघ भेटल । बाघके टिकुदुरा सँग सँग कोसी लदी कात ल्याग्याल आ बाघके बोरामे ढुकैले कहलक । बघवा बोरामे ढुकल । टिकुदुरा बाघके बोरामे बन्द क्याके डोरीसे बोराके मुह कैसके बाइन्ह देलक आ बाघके कहलक, कि “यै बोरामे बन्द क्याके लदीमे दह्या दैचियौ त तोरा दोसर बोनमे बघिनियाँ सङ्गे भेंट हेतौ त हम तोरौरके बियाह क्यादेबौ” । कैहके बघवाके लदीमे गुरक्या देलक । टिकुदुरा घर ज्याके घरके लोकसबके कहलक कि “आइदिनसे उ बाघ कहियोने यै गाँममे येतै ।

बघवा पाइनमे बहैत बहैत निसासे लागल । बघवा जोर जोरसे छरपटाबे लागल त बोरा फाइट ग्याल आ बोरासे बहार भ्याके लदीके ओइपार उपर चैलग्याल । लदीसे उपर भ्याल आ बोनमे चैलग्याल । जाइत जाइत बघवा देखैये, एकटा बघिनियाँ चाँन सुरुजके हाथ उठ्याके कल जोरने आपनले एकटा बघवा बर माङ्गैछै । ठिक ओहै बखत दुनु बघवा बघिनियाँके भेंट भ्याल । दुनु एकदोसरसे प्रेम करेलागल ।

बघवा कहैछै, “धैन टिकुदुरा जे आपनौरके भेंट भेलौ ।”

बघिनियाँ कहैछै, “धैन चाँनसुरुज जे आपनौरके भेंट भेलौ ।” दुनुमे कुछ तेकरार भेलै । पाछे बाघ कहल्कै, कि “टिकुदुरा हमरा बोरामे बन्द क्याके आसिर्वाद देने रेहे कि बोरामे बाइन्हके पाइनमे दहल्या देबौ त बघिनियाँ सङ्गे भेँट हेतौ ताब वियाह क्यादेबौ, सेहा उपायसे आइ आपनौरके भेँट भेलौ । आब चल टिकुदुरा लगमे, वियाह क्या देतै ।”

दोसर दिन बघवा बघिनियाँ दुनु साथ मिलके टिकुदुराके गाम दिसर चैल देलक । साथमे बघिनियाँके पासमे जतेक लोक माइरके गहना बचेने रेहे सबटा एक मोटरीमे ल्यालेलक । जाइत जाइत टिकुदुराके गाँममे पुगल आ “गौ टिकुदुरा गौ टिकुदुरा” गदह करे लागल । गाँमके लोकसब थरकमान भ्यागेलै, कि पहिने एकटा बाघ आबै छेलै, आइ त दुइटा आइब गेलै आब कि करतै नै करतै ।

जाब टिकुदुराके घरमे पुगलै त टिकुदुराके घरके जनिजाइतसब खिसियाके टिकुदुराके घरसे बाहर निकाइल देलक, कि तोरे करन घरमे दुइ दुइटा बाघ याल, आब केनाके बचविही ? टिकुदुरा सेहो घबर्याल रहै जे बोरामे कैसके बाइढमे भस्या देलियै तहै रिससे हमरा कहीं मारैले याल कि । महज से बात नै रहै । बाघसब टिकुदुरासे वियाह कराबैले येल रहै । जाब टिकुदुरा घरसे बाहर निकललै त बाघसब टिकुदुराके गोड लागे लागल आ कहेलागल कि धैन तोहें टिकुदुरा जे हमरौरके भेटधाट करैके उप्या लगेलही नै त हमरौरके भेटधाट नै हेतियै । आब चल हमरौरके वियाह कर्या दिहे । टिकुदुरा घरसे सिनुर लेलक आ देवताके थानमे लज्याके बघवा हाथे बघिनियाँके सिथमे सिनुरदान क्याके वियाह कैर देलक । दुनु बघवा बघिनियाँके किरिया खियेलक कि आइ दिनसे घुइमके गाँममे नै येबै । ताब बघवा बघिनियाँ आपन सङ्गमे जतहेक गहना पोटरीमे लाबने रेहे सबटा गहना गुरिया टिकुदुराके सनेस द्याके घर पठेलक आ आपनौ दुनु गोरे बोन दिसर विदा भ्याग्याल ।

खिस्सा खत्तम पैसा हजम ।

दुखनी सुखनी

-निर्मला देवी थारु

दुखनी सुखनी दुनु बैहनी रेहे । दुखनी जेठकी बहैन आ सुखनी छोटकी बहैन रेहे । दुखनीके गरिब घरमे वियाह भ्याल आ सुखनीके धनिक घरमे भ्याल । दुखनी दुःखसे गुजारा करे आ सुखनी सुखसे रेहे । गरिबके कारन दुखनी जन, बोइनमे खैटके आपन गुजर करे । सुखनीके घरमे बहौत धन सम्पैत रेहे उ सुखसे दिन काटे ।

दुखनीके एकबेर येहेन खराब दिन गुदस करे परलै कि किकहलज्या ? बडी रौदी रहै। पाइन बरखा नै भेल छेलै, जनबोइन नेलागे, सबके अनिकाल पैरगेलै, भुखमोरी सुरु भ्यागेल छेलै। केकरो कोइ अनपाइन नैदै । दुखनीके धियापुता भुखसे बडजोर कानेखिले लागल छेलै । दुखनी सोंचलक कि यै भुखमोरीमे काम दैबाली एकेटा हमर बहैन सुखनी भ्यासकै छै, हम ओकरे लग ज्याके कहबै कि हमर धियापुता सब भुखसे बडजोर कानैछै। दैयागै हमरा कुछ खरचा बरचा दे कैहके मांगबै ।

दुखनी, सुखनीके घर ग्याल आ आपन दुःख सुन्याके कुछ अनदना मांगलक आ कहलक, हम तोरा कामे कैरके सधह्त्या देबौ । सुखनी कहैछै, पहिने हमरा ढिल माइर दे, ताब हम तोरा अनदना देबौ । दुखनी आपन बहैन सुखनीके ढिल मारे लागल । ढिल मारैत मारैत दिन बित ग्याल, जब कनियेंटा दिन रहल त सुखनी, दुखनीके छुट्टी देलक आ खौछामे कुछ खुदी, मेरखी द्याके पठैलक । जाब दुखनी कनहिक दुर पुगे लागल त सुखनी के मुरीमे फेरसे ढिल सरसराबे लागल । सुखनी सोंचलक, दुखनी हमरा असलसे ढिल नै माइर देलक, तैंह मुरीमे ढिल सरसराइते आइछ । जाइचियै हम दुखनीके खौछासे खुदी मेरखी छिनके आइन लेबै । दौरल ग्याल । दुखनी लग ज्याके ओकर खौछासे खुदी मेरखी छिन लेलक आ कहलक, हमर मुरीके ढिल तों असलसे नै माइर देल्या, मुरीमे ढिल धैरते आइछ ।

दुखनी ओइठामसे कानैत खिजैत घर दिसर चैल देलक । ओकर अगामे एकटा साँप याल त दुखनी साँप देखके और काने लागल आ दुखल बिपतल भागे लागल । त साँप कहैछै, दुखनी तों ठार हो आ नै कानै । दुखनी ठाढ भेलै या पुछैछै साँपसे कि, तों के चिही ? हमरा कथीले घैरैचिही ? साँप उत्तर देलक कि, हम सुखनीके धन चियै, हमरा तों आपन खौछामे ले, आपन घर ल्याचल, लवका

कोही पतलीमे राखिहे, राइतके चुइल्हमे चरह्या दिहे आ रसेरसे आँच लग्याके छोइर दिहे । दुखनी तहिने करलक । भोरमे दुखनीके चुइल्ह काते काते रुपैया, पैसा, सोना, असफी के अमार लागल रेहे । जाब अनगुत भ्याल त दुखनी आपन बच्चा ल्याके देहरीमे बैठल रेहे । ओहै असरमे एकटा दोसर घरके मौगी याल ।

मौगी कहैछै, आइग नै छौ ह्या ? हुँक्का पिबै ।

दुखनी कहैछै, चुल्हीमे छै, ल्याले ।

मौगी चुल्ही लग ग्याल त रुपैया पैसा, सोना असफी अमार लागल देखलक । ओइ मौगीके मन लोभ्या ग्याल । उ मौगी कुछ रुपैया पैसा खौंछामे ल्या लेलक आ चुपेचाप बारी दने डगर हैत भाइग ग्याल । दुखनी बिचार करलक कि उ मौगी अतेकाल तक आइग ल्याके नै येलै कते बिल्या गेलै ? उइठके चुइल्ह लग ग्याल त रुपैया पैसा, सोना असफी के ढेरी लागल देखलक । खुसीसे ओकर मन गदगद भ्याल । उ सब धन समैरके कोठी भलीमे, बितभाँडमे राखलक, आ भगवानके पुजा करैके ठानवान करे लागल । सुखनी बहैनके नेता देलक, ओकरा टाङ्गमे दैले कडा, पैरी गरह्याके राखलक । भगवानके पुजाके दिन सुखनी याल । दुखनी आपन बहैन सुखनीके बड स्वागत सत्कार केलक, सुखनी खेलक पिलक, राइत रहल, बिहानके सेहो खेलक पिलक आ घर जाइके बात आपन बहैन दुखनीके सुनेलक । दुखनी बडी आदर भावसे आपन बहैनके टाङ्गमे कडा पैरी पिनह्याके, लताकपडा पैहरवा क्याके, कुछ सनेसबारी सेहो देलक आ कनहिक दुर तैक अरियाइत याल । थोरहेक दुर ग्याल त सुखनीके टाङ्गके कडा पैरी बाजे लागल, “जेहो खुदी देल्या, सेहो छिन लेल्या, जेहो खुदी देल्या, सेहो छिन लेल्या ।” से सुइनके, आ दुखनीके आपन बहैन प्रतिके आदरभाव, सद्भाव देखके सुखनीके बडजोर हिन बोध भेलै, ओकरा दुखनी प्रति करलहा व्यबहारसे पछताबा भेलै, मनमन बडी दुखी भेलै, पछतावासे सुखनीके चित फाटे लागलै, देह गले लागलै आ चिन्ते चिन्तामे कनहिक दिनकेबाद सुखनी मोइर गेलै ।

खिस्सा खतम ।

चिचु परिहत

-निर्मला देवी थारु

पुरापुर्वकालमे हालके सिरहा जिल्ला वलान लदीके पछिमे सिमरा नामके एकटा गाँम रहै । उ थारुसबके गाँम रहै । ओइ गाँममे एकटा संगितके धरोहर चिचु परिहत (थारु) नामके एकटा नौजवान सेहो रहै । उ कनियेटा रहै, तहिये ओकर बाप यि संसारके आ ओकरा छोइरके चैल गेलै । ओकर खेत बलान लदीके पुर्वाइरकात अखैनका चकदह गाँम के पछिम रहै । अन्दाजी ३/४ विगहा जोगर खेत रहै । बलानके पछिम घर आ बलानके पुरबमे खेत रहै । अपनेसे खेती पाती करै । ओइ खेतमे उ अठघोडवा मचा बान्हने रहै । यै मचाके चलन अखैनत तैक थारु समाजमे छैबे करै । ओहै मचामे बैठके आपन बाइलके राखी करै या बाँसियो बजाइ । सब दिन उ मचामे बैठके बाँसी टेरैत रहै । ओकर बाँसीके धुन अतहेक निक रहै जे कोनी भि बटोही सुनै त जरुरे ठाढभ्याके एक छन सुनबे करै । बाँसी बजाइले उ आपन नाम कम्यालेने छैलै । ओकर बाँसिर बौसलीके धुन सुइनके बलान लदी मोहित भ्यागेलै । जब चिचु परिहत बौसली बजाबे लागै त बलान लदी एकदम निक छौंरीके रुप धारन कैरके चिचु परिहतलग गित सुनैले चैल आबै । उ येहेन कलाकार रहै कि कोनो भि चिजके बौसलीके रुपमे बन्याके लबका लबका धुन सिरजैत रहै । धानके पोरसे उ बौसली बन्या लैछेलै । अतहेक तैक कहल जाइछै कि चिचु परिहत के वाँसीके धुनमे अतहेक ताकत रहै कि लोक त लोक उ जनावरोके आपन बसमे कैरलै छेलै । अखैनियो थारुके गित येहेन मरम भरल रहैछै कि सुनैते लोक मोहित भ्या जाइछै । दोसर समाजमे अखैनियो कहावत छै कि थारुके बुइधमे त हाथी बाझ्हैछै । बलान लदी जे हरदम चिचु परिहत के बाँसीके धुन सुनै जैमे थारु परम्परासे भरल चाँचैर या बिरहैन रहै । सुइन सुइनके अतहेक लुबैध गेलै कि उ चिचु परिहतके सबचिज दैले तैयार भ्यागेलै । चिचु परिहतसे बियाह करैके ठाइन लेल्कै ।

एक दिन बलान खौनिक देवीके रुप ल्याके चिचु परिहतके सामनेमे प्रकट भेलै या कहलकै हम बलान लदी चियै । हमरा तोहर बाँसीके धुन बड निक लागैये । तोहर बाँसीके धुन सुननाइ हमर आदत भ्या गेलै । हम यि धुन सुनै बिना

नैरैहैले सकैचियै । जखनु तोहे बाँसी बजाइ चिही हम आपने आप तोहर दिसना तानल चैल आबै चियौ । हम तोहर से बियाह करैले चाहै चियौ । अतहेक बात सुइनके चिचु परिहतके त होस हवास उइड गेलै । अपना सम्हारलकै या कहलकै हम मनुस चियै यहाँ साक्छात देवी हमरौरके वियाह सम्भव नैछै । बरु हम सैब दिन बाँसीके धुन सुन्या सकैचियै । बलान लदी तत्काल सहमती जन्याके या सबदिन बाँसीमे गित सुनैले आबे लागलै । रसे सर उ मचामे चहैडके चिचु परिहतके गित सुने लाग्लै । यि क्रम चलैत गेलै । आव त रस सर चिचु परिहतके सेहो बलान निक लागे लागलै । येह्त्या मौका देखके बलान फेरसे चिचु परिहतसे बियाहके प्रस्ताब राखल्कै या कहलकै यि बात केकरो नै कहिये । चिचु परिहत कहल्कै बियाह करैले कथि करे परतै । बलान कहल्कै तोरा कुछोने करै परतौ । खाली तोहे बजारमे ज्याके साडी, लहठी, कनकी टाँडीमे तेल लिह या भुसना सिनुर लिह बस अतबहेक चिज ल्याके आबिहे । आन दिन मौका मिल्याके चिचु परिहत हटिया गेलै या हटियासे सब चिज किनल्कै आ पोटरी बाइन्हके लाबल्कै आ घरमे राखल्कै । यि बात उ आपन महताइरोकेनै कहल्कै । बिहान सबेरे उइठके मैयाँके कहल्कै, गे मैया आइ हमरा सबेरे भात निन्हदे । हम जलि्दये जेबै । खेत मे गाइमालसब बड हरान करैत रहैछै । महताइरके संका लागलै । आइ कथिले यि छौडा कहैछै सबेरे भात निन्हदे । काइलके हटिया गेल रहै । पोटरीमे कथी लाबनेछै देखैयो नै देलक । महताइर कहल्कै हेतै । हम जलि्दये भात निन्हदेबो । ताब चिचु परिहत गामदिसना बुलैले गेलै । ओअ समयमे ओकर महताइर पोटरी खोइलके देखल्कै आ फेनसे जैहनं छेलै तहिनं बाइन्ह देल्कै । चिचु परिहत टोलसे बुइलके येलै त भात पाकल रहै । खेल्कै या पोटरी ल्याके मनमे बहौत बात खेलाइत खेत दिसना चैल देल्कै । महताइर बेटाके हटियासे लाबलहा पोटरीमे सारी सिनुर लहठी देखने रहै । ओकरा तखुनके संका लाइग गेल रहै महज बेटाके कुछो नै कहल्कै । उ बेटा के पछ्रा पछ्रा जैसे उ थाह नै पाबे तै हिसाबसे पिछ्रा करैत करैत चैल देल्कै । चिचु परिहत सैब दिन लखा येलै खेतमे चारो ओर देखल्कै या टंङधोरबा मचा मे चहैड गेलै । बौसली बजाबे लागलै । महताइर काततेमे कोनो झारके तरमे बैठके ताके लागलै जे बेटा कथी कथी करैछै । बाँसीके धुन सुइनतै एकटा बड छनगर छौडी कोनेसे येलै या मचामे चहैर गेलै । झार मे घोसरल महताइर सबकुछ देखलेल्कै । उ दुनु गोरे मचामे बैठके गपसप करे लागलै । बलानके

मुताबिक सब चिज येल रहै । जेकरा देखके बलान बड खुसी भेलै । अतबेहेक मे ओकर महताइर झारसे निकललै या मनेमन कहैछै कोन छौंडी चियै ? उ समानसब बौवा कथीले लाबने रहै, रह त ज्याके देखैचियै । उ मचाके तरमे येलै । अने बलान साडी लग्याके चिचु परिहतसे बियाह करैले तैयार हैत रहै । बलान जाइन लेलकै जे निचामे कोइयो येलछै । उ चिचु परिहतके कहल्कै जे देखही त निचामे के येलछै ? आब बियाह नै हेतौ या उ ओइसनासे बिल्या गेलै ।

चिचु परिहत निचामे ताकलकै त आपन मैयाके देखल्कै । कहलकै मैया कतै येलही जो घर । ओकर महताइर केकरो ने देखलकै ने कुछो बाजलै या चुपचाप घर चैल गेलै ।

आपन उदेस पुरा नै भेलाके चल्तै बलान चुपचाप त चैलगेलै । महज गेलाके बाद उ एकटा गुमनाम रुपधारन कैरके उल्टे बहैत येलै । मतलब दछिन भर से उत्तर भर बहैत येलै । चुपचाप यैले या चिचु परिहतके खेत के संङे सङ अठधोडबा मचाके सेहो लेने उत्तर भरा चैलगेलै । जाइत जाइत बलान खोलाके माथ जैसना झिरहिर खोलाके भवछै या बडकाटा टबनी छै ओइसना ज्याके अठधोडबा मचाके चुपसे डुग्या देल्कै । अखैनियो उ झिरहिर लदी छेबे करै । थारुसब के गित मे अखैनयौ तैक झिरहिर लदी के उच्चारन हेबे करैछै । जेना कि झिरिहिरी झिरिहिरी एक लदी बहे तहाँ बहु सितली बसाते हो॥ थारुसबके मौलिक गित के तरज जतहेकछै ओइमेसे बेसी से बेसी गित चिचु परिहतके सिरजल चियै । उ एकटा अदभुत बाँसी बादक रहै । ओकरा भगवानेसे जस भेटल रहै । अखैनियो उ एक देवताके रुपमे गाम समाजमे पुजल जाइछै । गामघर के बुढपुरानलोक अखैनियो येह्या बात कहैछै ।

तेकरबाद लगपासके लोकसब यि बात जानलकै या चिचुपरिहत के खेत जैसना रहै या ओइसना एकटा जगह बन्यादेल्कै या दिनेदिन पुजा करे लागलै । बलान लदी ओइ थान के देहना या बमा दुनु दिसना बहै लेकिन थानके नै काटै । ओइ थान अगामे एकटा कनकी पोखैर सेहो रहै । ओकर पाइन कहियोने सुखाबै । ओइ दने जे जाइ गोडमुड लाइगके जाइ । ओकर सक्ती बहौत रहै । थान से पुरव बडकाटा परती जमिन रहै । ओइसना खेलकुद सेहो हेबे । चकदहबला सब ओइमे फुटबलके टुरनामेन्ट चलेने रहै । सायद २०५१ सालके बात चियै

खेलाडी सबके ओहै पोखैरसे पाइन लाइबदै । एकटा खेलाडी कहलकै । हैट केहेनकाहा गुँहिया डबराके पाइन हम नै पिबौ । म्याज सुरु भेलै लेकिन खेलके दौरान जे कहने रहै हम पाइन नै पिबौ । बुट लगाइतो भि ओकर टाङके बेङठा औगरी टुइटके हड्डी निकैल गेलै । यि एकटा चिचु परिहतके सक्ती कहु या सन्जोग अपने बुझहल जाउ । सबकोइ ओइ थानमे कोनो कामकाज या धार्मिक कर्मकान्डमे साँझ दैछै या सेबछै ।

अखैनका आधुनिक समाजमे आपन संस्कृती त छेबे करै लेकिन रस रस ओइमे वैग्यानिक कारन सेहो ताकल जाइछै । गाँम घरके लोकसब के धार्मिक आस्था रैहतो भि सेवा सुसारमे कमि येल जाइछै । येकरे चल्तै चिचु परिहतके थानमे साँझबाती के कमि हेबे लागलै । ८/९ बछ्रर पैहने के बात चियै । गाँममे एकटा बुढिया कहने घुरै जे तोरोरके थान मे साँझ बाती नै दैचक । साँझबाती दहक । ओकर बातके कोइ नै मतलब राखल्कै । राइतके अतहेक पाइन परलैजे बलान खोला ओइ थानके काइटके ल्यागेलै । अखैन ओइसना थान नैछै । नेत पैहने बलान खोलाके पुइलसे दछिन ताकनेसे थान या गाछ बिरिछ देख सकै छैलै लेकिन आब नैछै । ताबो लोकसब चिचु परिहतके पुजा गामे डिहबार थानमे कैरतेछै ।

जे लोक बाँसी मे आपन साधना करैछै उ अखैनियो बडका टबनीमे ज्याके चिचु परिहत के पुजा करैछै । परिहत बन्साबलीके थारुसब अखैनियो सिरहा, सप्तरी के साथै दोसरो जिल्लमा मे छेबे करै । ओकरा थारुसमाजमे अखैनियो संगितके सृजक, या नामी बाँसी बजाइवला एक देवपुरुषके रुपमे पुजा करैछै ।

खिस्सा खतम ।

दुहबी सुहबी

-निर्मला देवी थारु

दुहबी सुहबी दुनु बैहनी रेहे । दुनु बैहनी छोटेछोटे रेहेत ओइसबके बाप महताइर मोइर गेलै । आब ओकर आपन कोइयोने रेहे । दिन गुजारा चलाइले दुहबी सुहबी दुनु बैहनी चरखा काटे, धगा बनाबे, धगा बेच बिखैनके ढौवा कौरी कमाबे आ दिन गुजरा चलाबे । दुनु बैहनी बड मेहनतसे काम करे । धिरेधिरे ओइ दुनके आम्दनी बरहे लागलै । आम्दनीसे ख्या पिके जे ढौवा कौरी बचे से सब राखने ज्या । पैसाके बचत करैत करैत बहौत रुपैया पैसा बनेलक । आपन कम्याल पैसाके उ दुनु बैहनी समाज सेवाके वास्ते एकटा पोखैर कोरेलक आ एकटा धुरहर बनैलक । आपन कम्याल ढौवा कौरी ओइ धुरहरमे राखने जाइछ्याल । आपनौ उसब धुरहरेमे रेहे लागल ।

एक दिन ओकर गाँममे बडा अनिस्ट घटना घटलै । कतेकहाँसे एकजेर फौज लस्कर आन्ही बिहाइर नहाइत येलै, आ आनधुन लोक सबके मारेकाटे लागल । सबके घरमे ज्याके फौजसब लोकसबके छेमान करने चेलज्या । दुहबी सुहबीके धुरहरोमे लस्करफौज पुगल, त फौजसब, “पर्प पर्प” आवाज सुनलक, फौजसब रुइक ग्याल, उसब बुझलक कि कोनो आधुनिक हथियार से गोली चल्या रहलछै । उसब ओइ ठामसे घुइमके चैल जाइत रहल । ओहै बखत दुहबी सुहबी दुनु बैहनी जनेरके लबा भुजै छ्याल, ओहै लबाके आवाज सुइनके लस्कर फौजसब भागल ।

ओइ दुनु बैहनीके गाँममे बितल घटनाके कोनो जानकारी नै भ्याल । उ दुनु बैहनी लबा भुजैके धुनमे घटनासे बिल्कुल बेखबर रहल । जाब लबा भुजल भ्याल त

कोनो कामसे धुरहरसे बहार भ्याल आ गाम दिसर टहलल, त देखैये लोकके काटल मुर्दा । एक घरमे ग्याल, दोसर घरमे ग्याल, यने ओने ग्याल, सब दिसर लोकसबके मुर्दे मुर्दा भ्याल रेहे । पुरा गाम मुर्देमुर्दा देखलक । ओइ गाँममे एकोटा कोइ नै बचल रहै, जेकरसे उ दुनु बैहनी घटना बारेमे पुछतियै । देखके छक्क परल आ दुनु बैहनी बड डर्या ग्याल ।

गाँममे घटना घटलासे दुहबी सुहबीके मन हरुस भ्यागेले । पुरा गाममे मुर्देमुर्दा देखैये, पुरागाम मसान घाट भ्या गेल रहै । बादमे मन हरुसके कारन दुन बैहनी ओइ ठामसे चैल देलक । उ दुनु बैहनी कत्ते ग्याल कोनो ठेकान नै । आइ वोइ जगहमे दुहबी सुहबीके धुरहरके सिरिफ अवसेस छै, पोखैर तोप्या ग्याल, तकरा आइकाइल लोकसब मिल्याके खेत बन्या लेलक । अन्तमे दुहबी नामके एकटा गाम मात्रै रैह गेल ।

खिस्सा खतम पैसा हजम ।

नढिंया, खढिंया आ बटेर

–निर्मला देवी थारु

स्रोत-सनिचरा थारु

नढिया, खढिया, बटेर तिनु यारी लगैने रेहे। तिनुके बासस्थान एकटा उइँख बारीमे रेहे । दिनभोइर चरी, सिकारी क्याके साँझके तिनु उइँखबारीमे रहैले आइब जाइ। जातैक निन नैपरे तातैक तिनु गपसप करैत रेहे। एक दिन बटेर पुछल्कै, यौ यार यहाँसब झगडा देखने चियै ?

त नढिया, खढिया कहैछै, नै यौ यार, नै देख्ने चियै।

बटेर पुछलकै, झगडा देखैके मन आइछ से ?

नढिया, खढिया कहलकै, हँ यौ यार झगडा देखैले मन लागैये ?

त बटेर कहैछै, "हेतै हम काइलके देख्याद्याब।

काइल अनगुतके तिनु यार सुइतके उठल आ झगडा देखैले तैयार भ्याल। गामके दुधबेचीसब माथमे दुधके भँडिया (डबनी, थपरी, बाल्टिन आदि) बोकने चैल आबैत रेहे।

बटेर आपन यार सबके कहल्कै। "यौ यार, यहाँसब उइंख बारीसे हमरा देखैत रहु। हम जाइचियै यै दुधबेचीसबके झगडा लगाबैले"।

नढिया, खढिया उइंख बारीसे टुकुर टुकुर ताके लागल। बटेर दुधबेची सबके अगामे ज्याके बैठलै। दुधबेची सब कहै, "हैया बटेर येलै" कैहके पकरे ज्या। बटेर उइरके दोसर गारेके टाङलग ज्याके बैठे। दोसरो गोरे पकरे ज्या। बटेर उइरके तेसर गोरेके टाङ्लग ज्याके बैठे। तेसरो गोरे बटेर पकरे ज्या। बटेर फेर उइरके अगाडी बैढज्या। अहिने बटेर उडैत पकरैत, उडैत पकरैत दुधबेची सबके माथके डबनी, थपरीके ढाही लागल डबनी फुइट ग्याल। ओकर दुध हर्याके नास भ्याग्याल। उ दुधबेची रिसके मारे दोसरके थपरी फोइर देलक, ओकरो दुध नास भ्याग्याल। दुईटा दुधबेची सब झगडा करे लागल। तेसर दुधबेची झगडा छोरबे ग्याल, ओकरो बाल्टीन फेक देलक जो"तोरे कारन हमर दुध हर्याल"। चारिम दुधबेची झगडा छोरबे ग्याल, ओकरो दुधके भँडिया फोइर देलक। ओहो झगडा

करैले भिरग्याल । आब सबके एकापसमे खौब झगडा हेबे लागल । बटेर उइरके नढिया, खढिया लग आइबके झगडा देखाबैये ।

बटेर पुछै छै, "देखियौ यार झगडा देखैले कतेक मजा आबै छै" ?

त नढिया, खढिया कहैछै, "हँ यौ यार बहौत मजा लागै छै" ।

बटेर पुछल्कै, "रगडा देखबै" ?

नढिया, खढिया कहलकै, "हँ यौ यार एक दिन रगडा देखाउ, केहेन हैछै" ?

बटेर कहल्कै, "झगडा से रगडा बरभारी हैछै नै देखु" ।

नढिया, खढिया कहलकै, "देखबै, रगडा झगडासे कतबोहोक भारी हेतै तैयो देखबै" ।

बटेर कहलकै, "आइ त झगडा देखलियै, काइल हम रगडा देख्याब, तैयार रहु" ।

नढिया, खढिया कहल्कै, "हमसब तैयारे चियै, काइल देखाउ त पहिने रगडा केहेन हैछ" ।

काइल बिह्यानके बटेर कहलक, "यहाँसब यहैठाम रहु, हम जाइचियै रगडा खोजैले" । जाइत जइत धान काटैवाला खेत लग पुगल । देखैछै चारुभरा लोकसब आपन आपन खेतमे धान काइट रहल छै । बटेर सोंचलक, "यहैठाम रगडा करैले बन्हिंया रहतै" । बटेर धनकटा, धनकटनीके खेतमे ज्याके बैठल । एकटा धनकटनी देखलक, उ कहैछै, "हैय्या बटेर येलै" । सबकोइ ताकलक, बटेर एकदिसर गुरैकले चैल ग्याल । सबकोइ बटेरके पछ्ा दौरेलागल । बटेर गरैक्क गुरैक्के यै खेतसे ओइ खेत ज्या लागल । सब खेतके धनकटा, धनकटनी सब बटेरके पछ्ापछ्ा दौरे लागल । बटेर भागैत भागैत नढिया, खढिया घोस्रलहा उँइखके खेतमे चैलग्याल । पछ्ा पछ्ा धनकटा, धनकटनी सब उईंख के खेतमे पुगल । बडजोर हल्ला हेबेलागल । हल्ला सुइने खढिया बरी जोरसे भागल । कुछलोकसब खढिया खिहारे लागल महज केकरो तैयारी नै रेहे, खढियाके नै नेङारे सकलक, खढिया लदीके ओइपार भाइग ग्याल । लोकसब खढियाके छोइर देलक । आब लोकसब, "यै उइंखमे औरो खढिया हेतै, असलसे घैर" कहे लागल । लोकसब खौ मजगुतसे चारुभरसे धैरलक । उइंख काटैवाला भेल रहे, उइंखवलासे काटैके सलाह माङैले पठैलक । उइंखवाला, उइंख काटैले जन खोजने फिरे, ओहै अव्सरमें खरिया मारैवालासब उइंखवालाके घरमे पहुँचल आ उइंख काटैके बात राख्लक ।

उइंखवाला कहलक, “हम उइंख काटैले जन ताक्ने फिरैचियै” । खढिया मारैवाला कहलक, “हमरौरके बोइन नैलेबौ खढिया ढुकल छै उइंख बारीमे तकरा मारबै” ।

उइंखवाला और खुसी भ्याग्याल आ कहलक, “जा काइटके नर्या दिह” ।

धनकटा/खढियामारा सब खुसी भ्याके याल साथमे बहौत लाठी, कुत्ता लेने याल । लोकसब यते उइखबारीके घैरके बैठल रेहे । हँसुवावाला सब चारुभरसे उइंख काटे लागल । लाठीवाला सब लाठी ल्याके चारुभरसे ठारभ्याल, जे खढिया निक्लतै मारब । लाठीवालासब कोइ कोइ फुरती लगाबै, कि “हमर दिसरसे खढिया निक्लतै त हम एकेलाठीमे खढियाके माइर देबै” । कोइ कोइ चुपचाप धियान लग्याके ठारभ्याल रेहे । औरसब हबर हबर उइख काटे । उइख बारी भितरमे नढियाके डरसे पिलही चम्के कि, “आब केना ह्यात ? केनाके हम बाँचब” ? ओकरा बहौत चिन्ता लागे लागलै । बटेर नढियाके उपाय बतेलकै, कि “जेकोइ लाठी ल्याके चुपचाप धियान लग्याके ठाडभेल छै, तकरसे होसियार रिहे । जेकोइ फुरतिफारती लग्यारहल छै तकर दिसर भागिहे उ फुरती लगाइते रैहजेतै” ।

नढिया सावधान भ्याके भागैले तैयार रहे । जाब उइइख थोरबेहेक काटैले रहल त एकगोरा बडा फरुती लगाबे लागल कि, “हम खढियाके यनाके मारबै, ओनाके मारबै, महज अपना साबधान नैरेहे । तखैनिये नढिया ओकरे दिसर हुँरैकके भागल । फुरतीवाला फरती लगाइते रैहग्याल । नढियाके पछ्यु कुकुर आ लोकसब दौरे लागल । यने बटेर आरामसे उइरग्याल । नढियाके कखनो कुत्ता धरे त कखनो लाठीके माइर ख्या । केहनो केहनोके नढिया लदीमे झौफ मार्लक त जान बचेलक । ओइपार ज्याके बोनके एकटा झखरा तरमे बैठके नढिया आपन देह चाटचुट करैत रेहे त एक दिसरसे खढिया, दोसर दिसरसे बटेरो भागल याल आ हालखबर पुछलक । नढिया कहैछै, “धुत्करु बेकार हैछै रगडा, साँचे हैछै झगडासे रगडा बडभारी, आइ हमर जान जाइत जाइत जाइत जाइत रैह गेलै । धैन यि लदी जे झौफ माइरके केहनोके आपन जान बचेलियै” ।

बटेर कहैछै, “हम कैहते छेलियै कि झगडासे रगडा बडभारी हैछै, रगडा नै देखु, आइ त सँहजै सँहजै दुनु यार नढिया, खढियाके जान चैल जेतियै” ।

ओइ दिनसे नढिया, खढिया झगडा रगडासे डरमाने लागल । या मिल जुइलके रहै लागल । बस खिस्सा खत्तम भ्याग्याल ।

बदसाहीके धन

-निर्मला देवी थारु

एक नगरमे एकटा धनिक आदमी रेहे । ओकर पासमे बदसाहीके धन रेहै । उ धनिक बरी सोमचट रेहे । आपन धनमेसे एको छेदाम नै खरच करे । ओकर मैलकाइमे अहिनंगे दिन गुजारा कन्जुसाइयेके साथ, अभाव सैहतेमे बितेत गेलै । एक दिन ओकर घरबाली बुढिया सँहजै मोइर ग्याल । ओकर बेटा कहलकै, "हम आब मैलकाई कर्बै, अतहेक धन राइखके कोन काम जब खर्चे नै करबै त ? हम आपन महताइरके सराधम क्रियामे ३ बदसाहीके धन खरच करबै । चौगम्माके लोकसबके भोजभात खियेबै, दानपुन सेहो करबै" । उ आपन महताइरके सराधमे खौ धुमधामसे लोकसबके भोज खियेलक । आब ओकरपास रैहग्याल ६ बदसाहीके धन । ओकर दिन चर्या बितेत ग्याल । कुछ दिनके बाद ओकर बाप कन्जुसवा बुढुवा सेहो मोइरग्याल । ओकरसराधमे फेर कन्जुसवा बुढुवाके बेटा ३ बदसाहीके धन सम्पती खरच केलक, भोजभात खियेलक, दानपुन कर्लक । आब ओकरपास बैचग्याल ३ बदसाहीके धन । एक दिन ओकर बौह (घरबाली) सेहो मोइरग्याल । ओकरो सराधमे घरके मलिकवा ३ बदसाहीके धन खरच कर्लक । आब सैब धन खरच भ्याग्याल, ओकरपास रहल एकोटा नै ।

आदमी उ बुधियार रेहे । घर छोइरके उ चैल देलक । रम्ता जोगी बहता पानी समान । जाइत जाइत यै जिल्लासे बहौत दुर दोसर जिल्लामे पहुँच ग्याल । ओइ जिल्लाके एक नगरमे एकटा बडी धनिक जमिन्दारके घरमे पुगल । जमिन्दार घरके चौकिदारसे दर्सन भेंट करैले समाद पठेलक । जमिन्दार ओकरा भितर बोलेलक । भितर ज्याके जमिन्दारके उ नमस्कार पाति केलक आ आपन नोकरी करैके विन्ती केलक । जमिन्दार ओकरा नोकरीके स्वीकृती देलक । जमिन्दारके दोसरो नगरमे जमिन्दारी रेहे । ओकरा तै नगरके कम्तिया बन्याके पठ्या देलक ।

एक नोकरके साथ उ दोसर नगरमे ग्याल । ओइ नगरके सबनोकर, चाकर, रैती, हरवाह, चरवाहके नयाँ कम्तियासे चिन्हापरिचय कर्‍या देलक । आब उ ओइठामके जमिन्दारी आपन ढङ्गसे करेलागल । ओउ कामतमे ७ बखारी धान भोरल रेहे । उ ओउठामके जमिन्दारीमे सब दिसर घुइम फिरके, देखसुइनके, सब बात बुझ्झके आपन काम करैके तौरतरिका सोंचे लागल । चैत बैसाखके महिनामे गरिब गरुवा

सबके घरमे अन्नपाइन घटे लागल, रौदी हेबे लागल, गामघरके गरिबगरुवा सब कामतमे दु:ख सुनाबे लागल । एक दिन आपन इलाका भोइरके सबगरिब गरुवाके कामतमे बोलेलक । सब गरिबगरुवा कामतमे याल त सबके घरखर्चाके वास्ते २ बखारी धान बाइँट देलक । सब गरिबगरुवा धान लज्याके आपन आपन घरमे खुसीभ्याके दिनगुजरा करे लागल । नयाँ कम्तियाके गरिबगरुवा सब बड गुनागान करे लागल । यि बातसब जमिन्दार लग पौंहचल, जमिन्दार कोनो प्रतिक्रिया नै देलक, भित्तर भित्तर खुसी भ्याल ।

जेठ अखार मे जब बर्खाबुनी हेबेलागल त फेर लवका कम्तिया सब गरिबगरुवा के बोलेलक आ २ बखारी धान सबके जनबोइनमे बाइँटके काममे खटेलक, १ बखारी धान बियाबिचहनमे लगेलक । खेतपातमे मलजल देलक, धान रोपे कमाबे लागल । बाइल खौ सपरल । योहो खबर जमिन्दार तक पहुँचल । जमिन्दार यी सब बात सुइनके बडा खुसी भ्याल ।

धान बाइल जब बन्हिंयासे पाकल, डाँट सुख्या ग्याल त कम्तिया सब धानखेतमे आइग लगब्या देलक, सब धान जैरके पर्पर्याके लबा फुइट ग्याल । बिगहाके बिगहा खेतमे धानके लबेलबा भ्याग्याल । आइग बुत्याल त चारुभर, बोन जङ्गलमे जेजतेक चिरैचुरगुनी रहै, सबआबे आ भोइरपेट लबा बिछ्के ख्याल्या, ओहै खेतमे हैगद्या आ उँइरके चैलज्या । यि क्रम जातलिक ओइ खेतसबमे लबा रहल ताबतलिक चिरैचुरगुनी सबके येनाइ, भोइरपेट लबा बिछनाइ आ हैगके चैलजेनइ चलैत रहल । लबका कम्तियाके यि करतुतके खबर सेहो कोइ चुग्ला जमिन्दारलग ज्याके चुग्ली लगेलक । महज जमिन्दार कोनो उत्तर नै द्याके बरुस चुग्लाके फट्कारलक कि “ओइ कम्तियाके अधिकार सोंपने चियै त जे मनलागै छै से करे दैहैं” ।

कम्तिया यने सब गरिबगरुवाके जनमे बोलेलक आ गाम गामसे गाईभैंसके गोबर समैरके आने पठैलक । नै पुगल त चौरी चाँचरमे जतेक गाईभैंस चरे आ गोबराबे से सैब समरे, उठ्बे लगेलक । आब त गरीकेगरी गोबर आइबग्याल । आब कम्तिया सबगरिबके धान जरलहा खेतसबमें जतेक चिरैके गुँह रेहे, सबमे गोबरके कनियें कनियें चोंत चिपरी थोपैले लगैलक । जनसब चिरैके एकोटा गुँह नै छोरलक । सब गुँहके गोबरसे झाँपलक आ किछ्दिन छोइर देलक । योहो खबर जमिन्दार लग पहुँचल । जमिन्दार कोनो प्रतिक्रिया नै देलक ।

किछ्दिनके बाद गोबरके चिपरीसब सुइखके गोइठा भ्याग्याल । कम्तिया फेर गरिबगरुवा जनसबके बोल्याके सब चिपरी समरे लगेलक, गरीकेगरी आइनके सब बखारी, कोठी, भरलीमें भोइरके राख्लक । एकदुइ गरी घरमे नै आँटल त

जमिन्दारके दैले पठ्या देलक । यतेक काममे कम्तिया फेरो २ बखारी धान खरच केलक ।

जमिन्दार याल चिपरीके घरमे राखे लगैलक, बोरैसमे गोइठाके घुर लगेलक । एकटा गोइठा सुनग्याके चिलममे दैले लगैलक । जमिन्दार हुँक्का पिये । जाबजे जमिन्दार हुँक्का पिके चिलम झाँक्लक त ओइसे सोनाके ढिका निकलल । जमिन्दार छक्क परल । आब बोरैसके सुनगल आइग खोइरके दैखैछै त सोनेसोना देखलक । आब जमिन्दार बरखसी भ्याल । जे बहलमान गरीमे चिपरी लेने याल रेहे तकरा पुछैछै, "चिपरीगोइठा कत्तेक छै" ?

त बहलमान कहैछ, "सात बखारी आ जत्तेक कोठली, भरली छै सबमे भोरल छै, घरमे नै आँटलै त गरीमे लाइधके मालिकके दैले येलियै" ।

मालिक(जमिन्दार) कहलकै, "सबटा गोइठा बचाइहे, एकोटा नै केकरो दैले किहे, कम्तियाके यते आबैले किहे" समाद कैहके बहलमानके पठैलक । बहलमान ज्याके कम्तियाके सब समाद कैह सुनैलक । कम्तिया सब गोइठामें सुरक्षा पहरा बैठ्याके अपना जमिन्दार(मालिक)के पास ग्याल । जमिन्दार कम्तियाके देखके बडखुस भ्याल । ओकरा जमिन्दार कहलक, "आइदिनसे तों यहै ठाममे रिहे, अन्ते जाइके बात नै सोंचिहे । तोरा हम आपन बेटीसे बियाह कैर देबौ, आपन अधहा सम्पती देबौ, यै जमिन्दारीके प्रमुख कारिन्दा बन्याके राखबौ" ।

कहल मुताबिक जमिन्दार कम्तियाके सब ब्यवस्था क्यादेलक । उ ओहै जमिन्दारके घरमे घरजम्या रेहे लागल आ पुरा जमिन्दारी चलबेलागल ।

खिस्सा खत्तम भ्याग्याल ।

बाघ आ काँखोर

-निर्मला देवी थारु

स्रोत- सनिचरा थारु

एक जङ्गलमे एकटा बाघ रेहे । गरमीके महिनामें बाघ खेत तरफ याल रेहे । लोकसब आपन आपन खेती पातीमे लागल रेहे । बाघ लोकके सिकार करैले चाहैत रेहे । महज लोकसब समुह समुहमे मिलके काम करैत रेहे । बाघके असगरे सिकार करैके हिम्मत नै हेबे । उ मौकाके तलासमे रेहे । बोन लग एकटा पोखैर रेहे ओहै पोखैरमे बाघ ज्याके पाइनमे बैठ रहल । “यै पाइनमे ठन्ढेबो करबै, घोसरलो रहबै आ मौका मिलैत सिकारो मारबै” से सोंचलक । बाघ पाइनमे बैठल रेहे । बाघके नेङरी पैरग्याल काँखोरके भुङरामे । काँखोर भुङरासे बहारयाल त देखैये बाघके नेङरी । नेङरी बर सकत रेहे । नेङरीके संङे संङ बहार निकले चाहलक त भुङरा बन्द रेहे । काँखोर नै निकलैले पावलक । यने ओने निकले खोजलक, गह नै पावलक । नरम नरम बाघके हगनठी पावलक, ओहैमे काँखोर चुटासे पकरलक । बाघ छर्पट्याके उठल आ भागल । बाघ जतेक जोरसे झट्कारे काँखोर ततेक जोरसे चुटा कसे । बाघ डोंकियाइते लोकसबके दिसर दौडे जे, “छोड्या द्यात” सोइंचके । महज लोकसब भागे लागल, जान बच्याके । खेतपातमे कोइने रहल । बाघ हाइरके जङ्गल दिसर ज्यालागल । जङ्गल लगमे एकटा बकरी चरवाह के देखलक । बाघ बकरी चरवाह दिसर ग्याल । बकरी चरवाह डर्याके भागे लागल । बाघ ओकरा रोकलक आ कहलक “रै बच्चा, नै भागै । हमरा एकटा कस्ट भेल आइछ, तों देखदे” । बकरी चरवाह रुकल आ बाघके हगनठीमे देखलक त काँखोर धरने रेहे ।

उ चरवाह कहलक, “कहलक काँखोर धरने छौ ”।

बाघ कहैछै, “छोर्या दे” ।

छौरा पुछै छै, “हमरा धरब्या त नै” ।

बाघ कहैछै, “नै धरबौ, जल्दीसे छोर्या दे” । चरवाह छौरा काँखोर पकैरके छोर्या देलक आ पोखैरमे फेक देलक ।

आब बाघ कहलक बकरी चरवाह छौंराके कि, “ककरो नै सुनैबिही यि बात नै त धरबौ, यदी ककरो सुन्या देलही हमर बात, त धरबौ मात्रे नै तोरा माइरके ख्यालेबौ” । आब जो घर, केकरो लग नै बाजिहे यि बात ।

बकरी चरवाह छौंरा घर ग्याल, साँझके भात खेलक आ ओकर मनमे बाघके घटनाबला बात नै अडैत रेहे । ओकर मनमे बात गुरकल फिरे । कखनी केकरा हम असगरमे कहम जे आनकोइ नैसुने । अन्तमे सुतैसे पहिले आपन महताइरके सुनेलक । बात छिपल नै रहलै, एक कान दुई कान बयावान भ्याग्याल । बाघ एक दिन बकरी चरवाह छौंडाके पेंरा ताकैत रेहे । जाब छौंरा बकरी चराइले येलै त बाघ घैरलक आ कहै छै, “रौ छौंडा, तोरा हम कहने छेलियौ, हमरा काँखोर धरलाहा बात कतौ नै बाजिहे, नै त धरबौ मात्रे नै तोरा माइरके ख्यालेबौ । तों त सौंसे दुनियाँ सोर क्या देलही, तोरा आइ हम माइरके खेबौ” ।

चरवाह छौंडा कहलकै, “ठिक छै, हमरा माइरके खाइहे, तैसे पहिने हमरा पोखैरमें ज्याके लहबे दे, ताब खाइहे” । छौरा पोखैरमे लहाइके बहाने ग्याल, ओने हाथमे माइट पकैरके याल आ बाघके कहलक, “हमर हाथमे काँखोर छै, तोहर देहमे फेंक देबौ” ? फेर दोसर हाथमे माइट पकैर लेलक आ कहैये, “यि... दुनु हाथमे काँखोर पकरलियै, तोहर देहमे फेंक देबौ ?

बाघ कहैये, “रह रे छौंडा नै फेकै, पहिने हमरा भागे दे, ताब फेकिहे” । बाघ ओइठामसे भाइग गेल । तै दिनसे ओइ चरवाह छौडा लगमे कहियो नै बाघ याल ।

खिस्सा खत्तम भ्याल ।

बुद्ध या बाबहन

–निर्मला देवी थारु

एक राजमे एकटा बाबहन रहै । उ बड बुझनिक, बहौत जानै बुजहैवाला रहे । उ इमान्दार आ सज्जन सेहो रहै । इमान्दार आ सज्जन हैतो ओकरा धनसम्पैतके कमी रहै । खाइपियैके हरदम तकलिफे रहैछेलै । ओकर सादिवियाह सेहो नै हैत रहै । कतबहोक उपाय लगाबै त कोनो उपलब्धी ने हेबे । उ बाबहन यै कमित्रुटीके कारन पुछैले भगवान बुद्धके पास जाइके विचार केल्कै । एकदिन उ भगवान बुद्धके पास चैल देलकै । जाइत जाइत उ बाटमे एकटा आमके गाछ तरमे ज्याके बैठलै । एकटा आँम खसल देखल्कै । आँम पाकल आ लाल टुहटुह रहै । बाबहन लोभ्याके आँम खाइके बिचार केल्कै । आँमके काट्लक त भितरमे कारी खोंटखोंट रेहे । बाबहन दुतकाइरके आँम फेकदेलक आ ओइठामसे चैल देलक ।

त आँम बाबहनसे पुछलक कि “हे महासय तों कते जाइचहक ?”

बाबहन कहलक कि “हम भगवान बुद्धके पास जाइचियै” ।

आँम कहैछै कि “हमरो समाध लेने जा, आम उपरमे लाल टुहटुह रहैछै आ भितरमे कारी खोँटखोंट हैके कारन की चियै ?”

बाबहन समाध ल्याके अगा बैढगेलै । जाइत जाइत उ एकटा पोखैर लग पहुँचलै । बाबहनके टांग हाथ धुवाइले मन लागलै । उ पोखैरमे गेलै, महज पोखैर मे पाइन नै छेलै । पोखैर सुखल छेलै । त बाबहन कहै छे धत्तेरी पोखैरमे पाइने नैछै । केहेन अभागा पोखैर कोरेनहार छै । कैहके ओइठामसे चैल देल्कै ।

ठिक ओहै बखत पोखैरके मालिक आइब गेलै । अवस्था देखके बाबहनसे पुछैछै, “तों कते जाइचहक महासय ?”

त बाबहन उत्तर दैछै, हम भगवान बुद्धके पास जाइचियै ।

पोखैरबाला कहैछै, “हमरो समाध लेनेजा, भगवान बुद्धसे पुछिह कि पोखैर बरिटा आ बड गैंहर कोर्याल गेलछै, महज पोखैरमे एकोचुरुक पाइन नैछै, ओकर कारन कि भ्यासकैछै ?”

बाबहन पोखैरबालाके बातपर समर्थन जन्याके ओइठामसे चैल देलकै । जाइत जाइत बाबहन एकटा जङ्गल कातमे पुगलै, त एकटा भिंडकी लगमे बरिटा अजेगर साँपसे भेंट भेलै । अजेगर बाबहनसे पुछलकै “तों कते जाइचिही ?”

बाबहन उत्तर देलकै “भगवान बुद्धके पास जाइचियै ।”

अजेगर साँप आपन समस्या सुनेलक, “यै भिडकिमे सात बदसाहीके धन सम्पैत छै, यै धन सम्पतीके ताप हम सहैले नै सकैचियै, बडी गर्मी लागैये । कि कारन हम अजेगर साँप भेलचियै ? येकर कारन भगवान बुद्धसे पुइछके आविहे ।”

बाबहन कहलकै “हेतै हम पुइछके येबै, आ वोइठनासे चैल देल्कै ।” जाइत जाइत भगवान बुद्धके पास पहुँच गेलै । बाबहन भगवान बुद्धके दन्डवत केल्कै आ भगवान बुद्धके लगमे बैठलै । कुसल मङ्गल बतियाइत बाबहन रस्तामे भेल घटना इक पाइहसे (बृतान्त) सुनबे लागलै ।

पहौनका घटना “कोनो कोनो आमके उपरमे लालटरेस रहैछै, भितरमे कारी खोंटखोंट । येकर कारन की चियै ?”

भगवान बुद्ध कहल्कै “उ आँमके गाछ पहौनका जलममे एक विद्वान लोक छेलै, महज ओकर विद्या कोनो कामके नै, केकरो एकोटा बुद्धी नैदै भित्रे भितर गुम्स्याके राखने रहै । तै दुवारे दोसर जलममे उ आँमके गाछ भेलै, ओकर फर उपरमे बरी लाल आ भितरमे बरी कारी हैके दुर्भाग्य मिललै । आपन पाँचगो फल गरिब दुखीके दान देतै त दुर्भाग्यसे मुक्ती मिल जेतै ।”

दोसर घटना (“पोखैर बरिटा, बरी गैंहर महज पोखैरमे पाइन नै । एकर कारन की चियै ?”

भगवान बुद्ध कहलकै, “उ पोखैरबाला पोखैरके जग नै करने छै, छोटकी बेटी वियाहके जोकर (योग्य) भेलछै महज वियाह नै कैरदैछै। येहो एकटा पाप लादहल छै। तै पापके कारन ओकर पोखैरमे पाइन नै ओसरै छै। यदी उ पोखैरके जग करेतै, छोटकी बेटीके वियाह क्यादेतै, कुछ गरिब दुखीके दानपुन करतै, डलाभोइर सोन, नेरहा हाथी दान करतै, तकरबाद पोखैरमे भव फुटतै आ हलसले पाइन उठतै।”

तेसर घटना “एकटा अजेगर साँपके कारन कहक।”

भगवान बुद्ध कहल्कै, “उ अजेगर पुरब जलममे एक बडका धनिक ब्यक्ति रहै। ओकर पास सात बदसाही धन छेलै। महज उ धनार ब्यक्ती बडा सोम कन्जुस बडा मखीचुस रहै। आपन सम्पतिमेसे एक फुटल कौरी बरबैरके धन खरच नै करै छेलै। कोनो गरिबदुखियाके एकमुठी अनपाइन नै दैछेलै, भाट भिखमङ्गाके एक फुटल कौरी नै दैछेलै, कोनो साधुमहत्माके एको पैसा दानपुन नै करै। जे जतहेक सम्पती हाथलागै छेलै उ जङ्गलकात एक भिंरकीमे सोइन कोइरके गाइरके घोसाइर आबै। अर्थात उ जे सम्पती पावै जोग्याके राखै, खरच नै करै। एकदिन उ धनहार ब्यक्ती मोइर गेलै, महज ओकर मोह, मन्सा, हन्सा धनसम्पतीमे लागले रहलै। तैदुवारे आइ उ अजेगर साँप भ्याके जङ्गल कात ओहै भिरकीके पास रहैछै।” भगवान बुद्ध ओकर उद्धार हैके उपाय बतेलकै। “यदी अजेगर आपन तिन बदसाहीके धन गरिब दुखिया, भाट, भिखमङ्गा, साधु महात्माके दानपुन, समाजसेवा आदीमे खरच करतै त ओकर उद्धार भ्याजेतै” कहल्कै।

यि सब बातके बृतान्त सुइनके बाबहन भगवान बुद्ध लगसे बिदा भेलै। आबैत आबैत बभना, अजेगर साँप लग येलै आ भगवान बुद्धके कहल सब बृतान्त सुनेल्कै। ताब अजेगर साँप भगवान बुद्धके आभारी भ्याके कहैछै “हेतै भगवान बुद्धके कहल मुताविक हम तिन बदसाहीके धन खरच करबै। तों बाबहन चिही एक बदसाहीके धन तोरा देबौ, दुई बदसाहीके धन साधुमहात्माके दान देबै, गरिब दुखियाके खानपिन लताकपडा पैहरन करैबै, भाट,भिखमङ्गाके देबै, समाजसेवामे खरच करबै।”

बाबहन ओइठामसे अगा बरहल, आबैत आबैत पोखैरबाला लग याल आ सैब बृतान्त सुनैलक ।

पोखैरबाला कहैछै, “हम भगवान बुद्धके आभारी चियै । हम भगवान बद्धके कहल अनुसार करबै ।” पोखैरबाला तुरन्त ओहै बाबहनके छोटकी बेटी वियाह दान कैर देलक, डलाभोइर सोन, नेरहा हाथी दान द्याके विदा केलक ।

बाबहन आबैत आबैत ओइ आमके गाछ लग याल आ ओकर फल उपरमे लाल आ भित्तरमे कारी हैके बृतान्त सुनैलक । ताब आमके गाछ भगवान बुद्धके उपदेस कहल मुताविक पाँचगो फल ओहै बाबहनके सनेस(उपहार) द्याके विदा करैछै ।

ओहै दिनसे आँमके, पोखैरबालाके आ अजेगर साँपके उद्धार हैछै ।

खिस्सा खत्तम पैसा हजम ।

बिरिजभान

–निर्मला देवी थारु

बिरिजभान एक मेघावी, कुसल ब्यक्तित्व भेलहा लोक छेलै । उ थौर कुलमे जलमल रहै । उ कनियेंटा छेलै तहिये ओकर बाप मोइर गेलै । ओकर घर विजयपुर छेलै । ओकर महताइर बेटा बिरिजभान आ बेटी सोनमैतके ल्याके लैहर चैलगेलै या ओतै रहे लाग्लै । लैहर ओकर खंगहारमे छेलै । खंगहारके खनार सेहो कहैछै । बिरिजभानके मामा खनखनमाल छेलै । ओकरा लोकसब खँकरमाल सेहो कहै छेलै । खँखरमाल खनारके जमिदार छेलै । ओकरा बहौत जग्गा जमिन छेलै । बहौत गाइ, भैंस, बरदसब सेहो बहौत छेलै । खँखरमालके घरबालीयो बहौत छेलै । सातगो । सातगो घरबालीमेसे एकोटाके धियापुता नै भेल रहै । ममहरीमे बिरिजभानके मामा आ सात मामीसे बहौत लारप्यार, मायामामत मिलै छेलै । उ देखैयौले बरी सुन्दर, सिल स्वभाव बहौत निक सरल छेलै । तहौ कारनसे ओकरा मामा मामीसब बहौत मामत करै । जाब बिरिजभान ढेंरवा भेलै या बुझ्हे सुझ्हे लाग्लै त ओकर महताइर मैनामती बेटी सोनमैतके साथ ल्याके आपन घर विजयपुर चैल गेलै । बिरिजभान ममहरीमे बरी मलारदुलारके साथ रेहे । ओकरा महताइर बाप कनियेटामे बियाह कैर देने रेहे ।

जाब बिरिजभान खौजवान भेलै त ओकर महताइर ओकरा दुरागमन करैले घर बोलेलकै । उ घर ग्याल त महताइर दुरागमनके दिन ठेकलक । ठेकल दिनमे दुरागमन भेलै । लवकी कनियाँ येलै । कनियाँके नाम हेमती छेलै । हेमतीयो बड सुन्दर बड गुनवान या मनमोहक रुपमे छेलै । हेमती ६ महिना आगु आ ६ महिनाके पाछुके बात जानै छेलै । अर्थात अगम जानै छेलै । दुनुके दिन दुनियाँ निकेसे बिते लागल । दुरागमनके कनहिक दिनके बाद बिरिजभान टोलके छौंरासबके सङ कैरके सिकार खेलाबे बोन चैल ग्याल । बिरिजभान दुरागमनके लाल धोती पिन्हने सिकार करे ग्याल ।

त गित गाबैछैः

लाले लाले धोतियारे छौंरा सब, हाथमे गुलेतिया हो,

चलुरे छौंरासब चिरैया सिकारे हो ।

हरिनोने मारैरे छौंरासब, तितिरो ने मारै हो,

बिछी बिछी मारै हो छौंरा सब मेजुरा पुछारे हो ।

सिकार जे खेलैत रे छौंरासब लागलै पियास हो,

चलहो रे छौरासब पानीके उदेस हो ।

आपन हबेलिया रे छौंरासब छैके बरी दुर हो,

मामुके हबेलिया रे छौंरा सब लगेदुरा हो ।

हरदमे राखल रहैछै हो छौंरा सब एकलोटा पाइन आ पान सुपारी पनबरामे राखले रहैछै हो ।

बिरिजभानके मामा खँखनमालके सातो घरबालीसे सन्तान नै भेलाके चल्ते दरवारमे जानै बुझहैवला, पन्डिताय करैवाला एकटा बेसा पन्डित छेलै । सभा लागल रहै । उ कहल्कै, “कटकपुर राजमे एकटा सोरठी रानी छै, ओकरा आइनके खँखनमालसे बियाह क्यादेतै त ओकरे गरभसे सन्तान जन्मतै” । तेकरले ओकरे रचल यि सर्त “एक बिडा पान, एक लोटा पाइन” राखल गेल छेलै । “जे कोइ सबसे पैहने यि राखल बिडा पान खेतै आ यि एकलोटाके पाइन पितै तकरा कटकपुर राज ज्याके सोरठी रानीके लाबे परतै” ।

बिरिजभान सिकार खेलाइके चल्तै । पियासलके मारे हत्याल फफ्याल ममहरी गेलै । यि सर्त बिरिजभानके मालुम नै छेलै । उ सरासर ज्याके लोटामे राखल पाइन पिल्कै, पनबरामे राखल एकबिडा पान ख्या लेल्कै । दरवारमे बैठल सब दरवारी ताली बजाबे लागलै । कि “कटकपुर जाइवाला बहादुर जवान मिलगेलै” । आब ओकर मामा खँखनमाल हफान भफान काने लागलै । ओकरा बहौत चिन्ता लागे लागलै ।

बिरिजभान कहैछै, “एक खिली पनमा जे खेलिय हो मामु,

दायेदेब पच्चिस खिली पान, कथिले कानै छ” ।

ओकर मामा कहैछ, “आन दिनके पनमा हो भगिना, आन किसिमके छेलै हो । आजुके चियै आरतीके पान, जाइले परतौ सोरठिके उदेस हो ।

आब बिरिजभानके मामा आ सातगो मामी चिन्तित भ्या गेलै । सन्तानमे सन्तान एकेटा भैगना, सबके दुलरवा, सुकुमार केनाके पैदल जेतै कटकपुर राज । लोकसब अनुमान करे, करिब १२ बरिस जाइले लागतै । कियाक त कटकपुर राज बरी दुरछै, बाट बिखम छै ।

बेसा पन्डित कहल्कै, “बिरिजभान बाबु योग्य छै, उ कटकपुर राज जाइयोले सक्तै आ सोरठी रानीके लाबैयोले सक्तै, येकरा जोगीके भेसमे पठ्बे पर्तै” । जोगीके लेल गेरुवा बस्तर, झामन झोरा, कानमे कुन्डल, मेघडामर छाता, झुन्कीवाला चुट्टा, काठके खरम द्याके जाइले तैयारी करे लागलै ।

कटकपुर जाइसे पैहने बिरिजभान एक दिन आपन घर ग्याल । आपन महताइर, बहैनसे भेटघाट कर्लक आ घरबाली हेमतीसे सेहो भेट कर्लक आ मामा घरके सैब बिर्तन एक एक कैरके सुनेलक । आपना कटकपुर राज जाइके बात सेहो सुनेलक । उ आपन घरवाली हेमतके कहलक, “घरमे मैंया छौ, ननैद सोनमैत छौ, सबके निकसे देखभाल करिहे, निकेसे रिहे” ।

घरबाली हेमती बरी मलारसे कहैछै, “हम त निकेसे रहबै । तों जे जाइचहक कटकपुर राज, तोरा बडी बडी बिपैत पर्त, ओतहेक आसान नैछै कटकपुर पुगनाइ । से हम कहैचिय, तों कान लग्याके सुन” । यै ठिनासे चलबहक, जाइत जाइत बाटमे एकटा ठुठी पिपर ठार भेल भेटत, उ तोरे नामे ठार भेलछ, एकटा बर्का बिपैत चिय । तों ओइठाम पुगबहक त बर्का झाट बिहार, आन्ही, दानो उठत, ठुठी पिपर तोरे उपर खसत सेसबसे बैचके लफैरके चलिह । ओइठामसे अगा चलबहक त बाटमे दुइटा काँखोर काँखोरनी भेट्त । दुनुके झोरामे राइख लिह, उ काँखोर तोरा बिपैतमे काम देत । ओइठिनासे अगा बढब त उजरी डिहमे पुगबहक, तोरा थाकल लागल रहत । तों सुइत जेबहक । जाब राइत हेत त राइतमे परतो बिपैत । एकटा करिया नाग एत तोरा धरैले । सुतैसे पैहने काँखोर काँखोरनीके झोरासे बहार राखिह तोरा उ बिपैतसे बचेत । ओइठामसे जब

अनगुतके अगा चलबहक त बाटमे परत भुसहौली लदी, ओइ लदीमे करिह जलपान । ओइठामसे अगा बढब त पुगब पचिया ठाकिनके राज । पचिया ठाकिन दुनु बैहनी चियै । दुनु बैहनी सैबके ठैक, ठैकके लोकके जान लैछै । ओकरसे भेंट हेत त तोरा पौहना पौहना कह्त या मिठ बचन लग्यात, लोभ्याके राखेले चाह्त । ओह्या बिपैत हेतौ । लोटामे पाइन राइख देत त टाङसे हर्या दिह । बैठैले पिढिया देत त टाङसे छ्छक्या दिह । खाइले भात देत त पहिने एकमुठी भात कुत्ता, बिलाइ, चिरैचुरगुनीके खाइले दिह । सुपारी खाइले देत त फुइकके खाइह । खाटमे बिछौना देत त बिछौना झाइरके बैठिह, यहिनङे बिपैतसे बचैत रहिह ।

बिरिजभान घरबाली से निक बेजा सल्लाह क्याके । जतरा बन्याके मामा घर चैल याल ।

जाब बिरिजभान मामा घरमे पगलै त ओकरा अस्लान धियान करेलक, गेरुवा बस्तर पिन्हेलक, कानमे कुन्डल, झामन झोरा देलक, झुन्की चुट्टा देलक, काठके खरम पिन्हेलक, हाथमे बाँसी देलक आ घरसे बिदा कैर देलक ।

बिरिजभान कटकपुर राजके बाट् चैल देलक । जाइत जाइत बाट्मे ठुठी पिपर लग पुगल त बडी आन्ही उठल, ठुठी पिपर गिरल तैसे बिरिजभान बचल । रस्तामे दुइटा काँखोर काँखोरनी भेटल से दुनुके उठ्याके झोरामे ल्यालेलक, तब उजरी डिह पुगल, बडजोर थाकल लागल रेहे, बडजोर निन लागल, सुतैसे पहिने दुनु काँखोर काँखोरनीके निकाइलके बाहरमे राइख देलकै, अपना सुइत गेल, राइतके कारिया नाग येलै, नागके गर्दैनमे काँखोर काँखोरनी दुनु चुट्टासे पकैर लेलक या करिया नागके माइर देलक । अगाडी गेलै त भुसहौली लदीमे काँखोर काँखोरनीके चरैले छोइर देलक, अपना जलखै करे लागलै ताबे कौवा आइबके काँखोर उठ्याके ल्याग्याल, काँखोरनी बडजोर काने लागलै त बिरिजभान कहैछै नै कानै काँखोरनी हम सोनाके काँखोर गढह्या देबौ । तकरबाद पचिया ठाकिनके राज पुगलै, पचिया ठाकिनसे भेंट भेलै, उ दुनु बैहनी पौहना पौहना कैहके बडे स्वागत करे लागल आ लोटामे पाइन राइख देलक तकरा बिरिजभान टाङसे हर्या देलक, पिढिया बैठैले देलक त टाङसे छ्छक्या देलक, खाइले भात देलक त एक मुठी भात पहिने छिट देलक, कौवा आइबके ख्यालागल त कौवा पटपट्याके मोइर ग्याल । बिरिजभान कौवा मोरैके कारन पचिया ठाकिनसे पुछलक त उ दुनु बैहनी हमर देसके कौवा

बर सुक्मार छै, दही चुरा बाहेक दोसर अन नै खाइछै, तैंह मोइर गेलै । बिरिजभान सब बात गैम लेल्कै । जब खाटमे तन्ना बिछैने रहै आ ओइमे बैठेले कहलक त बिरिजभान तन्ना उठ्याके झारल्कै त देखैछै खटिया तरमे कुपा कोरल छै । बिरिजभान सब खतराके साबधानीसे बचल । ओकर घरबाली पैहनै बिपैतसे चेतैने रहै ।

कटकपुर राज पुइगके बिरिजभान सोरैठ रानीसे भेंट क्याके ओकरा सब बात सुनाइलक आ ओकरा मन्याके मामा घरले रबाना भेल ।

जाब बिरिजभान रानी सोरठीले ल्याके मामा मामीके घर खनार पुगलक त सबकोइ बर खुस भ्याल । महज परिस्थिती बदैल ग्याल रेहे । बिरिजभान बहौत बरिसमे येल रहै । ओकर मामा मामी सब बुढ भ्याग्याल रेहे । मामा कहैछै, "हौ भैगना हम बुढ भ्या गेलिय, येहेन सुनरी सोरैठरानी हमरमे नै सोहेतै, तुँही ल्याजा" । ममाके कहल मुताबिक बिरिजभान सोरैठरानीके आपन घर आन्लक, आपन घरबाली हेमतीसे सलाह माङ्लक सोरैठरानी के घरमे राखैले । हेमती बिरिजभानके घरमे हेमतीके देखके रिससे चुर भ्या ग्याल आ श्राप देल्कै, "जा तों हमरा ठकलहक तों हिजरा बैनके रिह" ।

बिरिजभान तुरन्ते हेमतीके श्राप देल्कै, "जा तुँहुँ हिजरनी बैनके रिह" । त हेमती कहल्कै, "तों मेजुर बैनके रहब" । बिरिजभानो फेर कहल्कै, " जो, तों नेरी मेजुरनी बैनके रहब" । यहै किसिमसे यै प्रकार बिरिजभानके कथा अन्त हैछै । अखैनियो थारुसब यहै कथाके अधार माइनके सोरैठके नाच करैछै ।

राजाके बेटी

-निर्मला देवी थारु

एक राजके राजा ओइ समयमे एकटा बरनीक पोखैर कोरैने रेहे । ओइ पोखैरके बरनिकसे सजैने रेहे । ओइ पोखैरके चारु महारमे फुलुवाइर बगिया लगैने रेहे । ओइ फुलुवाइरमे रङ्ग विरङ्गके फुलसब रोपने रेहे । फुल फुलाइके समय सेहो याल रेहे । फुलवाइरमे रङ्ग विरङ्गके फुलसब फुल्याल रहै । ठिक ओहै मौसममे राजाके बेटी ओइ पोखैरमे घुमफीर करैले सबदिन आबे लागलै । उ पोखैरमे लहाइले आबे । उ राजकुमारी सुन्दरतामे रङ्ग विरङ्गके फुलसे कोनोकम नै रहै, बरी सुन्दरी रहै । लहाइले आबे त पोखैरके घाटमे राखल पाटमे बैठे । सबसे पहिने राजकुमारी हाथ टाङ्ग धुवाबे, मोइल छोराबे, ताब देहके मोइल छोराबे, ताब मुरी लहाबे, केस धुवाबे, तकरबाद पुरा देह अस्लान करे । अस्लान कैरके पाइनसे बहार हेबे त घाटमे राखल सुन्दर सुन्दर लताकपडा सब पिन्हे । जब घर ज्यालागे त बुझहा परै पुरा फुलवारीके फुल फुल्याल समान छै तेहेन देखैले लागे ।

एक दिन राजकुमारी पोखैरमे लहाइत काल चाइरगो लफुवा छौंरा सब पोखैरमे येलै । उ सब देखैछै, राजाके बेटी पोखैरमे लहाइ छै । चारु छोंरा सब फुलवारीमे घोसैर ग्याल आ राजाबेटीके लहाइत देखेलागल ।

एकटा कहैछै, “राजकुमारीके टाङ्गे त अत्तेक चिकन छै, टाङ्गोटा जे छुबे पावतियै त हमर जलम तैर जेतियै” ।

दोसर कहलक, “हाथ देखहिने टाङ्गसे त हाथ बरी सुन्दर छै, हाथ जे छुबे पावतियै त और कत्तेक बन्हिया लागतियै” ?

तेसर छौंरा कहलक, देह त और सुन्दर लागैछै । देह छुवे पाबतियै त हमर जलम सफल भ्या जेतियै” ।

बादमे चारिम छौंडा कहलक, कि “सबसे सुन्दर त राजाबेटीके चेहरा छै । हम ओकर गालजे एकबेर छुवे पावतियै त हमरो जलम सफल भ्या जेतियै” ।

राजाके बेटी बरी चङ्खार रेहे, उ चारु छौंडा सबके बात सुइन लेलक । आब उ चारु छौंडा सबके बोलेलक । छौंडा सब त डरसे थर्थर काँपे लागल । सब छौंडासब एकापसमे सोंचे लागल, कि “आब हमरौरके सजायके भागिदार हेबै” । डर्या डर्याके राजाके बेटी लगमे ग्याल ।

राजाके बेटी कहैछै, “हमर टाङ्ग छुबैले केकरा मन लागल छौ ? सेकोई हमर टाङ्ग छुइबले, जकरा हमर हाथ छुवैले मनलागल छौ से हमर हाथ छुइबले, जकरा हमर देह छुवैले मन लागल छौ से हमर देह छुइबले, जकरा हमर गाल छुबैले मनलागल छौ सेकोइ हमर गाल छुइबले आ ऐठामसे जो, भाग । यदी दोसर दिनसे यै फुलवाइरमे येबही आ लिहारैत रहबिही त कडा सजाइ देबौ (खाल खैंचके भोक्सी कोंचबौ)” कहल्कै । चारु छौंडा सब ओइ पोखैरसे भाइग ग्याल ।

लोभी बाबहन नेक नढिया

निर्मला देवी थारु

स्रोत- सनिचरा थारु

एक गाँममे एकटा लोभी बाबहन रेहे । उ अनकर धन सम्पैतमे बर लोभ करे । कहियो केकरो कुछो माइङ आने, केकरो कुछो उठ्याके ल्याआने । ओकरा अनकर चिजबिज लैके आदत परल रेहे । उ बाबहन एकटा घोडी पोस्ने रेहे । उ बाबहन एक दिन ओहै गाँमके एकटा गुवारके दुवारमे एकटा बरनीक बाछी बान्हल देखल्कै । यने ओने ताकलक, केकरो नै देखलक । बस बाछी खोइलके आपन दुवारमे ल्या आन्लक आ घोडीके पासमे बाइन्ह देलक ।

गुवार बाछी ताकैत ताकैत बाबहनके दुवारमे याल त आपन बाछी बान्हल देखलक । गुवार पुछैछै बाबहनसे, “हमर बाछी कथीले ल्या आन्लिही ?” बाबहन कहैछै, “हमर घोडी बाछी बियाल, यि बाछी हमरे चियै ।” गुवार आ बाबहनके बरजोर बिवाद भ्याल, बाबहन बाछी दैबला नैभेलै । गुवार ओइ गाँमके दुइ चाइर भरभलाद्मी सबके जुटेलक आ बाछी बिवादके कथा उचारलक । बाबहन हमरा आपन घोडी बाछी बियाल आइछ कैहके कोनो भरभलादमीके बात नै मान्लक, उ बाछी नै देलक ।

एक दिन गुवार सुनल्कै लदी ओइपारके बोनमे नढिया पन्च रहैछै । गुवार ग्याल लदी ओइपारके जङ्गलमे, नढिया से भेंट करलक आ आपन समस्या सुनेलक । बाछी बिवादके करन बतेलक । नढिया कहलक, “बाबहनसे पुइछके ओकरा फुर्सतके दिन बैठकी बैठाइहे, लदी ओइपारमे लोकसब रहतै, यैपारमे नढियासब रहबै,” कहल्कै । गुवार तहै मुताबिक बैठकीके दिन तोकलक । लदी यैपार गाँमके भरभलाद्मी सब बैठल, गुवार याल, बाबहन याल । लदी ओइपारमे नढियासब याल, एकटा नढिया चन्दनके तिलक स्वरुप केने रेहे, एकटा धमधुसर रेहे, एकदुइटा साधारन रुपमे रेहे । बैठक सुरु भ्याल । गुवार आपन प्रस्ताव राख्लक, लोक सब बेराबेरीके तर्क देबेलागल । बाबहन एक जिद्दके साथ हमर घोडी बाछी बियाल,

कहे लागल । नढियासबके बोलैके पालो याल । तिलक स्वरुपवाला नढिया कहैछै, “हम देखलियै एकगोरे दोसरगोरेके धन सम्पैत डिठादानी जबद केल्कै, तकरा कोइंढ कुस्टी फुटलै ।”

धमधुसर नढिया कहलकै, “आइ अनगुतके समुन्द्रमे आइग लागल रहै, हम बरजोर माछ ख्यापावलियै, माछ पकरैत पकरैत हम धमधुसर भ्यागेलियै ।”

फट्दे बाबहन कहैछै, “रौ धमधुसरा नढिया, समुन्दरमे कहाँइ आइग लागछै, जे तों माछ पकरैत पकरैत धमधुसर भेलही ? तों अन्कर चोर्याके खेने हेबही ।”

बस दोसर नढिया उत्तर देलक, “ रौ चोर बभना, घोडी कहीं बाछी बियाइछै ? तों गुवारके दुवारसे बाछी चोर्याके आपन दुवारमे बान्हने चिही,” कहलक । सबकोइ “सही बात चियै” कैहके ताली बज्या देलक । झगडा फैसला भ्याग्याल । विवाद ओर्या ग्याल । खिस्सा खत्तम भ्याल ।

हाडके चौर

-निर्मला देवी थारु

एक राजमे एकटा बरही रेहे । उ बडी कारिगढ रेहे । ओकरा दुइटा बेटा सेहो रेहे । जेठका बेटा ओहो बडी कारिगढ रेहे । उ एक दिन बर मेहनत क्याके एकटा बरनिक बाकस बनेल्कै आ बापके देखेल्कै । बाप कहलकै, “नै निक छौ” । बेटाके बड रिस उठलै । उ फेर दोसर बाकस बनेलक आ ओइमे बडी मेहनतसे बडा कारिगढी पेस केल्कै आ फेर आपन बापके देखैल्कै । ओकर बाप फेर दुइस देल्कै । बेटा रिससे चुर भ्यागयाल मनेमन सोंचलक, कि “आब हम दबिया गढबै आ फेर देखेबै, नै निक कहतै त हम बापके वोहै दबियासे काइट देबै” ।

दबिया गरहे लागल, दबिया सबमे बडी निक निक बुटा सब कुनलक । दुइटा दबिया बनेलक आ एकटा दबिया काँखमे लेलक । ज्याके बापके एकटा दबिया देखेलक आ पुछलक, “बाबु यि दबिया केहेन छै” ? बाप देखल्कै आ कहल्कै, “बडी निक दबिया बनैल्ही, धन्यवाद छौ । आ काँखमे दाबने चिही से कोन दबिया चियौ ?”

त बेटा कहैछै, आइ तोंहै हमर गढहल दबियाके नै निक कहतिही त तोरा यहै दबियासे काइट देतियौ । तहैले येकरा काँखमे दाबने चियै । यि सुइनके बाप ओकरा सराप देल्कै, “तों हमरा काटैके धन्धा करैछेल्या तै दुवारे बियाहके कोबर घरमे तोहर देह हाथमे कोइंढ कुस्टी फुटतौ” ।

यि सराप सुइनके बढहीके बेटा दुखमाइनके हथियारपाथी बोकलक आ घरसे निकैलके बहौत दुरके गमनमे चैल देलक । जाइत जाइत रस्तामे गाइमालके एकटा सुखल हाड देखल्कै त बढहीके बेटा हाड बोइक लेलक । एक ठाम गाछके छहाइरमे बैठके हाडके चौर बनाबे लागल । चौर बनाइत बनाइत आधहा सेर जोकर बनेलकै । चौर बासमती नहाइत असल बनेल्कै, गम्छामे पोटरी बाइन्ह लेल्कै आ अगाडी बैढगेलै । अगाडी एकटा गाम रहै उ ओइ गाममे ढुक्लै । गाँममे एकगोराके घरमे गेलै । ओइ घरमे एकटा छौंरी भात निनहैत रहै । ओइ छौंडीके बाप, महताइर

खेतमे काम करे गेल छेलै । ओइ छौंडीके बढहीके बेटा कहल्कै, दैया "हमरा बडी हडबडी छै आ दुर जाइले सेहोछै, से हमर पासमे आधा सेर चौर छै येकरा जल्दीसे भात निन्ह दे" ।

त उ छौडी कहलकै, "तोरा हडबडी छौ, आ दुर जाइले छौ त हम भात निन्हने चियै से तों ख्याले आ तोहर पासमे चौर छौ से हमरा द्यादे, हम फेरो भात निन्ह लेबै" ।

बढहीके बेटाके आपन निनहल भात फेर देलक, बढहीके बेटा मज्जासे भात ख्यालेलक, आपन चौर द्यादेलक आ ओइठामसे जल्दी निकैल ग्याल । छौंरी ओइ चौरके भात निन्हे लागल । चौरके फेर फेर डाइबसे लारे, चौर त जहिना के तहिना रेहे, चौर सिझबे ने करे । खेतसे छौंरीके बाप याल त आपन बापके सबबात सुनेलक । ओकर बाप कहैछै, "कहाँ देखबौ, केहेन चौर छौ" ?

छौंडी एक डाइब चौर निकाइलके देल्कै । ओकर बाप छुइबके देखल्कै, मुहमे ल्याके दाँतसे दाबल्कै त थाह भेलै जे, "यि त हड्डीके चौर चियै" । आब उ सोंचे लागल, कि "यि चौर बनाइवाला बरी कारिगढ छै, यि काम लागैवाला लोक छै, यि जाइतके बढही भ्यासकैछै, उ बढही हम बढही, बढही बढही सम्बन्धी भ्या सकै चियै । हम आपन बेटीके ओकरेसे बियाह क्यादेबै त उ हमर जम्या भ्यासकैछै । हमरा बरिटा गुन लागत, हमर बेटीके निमाह भ्याज्यात " । यि सोइँचके बढहीके बेटाके या घुम्याके आनैले बिचार करलक । आपन बेटीसे पुछैछै, "उ लोक कोने माथे गेलै दैया गे" ?

बेटी कहै छै, "पुरुवमाथे गेलै" ।

बाप कहल्कै, "हम जाइचियै ओकरा घुम्याके आनबै", आ पुरुभरा दौडलै । पुरुब माथे ज्याके देखल्कै त एक गोरे चैल जाइछेलै । "हौ बटोही, हौ बटोही, ठारहेब हौ"। कहैत अगामाथे दौडलै । दौडैत दौडैत बढहीके बेटालग पुगलै । ओकरा आदर सत्कारके साथ आपन घर लाबलक । बेटीके कहल्कै, "पाइन बिछौना दहै, यि बडी असल मेजमान चियौ" । ओकर बेटी पाइन बिछौन आइनके देलक, बिछौनमे मेजमानके बैठेलक । खान पिनके असल इन्तजाम करलक । तकरबाद घरके बुढवा मेजमानसे कुछ बातचित करेलागल । मेजमानसे पुछैछै, "तों के चहक, घर कते छ, केकर बेटा चहक" ?

ताब मेजमान उत्तर दैछै, हम ...बढहीके बेटा चियै, हमर बाप बडी कारिगढ छै, हम बनिजमे जाइचियै आपन रोजगारी कैरके पैसा कमेबै"।

घरके बुढवा कहैछै, "हौ बौवा तोरा हम चौरेके कारिगढीसे जाइन लेलिय कि तों कोनो असल कारिगढके बेटा चहक। तैयो तोरा जाइतभाइत पुछलिय। तों आपन बाबुके परिचय देलहक, हम और खुस भेलियै। हमहु बढही चियै। हमर पास कुछ जग्गा जमिन छै, एकेटा बेटी छै, बेटा नै छै आ दुइ बुढिया बुढवा चियै। हम कहैचिय तों यहैठाम रह, हम आपन बेटीसे तोहर बियाह करेब, तों घरके मालिक बैनके रह्ब, यि हमर अनुरोध चिय"। बरही के बेटा ओकर बात माइन लेलक। बुढवा आपन गामके भरभलद्मी सबसे सर-सल्लाह केलक, धुमधामसे बेटीके बढहीके बेटासे बियाह क्या देलक।

बियाहके पाछे जाब कनिया बरके कोहबर घर देलक, तखैनियें बढही बेटाके कोइंढ कुस्टी फुइट गेलै। आब भेलै आपती। ओकरौरके लोकसब मिलके गाँमके बहारमे एकटा टुटली मरैया खोंपरी बन्या देल्कै। ओहैमे ओकरौरके बास कर्या देल्कै। बढहीके बेटा दुनु परानी ओइ टुटली मरैयामे रेहे आ दिन गुजर करे। बढहीके बेटा दिन भोइर काठके खरम, कठौली, खेलोना बन्याके बेचे।

एक दिन गाँमके लोकसब बोन गेलै त ओहो बरहीके बेटा सबके पछ्या लागल बोन गेलै। लोकसब आपन पछ्या नै लागे देबे त बरही दुरेमे रहै या पछ्या पछ्या लागल जाइ। जाइत जाइत सबकोइ बोन ढुक्लै त बरहीयो ढुक्लै। सबकोइ बोनमे बढहीके कोइंढ कुस्टीसे छुवल छातल ज्यात कैहके बोनसे बहार भ्यागयाल। बढहीके बेटा एकटा सिमरके गाछतरमे बैठ रहल। सिमरके गाछमे बिध बिधनाके खोंता रेहे। खोंतामे दुइटा बच्चा चुइँ चुइँ करे। बच्चाके अवाज सुइनके एकटा करिया दराद साँप सिमरके गाछमे चरहे लागल रेहे। बढही साँपके देखके आपन हथियारसे साँपके काइटके माइर देल्कै। बिध बिधनाके बच्चा सब देखैये त बडी बिपैतसे दुनु बच्चाके जान बचल छेलै। दुनु बच्चा आपन जानके चिन्तासे आ बरही बेटाके कुस्टीके दुःखसे चिन्तित भ्याके चुपेचाप बैठल रेहे। साँझ परे लागलै त बिध बिधना अहारा ल्याके खोंतामे येलै। आन दिन आबैत मातैर बच्चा सब कलबल कलबल करे। आइ त चुपचाप रहै। बिधबिधनाके चिन्ता भेलै कि कोनो आपत बिपत परलै। बच्चा सबके अहरा खाइले कहैछै, त बच्चासब मुह घुम्या लैछै। महताइर बाप अहारा खाइले हठ केल्कै, त बच्चा सब बाप महताइरसे सत करेल्कै कि "पहिने गाछके तरमे सुतल ओइ कोइँढ कुस्टीवाला लोकके देखही जे

हमरौरके जान बच्याके बडका उपकार केनेछै, तकरा कुछ सेवा वरदान दहै ताब हमरौरके खेबौ, नै त नै खेबौ" ।

बालहठके माइनके दुनु बिधबिधना कोइँढ बढही लग गेलै, ओकरा देखल्कै, एक दिसर करिया दराद साँपके काइटके एकठाम ढेरियाल सेहो देखलक, ताब कोढियाके उपकारके गुन माइनके ओकरा बरदान दैके बिचार कर्लक आ कोंढिया बढहीके उठेलक आ कहलक कि, "तों एक अन्जान लोक चहक, हमरा बडभारी उपकार लगैल, हमर छ बतारी बच्चा सबके यि करिया साँप ख्यालेल्कै । आइ फेरो ख्यालेतियै । धैन तों जे हमर दुनु बच्चाके जान सही सलामतसे छै, ने त आइ हम फेरो निबँस भ्या जेतियै । तों आपनै कुस्टरोगके पिडामे चहक, तैयो हमरा गुन लगेलहक । हम तोरा बरदान दैले चाहैचिय, माँग हमरसे कि बरदान माँगै चहक ?" ।

ताब कोंढिया बरही कहलक, "और किछो त नै जे हमर कोइंढ कुस्टी निक भ्याजेतियै त हम सुखी आ खुसी भ्या जेतियै, येह्या छै हमरा बल्या" ।

बिधना कोंढियाके हाथमे एकटा फुल देलकै आ सिखेल्कै, "सत्य बिधाताके बचन मान, हमर कोइंढ कुस्टी निक भ्याज्या, सरिर कन्चन भ्याज्या," कैहके देहमे लग्या लिह आ फुल राखने रिह, कहल्कै ।

बढही घर ग्याल, स्नान धियान केलक आ हाथमे फुल ल्याके बिधनाके सिख्याल मुतबिक कह्लक आ कर्लक । बस बढहीके कोइंढ कुस्टी तुरन्त निक भ्याग्याल, सरिर कन्चन भ्याग्याल, पहिने जकाँ सुन्दर आदमी भ्याग्याल । जङ्गलसे एकटा खौ मोट, असक काठके ढेङ बिधनाके फुल छुव्याके घरमे लेनेयाल, आपनौ चरहल याल । घरमे दिन भोइर कोंढियाके सुवाङ केने रेहे आ राइत भोइर काठके बहौत असल असल, कुनल कुनल चिजबौस सब बनाबे आ बहौत दाममे बेचे । तरेतर उ बडी धनिक भ्याग्याल । लोकसब ओकरा साधरन देखे, महज धन सम्पैत देखके छक्क परे ।

आब उ कोंढिया बढही काठके सुन्दर सुगा बनाबे आ सबदिन भोरे भोर पाँच पाँचगो सुगा उडाबे । सुगा उडे आ ट्याँ ट्याँ बोले । एक दिन राजाके बेटा बन्दुकबाटे गोली माइरके एकटा सुगाके गिरेलक आ देखलक त काठके सुगा रेहे । आब यै सुगाके के फेरो के उडाबे सकतै कैहके राजकुमार सौंसे राजमे ढोलहा पिटेल्कै । सबके दरवारमे बोलेल्कै, पुरस्कारके घोस्ना केल्कै, जे येकरा उडेतै वोकरा राजकुमारीके साथ वियाह कैरदेबै सेहो कहकल्कै । एकटा एकटा

लोकके बोलाबे आ पुछे, “काठके सुगा उडाबे सकबिही कि नै” ? कोइने सकैवाला भेलै । लोक ओर्याग्याल उत्तर नै याल । ताब कोइ कहलक कि “गाँमके बाहर एकटा कोंढिया बढही रहैछै । खोंपरी घरमे, बडी सिपालु छै” । राजाके नोकर चाकर ग्याल, कोंढिया बढहीके पकरने याल । राजाके बेटा पुछलकै, “तों यै काठके सुगाके उडाबे सकबिही” ? त कोंढिया कहलकै, “हँ सक्बै” । ओकरा उडाइके मौका देल्कै । काठके सुगाके गोली लागल भुंगुरमे चेथरी गुदरी कोइंचके भुँरके गहल्कै, ताब उडेल्कै, सुगा उइर गेलै, ट्याँ ट्याँ बोले लागलै ।

राजा कहैछै, “ओहिने नै पतियेबौ । पहिने हमरा उडैवाला एकटा काठके घोडा बन्याके देखैतै, ताब हम पतियेबौ आ कहल पुरस्कार देबौ” ।

कोंढिया बढही कहल्कै, “हमरा एकटा कपरघर बन्या देतै आ १५ दिनके समय मिल्तै त हम सोहो बन्याके देख्यादेबै” । बढहीके वास्ते एकटा बर्का कपरघर बन्याल गेलै, खान पिनके इन्तजाम सेहो करल गेलै । १५ दिनके समय द्याल गेलै । दिन भोइर बरही कोंढिया रुपधारन करने रेहे आ राइत भैर काम करे । जाब समय अबधी ओरबे लागल त राइतके कपरघरमे घोडा दौरैत हिंहिंयाबैत लोकसब सुने । १५ दिन पुगल त राजा एक समारोह केलक । गाँमके लोकसब के बोलेलक कपरघर लगमे, काठके घोडा देखैले । कोंढिया बढहीके घोडा निकालैले आदेस देलक । कोंढिया बढही काठके घोडके खौ रङ्गरोगन लग्याके, चिकनपाटी क्याके सजैने रेहे । लोकसब खौ जम्मा भ्याल त घोडाके बाहर लेनेयाल ।

राजा कहलकै, “सबसे पहिने यै घोडामे हमर बेटा चढतै” ।

बढही राजा बेटाके घोडामे चरहैले सिखैलकै, घोडामे चरहैल्कै, मेसिन सबके बारेमें जानकारी करेल्कै । जब राजाके बेटा सिख लेलकै त, “आब उडा कहल्कै” । सबकोइ ताली बज्यादेल्कै । राजाके बेटा घोडा उडेलकै । घोडा उइडके आकास लाइग गेलै । राजाके बेटा घोडा निचा करैले बिसैर गेलै । घोडा निचा नै हेबे । आकासमे एकटा चिरै घोडाके मसिनमे ठेक गेलै । घोडा रसेरसे निचा हेबे लागलै । निचा भेलै त लगेमे एकटा सुन्दर फुलबाइर देखल्कै । राजाके बेटा ओहै फुलबाइरमे घोडा बाइन्ह देलक आ बैठ रहल । उ दोसरे राजमे पुइग ग्याल रेहे । राइत भोइर राजाके बेटा फुलबाइरमे रहल । भोर भेलै, सुरुज उगलै, मालिन एलै त देखैछै एकटा राजकुमारके । दुनु गोराके भेंट भेलै ।

राजाके बेटा मालिनके “मौसी गौ मौसी गोड लागैचियौ” कैहके गोड लागलक ।

मालिन “हम कहियाके मौसी चियौ रे बौवा” ?

राजाके बेटा कहल्कै, “जहिया तोहर दुरागमन भेलौ तहिया हमर जलम भेलै, तहियासे तों हमर घर गेलही गौ मौसी” ?

मालिन कहल्कै “नै गेलियौ” । मालिन राजाबेटाके आपन घर ल्याग्याल । खाइले दही, चुरा, चिनी, खोबा, मेबा, मिस्टान देलक । राजाके बेटा आरामसे खेलक । बैठैले आराम कुर्सी देलक आ कहलक, “हम राजाके बेटीले फुलके माला गाँथबै तों आराम कर” ।

राजाके बेटा कहल्कै, “गौ मौसी तोंहे कतेक दुख करबिही, दे हम माला गाँइथ देबौ” ।

मालिन कहैछै, “नै रौ बौवा तों कहियोने माला गाँथने हेबही, केहेन कहाँ माला गाइथ देबही, तों नै गाँथै, हम आपने गाँथबै” ।

राजाके बेटा कहलके, “हमरा एकेटा माला गाँथैले दे गौ मौसी, रानी बेटीले और तुंही गाँथिहे” ।

मालिन माइन लेलक आ एकटा माला गाँथे देलक । मालिन माला ल्याके दरवारमे ग्याल । राजाके बेटी सात खन्ड धुरहरमें रेहे । मालिन राज दरवारमे सबके फुलमाला देलक अन्तमे राजाके बेटी लगमे ग्याल । मेजमान छौंराके गाँथल माला देलक ।

माला देखके राजा बेटी पुछलक, “के गाँथलकौ यी माला” ?

मालिन कहलकै, “एकटा मेजमान छै हमर घरमें, बहैन बेटा चियै, ओह्या गाँथलकै” ।

राजाके बेटी मालिनके डलियामे तरमे हिरामेती, सोना असर्फी देल्कै आ उपरसे चौरके खुदीदने झाइंप देल्कै आ मालिके द्याके पठेलकै । मालिन खुदी देखके बरी नराज भ्याके घर येलै, “यि मेजमान छौंडा आइ माला गाँइथके बिगारलकै, तै दुवारे हमरा राजाके बेटी असल बकसिस नै देलक” सोंचल्कै । घर आइबके मेजमान छौंरालग डालीके सामान झाँइक देलक आ कहलक, “देखही तोहर गाँथल मालाके बकसिस केहेन छौ” । देखै छै त खुदी भितरमे हीरा, मोती, सोनाके असर्फी । मालिन खुसी भ्याल आ सब समैर राखलक ।

मेजमान छौंरा पुछलकै, “गौ मौसी राजाके बेटी कुछ कहबो, पुछबो करलकौ” ?

मालिन कहलकै, “हँ रौ बौवा, पहिने पुछलक के गाँथलकौ यि माला ? हम कलियै हमर बहैन बेटा गाँथलकै, त राजाके बेटी कहैछै बहैन बेटी रहतियौ त हम सखी लगेतियौ, बहैन बेटा चियौ त हम ओकरसे बियाह करबौ”।

राजाके बेटा यि सुइनके खुस भ्याल । मालिनसे कहलक, “मौसी गौ राजाबेटीके जोने किहे हमर बहैन बेटा तोहरसे मिलैले चाहैछौ”।

मालिन सम्झाबै छै, “येहेन गल्ती नै करै रौ बौवा, राजाबेटी सात खन्ड धुरहरमे रहैछै, चौबिसौं घडी पहरा लागल रहैछै । केनाके जेबही राजा बेटी लग” ?

मेजमान छौंरा कहैछै, “गौ मौसी तों समाद त दैहै । हम जाइके उपाय जानै चियै । तों अतबेहेक कैह या ने कि हमर बहैन बेटा तोहरसे मिलैले चाहैछौ, राइतके महलके उपरका केबार खुला राखिहे, बस”।

मालिन ग्याल राजाके बेटी लगमें आ बहैन बेटाके कहल बात राजाबेटीके कैह सुनैलक । मालिनके जे दान दैछना मिलल से ल्याके आपन घर चैल याल आ आपन मेजमान छौंडाके सब बात सुनेलक ।

साँझके राजाके बेटा मालिनके घरमे खुसीके साथ खेलक पिलक आ तैयार भ्याके बैठल । जाब राइत सुनसान भ्याल त मालिनके फुलबाइरमे ज्याके आपन काठके घोडामे चढहल आ उँडेलक । राजाबेटीके सात खन्ड धुरहरके उपरका छतमे बैठेलक । उपरका दुवार खुलले छ्याल, राजकुमार राजकुमारी लगमे चैलग्याल । राइत भोइर बात बतकाँहाँ, हँसी चौमस करलक, भोर हैसे पहिने निकैलके चैलग्याल । राजाके पहरेदार नोकर चाकर सबमे खलबली मचल । सबकोइ आपन आपन ठाम खरेखमान चियै । कतेसे यि नयाँ आदमी, मरद पुरुखके बोली राजकुमारीके कोठलीमे सुनलियै । सब पहरेदार सब एकदोसरसे सल्लाह करलक जे राजाके कही । नैत सबके कि त नोकरी जेतौ कि त फाँसी हेतौ । सब मिलके राजाके जानकारी देलक ।

राजा “चोर पकर” उपाय सोंचलक । राजकुमारीके सुतना बैठना खेलकुद करना सब ठाममे सिनुर छिट्ब्या देलक । राजकुमारीके कोइ किछो नै कहलक । राइतके कडा पहरा लग्या देलक । जाब निसिभाग राइत भ्याल त राजकुमार काठके घोडामे चैढके उइडके महलमे याल । केकरो पत्तो नै चलल महज राजकुमारीके महलमे फेर पुरुसके बोली बोलैत सुने लागल । बिहान भोरमे राजाके यि सब बात पहरेदार सब सुनेलक । राजा तुरन्त ढोलहा पिटेलक, सबेरे सब पुरुसके दरवारमे हाजिर हैके उर्दी लगेलक । पुरुस सब कोइ दरवारमे हाजिर भ्याल । सबके लताकपडा

जाँच करल ग्याल चोर नै पकर्याल । अन्तिममे मालिनके बहैन बेटा आपन मौसीके आपन लताकपडा धुवाइले द्याके याल महज गम्छा लेने याल । गमछामे सिनुर लागल रेहे उ पकर्या ग्याल । राजा ओकरा फाँसीके सजाय सुनाबे ज्यारहल छ्याल कि ओहै असरमे राजकुमारी आइबके कहलक, “हमरा ओकरसे बियाह क्यादे नैत ओकरे साथे हमहुँ जान द्यादेबौ” ।

राजसभा बैठ्याके बिचार बिमर्स करलक आ राजकुमारीके मालिनके बहैन बेटा सङ्गे बियाह कैर देलक । बहौत दान दैछना देलक । राजकुमारीके बिदा कैर देलक । मालिनके बहैन बेटा आपन परिचय देलक, “हमहु एक राजके राजकुमार चियै” । राजा खुसीके साथ बिदा करल्कै । राजकुमार राजकुमारीके ल्याके मालिनके घर ग्याल । दानमे येलहा सम्पैत अधहा मालिन मौसीके द्यादेलक आ काठके घोडामे राजकुमार राजकुमारी उँइरके आपन राज चैलग्याल ।

ओने भर आब भिने धुमधाम हेबे लागल । रानी आपन बेटा पुतौहके अरैछपरैछके घर केलक । बधाइ खुसियाली मचेलागल । आपन राजकुमारीके आब कोंढिया बरही संङ्गे बियाह करैले बाँकी रैहगेल छेलै । राजा आब कोंढिया जरे आपन राजकुमारीके बियाह नै करे चाहे । त राजकुमारी कहल्कै, “हमर भागमे कोंढिये परल छै त कि भेलै हम ओकरेसे बियाह करबै, हमर बापो पुरस्कार के घोषना करैत काल बचन हारल छै, यि बचन पुरा कर” ।

राजा आपन बेटीके कोंढिया बरही संङ्गे बियाह कैर देलक, दानमे दडा भोइर सोन, नेरहा हाथी देलक आ बिदा कर्लल । कोंढिया बरही बिधनाके द्याल फुल निकाललक आ आपन सरिरमे लग्याके बिधनाके कहल मुताबिक सुन्दर कन्चन सरिर बन्या लेलक, दान दैछना लेलक आ खोपडीमे ग्याल । रहैले असल मकान बनेलक, पहौनका बौह लबकी बौहके सङ्गे मिलान जुलानके साथ रेहे लागल । दुनु घरबालीमे दुई दुईटा बाल बच्चा भ्याल । बाल बच्चासब पुछे लागल त ननहरी सब के बारेमे जानलक, बच्चासब आपन बपहरी जाइके बिचार कर्लक । बढही आपन दुनु बौह दुनु सौस ससुर चारु बालबच्चा सबके साथ लेलक, बिधनाके देल फुलके प्रतापसे एक उडन बाहन बनेलक आ आपन बापके घर चैल देलक । आपन घर ज्याके आपन धनसम्पैत से आपन करिगढीसे महल बनेलक आ सबकोइ सुख सान्तिसे रेहे लागल । खिस्सा खत्तम भ्याल ।

गलत निसाफ

बुद्धसेन चौधरी
सबैया, सप्तरी

बहौत पैहनेका बात चियै । एक समयमे तराइके एकटा गाँममे बहौत निक नचकैरिया सब रहै । उसब बड निक नाच गान करै या बजो बजाइ । भर्खर भर्खर लवका बजा येल रहै । ओइसब के नाम एक जिल्ला से दोसर जिल्ला तैक फैलल रहै । बाँसी बलाके त बातेने करु, केहनो बटोहीया ओकर बाँसीके धुन सुनै त ठाढ भ्याके सुनैयेले परै । यि बात तखुनका एकटा कोनो राजके राजा जगदेवके रानी आदमबतीके कानमे सेहो पुगलै । रानी ओकरौरके नाच देखैले मन करल्कै । उ राजासे आपन मनके बात कहल्कै । राजा, आपन रानीके बातमे सहमत भ्याके ओइ नकचकरियाके दरबारमे बोलाबैले हुकुम देल्कै ।

ओइ नचकरिया पाटीमे एकटा येहेन इमान्दार या आपन कामके प्रति निस्ठा राखैबला, सोझमैतिया स्वभावके सदस्य सेहो रहै । उ बाँसी बजाइ छेलै । खास क्याके ओकरे बलसे उ नचकरिया पाटी चलैत रहै । जब दरवारमे ओइ सबके बोलाहट भेलै त उ सब खुसीसे गदगद भ्या गेलै । बहौत रियाज करे लागलै ।

सब सजाबाजके सेहो चेकजाँच करलक्कै । जै दिन राजा बोलेने रहै ओइ दिन उ सब समयसे पैहने दरबारमे पहौंचगेलै । उसब आपन नाच या कला देखाबे लाग्लै । राजा रानीके साथै सबकोइके उ नचकरियासब मन मोइह लेल्कै । ओइसबके कलाकारिताके जयजय कार भ्या गेलै ।

राजा जगदेव बहौत खुस भेलै । तुरुन्तै हुकुम करल्कै । यै नचकरियासब जे जे खाइछै से खिया आ सबके निकसे खातिरदारी कर । जाइत काल यै सबके बजामे जतहेक सोना चानी आँटैछै भोइर भोइरके पठा । बड निक । ढोल, पिपही, नगेरा, ढोलक, तबला, डम्फा लखा जे जे बजा रहै सबमे सोना भोइर के बिदा कल्कै । सबमे सोना भइर भोइरके पठेल्कै । सव खुसीसे पलकित हैत गद गद भ्याके घर येलै ।

सबके घरके बोह बेटीसब खड खडके सोना चानीके गहना बनेल्कै । उसब आपन आपन गहना एक दोसरके देखाबे लाग्लै । बाँसीबलाके बडा चिन्ता लागलै । ताब उ बाँसी बजाइ बला मनेमने सोंचैछै । हम अतहेक निक बाँसी बजाइलियै । हमरे बलसे यि नाच चलैछै । महज हमर बाँसीमे त कनहिके सोना आँटलै । हमर बौह बेटीके मन खसल छै । ढोलबला सब के बहौत सोना चानी भेलै । तेकर चल्तै नचकरियासबके अपनामे मनमोटाब सेहो भ्या गेलै । राजा कहनेछै, दोसरो साल आइबके फेर नाच करहै । उ मने मन बिचार करे लागल या बाँसी बजाइले छोइरके नगेडा बजाइले लागल या कमसम सिखबो करलक ।

दोसर साल राजाके दरबारसे फेर बोलाबाट भेलै । सबकोइ खुसी भेलै या नचकरियासब आपन बजा ल्याके दरबारमे पहुँच गेलै । आपन कलाके प्रदर्सन करे लागलै । महज ओइसबके ओतहैक तालमेल नै मिलै । कतबहोक मिलबैके प्रयास करै तबोने सुरताल मिलै । राजा पुछल्कै, पौड सालेके सेट ने चहक ?

बाँसी के बजाबै छेलै ? उ नै येलछै ? उ सब जवाफ सेल्कै हों सरकार येह्त्या सेट चियै । बाँसियो बजाइनन येलछै हजुर । उ त बाँसी बजाइले छोइड देने रहै । रियाज छुइट गेल रहै । उ बहौत सोझ रहै । राजा के सामने कुछो नै कहैले सकल्कै । उ नगेडा छोइरके बाँसी बजाबे लागलै । तबो ने निकसे ताल लागै । बाँसी एक दिसना त बजा दोसर दिसना जाइले लागलै । ओइसबके ताल बेताल हेबे लाग्लै ।

नचकरियाके ताल देखके राजाके एकदम रिस उठलै । कहल्कै यि सब नेनिकसे बजाइछै, ने निकसे गाबैछै, ने निकसे नाचैछै । कोनो तालसुर नै लागैछै । तुरन्ते लठैत सबके हुकुम देल्कै, यि सब नचकरियासबके जे, जे बाजा बजाइछै, पकैरके वोह्त्या मुहमे ठुइस ठुइसके माइरतै माइरतै नजरके सामनेसे भगा । लठैतसब तुरन्ते सबके पकरे घकरे आ मारे पिटे लाग्लै । सबके बजा बडका बडका रहे । ढोलक, नगेडा, तबला, डुगी, मुहमे त नै ढुकलै । ओकरा मुरमे पटैक देल्कै । रैह गेलै बाँसी बला । बाँसी त असानी से मुहमे ढुकलै या निक से ओकेर मुह मे कोइच कोइचके पिटैत भगेल्कै । राजाके गलत निसाफ या वाँसीबलाके धैर्यताके कमिके चल्तै नचकरिया पाटी टुइट गेलै । खिसा खतम ।

स्रोत- स्व. उपेन्द्र प्रसाद चौधरी (पुर्व जिल्ला सभापती, थारु कल्यानकारिनी सभा, सप्तरी) ।

जे जाने से पहचाने

-बुद्धसेन चौधरी

एकटा गाँममे एकटा बुढ, लेकिन परहल लिखल लोक रहै । ओकरा दुइटा बेटा सेहो रहै । जेठका बेटाके बियाह भेल रहै । महज उ घरेमे बाप महताइर संगे रहैत रहै । ओकर घरपरिवार निकेसे चलैत रहै । जेठका बेटाके एकटा बेटा रहै । उ गाँम घरके स्कुलमे पढहै छेलै या ओहैसना से एसएलसी सेहो करल्कै । छोटका बेटा काम के खातिर बिदेस गेलरहै । वोकरा बियाहो नैभेल रहै । बहौत दिनसे कोन खबर नै पठेने रहै ।

बुढुवा घरसे कमजोरे रहै । जेठका बेटा खेती पाती करै । छोटका बेटा बहौत दिनसे कोनो खबर नैपठेने रहै । ओहै चिन्तासे बुढुवा दिने दिन बेमार हैत गेलै । दवाइके लेल पैसा सेहो खतम भ्या गेलै । नाइतके अगा पढहाइले सेहो पैसाके इन्तजाम नैभ्या रहल छेलै । बुढुवाके मन रहै जे हम आपन नाइतके कोनो धरानी परहाबी । बेटा नाइतके पढाइके खातिर सबदिसनसे हाइरके मन माइर लेने, रहै । बुढुवाके यि बात मालुम भेलै । बुढुवाके जेठका बेटा आपन बेटाके कहल्कै, वौवा आब तोहे कोनो काम कर यात घरेमे रह । हम पढहाइले नै सकबौ । यने तोहर बबो बेमार छौ, येकरो त देखैले परतै ।

यि बात सुइनके बुढुवा बहौत निरास भेलै । ओकर पासमे कोनो उपाय नै रहै । नाइतके लगमे बोलेल्कै या कहल्कै, तोहे जरुर पढ । हम तोरा एकटा घडी देचियौ जे हम जमानामे किनने छेलियै । यि अखने नैचलैछै महज येकर दाम अखैनियो बहौत छै । तु यि घडी ले या काठमान्डौं जो, ओतै येकरा बेचके पढहै । बुढुवा आपन पुरान बकसासे एकटा बिगरल घडी निकालल्कै या नाइतके देल्कै ।

कुछ दिनके वाद नाइत उ घडी ल्याके काठमान्डौं गेलै । ओकर बापो कुछ कुछ रुपैयाके बेबस्था कैर देने रहै । बुढुवाके नाइत ओइ घडीके नै बेचैके बिचार करल्कै । उ आपन बबाके घडीके फिट क्याके राखैले चाहल्कै । पुरान घडीके ल्याके एकटा घडी दोकानमे गेलै या घडीके फिट कैरदैले कहल्कै । घडी फिटर कहलकै यि घडी बहौत पुरान चियै । येकरा अखैन भङठी नैभ्या सक्तै । उ दोसरो दोकानमे ज्याके कोसिस करल्कै । महज घडी बनैबला नैभेलै । निरास भ्याके उ

ओकरा बेचैले सोंचल्कै । कियाकत त ओकरा बबा कहने रहै यि घडी बहौत मुल्यवान छै । बेचविही त बहौत दाम येतौ ।

घडी नै बनलाके बाद उ यि घडीके बेचैले बिचार करलकै । न्यु रोडके एकटा बडका घडी दोकानमे गेलै । आपन घडी देखेलकै या दाम पुछल्कै । दोकान बला कहल्कै घडी त बड निक छौ, या बहौत पुरानो छौ । यकर दाम हम पाँच हजार देबौ । उ निरास भ्या गेलै या ओइसनासे चैलयेलै । दोसर दिन फेर दोसर घडी दोकानमे गेलै । उ दोकानदार त पुरान घडी लैयोसे मनाही क्या देल्कै ।

बापके देलहा पैसा सेहो ओर्याल जाइत रहै । उ अपनाके मनमे अठोट करल्कै या कहलकै हम यहैसना कुछो करबै, लेकिन घर नै जेबै । उ मजदुरीके रुपमे डन्डी फर्माके काम करे लागलै । काम करला लगभग एक हप्ता भेल रहै । काम करैबला ठाममे उ एक दिन एकटा पत्रिका देखल्कै । पत्रिका पढहै लागलै त ओइमे एकटा सुचना रहै । जैमे लिखल रहै कि एकटा संग्रहकर्ताके लेल पुरनका घडी जरुरी छै । ओइमे घडीके फोटो सेहो छापल रहै । घडीके दाम एक लाख ले ल्याके उपर तैक रहै । साँझके उ पत्रिका लाइबके डेरामे येलै या आपन बबाके देलहा घडी से मिलेल्कै । घडी त हु बहु मिलै छेलै । भोइर राइत मनमे खुलदुल हैत रहै । बिहान भेलै त उ खानपिन क्याके काममे नैज्याके घडी संकलनकर्ता रहलहा होटल याक एन्ड यतीमे गेलै । बडका होटल देखके त ओकरा विस्वासेने हेबै । तबो डराइत डराइत गार्डसे पुछल्कै या विग्यापन सेहो देखेल्कै । गार्डके देखेलहा रुममे गेलै या घडी संकलनकर्तासे भेटलै । गोजीसे आपन घडी निकाइलके देखेल्कै । घडीके उ संकलनकर्ता बहौत तार भियार करल्कै या कहल्कै हम यैहनङ घडीके तलासमे चियै । हमरा येह्या घडी चाही यि बहौत पुराना छै । येकर दाम एक लाख रुपैया छै । लेकिन हमरा यि बड निक लागल तोरा डेढ लाख देबौ । ओइ छौंराके त होस उइर गेलै । उ ओतहेक पैसा देखनोने रहै । कुछने बाजै सक्लै । मनेमन उ खुससे गद गद भेलै या सोंचे लाग्लै । नै बोललाके चल्तै किनैबला मनेमन सोचलकै कि येकरा दाम कम भेलै । उ ओइमे पचास हजार थाइपकै २ लाख बन्यादेलकै । कहल्कै ले यि रुपैया राख । तोरा बहौत बहौत धन्यवाद । उ रुपैया ल्याके डेरामे येलै या दोसर दिन क्याम्पसमे ज्याके नाम लिखेलकै या पढाइ के सुरुवात करल्कै । यि जाइनके घरमे बाप महताइर या बबो बहौत खुस भेलै । सैब चिज बिज के आपन आपन ठाम मे आपने महत्व हैछै । जे पहचाने वह्या जाने ।

स्रोत- दिनानाथ चौधरी (पूर्व सिक्षक) भङहा, सप्तरी ।

दरपियाके दाउ

-बुद्धसेन चौधरी

बहौत पैहने बात चियै। एकटा जिमिदार रहै ओकरा बहौत खेत पात रहै।ओकर नाम खकन रहै। एकटा गाममे घर रहै त दोसर गाममे कामत रहै। उ बेसी से बेसी कामतेमे रहै। कामतमे बेसी खेतीपातीके काम हबै। हाथी, धोडा सेहो राखने रहै। अनके कोनो कमी नैरहै। नोकरचाकरके देखैले, कामतमे कामके रेखदेख करैले या हरहिसाब राखैले एकटा मुन्सी सेहो राखने रहै। उ मुन्सी पढहल रहै। मुन्सीके नाम जोखन रहै। हरहिसाब लेनदेन सब ओह्या राखै। मुस्सी करिब करिब कम्तियेके उमेरेके रहै। मुन्सी कामके या जमानके दोनो पक्का रहै। जे बाजैसे करबेटा करै।

कामतमे त घरके लोक रहै नै। अगापछा मुन्सीयै करै। उ सब मालिक या नोकर रखा रहलो पर भि एक दोसरके इज्जत करै। काम एक ठाम त रहबे करै बहौत दिनके बाद उसबमे दोस्ती सेहो भ्या गेलै। कामतमे त जनिजाइत सव रहबेने करै। भात भन्सा मरदेसब करै। काम करैवला, भात भन्सा या खेतीपाती करैवला सब मिल्याके २५ लोक रहै। हरबा आ जनके त कोनो बातेने।

साँझ है त काम कोनो नैरहै। कम्तिया या मुन्सी गफसफ करै। गाममे एकगोरे दारु चुबाबै छेलै। मुन्सी त पैहनेसे पियै छेलै। पाछे मालिकोके सिख्या देलकै। दिनमे फेर आपन आपन काममे ब्यस्त रहै। साँझ हेबै त आब दुनु गोरे कुछने कुछ पकाबैले कहै या दारु मँगाबे। यैहनँ करैत करैत उसब दारुके लतमे फैस गेलै। कम्तिया कुछ दिनके लेल बहारो चैल जाइ त मुन्सी नोकर चाकरसे मँग्याके असगरे पियै। मुन्सी नै रहै त कम्तिया नोकरसे दारु मँग्याके असगरे पिलेबे। लाटमे नोकरो चाकर पियैले पाबै। जब दुनु गोरे रहै त बाते छोइर दियो। दुनो मिलके मस्तसे दारु पियै आ मोजमस्ती करै। आब त उ सब साँझ हैसे पैहने काम खतम क्याके पियैले सुरु करे लागलै। पाछे पाछे त येहेन भेलै कि अकोरती खाली है त उसबके मन चटपट हैजे, कखनु साँझ हेतै। उ कम्तिया या

नोकर एक दोसरके निक या बेजा सेहो जानै । उ सब कहियो कहियो मौज मस्ती सेहो करै ।

दारु पियैत पियैत एक दिन साँझ दुनो गोरेके बिचमे कामके ल्याके खटपट भेलै । दुनु गोरेमे खोब कहाकही सेहो भेलै । बुझहा परैजे काइलसे यि सब एक दोसरके नै देखतै । दोसर ककरोने हिम्मत है जे बिचमे ज्याके टोन दिइ । हथापइकके छोइरके सब कुछ भ्या गेलै । काइलसे एक दोसर संगे दारु नैपिबै कैहके तामससे भुखले आपन आपन ठौरमे ज्याके सुतलै । बिहान भेलै त मुन्सी आपन काममे लागलै । कम्तिया आपन काममे लागलै । दुनु गोरेके बिचमे दिनभैर बोलीचाली नैभेलै । साँझ परलै । कम्तिया 'मालिक' दोमहलामे बैठके कुरसीमे देह हिलाबैछै । मुन्सी निचाके हवा घरमे चुपचाप बैठलछै । दारुके लत त दुनुके लागल छेलै । लेकिन राइतके त झगडा करने रहै । केनाखे कहतै । कोइने केकरसे कम । आब त सुरुज डुइग गेलै । दुनुके मन त दारु पियैले चटपट करै लागलै । लेकिन दारु लाबैले कोइने केककरो अर्हाबे सकै । राइतके ओतहेक कहाकही भेलछेलै ।

पुरा साँझ भ्याके झोलफोल भेलै त अन्तमे, मुन्सीके सहैसे फाजिल भेलै उ रसे सर उपर चढलै । कम्तिया तुरन्तै कहलकै बैठल जाउ मुन्सी जी । मुन्सी कहैछै सरकार, छोइर दियौ राइत जे भेलै से भेलै । हमरे गल्ती छेलै । आब हम झगडा नैकरबै । कन्हिकरा मँगाइबै ? कम्तियोके मनमे त स्यहा रहै । ओकर बात ओराइसे पैहने कहलकै हँ हँ जरुर मंगाब । हमरो त मन चटपट करैये । हमहु येह्या सोंचै छेलियै । लेकिन आइ कोनो बादविवाद नैहेतै । तुरन्तै नोकरके हुकुम करल्कै या दारु मँगेलकै । पियैले सुरु क्या देलकै । जाब कुछ नसा लागलै त फेर बात घुमैत घुमैत कौलका ठाममे येलै । पैहने त ठिके बादमे फेर बताबती हैत माइये बैहने गाइर परहा परही भेलै । या एक दोसर से गाइर परहैत सुतैले चैल गेलै ।

विहान फेर दुनु गोरेके कोनो बजाभुकी नैभेलै । दुनु आपन आपन काममे रहै । फेर साँझ परलै । दुनुके दारु पियैले मन चटपट करै । लेकिन कहतै त केना कहतै ? राइतके एक दोसरके महताइरे बहैने गाइर पढ्ने रहै । मुन्सी ओइ दिन

तामससे टोलमे चैल गेल रहै । कम्तियाके साँझ परलै त फेर दारु पियैले मन चटपट करे लागलै । चारु भरा ताकलकै त मुन्सीके नै देखल्कै । एकटा नोकरके पुछलकै त कहलकै गाम दिसर गेलछै । कहल्कै जो ताइकके लाबहे । उ गाम गेलै या मुन्सीके कहल्कै मालिक बोलाबैछौ । तामससे त कहलकै, जो कैह देहे, नै येतौ । महज पछा पछा येलै । मालिक लग गेलै । त मालिक कहै छै अरे यार ! राइत जे भेलै से भेलै । आइ त कुछ करे परतै ने । पिवही कि नै ? मुन्सी कहलकै यहाँ त हमर मुह के बात छिन लेलियै । हम गाँम दिसना वहैले गेल रहियै । लेकिन पैहने सर्त राखु जे कैलका बात नै मन पारबै । कम्तिया कहलकै हेतै । फेर दारु लावलक या दुनु गोरे संङे बठके पियै लागल । निक बात के गप सुरु भेलै जाइत जाइत फेर से कौलका या पर्सुका बात मे पुगलै । फेर दुनु गोरे एक दोसर के दोख लगाबे लागलै या फेरसे झगडा हेबे लागलै । एकदम उकटा पैची हेबे लागलै । सहैसे फाजिल भेलै त फेरसे आपन आपन ठौर मे गेलै या सुतलै ।

दोसरो दिन दुनु मेसे एक गोरे माफी माइंगले या फेर से दारु पियै या लगला के बाद झगडा करै । यैहनङ उ सब आनबात मे कतबहौक एकदोसरमे लडै, झगडै लेकिन दारुके नाममे सैब चिज के बिसैरके एके भ्या जाइ आ तुरन्तै मिल जाइ ।

दरपिया के आपने ताल रहैछै । कोनो ने कोनो बहाना ल्याके उ दारु पिबे करैछै । ओइसबमे बड दस्मनी रहैछै, महज दारुके नाममे कोनोने कोनो दाउ माइरके तुरन्ते एक भ्याजाइछै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- लक्षनदास मण्डल । सबैया, सप्तरी ।

निम आ तेतैर

-बुद्धसेन चौधरी

बहौत पैहनेके बात चियै । जखनु अंग्रेजी दबाइके चलन नै रहै ओइ समयमे बात चियै । गामघर मे बेसी सेबसी घरायसी दवाइके लारचार हैछैलै । तैहयेके बात चिये । भर्खर भर्खर कुछ स्कुलसबके जलम भेल रहै । एकटा पटबारीके महताइर बेमारी भ्याके समयसे पैहने कालके मुहमे चैल गेल रहै । उ अपन गाम घरके कुछ दबाइदारु करैले जानै छेलै । महज कतबहोक प्रयास करल्कै त बापके बचाइले नै सकल्कै । उ आपन बेटा बौकाइके बैध परहाबैले चाहल्कै । समय परिस्थितीके माइरमे पैरके नैपढहाबे सकल्कै । जब ओकरा नाइत भेलै । उ कनियेटासे ओकरा बैध पढहाबैले कोसिस करल्कै । उ पढहै जोकर भेलै त बबाके बात मानल्कै । ओकर नाम ढोढाइ रहै ।

लग पासमे त कोनो ठाम आयुर्बेद पढहाइबला ठाम नैरहै । उ आपन नाइतके इन्डियाके पटना सहरमे नोकरके साथ पठ्याके पढहाबै लागलै । एकटा नोकर ओकरे पछ्रा रहै । भात भन्सा कैरदेबे । बरसमे दुइ दाइब मात्रै नाइत घर आबै । ढोढाइ दुइ बछरके बाद आपन पढाइ ओरेल्कै । ओकर पढाइ निक रहै तहैसे ओकरा पटनाके बैधखानामे नोकरी भेट गेलै । बढ खुसीके बात । नोकर ओकरा ओहैसना छोइरके घर लौटलै ।

घरमे बबा खुसीसे गद गद भेलै । सगरे हमर नाइत ढोढाइ बैध बनलै कैहके लरु बाँटल्कै । महज नाइत कहेन डाक्डर भेलै से जाँचैले ओइ जिमिदारके मन लागलै । उ ओकरा परिक्षा लैले बिचार करल्कै । आपन नोकरके मैहना दिनके खर्चा देल्कै या कहल्कै जो तोहै फेरसे हमर नाइत लग जो । तोरा मैहना दिनसे बेसीके खर्चा देने चियौ । महज एकटा बातके तोरा धियानमे राखे परतौ । उ कि चियै, कि तोरा लैरते हमर नाइत लग फेर जाइले परतौ । दिनमे कतबहोक लरहै तेकर कोनो बातनै छै, महज राइतके सुतैत काल सब दिन तोरा

तेतैरके गाछके निचामे सुतैले परतौ । कोनोबात नैछै तोहे जतबेह सकबिही ओतबेहेक जाइहे । महज राइतके तोरा तेतैरके गाछके निचामे सुतैयेके छौ । नोकरसे निकसे बुझ्हल्याके सिधासामलके साथे पैसाकौरी द्याके बिदा करल्कै ।

नोकरके मालिक जे कहने रहै ओहिनङ करे लागलै । दिनमे जतहेक सकै ततहेक लरै । साँझ परै त कोनो गाममे रहै या तेतैरके गाछके तरमे ज्याके सुतै । दस दिन ओहिनँ करलाकेबाद ओकर देहमे फौंसरी निकले लागलै । पनर दिनके बाद त उ फौसरी सबसब्याबे लागलै । उ एकदमसे कुरियाइ । ताब त उ आपन रफ्तारके बढहेल्कै । दिनमे बेसी लरै लागलै । राइत परै त तेतैरके गाछ तरमे सुते । नोकर त सोचै कनकी मालिक डाक्टर चियै । जेबै त दबाइ देबे करतै । जाब नोकर कनकी मालिक लग पटना पुगलै त ओकर हालत बबौत नाजुक भ्यागेल रहै । पुरा देहमे खधखध घा भेल रहै । कनकी मालिक पुछल्कै, कथी भेलौ ? उ कहलकै कहाँ कुछो । आइबतै आइबतै देहमे घा भ्या गेलै । फेर डाक्टर पुछलकै । पेरामे आबै छेलही त राइतके कते रहै छेलही । नोकर कहल्कै । दिनमे कतबहोक लरियै त राइतके जैसना तेतैरके गाछ भेटै ओकरे तरमे सुतियै । बडका मालिकके येह्या हुकुम रहै । डाक्टर सबबात बुइझ गेलै । कहल्कै चिन्ता नैकर । यि सब ठिक भ्या जेतौ । कनहिक दबाइसे हम तोहर घा साफ क्या दैचियो । एक दुइ दिन आराम कर ताब लौट जाइहे । हम निके चियै । देखलिहीने । घरमे बबा चिन्ता करैत रहतै । तोरा जे जतहेक खर्चा चाही हम देबौ ।

डाक्टर बुझहल्कै हमर बबा जाँचैले येकरा पठेनेछै । हम पुरा दबाइ क्या देबै से नैहेतै । यि बेमारी जैहनङखे भेलै ओकरा हम ओहिनङखे ठिक करबै । नोकरके रुपैया कौरी द्याक कहल्कै । बबाके केहे नाइत ठिके छौ । कोनो चिन्ताके बात नैछै । एकटा बातके ध्यानमे राखहे तोरा फेरसे लैरतै ज्या परतौ । एक महिना और सही । महज तोहै आबैत काल तेतैरके गाछके निचामे सुतै छेलही त जाइत काल राइतके तोरा निमके गाछके निचामे सुतैले परतौ । सकबिहीके नै ? नोकर कहलकै हेतै मालिक हम आबैतकाल सकलियै त जाइत काल कथिले नै सकबै । जरुर करबै ।

उ पटनासे आपन घर उत्तर दिसना चैल देलकै । ओकरा त पेरा थाहे रहै । राइत परै त निमके गाछ के निचामे ज्याके सुतै । कनहिक दिनकेबाट ओकर खदखद घा कुछ कम हेबे लागलै । उ बढ खुसी भेलै । आब त उ थाकबो करै त निमेके गाछ ताइकके जिराबे लागलै । घा और जल्दी निक हैले लागलै । मैहना दिनमे उ आपन घर पु इग गेलै । बडका मालिक ओकरा देखके बड खुस भेलै या कहलकै कि छै हाल खबर हमर डाक्टर नाइतके । सब ठिक छै । रस्तामे तोहर दिन गुदस केनाखै बितलौ । जाइत कला कि कि करलिही या आबैत काल कि कि करलिही । नोकर ओरसे पोर तैक सबबाट बिस्तारसे आपन मालिकके सुनेलैक । जिमिदार मालिक बहौत प्रसन्न या खुस भेलै । कहलकै हमर नाइत निक डाक्टर भेलछे ।

घरायसी दवाइके रुपमे निमके आपने महत्व छै त तेतैरके सेहो आपने महत्व छै । येकरा सही प्रयोगसे लोक स्वस्थ जिवन निर्वाह क्या सकैछै ।

स्रोत- अनुप लाल चौधरी (प्र.अ. आधारभुत विद्यालय बकधुवा, सप्तरी) ।

नोकरसे मालिक

-बुद्धसेन चौधरी

बहौत पैहने जाब तराइमे थारु समुदायेटा रहै ओइ समयमे मलेरिया, हैजा फौती लखा बहौत रोग ब्याधीके अवस्था रहै । तहै समयके बात चियै । थारु सब आपन खेती पातीसे गुजारा चलाइत रहै । जाब सभ्यताके विकास भेलै । सङेसङ मलेरिया लखा रोग ब्याधी खतम भेलै त थारु गामसबमे फेरहाके रुपमे दछिन भरसे दोसर समुदायसबके लोक आबे लागलै । थारु समुदासे उब्जेल्हा अनके बदलामे ओकर दैनिक जिवनमे जरुरी हैबला चिजबिजसब जेना-लता कपडा, नोन, हरदी, मरमसला,बिया, बिचहन लखा समानसब बदैलके फेर करैले लागलै ।

ओहै समयमे कोनो गाममे येकटा लाइलचन माइझ नामके जिमदार रहै । ओकरा धन सम्पतीके कोनो कमी नै रहै । हैजा फौतीलखा महामारीके चल्ते ओकर धरवालीसे साथेसाथ सबगोरे मैर गेल रहै । उ असगरुवा भ्या गेलरहै । कम्तियै लखा रहै । सब चिज आपने करै । गाँममे ककरो नोकरी राखैले चाहै त कोइने मानै । सबके ओह्या दसा रहै । हैजा फौतीके चल्ते गामके गाम साफ भेल रहै । तहै मौकामे कामके खोजीमे दछिन भरसे कोइयो गाममे येल रहै । ओकरा लाइलचन माइझ काममे राइख लेल्कै । नोकर, ओकर खान पिनसे ल्याके सरसफाइ या और दोसरो काम सब करे लागलै । मालिक दिन दिन बुढ हैत चैल गेलै । नोकरके मनमे लोभ जागलै । उ असगरे काम करैले नै सकै । मालिकसे छुट्टी ल्लाके उ आपन घर गेलै या घरसे दोसरो छौंरासबके लेने येलै । लाइलचन माइझ बड खुस भेलै या ओकरो नोकरीमे राइख लेलक । रस सर लाइलचन माइझ बुढ हैत चैल गेलै । समय बितैत गेलै । कामके फेरमे फेर दछिन भरसे फेर दोसर लोक येलै । जमिनदार लग बैठलै या कहलकै गौ तोहे जे यि नोकर राखने चिही । उ बड बदमास छौ । तोरा निकसे खाइले नै देछौ । बेराबेरी कैरके तोहर धनसम्पती आपन घर ढोबने जाइछौ । हमरा नोकरी राखबिही त ओकरा हम ठिक करबै । जिमिदार ओकर बातमे विस्वास क्या लेल्कै या पहौनका नोकरके बदमासी रोकैले ओकरा चुपचाप राइख लेल्कै ।

कनहिक दिन त निके चललै । कुछ दिनके बाद पहौनका नोकर लबका नोकरके फुसिया लेल्कै । दुनु नोकर मिल गेलै । ओइसबके बुढुवाके धन सम्पैत देखके लोभ लाइग गेलै । उसब मिलकै बुढुवाके मारैके सल्लाह करल्कै । महज मारतै

त केनाखे । एकटा उपाय सोंचलक । उ सब मालिक लाइलचन माइझके दुधमे दवाइ मिलाबे लाग्लै जैसे बुढुवा जल्दीये मोइर ज्या । मालिक दिने दिन कमजोर भेल गेलै । महज नोकरबा निक निक बात कैहके मालिकके मन मोइहलै ।

यि बात दछिनसे फेर करैले येलहा लोक थाह पावल्कै या जिमिदिरके कहल्कै, गौ तोंहे जे यि नोकरसब राखने चिही यिसब बढ बदमास छौ । निक निक गप करैछौ महज काम नै करैछौ । गौ यि नोकरसब तोरा मारैले ताकैछौ । दुधके संङे सङ और कोनो दवाइ मिल्याके दैछौ । हमरा नोकरीमे राख । हम फेर करैले छोइरके तोहर निकसे सेवा करबौ या ओइसबके ठिक करबै । जिमिदार ओकरोबात माइनके, विस्वास क्याके ओकरो नोकरीमे राइख लेल्कै । आब जिमिदारके निक दुध मिले लागलै । रसरस उ निक हैले लागलै । कनहिक दिनके बाद पहौनका नोकरसब मिलकै लवका नोकरके फुसिया लेल्कै । कहल्कै यि बुढवाके पछा कथीले लागै चिही । मौरतै त ओकर सम्पती बखारा क्या ल्याब । उ सब फेरो खानपिनमे गडबड करे लागलै । जिमिदार फेरसे कमजोर हेबे लागलै । उसबके डर सेहो रहै कि मिजिदार जानतै त हम सबके नोकरीसे निकाइल देतै । महज उसब देखाबटीमे एक दोसरके दुसमन लखा रहै, महज भितरे भितर एके रहै । एक दोसरके भर पैरके बुढुवाके हों मे हों मिलाबे महज काम अपने दिमागसे करे । आब त लाइलचन माइझ बहौत कमजोर भ्याके बेमारीयो भ्या गेल रहै । आब ओइ हबेलीके सब काम करिब करिब उसब आपन हाथमे ल्या लेने रहै ।

उसबके पुरापुरी बिस्वास भ्या गेल रहै कि मालिक आब बेसी दिन नै जितै । मालिकके उसब येहेन बेबहार करै जैसे लागैजे ओकर बेटा रहतियै तैयोने करतियै । दिने दिन मालिक और कमजोर भेलै आ एकदिन मालिक मोइर गेलै । मालिकके त सेवा वोह्यासब करने रहै । गौंवा घरबासब मिलके मालिकके किरिया करम करलक । सब नोकरसब मिलके लाइलचन माइझके सम्पतीसब हथिया लेलक । आब त उसब आपन धिया पुताके सेहो ओहैसना लाइब लेलक । उसब ओइसनाके वासिन्दा भ्या गेलै । हैत हैत आइ उ नोकरसब जिमिदारके ठाम लेल्कै । अखैन उसब ओइसनाके नोकरसे जिमिदार भ्या गेलै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- स्व. उपेन्द्र प्रसाद चौधरी (पुर्व जिल्ला सभापती, थारु कल्यानकारिनी सभा, सप्तरी) ।

तिरहुत माइझ

–बुद्धसेन चौधरी

करिब करिब ७०० बछर पहनेका बात चियै । अखैन सप्तरी जिल्लाके तिरहुत गाउँ पालिकाके तिरकौल गाममे एकटा बडका थारु जिमिदार रहै । ओइ समयमे थारु जिमिदारके माइझ कहै छेलै । ओकर नाम तिरहुत माइझ रहै । उ बहौत पराक्रमी या जवानके पक्का रहै । जे बोलै से करै । उ जे चाहै से कोनो धरानी करबैटा करै । ओइ समयमे ओकर नाम कोसीसे ल्याके सिमरौनगढ तैक फैलल रहै । तखुने एकटा उखान सेहो लोकसबके मुहमे रहै । रजा त सिव सिंह, औरसब छोकरा ! माइझ त तिरहुत और जलघोसरा !! यहौ से अनुमान लग्या ज्या सकैछै कि उ रजा सिव सिंहके हाराहारीमे आपन नाम कमेने रहै ।

उ ओइ समयमे बोनके फाइरके बस्ति सेहो बसेने रहै । ओइसना उ एकटा बडका पोखैर सेहो खनेने रहै । कहल जाइछै उ एकटा घोडामे चैढके दोरेलकै । उ घोडा जने जने चक्कर मारल्कै या घुइमके जैसना से दोडेने रहै तहै तहैसना येलै से जगहके छाइपके पोखैर बनेने रहै । यहो कहल जाइछै ओइ पोखैर १०० बिगहामे फैलल रहै । जैमे ५६ बिगहाके पनियौत रहै त ४४ बिगहामे अनगी या महार रहै । उ पोखैर कोराइले बरस दिन लागल रहै ।

पोखैरके जग करैले एकटा जैठके आवस्यकता परैछै । बोनसे जैठ ताइकके जिम्मा ओहै गामके मुसन सरदारके देल्कै । ओहो वोइ समयके नामी लोक रहै । जिम्मा ल्याके गाछ ताकैले बोन चैल देलकै । ताकैत ताकैत कतौने ओकरा तिरहुत माइझके पोखैरमे जैठ फिट हैबला गाछ भेटै । तबो उ आपन हिमत नै हाइरके गाछ ताइकतै रहलै । बहौत ताकलाके बाद ओकरा एकटा बडका बिसाल सखुवाके गाछ भेटलै । ओइ गाछके उ सुपरी चढ्ह्याके नेता देलकै या ओइसनासे चैल येलै । बिहानके गाछ काटैले कुरहैरिया सबके मदैतले कहकलकै या सबकोइ मिलके बोन चैल गेलै । बोनमे जब ओइ गाछके तरमे पुगलै या गाछमे छोह मारैले ताकल्कै त उपरसे आकासबानी भेलै । कहल्कै, यै गाछके नैकाट । यैमे बहौत देवी देवतासब रहैछै । महज मुसन सरदार कहल्कै । हमरा पोखैरके लेल यै गाछसे

निक गाछ कतौ ने भेटलै। हम येकरा नेता सोहो देनै चियै। तेकरा यि स्विकार करनेछै। हम एकरा काटबै करबै। उ पहौनका छोह गाछमे मारल्कै। बेराबेरीके सबकोइ उ गाछके काटे लाग्लै। बहौत प्रयासके बाद उ गाछ कटलै। महज खसबेने करै। मुसन सरदार, धामी सेहो रहै। उ आपन गुन मन्तरसे कोनो धरानी उ गाछके खसेल्कै। ओकरा बड पियास लागलै। पाइन लग पासमे कतौ ने रहै। पाइनके खातिर उ आपन भाइके पठेलक। उ कोनो धरानी कोसी लदी पुगलै। लोटामे पाइन भोरल्कै या चैल आबै छेलै। ओकरा सलहेस जे बोनके रजा चियै। पेरामे भेटलै या कहल्कै। तोहे यि पाइन कतै लेने जाइचिही। उ जवाफ देल्कै। हम आपन भैया मुसन सरदारके पियैले यि पाइन लने जाइचियै। सलहेस कहलकै। उ त आब यि दुनियाँमे नैछौ। यै बात सुइनके भाइ मुर्छित भ्यागेलै। पाइन सेहो ओंगहैर गेलै। जाब होस येलै त उ कानैत कानैत भाइ लग गेलै। देखलकै भैया जिते छै। महज ओकर पासमे पाइन नैरहै। पुछल्कै कहाँ, पाइन लाबलिही ? त उ पेरामे भेलहा घटना सुनेल्कै। मुसन सरदार बुइझ गेलै यि केकर खेल चियै। उ भाइके भालमन्ती लदीमे पाइन लाबैले पठेल्कै। अने काम त चैलतै रहै। भाइ पाइन लाबल्कै। मुसन सरदार पाइन पियल्कै। जैंठ करिब करिब तियार भेलै। जैठके आठ पाट सेहो बनेल्कै। सब हंसहैरीसब बोकल्कै या मिलके घर दिसना लेने चैलदेल्कै। जाब बोनसे बहार भलै त जैठ पिछैर गेलै या जोराबर मुसन सरदारके देहमे खैस गेलै। दैव संजोग दोसर केकरो कुछो ने भेलै महज जेराबर ओहै कारनसे मोइर गेलै।

कोनो धरानी जैंठके घर लाबल्कै। दोसर दिन जैठके पुरा तन्तर मन्तर या पुजापाठ क्याके बिच पोखैरमे गारल्कै। रस्सासब भट भट टुटै छेलै। कहैछै ओइ समयमे सैकडो छगरा पाठीके बोइल देने रहै। आब उ एकटा विसाल पोखैरके नामसे सगरे नामी भ्या गेलै। ओइ पोखैरके सामने त दोसर पोखैरके कोनो गन्ती ने हेबे लागलै। दुर दुरसे लोकसब उ पोखैरके देखैले आबे। एकटा कहाबतै बैन गेलै। “माइझ त तिरहुत, और झलघोसरा, पोखैर त तिरकौलके औरसब डबरा” समय निके बितैत गेलै। दुर दुरसे लोकसब ओकरा देखैले आबे। तिरहुत माइझके बेटा

सेहो रहै तेकरा बियाह भेल रहै । पुतौहके बच्चा भेल रहै । भर्खरके दुधपिये बच्चा रहै । पुतौह लहाबैले सब दिन आपने पोखैरके छुट्टै घाटमे ज्या । उ अरेकात लहाबै । एक दिन पोखैरमे लहाइत काल ओकरा जिजिर पकैर लेल्कै । जिजिर तानने तानने ओकरा बेसी पाइन दिस लजाबै लग्लै । उ बिन्ती करल्कै हमरा घरमे छोट बच्चा छै हम ओकरा दुघ पयेबै ताब तोहे हमरा ल्या जाइहे । जिजिर ओकरबात माइन गेलै । उ घरमे येलै या बच्चाके कानैत कानैत दुध पियाबे लाग्लै । यि बात तिरहुत माइझके साथै साथ गामके सबके थाह भ्या गेलै । तिरहुत तुरुन्तै कमियाके बोलेल्कै या छेनीसे जिजिरके काटे लागलै । कतबहौल कुछो करै त जिजिर ने काटल जाइ ने जरै । तिरहुत माइझ बहौत कौरना करल्कै । तबो कुछो नै भेलै । ओकर पुतौह सोहो तबाह भ्या गेलै । उ बच्चा के दुध पियेल्कै । बच्चाके काजर क्या देल्कै । दोरीमे सुतेल्कै । ता तैक साँझ भ्या गेलै । तिरहुत माइझ जिजिरके कहलकै । एक जानके बदला सय जान ल्या महज हमर पुतौहके छोइर द्या । जिजिर नै मानल्कै । तानने तानने ल्या गेलै या ओकर पुतौहके पोखैरमे डुग्या लेल्कै ।

तिरहुत माइझ पैहनेसे जिदाह या वचनके पक्का लोक रहै । उ मनमे बिचार लेल्कै । यि पोखैर हमही खोनेलियै । आइ यि हमरे पुतौहके ख्या लेल्कै । येकरा हम आब कोनो धरानी नास करबै । महज पोखैरके सक्ती त उ देखने रहै । तै दुबारे उ दलसिंह धामीसे यै बिषयमे सल्लाह करल्कै । धामी ओकरा मौहरी लदीके मनाइले सल्लाह देल्कै । तिरहुत मौहरी लदी या लदीके बिचमे रहलहा थुममे ज्याके ७ दिन तैक लगातार गोरमुर लाइगले कल जोइरके मौहरीके सुमरल्कै । बादमे मौहरी एकटा बुढियाके रुपमे दर्सन देल्कै या कहल्कै कह तोकर कि समस्या छौ । तिरहुत आपन बात सुनेलक । मौहरी तिरहुतके दुख दरद सुइनके कहलकै तोहर बात पुरा हेतौ । सेनै तोहे खरहिके ब्यवस्था कर । तोहे खरही गारैत जाइहै । हम पछा पछा येबौ । तिरहुत माइझ खहरीके ब्यवस्था करल्कै । तिरहुत माइझ दुलकल जाइ या कतौ कतौ खरही गारने जाइ । पछा पछा मौहरी लदी फुफियाल आबै ।

जाब मौहरी लदी तिरहुतके पोखैरमे पुइग गेलै आ महारके काटे लागलै । पोखैरमे रहलहा गोरा माछ सब जोड भ्या गेलै या एकटा अलगै बान्ह बन्या लेल्कै । जेकरा मोहरीके पाइन नै नांग्हैले सकल्कै । उ घुइरके चैल येलै । या चमैनिया लदीके साथमे ल्याके फैरसे तिरहुत माइझके पोखैरमे गेलै । बाइढ पोखैरके काटे लागतै त सब गोरे मार मार कहिहे सेहो तिरहुतके कहने रहै । जाब फेरसे मोहरी घुइरके येलै त गोरामाछ फेर बान्ह लग्या देल्कै । चमैनिया लदिमे रहलहा डाँगर सब ओइ माछके उपरमे पटके लागलै । डांगरके माइरके चल्ते गोरामाछके बान्ह टुइट गेलै । मौहरी तिरहुत माइझके पोखैरके आपन पेटमे ल्याके सिधै पुरुब भर कोसी लदीमे ज्याके मिल गेलै । जाब तिनटा महार काइट लेल्कै या पछियाइर काटे लाग्लै त तिरहुत कहल्कै आब छोइर दहै । पछियाइर महार छोइर देल्कै जे अखैनियो छेबे करै । अखने ओहै महारमे वडा कार्यालय, राजाजीके थान, तिरहुतके थान छै । तहै दिनसे मौहरी लदी कोसीमे जर भ्याके बहे लागलै । नेत मौहरी पैहने सिधै दछीन दिसना बहै छेलै । अखैनियो राजबिराज हनुमान नगर रोडमे मौहरी पुइल छेबे करै महज खेत भ्या गेलछै । सायद उ बैसाख मैहनाके पहौनका दिन छेलै तै दुवारेअखैनियो बैसाख मैहना सुरु हैते गोरमुराइन या तिरहुत माइझके मन्दिरमे मेला लागैछै। तरहुत माइझ पोखैर बनेल्कै महज ओह्या ओकरा उजारबो करल्कै ।   थौर जे ठानैछै उ करबेटा करैछै ।

खिसा खतम ।

स्रोत- स्व. सगम लाल चौधरी, सबैया सप्तरी ।

बरह

– बुद्धसेन चौधरी

एक बहौत घना बोन रहै । ओइ बोन मे बाघ, भौल, गिदर, गोही, हरिन लखा जनावर सव सेहो रहैछैलै । सब जानबर सब कोनोधरानी आपन गुजारा चलाइबे करै । समय बितैत रहै । ओइसनाके जानबर मेसे हरिन सबसे सोझ कमजोर रहै । ओकरा हरदम होसियारीसे रहै परैछेलै । बाघ, गोडीके डर त रहबे करै । सिकरबाके सेहो डर रहै । कखनी के कोनेसे झमटतै तेकरै चिन्तामे उ हरदम रहै । एकसमयके बात चियै हरिन पेट बोकने रहै आ गाभहिन रहै । जब बच्चा जन्माइके समय एलै त उ बच्चा जन्माइले निक या गर महज सलुक ठाम ताके लाग्लै । ताकैत ताकैत उ एकटा लदीकातके भित्तामे पुइग गेलै । तबोने ओकरा निक ठाम भेटे जैसना उ बच्चाके आरामसे जलम द्या सकै या कोइयो देखबोने करे । उ अनेओने ताके लागलै ।

ओहै समयमे ओकरा पेटमे दरद सेहो हेवे लागलै । उ हरिन घोसरैले ताकलकै महज बडी दुरमे एकटा सिकरबा ओकरा देखलेल्कै । उ सिकरबा निहकैत छुपकैत ओकर दिसारा आबे लागलै । हरिन ओकरा देख रहलछै । जान बचाइले उ हरिन दोसर दिसना भागैले ताकल्कै । त देखैछै, ओनेभर बाघ बैठलछै या ओकरे टकुवा लगेनेछै । हरिन बहौत समस्यामे पैर गेलै । निचा दिसना ताकैछै त लदी बहौत गैहर छै खसनेसे जान बचैके कोनो सम्भावना नैछै । दोसर दिसना उपरमाथै चैढके भागैले ताकलै त देखैछै । ओने भरा टँडामे आइग लागलछै । उ त चारोभरसे घेरामे पैर गेलै ।

अने ओकर दरदो अतहेक बढहे लागलै कि ओकर दिमाग सोंचैसे बहार भ्या गेलै । तहै समय मे करिया मेध सेहो पछिम भर से आबेलागलै । बिजली छटके लागलै । हरिन सब चिजके बिसैरके आपन बच्चाके जलम दैले एकटा झारके तरमे बैठ गेलै । सिकरवा ओकरा झारके तरमे जाइत देख लेल्कै । उ निहकैत छिपकैत ओकर दिसना बढहे लागलै । सिकरबा निसाना लगाइत अगा बढहे

लागलै । दोसर दिसनासे बाध सेहो आपन चालमे रसे रस अगा आबै लाग्लै । मेध सेहो बोले लागलै । हरिन यि सबके छोइरके आँइख कान मुइनके भगवान रोसे बैठ गेलै । उ कोनो चिजको परवाह नै कैरके आपन बच्चाके जलम देबे लाग्लै ।

तहै समयमे सिकारी अल्झपे हरिनके देकल्खै या ओकरमे निसाना लगाबे लागलै । दोसर दिसना बाघ सेहो टकुवा लगेने बैठल रहै । सिकरबा हरिनके मारैले येम लगेल्कै आ घोरीमे ओङगरी देल्कै । ठिक ओहै समयमे जोरसे बिजली छट्लकै या मेघ बोललै । सिकरबा मेधके गर्जनसे थरैक उठलै या आँइखमे बिजलीके इजोत चल्ते घोडी दव्या गेलै । बनुख जोरसे फुटलै । महज ओकर येम चुइक गेलै । बनुखके गोली हरिनके लगे दने ज्याके दोसर कता रहलहा बाधके टाङमे ज्याके लागलै । बाघ डोकिया उठलै । बाध के आवाज सुइनके डरसे सिकरबा भाइग गेलै । बाघ हो डोकियाइत डोकियाइत ओइसनासे चैल गेलै । बिजली छटके लागलै मेघ बाजै लागलै या पाइन सेहो परे लागलै । जेकर चल्ते बोनमे लागल आइग सेहो मुझ्त्या गेलै । यै किसिम से हरिनके जान बैच गेलै । हरिन आपन बच्चाके जलम देल्कै ।

लोको कखनो येहेन बरहमे चरहल रहैछै । ओकरा कोनो रास्ता नै भेटैत रहैछै । तै दुवारे कोनो भि समस्याके समाधान समय परिस्थितीके मुताबिक करनेसे फल निके हैछै । हरबड्याके हरिन कोनो भरा भागतियै त उ बच्चाके जलम दैले नैसकतियै या अपनो जान बच्याले सकतियै ।

स्रोत-स्व. भिखनी देवी (दादी) सबैया, सप्तरी ।

बोलीमे बल

-बुद्धसेन चौधरी

एक समयमे तराइ भु-भागमे एकटा राजा रहै । उ बहौत पराक्रमी या बहादुर रहै । ओकर ख्याति दुर दुर तैक रहै । ओकर लगजे जाइसे खाली हाथ नैआबै । सबके कुछने कुछ देवे करै । उ बहौत धर्मात्मा सेहो रहै । एक समयके बात चियै येहेन ख्याती सुइनके एकटा जोगी ओकर दरवारमे पुगलै या राजाके निक बेजा कहे लागलै । राजाके औरदाके बिषयमे बातचित करैत बतेबे लाग्लै । ओकर परिवारमेसे रजाके सबसे बेसी औरदा रहै । जोगी कहल्कै राजा साहेवके औरदा यै दरबारमे सबसे बेसी छै । यहाँ सबके क्रियाकरम आपन हाथसे करबै । यहाँके सामनेमे सबके मृत्यु हेतै । अतहेक सुनैत राजा रिससे आइग भ्या गेलै । कहल्कै यि केहेन जोगी छै अन्टे से सन्टे बाजैछै । येकरा जल्दी नजरके सामनेसे हटा । ओइ जोगियाके लठैत लग्याके दरबारसे बहार निकाइ देल्कै ।

जोगी कहै हम त साँचे बात कहलियै । ओकर भागमे त ओह्या लिखलछै । महज यि राजा हमरा कथिले माइर पिटके दरबारसे निकालल्कै । उ असमन्जसमे पैर गेलै । उ उदास मन ल्याके गनगन करैत आपन रस्ता चैल जाइछैलै । ओहै समयमे ओकरा एकटा दोसर जोगीसे भेट भेलै । दोसर जोगी पुछै छै कथी भेलौ बड मन उदास देखै चियौ ? उ कहलकै आइके दिन बहौत खराब छै । रजाके बड नाम सुनने रहियै । ज्याके सही बात बतेलियै त हमरा उल्टै दरबारसे निकाइल देल्कै । हम माने माइभ्फ राजाके दरबारमे गेल रहियै । ओकर भाग्य देखके औरदा बतेलियै बडा भाग्यमानी छै सबसे बेसी औरदा ओकरे छै । कहलियै यहाँ आपन हाथै सबके क्रिया करम करबै । त उ हमरा माइर पिटके दरबारसे बहार निकाइल देल्कै ।

दोसर जोगिया बातके बहौत गौडसे सुनल्के या कहल्कै । आब हम ओइ दरबारमे जाइ चियै । तु यहैसना रह हम घुइरके येबौ । दोसर जोगिया दरबारमे गेल संख फुकलक या राजाके दरसनले आग्रह करलक । राजाके मुड पैहनेसे खराब रहै । फिरभी धर्मात्मा हैके चल्तै उ जोगीके भेटैले बोलेल्कै । जोगी बहौत सावधानी

पुर्वक राजाके देखल्कै ओकर मनके बुझ्हल्कै या ओकर बखान करे लागलै । राजा प्रसन्न भेलै । तेकर बाद राजा घरमे रहलहा सब के जल्म कुण्डलीके बिषयमे बात करे लागलै । सबके आफन आपन भाग्य देखल्कै । बादमे जब राजाके पाल येलै त कहल्कै महराज यहाँ त बहौत भाग्यमानी चियै । यै दरबारमे सबसे निक कुण्डली यहैंके छै । दरबारमे जतहेक लोकछै ओइ मेसे सबसे बेसी पराक्रमी या भाग्यमानी यहै चियै । यहाँ के औरदा सब कोइसे बेसी छै । यहाँ दोसर सबसे बेसी यि संसार देखबै या सुख भोगबै । राजपाट चलेबै । राजा खुसीसे पुलकित भ्या गेलै । कुछ दोस छै तेकरा काटैले हम कुछ उपाइयो यहाँके बत्यादेबै । तेकर पालनसे उसब सेहो दुर भ्याजेतै ।

जोगीके सत्कार पुर्वक भोजन करेल्कै या बहौत किसिमके दान दैछना, हिरा जवाहरात द्याके बिदा करल्कै । पहौनका जोगी पेरामे गाछ तरमे असियाल रहै । जे यि जोगिया कथिले नै अखने तैक येलै । येकरा बड मारपित करल्कै कि केना ?सायद येकरा जेलमे ढोइक देल्कै । आब साँझहो भ्या गेलै । हम जाइचियै आब यि नै येतै । उ जब जाइले उठलै त देखल्कै जोगिया चैल आबैछै । दैछनाके भार बोकनेछै । लग मे येलै भार राखलकै । या पुछलकै, हमरा त माइर पिटके पठेलकै तोरा बड मानदान करलकौ । कि बात चियै ? दोसर जोगिया जवाफ देलकै । तोहे जे देखने रही हमहु ओकर भागमे ओह्या देखलियै । तोहै जे कहलिही हमहु ओकरा स्याहा कहलियै । महज कहैके तरिका दोसर अपनेलियै । हम येह्याबात सिधा नै कैहके घुम्याके कहलियै । निक सबदसबके चयन करलियै । औरदेटा बतेलियाके कहिया मोरतैसेन कहलियै । जतहेक जरुरी रहै ओतहेक बाचलियै । ओइसे उ बड खुस भेलै या हमरा भोजन करेल्कै । दान दैछना बहौत देल्कै । चल दुनुगोरे रजाके देलहा दैछना बाँइट लेबै । उसब दैछना बाँटलक या आपन आपन रस्ता लागल ।

खिसा खतम ।

स्रोत- अनुप लाल चौधरी (प्र.अ. आधारभुत विद्यालय बकधुवा, सप्तरी) ।

भरमके बिख

–बुद्धसेन चौधरी

एक समयमे थारु गाँममे बिलट माइझ नामके एकटा बहौत इमान्दार या निडर लोक रहै छेलै । उ गाँम घरमे करैबला करिब करिब सैव काममे पारंगत रहै । ओकरा सब चिजके लुइर रहै । कामके खातिर उ कैहयो कैहयो मदैतोमे जाइछेलै । पैहने गामघरमे बेसीसे बेसी फुसके घर रहै । उ आपन घरके गौरा खरसे छारैके चलन छेलै । कोइ कोइ लेरुवोसे छारै छेलै । चैत बैसाखके मैहना रहै । यै समयमे थारु समुदायमे घर उछाहैके चलनछै ।

बिलट आपन घर गौरा खरसे छारैने रहै । घर उछाहलकै त ठाठमे मुस जनेतने भुँडरा करने रहै । तबो उ उछाहल्कै । ठाठके जतहेक सकल्कै चिकन करल्कै । दोसर दिन एकटा दुइटा जनो लेल्कै । खरके निकसे पुलियेल्कै । बति या डोइर सेहो तैयार करल्कै । छाइन्हमे चढलै या ओछसे घर छारैके सुरु करलकै । ठाठके खौ मोटगौरा खरसे छारैत चैल गेलै । ओइ दिन उ अधहा घर मात्रै छारैले सकल्कै । मुसके घर उजरलाके चल्तै मुस अनेवोने दौरेत रहै । आन दिन उ फेरसे घर छारैले चारमे चढलै । जाब उ छारैत काल बतिमे बन्हन दैले औंगरी फसेलकै त औकरा औंगरीमे तरसे कुछो धैर लेल्कै । कमसम बिसबिसेलै । कनहिक लहुवो बहलै । उ तेकर कोनो वास्ता नै करलकै या कहल्कै, मुस हमरा धरैये । ओकर दिमागमे मुस रहै । कहल्कै सारमुस कतहेक धरबिही धर । कुछ कर हम त नै छोडैबला चियै । ओंगरी मे कनहिक लहु सेहो निकललै । उ औङगरीके लहु मुहसे चुइसके फेक देल्कै । साँझ तैकमे उ पुरा घर छाइर लेल्कै ।

थौर (थारु) सबके घर कम्ति मे ५ बछर नेत निकसे राखैछै त ओहौ से बेसी चलैछै । साले साल छारैले नै परैछै । करिब ६ बछर के बाद घर कोनो कोनो ठाम चुबे लागलै । उ फेरसे घरके छारैके बिचार करलक । घरके फेरसे उछाहैके बिचार केल्कै ।

पाँच बछर पैहने भेल रहै कि, जे उ घर छारैत रहै त मुसके खेहारैत खेहारैत गौहमन साँप सेहो येल रहे जे कि ठाठ या उपरसे ओछेलहा गौरा खर को बिच मे ढुइकके घोसरल छेलै । बनहन दैत काल बिलट माइछके टाँगके तरमे उ साँप पैरके दब्या गेलरहै । साँप भागैले नैसकल्कै या बन्हन दैतकाल उ बनहनोसे बन्हल गेलै । उपरसे बनहन दैले जब बिलट औंङरी फंसेल्कै त साँप ओकर औङरीमे धरइ लेल्कै । उ मुस धरलकै कैहके ओतहेक मतलब नै राइख के मुहसे लहु चुइसके फेक देने रहै ।

पाँच बछरके बाद जाव उ ओइ ठाममे गेलै या खरके उछाहल्कै त देखैछै गोहमन साँप बनहनमे बान्हल सुख्याके हैठी भ्या गेलछै । ओकर दिमागमे तुरन्तै इ बात येलै या कहल्कै आरे बहानचौद १ हम त मुस कहै छेलियै । हमरा त गौहमन साँप धरने रहै । हैट हमरा त गोहमन धरने रहै । हमरा त बिख लहैर गेल छेलै । उ मानसिक रुपसे अतहेक डैर गेलै या छाइन्हसे निचा उतरलै । गौहमन साँप या बिखके भरममे परलै । उ पैहने साँप धरलहा लोकके मरैत देखने रहै । उ समैझके और डर्या गेलै । उ अपनाके रसेरस देहमे बिख चरहल जाइछै महसुस करे लागलै । पुरा नरभस भ्या गेलै । घरके लोक कतबहोक सम्झाबै त उ एकेटा बात कहै, हमरा गोहमन धरने रहै । घरके लोक धामी ओझाके बोलाबैले गेलै । जा धामी येतै, येतै । ताकैकमे उ बाजैयोले छोइर देने रहै । खाली ओतबेहेक बरबराबे जे हमरा गौहमन धरने रहै । हमरा बिख लाइग ग्याल । तातैक उ हमरा गोहमन धरलकै, कहैत कहैत आपन प्रानके त्याग देल्कै । घामी ओझा येलै ओकरा नारी जाँचलकै त अकोटाने भेटलै । उ प्रान त्याग देने रहै । धामीसब कुछोने करैले सकलकै । उ भरममे पैरके आपन जान गम्या लेने रहै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- स्व. ढोढाई चौधरी (न्याँक), सबैया सप्तरी ।

भैगना देबता समान

-बुद्धसेन चौधरी

गाउँ समाजमे रहल किबदन्तीके मुताबिक पुरापूर्वकालमे हाल सप्तरी जिल्लाके सम्भुनाथ नगरपालिका बडा नं. २ कनकपट्टी गामसे उत्तर चुडे पहाडमे एकटा दरबार रहै । ओकर अबसेस अखैनोयो छेबे करै । ओकर सिमा सप्तरीके निचला भाग तैक रहै । सादी बियाहके चल्ते एक दोसरसे जोरल रहै । किल्ला जखा रहै जैसना जाइले हतपत आसाननै रहै ।

ओइ राजाके एकटा बहैनके बियाह दछिनभर के कोनो गाममे भेल रहै । बहैनके एकटा बहौत होनहार बेटा रहै । बहैनके घरबाला मैर गेल रहै तैदुवारे ओकर बेटा आपन गामसे बेसी ममहरीयेमे रहै छेलै । ओकर नाम सेमनाथ रहै । भर्खर ५ बछरके भेल रहै । ममहरीमे ममारमामी सङे रहै ।

धियापुता कनियेटामे बड चंचल हैछै । उ जखनु जे भेटैछै । फाँइक लैछै आ खेलाइले चैल जाइछै । सबकोइ ओकरा बड मामत करैत रहै । एक दिनके बात चियै ओकर मामी चुइल्हमे भुजा भुजैत रहै । एक घानी झाँकने रहै । भुजा तबले रहै । कोनेसे सेमनाथ दौरल येलै या एक मुठी भुजा ल्याके भाइग गेलै । टोलके धियापुता संगे खेलाइले चैल गेलै । ओकर परिवार जेरगरे छैलै । मामी फेरसे दोसर धानी भुजा सुपामे झाँकलकै । सेमनाथ फेर दौरल येलै या भुजा ल्याके भाइग गेलै । मामी बार बार कहै । यि भुजाके ऐठ नै कर । तबौ उ आबै या ल्याके भाइग जाइ । मामी कहै कोनो भडियामे ल्याके खो त उ मानबेने करै । ओने मामीके कखनो चुइल्हमे आँच मुझह्त्या जाइ त फेरसे फुइकके पजारै परै । सेमनाथके बार बार ओहिनङ करनेसे मामीके रिस उठलै । जाब सेमनाथ फेरसे आइबके भुजा लेबे लागलै त मामी ओकरा पकरैले कोसिस करल्कै । पकरैले नै सकलकै त भुजा भुजैबला लरनासे एक लरना मारल्कै ।

ओकर चल्तै सेमनाथ रुइस गेलै । उ केकरो नै कैहके ओइसनासे भाइग गेलै । बोन झारके पेरा कुछो नै बुझल्कै । उ लरैत लरैत आपन घर जाइले निचा झरलै । उ सोंचै घर जबै त मैया मारत । ओकरा आपन घरके पेराने थाह रहै । महज चनरभोगा पहाडसे निचा जरुर भेलै । उ अखैन कनकपट्टी गामसे उत्तरमे रहलहा चौकिया धाँतीमे आइबके रुइक गेलै । रजा आपन भैनगाके ताकैले नोकर चाकरके पठेल्कै । महज कतौने ओकर पत्ता चललै । अने महताइरके सेहो

उ बातके पत्ता चललै । उ आपन घरोने येल रहै । सब कोइ चारू भर फैल गेलै । जने तने ताके लागलै । ताकैत ताकैत थाइक गेलै महज सेमनाथके कुछो पत्ता नै चललै ।

सेमनाथ चौकिया घाँतीमे जैसे कोइने देखे से हिसाबसे आपन दैविक सक्तिसे पाखनके रुप ल्या लेलैकै या ओहैसना रैहगेलै । मैया या ममहर सगरे ताकल्कै महज सेमनाथ नै भेटलै ।

महताइर या ममहरके दुख देखके सेमनाथ ओइसबके जानकारी दैले बिचार केल्कै । गाम घरके लोक सैब दिनलखा ओहौ दिन चौकिया धाँतीमे गाइमाल चराइले येलै । पहौनका गैबार भैसबार सब त काँखमे दबिया भिरने रहै । उ सब मेसे, एक गोरे चौकिया घाँतीमे ओइ पाखनके देखल्कै । सोंचल्कै यैमे दबिया पिजेबै त बड चोक हेतै । उ आपन दबिया निकाइलके । पिजाबे लागलै । दबिया पिजाबैतकाल ओइ खमहासे खुन निकले लागलै । उ डरके मारे ओइसनासे भागलै या आपनसे बडका लोकके यि बात कहल्कै । उ विस्वास त नै करल्कै महज ज्याके देखलकै त साँचे एकटा खमहा छेलै ।

उ सब ओकरा ओहैसना छोइरके गाइमालके ल्याके घर येलै । यि बात गाँमके लोकसबके सेहो मालुम भेलै । पैहने त मौजे, प्रगनाके चलन रहै । ओकरो एकटा मुखिया है छेलै । माइन्जन, जेबार सेहो हैछेलै ।

राइतमे माइन्जनके सपनामे हम सेमनाथ चियै । हमरा तोरौरके मिलके जगह देबही त सबके निक हेतौ । माइन्जन तुरन्तै गोराइतके बोल्याके बैठकी कहैले हुकुम देल्कै । बैठकीमे आपन सपनाके बात सबके सामनेमे राखल्कै । सबकोइ एके स्वरमे चल स्थापना करबै । सेह्या निर्नय कैरकै दलबल सहैत सेमनाथके लाबैले चैल गेलै ।

चौकिया घाँतीमे गेलै त देखैछै साँचे सपनामे जे कहने रहै स्याहा साक्षात छै । सबकोइ मिलके जय जयकार सहैत सेमनाथके गरी बरदमे लाघहल्कै । गरी जोरलकै त बरद ओकरा तानैने सकै । फेर बल करलकै त कनहिक दुर बरद बहलै । दोसर ओहौसे बलगर बरदके लाबलकै या तानेके प्रयास करल्कै । तबौ नै सकलै । केहनो बलगर बरद लाबै त कनहीक घुसकै या कखनौ लधहा टुइट जाइ त कलैने टुइट जाइ । प्रयास करैत करैत साँझ पैर गेलै । अन्तमे फेरसे प्रयास करल्कै त गरिके पहिये टुइट गेलै । सबकोई बिन्ती भाव केरकै आपन आपन घर चैल येलै ।

माइन्जन बहौत चिन्तित भ्या गेलै । सोंचैत सोचैत राइत सुतलै त सेमनाथ फेरसे सपनामे दरसन द्याके कहल्कै । हम त कोनो बडका लोक नै चियै ने कोनो कनिया चिहै जे तोरौरके हमरा ओइ हिसाबसे ल्या जाइचिही । हमरा मझौवा प्रगनामे जगह दहै । ताबे हम जेबौ ।

ताकैक ताकैत सेमनाथके ममारमामी या महताइर सेहो चैल येलै । आपन गल्ती स्विकार करल्कै या सेमनाथके मनाइके प्रयास करल्कै । सब गोरे कल जोइरके बिन्ती करल्कै । धामीसब पुजा पाठ सेहो करै । छागर पाँठीके बोइल सेहो देबे लागलै । तहै समयमे एकटा धामीके देहमे सेमनाथ प्रकट भेलै या कहलकै । रे वौवासब आब हम मनुसके रुपमे नैयेवौ । हम आब भैगनारभैगनी रुपमे सगठै रहबौ । हमरा धियापुताके खेलाइबला गरीमे ल्याचल । तुरन्तै धियापुताके खेलाइबला तिन पहिया गरी लाबलकै । सेमनाथके ओइमे चढहेल्कै । असानीसे चढलै । दुइ गोरे मिलकै तानलकै त गरी गुरकैत चले लागलै । सबकोइ जय जय करैत नारा लगायत पछा पछा ज्या लागलै ।

जाब सेमनाथ अखने रहलहा जगह सम्भुनाथ नगरपालिका वडा नं। ३ लोक मार्गसे ३०० मिटर दछिन पुगलै त गरी रुइक गेलै । उ ओहैसना रहैले चाहल्कै । माइन्जनके अनुरोधमे धामीसब पुजा करल्कै या सेमनाथके ओहैसना स्थापित करल्कै । संजोगसे ओइ दिन थारु समुदायके लबका बछरके पहौनका पाबैन सिरुवा सेहो रहै ।

ओहै दिनसे थारु समुदायमे भैगनार भैगनीके सेमनाथके रुपमे माइनके टाँगमे गोर लागैछै । लात लागैले नै दैछै । जे अखैन तैक थारु समुदायमे छेबे करै । बुढपुरान लोकसब अखैनियो कहैछै भेगनाके मारबिही र हाथ काँपतौ ।

अखने मन्दिर बन्याल ग्यालछै । पाछे पाछै हिन्दुकरनके प्रभावमे पैरके सेमनाथरसेमुनाथ से अखने सम्भुनाथ बनलछै । ओहै नामसे नगरपालिकाके नाम सेहो रहलछै । ओइसना बैसाख १ गतेसे मैहना दिन तैक मेला लगैछै । जेकरा मनकौबला रहैछै से सब पुजा त करबै करैछै । बोइल सेहो चढहाबैछै । खिस्सा खतम ।

स्रोत- जगदेव चौधरी (बुद्धिजिबी थारु समुदायके अगुवा, थारु नाचके न्याँक) डंगराही, सप्तरी ।

रज बुइधसे चोर बुइध भारी

-बुद्धसेन चौधरी

बहौत पैहनेका बात चियै । एकटा गाँममे एकटा राजा रहै । ओकर नाम भुसन रहै । ओकर राजपाट निकेसे चलै । कोनो किसिमके चोरी डकैती नैहेबे । राजमे सबगोरे खुस रहै । रजाके छोट दुइ भाइ सेहो रहै तेकर नाम किसन या देबन रहै । किसन जेठ रहै त देबन छोट रहै । किसन कनियेटासे कनहिक चोरनराह लखा रहै । ओकरा कोनो चिज मन परै त उ माइङले । नैदै त परोछोमे उठ्याके ल्या जाइ । गामके लोकसब जाइनतो भि ओकरा कुछो नैकहै कियाक त उसब बुझहै यि धियापुता छै या रजाके भाइ सेहो चियै । कहबो करबै त रजा नैमानतै ।

किसन देबन दुनुभाइ जब ढेडवा भेलै । रजा भाइसबके पढहाबैके इन्तजाम करल्कै । हबैलियेमे गुरुके बोलाबल गेलै या ओइसबके निकसे पढाई चालु भेलै । छोटका देबन कनहिक चनसगर छेलै । गुरुजीके पढहेलहा बातचितसबमे उ ध्यान दै आ सबचिज बुझने जाइ । किसन कनहिक भदौस रहै । उ कोनो बात एक दाइब त बुझबेने करै । नैहै त भाइसे चोरी कैरके लिखलै । दुनुभाइमे यै बातले हरदम टिसाटिसी हेबे । पढाइ खतम भेलाके बादोभी किसन चोरी करैले नैछोरल्कै । कतौ ने कतो बिदैते करे लागलै । रजाके भाइ चियै कैहके डरसे कोइने कुछो कहैले सकै ।

एक कान, दुइ कान हैत यि बात रजोके कानमे चैल गेलै । रजा ओकरा समझेल्कै या बुझहेल्कै तबो ओकर चाइल बाइनमे कोनो कमी नै येलै । छोटका भाइ देबनसे सेहो सल्लाह करल्कै महज कोनो उपलब्धि नै भ्या सकलै । गुरुसे सेहो सल्लाह करल्कै महज ओहौसे कोनो उपलब्धि नैभेलै । अन्तमे रजा एकटा महात्मासे सल्लाह करल्कै । उ महात्मा कहल्कै येकरा डाँटनेसे या मारने पिटनेसे नै हेतै । कनियेटासे येकरा आदत लागलछै । ओकर कारन पत्ता लगाइले परतै । वादमे कि पत्ता चललै कि उ मैझला भाइ हैके चल्तै बहौत किसिमके पारिवारिक सँस्कारमे भाग लैले नै पाबलाके चल्तै ओकर दिमागमे मानसिक असर करने

रहै । उ जे करैले या लैले चाहै से नै हैत जबरजस्ती कैरके, से काम करबेटा करै ।

येकरा हटाइके लेल रजा आपन छोटका भाइसे सल्लाह क्याके ओकरा राजके कोनो सम्मानित पदमे नियुक्ती करल्कै । रसे रस उ अपनाके जिम्मेबारी महसुस करे लागलै या ओकर आदतमे कमि हैत चैल गेलै । उ राज्यके महत्वपुर्न निर्नयके हिस्सा हेबे लागलै । सब चिज फेरके निके कुसले चले लागलै ।

कुछ समयके बाद राज्यमे फेरसे चोरीके घटनासब हेबे लागलै । रजा असमन्जसमे पैर गेलै येहेन काम के क्या रहलछै । रजाके दिमासे बहार बहारके अवस्थामे सेहो चोरी हेबे लागलै । यै बिसयमे उ आपन भाइ किसनसे सल्लाह करलकै । किसन कहलकै उ त चोरके खातिर साधारन बात चियै । रज बुइधसे चोर बुइध भारी हैछै । फेर कोनो ठाम चोरी है या किसनसे पुछै त कहै उ त चोरके बमा हाथके खेल चियै ।

रजाके दिमागेने काम करै । उ भाइ देवनसे सल्लाह क्याके चोरी केनाखै हैछै । किसनसे जानैले चाहल्कै या कहल्कै । आइ हमर सुतैबला घरसे तोहे टेबुलमे राखल घडी चोरी कैरके ल्या जेबही त हम मानबो । किसन कहलकै हेतै । रजा टेबुलके घडीके एकटा मजगुत घगासे बाइन्हके । उ घगा के आपन हाथमे सेहो बान्हल्कै या नैजाइगके रहै । २ बजे तैक उ जागलै रहै तेकरबाद ओकरा बड निन लागलै उ रसे रस सुइत गेलै । भाइ किसन येलै या देखलकै । घडी त मजबुत धगा दने भैयाके हाथमे बान्हल छै । उ एकट कैची लाबलकै या धगाके रसे रस काइट देल्कै या घडी ल्याके आपन कक्षमे ज्याके सुइत रहलै । अने रजा सपनामे घडीके चोरी हैत देखल्कै । अकचक्या उठलै । ताकैछै त घडी नैछै । तातैक भिन्सर भ्या गेल रहै । दौरल ज्याके भाइ किसनके घरमे देखैछै त उ मज्जासे सुतल छै या घडी ओइसना राखल छै ।

रजा आस्चर्यमे पैर गेलै । उ फेर किसनके बोलेकै या कहलकै । यै मकामके उपरका तलामे सोनाके कनकी तिजोरीछै । ओकरा तु चोर्या लेबही त हम मानबौ । किसन कहल्कै हेतै । ओइ मकानमे चढहैले भितरे दने पैठी रहै । कोनो भरासे चढहैले जगह नैरहै । नोकर चाकरसे कहल्कै, जे आइ निकसे सुतहै । तला निकसे लगाबहे कोइ भितर बहार ने करै । रजा ज्याके आरामसे सुइत

रहलै । जब बडका राइत भेलै या किसन देखलकै भैया सुइत गेलै त उ उपरका तल्लामे जाइले चाहल्कै । चारु भरसे रजा तला लग्याके, चाबही सिरमाके तरमे ल्याके सुतल रहै । मकानमे चढहैबला कोनो ठाम नै रहै । किसन आपन धोती खोललक आ ओकरा पाइनमे भिजेलक या पाइन गाइर देलक । घोती तितलै रहै । एक ओर पकरलक या दोसर ओरके जोरके उपर फेकलक । घोती भिजलाके चल्ते उ मकामके पकैरलेल्कै । किसन तानलकै त नै तानल गेलै । उ ओह्या पकैरके उपर गेलै या तिजोरी ल्याके फेरसे निचा भेलै । कुछ समयबाद घोती कनहिक सुखल लखा भेलै त ओकरा ताइनके ज्याके आपन घरमे मज्जासे सुइत रहलै ।

रजा भिनसरके उठलै तकिया तरसे चाहबी निकालल्कै । केबारके चाबही खोलल्कै । उपरमे ज्याके ताकलकै त तिजोरी नैछै । फेरसे दौरल भ्याके कक्षमे जाइछै त देखैछै तिजोरी ओहैसना परलछै । रजा बहौत चिन्तित भ्या गेलै । यि केना सम्भब भेलै । नोकर चाकर सबके पुछल्कै त कहलकै कोइयो ने बहार गेलै ने कोइयो भितर येलै । कोइयोने कोनो पैठी नै लाबल्कै ।

रजाके चित्त तबोने बुझलै । उ भाइ किसनके फेरसे जाँचैले चाहल्कै । कहल्कै आई तु हमर घरसे थारी चोर्याके ल्या जेबही त हम मानबौ । रजा थारीमे उटुम टुटुम पाइन देलकै या आपन सिरमा लगके देबुलमे राइख देलकै । टेबुल लग आबैबला पेरामे तेल सेहो हर्या देल्कै या सुइत रहलै । जब रजा सुतलै त किसन येलै आ देखैछै। थारीमे उटुमटुटुम पाइनछै। पेरोमे तेल सेहो देनेछै। उ भतनिनहा घर गलै आ एक बाटी छौर लाबल्कै । छौर केबारे लगसे खासाइत खसाइत येलै । लगमे येलै त रसे रस ढिकाबला छौर थारीमे खसाइत गेलै । छोरसे थारीके पाइन सोइक लेल्कै । ताब उ थारी ल्याके चैल गेलै ।

अनगुतके रजा उठैछै त देखैछै थारी चोरी भ्या गेल्छै । रजा त गमल्कै कोइ थारीके छुबतै त पाइन हरेतै आ हम जाइग जेबै । महज सेनै भेलै । घरमे छौरो बहौत छिटल्छै । उ जाइन गेलै किसन बहौत चलाखछै । भाइके बोलेलकै या कहलकै । जोरे जो हम माइन गेलियौ तोहर बुइधके । रज बुइधमे चोर बुइध अगा हैछै ।आब यि बुइधके तोंहे राजपाट सम्हारैले लगा ।

स्रोत- मिस्रिदास मण्डल, सबैया सप्तरी ।

दलसिंह धामी

-बुद्धसेन चौधरी

आइसे बहौत पहिनेके बात चियै। हालके सिरहा जिल्लाके बेतहा गाममे थारुकुलके एकटा गरिब परिवारमे दलसिंह धामीके जलम भेलरहै। केकरो मालुम नै रहै जे यि एकटा अलौकिक बच्चा चियै। मालुमो हेते केनङ ? वोहो त दोसरे धियापुता नहाइत बढहैत रहै। वोकर बाप महताइर वोकर नाम दलसिंह राखने रहै। वोइ समयमे ओइ गाम आसपासमे चारू भर घनघोर बोन रहै। दिन देखारे बाघ, भौल, गोंगी, हाथी नहाइत जानलेवा जानबर सब बोनमे दिन हदारे बुवाइल फिरै। दलसिंह ओहै बोनमे सब दिन गाइमाल चराइत चराइत ढेरबासे जबान भेलै। ओइ घनघोर बोनमे लहानसे लगभग पांच किलोमीटर उत्तरमे पकैरियागढमे एकटा पुरनका बोन रहै, जैठाम सैब दिन निसीभाग राइत मे देवता सब के बैठकी हैछेलै। ओइ ठाममे अखैनियो छेबे करै। ओइसना लबका बछरके अवसरमे धार्मिक मेला लागैछै। दलसिंह अलौकिक पुरुष अर्थात् देव पुरुष रहै। दलसिंहके लोकके रुपमे वै बैठकीमे सहभागी हैके छुट रहै। तहैसे वेहेन घनघोर बोनमे जानलेवा जानबर सब हैतो भि दलसिंह सब दिन निसिभाग राइतमे घरसे देवता सबके बैठकी मे सामिल हैले जाय। दलसिंहके आत्मसुधी तथा नित्यदिन के आचार विचार आ व्यवहारसे सब देवतागन बहौत खुसी भ्याके ओकरा समाज सेवा दुतके रुपमे सब गुनसे सम्पन्न करैत जाय। जै कारन दलसिंह पछा धामीके रुपमे समाजमे और प्रख्यात भ्यागेलै। कहै छै ओइ गढमे कोनो प्रतिभासाली राजा आपन अंरक्षक सलहेस या रानीके साथ रहैछेलै। सैब दलसिंहके धामी कैहके बोलाइत रहै।

थारु संस्कृति या परम्परा मुताबिक दलसिंहके कनियेटामे देखासुनी, घरदेख या बियाह भ्यागेल रहै। बाद मे दलसिंह जबान भ्या गेलै आ ताब वोकर बाप-महताइर आपन बेटा दलसिंहके दुरागमन क्या देल्कै। सैब बाप-महताइर के यि चाहना रहैछै जे हमर बेटापुतौह निकसे एकसाथ रहै, सुते बैठे आ हमरा नाइत नातिन खेलाबेके मौका दे। यहै सोंचमे ओकर दुरागमन करल्कै या एकठाम सुतैले घर सेहो बग्या देल्कै। महज दलसिंह संसारिक बनहनसे अर्थात् बौहके मोहमायामे

फसैले नै चाहै । ओकर दिमागमे हटोघरी एकेटा बात रहै जे कखैन राइत हेतै, सब घर(परिवार सुइत जेतै और हम पकैरिया गढ जायले पाबबै ।

दलसिंह पकैरिया गढ ज्याके देबता सबके साथ असिम सुखके अनुभव करैत रहै । वोकरा लागैत रहै कि सायद हमर जलम यहै कामले भेल छै । दोसर दिस वोकर बौहके असगरे राइतमे छटपटी लागैत रहै । उ दिन भैर मन नै लाइगतो भि खुसी या हँसीके साथ समय काइट लै लेकिन राइत वोकरले पहाड भ्या जाय । भोइर ताइत घरवलासे असियाल असियाल कखनु दिन भ्या जाइ थाहे ने पाबै । भर्खरके जवाइन छेलै । कखनो वोकर मनमे, हमर मुन्सा कोनो छौरी(मौगी संगे फाँसल छै कैहके संका बरहै लागै । यि बात जानैके बिचार हैतो उ दिनभैर दलसिंहके पुछैले नै सकै । वोकरा हैत रहै कि दिन मे मुन्सा से बाजबबै त लोक देख ल्यात या कथी कहत ? तकैनका चलने ओइहनं रहै आपनो घरबला घरवालीसे बालैले मौकाके ताके परै । उ मने मन राइतमे मुन्सा कतै जाइछै ? बिचार करैले लागै जे बात दलसिंहके नै मालुम रहै । सैब दिन नहाइत दलसिंह भात ख्याके साँझके बसघरामे लोक सब संगे गपसप करैले जाय । जब राइतके दोसर पहर है या सब कोइयो परिवारमे सुइत जाय त उ उइठके घरसे चैल दै । यि क्रियाकलाप सब राइत वोकर बौह घोसैरके देखैत रहै । दलसिंह सैब दिन बोनके पेरा पकैरके उत्तर भर चैल जाय । एक राइत, घरवालाके यि कृयाकलाप पता लगाबैले दलसिंहके बौह वोकर पछा लाइग गेलै । आगु आगु दलसिंह आ पाछु पाछु वोकर बौह जाय । वोकर बौह ४/५ लगा पछे रहै जै कारन वै घनघोर बोन मे दलसिंहके मालुन नै हे जे हमर पाछु कोइ आबै छै । दलसिंह अगा अगा लरे त ओकर बोह पछा पछा दरबर दै । ओकर बौह अदम्य सहास बोइकके वेहेन निसिभाग राइतमे, आङ सिरिङ हैबला जनाबर रहैछै जाइनतो भि डर पचाइत डेग बरहेने घरवालाके पाछु चलै । दुनु आपन आपन उद्देस्य पुरा करैके फेराकमे पेरामे डेग बरहाइत चैल जाइत रहै ।

एक दुइ घन्टाके बाद उ घनघोर बोन पार करैत दलसिंह पोकैरिया गढमे पुइग गेलै । अने वोकर बौह ४/५ लगा दुरे झारके तरमे घोसैरके सैब तमासा देखै लागैछै । चिरै चुटकैन लहा डेमन लागल अप्सरा या देबी देबाके मेधसे झरैत देखै । सैब मुहसे इजोत निकलैत देखे । ओकरा सैब चिज सपना जखा लागै

लागलै । दलसिंह बैठकमे पुइगते बैठकके रजा कह्ल्कै हौ धामी आइ तोहे केकरा ल्याके येल चहक ? आइ तोरा आबैले देरी भेलौ दलसिंह यि बात सुइनके चकित भ्या गेलै । नै महराज हमर संङे कहाँ कोइयो येलछै । दोसर बात हम सैब दिन येह्या समयमे अपने सबके सेबामे आबै चियै । ताब फेन रजा कहल्कै हौ धामी तोहे आपन बाटमे ज्याके देखहक त सैब चिज बुइझ लेबहक । यि सैब सुइनके झखरा तरमे बैठल वोकर बौहके डर ढुइक जाइछै । आइ ओकर आँइख खुलैछै जे ओकर घरबला देब पुरुष चियै । दलसिंह झौखरा तरमे आपन मौगीके थर थर कापैत देख पुछल्कै- तुँ हमर पछा पछा कथिले येलही ? ताब मौगी आपन सैब बृतान्त सुनाबैछै । अतहेक बात सुनैत घामीके लागैछै हमर सैब क्याल ध्याल नास भ्या गेलै । उ दौरल बैठकमे ज्याके बौहके तरफसे माफी मागैछै । ओकर सैब बात बुइझ रजा कहल्कै-आब तु असगरे नै रहलिही । आपन बारी फुलबारी देख । जो तु लोकके भलाइ करहे । हम बचन दैचियौ हम सब तोहर साथ चियौ । अतेक बात सुनैत आइखसे लोर पोछैत धामी आपन बौहके साथ घर दिसन बिदा भ्यागेलै ।

आब उ आपन घर ब्यबहारके काममे बेसी मन देबै लागलै । गरिबके कारन बकरा एकेटा बरद रहै । एकटा बरद ल्याके खैतमे हर जोतैले चैल देल्कै । लोक सब ओकरा देखके आसचरज मानैत गिजारे लाग्कै आ कहै दलसिंह बौहके आइबते पागल भ्यागेलै । एकेटा बरदसे हर जोतैले चैल दैनेछै । मगर वोकर दैबिक सक्तिके बारेमे ककरो कि थाह ? दलसिंह खेतमे हर राखैते बोनसे एकटा बाध गर्जैत वोकर लाग येलै । बाघ के देख्के सौसे चौरीके लोकमे कोलाहल मैचके जे जने छेलै ओने गर लागइ गेलै आ भाइग गेलै । अने लोक सब सोचै जे दलसिंह नै भागै सकलहेतै तैसे वोकरा बाध ख्या लेने हेतै । महज से नै भ्याके उ बमा कात बरद या देहना कात बाघके पालोमे जोइरके हर जोते लाग्लै । यि दलसिंहके पहौनका चमत्कार छेलै । यि बात जाइनतै लोक सब सेहो वोकरा देब पुरुष मानैत धामीके पदबी द्या देल्कै । जखनी दलसिंह हर जोते जाय या बोनसे बाध आबै त सैबके हर खैस जाय । तैदुवारे सैब कोइ धामीसे बिन्ति कैल्कै - हौ धामी ! आब तु हर नै जोत ! हम सब मिल्के तोहर खेत उठ्या देबौ जो तोहे आब दुनियाँके भलाइ करहे ! यि बात दलसिंह माइन लैल्कै । गमघरमे केकरो कुछो हैत धामी ज्याके ठिक क्या दै ।

विधिके लिखल, एक साल रौदी भ्यागेलै । दलसिंह जिमिदारके जमिन जौतैत रहै । रौदीके कारन उब्जा नै भेलै या जिमिन्दारके तिरो दलसिंह तिरैले नै सकल्कै । तब जिमिदार हाथीमे चैढके तिरो उठाबैलै दलसिंहके घर येलै या दलसिंहके कहल्कै धान ला नेत हर(बरद खोइलके ल्या जेबौ । दलसिंहके पास तिरो तिरैके कोनो उपाय नै रहै । दलसिंह जिमिदारके कहल्कै मालिक हमरा त अखनी कथियो नेछै जे हम अपनेके तिरो देब । जमिन्दार नै मानैवला भेलै या कहल्कै तोहर बरद कोने छै हम वह्या ल्या जबै । दलसिंह गाहली देख्या देल्कै । जाब जमिनदार गाहली मे बरद खौलैले गेलै त घसार मे बाघ बान्हल । देखते मातैर ओकर होस हबास उइरगेलै या उ धोती मे मुइतते(२ वोईसनासे भाईग गेलै । तै दिन से जमिन्दार वोकरा कहियो धान नै मांगल्कै ।

अखैनियो कोसीसे कमला तैक दलसिंह धामीके सब कोइ मानैछै या धामी अखैनियो देबताके रुपमे भगताके देहमे प्रकट हैछै । कतहेक लोक त कौबला करने रहै छै आ ओकर मनसा पुरा हैछै त "धामी नाँच" करैछै जैमे भगता सब धामीके रुप मे स्तुती गान करैत दल देलहा धामीसे नेछलहा छागर(खसीके परीक्षा लियाबैछै या बोइल चढहाबैछै । दलसिंह धामी मोरलो पर अखैनियो गामसमाजके सेवामे अनवरत रुपसे लागलछै । अखैनियो दलसिंह धामके बंसावलीके सन्तान दरसंतान सब छेबे करै ।

दलसिंह धामीके नाममे अखैनियो गाम घरमे यि गित गिबते छै या ओकर पुजा कैरतेछै-

दलसिंह धामी, धामी बर भैल, बाध बरद हर जोतन गेल ।
बाम लेल बरद दाहिन लेल बाघ उतरे दछिने धामी धैलन चास ।
चास लगाय धामी हरखोली देल, चली गेलै धामी हरिन सिकार ।
हरिनो ने मारै धामी तितिरो ने मारै, बिछी बिछी मारै धामी मेजुर पुछार ।
मारिय काटिये धामी कैल कोरहार, छपन्न क्रोटी देव धामी दिहल जमाय ।
दलसिंह धामी थरुनिया के पुत, अलप बयस धामी सक्ति बहुत ।
भाखल सेबकजन दसो कलजोरी, सनमुख होई आहे धामी हेबु ने सहाय ।
"दोहाइ दलसिंह दामीके"

स्रोत- सौरभ कुमार चौधरी, कदमहा सप्तरी ।

फनकलाल आफनुनुलाल

-बुद्धसेन चौधरी

सप्तरी जिल्ला के दछिनी भुभाग लगभग नेपाल भारत सिमाना में एकटा गाँम छै। उ गाम पलहमानीके नाममे प्रख्यात छै। अखैन यि बोदे बरसाइन नगरपालिका वडा नं। मे परैछै। वोइ गाँमके नाम "काचन" चियै। यहै गाँम के धैन उ उर्वर धरती, वोकर माता पिता जे बेस किमती यि दुनु हिरा फनक लाल थारु या नुनु लाल थारुके जन्मेल्कै। फनकलाल के जलम बि।सं। १९७८ साल में भेलै त ननुलाल वि।सं।१९९० बरका भुमकौनके सालमे जनमल रहै। यि दुनु नाम, तै समयमे पहलमानी जगत में हलचल मच्या देनेरहै। कुसतीके इतिहासमे यै गामके बिरासत जतहेक समृद्ध छै वोतहेक और गामके नैछै। यैठनाके पढलो बिन पढलो सब एकहाथ कुसती खेलले रहैछै। अगर ककरो गर्दनमे अखरहाके माइट नै लागै त उ काचनके रहैवला नै। तैं यि कैहबी प्रचलित भेलै "पहलमान आ कुसती देखैले मन छौ त काचन चैलजो।" कहैछै बडे बडे नामी पहलमान के कुसती के बदान 'चुनौती' जब यैठामसे जाय त काचन गामके नाम सुइनके पेटके पाइन डोले लागै। यै कारनके मुल जैर रहै सबके पियरगर नाम "फनका आ ननुवा।" जकरा सियान त कोन बच्चा बच्चा तक जानै। कुस्तीके अपराजित हिरो दुइ "थारु हरकुलिस।" रहै। यि दुनु बेताज बादसाह जाबे तक रहलै पहलमानीके क्षेत्रमें एकक्षत्र राज कैल्कै। यै दुनुके पटकैवला त दुर बाँइह तक मोरैवला कोइने जन्माबे सकल्कै।

नेपाल सिमानाके अइपार आ वोइपार जैठना लरैले गेलै वोइठनासे विजयके झण्डा फहराइत येलै। वोकर विजयके डँकाके आवाज सबदिन बुलँद स्वरमे गुँजैत रहलै। "जय हो फनका ननुवा के धर पकर उठ्या के पटक।" यै दुनुके कुस्ती देखैवला वोहै गामके प्रत्यक्षदर्सी रन्जीत आ सुकल लेखी मेंसे 'सुकल चैटसारके गुरुजी बाबा' रहै। जे यै सबके छोट में खेलैनो रहै। वोकर अनुसार डँका बजायवला धोती मुरेठा बाइन्हके आ देहना टांग धरतीमे टेकके जब डँकामे चोट मारै तखैनिये उ दुनु मने मन अधहा लडाइ 'कुसती' जित लै। वोकर विपक्षी पहलमानके मनमे दहसत फैल्यादै। डँकाके वोकर हरेक चोट निरन्तर विपक्षीके मान मर्दन करै त येने विजयश्री ललकार दै छेलै। भयंकर डंकाके चोटसब हरेक गतिबिधीके जानकारी और दाउपेंचके अचुक संवाहक रहै। अनुकुल परिस्थिती आ

समयके यहेनसे बयान करै जकरा दुनु भाँइपलै । देरी नै लग्याके तहै घडी यहेन दाउ मारै प्रतिद्वन्दी चारुनालचित्त खसै । यै मामला में फनकासे ननुवाके दिमाग कुछ बेसी चलै । तैं यहा कारन रहै ननुवाके कुसती सब दिन बेदाग आ बहौत कम समय में फैरछाबै छेलै । कहैछै उपरकासे तरका दाउ वोकर सबसे चुस्त आ अचुक रहै । देखैयो वला कैहियो भरममे पैर जाय जे तरसे केनँखे उ जित गेलै रु आँइखके मटकमे काम तमाम करै ननुवा ।

आइसे करिब पचास बछरसे उपरे के बात हेतै । तै समयमे भारत बिहारके नारी खरहौरमे सुकराती छैंठ लगाइर कुसतीके बडका मेला लागै छेलै । नेपाल भारत दुनु देसके बडे बडे नम्बर पहलमान सब भिरन्त करैले ओइसना जम्मा है छेलै । कोइ औपचारीक बदान अनुसार लरै त कोइ तखुनवे आपन जोडीदार अजम्याके सोहो लरै । बजरा भिरै । प्रतिस्ठित और सुविख्यात पहलमानके हैसियतसे फनका आ ननुवा खलिफाके कदर वोइठना विसेस रुपसे है छेलै । समयके येहेन सँयोग मेलामे दछिन भरसे भारतके एकटा नामी पहलमान येल रहै । उ जाइतके नट रहै । ओहो आपन जगहमे नामी रहै । रहै त उ नट मगर ओहो बाघ से कम नै रहै । वोकर सपना छेलै हम फनकलालसे लरी आ मैदान माइरके आपन सिमामे सेर बैन जाइ । तैं उ तखनी चक्कर काटैत यहै फिराकमे लागल छेलै । कन्हुवाय, कन्हुवायके ताकै आ जोर जोरसे ललकारै । यि बात आयोजक समिती जब बुझहल्कै त फनकलालके बिधिबत कुसती लरैके अनुरोध करल्कै । फनकलाल तखनी सोच बिचार करे लागलै । नट, सानसिला कुछ बेसीये देखाबे लागलै । यि देखके ननुलालके नै रहल गेलै । उ तखैनिये यि बात आपन अग्रज गुरु फनकलाल के कहेल्कै । हम येकरसे पहलमानी लबै । हम लरबै । उ चकित भ्या गेलै । खन उ ननुवा दिसन ताकै त खन विसाल देहवला नट दिसन ताकै । आखिर पैहने ननुवे से पुछल्कै । तों सोइच बिचाइर के त बोलैचिही ? ननुवा तुरन्त जवाब देल्कै हँ दादा यै दाइब तोंहे नै जो हमरा भिरे दे । ले त ठीक छै जो आपन गाम समाजके लाज राखिहे कैह के पिठ ठोइक देल्कै ।

अने डँकामें पहौनके चोट परैत मातर नट सौरा बान्हवला देह देखाइत अखराहामे तैनात भ्या गेलै या उछरे कुदे लागलै । उ फनकासे लरैले चाहै छेलै महज ननुवा सामनेमे येलै तैसे भितरे भितर बेसिये गरम्या गेल रहै । चाहै हम ऐकरा कखनु चटनी बनेबै । उ बेसिये तापसिहर देख्याबे लागलै । देखैबलासब दुनु जोरीके देखके हाय सोचमे पैर गेलै । एक दिसर विसाल देह दोसर दिसना पातर छितर । लोक कहै फनका कहाँ भिरै छै रु कोइ कहै, त कोइ कहै ननुवो नै कोनो कम छै । देखैत जाही ने, देखन मे छोट मगर घा करे गम्भीर । मुकावला करमान टुटैत

भिडमे सुरु भ्या गेलै । ननुवा देव पितर आ गुरुके सुमैरके अखराहामे गेलै । गोर लाइग के विधिपुर्वक माइट लेल्कै आ सलामी लैले हाथ बरहेल्कै । नटबा झपैटके वोकर हाथ पकैर लेल्कै । जोरसे ताइनके ननुवाके तर कैल्कै आ घोसियेनाय सुरु कैर देल्कै । लागै जेना आइ ओकरा चटनी बन्याके ख्या लेतै । खन मुट्ठी में बौल ल्याके जोरसे कपारमे पट्ठी मारै त खन ठेंगहुन गरदनमे अर्याके बौल माइटमे गाइरदै । देखैबला सब कहै आइ थरुवा पलामे परलछै । काचन गौवाँसब जे पहलमानी देखैले गेल रहै ओकरा कुछोने फुरै । सबके मुँहके फुफरी उइर गेलै । सब फनकाके मुँह दिसन ताकै । येहेन अबस्थाके देखके आखिर आयोजकमे से एक सदस्य ननुवा लग ज्याके कहे गेलै कुस्ती छोइरके हाइर माइन ल्या ननु तरसे नै के इसारा करैत मुरी हिलेल्कै । नट और जोर से रगरनाइ सुरु कैर देल्कै । लोकसबके यि देखल नै गेलै । तब आयोजकके तरफ से खलिफा फनकलालके कहल गेलै जे ननुवा तोरे बात मानतो ज्याके भाइके समझाबही । वोकरा त और येहेन जवाब भेटलै जे उ सोचनौने रहै । ननु कहल्कै, हम आइ मोइर जेबै मगर हार नै स्वीकार करबै । फनकलाल उदास मनसे आइबके कलेमचे बैठ रहलै । डँका बाजैत रहलै नट ननुवा के घोसियाइत त रहलै मगर चित्त नै करे सकने रहै । आपन पुरा ताकत लग्याके ननुवाके चित करैले कोसिस करै महज नै सकै । वोहो पुरे थाइक गेल रहै । येह्या ननुके जिवनमे यहेन कुस्ती रहै जे सबसे बेसी समय लेने रहै । सब काचनवला सब मने मन सोचै आइ अन्हेर भ्या जेतै ननु आब पछैर जेतै । अतबेहेकमे डँका दोसरे रंग बडी जोर से गिरगिर्या उठलै । ननु छेलै छेलै कि बिजलीके समान फुर्ती आ पुरे ताकतसे येहेन तरका दाउ मारल्कै जे नट चारुनाल चित्त भ्याके दुरुगमे उछैर खसले । चितुवा जेनँ आपन सिकारमे तेजीसे झमटैछै तैहनै तेजसे ननुवा उ नटके छातीमे चैढ ग्याल । देखेबलासब कोइ हाँ।।। हाँ।।।हाँ कैरते रहलै ताबे उ चाइर पाँच घुस्सा आ मुक्का लग्या देलक । काचन गौंवा आ दर्सकसबके हुइलमे जेनंङ खुसीके बाइढ चैल येलै । डँकाके चोट सँगे ननुवाके विजयके झण्डा फहर्या उठलै । यैहनङ आपन लयमे उ सब दिन लरैत रहलै । सबके मन जीतैत रहलै । मगर बडी दुःखके साथ यैठना कहे परैछै । येहेन उदियमान कुस्तीके तारा ननुलाल ददा फनकलालसे पैहनै भगवानके कोरामे चैल गेलै । २०३० सालमे जखने ओकर नाम

पहलमानीमे नामी रहै । चालिसे बरिसके उमेरमे उ यै संसार से चैल गेलै । ओकरा साँप घरनेके कारन आपन जान गुमाबे परलै ।

फनकलालके देह ननुलालसे बहौत भारी रहै । फनकलाल नम्हगर, चौरगर या खडगर सैब भाङे ननुवासे बहौत बेसी रहै । सही अगर मानल ज्या त देह दसासे असल खलिफा देखै में फनके रहै । तकर कारन रहै वोकर भैरगर खानपान आ पाचाइके ताकत । उ ५ किलो मौस, ८ किलो माछ, अन्डा २५, दुध १ बाल्टीन ९, १० लि. आ केरा १ घौर ख्या जाय । यै सबके तुलनामे उ भात कम खाय छेलै । खोरिस अनुसार तैं वोकर विसाल देहके वजन १३६ किलोग्राम रहै । तै बरका बरका धनाढ्य व्यक्ति सब वोकरा आपन हवैली में राखैले चाहै । बडका बडका कामतमे ओकरा राखैले चाहै । तै जमानामे लठैतेको बेसी चलै छेलै । तेकरो खातिर लोक बेसीसे बेसी पहलमानसबके खर्चा पाइन द्याके राखै या पालै । यैमामलामे खडकपुरके बिन्देसवरी प्रसाद सिंह यादवके नाम पैहने आबै । ओनङ त दोसरो नमहर पहलमानमे बनबाली, कैला, जगधर, लहौठिया लखा बहौतो पहमान सब रहै । मगर फनकाके पलरा सैब से भारी है । वोकर कहौसना बेसी कदर रहै । विन्देसवरी भारतमे दुर दुर तलिक फनकाके कुसती लरायले ल्या जाय । तैहन फनकलालो सैब ठाम विजय रैहके वोकर प्रतिष्ठामे चाइर चान लगैने रहै । फनकलालके कुस्ती लरैके कला आपने किसिमके छेलै । सब ठाम देहना टाङ उ अगाडी राइखके ठाठ से लरै छेलै । कहैछै, जे पहलमान जतेक जोर से वोकर उ टाङ पकरै ततेक वोकर कुस्ती सपरै । एक समय के बात चियै । भारत, बिहार राज्यके जोकहीमे बिन्देसवरीके कामत परैछैलै । वोकरे आसपास कुस्तीके नमहर बदानमे फनका भारतके मसहुर पहलमानके येहा दाउसे पटकने रहै । पुरस्कार स्वरुप नमहरे धनरासी वोकरा मिलैत रहै । बिन्देसरी आपन सान सौकत कमाइलेसे इनाम फनकाके नै लेबे देल्कै । कहल्कै यकर दोब्बर हम नेपालमे तोरा देबौ । मगर उ धनरासी जब फनकाके नै मिललै त दुनुमे बरका मतभेद भेलै । तके चल्ते बिन्देसरी वोकरा कांग्रेस कैहके बहौत मुद्दा लग्याके फसेल्कै । महज फनकलाल ओकर दादागिरीसे हार नै मानल्कै । बरु राजनीति करैत प्रजातान्त्रिक नेतासव से संरक्षित भारत प्रबासमे रहलै । यहै समय वि.सं. २०१७ में राजनैतिक आस्था के कारन वोकरा पटना “बक्सर” में जेल जीवन बिताबे परलै । वोतौ उ कुस्ती लरैत आपन जाइत समाजके मान मर्दनके कायम राखल्कै । तकर बाद उ

बिहारके गोइतपर्साही कोनो धनिकके हबेलीमे रैहके ओकर सोभा बनलै । यहै समयमे बिहार दरभंगाके महराज कामेसवर सिंहके पहलमानके पछाइरके फनकलाल बहौत प्रसिद्धि ओहौसना कमेल्कै ।

फनकाके बेसी कुसती वोइ पार भारतमे है छेलै । नेपालमे उ कमे लरलै कारन, वोकरसे लोहा लैवला जोराबर पहलमाने नै छेलै । कैला, यादव पहलमान आ लहौठियासे एक आध बैर कुसती हेबो करल्कै त कहैछै नै फरियेलै । उसब फेरसे लरैले नै चाहल्कै । कुस्तीमे फनकलाल खलिफाके नाम जखनी आकास छुबैत रहै तखनी राजा महेन्द्रके यी खबर मालुम भेलै । राजा वोकर कुस्ती देखैके इच्छा व्यक्त कैल्कै । ओकर इच्छाके पुरन सुन्सरी दुहबी में भेलै । जखनी राजाके नमहर पहलमानके फनकलाल बडी निमनसे पछाइरके चित्त क्या देल्कै । राजा महेन्द्र वोकरा पुरस्कार से सम्मानित कैल्कै । यि वोकर पहलमानी जिवनके बहौत याद करैवला छन रहै । यकर कुछे दिनके बाद वोकर भिरन्त जनकपुरमे भेलै । उ एकटा ओइ एरियाके नम्हर कोइरी पहलमानके ओइसना पछारने रहै । योहो वोकर जिवनके नमहरे कुस्तीमे आबैछै ।

आखिर एकटा जब्बर कुस्तीके रोचक भिरन्त फनकलालके जिवनमे ओकरे गाँम काचनमे भेल रहै । उ कोनो आदमी नै बलकी एकटा बदमास सँरहा (सांढ) से रहै । जे अनेर धुनेर रहै आ जनेतने लोकके बाइल बिरही खेने फिरै । कतेक बछो बरद सबके उठ्या के पटैकके नेङर कैरदै । अतहेक तैक कि घर एङनामे ज्या ज्या के लारल उसनो धान ख्यालै । यतबेहेक नै हरजोतैत देख त होक ढ्यां, होक ढ्यां कैरके बरद दिसना जाइ तहरबाके हरो खोलाइले परै । नै मानै त बरदके पटैके घायल क्या दै । सबकोइ उ सँरहासे तंग तंग आइब गेल रहै । येह्या कैहके छोइर दै कि महादेवके बाहन चियै । एक दिन अनगुतिये के बात चियै । सुरुज उइग गेल रहै । फनकलाल अखराहासे खेलके चैल आबै छेलै । कनहि क दुर डगरकता देखल्कै एकटा हरबाह जोर जोर से दौरह हौ खलिफा कैह के हल्ला करैत छेलै । वोकर हर लागले एकटा बरदके सँरहा पटैक देने रहै । फनकलाल वोकरा मदैत करैले चाहल्कै । तैं हरबाह दिसन आवाज दैत दौरल गेलै । अतबेहेकमे देखैछै सरहा वोकरे दिसन आँइख मुइनके मारैले दौरलै । ओकरा हरबरमे कि करम नै करम भेलै । सँजोग यहेन भितरमे उ लँगोटा लगैने रहै । चट बजरंगबलीके नाम

सुमैरके सँरहाके दुनु सिंङ पकैर लेल्कै । पैहने उ जोर नै कैल्कै सरहेके करे देल्कै । खाली पछारीये माथे बिगहा भोइर तक सिंह पकरने आ टांग अरैने घुसकैत जोतलाहा खेतेखेत चैल गेलै । तकरबाद जवाबमे सौसे तागत लग्याके कनहिके मगर सरहोके उ ठेलल्कै । सँरहौ गैम गेलै आइ हमहुँ मरदके फेला पैर गेलियै । तैं वोहो पहौनका लखा नै ठेलै । भोइर टोल आ आन गाम सगरे तुरन्ते खबर भ्या गेलै जे मरखाहा सरहा आ फनकलाल खलिफाके कुसती भ्या रहलछै । चारु भर लोक दौरल करमान टुटैत चैल येलै । चारु दिसनसे ललकारे लागलै । ननुलालके खबर भेलै त वोहो येलै । मगर इसारा से वोकरा फनकलाल नै भिरैले कहल्कै । दिनके दस बजल जाइ छेलै । सरहा सँगे खलिफो थाइक गेल रहै । उ कोनो दाउ लगायले चाहै मगर नै फबै । अतबेकमे कनहिक ढरकाह दिसन सरहा गेलै । कनियेटा आइरमे धुमकी लखा रहै । वहै दिसन कौहनँखे सरहाके ल्या गेलै । तर उपर जमीन येलै सैबलोक मिलके चारु भरसे तखैनिये बरी जोरसे ललकार देल्कै । फनकलाल समुचे ताकत लग्याके सँरहाके ठेलल्कै । आइरमे सँरहाके पैछला टाँग ठेक गेला से सरहा बेकाबु भ्याके खैस गेलै । सब गोरे और जोरसे हल्ला करल्कै । ताबे खलिफा सँरहाके पीठमे मुक्का मारे लागलै । सरहा बेसीये डैर गेलै । नेंगरी ठाढ क्याके खेते खेत भाइग गेलै । तै दिनसे उ सरहा कहैछै हर खोलेनाइये बिसैर गेलै । ककरो धानो खाइत रहै आ कोइ दौर हौ खलिफा जोर से कैह दै त सरहा नँक ल्या के भाइग जाय । यैहनँ कुछ दिनमे उ सँरहा काचन गामके छोइरके आनगाँम दिसन चैलगेलै । फेनघुइमक कहियोने येलै ।

कहल जाइछै एक दाइब फनक लाल कुस्ती खेल्याके इन्डियासे घर आबै छेलै । आबैत आबैत ओकरा पेरामे राइत पैर गेलै । उ खलिफे छेलै कथिके डर । आपन रस्ता नापैत चैल येलै । ओहै पेरामे ओकरा राइतके प्रेतसे भेट भेलै । प्रेत ओकरा ललकारे लाग्लै । फनक लाल तबो ओकर बातमे ध्यान नै द्याके आपन रस्ता नापे लाग्लै । परेतबा फनकलालके पेरा रोइक देल्कै । फनकलालो आपन देव धरमके सुमैरके परेतसे बजरा भिर गेलै । उ सब राइत भैर बजरा भिरलै । जोरल खेतके बडका बडका ढेकासब फुइटके भरकुच भ्या गेलै । मारै पटक फनका लेकिन उपरमे रहै परेत । फनका फेरसे उठै मा मारै पटकन तबो उपरमे परेतबे रहै । यै सबके उठा पटैक हैत हैत बडका भिनसर भ्या गेलै । भैसबार सब पौहसर चराइले निकले लाग्लै । त सोझहे उठा पटकके आवाज सुने । उ सब जनेसे

आवाज आबै तने येलै त दुरुगेसे देखैछै खलिफा केकरोसे पहलमानी खेल्या रहल छै। हल्ला देल्कै त परेतबा कहैछै जो रे जो तों आइ बैच गेला। तोहर महताइर खर दिन जितिया पाथने रहौ। तों कहियोने केकरोसे हारब्या। अतहेकमे परेत बिल्या गेलै या फनक लाल घर येलै। ओकरा सेहो सत्ती भेटल छेलै सेहो कहैछै।

कुस्तीसे पाछुके जिवन फनकलाल खलिफाके सघर्षमे बितलै। लोकतन्त्रवादी बिचारधाराके कारन पंचायती सासन हरदम वोकर विरुद्ध रहलै। राज्यके तरफसे जे कदर आ सम्मान मिलबाके चाही से नैभेलै। कुछ दिन सगरमाथा कुस्ती संघ वोकरा रेफ्री में नियुक्त करने रहै। यकर बाद बाँकी जिवन उ समाज सेवामे वितेल्कै। आपन थारुसमुदायके हक हित वोकरा बहौत प्रिय छेलै। हरेक सभा गोष्ठी सबमे वोकर सहभागिता रहै छेलै। येहेन थारु समाज के सुभचिन्तक लोकतन्त्र पुनर्बहाली के कनहिक पाछे बि.सं. २०६५ साल मे यै सन्सार से विदाह भ्या गेलै। अगर सामाजिको दृष्टीसे देखल ज्या त फनकलाल आ ननुलाल थारु समाज या पुरा समुदायके मान या सान बढहेल्कै। अखैनियो गाम घरमे पहलमानी हैछै त फनका या नुनवाके चर्चा हेबे करैछै। धियो पुतासब कखनो लरैछै त कहैछै कथी चियै रे फनका या नुनवा। पहलमानीमे बौहतो चोट खाइतो यी दुनु भाई समुदायके नाम देस परदेस सगरे फैलाइत रहलै। ओइसबके पासमे ताकत हैतो भि ओकर नजाइज फैदा कहियोने उठेल्कै बल्की ओकरा समाज सेवामे लगेल्कै। काचन गाममे ओकर टोल बस्तिके नाम खलिफा टोलसे जानल जाइछै। ओकर बन्साबली सेहो आब खलिफा बंसाबलीके नामसे पहचानल जाइछै।

श्रोत – भूवनेस्वर चौधरी, काचन सप्तरी और सम्मत लाल चौधरी, औरहा सप्तरी।

सिरिन हसे चिङनी मितिन

हरीमाया थनेत थारु
मध्यविन्दु -३ , रतनपुर
नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)
सम्पर्क ९८४७१२७१८९

एक लगर सहरमा वनवाक धरिअवाक गउँमा एगुना चिङ्नी रहलिअ । ओकर दस बारह गोटा बाचा फुन रहलई । उ चिङनिया सोदाने घरवाक अङनवामा, त वनधरियामा चरइक रहिअ । त एक दिनक वात हखई चिङनियाके सिरिनिया देखलिअ ओकर मनवामा चिङनियाके तके ओकर वचवानके खाए पौतही त मारे स्वाद लगतिअ कहिके मितिन लगावके जुक्ती लगुलिअ ।

दोसरी दिन्हाँ ऊ चिङनिया लघ आइके आपन मनक वात कह सुनुसिअ । कहलरी चिङनी बहिनी तोरसे मितिन लगावे खोजइक बनसु तोर मनवामा कथी विचार बनई ? यसही सोचलिअ चिङनिया यी सिरिनिया डौले कहइक वनिअ किदहन मितिन लगौले सकेभर त नाही खिबिअ । यिहे सोचिके , कथी बनई तौ लगाउ नत मितिन सिरो दिदी । दुनु जन मितिन लगोलसिन ।

सान्हँ भेलई चिङनिया सोचइक वनिअ मितिन भेलह आवे सिरिनिया मोरके हसे मोर बचवानके पक्का से नाही खिबिअ । ढुक्के भेलई । ओते सिरिनिया सोचइक रहसिअ की आवे चिङनिया हसे ओकर बचवानके उसारेमुसारे झपटके खाए पौबही मनेमने मारे गगसइक रहसिअ । त यसनेमा पुछलिअ की आजु कहुवा ढुकवहु चिङनी मितिन, चिङनिया कहलिअ-“कहवा कहेके मितिनिया उहे टटियाक ढुनखनावामा जे ।” यिहे बातबिर्तन कहिके आपन आपन घर जेससिन ।

राती सिरिनिया खाए इबिअ कहिके चिङनिया आपन धियापुता लेले टटियाक ढुनखुनवा मा हइने ढुकिके ढेकियाक पुछ्टवाक खल्टवामा ढुकसिअ । सदिसे राती सिरिनिया चिङनिया धरे यिलिअ टटियाक ढुनखुनवामा खोजइक खोजइक ओसही चिङना बसलई बाकी हइने पौलिअ । मलगुवाह कइले चल जिसिअ वन ओरी ।

चिङनिया सोदाने जसने आपन बाचाबुची लेले चरे लगलिअ । सान खुने फुन सिरिनिया पुछलिअ की आजु कहवा ढुकवहु त मितिनिया ? चिङनिया कहसिअ- कहवा कदेहेके उहे कहुलवाक पुतवामा जे आजु यिचकान जान वनई । आजु फुन चिङनिया दोसरी ठौरियामा ढुकसिअ । राती सिरिनिया फुन आइके आपन मितिनियाके खोजसिअ बाकी फुन हइने पौसिअ । बिहान हसई । आपन आपन काज काम मा लगससिन जामेजन । चिङनिया फुन निस्कसिअ चरे । सोदाने उहे पुछना काम सिरिनियाक हसे ठगना काम चिङनियाक । यसने करते करते एक दिन चिङनिया खोबनियामा ढुकबही कहिके तुमवाक भितरा ढुक रहलिअ आपन धिया पुता लइके ।

सान्हाँ भेलई सिरिनिया खोजे यिलिअ खोवनियामा खोजइक बनिअ त हइने पौ रहसिअ त चिङनिया सिअरा आइल कहिके था पौले रहसिअ । उहे गुने सिअराक डरे आपन बचवानके चुपचाप रहे कहइक रहसिअ ओते सिअरा हुनबुन टुनमुन करइक खोजइक रहसिअ की आजु जसके भेले फुन खैवे करबही कहिके । तुमवा भिमनिन रहले गुनेसे हइने अटाइक रहससिन एक आपसमा धकिला मुकली करइक लनइक रहससिन । आपन महतरियाक कहली फुन हइने मनइक लनते रहससिन । एउटी बचवा रहसिअ मारे खिसियाह मार दिसिह जबनहे माहे लतियाई, तुमवा लनभनाइके खुटवामा बजराइके डयाम्मे फट्ट दोबर फुटसिअ । यते सिरिनिया चम्कसिअ डरके मारे भगइक रहसिअ । याही खुटा वाही खुटा हिकते हिकते बाहरा पुगके सोलियाक खमवामा हिकके दाँत खिस्टुसिअ ।

बिहान हसई चिङनिया आपन धियापुता लइके चरे जाइकखन देखसिअ की सिरिनिया दाँत किचले त कहसिअ मितिनिया खरसही हसइक, मितिनिया खरसही हसइक यितुरा कहिके कहसिअ अनकर जिउ खाएके सेथिया वनई । अपने दाँत खिस्टावे परलई ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

घरहुवा

-हरीमाया थनेत थारु

एगुना घरहुवा रहसिअ । ओकर कारधान्हाँ करेक जङरे हइने रहसई । घरहुअवा मारे भटभेराह फुन रहसिअ । दिनभर लनेरा छोकनी जसने ओसही याते वाते बुलके ओकर दिन बितसई । एक दिन ओकर जनिअवा कहसिअ की ससुरारी जाए, काम परल बनई मोर हइने खन रौरे जाइ ता बुढवा ? घरहुअवा मरे मरे गगसल ससुरारी जाए पौलेसे ।काहेसे की ससुररियामा नेउता राध हतई । यिहे सोचके घरहुअवा मनसिअ । फुन जनिअवा कहसिअ की ससुररियामा भिन कथियो काण्ड करिह राउर वनई कथियो हइने छयान विचार । जनिअवा हराखुनाके मरदवाके पठुसिअ । ओकर पाछा घरहुअवा ससुरारी प्रस्थान कइसिअ ।

जाइक जाइक साँन्ह हसई । याही गाउँ वाही गाउँ वुलइक वुलइक सान्हाँ पुगसिअ ससुररियामा । सान्ह भेले गुनेसे रात रहसिअ । दमाद आइल कहिके मारे मन मरजाद करससिन । मधुकरस घालल मनुवाक ढिस खाए देससिन । घरहुअवा मारे सौ दिसिअ । आको अको खवास लगसई बाकी माङे हइने सकके ओसही चित बुझुसिअ । चार पहर रात बितावके खरतिन डिसौना पानी लगादेससिन हसे जामेजन सुतससिन । राती घरहुअवा उठिके मधुवाक रसवा चोराके खा लिसिअ । खाएके त खिसिअ बाकी हसे डेरिसिअ की दमाद चोरकट कहेके । उहवही पिनवामा भेनिक बार रहसई देहियामा मधुवाक रसवा पोतके भेनियाक रुवा लगाके भेनियाक खोवनियामा रहसिअ । संजोगसे उहे राती चोर एसई । ऊ घरहुअवा के चोरवा खाडौल थूल भेना कहिके लेले जेससिन ।

जाइक र्जाक एगुना लदी पुगससिन पनिया देखले घरहुअवा हईने हेलइक रहसिअ चोरवा कहसिअ भेनाक जात पानी देखले डेरेसई मारे बोल लगाइके तानइक रहसिअ तानइक तानइक हदियाईके भेनवा ,चोरवा पाछापार घुमके हेरसिअ घरहुअवा रहसिअ ठनियाईल चोरवा डरटौनक भुत कहिके बेगाहे भगसिअ । घरहुअवा रतही लहाखोरके ससुरारी आइके सुतरहसिअ चुपचापसे ।

बिहान भेलइ त ससुइया कहसिअ ली दमाद त लहा खोरी सकले? घरहुअवा कहसिअ हँ देवान । ससुइया यितुरी कहिके दमदवाके इन्तिजाम क काममा लगसिअ । राती भेली घटनवाक बारे ककरो हइने थाह रहसई । दमाद आइलगुने से हसक मासु साङे ताउ मिझराइके रिझेसई । दमदवाके मारे डौलसे नेउता खिओससिन । घरहुवाक मरेमरे सवाद लगसई । उहे गुने से आपन ससुइयाके पुछसिअ, की मसुवा कसके कथी घालके रिझले देवान ? ससुइया कहसिअ ु ताउ घालके दोहनी ताउ कसके बनावल जेसई ? कहिके दमदवा पुछसिअ । ससुइया कहिसिअ कि बसवा काटके जे त यितुरा फुन राउर हइने थाह , दमाद । यितुरीमा वात ओरेसइ बुझले नहियान कहिके । भातओत खा पिके घरहुअवा बिदाबादी भके घर घुमे लगसिअ ।

घर घुमइकखन विसरावेके डरे पइनवा भर ूहसक मासु डोनवास फोर खाउँ कहते पोहपट लगौले घुमइक रहसिअ । अवइक अवइक पइनवामा लदी परसई उहे लदियामा हेलइकखन बिछनाइके घोलमोलिसिअ । गिरइकखन विसराई ,कथी खैले कहिके ? मारे लदिया हिथुरइक रहसिअ पनियामा तखनिह एगुना बटोहिया पुगसिअ उहवा । बटोहिअवा दंग परते पुछसिअ, भयार कथी हेरौले पनियामा हिथुरइक बनहु जे ? बटोहिअवा यितुरा कहतेक परमान घरहुअवा समझसिअ फुन तके हसक मासु डोन बास फोर खाउँ । कहते पइना नपसिअ । यी देखके बटोहिअवा छक्क परके आपन पइना चल जिसिअ ।

घर आइके घरहुअवा आपन दुलहियाके ससुइयाक जसने हसक मासु तके ताउ रिझे कहसिअ । घरवामा ताउ हइने कहिके दुलहिया एककोरी जिसिअ । घरहुअवा जुअइली बसवा काटिके मसुवामा दोहनी घालके रिझसिअ हसे खाए लगसिअ त सवादे हइने लगइक रहसई । उहे बेलामा जनिअवा यिसिअ घरहुअवाके देखले मुन पकनसिअ । जुआइल बास कतहु खाइल जेसई ?कवहुन देखले ? सदिसे घरहुवा कथियो हइने ढङ ढेवर क्या बाकी ?

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

मनसे

-हरीमाया थनेत थारु

एक दिनक बात रहलई एगुनी मनसवा वन गेल रहसिअ । उहे वनवाक चुनिआमा बघवा रहसिअ पानी पिअइक पनिया पिअइखन कखनवा दिसिअ बघवाक नकवा काटी डन डन से । छनते हइने छोनवइक छोनवइक बघवा हदियाइल रहसिअ । मारे अनफन छटपट करइक रहसिअ । तातुघर बघवा मनसवाके देखसिअ गछ्वामा चनिके हेरइक । मद्दत माङे लगसिअ की कहल हे मनुवा मोर नकवासे देता यी कखनवाके छोनाई ? मनसवा कहसिअ नाही तोई माँसहारी मोरके खेबही तब । मो छटे नाही छोनेबही । बघवा कहसिअ तोरके मो नाही खेबही बरु मोर फुन एगुना सर्त बनई की यी बतवा तोई भ्मिन कहुओ कहसी बघवाक नकवा कखनवा कटले रहलिअ कहिके नत मोर मारे बेइज्जत हतई । मनसवा घरवामा नाही कहेके हसे बघवा मनसवाके नाही खाएके सर्तमा मनसवा बघवाक नकवासे कखनवाके छोना दिसिअ हसे दुनुजन आपन आपन पइना कइससिन ।

बघवाक मनवामा संका हसे डर लगसइ की यी मनसवा पक्का फुन कहबिअ मनसे न हखिअ भरे हइने बनई । कह दिबिअ त मोर मारे बेइज्जत हतई लाजक मरन कखना से बघवा हरल छी ! । बरु मनसवाक घरवा पाता लगााइके चिवा लगबही सदी कहबिअ की नाही । पिछ्ा ठोकसिअ मनसवाक घरवा पता लगसई । सान्हाँ मारे हस हसके आपन घरवामा दिना भेली कहइक रहसिअ । यी सुनले मनसवासे बघवाक मारे खिस लगसई । मनमने बघवा मनसवा के रहारहा धरसिअ ।

दोसरी दिना बिहना मनसवा खेतुवाही जिसिअ त बघवा रहसिअ ओकरहिके खोजइक । उहे बेला मनसवा कोदरियाक बेटवामा मुनेठवा राखिके गेलरहसिअ कखना मारे । तखनिह बघवा पुछसिअ हइ एक टाङा ,दु टाङा कहवा गेल, मुनेठवा कहसिअ, दु टाङा दस टाङा मारे गेल । यी बतवा सुनले बघवा मारे डरेसिअ । फुन कखनवा से कटादिबिअ कहिके बघवा मनसे से नाही सकेतई कहिके फुन वनओर चुपचाप जिसिअ । रहल रहल मनसवा बघवा से भेली घटना सभ बिसरौले रहसिअ । कठिहारी गेल रहसिअ । तखनिह बघवासे भेट हसई बघवा सर्त हसे वचन तोडले कहिके मनसवाके मारे बेगदावे लगसिअ । भगइ भगइ हदियाइके मनसवा उनाते भहनसिअ आँ वाइके । बघवा किहा भेलई आँ वावे परइक, मनसवा जुक्ती लगुसिअ हइने था उहे मुहवासे त कखनवा निस्कबिअ । यी सुनले फुन बघवा डेराके भगसिअ । बदला नाही लेबही बरकुन । यितुरी काथा यितुरी वार्ता सबको बैकुण्ठमा बास हखो ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

सियार हसे गोह

-हरीमाया थनेत थारु

एक नगरक वनवामा मारे छट्टु सियार रहलिअ। एक दिन डाङर खोजइक खोजइक घुमइक फिरइक खन लरिनियाक तिरवामा पुगल रहलिअ । चुपचाप ठेहुकाइल रहलिअ ।याते वाते हेरइकखन लरिनियाक वाही परवामा डाङर मरल देखलिअ । देखेके त देखलिअ जाएके कसके ? लरिनियामा जबन पानी रहसइ ओसही हेले के त गा-रे। कथी करेके ऊ डङरवा खाएके लागी सोचइक सोचइक अक न बक भेल रहलिअ । तखनिह गोहवाके लरिनियाक बलुरेतवामा घाम तपइक देखसिअ, चिकटचाकट लगौते गोहवाक लघ पुगसिअ हसे कहसिअ, गोह मित कथी हालचाल वनइजे अपनेक धेराहे दिनक बादमा अपने से भेट करे आइल बनही। हेरहु मितवा मोई ना लरिनियाक ओसका मारे डौल छौकी देखले अपनेक लिए । गोहवा दंग परसिअ की गोहक लागि फुन छौकी ?। ठगइक हखवहु सियार मित मो त हइने पतियाइक आपन काम परले भर त मोरके समझसहु । त फुन सिअरा कहसिअ ृयस पाली सदी अपनेक लिए मारे देखसार छौकी देखले गुनेसे ओकरेबारे बातचित करे जाए खोजइक बाकी यी लरिनिया हेले हइने सकइक बनही। यी सुनके गोहवा ओसही भरमिसिअ ।

गोहवा एकभेने डौले एकभेने फुन ठगाइमा त नाही परबही कहिके सोचसिअ एधरिक । हसे कहसिअ कथी बनई त सियार मित अपने मोर देहियामा चनहु आखिर मोरे काममा जाइक बनहु। मोई अपनेके हेला देबही बरकुन डौलसे बात बिर्तन करके एबहु । ओकर पाछ्या सिअरा गोहवाक देहियामा चनिके वाहिपार हेलसिअ। दिनभर डाङर खाके मस्त कखनु सुतसिअ त कखनु घाम तपसिअ साँन्ह हसई ।

बेरिया बुनेबुने सिअरा चल यिसिअ हसे गोह मित लो तोहार बातचित करके आइल बनही । सकभर त यस पाली हतई । अखनी मोरके यी लरिनिया हेला देहु । गोहवा गगसल फुरकल फुन हेला दिसिअ । सिअरा आपन दोनरवामा

जिसिअ । यसने चार पाँच दिन धई सिअराके गोहवा यसका ओसका हेला दिसिअ । मनभितर खुसी हखते की यसपाली मोरो सङ्हतिया हतई । जौतो असकरे परल बनही । हतइ त मितवाके सम्झते रहबही । ओते सिअराक डाङर खैना वुद्धि गोहवाके वुद्धु बनाइके डाङर जमे खाइके पाँच छ दिनमा ओरेलई । ओराटी दिना लरिनिया हेल के दोनरवामा जाए जाए गोहवा आपन बतवा कहवा धई पुगलई ? कहिके पुछलिअ । सिअरा कान मुन खजुऔते कहसिअ की हइने भेलई मितवा । गोहके कौने दिबिअ मरबिअ छौकी ऊ त मोई वाही परवामा डाङर देखले रहनही । उहे खरतिन त मित लगौले अपनेसे, नत कौने मित लगाओ यसकन गोहसे । यितुरा फुन हइने था ? गोहक कतहु बिआह हतई ? यी सुनके गोहवाक खिस लगलई हसे बेगदावे लगलिअ । बाकी हइने पुगे सकलिअ । सिअराके रहारहा धरलिअ की कबहुकाल त एबही पानी पिए मो जनले बनही ।

ढेराहे दिनक बादमा एक दिन सिअरा पानी पिए आईल रहलिअ ऊ लरिनियामा त गोहवा देखलिअ , चुपेचुपे गइठिके गोहवा सिअराक टङवा पकनसिअ तके कहसिअ की आजु बिना निलले नाही छनबही खामाहे बुद्धु बनौले न मोरके । सिअरा छट्टु रहसिअ लिह री मितवा मोर टङवा पकने छानके पकनियाक जरिया पकनले बनहु । गोहवा सिअराक टङवा छानिके झन पकनियाक जरिया पकनसिअ । सिअरा उहवासे भगसिअ आबे कबहु नाही ठगबही कहिके काहेसे ऊ बार बार बचल रहसिअ । ओते गोहवा फुन आवे बिना सोचे सम्झे कथियो काम नाही कइबही कहिके उम्हस बानके रहसिअ । कहलाहराक काठक माला, सुनलाहराक सोनक माला, हुकरेहराक हुकक माला यितुरी काथा बोलो सबजन राम राम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

गोरमी

-हरीमाया थनेत थारु

एक लगर सहरमा बुढाबुढी रहलसिन । एक दिन वन गेल रहलसिन । उहे वनवामा गोरमी फरल देखलसिन । गोरमियाक झड्वामा दुइ गोटा गोरमी रहलई औनी डौल छबिगर रहलिअ त औनी यिचकान किराइल रहलिअ । बुढवा बुढियाक टुरास लगलई त टुरलसिन । बाकी खाएके मन लगले फुन हइने खेलसिन । दुनु गोरमिया के घर लेले एलसिन हसे मारे डौलसे लोकावेके खातिर ढरिअवामा जतनोलसिन ।

दुनु गोरमियामा कन्या सभ रहलसिन । यकर बारेमा बुढवाबुढियाक हइने था रहसई । गोरमिया बुढिया डौलसे जतनौले रहसिअ । सान्हाँ सान्हाँ जामोजन सुतलखन निसा भगिया रतियामा डौली हसे किरैली गोरमिया, गोरमिया भितरा से निसकके भात तिहुना रिझबाढिके खा पी बाकी बुढवाबुढनिके राखके अपने फुन गोरमिया भितरा छिपित हससिन । बिहना जब बुढाबुढी उठससिन त घर द्धार चकाचक सफासुधर रहसई । भात तिहुना फुन रिझाइल रहसई । बुढवाबुढनी दंग परलसिन । लो रे कौने आइके हमार घरवामा सब कारधान्हाँ बटिया देले ? ओसही ओसही सोचते बुढाबुढी चुपे रहससिन ।

एक दिन हइने ,दुई दिन हइने ऊ क्रम सोदाने हखते रहलई । कथी यसहन बुढाबुढी सलाह करे लगलसिन की एक दिन चिवा लागु न । एक दिन सान्हाँ भात खा पी के बुढवा चिवा लगलिअ की हुनकर घरवामा कौने आके कारधान्हाँ कइसिअ ? भात रिझसिअ त ? सन्ही से चिवा लागल रहसिअ बुढवा । कथियो हइने । जब निसा भाग रात भेलई ढरिअवाक रखली गोरमिया से दु जन कन्या निकनइक देखलिअ । डौली गोरमियासे छबिगर देखासार हसे किरैली गोरमियासे कमाह छबिगर कन्या कुवाँरी । दुनुजन भात तिहुना रिझके खेलसिन आको बुढवाबुढनिके फुन राख देलसिन । बाकी कार धान्हा फुन करके जब गोरमिया छिपित हखे जाइक रहलसिन बुढवा चप्पे पकनलिअ हुनकर धिया पुता हइने रहलइ सोचलसिन की हिनकहिके आपन सन्तान बनाउ । बुढाबढिक दुजन बेटी भेलई । डौली गोरमियासे डौल तनमनसे कन्या पैदा भेलसिन त किरैलिसे उतुराक तनमनसे हइने डौल कन्याक जलम भेलई ।

यसनेमा रहल रहल एक दिन घरवामा धान सुखौई रहलसिन । बुढवाबुढनी गौहारी तके वन जाएके काम रहलई । दुनु गोरमी कन्यानके धनवा चेरइ चुनमुन खेतइ त यी डोह्निअवा डोलैह भगतई । बाकी घरवासे झिन बहरा निस्किह री बोबी । गउवाक मनसवा देखले नाही डौल हतई । भितरे भितरे रहिह । यसने सिखा समझाके हसे कहसुनके बुढाबुढी चलजेससिन आपन काममा ।

धनवा सुखौइखन चेरयाँ त भगसई डोह्निअवा डोलौले । भितरैसे आपन कर्तव करइक रहलसिन दुनु गोरमिया । तखनिह भेलइ राजाक घोडा आइके धनवा खाए लगसिअ । कतुरो डोह्निया झुलौले फुन घोनवा हइने भगसिअ । ओते जामे धनवा खाई रहसिअ । उहेसे किरैली गोरमिया अपने खोटहर रहलेसे आपन बहिनिया डौली गोरमियाके लाठी लेले हाँके पठुलिअ । दिदेरियाक कहली सन्तारे हाँके गिलिअ । उहे समयमा रजवाक सरसिपाही देखससिन बुढवाक घरवामा मारे छविगर कन्या इनरासनक परी नहियान । सोचससिन की यी कन्या त हमार राजा साहेब क लागी मारे जोडी सोहेतई । आइके यकर लघ ओकर लघ कहइक वनसिन की बुढवाक घरवामा मारे छबिगर कन्या । यी समाचार एक कान दुई कान करइक करइक परिगेल राज कान । रजवा बुढवाके बलोलसिन । पुछइक भखइकखन त बुढवा पहिला त लाथ धुवा लगौइ रहलिअ । पहुनी हखसिन दुई चार दिनक लागी पहुनाए आइल कहिके । बाकी कथी कदेउ राजाक आगा । हाकिल साकिल पारइक खन त बुढवा जामे बृतान्त कहदेलिअ । हुसे छविगरी गोरमियाक बिआह रजवासे हसई । ओकर जिन्गी डौलेसे चलइक रहलई । बाल बाचा फुन भेलई ।

यते दिदेरिया किरैली गोरमिया बहिनियाक सुख हइने अहित रहसिअ सोचइक । यसनेमा एक दिन दुनु दिदी बहिनी उहे नगरक इनरवा मा पानी भरे जाइकखन भेट हसई । दिदेरिया कहसिअ की कहल री बोबी बौनी जोगाउ त तोइ देखसार की मोई । इनरवामा बौनी जोगोससिन । जतुरो सिंगार पटार कइके जोगैले फुन छविगरी गोरमिया देखसार । फुन कहसिअ लुगवा साटफेट कके जोगाउ त कौने डौल ? लुगवा साटके जोगाइक खन किरैली गोरमिया बहिनियाके इनरवामा धकल दिसिअ । अपने हसे बहिनियाक भेषमा रजवाक घरवामा रजवाक दुलही भैके रहे गिलिअ ।

वेचारी डौली गोरमियाक बाचा रहसइ ऊ फुन झिमनिन नानबालख उहेगुने ऊ सोदाने राती इनरवासे निसकके कहसिअ की भुकहुरी भुकहु साठी त कुकुरिया मोर

पुता भुखल मोही दुध देउ कुकुरा मारे भुके लगसइ ओसने रजवाक दरवरवामा पुगके कहसिअ, खुलहु री खुलहु बजना केवरिया मोर पुता भुखल मोई दुध देउ त यितुरा कहले टटिया अपने आप खुलसई । ओसने खोकवामा गइठिके ओसने कहसिअ की, बरहुरी बरहु चारी कोना दिर्पा मोर पुता भुखल मोइ दुध देउ । यितुरा कहतेमा चारी ओर दिवा बरसई । आपन बचवाके तेलफुल फोकनी लगुसिअ । दुध पिउसिअ । बचवा सुतसिअ । बचवाके सुताके अपने फुन दिवा के बुतावके कहसिअ, “निभबहु री बुताउ चारी कोना दिर्पा मोर पुता सुतल मोही घर जाउ ।” बिन्ती कइसिअ । घुमइकखन कहसिअ, लगहुरी लगहुरी लगहु बजना केवरिया मोर पुता सुतल मोइ घर जाऊ । टटिया यी कहले अपनही लगसई । ओसने भुकहुरी भुकहु साठी त कुकुरिया मोर पुता सुतल मोई घर जाउ । कुकुरा फुन भुकसई । इनरवामा गइठिके रहसिअ ।

सोदाने यसने चलसई डौली गोरमिया महतारिक फर्ज पुरा करइक रहलिअ । बचवाक मायाँ सुर्ता रहसइ ओकर । निसाभाग रतियामा सोदाने आपन बचवाके स्याहार सुसार करसिअ । यी जानके किरैली गोरमियाक मनवामा फुन पाप चितेसई । खिस फुन लगसई । उहेगुने कहसिअ की हमार घरवामा कौने यिसिअ भुत बैताल चिवा लघिह त ? रजवा फुन जनिअवाक बतवा मानके चिवा लगसिअ । त फुन डौली गोरमिया सोदाने जसने यिसिअ कहते की भुकहुरी भुकहु साठी त कुकुरिया मोर पुता भुखल मोही दुध देउ कुकुरा मारे भुके लगसइ । ओसने रजवाक दरवरवामा पुगके कहसिअ, खुलहु री खुलहु बजना केवरिया मोर पुता भुखल मोई दुध देउ, त यितुरा कहले टटिया अपने आप खुलसई । ओसने कहसिअ कि बरहुरी बरहु चारी कोना दिर्पा मोर पुता भुखल मोइ दुध देउ । यितुरा कहतेमा चारी ओर दिवा बरसई । आपन बचवाके तेलफुल फोकनी लगुसिअ । दुध पिउसिअ । बचवा सुतसिअ । बचवाके सुताके अपने फुन दिवा के बुताएके घुमइकखन रजवा ओकरेके पकनसिअ । त डौली गोरमिया कहसिअ, छोन पापी मोरकेु आपन असली हसे नकली रानी फून हइने पहिचान । छोन मोरके तब जाके रजवाक बास्तविकता पाता चलसई हसे डौली गोरमियाके रानी बनाके न्याय दिसिअ तके किरैली गोरमियाके सजाय । काथा यितुरी । बोल भाई राम राम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

रोटिक गाछ

-हरीमाया थनेत थारु

कौनो एक समयमा एगुना रकसिन रहलिअ उ छोकनी खाएके परकल रहसिअ । उहे गउँवाक बनवामा उ सोदाने मनसे खोजइक बुलइक रहिअ । बनवामा औनिया औनियाइन सभ गाई गोरु चरावे फुन जासिन । हुनकहिके खाए पौले जौ त मारे डौल लगतिअ लगई । बाँकी ओकर लघ कौनो उपाय हइने रहसई । उपाय लगुसिअ बाकी कामे हइने ।

उहे वनवामा एगुना रोटी फराह गाछ रहसिअ । रोटियाक गछवामा मारे रोटी फरल रहसई । औनिअवाह रहससिन एक दिन रोटियाक गछवामा चनिके रोटी खाइक । रकसिनिया रहसिअ वनेवन घुमइक, सिकार खोजइक । तखनिह देखसिअ औनिया सभ रोटी खाइक उहो उहवा जिसिअ । औनिअवाह पुछससिन कथी करे आइल री बुढी ? रोटी खेबही ? रकसिनिया कहसिअ देह न त खाऊ कतहर सवाद बनई । काचे नहियान देखइक बनही । त छोकनिया कहसिअ लो तऊरी बुढी लोखसी हो मो टुरके खसा देबही । बुढनी कहसिअ नाही, लोखे नाही सकले भुअँवामा परतई धुरमाटी लगतई । फुहर हतई उहेगुने हातेहात दे । छोकनिया रोटी टुरके गछवासे नाम्हिके हातेहात देइक खन रकसिनिया छोकनियाके पकनिके मार डोकयामा जकाइके लेले जाइक रहसिअ ।

जाइक जाइक पइनवामा छोकनिया फुन चतुर रहलिअ लाथ लगुसिअ की मोर पेट गुनगुनाइक नमादेता बुढी । रकसिनिया नमा दिसिअ । छोकनिया एघरिक बैठसिअ । रकसिनिया कहसिअ कतहु झिन जैसी मोई मुतरुसल बनसु । कहिके वन ओर जिसिअ । उहे मौका मा ऊ पानी भरके गगरवामा डोकयामा राखके भगसिअ । रकसिनिया यिसिअ । डोकया बोकके घर जाइक रहसिअ गगरवाक पनिआ छलकइक रहसइ । रकसिनिया कहसिह पानी माहे झिन भिजाऊ घर लिगके खा लेबहु बनही मोरके दुख देइक कहते जिसिअ । घरवामा पुगके आपन बेटिया के कहसिअ ुलोरी बोबी पानी धिकाऊ आजु बनही सिकार अनले ु पानी

धिकसई । हसे डोकया मा भेली छोकनियाके लेहे जेससिन त छोकनिया हइने रहसिअ पानीक गगरा रहसइ । बुढनी ली मोरके छोकनिया ठगलिअ । कतेक दिन ठगबही बिना एक दिन फेला पारले ।

दोसरी दिन्हाँ फुन रकसिनिया उहे रोटियाक गछवा लघ जिसिअ । उ दिना फुन धेराहे छोकनी रहससिन रोटी खाइक ,रोटियाक गछवामा बघेन बघेन खेलाइक त रकसिनिया फुन रोटी मङसिअ । छोकनिया त जनले रहसिअ । कहसिअ आजु फुन मोही देहे जेबही झिन कौनो जाह । त रोटिया देहे जाइक खन रकसिनिया फुन छोकनियाके लेले जिसिअ । जाइक खन पइनवामा रहसई कुकुर लनइक बुढनी क तमासा हेरास लगसई । डोकया नमाके हेरइक रहसिअ लुझल उहे मौका पारके छोकनिया काटक झाङ तके ढोक लदाके अपने भगसिअ । फेखन हेरके आके डोकया बोकके घर ओर आवे लगसिअ । डोकया मारे बोदहर लगइक रहसई । कटवा छिदाइक रहसई । बुढनी कहसिअ अखनी बनही मोरके छिदइक रहहिता घर लिगके पका खेबही । ऐया ओहो कहते हाबल घर पुगसिअ ।

फुन आपन बेटियाके पानी धिकावे लगुसिअ । छोकनियाके काट खाएके मारे इम्तिजाम लगावे लगससिन । भोजे लगावे कहिके वरिपरिक रकसानके फुन बलोससिन । पानी धिकसई । हसे डोकया उजियाईके हेरइकखन त छोकनी सोकनी कौनो हइने रहलसिन । रकसिनिया फुन ठगी उहे कुकुरान लनैइया हेरइखन भरसक भगलिअ किदहन ? रह छोकनी आनदिने पर्सु बिना खैले नाही छनबही । खा बनही न चतुर । यसने सोचते बुढिया ऊ दिना रह गिलिअ ।

दोसरी दिना फुन छोकनिया फुन आपन आपन गाई गोरु छेगनी भेनी लेले वनवामा चरावे गेल रहलसिन । दिना ओरी उहे रोटियाक गछवा तारा आपन बस्तुसभ हिराके । औनिया हसे औनियाइन रहलसिन पाकल पाकल रोटी टुरके नहारी खाइक । रकसिनिया बुढनी यिसिअ । रोटी मङ्इक रहलिअ । त जौन छोकनियाके लिगिअ उहे छोकनिया कहसिअ की मोरके लिगही । सकबही जौ दु पारी त तोरके झुका दई घेलही । अखनी फुन तोरके त मोई झुकौवे करबही । त फुन रकसिनिया डोकयामा लेले जिसिअ पइनवामा प्राकृतिक बलावट ऐले फुन हइने जिसिअ । कतहु हइने सुस्ताइके सिधे घर लेले जिसिअ । रकसिनियाक घरवा पुगइक धई साँन्ह हसई । रकसिनिया मारे गगसल फुरकल बेटियाके पानी धिकावे

लगुलिअ । पनिया धिकसइ । हसे काटेके सुरसार हसई । बाकी घरवामा पानी ओराइल रहसई । बुढिया इनार पानी लेहे जिसिअ । उहे बेला छोकनिया रकसिनियाक बेटियासे कहसिअ तो मो लुगवा साटु न । त रकसिनियाक बेटिया मनसिअ । छोकनिया छौनी बनके रहसिअ । अँन्हार घुसिट भेल रहसई । बुढिया रकसिनिया हइने चिने सकसिअ । अपने बेटिया के काटखोटके रिझलसिन । त खाएक लगलसिन । उहे बखत बिलार आइके अपने बेटियाके खाइक मेउ मेउ करिअ छोकनिया जाने के डरे हकिअ । फुन ऐअ फुन हकिअ ।

बिहान हसई लदियामा भनिया कुनिया धोए जेससिन उहे बेलामा छोकनिया पौरके वाही पार हेलके कहसिअ अपने बेटियाके खेलही न । खा रहलही जे न खाए खोजइक । तव जाके बुढियाक चित खुलसई अनकाके दुख देले एक दिन अपने कपरवामा परसई । कनइक रोअइक घर यिसिअ । लो यितुरी काथा यितुरी वार्ता , बोल भाई राम राम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

ठगवा

-हरीमाया थनेत थारु

एक सहरमा दुजन ठग रहलसिन । चोरी करना ठगना हुनकर कामे रहलई । एक दिन वनेवन बुलइक खन वनवामा तितार देखलसिन । एक लगधा झठौले त ठयाके तितरअवा मा लगसई । उहे तितरअवा झुण्डौले आगओर जाइक जाइक एगुना गाउँमा पुगलसिन । बेरिअवा बुने बुने भेल रहलई । कते जाउ कते जाउ ? उहे गउवाक एगुनी घरवामा चार प्रहर रातक खातिर बास मङलसिन । उ घरवामा मरद मानुष हइने । अङनवामा एक जन छोकनी खेलाइक देखले ओकरेके भगिना भगिना नाता लगोलसिन । घरवाक जनिअवाके दिदी कहे लगलसिन । उहवाँ चेली माइती नाता जोडलसिन । सान्हाँ जनिअवा के दिदी यी तितरवा काटेके रिझी दे हमरा भुखाइल बनहु, खेबहु । ठगवाह अपने मतरी खाएके तहिया कहलसिन की दुए खुदुरी बनादेसी दिदी मुनवासे टङवा धइ दोफराइके । उ घरवाक जनिअवा फुन साँन्हाक पहुना ऊ फुन बास माङे आइल देउता ब्रामनजसने कहिके मारे मन मरजादसे हुनकाके सेवा सतकार करइक रहलिअ । ठगवान कहली अनुसार तितरअवा के दुए फरदा बनाके मरमसला घालके मारे चटकवार सवाद से रिझलिअ ।

रिझ सकिके हसे आङन घर बहरलिअ धान्हा ओन्हा बटिएलई । आवे पहुनाके भात खियावेके समय भेलई । गगरअवामा पानी हइने रहसई । त कहलिअ आपन बेटवाके अरे बबुवा घरवा हेरसी मो जाइक बनही पानी भरे इनार । मामा हुनकाके भात खिवावेके बनई । डौलसे हेरसी बिलरी दिबिअ तिहुनवा खाई । महतरिया जिसिअ इनार पानी भरे । छोकनिया भन्सा जिसिअ मारे सवाद बसाई रहसई । ओकर मसुवा चिखास लगसई । चिखबही कहिके पनझोपिया उठुसिअ त दुए खुदरी मासु कस्के न कस्के ? तैयो फेरी एगुनी फरदवा मसुवा चिखसिअ । एगुनी फरदवा राहे दिसिअ । हसे फुन झाप दिसिअ ।

महतरिया पनिया भरके घर यिलिअ । हसे दुनु ठगवानके भात खाएके लागी बिजे बनावे जिसिअ । लोरे बवुवासभ चलह भात खाए मरइक हखबह भुखे । बिजे

बनाके भात खाए मझ्झिघर लेले जिसिअ। भात दाल पोरसेसई। हसे मसुवा बाटे जाइक रहसिअ त जनिअवा देखलिअ एके खुदुरी। पुछलिअ अरे बबुवा झन कहलही डौलसे हेरसी विलरी खा दिबिअ झन खिउलिअ । कसके खेलिअरे विलरी। छोकनिया कहलिअ यसके झोरखअवा माहे यिलिअ पनझोपिया उजियाके हसे यसके खिलिअ कहिके अपनही खालिलिअ। छोकनियाके चतुर देखले ठगवा देखते रह गेलसिन। झोरवा मतरी ठगवा खाए पौलसिन। मने मने सोचइक रहलसिन अपने खाके विलरीक दोष। छोकनिया रहसिअ बाडिह बाडिह माठा पेहरले। ठगवाह मनभितर खिसिआइल रहलसिन। त उहे मठवा हथियावके विचार कहिके उ दिना उहवही रात रहलसिन।

बिहान भेलई उ जनिअवाके दिदी आवे हमरा जेबहु कहलसिन। त जनिअवा कहलिअ की रहह रे बवुवा भात खा के तब जै ह। आखिर दिदेरीक घरमा आइल। फुन जनिअवा भात खिउसिअ। ठगवाह छोकनियाके मारे फकौले फुस्लौले रहससिन मिठाई किन देबहु हमार साङे चलह हो भगिना कहिके। छोकनिया फुन मिठाई कदेले से रहसिअ फुस्लाइल मामा साङे बजरवा धई जेबही कहसिअ। महतरिया हइने रहसिअ जाए देइ। झिमनिन छोकनी कहवा जिबिअ। छोकनिया कहसिअ जेबही कहवा हेरेबही मामा हुनका बनसिन जे। ठगवाह मिठाई किनके छोकनियाके देले रहससिन। छोकनिया रहसिअ खाइक एगुवा बोटरिमा लेले। पाछा पाछा ठगवान बुलइक रहलिअ मिठया खैते। आगाआगा ठगवा जाई पाछा पाछा चतुरी छोकनिया। जाइक जाइक झिमनिम वनमा पुगलसिन। फुन जैते रहलसिन उहे वनवामा भालुक दोनर देखलिअ। भलुवाक विस्टयाइ फुन। ठगवान अखियाँ छलके छोकनिया मिठया फाक दिसिअ हसे मिठयाक बोटरिया फुन झटकके फोर दिसिअ। भट दोबर आवाज सुनले पाछा पार हेरससिन त बोटरिया फुटल। छोकनिया कहसिअ की गिरलही रे मामा यिहवा बिछन बनई। कान देहे लगसिअ। ठगवाह कहससिन ,झिन कनहजी भगिना आको डौल मिठाई बजरवामा किन देबहु। जाए लगलसिन। बजार एसई।

बजरवा पुगिके ठगवा कहलसिन की कहल हे भगिना पैसा हइने मिठाई किनेके तोहार मठवा बेचु न उ उहवा सोलरा लघ। देह तोहार मठवा घिचके हमरा ढारे मिठाइ हसे खेलोना फुन किन देबहु। छोकनिया कहसिअ मो अपनही बेचे जेबही रे मामा। तोहरा सभ यिहवा रहह। मोई बेचिके एवही नाही बनतई। ठगवाह लो त जाह बेचके पैसवा लेले ऐह। छोकनिया कहसिअ दोकनवामा गैठिके कजेलहर चाही बनई नाही हतई त उ ओते देखइक बनह मोट घाट दुजन हुनकाके मो

कामक लागी बेचे आइल बनही । दोकनेहरा कहसिअ लो त कहवा हेरसिअ त सदी दुजन ठनियाइल रहससिन । खाइ लाग्दा जवान । दोकनेहरा मनुइसिअ ।दस दस हजारमा बेच दिसिअ । अभिन पुछसिअ की एगुनी मतरी की दुनु बेचेके ? ठगवाह बुझससिन मठवा । ठगवाह कहससिन दुनु बेचेके । छोकनिया विस हजार लइके उहवासे सुटकुनिए भगसिअ । ठगवानके बेचके । अहर यिसियाइक पहर यिसियाइक छोकनिया त हइने यिसिअ बरु उहवा दोकनेहरा आइके कहसिअ चलह कजाए मो कामदारक रुपमा किनले बनही । हइने पतियाइक रहलसिन । दोकनेहरा कहसिअ पुछले त एगुनी की दुनु तोहरा कहलह दुनु उहेगुने चलह आबे कार करे । दंग परलसिन ठगवाह । हसे उहवही नोकर भइके कजाए परलइ । ठगवाह कहइक बनसिन की यकरैके कहुसिअ 'बिजिडी मर्चा' ।

याते छोकनिया रहसिअ दाहे कोके घर ओर अवइक । जहवा रहसिअ मिठैया फकले भलुवाक दोनरवालघ उहवही पुगलिअ त भलुवा रहसिअ पइनवाक मुहे छोकनियाके हेरइक । भलुवाके देखले छोकनिया भागे लगसिअ । भलुवा लगसिअ छोकनियाके बेगदावे । छोकनिया एगुनी बनकाही गछवामा चने लगसिअ । ओकर हइने थाह रहसइकी जावन पोहे जोकर गाछमा उसरेमुसरे भालु चढसई कहिके । भलुवा फुन चढसिअ । छोकनिया तके भलुवा क बिचा लडाइ चले लगसई । छोकनियाक साडे भेली पैसवा छाटी गछवाक तारा झरसई ।

उहे बखतमा एगुना बटोहिया रहसिअ अवइक । पैसा छितराइल देखले मारे रहसिअ बिछइक । छोकनिया कहसिअ मोर पैसा हखई । हइने देखइक बनही मो भलुवाके पिटपिटके पैसा छेरौले । तोर फुन पैसा चाही औही पिटही हसे पैसा हगौही । यसही हेरसिअ त सदी छोकनिया रहसिअ भलुवा साडे लनइक । पैसा छेरावे सकबही कहिके उहो बटोहिअवा गछवामा चनसिअ हसे लगलिअ भलुवाके पिटे । छोकनिया पैसवा लइके टाप ठोकसिअ । बटोहिअवा पिटई पिटई हदिसिअ पैसा हइने झरसई भलुवासे । त यसके छोकनिया सकुसल पैसा कमाके आपन घर घुमसिअ । हसे खुसी खुसी महतारी बेटा रहे लगससिन । लो यितुरी काथा यितुरी बार्ता ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

खुतनी चेरैया

-हरीमाया थनेत थारु

एक देसमे बुढाबुढी रहलसिन । बुढवाक कजाएके जाङर हइने रहलई । बाकी खाएके डौल खोजीअ । हुनका निस्सन्तान रहलसिन । बालबच्चा हइने रहलई । बुढवा बुढनी ढेराहे चिडनी चिडना पोसले रहलसिन । हस रहसई । बुढनी रहलिअ यिचकान ओजकट । बुढवा खाए खोजले फुन हइने देइक रहसिअ ।
बुढवाक मनवामा खाएके जुक्ती लगावके मन लगसई । एक दिन कहलिअ बुढनी री हमार बाल बाचा हइने बनई मो जाइक वनही खुतनी चेरइ खोजे आपन छोकना बनावेके खातिर । बुढवा वनओर खोजे जिसिअ । यसने दुई चार दिन खोजसिअ ।
एक दिन कहलिअ बुढनी री खुतनी चेरई लागल देखले बनही छोकना बनौले बनिअ चल चिडनवा कटही दुधभात लेही । बुढवा तके बुढनी चिडनवाके काटिके रिझके दुध भात लेले जेससिन । जाइक जाइक । दुगोटा पइना रहलई । बुढवा कहसिअ तो जाही तालुक मो एबही ओताह सुखाइल गाछ बनिअ उहे गछवाक धोधरवामा बनिअ चेरया । बुढनी जिसिअ । बुढवा दोसरी माहे भवठ मारेके गछवाक धोधरवामा अगाहे गैठिके खुतनी चेरैया भइके रहसिअ ।
बुढनी जिसिअ गछवा लघ पुगिके यी हे त हतई कहिके । कहे लगसिअ ूखुतनी चेरैया दुधी भात खैवो । धोधरवासे आवाज एसई की ूखुतनू त बुढिया खिया दिसिअ । भतवा खियाके सकसिअ । हात धोएके लुभ्कल बेलामा बुढवा सुटकुनिया धोधरवासे निसके भावठ मारेक बुढिया लघ यिसिअ । खिओलही री बुढनी ? त बुढनी कहसिअ ह अ । दुनु बुढाबुढी चल एससिन घर ।
चेरई पोसलेपर सोदाने सान्हा बिहना त अहरावे परलई केरे । बुढवा कहसिअ तोही अहरौसिअ बुढनी आखिर तो महतारी न भेलही चेरयाक । यसने मा बुढनी सोदाने सान्हा बिहना अहरावे जाए लगसिअ । ओते बुढवा बुढनी के हइने था पावे जोकर कइके सोदाने अगाहे धोधरवामा गैठिके बैठी रहसिअ । बुढनी सोदा दिन बुढवाके अहराके यिसिअ । यसने करते करते बुढवाके देखसिअ दिन दिन थुलाई । चेरइक

बाचाक आता पाता हइने आवे त चेरयाक बचवा उनियाए के चाही । बुढनिक मनवामा संका पैदा हसई । बुढवा के पिछ्रा कइवही था नाही पावे जोकरसे । बुढनी एकदिन बुढवा पहिल्यै गैठिके धोधरवामा बैठ रहसिअ कहिके था पौसिअ । बुढवाके कहसिअ घरवामा रहिह मो जाइक बनही अहरावे । त बुढवा फुन सोदाने जसने अगाहे गैठिके बैठी रहसिअ । बुढनी पुगसिअ । कहसिअ, खुतनी चेरैया दुधी भात खैवो खुतुन क अवाज एसई । बुढनी भात खिया दिसिअ । फुन कहसिअ, खुतनी चेरैया दुधी भात खैवो खुतुन अवाज एसई । बुढनी नून मर्चा खिया दिसिअ । बुढवा नूनाइ करुह लगले फुन बुढिया था पौविअ कहिके बुढवा सहले रहसिअ । त फुन बुढनी कहसिअ, खुतनी चेरैया दुधी भात खैवो खुतुन अवाज एसई । बुढनी मार दिसिअ धिकौली करछुलवासे हथवामा दागी । बुढवा ऐया मारविअ यी बुढनी कहते बहरा निसकसिअ । हसे बुढनी से माफी मङसिअ ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

वनबोका

-हरीमाया थनेत थारु

एगुना जबन वनमा जबने जुयाइल बोका रहलिअ । बोकवाक जबन जबन दाह्री रहलई । बरियार फुन रहलिअ । बोकवा जुक्तिवान फुन रहलिअ । बोकवा चतुर फुन रहलिअ । उहेगुने वनबोकवा उ वनवामा राज करे सकइक रहलिअ ।

एक दिन वनबोकवाक बाघ साङे जम्का भेट भेलई । वनबोकवा त रहसिअ जुक्तिवान । बघवाके खाएके डरे अगाहे जुक्ती लगाके कहसिअ , 'चौध हरिन ,सात बाघ खैले फुन मोर पेट भुखे छी बो बो बो कहिके दह्रिया डिङा दिसिअ यी सुनले बघवा डरे उल्टइक भहनइक भगसिअ । वनबोकवा रहसिअ चतुर भयंकर बाडिह बाडिह सिंह भेल । लमहर लमहर दाह्रि ,मारे जिउतार हसे बरियार हसे बुधियार । बघवा फुन यिबिअ कहिके सर्तक रहसिअ । हात पाखुर समारके रहलिअ ।

ओते बघवा डरेक मार भगइक खन ओताह वनवा भितरा एउठा सियार साङे भेट हसई । सिअरा पुछसिअ -"कथी बाघ मित यसके भगइक ।" बघवा कहसिअ यी वनवामा एउठा वनबोका बनिअ मारे जबन । बरियार डर टौनेक । बाघ हरिन जामे खवाह । ओतेक चौध गोटा हरिन सात गोटा बाघ खाइके फुन भुखे कहइक बनिअ । उहे गुने बनही डरक मारे भगइक । सिअरा कहसिअ धत बोका त नाही खिबिअ हरिन बाघ । जुक्ती लगाके जाऊ । बघवा कसके जाएके त ? सिअरा कहसिअ हातजोरी बाहिजोरी करके जाऊ न त । ओते रहसिअ वनबोकवा फुन बघवा खाए ऐले कथी करेके कहिके चनाख भइके सकलकान धइके चरइक । त फुन बघवा सिअराके लेले औइ देखसिअ । वनबोकवा जबनाहे माहे कहसिअ, ' चौध हरिन ,सात बाघ खैले फुन मोर पेट भुखे छी बो बो बो कहिके दह्रिया डिङा दिसिअ' यी सुनले बघवा चमकसिअ भागे लगसिअ का करो सिअरा फुन घिसिऐते तिरिऐते बघवा साङे भगही परसई । त दुनु जन भगससिन । ओताह पुगके रोकेलसिन । बघवारहसिअ अगाहे से चम्कल दुलदुलाई ।

वनबोकवा लोह रे यी बघवा हसे सिअरा मोरके त खैहिके उपाय लगोलसिन । कहिके जाबनी सिलवा अपरा रहसिअ ताकी बघवा खाए ऐले फुन छलबही । उ

हुतियाइल जिबिअ ओसका खोल्सवामा । यी कहिके लिवामा रहसिअ ठनियाइल । कखनी एबसिन ? मने मने यिसिऐते जुक्ती लगौते सिलवासे हेरई रहसिअ ।
ओताह पुगके रोकैली बघवा हसे सिअरा कसके करेके त यसके त हइने भेलई । बानह बाघ सियार भैके हमरै डेराइक लाजक मरन भेलइ जी मितवा कहके सिअरा कहलिअ । फुन दुनुजन सलाह करिके जाएके तयारी हखे लगलसिन । त सिअरा कहसिअ अखनी ओसके हाताजोरी बाहिजोरी कइके नाही जाऊ अपने भागे लगले फयाट्टे भगसहु मो पुगही हइने सकसही । त बघवा कहसिअ कसके जाएके त ? अपने कहहु मितवा । सिअरा कहसिअ की दुनु जन घेन्टिया बान्हिके जाउ त भागे परले सङही सङही भगबहु । बाकी अखनी जसके भेले फुन झपटहिके जी मितवा", सिअरा निकौ चतुर जसने कहसिअ । बाकी यिहवा ओकर चतुराई कामे हइने लगइक रहसई बाकी सिअरा बुद्धि लगावके हइने छनइक रहलिअ । बघवा रहलिअ डेरपोकन । दुनुजन लतिया काटिके आपन आपन घेन्टिया बान्हिके फुन वनबोकाक सिकार करे जेससिन ।
वनबोकवा देखइक रहलिअ दुनुजनके अवइक उहे गुने हुनका लिचकाह पुगलसिन फुन कहसिअ, चौध हरिन ,सात बाघ खैले फुन मोर पेट भुखे छी बो बो बो कहिके दह्रिया डिङा दिसिअ, मारे जवन माहे कहलेसे बघवा सिअरा दुनुजन उहवही अदके भटे भहनलसिन । उल्टई भहनई भागे लगसिन । बघवा अपने सुरे फटयाङ फटयाङ उफरई भगइक रहसिअ । सिअरा क बारेमा सोचवे हइने करलिअ । आपन जिउ जोगावके खातिर जिउ छानिके चल जिसिअ । भगइक खन बेचारा सिअरा याही गाछ त वाही ढोक मा लझराइ पझराइ , याते ठोकाइ वाते बजराइ दाँत खिस्टुसिअ । भगइक भगइक जाबन तनाउ पुगके बघवा रोकिसिअ । हेरइक वनिअ त सिअरा हसई नहियान । कहसिअ कथी सियार मित दाँत किचके हसइ ? एते मोर बनई सातो गेल अपने बनहु मारे निसुयाके हसइक । किया बाकी ? यितुरा कहले फुन सिअरा चुपचाप फतकैते हइने । डौलसे टोके हेरसिअ त सिअरा मरल रहसिअ । लो यितुरी काथा यितुरी बार्ता सुनलाहराक सोनक माला , हुकरेहराक हुकक माला, कहलाहराक काठक माला , बोलो भाइ राम राम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

बेलावत रानी

-हरीमाया थनेत थारु

एक नगर सहरमा एगुना राजा रहलिअ । ओकर चार जन बेटा रहलसिन । बनकहवा, मझिलहवा सनलहवाक बाकी छोटकहवाक हइने विआह भेल रहसई । उ रजवाक झिनकी बेटवा मारे भौजेरियान भतवा तिहुनवा हस देइक रहसिअ । ओकर भौजेरियाह फुन कहससिन सकस हखव त बेलावत रानिके विआहके आनब खा हसढस देसी हमराके । देखु त । रहवइक रहससिन । ओसने करते करते एक दिन रजवाक झिनकी बेटवा सदी से बेलावत रानिके विआहेके खातिर बहरवास बेलावत रानिक देस जाए खोजसिअ । भौजेरियाह कहससिन बिहन बनई नाही सकब भैगेलई बाकी देवरवा हइने मानके जिद्धि करलिअ । कहे लगलिअ त फोका भुजा कुट देह मो जै वे कइवही बेलावत रानी के जसके भेले फुन अनवही । फोकाभुजा कुट देलसिन खर्चा बनादेलसिन रजवाक बेटवा बेलावत रानी क उदेस राजदरवार छानिके जिसिअ ।

जाइक जाइक कहवान कहवा पुगसिअ । ओसनेमा बेलावत रानिक राज्यमा पुगसिअ । एगुना गुनियाक कुटिमाह ओकर बास मिललई ।उहवही रहेलगलिअ । गुनी वावा फुन ओकरेके मद्दत करेके राजी भैके सहयोग करे लगसिअ । गुनी बाबा कहलिअ कहल हे राजकुमार बेलावत रानिके आनेके विआह करेके यिचकान मुसिकल बनई । बाकी मो तोरके सर सहयोग अवस्य करबही ।

गुनी बाबा आपन मतरसे राजकुमारके सुगा बनादिसिअ । हसे कहसिअ बेलावत रानिक राज्यमा एगुना खा डौल बगैचा वनिअ बगिचवाक चारी ओर रनियाक पहरा सभ सरसिपाही सभ देइक रहससिन । उ बगिचवामा जाएके बडा बिहन फुन बनई । बगिचवामा बेलक गाछ बनिअ । उ बेलवा मारे फरल बनिअ । त जौन झेफवामा पाँच गोटा फरल देखबही उहे बेलवा अनसी काहेकी बेलावत रानी ओकरेमा वनिअ । बेलवाक झेफवा कटइक खन झिन टेउटेउसी नत लगरक सरसिपाही देखबसिन । तोरके देखले हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा कहले फुन झिन घुमके ककरौके हेरसी न त भस्म हबही । गुनी बाबा सिखा सम्झाके पठुसिअ । रजवाक बेटवा जिसिअ ।

सुगाक भेषमा रजवाक बेटवा चल जिसिअ । बेलावत रानिके आनेके उम्हस बन्हले । बगिचवामा चुपेचुपे पुगसिअ । मारे डौलसे हेरसिअ गुनी बाबाक कहल

नहियान जौन झेफवामा पाँच बेल एके साथ रहसई फरल उहे झेफवा टुरके टेउटउ कैते अवइक रहसिअ। पहरुवासभ देखससिन बेलवा टुरके लिगइक। कहे लगससिन की हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा रजवाक बेटवा बिसरौले रहसिअ। घुमके हेरसिअ त उहवही भस्म भेलिअ।
यते गुनिहवा यिसियाई यिसियाई राजकुमार ऐते हइने जनसिअ की कहवा त गल्ती भेलई त खोजे जिसिअ, पौवसिअ भस्म भइके छाउर भेल। उहे छउरवा लेले आके आपन तपस्या से पावल गुन मतर माहे जिउसिअ। त कहसिअ तोर बुते नाही हतई राजदरवार फिरहु। रजवाक बेटवा हइने मनसिअ। आपन अठोट पुरा कैवे करबही। भौजिनके देल बचन पुरा करके मतरी घुमबही। त गुनिअवा फुन ओकर भेष सुगा बनाके पठुसिअ। त फुन चुपेचुपे टुरके अवइक खन सरसिपाही सभन देखलसिन। त फुन ओकरेके कहे लगलसिन। हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा नाही हेरबही कहते कहते घुमके हेरसिअ। फुन राजाक बेटाक देहान्त हसई। हुनका बेलवा लेले फुन आपन राज्यमा जेससिन। एते गुनी बाबा फुन जनसिअ की कथियो भै गेलई। उहेगुने से अखाकण्ठ झरी कराके ठौरी ठौरी कोइन लगुसिअ। राजाक हाडगोन जामे बझसई। फुन आपन तन्त्र मन्त्र क गुनसे जियावे लगसिअ त राजाक बेटाक रामे रामे परान उठलई।

दोसरी दिना फुन गुनिअवा सुगाक भेष दिसिअ रजवाक बेटाक आखिरी मौका रहलई। उहेगुनेसे उ डटिके बेलावात रानिके लेले यिलिअ। लेले ऐले फुन गुनी बाबा ओकरेके सुगैक भेषमा पिजनवामा रखले रहलिअ। बेलावत रानिक राज्य से खोजइक खोजइक जोगियाक कुटिया धई आके पुछलसिन की तोई ककरौके लोकाके धइले बनही ,दुत भुत कारी मुर मनेवा जथी लोकौले फुन देखौही। सरसिपाही सभ जामे खोजतलास कके चल जेससिन। रजवाक वेटवा पाँच गोटा बेलवा मध्येमा एगुनी मा बेलावत रानी बनिअ। बेलवा फोरइक खन पानी लघनी फोरसी उखरे टारमा झिन फोरसी कहलिअ त ओकर पाछा रजवाक बेटवा उहवासे बिदा बादी भइके आपन पइना लगलिअ।
जैते जैते एक ठाउँमा पुगिके सदी बेलवामा बेलावत रानी बनिअकी हइने कहिके बेलवा फोरलिअ। बेलवासे कन्या निकनइकखन हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी कहइक कहइक मरलिअ। रजवाक बेटवाक लगसई की गल्ती कैनही की चार गोटा बाकी रहलई। फुन सोचते जाइक बनिअ जाइक जाइक पलहा पलही चार गोटा बेल फोरइक खन हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी कहइक कहइक ओसही भेलई। अन्तिम मा बचली एगुनी बेलवाके पनियाक लघ लिगिके फुटुलिअ। हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी तखनिह रजवाक बेटवा पानी पिया दिलिअ हसे बेलावत रानिक जनम भैके हसे विआह भेलई। रजवाक बेटवा हसे बेलावत रानी

आवे लगलसिन घर आवे । आपन राज्यमा अवइक खन एक ठौरी खा डौल गाछक तर सितराए लगलसिन । पानी पी पाके आगओर बढे लगलसिन । उहवही इनार रहलिअ इनरवाक पनिया फुन पिके रजवाक बेटवा बेलावत रानिक कोरवामा सुतल रहसिअ । उहे बखतमा रकसिनिया पानी भरे आइल रहलिअ । त देखलसिन मारे छविगर इनरासनक परी नहियन बेलावत रानिके उहे गुनेसे उ बलुलिअ की अवही ता, तो मो बौनी जोगाऊ । त बेलावत रानी कहलिअ की नाही मोर कुवँर साहेव सुतल बनसिन त रकसिनिया कहसिअ झोलवा सिरहनी बनाइके राख देही हसे सहे सहे अवही बेलावत रानी ओसने कइके यिसिअ ।
दुनुजन इनरवामा बौनी जोगावे लगलसिन जतुरोन जोगौले फुन रकसिनिया से बेलावत रानी देखसार त दुनु जन गर गहना लुगा फाटा जामे साटके फुन जोगाए लगलसिन त तखनी रकिसनिया बेलावत रानिके इनरवामा धकिलके अपने बेलावत रानी भइके रजवा लघ यिसिअ । राजकुमारक थाहे हइने हसइ हसे चमरिनिया रानी क भेषमा रजवाक बेटवा साङे ओकर राज्यमा यिसिअ । राजदरवार पुगलसिन भौजेरिया सभ कहे लगससिन यिहे बेलावत रानी ! हमार त हइने नहियन लगइक बनई । सिल स्वभाव फुन बेगराहे नहियन एगुना बनावटी बेलावत रानी जसने । बानी व्यवहार हेरे लगले रकसाक जसने जेठनियान संका त भेलई बाकी देवरवा अनले पर हतई त कहिके चुपे रहलसिन ।
रजवाक त चार गोटा बेटा आवे राजाक बेटा कहल काकर सोदा दिन सिकार खेलाए जाइकखन आपन आपन रनिअवानके पुछे जासिन । जव जव रजवाक बेटवासभ सिकार के लिए निस्के लगसिन नकली बेलावत रानी कहसिअ की सब दिसा जैह बाकी उतर दिसा झिन जैह । काहेकी ओकर था रहसई की बेलावत रानिके ऊ कथी कैले कहिके ? सोदा दिन उतरे नाही जाएके सुनइक सुनइक एक दिन रजवाक बेटवाह सभ कहलसिन जथी त हखो आजु त जाऊ कथी हतई र ? कहिके हुनका जेससिन । त जाइक खन मारे सिकार भेटेसई । हरिन सुअर खरहा यसने यसने बाकी हुनका सभ मारे हइने सकससिन हाहाछुही लगसई मतरा असफल हखइक रहससिन । यसनेमा पानी पियास लगसई त दिन्हा ओर घामे बतासे पियासल उहे इनरवामा पुगलसिन जहवा रहलिअ रकसिनिया बेलावत रानिके बौनी जोगावेके बहानामा इनरवामा धकिल देले । सबहिसे आगा रजवाक बनकी बेटवा जिसिअ त देखसिअ मारे छबिगर इनरकौल फूला फूलाइल टुरे खोजसिअ त फूलवा झन तरओरी तरसिसिअ दंग परसिअ लोह रे यी फूलवा त छुए हइने दिलिअ कसहन फूला ? सकभर मोरलिए हइने यी मोर भयवान लिए कहिके उ उहवासे यिसिअ । मझिलहवा जिसिअ उ फुन ओसने हसई उहो ओसही यिसिअ , ओकर पाछा सन्लहवा जिसिअ फुन ओसने । जामोजन कहससिन की

सायद यी हमार झिन्की भाइक लिए, त रजवाक झिन्की बेटवा जिसिअ फूलवा मारे डौलसे बहरै अपरिसिअ । फूलवा टुरके आपन पगरियामा धई लिसिअ । यकर मतलव रहसई की बेलावत रानी आपन भसुर हइने छुए खोजई। सान्ह हसई घर एससिन एते रजवाक बेटवाक दुलहिया मतलव चमरिनिया रकसिनिया था पौले उतरे गेल कहिके । ऊ दिन्हा रजवाक बेटवा पगरिया लेलही भात भोजन करसिअ । राती मुनेठवा भितरा फुलवा रहलई त, सिरहनी बनाके रखलिअ हसे सुत रहलिअ । निसाभाग रतियामा रकसिनिया उठिके इनरकौलवाक फुलवाके अगियामा भुथी दिसिअ । बिहान हसई जेठनीयासभ छउरवा कहुलवासे निसकाके चोनरवामा फाकी देलसिन ।
यिचकान दिन रहिके ओकरैमा मारे जिउतार लौका जमलिअ । यी लौकवाके राखु जरजतन करु ताकी फरबिअ त तिहुना खाए बन्तई कहते रखलसिन । दिन दिन छैही छैही बढलिअ हसे मारे लदाभद फरसिअ दुरिया दुरिया, दोसरी जन ऐले फरवा वापर ओर जेसई चमरिनिया रकसिनिया ऐले मुनिया मुनिया ठोकेसई । रकसिनिया खिसियाइके जामो लौका सौका टुर टारके तिहुना रिझ्ई रहलिअ त तिहुनवा हदहदाइखन हदहद हदहद रकसिनिया खाऊ, गदगद गदगद चमरिनिया खाऊ कहइक सुनसिअ । खिसियाके जामो तिहुना सिहुना दिसिअ अङ्नवा भर फाकी । ओकर पाछा यिचकान दिन रहिके उहवा मारे जिउतार छविगर बेलक बिरुवा जमसई । बेलव फुन मारे दिन दिन छैही छैही बढलिअ । झेथुलार गाछ भेले गुने से घमवामा सितराए बनतई कहिके उहवा बैठाना बनोलसिन । बेलवा तर बैठिके मारे गन्थन मन्थन हखसई । ओसने दिन बितले गेलई । बेलवा मारे फरलिअ । पाके फुन लगलिअ । मनसवासभ उहवही बैठसिन । दोसरिजन बैठले मारे डौल सितर वयार लगसई बाकी रकसिनिया बैठले बेलवा ओकर मुनिया मुनिया झरे लगसई । सोदा दिन यसने हखले गेलेसे रकसिनिया बेलवाक गछवाके काटे कहे लगलिअ । हइने भहनौले जौ त अन्न पानी त्यागेके धाक लगुलिअ उहे गुनेसे रजवाक बेटवा आपन नोकर चाकरके उ बेलवाक गछवा भहनावे लगादिलिअ ।सहरक लोग लडकासभ जामो बेल सभ बिछके लेले गेलसिन त उहे सहरवाक यिचकान ओताह बुढाबुढी रहलसिन । उ बुढवाक बेटवा फुन माङे लगले से बुढवा ठेघनी लेले जिसिअ बेल बिछे उ रसेरसे पुगइक रहलिअ मनसवासभ बेल लेले घुमइक रहलसिन जामो ओराई कहले फुन उ अपने माई दोहाइ जाइ रहसिअ । जैतेखन एताहे एगुना बेल पौसिअ उछरल रहलिअ सकभर धई । खा छविगर बेल रहसिअ उहे बेलवा लेले बुढवा उहवहिसे घर घुमसिअ । बुढवाक बेटवा मारे गगसल फुरकल खेलावे लगलिअ त बेलवा फदकाई नहियन सुनसिअ । छोकनिया बेलवा ढुगुरुसिअ कहसिअ ढुगरी गोलिया बेलवा कहसिअ अरे बबुवा रसेरसे ।

छोकनिया यी बतवा कहसिअ आपन दाओ बाबा लघ । हुनका हइने पतियाई रहलसिन । सदी एक पारी विचारु त कहिके ढुगुरौससिन, सदी बेलवा अरे बबुवा रसे रसे क अवाज एसई । ओकर पाछा हुनका बेलवाके जतनाइके रखलसिन । रहते रहते बुढवाक घरवामा अचम्म हखे लगलई बेलावत रानी त राती राती बेलवा से निसके मारे कार धान्हा करदिसिअ । घर सफा सुग्घर बना दिसिअ । बिहना बुढा बुढी छक परे लगलसिन की कौने आइके हमार घरवाक कारधान्हा जमे कर दिसिअ । उहे गुनेसे एक दिन बुढवा चिवा लगलिअ । निसाभाग रतियामा बेलवासे मारे देखसार कन्या निस्कई देखसिअ, बुढवा हेरई रहसिअ घर आङन बहारे लगसिअ । भात तिहुना रिझे लगसिअ । सवु धन्हवा ओराइके खाना खाइके फुन बेलवा भितरा जाई देखलिअ । जब बेलावत रानी बेलवा भितरा जाई रहलिअ त बुढवा झपे पकनलिअ । त उहवा एक सुन्हर देखसार कन्या क जलम भेलई । बुढवा बुढनी आपन बेटी बनाके रखलसिन । घरवा घरवा लोकाके राखल फुन ढेराहे दिन भेल रहलई ओसनेमा एक दिन बुढाबुढी केजन कहवा वन गेल रहलसिन । उहे दिना उ कन्या घरवासे बहरा आइके लुगा सुखावे अवइकखन त उहे बखतमा राजाक घोडा फुन उहवही बुढनाक घरवामा पुगल रहलिअ । राजाक सरसिपाही देखलसिन । हनकौहु छक परलसिन लोरे बुढवाक घरवामा यसहन छविगर कन्या यी त हमार रजवाक झिन्की बेटाके लिए । काहेसे की कन्या राजकुमारी जसने हसे ओते राजकुमारक छोकना फुन हइने रहसई । यिहे सोचके सरसिपाही सभ यी समाद राजदरवारमा पुगादेलसिन ।

समाद पौले पाछा राजक दरवारमा बुढवाके बलावट भेलई सुरुमा त ऊ नाही सकबही बुढाइ घेलही मोर घरवामा तिने जन बनहु कहिके ठगे खोजइक रहलिअ । बाकी राजाक आगा कथिकरो ? राजदरवारमा जैही परलई हसे सबको सलाहसे आपन बेल कन्याके बुढवा राजाक झिनकी बेटवा साङे विआह करदेहेके बाध्य भिलिअ विआह भेलई ।

बेलावत रानी हखिअ कहिके ककरो हइने था भेले फुन रकसिनियाक था भेलई । हसे उ फुन कसके कैके ओकरेके दरवारसे बाहर करेके सोचे लगलिअ । ओते राजकुमार फुन बेल कन्या ओरी झुकाव हखे लगइक रहसई । यसने यसने दिन बितते गेलई । त एक दिन रकसिनिया उठते हइने । कथी भेलई ? त कहइक खन त ऊ खटवाटी पटवाटी लेले की जबतक ओकर कर्जा कोना नाही खैले नाही उठबही । न अन खेबही न पानी पिअबही ओसही परान तेजदेबही कहलिअ । राजकुमार हदियाइके चाई बलुलिअ हसे कहलिअ की यी बुढवाक बेटियाके लिगिके यकर कर्जा कोना निकनाइके अनिह । राजाक आदेस बिचारा चइयाह लेले गेलसिन बनओरी मारे माया लगलेसे कटही हइने सकससिन । मारे मयार बहिन बेटी जसने

कहिके हुनका ओकरेके लोकाके दोसर जनावरक कर्जा कोना लिगी देलसिन बाकी उ रकसिनिया था पौलिअ की ओकर वास्तविक कर्जा कोना हइने कहिके । फुन खटवाटी पटवाटी लगुलिअ । अन पानी तेज दिलिअ । त राजकुमार फुन पोनयानके पुछलिअ की कथी बात हखई? हुनका जामे बात ओत कहलसिन । फुनसे राजाक आदेस भेलई ओकरके निनकुन बनमा लिगके काटखोट ओकर कर्जा आनेके । बेल कन्याके निनकुन वनमा लेले जेससिन पोनयाह परी जसने सान्त निर्दोष संकोच पैदा भेलई की कसके काटेके । तखनही बेलावत रानी कहसिअ की तोहराके राजाक आदेस बनई उहे गुनेसे तोहरा मोर सरिरक जोवन आगा कटह उ मैना मैनी हतई हसे बाकी सरीरक अंग अंग राजदरवार चइयाह उहे कैलसिन हसे बेलावत रानिक कर्जा कोना खाके रकसिनिया आपन खटवाटी पटवाटी से बाहर यिलिअ ।

मैना मैनी दिदी बैनी भइके उहे निनकुन वनमा रहे लगलसिन । एते रजवाक घरवामा फुन रकसिनियाक राज हखे लगलई ।

राजाक बेटासभ ओसने त हखई आपन सौखक लागी घरघरियाहे सिकार खेलाए जेससिन बाकी रकसिनिया जहिया फुन दखिन दिसा जाएके मनाही करसिअ एक दिन रजवाक बेटवाह कहलसिन कथी हतई बहुरिया कहले फुन ?आजु ओतही दखिने जाउ कथिक डर ? यसने कहिके चारु दादा भाइ चल जेससिन । मारे जनावर सभ सिकारक लिए भेटेसइ बाकी आचरी आचरी सिकार मारेके फोकाई रहससिन । यसने हाहा छुही लगते लगते सिकारक पाछा भगते भगते सान्ह हसई घर घुमे हइने सकलसिन । ओसहन निनकुन वनमा हुनका मारे छविगर धौरहर दरवार देखलसिन हसे चार प्रहर रात उहवही वितावेके सोचलसिन । उहवही रात रहे गेलसिन बास लेलसिन सान्ह क खाना खाइके सुतलसिन मारे चिनचिनवा धवर रहलई । जामे जन निनेलसिन कहिके मैना दिदी मैनी बहिनी फदकाए लगलसिन । त जामेजन सुतल भेले फुन रजवाक झिनकी बेटवा झिन्की राजकुमार जगजगले रहलिअ तनाउ कौने खा डौल कथा सुनौइ कहिके सुने लगसिअ । मैना दिदी कहसिअ तो सुनोवही री बोबी त मैनी कहसिअ नाही दिदी तोही सुनौही न । तोइ दिदी मोई बहिनी त मैनी बहिनिक अनुरोध से मैना आपन कथा सुनावे लगसिअ । मैनी बहिनी कहसिअ मारे डौल काथा री दिदी ।

(कथा दोहरिन्छ)

एक नगर सहरमा एगुन राजा रहलिअ । ओकर चार जन बेटा रहलसिन । बनकहवा, मझिलहवा सनलहवाक बाकी छोटकहवाक हइने विआह भेल रहसई । उ रजवाक झिन्की बेटवा मारे भौजेरियान भतव तिहुनवा हस देइक रहसिअ । ओकर भौजेरियाह फुन कहससिन सकस हखव त बेलावत रानिके विआहके आनब खा

हसढस देसी हमराके। देखु त। रहवइक रहससिन। ओसने करते करते एक दिन रजवाक झिन्की बेटवा सदी से बेलावत रानिके विआहेके खातिर बहरवास बेलावत रानिक देस जाए खोजसिअ। भौजेरियाह कहससिन बिहन बनई नाही सकब भैगेलई बाकी देवरवा हइने मानके जिद्धी करलिअ। कहे लगलिअ त फोका भुजा कुट देह मो जै वे कैवही बेलावत रानी के जसके भेले फुन अनवही। फोकाभुजा कुटेसई खर्चा बनादेलसिन रजवाक बेटवा बेलावत रानी क उदेस राजदरवार छानिके जिसिअ। (सुनइक बनहिरी बोबी त मैनी कहसिअ हँ री दिदी कसके ओसके डौल काथा लो आग ओरी कहही हसे कथी भेलई ?)

जाइक जाइक कहवान कहवा पुगसिअ। ओसनेमा बेलावत रानिक राज्यमा पुगसिअ। एगुना गुनियाक कुटिमा ओकर बास मिललई। उहवही रहे लगलिअ। गुनी बाबा फुन ओकरेके मद्दत करेके राजी भैके सहयोग करे लगसिअ। गुनी बाबा कहलिअ कहल हे राजकुमार बेलावत रानिके आनेके विआह करेके यिचकान मुस्किल बनई। बाकी मो तोरके सरसहयोग अवस्य करबही।

गुनी बाबा आपन मतरसे राजकुमारके सुगा बनादिसिअ। हसे कहसिअ बेलावत रानिक राज्यमा एगुना खा डौल बगैचा बनिअ बगिचवाक चारी ओर रनियाक पहरा सभ सरसिपाही सभ देइक रहससिन। उ बगिचवामा जाएके बडा बिहन फुन बनई। बगिचवामा बेलक गाछ बनिअ। उ बेलवा मारे फरल बनिअ। त जौन झेफवामा पाँच गोटा फरल देखबही उहे बेलवा अनसी काहेकी बेलावत रानी ओकरेमा बनिअ। बेलवाक झेफवा कटइक खन झिन टेउटेउसी नत लगरक सरसिपाही देखबसिन। तोरके देखले हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा कहले फुन झिन घुमके ककरौके हेरसी न त भस्म हबही। गुनि बाबा सिखा सम्झाके पठुसिअ। रजवाक बेटवा जिसिअ। (रजवाक बेटवाक लगसई अपने जिन्गी मा घटल जसने सकलकान भैके मैनवा मैनियाक कथवा सुनले जिसिअ)

सुगाक भेषमा रजवाक बेटवा चल जिसिअ। बेलावत रानिके आनेके उम्हस बन्हले रहसिअ। बगिचवामा चुपेचुपे पुगसिअ। मारे डौलसे हेरसिअ गुनि बाबाक कहल नहियान जौन झेफवामा पाँच बेल एके साथ रहसई फरल उहे झेफवा टुरके टेउटउ कइते अवइक रहसिअ। पहरुवासभ देखससिन बेलवा टुरके लिगइक। कहेलगससिन की हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा रजवाक बेटवा बिसरौले रहसिअ। घुमके हेरसिअ त उहवही भस्म भेलिअ। यते गुनिहवा यिसियाइ यिसियाइ राजकुमार ऐते हइने जनसिअ की कहवा त गल्ती भेलई त खोजे जिसिअ, पौवसिअ भस्म भइके छाउर भेल। उहे छउरवा लेले आके आपन तपस्या से पावल गुन मतर माहे जिउसिअ। त कहसिअ तोर

बुते नाही हतई राजदरवार फिरहु । रजवाक बेटवा हइने मनसिअ ।आपन अठोट पुरा कैवे करबही । भौजिनके देल बचन पुरा करके मतरी घुमबही । त गुनीअवा फुन ओकर भेष सुगा बनाके पठुसिअ । त फुन चुपेचुपे टुरके अवइक खन सरसिपाही सभन देखलसिन । त फुन ओकरेके कहे लगलसिन । हेरतारे काका हेरतारे मौसा हेरतारे बुढा या हेरतारे दादा नाही हेरबही कहते कहते घुमके हेरसिअ । फुन राजाक बेटाक देहान्त हसई । हुनका बेलवा लेले फुन आपन राज्यमा जेससिन । एते गुनी बाबा फुन जनसिअ की कथियो भै गेलई । उहेगुने से अखाकण्ठ झरी कराके ठौरी ठौरी कोइन लगुसिअ । राजाक हाडगोन जामे बझसई । फुन आपन तन्त्र मन्त्र क गुनसे जियावे लगसिअ त राजाक बेटाक रामे रामे परान उठलई ।

दोसरी दिना फुन गुनिअवा सुगाक भेष दिसिअ रजवाक बेटाक आखिरी मौका रहलई । उहेगुनेसे उ डटिके गिलिअ हसे वेलावात रानिके लेले यिलिअ । लेले ऐले फुन गुनी बाबा ओकरेके सुगैक भेषमा पिजनवामा रखले रहलिअ । बेलावत रानिक राज्य से खोजइक खोजइक जोगियाक कुटिया धई आके पुछलसिन की तोई ककरौके लोकाके धइले बनही,दुत भुत कारी मुर मनेवा जथी लोकौले फुन देखौही । सरसिपाही सभ जामे खोजतलास कके चल जेससिन । रजवाक वेटवा पाँच गोटा बेलवा मध्येमा एगुनीमा बेलावत रानी वनिअ । बेलवा फोरइक खन पानी लघनी फोरसी उखरे टारमा झिन फोरसी कहलिअ त ओकर पाछा रजवाक बेटवा उहवासे बिदा बादी भइके आपन पइना लगलिअ ।
जैते जैते एक ठाउँमा पुगिके सदी बेलवामा बेलावत रानी बनिअ की हइने कहिके बेलवा फोरलिअ । बेलवासे कन्या निकनइकखन हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी कहइक कहइक मरलिअ । रजवाक बेटवाक लगसई की गल्ती कैनही की चार गोटा बाकी रहलई । फुन सोचते जाइक बनिअ जाइक जाइक पलहा पलही चार गोटा बेल फोरइक खन हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी कहइक कहइक ओसही भेलई । अन्तिम मा बचली एगुनी बेलवाके पनियाक लघ लिगिके फुटुलिअ । हाय कुवँर पानी हाय कुवँर पानी हसे रजवाक बेटवा पानी पिया दिलिअ हसे बेलायत रानिक जनम भेलई हसे विआह भेलई । रजवाक बेटवा हसे बेलावत रानी आवे लगलसिन । आपन राज्यमा अवइक खन एक ठौरी खा डौल गाछक तर सितराए लगलसिन । पानी पी पाके आगओर बढे लगलसिन । उहवही इनार रहलिअ इनरवाक पनिया फुन पिके रजवाक बेटवा बेलावत रानिक कोरवामा सुतल रहसिअ । उहे बखतमा रकसिनिया पानी भरे आइल त देखलसिन मारे छविगर इनरासनक परी नहियन बेलावत रानिके उहे गुनेसे उ बलुलिअ की अवही ता तो मो बौनी जोगाऊ । त बेलावत रानी कहसिअ की नाही मोर कुवँर साहेव सुतल

त रकसिनिया कहसिअ झोलवा सिरहनी बनाइके सहे सहे अवही बेलावत रानी ओसने कइके यिसिअ ।
दुनुजन इनरवामा बौनी जोगावे लगलसिन जतुरोन जोगौले फुन रकसिनिया से बेलावत रानी देखसार त दुनु जन गर गहना लुगा फाटा जामे साटके फुन जोगाए लगलसिन त तखनीह रकसिनिया बेलावत रानिके इनरवामा धकिलके खसादिलिअ हसे अपने रनियाक भेषमा रजवाक बेटवा साङे ओकर राज्यमा यिसिअ । राजदरवार पुगलसिन भौजेरिया सभ कहे लगससिन यिहे बेलावत रानी ! हमार त हइने नहियन लगइक बनई। सिल स्वभाव फुन बेगराहे नहियन एगुना बनावटी बेलावत रानी जसने । वानी व्यवहार हेरे लगले रकसाक जसने जेठनियान संका त भेलई बाकी देवरवा अनले पर हतई त कहिके चुपे रहलसिन ।
रजवाक त चार गोटा बेटा आवे राजाक बेटा कहल काकर सोदा दिन सिकार खेलाए जाईकखन आपन आपन रनियानके पुछ्के जासिन । जव जव रजवाक बेटवासभ सिकार के लिए निस्के लगसिन नकली बेलावत रानी कहिअ की सब दिसा जैह बाकी उतर दिसा झिन जैह । काहेकी ओकर थाह रहसइ की बेलावत रानिके ऊ कथी कैले कहिके? सोदा दिन उतरे नाही जाएके सुनइक सुनइक एक दिन रजवाक बेटवाह जथी त हखो आजु त जाऊ कथी हतई र ? कहिके हुनका जेससिन । त जाइक खन मारे सिकार भेटेसइ । हरिन सुअर खरहा यसने यसने बाकी हुनका सभ मारे हइने सकससिन हाहा छुही लगसई असफल हखइक रहससिन । यसनेमा पानी पियास लगसई त दिन्हाओर घामे बतासे पियासल उहे इनरवामा पुगलसिन जहवा रहलिअ रकसिनिया बेलावत रानिके बौनी जोगावेके लाथे इनरवामा धकिल देले । सबहिसे आगा रजवाक बनकी बेटवा जिसिअ त देखसिअ मारे छविगर इनरकौल फुलाइल टुरे खोजसिअ त फूलवा झन तरओरी तरसिसिअ दंग परसिअ लोरे यी फूलवा त छुए हइने दिलिअ कसहन फूला ? सकभर मोर लिए हइने यी मोर भयवान लिए कहिके उ उहवासे यिसिअ । मझिलहवा जिसिअ उ फुन ओसने हसई उहो ओसही यिसिअ , ओकर पाछ्रा सन्लहवा जिसिअ फुन ओसने । जामोजन कहससिन की सायद यी हमार झिन्की भाइक लिए, त रजवाक झिन्की बेटवा जिसिअ फूलवा मारे डौलसे बहरै अपरिसिअ । फूलवा टुरके आपन पगरियामा धई लिसिअ । यकर मतलव रहसई की बेलावत रानी भसुर जनई । सान्ह हसई घर एससिन एते रजवाक बेटवाक दुलहिया मतलव चमरिनिया रकसिनिया था पौले उतरे गेल कहिके । ऊ दिन्हा रजवाक बेटवा पगरिया लेलही भात भोजन करसिअ । राती मुनेठवा भितरा फुलवा रहलई त, सिरहनी बनाके रखलिअ हसे सुत रहलिअ । निसाभाग रतियामा

रकसिनिया उठिके इनरकौलवाक फुलवाके अगियामा भुथी दिसिअ । बिहान हसई जेठनियासभ छउरवा कहुलवासे निसकाके चोनरवामा फाकी देलसिन ।
यिचकान दिन रहिके ओकरैमा मारे जिउतार लौका जमलिअ । यी लौकवाक राखु जरजतन करु ताकी फरबिअ त तिहुना खाए बन्तई कहते रखलसिन । दिन दिन छैही छैही बढलिअ हसे मारे लदाभद फरसिअ दुरीया दुरीया, दोसरी जन अइले फरवा वापर ओर जेसई चमरिनिया रकसिनिया ऐले मुनिया मुनिया ठोकेसइ । रकसिनिया खिसियाइके जामो लौका सौका टुर टारके तिहुना रिझ्ई रहलिअ त तिहुनवा हदहदाइखन हदहद हदहद रकसिनिया खाऊ , गदगद गदगद चमरिनिया खाउ कहइक सुनसिअ । खिसियाके जामो तिहुना सिहुना दिसिअ अङ्नवा भर फाकी ।
ओकर पाछा इचकान दिन रहिके उहवा मारे जिउतार छविगर बेलक बिरुवा जमसई । बेलवा मारे दिन दिन छैही छैही बढलिअ । झेथुलार गाछ भेले गुने से घमवामा सितराए बनतई कहिके उहवा बैठाना बनोलसिन । बेलवा तर बैठिके मारे गन्थन मन्थन हखसई । ओसने दिन बितले गेलई । बेलवा मारे फरलिअ । पाके फुन लगलिअ । मनसवासभ उहवही बैठसिन । दोसरिजन बैठले मारे डौल सितर बयार लगसई बाकी रकसिनिया बैठले बेलवा ओकर मुनिया मुनिया झरे लगसइ । सोदा दिन यसने हखले गेलेसे रकसिनिया बेलवाक गछवाके काटे लगुलिअ । हइने भहनौले जौ त अन्न पानी त्यागेके धाक लगुलिअ उहे गुनेसे रजवाक बेटवा आपन नोकर चाकरके उ बेलवाक गछवा भहनावे लगादिलिअ । सहरक लोग लडकासभ जामो बेल सभ बिछके लेले गेलसिन त उहे सहरवाक यिचकान ओताह बुढाबुढी रहलसिन । उ बुढवाक बेटवा फुन माङे लगले से बुढवा ठेघनी लेले जिसिअ बेल बिछे उ रसेरसे पुगइक रहलिअ मनसवासभ बेल लेले घुमइक रहलसिन जामो ओराइ कहले फुन उ अपने माइ दोहाई जाई रहसिअ । जैतेखन एताहे एगुना बेल पौसिअ उछरल रहलिअ सकभर धई । खा छविगर बेल रहसिअ उहे बेलवा लेले बुढवा उहवहिसे घर घुमसिअ । बुढवाक बेटवा मारे गगसल फुरकल खेलावे लगलिअ त बेलवा फदकाई नहियन सुनसिअ । छोकनिया बेलवा ढुगुरुसिअ कहसिअ ढुगरी गोलिया बेलवा कहसिअ अरे बबुवा रसेरसे । छोकनिया यी बतवा कहसिअ आपन दाओ बाबा लघ । हुनका हइने पतियाई रहलसिन । सदी एक पारी विचारु त कहिके ढुगुरौससिन ,सदी बेलवा आरे बबुवा रसे रसे क अवाज एसई । ओकर पाछा हुनका बेलवाके जतनाइके रखलसिन । रहते रहते बुढवाक घरवामा अचम्म हखे लगलई बेलावत रानी त राती राती बेलवा से निसके मारे कार धान्हा करदिसिअ । घर सफा सुग्घर बनादिसिअ । बिहना बुढा बुढी छक परे लगलसिन की कौने आइके हमार घरवाक

कारधान्हा जमे कर दिसिअ। उहे गुनेसे एक दिन बुढवा चिवा लगलिअ। निसाभाग रतियामा बेलवासे मारे देखसार कन्या निस्कई देखसिअ , बुढवा हेरइ रहसिअ घर आङन बहारे लगसिअ। भात तिहुना रिभ्फे लगसिअ। सव धन्हवा ओराइके खाना खाइके फुन बेलवा भितरा जाइरहलिअ त बुढवा भ्फपे पकनलिअ। त उहवा एक सुन्हर देखसार कन्या क जलम भेलई। बुढवा बुढनी आपन बेटी बनाके रखलसिन। घरवा घरवा लोकाके राखल फुन ढेराहे दिन भेल रहलई ओसनेमा एक दिन बुढाबुढी केजन कहवा वन गेल रहलसिन। उहे दिना उ कन्या घरवासे बहरा आइले रहलिअ लुगा सुखावे त उहे बखतमा राजाक घोडा फुन उहवही बुढनाक घरवामा पुगल रहलिअ। राजाक सरसिपाही देखलसिन। हनकौहु छक परलसिन लोरे बुढवाक घरवामा यसहन छविगर कन्या यी त हमार रजवाक भ्फिन्की बेटाके लिए। काहेसे की कन्या राजकुमारी जसने हसे ओते राजकुमारक छोकना फुन हइने रहसई। यिहे सोचके सरसिपाही सभ यी समाद राजदरवारमा पुगादेलसिन।

समाद पौले पाछ्रा राजक दरवारमा बुढवाके बोलावट भेलई सुरुमा त उ नाही सकबही बुढाइ घेलही मोर घरवामा तिने जन बनहु कहिके ठगे खोजइक रहलिअ। बाकी राजाक आगा कथी करो ? राजदरवारमा जैही परलई हसे सबको सलाहसे आपन बेल कन्याके बुढवा राजवाकक भ्फिन्की बेटवा साङे विआह करदेहेके बाध्य भिलिअ विआह भेलइ।

बेलावत रानी हखिअ कहिके ककरो हइने था भेले फुन रकसिनियाक था भेलइ। हसे उ फुन कसके कइके ओकरेके दरवारसे बाहर करेके सोचे लगलिअ। ओते राजकुमार फुन बेल कन्या ओरी भ्फुकाव हखे लगइक रहसई। यसने यसने दिन बितते गेलई। त एक दिन रकसिनिया उठते हइने। कथी भेलई? त कहइक खन त ऊ खटवाटी पटवाटी लेले की जबतक ओकर कर्जा कोना नाही खैले नाही उठबही। न अन खेबही न पानी पिअबही ओसही परान तेज देबही कहलिअ। राजकुमार हदियाइके चाई बलुलिअ हसे कहलिअ की यी बुढवाक बेटियाके लिगिके यकर कर्जा कोना निकनाइके अनिह। राजाक आदेस बिचारा चइयाह लेले गेलसिन बनओरी मारे माया लगलेसे कटही हइने सकससिन। मारे मयार बहिन बेटी जसने कहिके हुनका ओकरेके लोकाके दोसर जनावरक कर्जा कोना लिगी देलसिन बाकी उ रकसिनिया था पौलिअकी ओकर सदी कर्जा कोना हइने कहिके। फुन खटवाटी पटवाटी लगुलिअ। अन पानी तेज दिलिअ। त राजकुमार फुन पोनयानके पुछलिअ की कथी बात हखई हुनका जामे बात ओत कहलसिन। फुनसे राजाक आदेस भेलई ओकरके निनकुन बनमा लिगके काटखोट ओकर कर्जा आनेके। बेल कन्याके निनकुन वनमा लेले जेससिन पोनयाह परी जसने सान्त निर्दोष मरे मरे

छबिगर ,मयारके कस्के काटके कर्जा कोना निस्कावके ?कटही हइने सकइक रहलसिन कसके काटेके? । तखनिही बेलावत रानी कहसिअ की तोहराके राजाक आदेस बनई उहे गुनेसे तोहरा मोर सरिरक जोवन आगा कटह उ मैना मैनी हतइ हसे बाकी देहियाक अंग अंग राजदरवार । चइयाह उहे कइलसिन हसे बेलावत रानिक कर्जा कोना खाके आपन खटवाटी पटवाटी से बाहर यिलीअ रकसिनिया ।

मैना मैनी दिदी बैनी भइके उहे निनकुन वनमा रहे लगलसिन । एते रजवाक घरवामा फुन रकसिनियाक राज हखे लगलई । सुनइक बनही री बोबी त मैनिया कहिअ कहते जाही री दिदी मारे मारे डौल काथा । मोर त सुनते सुख लगइक बनई फुन मैनवा कहे लगसिअ त राजाक बेटासभ ओसने त हखई आपन सौखक लागी घरघरियाहे सिकार खेलाए जेससिन बाकी रकसिनिया जहिया फुन दखिन दिसा जाएके मनाही करसिअ एक दिन रजवाक बेटवाह कहलसिन कथी हतई बहुरिया कहले फुन? आजु ओतही दखिने जाऊ कथिक डर ? यसने कहिके चारु दादा भाइ चल जेससिन । मारे जनावर सभ सिकारक लिए भेटेसई बाकी आचरी आचरी सिकार मारेके फोकाई रहससिन । यसने हाहा छुही लगते लगते सिकारक पाछा भगते भगते सान्ह हसई घर घुमे हइने सकलसिन । ओसहन निनकुन वनमा हुनका मारे छविगर धौरहर दरवार देखलसिन हसे चार प्रहर रात उहवही बितावेके सोचलसिन । उहवही रात रहे गेलसिन बास लेलसिन सान्ह क खाना खाइके सुतलसिन मारे चिनचिनवा धवर रहलई । जामे जन निनेलसिन कहिके मैना दिदी मैनी बहिनी फदकाए लगलसिन । जौन तो हसे मो हखहु । मैनिया कहसिअ हँ री दिदी ।

यी कथवा सुनले रजवाक बेटवाक तव जाके रानी भैके रहली ओकर रनिया बेलावत रानी हइने हखिअ चार प्रहर रात ओराके बिहान हखइक चिडना बसलई मैना मैनी जब रजवाक बेटवा जगलिअ धदामद त मैना मैनी बेलावत रानी भेलसिन हसे धौरहर दरवार फुन ओरेलई । रजवाक बेटवाह बेलावत रानिके लेले एलसिन हसे रकसिनियाके छलकपट कैले से सजाय भेलई ओकरेके राजदरवारसे बाहर कदेलसिन । लो कथा ओरेलई । सुनलाहराक सोनक माला कहलाहराक काठक माला , हुकरेहराक हुकक माला बोल भाई रामराम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

सतालसिंह (चारु यार भयार)

-हरीमाया थनेत थारु

एक नगर सहरमा सतालसिंहक बाबा कदेउन राजाक राज्य रहलई । सतालसिंह राजाक बेटा भेले फुन ओकर सामान्य परिवारक सभ सङ्हतिया रहलसिन । उ राज्यक जामेजनक लिए सतालसिंह कुवँर प्यारो रहलसिन । झिनहिनसे हुनका चारजन मारे मिलल सङ्हतिया चारु यार भयार रहलसिन । दुस्खम सुखममा एक दोसरजनक लिए ज्यान देहेके फुन हुनका राजी ओसहन गहिरी दोस्ती रहलई । चार जन सङ्हतियामा हुनका राजाक बेटा सतालसिंह जौन धनुषबानमा मारे निपुन रहलसिन । बा-ह कोष तनाउसे अवइक जनावरक फुन चाल था पाई तिर धनही चलौले जौ मारे सकना खुबी रहलई । ओसने दोसरी रहलिअ चितरसिंह सरकिक बेटा एउटा समान्य परिवारक बाकी चितरसिंह फुन चितरिक छाला चिलगनी नहियन उनियावेके सिप कला रहलई । ओसने रहलसिन मुनरसिंह एगुना लोहारक बेटा जौने जनले रहलसिन की आपन बनौली गरगहना अङुठी, मुनरी बा-ह बर्षाक पाछा फुन चिने सकना खुबी रहलई । ओसने रहलसिन गुनपालसिंह मारे गुनिया गुनिक बेटा बा-ह वर्षा मरल लासके फुन आपन मन्तरसे जिआवे जनले । यसने चारु जन आपन आपन कलामा निपुन रहलसिन । झिमनिम से बढले गेलसिन । जब चारु जन सयान भेलसिन तब हुनका परदेस घुमे जाएके सोचलसिन । सरसलाह कैके बहरवास जाएके तयार भेलसिन ।

परदेसक लिए आपन आपन घरवासे फोका भुजा कुटके लेले बहरवास निसकलसिन । याही राज्य से वाही राज्य त दहान पहान नदी नारी कटते चारु यार भयारक यात्रा जारी रहसइ । यसनेमा एक दिन हुनका एगुना निनकुन वनमा पुगलसिन । सिकार फुन भेटाइ रहसइ । उहवही साँन्ह भेलइ । वनवामा आपन डेरा डन्डी लगाके रहलसिन । साँन्हा खाना खाके सुतेके तरखरमा पलहा लगोलसिन की चार प्रहर रात मा पलहा पलही एकहक जन जगले रहेके ।

सबहिसे पहिले चितरसिह कहलिअ की मो पहरा देबही अपने सभ सुतबहु भयार । तिन जन सुतलसिन चितरसिंह पहरा देहे लगलिअ ओकर पलहवामा कथियो जंगली जनावरक चाल न चुलबुल एकहु चिहुटियाक न चाल हसई । एक प्रहर रात ओरेलई । मुनरसिंहक पलहा भेलई उठलिअ हसे मुनरसिह कहलिअ की खा सुतलही भयार मारे डौल निन लागल आवे अपने सुतहु मो पहरा देबही । चितरसिंह सुतलसिन हसे मुनरसिंह पहरामा रहलसिन ।

हुनकर पलहवामा फुन कथियो हइने चाल न चुल मारे सकलकान रहसई। एकहु न चिहुटियाक चाल । रातक दोसरा प्रहर फुन डौल से बितलई । तिसरी प्रहर रतियामा गुनपालसिंह उठलसिन । खा सुतलही जी भयार । आवे जगबही अपने सुतहु । कहिके गुनपालसिंह पहरा देहे लगलसिन हसे मुनरसिंह सुत रहलसिन ।
गुनपालसिंह क पलहवामा फुन कथियो हइने चाल न चुल हसई। कथियो जनावर फुन हइने डेरोसई। हुनकर पलहा फुन मारे डैलसे ओरेलई। अन्तिम प्रहर रतियाक पहरा देवेके रजवाक बेटा कुवँर सतालसिंहक पलहा रहलई उहेगुने हुनका उठलसिन। हसे गुनपालसिंह सुतलसिन।
सतालसिंह कुवँरक पलहवामा एघरिक त डौले बाकी हुनका था पौलसिन की ऐरावत हाथी हुनके सुतलिक सोझे सोझ अवइक । सुसुवाइक सौसौवाइक । सतालसिंह सङहतिअवानके उठाउ हुनका मारे डौलसे सुतल रहससिन । हसे हुनकाके कहेके फुन डर लगइक की कहबसिन डरपोकन उहे गुने से हइने उठोलसिन । आवे कथियो उपाय त लगावे परलई । हथियासे बचावे परलई सङ्हतिअवानके। उहे गुनेसे आपन धनुष वानमा तिर चलुलिअ। गैठिके हथियामा लगलई। हथिया तिरवा दवाइके भहनलिअ। एते आपन वान फिर्ता मङले अवते हइने। सतालसिंह लोरे कथी भेलई मोर तिर धनही वापस हइने अवइक कहिके हेरे गिलिअ। त जाइकमा तिरवा रहसइ दवाइल। निसकुसिअ हसे सोचसिअ धेरे दिनक बादमा हाथी भेटेलई आवे राजाक बेटा न सौखिन रहसई उहेसे सतालसिंह फुन सकभर सिहाइल रहलिअ की हाथी घोडामा चढेके। एघरिक हथियाक देहियामा सुतुता कसहन लगतई कहिके सुतलिअ। मारे डौल सिरसिर सिरसिर बयार सुखरास लगसई मस्ते निनिसिअ।
बिहान हसई सतालसिहंक सङ्हतिअवा बिहना उठलसिन त सतालसिंह उहवा हइने रहलसिन। कुवँर कहवा गेलसिन कहिके एघरिक यिसियलसिन की मैदान करे गेल हबसिन सकभर। जाबन जुग हसई ,फुन सतालसिहंक हइने अतापता उहेसे वरिपरि फुन खोजलसिन। हइने पौवइमा डेरवामा यिसिऐते खाना रिझे लगससिन। पइना हेरते हेरते खाना फुन पकलई फुन सतालसिंह हइने एलसिन हसे तिनु जन लो आवे ढिला हखइक बनई खाना खाउ न त कहिके खाना तिन जन के पोरसले त चार जना क पाता अपने परेसई। हुनका सतालसिंहक बखरा फुन खाना रचिके रखलसिन । अपने खेलसिन हसे आपन यार भयारक खनवा पोकराके टाङ देलसिन की यिहे कहिके, चेरई चुनमुन ऐले खरपात हखियो, हमार सङ्हतिअवा ऐले धिकले भात यितुरा कहिके हुनका तिन जन आपन पइना चल जेससिन । जाइकखन उ तिनु जन अपने जौन पइनवामाहे जाइ रहलसिन उहे पइनवामा चिन्हा धरले धरले गेलसिन।

एते सतालसिहं गहिर निन सुतल रहलिअ घाम भेलई त ऊ तबनी जगलिअ । त जगइक मा ऊ त हथियाक देहियामा अपनेके पौलिअ । उहवासे धावा धावा यिलिअ त सङ्हतिअवासभ छानिके गैठिसकल रहलसिन । डेरवामा पुगलिअ त ओकर डेरवा डन्डिया हसे भात टाङ्ल पौसिअ । भतवा धिकले बफाइक रहसई । अनमन दनमन खिसिअ हसे आपन डेरा डन्डि लइके ऊ फुन उहवासे चल जिसिअ । त जाइक रहसिअ भयार सभनक चिन्हा फरिऔत फरिऔते । एक ठाउँ पुगलिअ त दु गोटा पइना दोपटा रहसई एगुनी पइनवामा झाङ्गि राखल रहसई । सतालसिहं अल्लमल्ल परलिअ कते जाएके न कते ? ऊ दु पइना मध्ये एउनी पइनवा जकरामा झाङ्गि राखल रहलई उ पइनवा रकसाक राज्य मगधपुर जैअ, जहवा रकसा मन्से खिसिअ हसे जकरामा झाङ्गि हइने राखल रहलइ ऊ पइनवा गाउँ सहर जैअ । ओकर भयार सभ कुवँर रकसाक राज्य झिन जाव कहिके चिन्हा झाडी रखले रहलसिन । सतालसिंहक हइने ख्याल भेलई की उ बिन झडिया रखली पइनवामाहे जाएके ऊ झन झडिया ओहटाइके उहे पइनवा माहे झन सतालसिंह जिसिअ । जाइक रहसिअ त सुनसान रहसई । हेरइक खन मारे डौल राज्य जसने बाकी मनसे हइने । तबहु पर जाइक रहसिअ ।
सतालसिंह अपने माई दोहाईसे जैते रहसिअ । ओसकासे सदी रकसा अवइक रहलिअ । जम्काभेट हसई । त रकसा कहसिअ तो कौने हखही मो जसने दानुक राज आइल ? सतालसिह कहलिअ की मो सतालसिंह कुवँर राजाक बेटा हखही त रकसा कहलिअ की, मो भुखाइल बनही आवे तोरके खेबही, सतालसिंह कहलिअ, मो तोरके ओसही कहवा खाए देबही मो फुन त राजाक बेटा हखही एगुना राज्यक राजकुमार मोरके खाएके कहवा सेथिया बनई ?मोरके लडिके जितले तबनी खाए पौबही दुन्हुजनक बिच घमसान लडाई परलई । पटका पटकी लडे लगलसिन । ऊ राकस यी आवे मन्से, रकसा मारे सतालसिंहके पटकसिअ । कुवँर हरे लगलसिन । सतालसिंह हरलिअ हसे मारे काने लगसिअ । त रकसा कहलिअ, लो तो आपन माता पिता गुरु कथी कथी बनई सुमरही ृ हसे सतालसिंह आपन माता पिता गुरु सुमरे लगलिअ गित गाइके । मारे डौल गला हसे मयार गित सुनले रकसा मोहित हखसिअ । सतालसिंह गित गा सकलिअ । त रकसा फुन गौही न कहलिअ त सतालसिंह कहलिअ कसके गाउ तो बनही मोर घेन्टिया दबले । ओकर पाछा रकसा सतालसिंहक टङवावरी दबसिअ । ऊ फुन आपन माता पिता गुरु सुमरसिअ ओकर पाछा सतालसिंहक गुरु बल दिसिअ उहे बखतमा सतालसिंह कुवँर रकसाके बोलभरसे लतिउलिअ हसे कतेक न कतेक कोष तनाउ पुगादिलिअ । हलहाली दगरके गैठिके रकसाके दबलिअ । आबे सतालसिंह कहसिअ तो आपन गुरु कथी कथी बनई सुमरही । तखनिही सतालसिंहक गुरु आइके

सतालसिंहंक कनवामा कहलिअ की, कहल हे राज कुवँर रकसा कहलक दलैदर हखई। उ जब आपन गुरु पुकरबिअ त तोहर अता पता नाही हतई। बरुकुन यिहे मौकामा बध करह हसे ओकर जङहवामा हिरा बनई ऊ हिरा लिगके ओकर बेटिया सोनकेसर रानिके दिह गुरुक यी सलाह हसे बल पाइके सतालसिंह दनुवाके आपन कटारी माहे मारिके ओकर जङहवासे हिरा जौन रहलई उहे कटारी से चिरके निस्कुसिअ । ओकर पाछ्रा हिरा लेले दनुवाक राज्यमा ओकर राज महल ओरी जिसिअ ।

जब उहवा जिसिअ रकसाक बेटिया सोनकेसर रानी आपन महलक आगा बगिचवामा हिनोला झुलइक । उ राज्यमा आको मनसे त हइने रहसई रकसा खाइसकले रहलिअ। रनिआ रहसिअ मारे छविगर सोनक बार केस भेल। निरबस्त्र रहसिअ हिनोला झुलइक। उहे गुने सतालसिंह गछवाक आड लइके गित गाइके तोइ आपन हिरा लेहे औही कहलिअ । सतालसिहंक गितवा सुनले हिनोलवासे झरके लुगा लगुसिअ हसे कहसिअ साधु सन्त हबही याउ भिक्षा लके जाही अगर राजा राजकुमार हबही त यिहवा मोर साङे हिनोला झुले अबही । सतालसिंह उहवा जिसिअ हसे दुनु जन हिनोला झुलइक खन हिरा जौन रहलई उ रकसाक बेटियाके दिसिअ। सोनकेसर रानी जनसिअ की ओकर बाबा के यी मारले बनिअ कहिके काहेकी ओकर था रहसई जौने हिरा लेले यिबिअ उ हे ओकर बाबा बध करलाहर हबिअ यी बतवा रकसा आपन बेटियाके कहले रहलिअ। हसे सोनकेसर रानी कहलिअ की तो मोर बाबाके मारिके ओकर हिरा निस्काके मोरके देलही मोर बाबाके मारी घेलही उहेसे मो जेबही लहाए तो यिहवा रहसी। उ रनिया खोरे गेल रहलिअ। एते सतालसिंह यिसियाई रहसिअ। ऐते हइने हदियाइके जिसिअ लदियामा सोनकेसर रानिक केसवा मतरी रहलई फहराई मन्सवा देखारे हइने। सतालसिंह रनिया डुबे लागी कहिके टिकिया धइ तानसिअ। त तानइमाह रनियाक केसवा झरलई।

रनिया कहसिअ की कथिके तानले मारे बिहना भेलइ यी मोर केसवा कहवा फाकेके धर्तिमा फकले अन्न नाही उबजतइ अकासमा फकले पानी नाही परतई । बना बिहन भेलइ आबे कस्के करेके ? कहिके हुनका उपाय लगोलसिन। हसे बढइ (मिस्त्री) बलाके मारे डौल बाकस बनाके उहे लदियामा बहा देलसिन सतालसिंह हसे उ रकसाक बेटिया सोनकेसर रानी रकसाक राज्यमा राजा रानी भइके रहे लगलसिन। सोनकेसरक था रहसई की ओकर बाबा कहले रहसिअ जौने हिरा लेले एबसिन उहे तोर दुलहा। उहेसे रकसाक बेटिया सतालसिंह से विआह कैके रहलिअ। राजा रानी मगधपुरक भइके रहलसिन डौलेसे ।

जौन बकसवा बहादेले रहलसिन उ बकसवा बहाइक बहाइक दोसर देस पुगल रहलिअ । त उहे देसवाक रजवाक बेटवा लरिनियामा खोरे आइल रहलिअ आपन सरसिपाही लेले जब उ लहाइ रहलिअ तब देखलिअ जगजग जगजग बाकस बर्हाक अवइक त आदेस करलिअ सरसिपाहिनके बकसवा पकनोके । हुनका पको जाइखन भ्कन बकसवा बनकी पनिया ओरजाइ । ओकर पाछा रजवाक बेटवा गिलिअ त पकनलिअ । बकसवा राजमहल लेले एलसिन । खोलके हेरलसिन त ओकर भितरा मारे छविगर सोनक केस । तबहुपर खा माहे बिचार करलसिन की कथी हखइ ? त पता लगलई की मनसेक केस । जब मनसेक केस हखई त काकर हखइ कहिके सोधी खोजी करे लगलसिन । उहवही उहे राज्यमा हनकुटनी बुढिया फुन रहलिअ ऊ केसवा देखले उहे कहलिअ कि यि सोनकेसर रानी क कसस हखइ । मोत भ्किमनिनमा खेलौले बनही । ओकर पाछा रजवा सोनकेसर रानिके कौने लियावे जाएके त कौने आने सकविअ त कहिके सोनक भनियामा सोन चानी हिरा मोती रुपिया पैसा डलवा भरल सहरमा बुलावे लगलसिन की जौने भितरौल उहे सोनकेसर रानी के लिया आनके । उ डलवा उहे हनकुटनी बुढिया भितरुलिअ ।

मोत यकरेके खेलौले बनही । कहिके हनकुटनी बुढिया सरसामा करिके सोनकेसर रानिक उदेस आपन पइना लगसिअ । जब उहवा पुगलिअ सोनकेसर रानिक विआह भेल रहसई । हनकुटनी बुढिया उहवा रहे लगलिअ कि कसके कइके यकरेके लिगेके ? यसने रहते रहते एक दिन बुढिया कहसिअ, अरी बोबी दमाद के पुछसिअ ता आपन परान कहवा रखले कहिके ? डौलसे जरजतन कके राखे परलई एकदमसे वनभ्कार जाइरहसी । कौन बखत कथी हतई ? सान्ह हसई रनिया रजवाके पुछसिअ की कहल हे राजा तोहरा आपन परान कहवा धइले बनह ? बुढी रहलिअ पुछई । जरजतन करेके खतरी । त सतालसिंह कहसिअ कुचयामा जे । बिहान हसई बुढिया पुछलिअ पुछलही री बोबी त रनिया कहलिअ हँ अ कुचयामा किदहन । यसनेमा रजवा सिकार खेलाए गिलिअ । सुनसान मौका पारके कुचया बढनिया जामे बटियाइके अगियामा भुथी दिसिअ । साँन्ह हसइ रजवा त डौले आई घोडामा चढल । जिउवा बढनियामा भेले पो मरबिअ । बुढियाक था भेलई दमाद ठगी घेली कहिके । ओसने रहल रहल बुढिया फुन पुछे कहलिअ । रहल रहल फुन बुढनी कहसिअ की अरी बोबी फुन पुछसिता बोबी दमादक जिउवा कहवा लोकौले

कहिके ? साँन्ह भेलई रनिया रजवाक टाङ गोन मानइक खन पुछसिअ । रजवा कहदिसिअ कछुवाक पतवामा । दोसरी दिना सुनसान भेली बखतमा कचुवाक पतवा अगियामा भुथसिअ । हसे यिसियाइक रहसिअ साँन्ह हसई रजवा त भिनभिनाइक घोनामा चढन डौले यिसिअ। हनकुटनी दंग परसिअ। ओसने करइक करइक रजवा जनसिअ की यी बुढनी मोरके नाही छनबिअ। यी मोर काल बनके आइल बनिअ । गित माहे रजवा रनियाके कहसिअ । मो आबे ढयारे दिन नाही जिवही। उहे गुनेसे मो मरबही जौ मोर यी देहिया भिन खराव करसी बाकसमा डौलसे घिउ तेल लगाके किरा कोइनी नाही खाए जोकर बनाके टाङके धइसी । मोर तिन जन भयार सङ्हतिया बनसिन एक चितरसिंह जौने चिलगनी जसने चितरिक छाला उनियावे जनले , दोसरी मुनरसिंह हुनका आपन बनौली मुनरिया जतहर पुरान भेले फुन चिने सकससिन, हसे गुनपालसिंह हुनका मरके १२ बर्षा भेलके फुन जियावे सकससिन । उहे से ऊ रजवा कहसिअ यदी मोर भयार मो मरलले पाछा १२ वर्षमा पौले जौ मोरके जियावे सकवसिन। यितुरा कहिके रजवा रनियाके आपन मुनरिया फुन पेहरके दिलिअ ।

हसे सदी से सत्य बात रनियाके कहलिअ की मो आपन जिउवा कटरियामा रखले रहसही कहिके कदिसिअ ।

दोसरी दिना बुढनी फुन पुछलिअ ,कथी कहली त दमाद रनिया कहलिअ की कटरियामा कहइक रहलिअ। सतालसिंह रजवा फुन आपन घोना लेले सिकार मा निसकलिअ । संयोग से उ दिन्हा रजवा कटरिया बिसरौले रहलिअ आपन साङ लेले जाएके । बुढनी दाउ लगौले रहसिअ मौका पाइके कटरिया खोजखाजिके अगियामा भुथी दिलिअ । जब कटरिया धिके लगलिअ रजवा हइने डौल लागे लगलई उ आपन घोना घुमुसिअ। जसही जसही कटरीया धिकले जाइ ओसही ओसही रजवाक बेटवाक हइने डौल लागे लगसई जेहो तेहो उ आपन दरवारवामा पुगलिअ। घरवामा पुगतेक परमान घोस मोसाइल गिरलिअ तके मरलिअ। रनिया यिलिअ त रजवा मरल मारे कनलिअ रनिअवा सोकमा परलिअ तबहुपर रजवाक कहली नहियन खा डौल सनोखा बनाके रजवाक देहियाके ओकरमा राखिके ताला कुनी लगाके टाङ दिलीअ हसे बुढनी तके रनिया लहाए गेलसिन घाट । त लहाए जाई खन बुढनिक दाउ रहसई जसके फुन सोन केसर रानिके आपन देस लिगेके काहेकी उ डाल भर हिरा मोती लेले रहसिअ । हनकुटनी बुढिया कहलिअ की

डोङवामा अवही बनकी पनियामा केसवा झबरे। रनिया डोङवामा चढतेक परमान बुढनी मतर लगुलिअ की सतक डोङा हबही त सिनसिनाइल नमबही। सारे डोङा सिनकलिअ त एके चोटी उहे राज्य जहवासे हनकुटनी बुढिया लियावे गेल रहलिअ।

जब उ नगर सहर मा पुगलसिन त नगरक लोग लनका कहे लगलसिन उ हनकुटनी बुढिया सुनकेसर रानिके लेले आइ घिलिअ। यी समाद राजवाक कनवा मा परसई दरवारमा हाजिर भेलई। सोनकेसर रानी के विआह करे कहे लगलसिन त सोनकेसर रानी कहलिअ की मो अखनी यी घडीमा विआह नाही करबही। १२ बर्ष तक सत चलोबही। यिसियाए सकले त ठिक। ओकर पाछा रजवा सोनकेसर रानिके बेगरे रहे बैठेके जामो इन्तिजाम लगादेलसिन।

एक वर्षा दुई वर्षा करइक करइक बर्षौ बितलइ। चारु यार भयारके यिसियाइक यिसियाइक। १२ वर्षा पुगही लगइक रहलई फुन सतालसिंहक भयार सभन से हइने भेट हखइक खन रनियाक मारे गुनावन लगइक रहसई। रजवात कहले रहसिअ हइने एलसिन। एक दिन सोनकेसर रानी आपन मनक बात कहलिअ की उ एगुना जावन भोज क आयोजन करादेहेके करतिन। भोज क इन्ति जाम भेलई तनाउ तनाउ क राजदरबरियासभ लोग लनकासभ, गरिब गुरुवा जामो सिठिआझार भोज खाए एलसिन। रनिया खिअवई बनिअ जाई बनसिन। उ भोजवामा तिन यार भयार फुन भोज खाए आइल रहलसिन जब रनिया खाना पोरसइक रहलिअ त मुनरसिंह औठिया अर्थात मुनरिया देखिके चिनलिअ की सतालसिंहक मुनरी हखिअ कहवासे यकर हथवामा कहिके पुछलिअ। कहल हे रानी यी मुनरिया त हमार यार भयार सतालसिंहक हखई यी कहवा से अपने पेहरले ? त सोनकेसर रानी खुसी हखलिअ हिनकही हखसिन यार सभ कहिके आपन जिन्गिमा भेली जामो बतवा कहलिअ। तिनु जन कहलसिन की लो रानी साहेव आनदिने झिमनिम खरचा मा विआह हतई रजवाके कहिह की तिन जन डौल डौल छविगर छौकिक इन्तिजाम करे हसे हनकुटनिके फुन बलावे परतई कहिके। दोसरी दिना जामे इन्तिजाम भेलई। चितरसिंह चितरिक छाला निसकुलिअ तिनजन छौकी हनकुटनी हसे रनिया तिन यार भयार जामेजन ओकरमा बैठलसिन हसे चितरसिंह आपन मतर मने मने पढलिअ हसे आपन सक्तिसे भर दोवर चितरिक छाला उनुसिअ। ओपरा ओपरा उनिअवई उनिअवई कहवान कहवा

पुगलसिन । हसे पुछइक बनसिन की अरी बुढी देखइक बनही त बुढनी कहसिअ हँ अ इचहाच देखइक बनही । फुन अभनी ओपरा उनिऔलिअ । फुन पुछससिन देखइक बनही री बुढी । बुढिया कहलिअ की हइने । देखइक अनाहर घुसिट देखइक बनही रे बबुवा । तब जाके हनकुटनी बुढियाके देससिन ओपरासे धकिल । बुढनी मरसिअ । फुन हुनक सभ मगधपुरक लिए जेससिन । चितरियाक छलवा तरओरी अनते अनते मगधपुरमा परोलसिन । रनिया जामो चिज देखुसिअ । कतेक न कतेक वर्षा भेल गुनेसे जामो रहलई खखाइल झखाइल झाल मकरा लागल रहलई । सनोखवा नमोलसिन तके खोलससिन त रजवाक सरिर कथियो हइने भेल रहसई । भरखे सुतल जसने । गुनपालसिंह कहसिअ की कटरिया कहवा बनई खोजलसिन त उहवही घउरवामा पौलसिन कटरिया भुथल । खिया लागल रहसई । गुनपालसिंह कटरियाके मिसते आपन गुन पढते आपन यार भयार के जियावेके मतर लगवइक रहसिअ । मिसते आपन गुन पढते मिसते गुन पढते मिसते गुन पढते जाइक खन कटरिया झलझलवा गोरहर भिलिअ । झकझकवा गोरहर बनुलिअ हसे गुनपालसिंह ओकरके खैराक किला ठोकके जगादिसिअ । गुनपालसिंहक कानी अङुरीयामा अमृत रहसई उहे अङुरिया चिरके अमृत निस्काके चटादिसिअ । उ जगसिअ । ओकर पाछा सतालसिंहक रामे राम परान उठसई । राम राम कहते उ उठसिअ । मो खा सुतल रहनही कथी कहसिअ भयार सभ अपने कहवा रहलहु कहिके सतालसिंह कहइक खनमा त जामे भेल घटना सभ आपन सङ्हतिअवाके कही देससिन ।

जब सतालसिंहक फुन से जिअलसिन ओकर पाछा तिन जन छौकियान तिनु यार भयारसे सबकोरो क विआह भेलई । राजा रानी फुन राजभाडे लगलसिन । सबको मिल भेट भेलई हुनकर दोस्ति सोदा रहते रहलई । आपन देस फिरके एलसिन । जामोजन मिलजुलके उहे राज्यमा राज भाङके रहलसिन । सुनलाहराक सोनक माला कहलाहराक काठक माला,हुकरेहराक हुकक माला बोल भाई रामराम ।

स्रोत- धन बहादुर थारु मध्यबिन्दु-४ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)
लुर नारायन महतो (मध्यबिन्दु-३ नवलपरासी (ब.सु.पूर्व)

सदिया ओ बदिया

दसरथ प्र. थारु

कन्चन- १
बकुलगाढ, रुपन्देही

एक समोम सदिया ओ बदिया दइु भाइ रहाँ । गरिब पलिवारके होइलेक नाते मेहनत मजुरी कैके पलिवार पालेक परत रहे । यिहे सिलसिलामे बडका भैवा सदिया मजुरी खोजत खोजत एक गाँवेम पुगल, उहाँ एकठु जिम्दरवा बडा चिम्मर ओ मेहनतमारा रहे ओकरे घरे कार कैना बातचित चलेलागल । तब मलिकवा सक्कारेसे सन्झातक खेतिपातिक कार करे परी ओ खाना खैलेम एक सर्त बा कहल । तब सदिया पुछल कैसन खाना खैना सर्त हो मलिकार ? तब मलिकरवा कहल– खाँडा रोटी खैना हो कि पात भर भात ओ सिँक बोर दाल ? दुईमहे अक्के खाना मिली । तब बडा दुर तक सोचके सदिया खाँडा रोटी परे मजुरी करेक राजी होइके कार करे लागल ।

बकी जब खैना समो होइल, हाथगोड धोके पिढापर बैठल तब मलकिनिया छोटिमुटिक रोटी निकारके टुरल ओ एक टुक्का अर्थात खाँडा ओकर थरियम नोन साथे धैके भितरा गैल । सदिया बडा हैरान होइल जब उ मलकिनिया फिन बहरे नाइँ निकरल । उ भुँखले पानी भर पी के उठ गैल । ओहर मलिकवा कार करेक अढाए लागल । सन्झा होइल बेरी खैना समोम फिन उहे रोटिक खाँडा मिलल पानी पिके उठेक परल । यिहे चालसे सदिया दुबरैते गैल । मनै बडा सन्तोखी रहे सदिया घरपलिवारके पालनपोसन करेक तने जानके परवाह ना केके खटल रहे । बकी जब अधिक दुबरा गैल, कार करे नाइँ सेकेलागल तब मलिकारसे एकदुइ दिनके छुट्टिक बहाना केके घरे भागा आइल ।

मलिकवा कहल अरे का कहबो एकठु मनै कार करते करते भाग गैल अब तुहुँ ना ओइसे करे कहिके डेरो लागत, कार ते बा नै का बकी खानामा सर्त रहे

हम्मनओर । तब बदिया पुँछल कौन सर्त हो ? खाँडा रोटी खैना हो कि पात्तभर भात ओ सिँकबोर दाल ? दुइमहे अक्के खाना मिली । तब बडा दुर तक सोचके बदिया पत्ताभर भात ओ सिँक बोर दाल परे मजुरी करेक राजी होइके कार करे लागल । बदिया पहलवान अस कारो करे ओ पहलवान अस देहियाँ रहे । जब खाना खैना समो होइल तब एक हरिछ्यालकेराके बडका पाता लेहले आइल । मलकिनिया देखल ते कहे लागल इमलिक पातम देबुँ, बकी बदिया कहे मलकिनिया इमलिक कहो चाहे केराक कहो हजुर पाता ते पाते हो अक्के पाता ते हो । मलकिनिया चुपा गैल जेतना भात बटुलिम रहे कुल उदिल देहल रिसके मारे ओ सिँका बोरके एक बुन्ना दाल चुवा देहल भाते पर । बकी बदिया बटुलिम सिँका ठढिवाके कहे लागल अभिन ते सिँका नाइँ बुडता मलकिनिया बुडाएक परल हजुर । मलकिनिया रिसके मारे बटुलिये टेकरादेहल । बदिया जेतना सेकल खाइल खाइल और कुक्कुर मुर्गी बोलाके डार देहल ।
मलिकवा मलकिनिया अचम्हो पर गैलाँ । का कराँ अपने सर्त ओइसनही रहे ते । एकदुइ दिनमे घरेम चाउर दाल के कमी महसुस होएक सुरु होय लागल । बदियाक मलिकवा कहल-बदिया रे जा बिच्चे छोडके किनारे किनारेक उँखडी भौर आ । जब बदिया उँखडी भौरे गैल । पहिले चारु कोनवा ओरसे डोरी तानके बिच्चेबिच्चमे एक पेडवा छोडके कुल उखडी ढहादेहल । ओ खोब भारी बोझा बान्हके मुडी परे बोकले घरेक अङनमसे कहत बा- मलकिनिया बताव उँखडी कहाँ धरुँ ?, उँखडी काटल देखके मलकिनिया रिसके मारे आगी होयगैल ओ कहल– मोर मुडिपर धैदे..सनकटहा....। बस तुरन्ते ओकर मुडिपर हुर्दुरुकसे झटकदेहल । ऐया दाइ री, कहिके मलकिनिया तवाँ उठल । ओ घरफरघरफर कैके चुपा गैल । जब मलिकवा दगुरत आइल ते मलकिनिया अतघतहा होइगैल रहे । मलिकवा टैँरा घुइरके जब बदियक ओर हेरल तब बदिया हाथ जोरके कहेलागल मलिकार मै उनहिक कहलेसे मुडिपरे झटकले रहुँ मोर कौनो गल्ती नाइँ बा मै ते पुँछके धैलुँ हजुर । दवाइदरपन कराके कैसो मलिकिनिया तनी तङल रहे ।
एकदिन रातके समोम मलिकवाक लैका हगासल । कहे बाबा हग्गब..., तब मलिकवा कहल– जारे बदिया एके हगालान ते । तब बदिया लवन्डक घुरवापर बैठाके कहल– देख सारेक हग्गस ते मुतस ना, ओ मुतस ते हग्गस ना । जो दुनु काम अक्केबेर करबे ते पिटके मुवादेम । लवन्डा डरके मारे न हग्गल ना मुतल लौटके घरेम आके सुतगैल । बकी कुछ देरमे फिन हगास लागल । मलिकवा फिन ओसहीँ अढाइल । ओ जब हगाएक लैगैल बदिया ते फिन उहेमेर धम्की देहल । लवन्डा फिन लौटआइल । यिहे तकदम दुइतिन पटक जब होइल तब रिसकेमारे मलिकवा बदियासे कहल– पटक दे सारेक उहे ढैँकिक मुडिपरे, रातभर परसान

कैलेबा सारेक । यतना सुनते कि बदिया लवन्डक ढेँकिक मुडिपरे ढोहेकसे पटक देहल । लवन्डा ते तनतन-तनतन गोड कैके टेँडामुडी काँढ लेहल । लवन्डा मरलेक बाद मलिकवा मलकिनिया बहुत दुखी होइलाँ सारा घरेक खर्चा दिनदिने सकेत होइके भुक्खे मरना स्थिति जब आएलागल तब मलिकवा मलकिनियो अपन घरसम्पत कुल छोडछाडके अपन जानभर लैके कहुँ भाग चली कहिके मनसुबा बनैलाँ ।
ओकर खर्तिन ओन्हरे एकठो बडवार काठेक बाकस बनुवैलाँ । जौन दिन भगना प्लान रहे उदिन खाना कपडा बकसम धैलाँ, इहाँतक कि एक सिसी गंगाजल रहे उहो उहिम धैलेहलाँ । आधारातमे चुप्पेसे मलकिनिया मलिकवाक मुडी परे बकसा उठुवा देहल । खाल्ह पिठ कैले दुनु जने चोरी छुपके घरेसे बहरिया गैलाँ । जातजात जब पछिलहरा होय लागल तब बसमसे खुतखुत पानी चुवेलागल तब मलिकवा कहे अरे कैसन बाकस?पानी चुवता, तब मलकिनिया कहे– होइ गंगाजलके सिसिक ढोपकन खुलगैल होइ नै फुटगैल होइ, बने ते चाट लेहलजाय, अब फिन गंगासागर कहिया जाइलजाइ ते कहिया गंगाजल मिली, कहिके दुनुजने बकसा पोँछपोँछ चाटेलगलाँ । जातजात ढेर दुरपर सबेरा होइल, समानसे ज्यादा नोनर बाकस लागेअस करे । बोकतबोकत मलिकवा थकिगैलरहे । एक गावेँक किनारे एकठो पैप देखके बुढवा कहेलागल– ए बुढिया महा नोनर लागत बा । थकाइयो लागगैल, अब ऐसन करी कुछ सुहँतालेइँ ओ नास्तापानी भी कै लेइँ । मलकिनिया कहल– “होइजाइ, हालिसे खा पिके चलचली नैते दहिजरा बदिया इहुँ नाआजाय” कहिके मलिकवाके बकसा उतरुवाइल । नल्काके पानिसे दतुइनकुल्ला कैके जब बकसा खोललाँ ते बदियाँ बकसेमसे हाथ जोरले हँसते निकरल ओ कहे लागल- “अरे मलिकार मलकिन हम्मे छोडके आपसब कहाँ जाइलजाता हजुर, ऐसन ना कैलजाय मलिकार हम ते खैले बिना मरिजाब, आपेक घरे कार कैके हमार बडका भाइ सदिया बिचारा खाँडा रोटी खा-खा दुबराके घरे गैल रहे, आजकाल हमहुँ तनी तनी मोटात रहीँ ते अपनेलोग चुप्पे चुप्पे भागेलागल गैल, एक पाता भात ओ सिँकबोर दाल हम कहाँ पाब, बकसवमे मारे भुँखके हमार पिसबओ होइगैल हजुर” । मलकिनिया मलिकवा समझगैलाँ गंगाजल नाइँ रहे ससुरवा मुतो पियाइल । तब दुनुजने हाथ जोरके बदियासे कहेलगलाँ– “तोके नमस्कार करती बाउ, हमरे अपन करनिक फल पागैली, अब तैँ हमहन पिछा छोडदे । हाथ जोरतबाटी, तैँ हमहन खेतियो नास कैले लैकवो मुवा देहले अब ते पिन्ड छोडदे..तोर बडका भैवक जौन दसा हमरे कैली ओकर खर्तिन हमरे माफी चाहती ।” तब बदिया ओनहन बकसा अपने बोकके ओनहन घरे पुगाके बिदाबारी होइके अपन घरेदुवारे रवाना होगैल । (समापत)

मेघिया रानी

थारु जनकवि बमबहादुर थारु

रुपन्देही

एक समोम एकजने किसनवा खेतवा कमाएबेर कोदरासे मेडवा छाँटके सफा करत रहे । झपसियार मेडवक अडवाही चपटके एकठु मेघिया नुकाइल रहे । एस ठिकसे कोदरक धार लागल बिचारी मेघिया दुइटुक्का होइगैल । मेघिया कटके मरिगैल । खेतवम ओकर दुसर बहिनिया रोय- कलवा देहोयया दिदी रे खेतो दिदी मरगैला पाखो दिदी नहाँके भात खैहीँ । कलवा देहोइया जनिया घरे आके बतुवाए लागल कनिके मोयिहये कहे कलवा देहोयैया दिदी रे खेतो दिदी मरगैला पाखो दिदी नहाँके भात खैहीँ । ओकर घरेक डेहरिक गोडातरे एकठु घरघुसनी मेघिया सुनत रहे । तब मेघिया कोल्हुवारेम जाके एक टुक्का खरी चोराके लानल । ओ मुहेम हबकके पोखरियाओर लहाय जायलागल । मुहेम खरिक टुक्का लैके जात एकठु बर्दिउवा लवन्डा देखलेहल । तब ओके बडा अचरज लागल । उ सोचे लागल । इ मेघिया खरिक टुक्का लैके आखिर कहाँतक जाइ कहिके नुका नुकाके हेरत जाय लागल । तब उ मेघिया गावँसे दुरे पोखरियक किनारे पैँडवक ओलतारा होयके एहर ओहर निहरल जब केहुक नै देखल तब अपन मेघिक खोलरैया निकारके झमडी परे धैके मनैक भेषमे खरीसे मुडी मिस मिस लहाय लागल । नुकाइल नुकाइल जब बर्दिउवा लवन्डा देखल ते होस हवास उडगैल ।

तब जब मेघिया लहा धो होइल तब फिन अपन मेघियक खोकला पहिरके गावँओर चलल । बर्दिउवा लवन्डा नुका नुकाके हेर्ते चलिआइल । आखिर उ मेघिया अपने घरेक डेहरीतरे आके नुकाइल देखल । तब बर्दिउवा लवन्डा भातपानी खाएके छोडके ओढना घुडमुडके सुतगैल । तब ओकर दाइ भात खाएक कहेगैल । तब लवन्डा मेघियासे बियाह कैदेबे तब खाब नै ते नाइँ खाब कहल । तब ओकर दाय कहल- भाग रे मेघियासे के बियाह कराता ?, मै नै करैम मेघिया सेघियासे बियाह । यतना कहिके ओकर दाइ जब चलिगैल तब ओकर भौजी भात खाएक बोलाएक आइल तब फिन लवन्डा मेघियासे बियाह करेक कहल तब ओकर भौजी कहल अच्छा लेव मै करादेम तोहार मेघियासे बियाह तब उ उठल भातपानी खाइल । ओ उ मेघियक डेहरी तरसे नियानके बियाह कैलाँ ।

जब सुतना होय तब मेघिया अपन खोकटा निकारके सिरहानीतरे धरे, जब बिहान होय ते पहिरके मेघी बनजाय । यिहे मेरसे कुछ दिन बितत गैल तब लवन्डा एकदिन अपन दाइसे कहल– दाइ री बोरसिम आगी भरके मोर खटियातर धैदेहस । तब ओकर दाइ कहल–मै नै जैम तोर बोरसी ओरसी भरे । अपन जनियासे नाइँ सेकले बोरसी भरुवाएक ? बकी महतारिक ममता ते हो आखिर दाइ एकदिन बोरसी भरके खटियातर धैदेहल । जब मेघिया निनधडक सुतल बस बर्दिउवा लवन्डा ओकर खोकला बोरसिक आगिम घुरेस देहल खोकला जरमरके राखी होइगैल । उ रोज मेघिया ओढना ओँढके सुतले रहे । जब ससुइया ओढना उभकके हेरल ते सुग्घर देखके गिरपरल । ओ कहे लागल ऐया बाबा एतना सुग्घर रानी लेखा मोर पतोहिया बा तब्बे ते लवन्डा भातपानी छोडले रहे । तब उठाके कहल चल पतोहिया कार करे चली ।

(स्रोत : सुनदरी थारु । कन्चन गापा.वान.२ मटेरिया, रुपन्देही)

सँपराजा

–थारु जनकवि बमबहादुर थारु

(रुपन्देही)

एक समोक बात हो एक बुढिया बनवम गुल्लर टुरे गैल । जब गुल्लर टुर सेकल तब बिल्लमसे सँपवा गोहराइल– के हो मोर गुल्लर टुरता ? तब बुढिया कहल मै होलुँ । सँपवा कहल– जे मोर गुल्लर टुरी ते मोके अपन बेटी देइ । बुढिया कहल लेव लेव घरे जाके बेटिनसे पुछ्म सल्लास करम केजान बियाह करहीँ की नाइँ ।

जब बुढिया घरे गुल्लर लैके आइल ओ गुल्लर उदिलल तब बडकी बेटी कहे लागल- दे दाइ गुल्लर खाउँ । तब बुढिया कहल– जे गुल्लर खाइ ते सँपराजासे बियाह करी । बडकी बेटी कहल- ना गुल्लर खैम ना सँपराजा घरे जैम । फिन छोटकी बेटी जब गुल्लर देखल ते कहे लागल- दे दाइ गुल्लर खाउँ । बुढिया कहल– जे गुल्लर खाइ ते सँपराजासे बियाह करी । तब छोटी बेटी कहल- मै गुल्लर खैम ओ सँपराजाके घरे जैम ।

कुछ दिनके पाछे बडकिक बियाह एक राजासे लागल ओ छोटकिक बियाह सँपराजासे । दुनहुन बरात अक्के दिन आइल ओ बियाह कै कै अपन अपन घरे चलगैलाँ । बियाहके एक दुइ बरिस बितल रहे । दुनु बहिनिये लैहरे अइलाँ । राजा घरेक बडकी बहिनियक देहेम कौनो खास गहना नाइँ रहे बकी छोटकी बहिनिया जे सँपराजक घरे बियहल रहे उ पौलिसे सिरतक गहनागुरियासे लदल रहे । ओकर गहनागुरिया देखके बडकी बहिनिया मनेमनेम ललिचाय लागल ओ डाह करे लागल ।

अपन तकदिरके उ धिक्कारे लागल । एकदुइ दिन बितल ते बडकी बहिनिया कहे लागल– बैनी री मोके अपन सँपराजक घर लैचल ते कैसनबा महुँ देख लेतुँ तोर घरदुवार । गहनागुरिया ते एकलाग मजामजा पहिरले टे । मै ते राजक घर रहके यतना मजामजा गहनागुरिया बदा नइँ होइत । उहेदिन दुनु बहिनिये चल देहलाँ सँपराजक घर । पहिले ते ओन्हरे गुल्लरके रुखवालग गैलाँ । एकठु उडरलधुडरल घोलवक भिठवम सँपवक बिल्ला रहे । दुनुजन निहुर निहुर मुस्किलसे बिल्लम हललाँ तब भित्तर जाके घरदुवार महलअँटारी राजरियासत नोकरचाकर देखके बडकी बहिनिया अचम्हो खागैल । राजमहलके भितरे बहरे कुल हेरल बडकी बहिनिया । तब फिन खेतवा खरहेनवा बगिया फुलवरिया तालपोखरा घुमत घुमत पक्की कुवँक किनारे पुगलाँ । तब बडकी बहिनिया कहेलागल- बैनी री दे अपन गहनालुग्गा मैँ पहिरुँ ओ मोर गहनालुग्गा तैँ पहिर चली दुनुजन कुवम झाँकी कैसन बिलगाली । जब दुनु बहिनिये उहे मेरसे गहनालुग्गा पहिर पहिर जाके कुवा झाँके लगलाँ बस बडकी बहिनिया छोटकिक चुत्तर पकरके अचिक्केम कुवम ढकेल देहल । जब छोटकी बहिनिया कुवम उतमुताके मरगैल तब बडकी बहिनिया घुघुट काढके छोटकी बहिनियक घरेम जाके कारओर उसारे लागल । छोटकिक लैका बोकके फुसलाय लागल । सँपराजकसंहे उठे बैठे सुते लागल । जब सुता रात परल तब छोटकी बहिनियक आतमा जागगैल । रोजरोज लैका पियैलेक दुध चुर्रायलागल तब उ कुवमसे निकरके सँपराजक राजमहल ओर जाय लागल । पहिले गावँक पुरुब रहवेम एकठो झडुलार पिपरक रुखवा परे ।

रुखवातर पुगके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– "बोलु बोलु रे तैँ गौवाँके पिपरा, गौवाँके पिपरा, बालक रोवे मैँ दुध देउँ" । तब पिपरक पाता हरहराइलागल । तब फिन कुछ आगे जाके राजक घोडा बन्हना घोडसारी परे ।

घोडसारी लगे जाके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल–“बोलु बोलु रे तैँ राजक घोडा, राजक घोडा, बालक रोवे मैँ दुध देउँ” । तब राजक घोडवा हिनहिनाय लागल । तब फिन कुछ आगे जाक राजमहलके गेटपरे सङ्खी कुकिनिया बैठल रहे ओके देखके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– “भुँकु भुँकु रे तैँ सङ्खी कुकिनिया, सङ्खी कुकिनिया, बालक रोवे मैँ दुध देउँ” । तब सङ्खी कुकिनिया भुँ भुँ कैके भुँके लागल । जब राजमहलके पल्ला लग पुगल तब छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– “खुल खुल रे तैँ बजरा केवँरिया, बजरा केवारिया, बालक रोवे मैँ दुध देउँ” । तब पल्ला आपसे आप खुलगैल । तब ढेबरी लग जाके कहेलागल– “बरु बरु रे तैँ चौमुख दियना, चौमुख दियना, बालक रोवे मै दुध देउँ” । तब ढेबरी अपनेसे बरगैल । तब फिन लैकक छुके कहेलागल- “जागु जागु रे तैँ राजक बेटा, राजक बेटा, बालक रोवे मैँ दुध देउँ” । तब ओकर लैका जागगैल, ओ उठाके तेलबुकवा लगाके दुध पियाके फिन कहेलागल– “सुत सुत रे तैँ राजक बेटा राजक बेटा, बालक सोवे मैँ घरे जाउँ” । तब ओकर लैका निना गैल, तब उ लैका सुताके ढेबरी लग जाके कहेलागल– “बुतु बुतुरे तैँ चौमुख दियना, चौमुख दियना, बालक सोवे मै घरे जाउँ” । तब ढेबरी अपनेसे बुतागैल । तब पल्ला लग जाके कहे- “लगु लगु रे तैँ बजरा केवँरिया, बजरा केवारिया, बालक सोवे मैँ घरे जाउँ” । तब पल्ला आपसे आप लागगैल । “चुपु चुपु रे तैँ सङ्खी कुकिनिया, सङ्खी कुकिनिया,बालक सोवे मैँ घरे जाउँ । तब सङ्खी कुकिनिया चुपागैल । “चुपु चुपु रे तैँ राजक घोडा, राजक घोडा, बालक सोवे मैँ घरे जाउँ” । तब राजक घोडवा चुपागैल । “चुपु चुपु रे तैँ गौवँके पिपरा, गौवँके पिपरा, बालक सोवे मैँ घरे जाउँ” । तब पिपरक पाता चुपा गैल । तब यहरओहर देखताकके झम्मसे कुवम कुदगैल । फिन दुसर तिसर दिन फिन सुतली रात होय तब कुवमसे निकरके

पहिले पिपरातरे पिलिनियालगे दुवारी लगे तब बजराकेवाँर लगे जाय ओ ढेबरी बारे अपन लैकक जगाके दुध पियाय ओ सुताके वापिस लौट आय, बडकी बहिनिया ओकर रजवासंहे सुते पत्ते नै पावे । यिहे मेरसे जब ढेर दिनतक अयेनाजैना लागल रहे । तब एकदिन कौनो मनैनके नजर परिगैल ओ राजासे कहलाँ- "अपनेक महलमे रातके रोजदिन कौनो जनी आत, उ कौनो भुत हो की दुत हो की मनैक पुत हो खियाल करेक परल महाराज", तब राजा चौकन्ना होइके अपने खुदे ढुँकारी बैठके अकने लागल ।

जब सुता रात परल तब छोटकी बहिनियक आतमा जागगैल । लैकक पियना दुध चुर्राइलरहे तब उ कुवमसे निकरके सँपराजक राजमहलओर जायलागल । पहिले गावेँक पुरुब रहवेम एकठो झङुलार पिपरक रुखवा परे । रुखवातर पुगके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल- "बोलु बोलु रे तैँ गौवाँके पिपरा, गौवाँके पिपरा, बालक रोवे मैँ दुध देउँ" । तब पिपरक पाता हरहराइलागल । तब फिन कुछ आगे जाके राजक घोडा बन्हना घोडसारी परे । घोडसारी लगे जाके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– "बोलु बोलु रे तैँ राजक घोडा, राजक घोडा, बालक रोवे मैँ दुध देउँ" । तब राजक घोडवा हिनहिनाय लागल । तब फिन कुछ आगे जाक राजमहलके गेटपरे सङ्खी कुकिनिया बैठल रहे ओके देखके छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– "भुँकु भुँकु रे तैँ सङ्खी कुकिनिया, सङ्खी कुकिनिया, बालक रोवे मैँ दुध देउँ" । तब सङ्खी कुकिनिया भुँ भुँ कैके भुँके लागल । जब राजमहलके पल्ला लग पुगल तब छोटकी कारन कैके यी गित गाइल– "खुलु खुलु रे तैँ बजरा केवँरिया, बजरा केवँरिया, बालक रोवे मैँ दुध देउँ" । तब पल्ला आपसे आप खुलगैल । तब ढेबरी लग जाके कहेलागल– "बरु बरु रे तैँ चौमुख दियना, चौमुख दियना, बालक रोवे मै दुध देउँ" । तब ढेबरी अपनेसे बरगैल । तब फिन लैकक

छुके कहेलागल- "जागु जागु रे तैं राजक बेटा, राजक बेटा, बालक रोवे मैं दुध देउँ" । तब ओकर लैका जागगैल, ओ उठाके तेलबुकवा लगाके दुध पियाके फिन कहेलागल– "सुत सुत रे तैं राजक बेटा राजक बेटा, बालक सोवे मैं घरे जाउँ" । तब ओकर लैका निनागैल, तब उ लैका सुताके ढेबरी लग जाके कहेलागल– "बुतु बुतुरे तैं चौमुख दियना, चौमुख दियना, बालक सोवे मै घरे जाउँ" । तब ढेबरी अपनेसे बुतागैल । तब पल्ला लग जाके कहे- "लगु लगु रे तैं बजरा केवँरिया, बजरा केवारिया, बालक सोवे मैं घरे जाउँ" । यतना कहिके जब छोटकी पल्ला नाघे लागल तब्बे पल्लक दोसान्हेम नुकाइल सँपराजा ओकर चुप्पेसे ओकर हाथ पकरलेहल चप्पसे ओ कहल – "तैं के होले, भूत होले की दूत होले मनैक पूत होले, हमार राजमहलमे तैं काकरे राजरातके नुकानुका रोज आले ?" । तब छोटकी कहेलागल – "ना मै भूत होलुँ ना दूत होलुँ मै मनैक पूत होलुँ, मोर बडकी बहिनिया मोर गहनालुग्गा पहिरके मोही कुवम ढकेलके अपने तोहार रानी बनलबा, मै तोहार लैकक दाइ होलुँ, मोर लैका जब भुँखात तब मोर दुध चुर्रात ते मै अपन लैकक दुध पियाय रोज रातरातके यिहाँ आलुँ ?" जब यी बात सुनल तब सँपराजा अपन रानिसे पुँछताछ कैल तब बात सही ठहरल । बिहानउठ सँपराजा अपन दरबारमे सभाजुटाके नौवा बोलाइल । बडकी बहिनिया जे छोटकिक कुवम ढकेलके रानी बनल रहे ओकर मुडिक बार खौराके करिखा पोंतके गदहापर बैठाके डफला बजुवाके नगर घुमाके देस निकाला कैदेहल । ओ छोटकी बहिनिया फिनसे सँपराजक पटरानी बनाके सुखसे रहेलगलाँ ।

(स्रोत : सुन्दरी थारु । कन्चन गापा.वान.२ मटेरिया रुपन्देही ।)

चट्ठुर नम्हाँ

–सविताश्री चौधरी

संकलनः छविलाल कोपिला

एक्ठो बनवामे बहुत जानवर बैठिँट । उ बनवामे ओइनके रजवा बघवा रहे । ऊ बघवा ढेऊर बरस हुके बुर्हा रख्ले रहे । एक दिनके बात हो । बुर्ह्वा बघवा सिकार खोजे नै सेक्ना हुइलक ओरसे सक्हुनहे बलाके कचेहरि कैना उपाय जोरल । उपाय रहिस पालिकपाला आपन आहार बने अइना नियम बनैना । कचेहरि बलाइल सक्कु जानवर ओकर राज दरबारमे अइलाँ । जब कचेहरि सुरु हुइल, बघवा आपन बात ढारल । 'सुनो जुटल सक्कु जानवर । टुहरे मोर प्रजा होऊ, मैं बुर्हा गैलुँ । आपन आहार खोजे जाइ नै सेक्ठुँ । एकर बेवस्था टुहरे कैडेहे परल ।' ओकर बात सुनके सबजाने खुसुर-फुसर करे लग्लाँ । केउ नै उपाय बटाइ सेकल । तब ऊ फेन कहल 'टुहरे केउ उपाय नै सोचे सेक्लो मैं एक्ठो उपाय सुच्लुँ । टुहरे मँजुर हुइठो कि नै ? मैं कहुँ जाइ नै सेक्लक ओरसे आब टुहरे पालिक-पाला मोर आहार बने आइ परी ।' सोचल अन्सार सक्कु जानवर ओकर बातेम मँजुर फेन हुइलाँ ।

बुर्ह्वा बघवा आपन घरेम बैठल रहे । बनवक जानवर पालिकपाला ओकर आहार बने आँइट । ओ ऊ आपन पेट फेन मज्जासे भराए: । एक दिन बघवक ठन आहार बन्ना पाला नम्हँक अइलिस । ऊ नम्हाँ बहुत बुड्धिवाल रहे । जब ओहाँ पुगल ते बँच्ना बुड्धि जोरे लागल । तब ऊ एक उपाय फेन जोरल ।

जब बुर्ह्वा बघवा आपन डोँडरेमसे डँहर्टि निकरल । नम्हाँ तरे मुरि कैले मनमर्ले बैठल रहे । बघवैहे डेख्के मनमर्ले सेवा सलाम लागल ओ कहल 'राजा साहेब महिहे खैनासे पहिले मोर एक्ठो अरजि सुनडेबि ।'

'हाँ का बात हो कोह ?' फेन गुँजरल, मोटु फुट्ना मेर । मुले नम्हाँ अक्को नै डराइल बेन आपन बात निढरक्के ढारल ।

'राजा साहेव यी बनवक सक्हुनके राजा ते अप्ने हुइ कैह्के सोच्ले रहुँ। यहाँ ते डोसर सवाज फेन मैं यी बनवक राजा हुँ कैह्के महिहे खाइक खोजल। मैते बर्बट्टि भागके यहाँ पुगल बटुँ।' ऊ बनौरि आँस पोँछ्टि बोलल।

ओकर बात सुनके बुह्र्वा बघवा आउर गुँजरल रिसैटि 'के बा ? महिसे भारि इ बनवामे ! डेखा कहाँ बा ?' कहटि नम्हाँहे कहठ। नम्हाँ बघवैहे डेखाइ लैजाइठ। बघवा बुर्हाइलके मरे नँगरघ्यँच-नँगरघ्यँच करटि चलल पाछे-पाछे। जाइट-जाइट जब डगरेम एक्ठो कुँवा आइठ। तब नम्हाँ कहठ 'राजा साहेव, इहे कुँवक भिट्टर नुक्के बैठल् बा।' बघवा हेरल कुवाँमे। आपन बौनि डेखल। उहिहे फुर्हन्ने डोसर बघवा हो कैहके लग्लिस। ऊ आपन बौनि झप्ते गुँगवइटि कुडल। ऊ ओँहे कुवाँमे बुरहे मुँके मरगैल।

जब रजवा बघवा मरल सुनके बनवक जानवर बहुत फोंहि लग्लिन ओ नम्हँक बरवार सम्मान कैलाँ। नम्हँक सक्कु ओर नाऊँ चले लग्लिस्। चारु कोनवाँ नम्हँक हाइ ! हाइ !! हुइ लग्लिस। ऊहे बनवाँमे एक्ठो महा मेच्छाहा गिड्रा फेन रहे। नम्हँक नाऊँ चलट सुनके ऊ बिर्हे मुएँ लागल। ऊ नम्हाँहे मर्ना उपाय जोरे लागल्। नम्हैंहे खटहामे कुडाके मुँवइना टिउ निकारल। गिड्रा एक्ठो बरवार खट्हा खोंडल। खटहक उप्परसे झालापाटाले छोपके नुक्वाइल। गिड्रा मुहेमसे लार चुहइटि 'नम्हाँ इहे डग्रा ते आइ ओ इहे खटहामे गिरके मर्जाइ।' कैहके मने-मने सोचे लागल। 'बघवा मरुइया बहादुर नम्हाँ मोरे हाँठसे मुँइ। तब मोर फेन नाउँ चलि' कैह्के फोंहिक मरे कुडुक कुडुक नाचे लागल।

उहे समय आँधि घुघ्वइटि आइ लागल। पानी फेन बर्से लागल। सक्कु जानवर आपन-आपन घरे ओर डौरे लग्लाँ। मेच्छहवा गिड्रा फेन बयाल पानी डेख्के नच्टि-नच्टि डौरट भागे लागल। टैसे आँधि हुर्दुरसे अपने खोंडल खटहामे ढकेल डेलिस। गिड्रा ओँहे गिरके मुँगैल। अइसिक अउरे जनहुनहे खटहामे गिराके मुँवइना ट्यू लगुइया गिड्रा अप्नहें मुँअल्। उहेक मारे हम्रे केउ फेन आउर जनहुनसे रिस नै कैना हो।

लोभिया भैया ओ सज्जन डाडु

-सविताश्री चौधरी

राप्ती-६ छुट्की सिसहनियाँ

देऊखुरी

उहे जवानामे एक्ठो गाउँमे दुई जाने डाडु-भैया बैठिट। बर्कवा इमान्दार ओ सोझ रहे, भैवा ठनिक लोभिया रहे । एक दिन ओइनके बाबक कालगटिसे मुँगैलिन्। बाबा व्यापारि रहिन। ओकर लगानी फेन ढेर रहिस। बाबक मौटके पाछे घरक सक्कु बोझा डाडु भैवनके कन्ढामे अइलिन।

एक दिन ओइने आपन बाबन लगानि उठाइ गाउँ गैलाँ। डगरेमे एक्ठो लडिया नाँघे परे। जब लगानि उठाके घुमेबेर भैवक मनेम लोभ जागे लग्लिस्। डाडुहे लबारके सक्कु सम्पत्ति अक्केलि हँठ्यैना टिऊ लगाइ लागल। लडियातिर बैठल डाडुक आँर मारके कैसिक सक्कु सम्पत्ति अक्केलि हँठ्याउँ कैह्के खोब सोचल।

ओँहोँर डाडुभर आपन खैलक डुठ-कुठ ओ ढेउर हुइलक भात लडियक मछरिनहे डारल। ओकर पुन जलडौंटाहे डेहल। डौंटा फेन ओकर पुनः मन्लिस। बालुम आपन लुंगि बिछाके सुतल एक्के घचिम ऊ निडा गैल।

ओकर भैवा आब इहे मौका हो कैह्के गाउँमनसे नानल एक हजारके सोनक पैसक पोक्रिक नन्हाँ छोट-छोट ढुंगक पोक्रि बनाइल। डुनु पोक्रि अक्के ठाउँमे ढारल ओ घटुरियक अस्रामे बैठल। कुछबेरमे घटुरिया फेन आपुगल। लाउ जब बीच लडियामे पुगिते लाउमे हटमटाइहस कैके गिट्टि बाँढल पोक्रि पानीमे बगैना विचार करल। मुले हटपटके काम लटपट कहेहस। ऊ भुलाके सोनक पैसा पानीमे बगाइल। अट्रा कैके सेकल ते ऊ डटकरल बहाना बनैटि कहल- 'डाडु एक हजारके सोनक पैसक पोकरि ते पानीमे गिरगैल। आब का कैना हो ?'

'पानीमे गिरगैल ते का कर्बे ? हो गैल, जिन सोच।'

जलडौंटा यी बात पटा पाके विचार कैल । एकर डेहल पुन मोर सम्पत्त बर्हल । यकर धनके रख्वारि मै करे परि । अट्रा बात सोंचके आपन सट डेखाइल । एक्ठो बरवार मुँह हुइलक मछ्रिइहे ऊ पोक्रि लिले कहल ओ अप्नहे रखवारि कैल ।

लोभिया भैवा घरेम पुगके आपन डाडुहे ठग्लुँ कैह्के पोक्रि खोलल । पोक्रिमे गिट्टीकिल भेटाइल । ऊ डेखके छटपछैटि मनमर्ले सुटल ।

डोसर दिन जलहरियन मछ्रि मर्टि आइटहिँट । ऊ सोनक पैसा लिलुइया मछ्रिया डौंटक सटसे जालेम बाझ्ल । जलहरिसयन उहिहे बजारमे बेचे लैगैलाँ । बरवार मछ्रिया डेख्के मनै ओकर मोल पुँछलाँ । ओइने एक हजार साटमासा बटैलाँ ।

मोल सुनके हजार जैना मछ्रि फेन डेख्यौल कह्टि खिटराइ लग्लाँ । जलहरियन बजार घुमित उहे बर्का डाडुक घर पुग्लाँ । 'अरे मछ्रि लैलेऊ मछ्रि' कहटि गोह्रैटि आइटहिँट । बर्कवा घरेमसे निकरके डाम पुँछल । 'अरे कठेक हो ?'

'साटमासा'

'अरे आउर जनहुनहे कठेक सुनैठो ?'

'आउर जनहुनहे ते एक हजार साटमासा । टुहिनहे भर साटमासम डैडेब ।'

ऊ ओइनके सुनाइल मोलमे हामि भरल ओ मछ्रिया खरिडल । जब मछ्रिया काटल । मछ्रियक पेतेमसे एक पोक्रि एक हजार सोनक पैसा निकरलिस । पोक्रि खोल्के हेरेबेर आपन अंगरिक छाप डेख्के आपन पैसा चिन्हल ।

उप्पर बडरिमसे नै डेख्न मेरके उर्टि रहल जलडौंटा उप्परेसे बोलल 'तै आपन उबरल भात मछ्रिनहे खाइ डेलकमे मोर पुन हुइल रहे । उहे ओरसे मै तोर सक्कु धन रखाडेले बटुँ । ओ ऊ भैवा चलाखि खेल्लक सक्कु खिसा फेन बटा डेहल । तब ऊ चाल पाइल कि मै आपन भैवैसे अइसिक ठगवा पाइटहुँ कैह्के ।

पुछ उँखार

-सुलोचना चौधरी
लमही-४ भैस्कोर्मा
डाङ-डेऊखुरी

ढेर बरस पहिलक बात हो । जौन समय हमार देसमे झप्स्यार-झप्स्यार बनवाँ रहे । ठीक समयमें ठीक मात्रामें पानी पर्ना, बार्ह कम अइना काठीपाटक कमी नै हुइलक ओरसे कायल बनवाँ नेपालके धन कहना उखान बिल्कुल ठीक लागे ।

कटिहुन, उहे समयमे झप्स्यार बनवाँमें एकठो बनसुरा ओ बघवा मित मिलैले रहिँट । ऊ डुन्हुनके बरा मेल रहिन् । सँगे उठ्ना, बैठना, खैना, सुटना ओइनके दिनचर्या रहिन् । समय विटट् गैल । एक दिन डुनु संघरियन एकठो बनवक किनारे बैठ्के सुख दुःखके बात बटवाइट् रहिँट् ।

खेटवामे मनैं आपन-आपन काम कैनामे लागल बिलगैंट् । मनैनहें खेतीपाटी करट् डेख्के डुनु मितनहे फेन खेती कैना इच्छा लग्लिन् । डुन्हुनके सल्लाह अनुसार ऊ साल ओइने धान खेती कैलाँ । धान खोब मजा हुइलिन, काकरे कि बनवाँ झप्स्यार रहे पानी ठीक मात्रामे बरसे । सुक्खा परना ते बाते नै रहे । धान जब फुट्के पक्ना समय हुइल्, तब डुनु जाने धान खैना सल्लाह कैलाँ ओ बघवा कहल-'मित होइ टुँ टरे लेबो कि ऊप्पर ?'

सुरा कहल-'मित मैं ऊप्पर लेम ।' बघवा मन्जुर हुगैल् । सुरा धानक बाले बाले पायल, बघवा जुन जरे-जरे किल् । धान खाके सुरा खोब ठूल्हा गैल । मुले, विचरा बघवा का खाइ । ऊ बहुत डुब्वर हुगैल् ।

दिन अँठ्वार, पाख, महिना करटी साल बिट्जाइठ् । डोसर बरस डुनु मित घुइया लगैना विचार बनैलाँ । घुइया जब ओँइरल् । तब डुनु मितवन सल्लाह कैलाँ । बघवा पुँछल् 'मित होइ टुँ केहोर लेबो ?'

सुरा कहल-'मित पोहर साल मैं उप्पर लेले रहुँ । अप्की टुँ ऊप्पर लेऊ मैं टारे लेम् ।'

बघवा कहल 'लेऊ ते का ठीके बा ।' अबकि बार फेन सुरा फायदा पाइल । बघवा जुन घाटामें परल । उहे कारन सुरा आउर ठुल्हा जाइठ, बघवा जुन डुब्बर ।

एकदिन बघवा ओ सुरा बनवक आँरीतिर बैठ्के आपन-आपन बात बटवाइट् रहिट् । तब सुरा खिटराइ बुढी कहल् । 'मित नानो आज हम्रे डब्नी भिँरी ।'

बघवा फेन कहठ् 'लेऊ ते का ।'

डुनु मित डब्नी भिर्ना सुरु कैलाँ । मोटाइल हुइलक ओरसे डब्नीमें सुरा जिट गैल् । ओइनके डब्नी भिराई कुछ दूर एकठो बर्डिवा डेखल् ओ ठिठ्ठा मारके हाँसे लागल् । हाँसी सुनके बघवा ओ सुरा हेर्लां ते एकठो लवन्डाहे डेख्लाँ ।

बघवा लवन्डक ठन जाके कहल 'अरे भैया गाउँमे जाके बघवा हट्गैल्, सुरा जित गैल् जिन कहिस्, ना नै ते मोर बरा लाज परी ।'

लवन्डा नै बटैना किरिया खाके बघवासे छुट्टी पाइल नै ते बघवा खा डरुइया रहे । जब साँझ हुइल लवन्डा आपन गोरु लेके घरेओर लागल् । यहोर बघवा ओ सुरा आपन बसैंरा ओर लग्ठाँ ।

जब रात परे लागल लवन्डक मनेम बहुत मेरके बात खेले लग्ठिस् । ओहोर जुन अँढार हुइटी साइट लवन्डक घरक भित्ताटिर आके बैठ् जाइटी साइट लवन्डक घरक मनै खानापिना खाके जब सुते जैना टयारी करठाँ । तब लवन्डा आपन डाइहे कहल् । 'डाइरी मोर खटिया बिच्चें बीच बिछाडिस ना ।'

डाई कलिस् 'का करे छावा ?'

लवन्डा कुछ नै बटाइठ् । डाई खोब जिड्डी कैके पुछे लग्लिस्, बघवक हट्लक सुरा जिटलक बात बटवा डेहठ्, जौन बात घरक भित्ताटिरसे बघवा सुन लेहठ् । जब लवन्डा ओकर डाई बाबा सब निडैठाँ । बघवा भिटा चिरके भित्तर पैठ्के निडाइल लवन्डाहे खटिया सहिट उठाके लैजाइठ् बनवामे ।   चलते-चलते बघवा जब कुछ दूर पुगल् । लवन्डक निँड् खुल्ठिस् । सोँचल् अब बघवा मही आपन सिकार बना डारी । बघवा जब एकठो बहुत बरा वर्गडवक रुखवक

टरे-टरे जाइटहे, तब लवन्डाहे एकठो जुक्ती सम्झलस् । बर्गडवक लम्मा लम्मा लहरा झुलट् डेख्के चुप्पे लहरा पकरके रुखवा पर चौँहगैल् ।

बघवा कुछ दूर पुगल ओ उही बरा जोरसे भुख लग्लिस । सोचल अब लवन्डाहे खाके भुख मेटाइ परल् । जब खटिया भुइयम ढारे जाई लागल्, ऊहे समयमें खटिया पर ढैलक लोटक पानी अँराइल् । बघवा सौँचठ् 'लवन्डा डरक मारे मुट मारल् । अब्बा मोर सिकार बनी ।' बघवा खटिया भुइयम ढैके गुडरी उभुकके हेरल्, तब उहाँ ते कुछ नै भेटाइल् ।

ओंहोर लवन्डा जुन रुखवक जरे टिरिक बरे भारी डोंडरक भित्तर नुक्जाइठ् टाकि बघवा भेटाई नपाए: । यहोर बघवा आपन अइलक डगरे-डगरे मनैनके बास सुघ्टी खोजे लागल् । जब ऊ रुखवक डोँडरे ठन पुगल् तब मनैनके वास पालेहल् । डोँडरेम् मुरी पैठैना गैँह् लगाइल् । लेकिन, नै पैंठ्लिस् तब आपन पुंछी डोंडरम पैठ्वाइल् । उहे समयमें लवन्डा अरगोरी लगाके बघवक पुँछी बरे जोरसे पकरलेहल् । तब बघवा पूरा बल लगाके पुँछी टानल् ओकर पुँछी उँखर गैलिस् । डरक मारे बघवा वनवक भित्तर जब भागे लागल् उहे समयमे भलवा भेट हुइल् ।

भलवा बघवासे भग्लक करन पुछल् । ऊ आपन सारा कहानी बटाइल् । तब भलवा कहल 'कहाँ बा पुछ्-उँखार ?' बघवा दूरेसे भलवैहे डोंडर हुइलक रुखवा डेखाइल् । तब भलवा कहल 'मै पछ्मुरे रुखवा पर चौर्हठुँ । भलवा जब रुखवा पर चौर्हल् तब उप्पर ढोढ्राइल् रुखवा डेखठ् ।

ओहोर बघवा बरे दूरसे भलवक गतिविधि हेरल् । ठीक्के उहे समयमे एकठो गिड्रा बघवक ठन आके पुछल् । 'बन राजा का हेरटो ?'

बघवा घटलक बात सुनाइठ् । गिड्रा कहल 'कहाँ बा पुँछ उखार ? चोलोझट्टी डेखाई मैं एक घचिकमे खटम कै डेम् ।'

बघवा कहल् 'सँगे जैबो ? टुँ पुँछ ऊखारके लग्गे पुग्टी साइट भाग जैबो ।'

गिडरा कहल 'अघट्टी भागक डराइटो ते मोर पुछी आपन ठुठिलवा पुँछीमे जोर लेऊ ।' बघवा गिड्रक पुँछी आपन पुँछीमे जोरके पुँछ ऊखारके ठन लैजाई लागल् ।

बघवा ओ गिड्रा पुँछ ऊखार रलक रुखवक ठन पुगे-पुगे करे लग्लाँ ते रुखवक ऊँप्पर डोंडरेम अँटकल् भलवक होंक होंक, होंक होंक आवाज सुन्लाँ । आवाज सुनके डरक मारे बघवा बरे जोरसे छटकके भागल् । बघवक छटकाइमें गिड्रा चार ढुन्मुन्नी खेलल् । उठा पटकीमें परके गिड्रा मर जाइठ् ।

बघवा जब पाछे घुमके हेरठ् ते गिड्राहे डाँट गिज्रैले डेखठ् । ओ रिसके मारे कहठ् 'केकरो ज्यान जैना, केकरो हाँसी अइना ?' बरे मुसिकलसे आपन पुँछिमेसे जब गिड्रक पुँछी छुटाइल् । जानल् गिड्रा ते मर रहल् कैह्के । तब गिड्राहे छोरके डरक मारे बघवा बनवक भित्तर भागजाइठ् ।

डोसर ओर लवन्डक घरक डाई-बाबा आपन छावाहे बघवा बनवम लैजाके खा डारल् हुई कैके रोहा-ढाहीमें रठाँ । यहोंर जुन लवन्डा जब रुखवक डोंडरेमसे निकरके ओहोंर हेरल् सुनसान डेखठ् । तब उहाँसे सरासर आपन घरे पुगठ् । ओकर डाईबाबा आपन छावाहे पाके बहुत खुसी हुइठाँ ।

एहोंर जुन बघवा आपन हार हुइलक ओरसे सुरासे डब्नी भिँर्ना बात कब्बो नै सोचल् । ओइने डुनु मित सुख डुःख काट्के सँगे-सँगे बैठे लग्लाँ । सायद उहे समयसे बाघ मनैनहे पुँछ उँखार कठाँ ओ डरैठाँ फेन ।

ढेल मराइ

-बौखा डंगौरा

बहुत बरस पहिलक् बात हो । एकठो गाउँक् भलमन्सा गाउँ भरिक मनैन् कहल, ‘भैयौ रे दिनपाट आगिल घर छैंना बा । चोलो जाइ खर्ह काटे ।’ तब बन्वम् गैलैं खर्ह काटे । खर्ह कट्ट-कट्टि जेकर कम कट्ना रहे, ऊ झट्टे भरुवा पुगा ढारल । जेकर धेर कट्ना रहे, ओकर समय लग्लिस् । एक जने लवन्डा भल्मन्साहे कहल, ‘भल्मन्सा जि हो कब जाब हो घरे ?’ भल्मन्सा कहल, ‘अरे भैया, ठोरचुन नै पुगल् हो । अभिन काट लेऊ ।’ एहोंर जुन भल्मन्सै खाइकलक बघुवा डाउ लगाए ।

ऊ भल्मन्सा बरा डेख्नौस रहे । बघुवा जब सुनल ते मनेमने सोंचल ‘अरे बरा भारि ते मै हुँ । महिसे भारि ते यी बा । यीहि ते सबकोइ पुछ्े अइठिस् । एकर मतलब पक्का यी बहुत ठाउँ नेंगठुइ । आब यीहिसे अपन जन्नि बना माँगे परल ।’

बघुवा भल्मन्सक् ठेन पुगल । बघुवै एक्फाले डेख्के भल्मन्सा डराइ लागल । तब बघुवा भल्मन्सक् ठेन आके कहल, ‘तुँ ते बरा भारि बटो हो भल्मन्सा ।’ ऊ धिरधिरे कहल, ‘हाँ बटुँ ते ।’ बघुवा कहल, ‘हेरो टुँ महिन डेख्के ना डराऊ । बात अइसिन बा, मोर जन्नि नै हो । मोर जन्नि मुगिल । तुँ सक्कुओर डुनियाँ घुम्ना मनै, मै टुहिन बरा भारि मनै मन्नु । मोर टन टुँ जन्नि बनाइ सेक्बो ?’ भल्मन्सा का कहुँ, का कहुँ बिचरा अक्माइ गिल । तब कहल, ‘ठीक बा, मै टोहाँरटन जन्नि बना डेबु ।’

बघुवा मन्के फोहैटि भल्मन्सक लग सौजा खोजे गैगिल । एहोंर भल्मन्सा हाँक पर्टि कहल, ‘रे भैयौ, यहाँ बरा भारि बघुवा बा । अपन अपन लह्विया मच्याइ ओ चलो घरे भागि । सारे अब्बे यी किहि खाइट, खाइकटन ते आइल रहे । लेकिन नै बन्लिस कि का हुइलिस गैगिल ।’

सक्कु गँवलियन् लह्विया मच्यइलै ओ घरे चलगिलैं । जब रात हुइल ते बघुवा छिपकटि सरीर मर्टि भल्मन्सक घर हेरे आगिल । ओ भल्मन्सै घरेम पेलट डेख्के घर पटा पागिल । तब फेंन ऊ बनुवम आगिल । उहाँ ऊ बनुवामे बरवार सौजा

मारके ढैले रहे । जब रातके सबकोइ सुटलैं । तब सौजा बोक्ले बघुवा आगिल ओ भल्मन्सै उठाइ लागल, 'ओ भल्मन्सा जि, भल्मन्सा जि बटि हो ?' भल्मन्सा डरैटि सोचे लागल, 'सारे यी बघुवा आब पिछ्रा परगिल । यी ते रातके आइगिल, का करुइया बा ? खउइया ते नै बा ?'

बघुवा कहल, 'भल्मन्सा जि निक्रि ते बाहर ।' तब भल्मन्सा डरैटि बाहर निक्रल । कहल, 'का कहटि ?' बघुवा सौजा डेटि कहल, 'लि, मै अप्निक तन सौजा लान डेले बटुँ । यी तोहाँर अगौना । मोरलग जन्नि बना डेबो कैह्के ।' अत्रा कहल ओ बघुवा सौजा ढर्के चलडेहल ।

कर्टि कर्टि कुछ दिन रैह्के फेंन आइल बघुवा रातके भल्मन्सक् घर । ओ, पुछ्रल, 'ओ भल्मन्सा जि । मोर टन जन्नि बना डेलो कि नाइ ?'

-भल्मन्सा मने मने कहल, 'अरे अन्ढरा, मै बघुवक् लग कहाँ जन्नि बनाडेहे जाऊँ ?' मने बघुवाहे लोभौरि बात कहल, 'बनैना ते मै जन्नि बनाडेले बटुँ । लेकिन ढेलमराइ बरा कर्रा बा । अगर ढेलमराइ टुँ सहलेबो ते जन्नि भेंटालेबो, अगर नै सहे सेक्बो ते टुँ जन्नि नै भेटैंबो ।'

बघुवा कहल, 'अरे सहम ते काहुँ । जन्नि भेंटाइक लग ते जा फे सहे ते परि काहुँ । बेन अपने तयारि करि ढेलमराइक् लग ।'

भल्मन्सा डुइठो भैंसा मारल ओ छलरा छुटाइ लगाके उहि बनाइल बोरा । ओ, नसलेके सियल ।

कुछ दिन रैह्के बघुवा आइल ओ कहल, 'ढेलमराइ बनैलि ते भलमन्सा जि ?'

भल्मन्सा कहल, 'तयार बा हो, तयार बा । बस्, टोहारे अस्रा रहे । लेउ मै सब रसम पुरा कै डेले बटुँ । टुँ एकर भित्तर पेलो ।' ओ कहल, 'बल नै नुकाइ परी । अगर बल नुकैबो ते टुँ जन्नि नै भेंटैबो ।' तब बघुवै ओकर भित्तर पेलाके बाहरसे खोब घनके सियल । ओ कहल, 'लेऊ, आब टुँ खोब डट्के बल करो । जत्रा ते टोहाँरठेंन बल बावै एक्ठो फेंन नै नुकाके बल करो ।'

बघुवा खोब बल करल । सियल बोरिक भिट्टर ऊ कट्रा बल करे सेकि ? भल्मन्सा पुछ्रल, 'टोहाँर बल अट्रे हो ?' बघुवा कहल, 'हाँ अट्रे हो ।' भल्मन्सक जुगार रहिस् यदि यी टुरे नै सेकि ते भिट्टरे रैह्जाइ । नै ते हम्रहिन खा ढारि । तब बघुवा

नै सुन्ना मेरके गाउँक मनैन् ढिरेसे कहल, 'चलो भैयौ कोह्निया बघुवा खोब जन्नि बना माँगतेहे । उहि मै छल्रक बोरक भिट्टर पेलाके सिरख्ले बटुँ । भँठ लेऊ ओ ठठाइ चलो ।' आब गाऊँ भरिक किसन्वन् भँठले मारे लग्लै बघुवै । जबसम सहे सेकल ते बघुवा बल करल, जब नै सहे सेके लागल ते ऊ फेंन चलाक रहे बस् चुमचाम होगिल । तब भल्मन्सा कहल, 'रे लैजाऊ मरगिल कोह्निया, लडियम् फेंका आऊ । भाग हुइहिस ते स्वर्गमे जन्नि भेटा जाइ ।' तब किसन्वन् लडियम् फेंकाअइलैं । पानी भेंटाइल ते छाला फुलगिल पुरा भैंसाहस् ।

एहोंर एक्ठो बघुनियाँ लर्का पाके अपन लर्कनलग खैना खोजतेहे । ओकर ठरुवा मुँवल रहिस् । ऊ डेखल लडियम् पुहके आइट गँवलियन्के बगाइल ओहे भैंसै । जस्तक भैंसा पुहटि जाए:, ओस्टके बघुनियाँ लडियक ढिक्वै ढिक्वै ओक्रे सँगसँगे जाइल करल । एक ठाउँ ऊ केहोंरो किनारा लागल ते अगिल्का गोरा नफाके झप्टल । पानीमे कौनोफें गरु चिज हलुकसे आजाइठ । ऊ बरा सहजुल से अपन ओर टानल ओ ढिक्वम् टान्के चिंठे लागल । जब चिंठे लागल ते कहल पहिले अप्ने खा लिऊँ ते पाछे लर्कनटन लैजिबु । बघुनियाँ चिंठलक मारे छलरामे फोङ परगिल ते बघुवा मजासे सास लेहे पाइल । ऊ ठोरठोर टौगर होरख्ले रहे । ऊ धिरेधिरे बाहर हेरल । उहिहे चोट ते लागल रहिस, मने सरीरमे चिन्हा नै रहिस । डुइठो छल्रक मारे ऊ ओट्रा ज्याडा चोट नै भेंटैले रहे । जब ठोरचे भारि फोंग हुइल ते डेखल अपन आगे बघुनियैं ।

बघुवा मने-मने कहल, 'ओहो वास्तवमे ऊ बरा मजा भल्मन्सा रहे यार । ढेलमराइ सहना ते महा कर्रा रहे । मने मोरलग जन्नि ते बनाडेले बा ।' बघुव्क जन्नि नै रहिस् ओ बुघुनिक् ठरुवा नै रहिस् । तब बघुवा कहल, 'अरे अइसिन मरल सिकार का कर्बो हो, चलो जाइ डोसर सिकार खोजे ।'

बघुनियाँ कहल, 'मोर डुइठो लर्का फे बटैं ।'

फेंन बघुवा कहल, 'अरे टोहाँर ठरुवा नै हो, मोर जन्नि नै हो । टोहाँर लर्का मोर लर्का, मै फेंन ते हेरम जे आब ।' तब डुनु लर्कन लेलैं ओ बन्वम् जाके सिकार मार्के बह्रिया बह्रिया सिकार लर्कन् खवैलैं ओ अप्ने फेंन खैलैं ।

तब बघुवा एकदिन कहल, 'अरि बघुनियाँ, हमार भोजबिहा ते होगिल । मने एकठो भल्मन्सा बावै बरा मजा मनैं । उहिहे हमार भोजक खुसियालि कहिके धन्यवाद

देहे ओ सौजा देहे जाइ परी । ओहे ते टुहिसे मोर भेट करा डेहल ।' ऊ सारा विवरन बटाइल । ठरुवा ढेलमराइमे पर्के पिट्वा पैलकमे सोग लग्लिस् बघुनियाँहे । मने जोरि बना डेहुइया भल्मन्साहे मने-मने धन्यवाद देटि ऊ कहल, 'छिहा बरा, पहिले काजे नै बटैलो ? लेऊ आजु जाबि सौजा डेहे ।'

डुइठो सौजा लेके उइने बघुवा बघुनियाँ भल्मन्सक घर रातके गैलैं । वहाँ जाके कलैं, 'ओ भल्मन्सा जि । भल्मन्सा जि बटि हो ?'

भल्मन्सा सुनल ओ मनेमने कहल, 'सारे यीहि ते मै मार्के लडियम् फेंकैले रहुँ । यी ते फेंन आगिल जिके । अब्कि ते पक्का नै छोरि, बिरकुल खाइ ढारि ।'

बघुवा कहल, 'अरे निक्रि ते अप्ने काहे अट्रा ढिला करटि ।' ओहोंर भल्मन्सा जुन डरक मारे निक्रबे नैकरे । बघुवा कहटा, 'आइ ना अप्ने, निक्रि हलि । नै हुइ कुछु, ना डराइ ।' तब भल्मन्सा निकर्के कहल, 'का कहटि हो वन महराज ?'

बघुवा फोहैटि कहल, 'डेखि भल्मन्सा जि, बहुत बढ्िया मनै बटि अप्ने । मानक परि अप्नेहे । अपनेक ढेलमराइ सहना ते बरा कर्रा रहे । मने जन्नि ते मिल्वा डेलि भला । हेरि, जन्नि लेके आइल बटुँ सौजा डेहे ।' भल्मन्सक् ठेन बघुन्या लजाइ हस करल । यीहे अग्वा हुइट कहिके । बघुवा कहल, 'लि, यी एकठो सौजा अप्नेक भोजक् खर्च हो ओ डोसुर सौजा खुसियालि हो । लि अप्नेन्के खैबि । हम्रे डुनु परानि जाइटि । 'तब बघुवा बघुन्या बनवम् चलगिलैं । यहोंर भल्मन्सा गाउँभरिक सक्कु मनैं जुटाके 'ढेल मराइ' हो भैयौं कहिके सिकार खवाल ।

सिकरिया

-दुर्जन चौधरी
कैलारी-६,
बेनौली कैलाली

एकठो गाउँ रहे । ऊ गाऊँमे एकठो सुखि परियार रहे । ऊ परियारमे चार दादा-भाइ रिहँट । ऊ चारु दादा-भाइ पह्रल लिखल ते नै रिहँट मने तीन दादा-भाइ सिपार रहिँट । बर्का, मँभ्ला, सँभ्ला तीनु भाइ काम सिखल रहिँट । ओइनके हाँठेम आपन आपन सीप रहिन । मने छोट्कवा भर कुछ फेन काम नै जाने । बस हाँठेम गुर्टा गोलि लेना चल्डेना बन्वाँओर सिकार खेले । सिकार खेले जैना मने अक्को गुडिभाङ नै मारके नन्ना । चिरैक भुट्ला तक नै नान पैना । खालि दिनभर बन्वँइ बन्वँइ नेङना घुम्ना आके घिच लेना । डादन् भर दिनभर आपन आपन काम करके ओर्वाके आके मजासे खैना । छोट्कवा सिकरिया भर दिनभर नेङके किल खैना । सिकार खेले जाइट सारे कुछ फे नै मारके नानट । खालि सिकार खेले जाइटु कैह्के घरसे निकरट दिनभर गायब रहट कैह्के बर्का दादा मनमने भुनभुनाइ लग्लिस । छोट्कवा रोज सिकार खेले गैलक ओरसे उहिहे ओकर गाउँक मनै जम्माजे उहिहे सिकरिया कहिँट । तबसे ओकर नाउँ सिकरिया परिगलिस ।

छोट्कवा जैसिन रलेसे फेन सबके डुलारु रहे । ऊ रोज दिनजस्ते आज फेन आपन घरक कुछ नै हुइलेसे फेन दुइठो गुइ लेके चर्हाइ चल डेहठ । आपन जबियामन गोलि गुर्टा लेके चट्टा ओर चल परल । यहे कामसे रोज दिन ओकर दिन बिट्टि गिलिस । जब गोरुनके काम रहल बेला ओकर दादा गोरुनहे खेतवा लैजाइस । ऊ दिनभर ऊ आपन गयर्वा संघरियनसँग गल्गल्ला मारके, सिकार खेलके किल बिटा डेहे । फेनसे आके खाना खालेहे ।

छोट्कवक् अस्ते हरकटसे ओकर डादन्के छोट्कवक भोज कर्ना सल्लाह करठै । नै ते छोटकवक् भोज नै करब ते यी छोट्कवा अस्ते कर्टि रहि । ‘काम न काजके, खाएः अनाज डाबके’ अस्ते काम किल करट छोट्कवा । आब छोटकवक् भोज

करहि परल कहिके सिकरियक टिनु डाधन सल्लाह करलेठै । भोज करब ते सायड कुछ काम करट कि कना हिसाबसे आपन सिकरिया भैयक जम्मा जे बात चलाइ चलडेठै । बात चलाके अइठै । मजासे भोज बियाहके तयारि करठै । लग्गे भोज आइल बेलाफे सिकिरयक चाल ढङ्ग नै बदलल रठिस । घरक मनै दादाभौजि जम्माजे परेसान रठै । भोज आइल बेला फेन यी छोट्‌कवा असिन करठिन । अक्को सिरियस नै हुइन । हमार लाज ते नै करैहिन यी छोट्‌कवा कहटी भौजिनफे बरबराइ लिग्लस ।

जब भोजके दिन एकदम लग्गे आइल । कहल के जोरसे बलजबरे सिकरिया बन्वा नैगैल । दादा भौजि आपन छोट्‌कवा भैयक डेवरवक भोज मजासे करलै । भोज करल कुछ दिन किल घरे बैठल । फेनसे छोट्‌कवा आपन पुराने खाँचामे गइगिल । गुर्टा गोलि उठैना ओ बन्वाओर जैना । छोट्‌कवक असिन हरकटसे दादा भौजिन फेनसे रिसाइ लग्लिस ।

एक दिन बर्कि भौजि खेल्वारे खेल्वारे कहे लिग्लस- 'अहोइ सिकरिया डेवर्वा आपन गोसिनियाँहे आपन सस्रार घुमाइ नै लैजिबो । अभिन ते लौवइ लौवइ बटो । लौवइ लौवइ रहल बेला कमसे कम एक दुई दिन ते गोसिनियाँहे सस्रार लेके जैना हो । लौवइ लौवइ रहल बेला ते संगे जाइ परट । संगे एक दुई दिन रबो । फेन संगे लेके आजिबो । बहुरियाहे फेन ते आपन घरे जैनास लागठुइहिस । कबु नै आपन घरसे दूर गैल हो । एकफाले सस्रार आगिल । आपन घरक मनैन डाइ बाबा, दादा भौजि, काका काकिहे डेख्नास लग्हिस कि नै लग्लिस हो । टु फे बात नै मन्ठो ।'

मँझ्लि भौजिफे का कम ओमेहे फेन छौक डेलिस -'अहोइ डेवर्वा अभिन ते लौवइ लौवइ डमड्‌वा बनल बटो । आपन सस्रार जैबो ते कटरा मजासे टोहार सस्रारिक मनै स्वागत् करहि कहोते । टुँ जइटि किल मजासे डमड्‌वा अइलै कैह्के अङनामे खटिया बिछ्राके लावा दरि बिसाके टुहिन बैठे दिहि । तब टोहार सालिनके काँसक लोटामे अट्‌ना मजासे पानी पिए: डिहि । टु फे नै जन्ठो ।'

अट्रै कहटिकिल सँभ्लि भौजि कही मरलिस -'अटरै किल कहाँ, मारे लौवा डमड्‌वा या बहनुइ अइलै कैह्के मुर्गि मारके कोन्टिमे मजासे डरिमे बैठाके मिझनि खाइ

डिहिँ । फिलौडा भात खाइ दिहि । कटरा मजा आइ हो ? मै रटुँ ते छोरबे नै करटुँ असिन मौका । यी गन्जाहा डेवर्वा कहु बात मन्हि हमार कहलक ।'

अटरा कैह्के तीनु भौजिन सिकरियक आगे आपन चुट्टर झराके काममे चलजिठिस । मने सिकरिया आपन भौजिक कलक बात नै मानट । आपन सस्रार जैबे जैबे नै करल ।

एक दिनके बात हो । सिकरिया आपन सिकार खेल्ना खिडा करट करट दिन बुर्टि बुर्टि एकठो बरवारे चिरैयाँ अन्ढरा बटैयाँ डाबेहस मारल दारल । आब चिरैयाँ ते मारल मने कहाँ लैजाउँ कहाँ लैजाउँ करे लागल । अट्रैमे डिमाग अइलिस कि भौजिनके एकडम सस्रार पठैठै । यी चिरैयाँ लेके सस्रार जाइ परल कैह्के सस्रार चलपरठ । सस्रार जाके कहट- 'लेउ माऊ मै चिरैयाँ मारके लन्ले बटु । टुहरे भुजभाजके पनापुनुके खाऊ ।'

तब माऊ कठिस -'ते डमड्वा यहाँ काहे लानडेलो ? मारे घरे लैजिटो ते सक्कु जे मिल्के खैटो काहुँ ।'

सिकरिया फेनसे जवाफ घुमाइल आपन माऊहे -'अरे का बटैबो माऊ । सिकार खेलट खेलट साँझफे होगिल रहे । आऊर यहोरहि बन्वइ बन्वइ सस्रार ओर पुगिल रहु । तबमारे मै कहुँ सस्रार लैजाडिऊ । घरक मनैफे सिकार खाइट खाइट मिच्छागिल बातैं । रोज दिन ते तीन चारठो चिरैयाँ मारके लैजाडेठु । रोज दिन सिकार खाके मिच्छाइल बातै । तबमारे सोच्नु आज सस्रार लैजाडिउ कहिके । मै फेन रोज सिकार खैलक मिच्छाइल बटु बेन माऊ मोर बख्रा आज ना लगैहो ।'

अट्रा कटिकिल सस्रारिक मनैं चिरैयाँहे भुजभाजके पनापुनुके सिकार भाट खाइ लग्ठै । तब आपन डमड्वाहे बेरि खाइ देठै । संगे अपने सिकार भात खैठै । आपन डमड्वाहे साग भात डेठै । सिकरिया सिकारहे देखके खोब लोभ लागिस । मने कहे नै सेके । सिकार देखके खोब ठुक लिले । जब घरक मनैं सक्कु जे बेरि खाके सेक्ठै । सिकार फेन कुछ कुछ बच्गिल रहिन ।

आपन डमड्वाहे सुटना डेठै । सिकरिया सुन्ति रहत । आपन सस्रारिक सक्कु बात । ओट्रैमे माऊ कठिस ‘अरि पटोहिया सिकार बच्गिल बा, मै सिकार भोक्टिमे ढारके टिक्ठिमे टगाडेहटु नै ते रातके बिलरिया आके खादि । रोज दिन ते बिलरिया अइटि रहत् ।’ अटरा कैह्के जम्मा जे सुटिजठै ।

सिकरियक जुन जिऊ लागल रहिस । सिकारके याडमे निन नै परठुइस । जब अढ्ढा रात हुइल । सस्रारिक मनै जम्माजे निडैलै । तब सिकरिया सिकार खाइ चल डेहट भोक्टिमन ढारल सिकार खाइ । टिक्ठि मनसे भोक्टि निकारके सिकार खाइक लाग रहट ते सोचट अब्बा ते सिकार खाइ लागम ते हड्डि बोलि । इहिसे भोंक्टिमे कपार पेलाके सिकार खाउँ । भोक्टिमे कपार पेलाके सिकार ते खाइट मने भोक्टिक मेख्रामे अटक जिठिस । निकर्ना बहुत गेंह लगाइठ् मने भोक्टि कपार मनसे नै निकार पाइट । आब का करु-का करु कहटि भोक्टि फोर फारके मेख्रा घल्ले गुड्रि घुर्मुरके सुत जाइठ । बिहान हुजाइठ । डमड्वा उठ्बे नै करठुइटिन । अस्ते करटि करटि महादिन होजाइठ । जब सस्रारिक मनै गुड्रि फेकैठिस ते डमड्वा झरफराके उठ्के ‘बान ना बान सारन मेख्रा घलैना बान’ कैह्के गँरकट्टैले भागके घरे आजाइठ । तबसे सिकरियक लाजक ठोप्रा बनजिठिस । तबसे सिकरिया कबु नै सस्रार जाइठ ।

रुखवक बैस ओर सेमरा

-दुर्जन चौधरी

एक दिनके बात हो । जब हमार मनुख जिन्गि सुरु हुइल । उहे जमानक बात हो । एक फरछ्वार ठाउँमे सक्कु बनवाँ मनिक रुख्वनके जुटौला हुइठिन । सक्कु जाने जुट्लाँ । आपन-आपन बात सक्कु जाने गलमल-गलमल बटवैठाँ । अटरेमे बैस बेचुइया आपुगल । बैस बेचुइया कहल- 'मै बैस बेचे आइल बातुँ । सक्कु ओर बेच सेक्नु केउ नै लेहल । यदि अपनेनके लेबि कलेसे बटाइ । नेगट घुमट मै सक्कु ओहोर पुग सेक्नु । केउ नै लेहल । मनैनहे फेन पुछ्लुँ । ओइने फेन नै लेलाँ । आउर टस्ते कहे लग्लाँ यीहे जिन्गिते जिना कर्रा बा । बैस लैलेब ते जिना आउर कर्रा परी । हम्रे आपन दुःखहे आउर नम्मा कराइ नै सेकब । अस्ते अस्ते बात बटवइटि बटवइटि रुख्वैहे बात ढारल । अपनेनके लेबि कि नै ? तब रुख्वन सल्लाह करब तब बटाब कलाँ । तब सल्लाह करे लग्लाँ, लेबो ते सस्टा मड्डा लगाडेम कैह्के बैस बेचुइया बात मिलाइ लागठ । कहाँ टक मै लेले यहोँर ओहोँर घुमम । बेन आब केऊ नै लेहठो बैस, अप्नेनके लेबि ते मै अप्नेनहे आपन नटवा समझके दैडेम ।' बात सुनके रुख्वन बुह्राइलमे फेनसे जवान हुजाब कैह्के फोहैटि मन्जुर हुइठाँ । अपने मनै समझके डेहटा ते लैलि । ओकर फेन व्यापार हुजैहिस । कहाँतक बैस बेच्के नेगि । टौनो आपन कामसे छुट्कारा मिल जैहिस् । तब जाके बैस आपनठन रहल बैस बेच्के चल्जाइठ । बैस लेके सक्कु रुख्वा आपसमे बराबर बाँट लेठै । तबसे आपन आपन बाँट अन्सारके सक्कु जाने एःक सालमे बरावर बैस चर्हे लगिठन । तबसे सालो रुख्वक बैस चर्ह जिठिस । तबसे रुख्वा आपन बुर्हापामे फेन सालमे एकचो जवान हुइठ । बैस केउ नै लेलक कारन केक्रो बैस नै आइट । रुख्वक बाहेक औरेक आपन जिनगिमे एक्केचो जवान हुइठ । तबसे जे बुर्हागिल ते बुर्हागिल ओकर चोला जवान कब्बु नै हुइ । मने रुख्वा सालमे एकबार जरुर हरियाइट ।

यी ते हुइल बैस लेहल बात । आब सक्कु रुख्वा बैस लेके सेक्ठै । तबसे फेन डोसर बातमे सल्लाह करे लग्ठैं। असौक साल बरखा ज्यादा बा कि कम बा कहिके भगन्वक ठन पुछ्के जैना सल्लाह हुइ लग्ठिन । पुछ्के जैना ते जैना हो मने के जाइ पुछ्के ? कना बात करठाँ । भगन्वक ठन किहिहे पठैना हो कैह्के । सल्लाह कैके असौक मौसम कैसिन बा । पानी कम बा कि ज्यादा, कि आँधी बयाल बा ? कना बातमे सेमराहे पठैना सक्कु जाने विचार करठाँ । सेमराफे भगनवँक ठन मौसम पुछ्के जैना हामी भरठ ।

दोसर दिन सेमरा भगनवक ठन मौसम पुँछ्के चलठ । उहाँ जाके भगनवैसे पुछ्ठ । यी साल आँधि ज्यादा बा कि पानी ? भगनवाँ जवाफ डेहठ- असौक साल आँधि ज्यादा बा । अपने जाइ, जाके आपन तयारि करि । असौक साल कैसिक बच्ना हो आँधिसे कटि सोच्टि घुमठ सेमरा । अइटि-अइटि डगरिमे सेमरा आपन बच्ना जुगार सोचे लागठ । ऊ ऊपाय निकारठ कि, मै उहाँ जाके सक्कुहुन ठगम असौक साल बहुत ज्यादा पानी बा कहिके । तब मै आपन जिन्गि मजासे बचालेम । मै ज्यादा जियम ओ मै आपन समुदायके राज फेन खेलाइ मिलि कना सोचठ ।

जब जब बुर्हैम मै मोर बैस चर्ह जाइ ।

जब तक नै मुँअम मोर बैस बर्ह जाई ।

कोइ नै हो मोर नन्हे जवान हुउइया

आब सक्कु जहनसे मोर बैस पर्ह जाइ ।

जब सेमरा गाउँमे पुगठ । सक्कु जाने पुछ्े लग्ठै । असौक साल ज्यादा आँधि बा कि पानी ? पता चल्ठिन कि सेमरा भगनवँक ठनसे घुमके आगइल बा । फेनसे सक्कु जाने जुट्ठै । जुट्के पुछ्ठैं । सेमरा बटाइठ कि असौक साल पानी ज्यादा बा । तबसे सक्कु जाने आपन तयारिमे लाग जइठै । सबजाने पानी ज्यादा बा कना बातमे आपन-आपन डँहिया (हँगिया) गरडारके बनैठाँ । ताकि पानीसे हमार डेहमे कुछ असर ना परे । पानी अइलेसे हम्रहिन भिजा ना पाए । हँगिया घन

बनाके जर भर छोट लम्मा बनैलै । खोब घन डँहिया बनाके ऊ सालके लाग तयार हो गैलैं । सेमरा जुन आपन डँहिया कम बनाके जर महा गहिँर लम्मा बनाइल । जत्रा बरवार आँधि अइलेसे फेन मै ऊखर नापाउँ । सेमरा आँधिक किल सोचल पानीक नै सोचल । पानीक नै सोच्के आपन हँगिया सबसे कम बनाइल । आँधि अइलेसे फेन मोरमे हावा लाग्के महिन हिला ना पाए: । महिन नाँघके ओस्ते चलजाए । जब ओहे साल आँधि आइल सक्कु जनहनके जर ऊँखर-ऊँखर गिर जैठिन । मुस्किलके गोटगाट बचल रठैं । सेमरा बल्गर जर आउर लम्मा रलक कारन आँधि उँखार नै पाइट ओ सेमरा ढल्नासे बच गैल ।

सेमरक बराबरते यहाँ, केक्रो जर नै हो ।

कौन रुख्वा कब गिरि, केक्रो भर नै हो ।

चाहे जटरा डटके आँधि बयाल आजाए आब

मै पक्का हुइगिल बातु, केक्रो डर नै हो ।

जब पता चल्ठिन कि सेमरा हमार ऊप्पर बहुत फटाहि करले बा । आँधि ज्यादा रहल सालमे हम्रहिन पानी बटैले बा । तब ओइने भगनवँक ठन कचेहरि करे जैठैं । सक्कु बात भगनवँक ठन बटैठैं । तब भगनवा सेमराहे सराप डेहल । सेमरक डँहिया जत्रा बटिस ओकर डहका जर हिटिक्के सुखके टुटके गिरजैहिस कैह्के सराप देहल । तबसे सेमरक रुख्वक डँहिया कम निकरल रठिस । जर भर बरवार नम्मा रठिस । आँधि बयालसे भर कब्बु नै ढलट । आउर जहानके भर रुख्वा ढल्लेसे फेन पानीसे भर बँचल रहठ ।

बुड्ढी

-दुर्जन चौधरी

एकठो देसमे रजवा ओ रानी रहिँट । रजवा बहुत सहनसील, अँटगर ओ बहादुर रहे । ऊ सहयोगी ओ मिलनसार फे रहे । रजवा सक्हुनसे मिल्सार हुइलक ओरसे जनता रजवैहे बहुत मजा माँनिट । ऊ फेन आपन प्रजा हुकन सेक्नासम सघाए । रजवक ठन धन-सम्पत्त बहुत रहिस । कौनो चिजके कमि नै रहिस । मान लेऊ कुबेरके ठन रहल सारा सम्पत्त रजवक् ठन रहिस । मने का करि रजवा जत्रा धेर धन-सम्पत्त रलेसे फेन रजवा धनी होके फेन बहुत दुःखी रहे । काहेकि रजवक् ठन ऊ धन सम्पत्त हेरडेहुइया, सम्हाँर सुसार करडेहुइया, खर्च करडेहुइया कौनो (लर्का-बच्चा) नै रहिस । उहेकमारे रजवा रानी बहुत उदास रहिँट । अत्रा धेउर धन-डौलट हमार का काम ? जबकि हमार मनमे सान्ति नै हो कलेसे हम्रे यी धन-डौलट का करब ? मने जनताके आगे भर खुसीके नाटक करटि गुजारा करटि रठैं । भिटरे-भिटरे मन खोब रुइठिन ।

रजवा-रानी डाक्टरसे लेके पन्डितहे फेन डेखैनै । ब्रत बैठ्नासे लेके पूजापाठ करठैं । मने लर्का नै हुइठिन । लर्का नै हुइलक ओरसे दुःखी ते रहिँट मने हार नै मन्ले रठैं । ओस्ते करट करट भगन्वक आसीर्वादसे रानी एक दिन अन्सहि हुजिठि । रजवा बहुत खुसी हुइठ । आब हमार अङ्गनामे फेन गुलाफके फुला खेलि । हमार जिन्गिमे बसन्तके बहार आइ । आब हमार अँगनाफे सुनसान नैरहि । रजवक खुसीक् सीमा नै रठिस । जब नौ महिना पुगट । रजवाके अँगनामे एकठो सुन्दर बच्चाके जनम हुइठ । रानी राजकुवाँरिहे जलम डेलि कैह्के हल्ला हुइठ । रजवा बहुत खुसी रहठ । राजकुवाँरिके जलम हुइलकमे रजवा फोहैटि जनतनहे पैसा, सारि, धोटि हरेक चिज बाँटठ । आपन राजदरबारमे बलाके पहुरा डेहठ । सक्कु राज्यमे खुसीक् रौनक छाइठ । राजकुवाँरिक मुहार बहुत हँखमुख रठिन । मानो देवी धर्तीमे उटरगिल बटि !

धिरे धिरे राजकुवाँरि जवान हुइटि गैलि । ओस्तके राजकुवाँरिक सुन्दरता आउर बढ्ति गैलिन । राजकुवाँरि स्वर्गलोकके परिहस बिल्गाइ लग्लि । सबके लजर राजकुवाँरिक उप्पर जाइ लग्लिन । सबकोइ राजकुवाँरिहे आँखि लगाइ लग्लैं । राजकुवाँरिक ओरसे राजदरबारमे आउर जोरसे खुसीक् बहार छैटि गैल ।

राजकुवाँरिके इच्छाअन्सार चाहल सब चिज रजवा पुगैटि जइठैं । राजकुवाँरि जस्ते-जस्ते सयान हुइटि गैलि । रजवक चिन्ता बर्हटि गैलिस । जब राजकुवाँरिक भोज

कैना ऊमेर पुग्लिन् तब रजवाहे आउर चिन्ता सटाइ लग्लिस । राजकुवाँरिक भोज करडेम ते राजदरबार फेनसे सुनसान होजाइ । मोर बंसके आगे बर्हाडि ? कना सोचसे चिन्तित् रहठ । तबफे रजवा रानीके भोज कैना डुग्गि पिटाइठ । जौन राजकुमार मोर डम्डा बनि ऊहे मोर सरसम्पत्ति लेहे पाइ कहिके साराओर डुग्गि पिटाडेहठ् । सारा देसके राजकुमार पता पाजिठैं कि यी देसके राजकुवाँरि बहुत सुन्दर ओ मिलनसार बटि । सब देसके राजकुमार रहऱ्याइले राजकुवाँरिक राजदरबारमे पालिकपाला राजकुवाँरिसे भोज करक लाग आइ लग्लैं ।

सब देसके राजकुमार अइलैं । राजकुवाँरिसे सबकोइ भोजबियाह कैना चाहल मने घर दमड्वा बन्ना भर कोइफे मन नै करल । रजवा परेसान होगिल । कोइ दुल्हा नै पाके । जस्ते टस्ते मनैनसे भोज करडिऊ कलेसे धन-सम्पत् के हेरदि । महिन ते राजदरबारके संगसंगे आपन राज्य चलैना मनै चाहल बा । जस्ते टस्ते मनै फ्रुन बहुत जे भोज करुइया तयार रठैं । मने राजदरबार सम्हारे सेक्ना मेराइक कोइ मनैं नैरठैं ।

एक दिनके बात हो । ओहे देसमे एकठो गाउँमे गरिब दुखि परिवारके बापपुट किल रठैं । दुनु जाने छोटमोट कुछ नकुछ व्यपार करके आपन गुजारा चलैठैं । एक दिन लवन्डाहे बाबैहे भेंरी बेचे पठैलिस । बाबा कठिस- 'छावा रे मैं एकदम बजार जइठुँ । आज टैं जा । महिन अक्को नै जैनास लाग्ठो । बहुत मिच्छाइल लागटा ।'

तब लवन्डा कहल- 'जैना ते जैम बाबा । मने का लेके जाऊँ । आज कुछ ते बेचे जैनाहस देखट नै हुँ ।'

'अरे का लेके जैबे रे, छावा । यीहे एकठो भेंरिया बा । इहयइ लैजा बेचे । मने यीहे भेंरियइ बेंच्के यीहे भेंरियकमे नोन लाडके लानिस । रुपिया फे नै हो । नै ते रुपियासे किनके लान लेते ।'

लवन्डा आपन बाबक बात काटे नै सेक्के चल्डेहठ एकठो भेंरियाहे लेके बजार । ऊहे भेंरियकमे बैठल बजार भर घुमठ ओ सोचठ- 'कैसिक बेचुँ यी भेंरियाहे ? यी भेंरियाहे बेचदेम कलेसे कैसिक यीहे भेंरियकमे नोन लाडके लैजिम ? अगर नोन किल लैजिम ते बाबा महिनते मार डारी । भेंरियाहे घुमाके लैजाउँ कलेसे नोन कैसिक लैजिम ? एक ते आपन ठन अक्को आना रुपिया फे नै हो । रुपिया रहट ते रुपियासे किनके लैजिटुँ । आज बाबा महिन बरा समस्यामे पार डेले बा ।'

अस्ते कर्टि भेंरियाहे लेले बजार घुम्ति बा ओ सोच्टि बा । राजकुवाँरि जुन आपन राजदरबार मनसे ऊहे लवन्डाहे हेर्टि रही । लवन्डा जुन भेंरिया लेले घामे-घामे

यहोँर-ओँहोँर बजारे-बजार घुमठ् । जब साँझ हुइल लवन्डक डिमागमे कने कहाँसे जुक्ति अइलिस । लौवक ठन गैल भेंरियक भुट्ला कटाइल । ऊहे भेंरियक भुट्ला बेंच डेहल बजारमे । तब उहे भुट्ला बेचलक रुपियासे नोन लेके घरे चल्डेहल ।

घरे पुगट ते बाबा कठिस-'छावा नोन लेके अइले ।'

लवन्डा कहट-'हाँ बाबा, लेके अइनु'

बाबा कठिस -'लेके अइना ते अइले । भेंरिया खै ते ?'

लवन्डा आपन बाबाहे जवाफ डेहठ-'बाबा अब्बा ते भेंरियाहे घारिमे बाँढके अइनुँ । नै डेख्ले का बाँढल ?'

बाबा कठिस -'बुर्हागिल बातु रे छावा । आँखिफे छिपगिल बा । कुछ फेन दूरटक डेख्बे नै करठुँ । छावा रे एःक बात आऊर पुछुँ ?'

छावा कठिस -'पुछ न बाबा । का बात हो ?'

-'छावा रे कैसिक नोन ओ भेंरिया लेके अइले महिन बटा ते ? मैं फे ते जानु । बिना भेंरियइ बेच्ले कैसिक नोन लेके अइले ?'

-'बाबा टै का आपन छावाहे गन्जाहा समझठे ? मैं फेन ते टोर नन्हे चलाख बटु जे । भेंरियक भुटला बेच्के नोन लेके अइनु हेर बाबा । टोर कहलहस । भेंरियइ बेच्के भेंरियकमे नोन लाडके लन्नु हेर बाबा ।'

बाबा कठिस-'स्याबास छावा । यी हुइल न बात ।

लवन्डक बाबा लवन्डाहे सम्झाइ लग्ठिस- 'बेपारिक छावा हो के ?अत्रा चलाख ते हुइहि परट । नै ते यी डुनियाँमे कैसिक करबे बेपार । यी डुनियाँ बहुत बेइमान बा हेर । मजासे किहु जिए नै डेहठ । बेपारिक छावा हुइस हेर बेपारिहस करे परठ । बेपार करबे ते सब कुछमे नाफा या घाटा हुइठ । मने बेपार बेपार हो । जौन चिजमे फेन बेपार करे सेक्बे । इमान ढरमसे करल बेपारमे कबु घाटा नै हुइठ । घाटा हुइलेसे फे ऊ फाइडा होवइ । ऊहे घाटा एकदिन टुहि फाइडा करटि ऊप्पर टक पुगाइ । बेपारमे नाफा घाटा चल्टि रहठ । इहे बेपारसे टै डुनियक मनैन चिन्ह्बे । बेपार करबे ते के कैसिन बा कना सबचिज पटा पाजिबे । तबमारे बेपारमे सबकुछ जायज रहट हेर छावा । सब चिज करक लाग बुड्ढि चाहट, बुड्ढिसे बरा कोइ नै हो । तब मारे छावा जिन्गि जिना अब्बेहेसे सिख्ना बा टुही । आब मैं बहुत बुर्हागिल बटु, हेर छावा । आब सब कुछ टँही करबे । मोरते जाँगर नै चलठ । व्यपारफे टँही हेरबे । मैं ते बजार जैहि नै सेकठु ।'

लवन्डा कहल -'ठीक बा बाबा । मैं आपन कैना काम कर्तव्य पूरा करम बाबा ।'

दोसर दिन फेनसे लवन्डा बजार जाइठ नोन लेहे । ओहे भेंरियक भुत्ला बेच्के लानल नोन बेंचे । फेनसे राजकुवाँरि ओहे लवन्डाहे देख लेहठ । लवन्डा बजारके चौराहामे बोरा बिछ्वाके नोन बेचे लागठ ओ कहठ- 'लैलेउ नोन-२, एक आनाके तीन दाना, नुनाइन नहि तो फिर्टा ले आना ।'

बजार मनिक मनै बहुत जे नोन किन्ठै ओ पुछ्ठै सचमे फिर्टा लेबे का ? तब लवन्डा कहठ- 'हाँ सचमे फिर्ता लेम । अगर नोन नुनाइन नै हुइ ते जरुर लेम' कहट । ऊ दिन फेन लवन्डा सब नोन बेच्के चल्गिलै ।

तेसर दिन फेन बिहान हुइल । लवन्डा आपन काममे फेनसे बजार गिल । तब एःकठो मनैंयक घर नोन पल्लि रहिस । जनिवा गरयैलिस ते नोन घुमाइ चल डेहल । लवन्डाहे भेट होके कहल 'ले आपन नोन । मैं टोर नोन नै लेम ।'

लवन्डा नोनहे चाटल ते नुनाइल लग्लिस । ऊ मनैयाँहे कहल कि -'मै यी नोन फिर्ता लेहे नै सेकम । काहे कि यी नोन ते नुनाइन बा । मैं ते नुनाइन नै रहि तबकिल फिर्टा लेम कले रहुँ ।'

ऊ मनैयाँ बिचरा लाजे सरमे फेनसे नोन लेके आपन घर चलजाइठ । ओस्टके बेपार करते करते लवन्डक बाबक आऊर बुर्हापा होजिठिस । एक दिन लवन्डा बजारसे घर आइल तो आपन बाबाहे भगन्वक प्यारा हुइल देखल ।

लवन्डा आपन बाबा बिना अकेलि हुगिल । ऊहि ते बेपार कैना मन फे नै लागे लग्लिस । कुछ दिनके बादमे आपन बाबक् क्रियाकरम करके बैठल रहे । कुछ दिन बाबक् याद सटैलिस । तब फेन लवन्डा आपन व्यपार सुरु कर देहल । लौव सामानके लौव तरिकासे व्यपार करे लागल ।

ओस्तके रोजदिन लौव-लौव तरिकासे लवन्डाहे रोज व्यपार करट देख्के राजकुवाँरि आपन मनमे बैठा रख्ले रही । राजकुवाँरिक नजरमे लवन्डा दिवाना बनगिल रहे । तब राजकुवाँरि सोचल कि यी तो हमार धन-डौलट ते का, पूरा राज्य चलैना मेरके दिमाग बटिस । असिन दिमाग रहल ते कौनो राजकुमार नै हुँइट । आब इहिसे भोज करे परल कहिके आपन बाबक ठन बात ढारल । रजवा आपन राजदरबारके राजदुत हुकनहे उहे व्यपार करुइया लवन्डक ठन पठाइल ओ लेके लन्हो कना सनेस पठाइल ।

राजदुत हुक्रे ऊ लवन्डाहे इज्जतके साथ रजवक राजदरबार पुगैठैं । लवन्डाहे रजवा आपन छाइक राजकुवाँरिसे भोज कैना इच्छा जाहेर करल । लवन्डा यी बात सुन्के अचम्म परजाइठ ।

तब रजवाहे कहट- 'राजा साहेब अपनेहे पता हुइ । मै व्यपारी मनैं । मै व्यपार करके खैना मनैं । मोरठन कुछ नै हो । मै बहुत गरिब बटुँ । एक दिन व्यपार नै हुइठ ते मोर घरके चुल्हि नै बरठ । मैं आपन इच्छा पूरा करे नै सेक्ना मनैं । मैं राजकुवाँरिक् इच्छा कहाँ पूरा करे सेकम ? बेन अपने कौनो राजकुमारसे राजकुवाँरिक् भोज करदि ।'

रजवा फेनसे लवन्डाहे सम्झाइठ टभु पर लवन्डा राजि नै हुइठ । रानी सम्झाइठ तबफे बात नै ओनाँइठ । तब जाके राजकुवाँरि अपनहिँ सम्झाइ आइठि । तब लवन्डा राजकुवाँरिहे डेखठ । राजकुवाँरिहे डेखत् ते लवन्डाहे राजकुवाँरि मन परजिठिस । तबुफे चिपाइल रहठ । राजकुवाँरि आपन मुखारबिन्दसे लवन्डाहे सम्झाइ लग्ठि । सम्झाइत सम्झाइत लवन्डा मन्जुर होजाइट ।

घरे आके सोँचे लागठ- 'मै अब्बा अकेलि बटुँ । मोर आगेपाछे कोइ नै हो । अगर मैं दुःख बेराम परजिम कलेसे के मोर हेरचाह करी ? मैं ते मरिजिम । ओ मैं गरिब्बा मनैयाँसे के भोज करी ? मोर बंस ते ओस्ते नास होजाइ । मोर भिखमङ्गा बन्ना समयमे मही राजकुमार बन्ना मौका मिलता कलेसे मैं काहे पाछे हटुँ ? डुनियक मनैं भोज करक लाग आइल रहिँट । भोज कर नै पैलै । महिन तो खुड राजदरबारके मनैं लेहे आइल रहिँट । मै काहे नै भोज करना ? मै जरुर भोज करम, पक्का होजाइठ ।' कब बिहान हुइ कहिके रातभर करोट लेहटा, निंद नै परठुइस । जब भिन्सारे हुइल । मुर्गि बोल्ना समयमे उठके लाहाखोरके राजदरबार ओ चलपरठ ।

बिहानके समयमे ठीकके पुगठ । तब रजवाहे कहठ- 'आज तक सबके बात मन्टि आइल बटु । राजा साहेब अपनेक बात कैसिक नै कैहदिउँ । मनैनके कहल मनै मन्ठैं, भुतनके कहल भुत । अपने हमार देसके अन्नडाटा हुइटि । अपनेक कहल बात मै नै मानम ते महिन पाप लागि । तब मारेसे मैं भोज कैना तयार बटुँ ।

अत्रा बात सुन्टिकिल रजवा-रानी ओ राजकुवाँरि खुस होजिठै । भोजके तयारि धुमधामके साथ हुइ लागठ । सब जहनहे नेँउता बातके राजिखुसिके साथ भोज करदेठै । तबसे राजदरबारमे फेनसे पहिलेक नन्हे रौनक आजाइठ । हाँसि खुसिसे जिन्गि बिताइ लग्ठै ।

दिन औ जोन्ह्रया

-सिताराम चौधरी

जुग पहिलेक बात् हो । एकठो गाउँ रहे । उ गाउँमे धेउर घर रहे । एकठो बरवार घरमे थरुवा मेढरुवा, छाइछावा, पतुहिया ओ ससुइया ससुरुवा बैठल रहिँत् । ओहे परिवारमे एकठो लवन्डि बैठे । ऊ लवन्डिक बर्का दादा भौजी, छोट्का दादा औकर बुडु बुडि डाइबाबा सब बैठिँट ।

एक दिनके बात् हो लवन्डिक भौजी कलिस 'अइ बाबु जाऊ सुक्खुन दार देउ मोर सपार नै हो मै माटि खेलाइटुँ ।' लवन्डि कहठ 'ठिके बा भौजी टुँ माटि खेलाऊ मै सुक्खुन दारडेम ।' सुक्खुन हँकुइया ऊ लवन्डिक बुदि रठिस । जब लवन्डि पहिल खेप एक छिट्वा धान मेलके आउर धान लेहे जाइठ ते मुर्गि आ जिठै धान खाइ । लवन्डि भिट्टर जैटिकि लवन्डिक बुदि मुर्गिन हँकटी कहठ 'सासु भैवा, बहिनियनके बरात-बियाह ।' लवन्डि जैचो ढकियक धान लेहे भिट्टर जाइठ टैचो ऊ बुढ्िया ओहे कहठ 'सासु भैवा बहिनियनके वरात-वियाह ।' मतलब कि यी घरक दिदी भैया थरुवा मेढरुवा बनहीं ।

तब लवन्डि मजासे बुझ्ले नै रहठ । पुछठ् 'का कहते बुदी गुनमुन, गुनमुन ?

'नै कुछु एकचुटि बात रहे कौवा खोंटकके लैगिल ।

लवन्डि भिट्टर जैटिकि बुदि फेन ओस्तके कहे लग्ठिस- 'सासु' भैवा-बहिनियनके बरट-बियाह ।'

यी बेर बुदि का कहठ कहिके दुवारेतिर चिमा लागके ओनाइ तेहे बस आपन बुदिक बात् बुझ लेहठ । 'अरि का कहते बुदि मै ते सुन्नु भैवा-बहिनियन बरट-बियाह ।

'अरि हाँ ओस्तक ते कनु काहुँ' बुदि कठिस ।

तब लवन्डि कहठ 'मै कैसिक आपन भैवासे भोज करैम । हम्रे कैसिक भैवा-बहिनियाँ थरुवा-मेढरुवा होब ? यी तैं का कहते बुदि ? लवन्डि पुछठ । 'अरि मै

नै कहठु । मोर मुहेमसे निकर जाइता अइसिन बोली । सायद इसरु महाडेव, ब्रह्मा विष्नुके यीहे लिख्ले हुइ ते का कर्बे ?' बुदि कठिस ।

'नाइ, मै ते नै सेकम आपने दादा भैवनसे भोज करे ।'

'अरि नाइ कुछ्छु हुइ, मोर मुहेमसे ओस्ते निकरगिल बिना पतक ।'

पाछे लवन्डि बहुत बेरसम 'का करु ? काहे हमार बुदि अइसिक महि कहल ? मै ते किहुसे हुड-हुड, छल-छल नै करेहस लागठ ।' मेरमेरके बात् सोंच्ति लवन्डि आपन सखिनसे लडियम लहाइ जाइक लाग सँग करे जाइठ ।

पाछे एक घचिक रैहके ओकर तीनु सखिन लहैना सामान लेले लवन्डिक घर आजैठिस । लवन्डि फेन आपन लहैना सामान लेहठ ओ ओइने सँगे जाइठ । डोक्नि, कुचरिक बह्निन फेन लैलेहठ । संघरियन पुछ्ठिस 'का कर्बो गोहि यी डोक्नि ओ कुचरिक बह्नि ?'

'नै कुछ्छु, चोलो ते अब्बे लडियम जाके बटैम ।' बस चारु सखिन चलडेठै लडियम लहाइ । जाइट-जाइट गाउँसे ठोरिक दूर लडिया पुग्ठैं ते सबसे पहिले ऊ लवन्डि डोक्नि ढुइठ । खोब मिसमिसके सफा कैके । तबजाके बह्निफे ओस्तके सफासे ढोइठ । पहिले डोक्नि घोप्ट्याइठ, तब ओकर उप्पर कुचरिक बह्नि ठरह्वाइठ । तबजाके चारु सखिन लडियम लहाइ पेल जिठैं । चारु सखिन खोब हुडहुड, छलछल कर्टि लहाइ लग्ठै । तब लवन्डि कहठ 'अइ सखिनके तोहरे लहाऊ, मै अब्बे अइम ।' ऊ लवन्डि लहाखोर्के लुग्गा फेरठ बस पल्ठि मारके बैठ्जाइठ । ओहे कुचरिक बह्निक उप्पर बैठके गीत गाइठ :

बाह्रो बाह्रो रि मोरे बह्निक रुखुवा, बह्निक रुखवा

दिने दिने लगहो आकास ।

बस बह्निक रुखुवा सरसरसे बर्हठिस ।

लवन्डि फेन कहठ-

'बाह्रो बाह्रो रि मोर बह्निक रुखवा, बह्निक रुखवा

दिने दिने लगहो आकास'

फेन बह्नि सरसरसे बह्नठिस । ओकर तीनु सखिन खेलमस्टि कर्टि लहैना ओ खेल्ना ध्यानमे रठैं । लवन्डि फेन गाइठ ।

'बाह्नो बाह्नो रि मोर बह्ननिक रुखवा, बह्ननिक रुखवा

दिने दिने लगहो आकास'

बह्नि फेंन सरसरसे बह्नठिस । आबते बह्नि बार्हट-बार्हट ढेंग हो रहठ । बह्ननिक उप्पर बैठल लवन्डि दुई तीन टाँरक ऊप्पर पुगठ । तब ओकर सखिनके ध्यान अइठिन कहे लग्ठै 'कहाँ गैलिन हमार सखि ?' तब तीनु जाने ढिकुवा ओर हेरठैं ते देख्ठैं आपन सखिहे बरे ढेंग बह्ननिक रुखुवम बैठल । ओइने तीनु जाने लडियमसे निकरके पुछे लग्ठै ।

'अइ कहाँ जाइटो सखी उटरो हालि घरे जाइ ।'

लवन्डि कहठ 'मोर चिन्ता नाकरो तोहरे । लहाखोरके घरे जाऊ । मै नैजैम आबसे घरे । मोर अस्रा ना करहो । मोर घरक मनैनठे बता देहो ।'

तब ओकर तीनु सखिन खोबसे कहे लग्ठैं 'अइरि का होगिल सखि ? चोलो घरे उतरो हम्रेफे समझाब तोहाँर घरक मनैन् ।'

तब लवन्डि गीत गैटि कहल -

नैजिम सखियनके तोहरे चलजाउ तोहरे चल जाऊ

पहिले ते रहैं भैया जो मोरे आब ते हुइटै स्वामी

बाह्नो बाह्नो रि मोरे बह्ननिक रुखुवा बह्ननिक रुखुवा

दिने दिने लगहो आकास ।'

बह्नि फेन सरसरसे बह्नठिस । लवन्डि उप्पर जाके कहठ 'पहिले मोर भैवा रहे आब ऊहे सग्गे भैवा ओ मै थरुवा-मेढरुवा बनेक पर्ना बा । हमार बुदि कहल । मै नै जिम घरे । कैसिक आपन सग्गे भैवासे भोज कैना हो । दुनियाँ का कहि ? उहिसे बह्निया ते आब घरे छोरदेम ।'

ऊ लवन्डिक बात सुन्के ओकर तीनु सखिन रुइ लग्ठिस् । पाछे तीनु सखिन रुइटि सल्लाह कर्ठै 'चोलो घरे हिंकार घरक मनैन बटादेब ते घरक मनै लैजैहिन ।'

तीनु सखिन डरबर-डरबर घरे जाके बटादेठै । 'का कैदेले बटो हमार सखिहे ? टुहिनके लवन्डि लडियमसे घरे नै आइठुइन् । बह्नीक रुखुवामे बैठके गीत गैटि आकासमे चलजाइटिन । जाऊ हलि बचा लानो उकिहिन ।'

तीनु जनहनके बात् सुन्टिकि लवन्डिक दाइबाबा डौरट चल्डेठैं लवन्डिहे बलाइ । तबसम लवन्डि ओहे गीत गैटि आऊर उप्पर पुगसेकल रहठ । जब लवन्डिक डाइबाबा पुग्ठिस ते पहिले बाबा कहठिस 'चोल छाइ घरे जाइ । का होगिल तोर ? केऊ गरियाइल कि का कैदेलै टोर ?'

'नै बाबा मै नै जिम, टोहरे जाऊ ।

'बटा ते टै का हुइल बा टोर ? काहे नै जाइठुइस घरे ?'

तब लवन्डि कहठ

नै जिम बाबा,

नै जिम बाबा पहिले रहिस बाबा जो मोरे

आब ते हुइलो ससुरुवा ।

बाह्रो बाह्रो रि मोरे बह्रनिक रुखुवा बह्रनिक रुखुवा

दिने दिने लगहो आकास ।'

बह्नी फेन सरसरसे बह्ठिस लवन्डि आउर ऊप्पर चल जाइठ ।

तब पाछे डाइ कहे लग्ठिस्

'चोल छाइ घरे जाइ, का करे ऊप्पर जाइते ? कहाँ जाइते ?'

नै जिम दाइ,

नै जिम दाइ पहिले तैं रहिस दाइ जो मोरे,

आब ते हुइलो ससुइया ।

बाह्रो बाह्रो रि मोर बह्रनिक रुखुवा बह्रनिक रुखुवा

दिने दिने लगहो आकास ।'

फेन बह्रनिक रुखुवा सरसरसे बह्रठिस । लवन्डि आउर ऊप्पर चल्जाइठ ।

'आब यी लवन्डि नै जाइ घरे । चोल जाइ घरे एकर दादा भौजिन पठाब बलाइ' बाबा कहठिस । तब लवन्डिक दाडु भौजि अइठिस बलाइ

'चोल बाबु का होगिल टोर, काहे ऊप्पर जाइल कर्ते ?' दादा कठिस ।

नै जिम दादा,

नै जिम दादा, पहिले ते रहिस दादा जो मोरे

आब ते हुइले जेठुवा ।

बाह्रो बाह्रो रि मोर बह्रनिक रुखुवा, बह्रनिक रुखुवा

दिने दिने लगहो आकास ।'

फेन बह्रनिक रुखुवा सरसरसे बह्रठिस । लवन्डि आउर ऊप्पर चलजाइठ ।

तब भौजि कहठिस 'चोलो बाबु घरे, टोहाँर बुदि कटिकिल ठोरे दिदि भैवा थरुवा-मेढरुवा हो जैबो ? नै कुछ हुइ, चोलो जाइ ।'

'नै जिम भौजि,

नै जिम भौजि, पहिले ते रहो भौजि जो मोरे

आब ते हुइलो जेठिनियाँ ।

बाह्रो बाह्रो रि मोर बह्रनिक रुखुवा, बह्रनिक रुखुवा

दिने दिने लगहो आकास ।'

फेन बह्रनिक रुखुवा सरसरसे बह्रठिस । लवन्डि आउर ऊप्पर चल जाइठ । बड्रि छुएः-छुएः करे लागठ । तब दादा भौजिफे नैसेक्ठिस् लवन्डिहे घुमाइ ।

दादा भौजि घरे जैठिस् ते ओकर भैया जैठिस बलाइ 'चोल दिदि घरे ।

काहे अइसिक करते ? कहाँ जाइते ?'

लवन्डि कहठ-

‘नै भैया, नै जिम ।’

फेंन गीत गाइलागठ-

> ‘बह्रो बह्रो रि मोर बह्निक रुखुवा बह्निक रुखुवा,
>
> दिने दिने लगहो आकास ।’

फेन बह्निक रुखुवा सरसरसे बह्ठिस । लवन्डि आउर ऊप्पर चलजाइठ ।

तब लवन्डा सोंचटि कहठ

‘तैं दिदि नै जैबे ते मै का करे जैना हो ? मै फें टोरे सँग चल्जैम ।’ लवन्डा एकठो बरे लम्मा बाँसक टाँरा गारठ ओ ओकर टिप्पम बैठके गाइ लागठ

‘बह्रो बह्रो रि मोर बाँसक रुखुवा, बाँसक रुखुवा दिने दिने लगहो आकास ।’

लवन्डा फेंन जाइ लागठ सरसरहिक बड्‌रिमे ।

लवन्डि कहठ

‘अइना ते अइबे भैया मने तैं मै भेंट भर नै होब ।’

लवन्डा जाइट-जाइट रात हो जैठिस । ऊ रातके बड्‌रि पुगठ । आब बहुत ऊप्पर आगिनु दिनके दिदि गिरिते भेट करम कहिके अस्रा लागके एहोंर ओहोंर घुमे लागठ । तबसे लवन्डि दिन बन जाइठ, लवन्डा जोन्हियाँ बन जाइठ । दुनु जाने पालिकपाला रात दिन घुमे लग्ठैं बड्‌रिमे ।

आँरक गिडरैसे बदला

–सीताराम चौधरी

बहुत बरस पहिलेक् बात हो । उ समयमे पसुपन्छि चिरैचुरुङ्गा रुखुवा बरिख्वा सक्कु चिज मनै हसक बोले सेक दारित् । ओहे समयमे एकठो बहुट भारि बनवाँ रहे । बनवक किनारे बहुट सुन्दर गाऊँ । ऊ बनवाँमे मेरमेरके चिरैचुरुङ्गा ओ गाउँमे मनै ओ पाल्टु जनावर बैठिट् । बनवाँ बहुत भारी रलक ओरसे बनवाँमेफे मेरमेरके पसुपन्छिनके बसेरा रहिन् । ओहे बनवक किनारेक एकठो गाउँमे एकठो मुर्गनियाँ अँठरा बनाके रोजदिन अन्डा पारे ।

एक दिन बनवाँ मनिक गिड्रा चर्हट-चर्हट गाउँ पुग जाइठ । गाउँमे यहोंर ओहोंर चरहेबेर मुर्गनियक आँरा भेंटाइठ । गिड्रा बहुत भुखाइल रहठ । ऊ गिड्रा सोचठ अइसिक नै बनि आँराऔँरा खाइक परल । गिड्रा एक्के आँरा बचाके जम्मा आँरा खाके चलडेहठ् । आब ते गिड्रा परच जाइठ आँरा खाके । मुर्गनियाँ रोजदिन आँरा पारठ, गिड्राफे रोजदिन एक आँरा बचाके खाके चलडेहठ । मुर्गनियाँ सोचठ- कहाँ जाइठ मोरिक आँरा ? के खाइठ मोर आँरा ? रोजदिन अक्के आँरा बचल रहठ ? के हो मोर आँरा नुकुइया ? आब यीहिहे बिना पता लगैले नै हुइ । मनेमने अत्रा बात सोच्टि मुर्गनियाँ आँरा चोर पटा लगाइक लाग आँरा-औँरा पारके अँठरक् पँजरे चिमा लागके बैठजाइठ् । परचल गिड्रा जुन पुग्टिकिल आजाइठ आँरा खाइक मारे । अँठरा पुग्टिकिल मुर्गनियाँ अइस्सा फटफटाके कोंटकोंटैटि उरके खोंटके छुटठ् ओ गिड्राहे गऱ्याइ लागठ । भुखाइल गिड्रै ओस्तेहें ते भूखेले छटपट्टि लग्ठिस् आऊर उप्परसे मुर्गनियक गारी पाके आउर रिस लग्ठिस ।

गिड्रा कहठ

'मही का पता तोर आँरा हो कहिके ? बिना सहेरिक अँठरम देख्नु भुख लागल रहे खादेनु ।'

यीहे गिड्रा हो मोर सक्कु आँरा खऊइया कहिके जान लेहठ् । आउर भकभकाके खोंटके छुटठ । ओहोंर गिड्रा भुखासलफे रहठ । आउर उप्परसे खोंटके छुट्ठिस् ते मनेमने सोंचठ- एक ते भुख लागल बा आउर ते उप्परसे सारक मुर्गनियाँ खोंटके आइटा । मुर्गनियक पर गिदराहे रिस लगठिस । तब गिड्रा अइसा उलरके पकरठ । मुर्गन्यै पकरके म्वाँइठ ओ खाडेहठ । ऊ दिन मुर्गनियै खाके गिड्रक पेट

भर जइठिस् । तब सोचठ- आँरा कहाँ जाइ । यी आँरा आब डोसर दिन खैम कहिके एकठो आँरा बचाडेहठ् । मुर्गनियै खाके गिड्रा अपन घोलमे जाके सुत जाइठ् ।

आगेक दिन टन्न पेट भरके मुर्गनियक सिकार खाइल गिड्रा दोसर दिन भुँख नै लागल हो कहिके चरहे फे नै जाइठ । ठीक्के ओहे दिन एकठो कुक्रा जौन अँठरम आँरा रहठ ओहे अँठरा ओरसे जाइठ । तब आँरासे कुकरक भेट हुइठिस् । आँराहे देखके कुक्रा बोलठ

'तोर दाइ बाबन ओ दाडु दिदिन गिड्रा खाडेहल । आब तहिंकिल बँचल बते । यहाँसे भाग जाइस नै ते टुहिँफे खादारी ऊ गिड्रा ।' आँरा कुक्रक बात सुनके मने-मने सोचठ-

सारे मोर परियारके सक्कु जनहन खाके ओरुइया ऊ गिडरैसे ते बिना बदला लेले नै छोरम । चाहे मोर ज्यान चलजाइ । आँरा अक्केलि गिडरै मर्ना टिऊ लगाके अँठरमसे निकर जाइठ । ओहोंर दुइ दिनके वादमे भुख लग्ठिस गिडरै । ओहे बचल एक्ठो आँरा खाके चित बुझैम कहिके अँठराओर चलठ् । यहोंर आँरा ज्यान जाइते जाइ कहिके गिड्रैहे मारे निकर जाइठ ।

गिड्रैहे मारे निकरल आँरा धनमन धनमन करटि डगरे डगरे चलडेहठ । ठोरिक दूर पुगठ ते, सुइ धनमन धनमन आइट देखठ ओ आँरैसे पुँछठ -

'कहाँ जाइटि संघारि ? रिसाइल हसक डरबर डरबर अक्केलि ?'

'अरे कहाँ जइबि, सारे गिड्रा महिन किल छोरके मोर घर परियारके सक्कु जनहन खाडेहल । तबमारे उहिहे मारके उहिसे बदला लेहे जाइटु' आँरा जवाफ देहल ।

तब सुइ कहल -

'तब ते मैफे जइम टोहार सँगे गिड्रैहे मारे । मोर संघरियक दुस्मन ते मोरो दुस्मन ।'

आँरा कहल -'ठीके बा टुँ फे चल्बो ते आउर मजा हुइ ।'

आब एकसे दुई हो गिलै गिड्रैहे मरुइया । आँरा ओ सुइ चलडेठैँ । दुनु जाने नेँगट–नेँगट ठोरिक दूर आउर बनवम पुग्ठै ते ओइनहे गोबर देखलेहठ ।

'अरे कहाँ जाइटो संघारिनके डरबर–डरबर बरे हडबड बा का ?' गोबर पुछठ ।

'नै कहुँ, जाइटि गिड्रैहे मारे । मोर घरक सक्कु जनहन खाके आपन घोलेम भागल बा गिड्रा सारे ।' आँरा जवाफ खेहल ।

'अरे तबते मैफे जइम टुहिन सँग गिड्रैहे मारे । दुईसे तीन होजाब आऊर मजा हुइ । सारे गिड्रा महिनफे खोब सटैले बा' गोबर कहल ।

'एक ते मैं आगैनु टुँ फेन कहाँ जइबो खालि दुखे किल हुइ । हम्रे ते मार डारब ऊ गिड्रैहे' सुइ बोलल् ।

'नै-नै मै फे जइम । लैचलो ना सायद दुइए जनहनके कर्रा परि उहिहे मर्ना' गोबर कहल ।

ठीके बाते चलो दुइसे तीन हो जाब, आऊर मजा हुइ' आँरा सहमति जनैटि कहठ । अब तीनु जाने चलडेठै गिडरै मारे बनवाँ ओर ।

जाइट जाइट बहुट दूर भिट्टर बनवाँ पुग्लै ते एकठो रुखवक बुटका बोलठ -

'जयगुर्बाबा ! संघारिनके कहाँ जाइटो ? कौनो जरुरि काम परगिल कि का ?'

'अरे का बटाऊँ संघारि, जरुरि कना हो कि का कना हो । हम्रे जाइटि गिड्रैहे मारे बनवाँमे ।' अन्डै डेखैटि यी -'हिकार दाइ, बाबा, दाडु, दिदि सक्कु जनहन खाके भागल बा सारे गिड्रा । आज पटा पाइ ओकर का हुइठिस्' सुइ बोलठ् ।

एक घचिक सोंचठ- 'तबते महु जइम टुहिनसँग ऊ हरामि गिड्रैहे मारे ।

बरा हेगासल रहे काहुँ सारे एक दिनते मोर उप्पर हेग डेले रहे । मही फेन रिस लागल बा ओकरपर' बुटका बोलठ ।

'ठीके बा चलोते का चारजे हो जाब ते आउर मजा होजाइ । चारु ओरसे घेरके मारब सारे गिड्रा हे ।' गोबर सहमति जनाइठ् ।

'हाँ-हाँ चलो ते का हमारे मजा हुइ' आँराफे सहमत हो जाइठ ।

आब ओइने आँरा, सुइ, गोबर ओ बुटका चलडेठै गिड्रैहे मारे बनवाँओर । चल्ते फिरते - चल्ते फिरते बहुत दूर पुगजिठैँ । भिट्टर बनवाँमे ओइनसे पदबिछिया भेट हुजाइठ । पदबिछिया पुछठ -'अत्रा साँझ हुगैल कहाँ जाइटो चारु जाने बनवक भिट्टर ? का जरुरी काम परगिल ?'

तब आँरा कहठ-

'का कहु संघारि, बरे दुखके बात बा । यी बनवाँमे सारे एकठो गिड्रा बैठठ । ऊ गिड्रा मोर घर परिवारके महिन किल बचाके सक्कु जनहन खा देहल । उहिसे बदला लेहे निकर्नु ते यी सब संघारिनके महि सहायता करक लाग आगिलै ।'

'तबते महु चलडेम गिड्रैहे मारे' पदबिछिया कहठ ।

'ठीके बा चारसे पाँच होजाब आउर मजा हुइ' आँरा सहमति जनाइठ् ।

आब पाँचु संघरियन गिड्रक घोल खोजे निकर डेठैं । खोजट-खोजट, रात बिते लागठ । भिन्सारे हुजाइठ । बलटल ओइने गिड्रक घोल भेंटैठैं । भिट्टर जाके हेरठै ते गिड्रा नैरहठ । ऊ ते चर्हे गैल रहठ । पाँचु संघरियन यीहे मौका बा कहिके गिड्रैहे मर्ना टिऊ बनैठैं ओ कहठैं-

'जइसिक फे यी गिड्राहे मारके छोरब ।'

आँरा कहठ -'मै गिड्रक टप्ना आगिम जाके बैठम ।'

सुइ कहठ -'मै ते ओकर पठरिम नुकके बैठम ।'

'मै ते गिडरक बीच दुवारिम बैठम' गोबर कहठ ।

तब बुटका कहठ 'मै ते गोबरके ठीक उप्पर झुलल रहम ।'

पदबिछिया कहठ -'मै ते गिडरक लगैना भुर्किक् तेलम जाके बैठल रहम ।'

टिऊ अन्सार सक्कु जाने आपन-आपन ठाउँमे जाके गिड्रक असरा लागके बैठजैठैं । भिन्सारे ओजरार हुइ हुइ करे लागठ । रातभर सिकार खेलके मिच्छाइल गिडरा सोझ्के आपन पठरिम सुते जाइठ । जब गिड्रा सुटठ् ते सुइ लागठ गिड्राहे गझर-गझर गोझ्के । गिड्रा उठ्के हेरठ कुछ नै देखठ । फेन सुतजाइठ । सुट्टिकिल सुइ फेन गोझ्के लागठ गझर-गझर । गिडरा सुते नै सेकके सोचठ- आब जाऊँ आगि टापे । जब गिड्रा आगि टापक लाग आगि खोब डटके डमक्वाके पस्कक पन्जरे बैठत् तबहीं आँरा अइसा डटके ब्वाङ्से फुटठ । डम्कल आगि उछिटके जम्मे गिडरकमे चलजैठिस । गिड्रक ठुट्ठुन झरस जइठिस । डहलक मारे खोब भोभाइ लग्ठिस । गिड्रा सहे नै सेकके चलठ भुरकिक् तेल लगाइ । जब तेल लगा लेहठ ते पुरा पदबिछियक् सोंर रठिस । आउर डटके सौंस्याइ लग्ठिस । तब गिड्रा सोंचे लागठ आजका हुगिल ? यी घरम आब मै ते नैबैठम् । कहटि जब गिडरा हडबड भागे लागठ आपन घरमसे ते अइसा दुवारे मनिक गोबरम रपटके ओनाते गिरठ । ओकर उपरका बुटका छातिम गिर जैठिस । बस गिड्रा मरजाइठ । यहोंर सक्कु संघरियन घरे लौट जइठैं ।

सोलरा ओ बरहैया

-सीताराम चौधरी

बहुत समय पहिलेक् बात हो । एकठो देसमे एकठो एकठो सोलरा ओ एकठो बरहैया बैठिंट । ऊ दुनु जाने बहुत सिपार रहिंट । सोलरक चर्चा गाउँ गाउँ फैलल रहिस् । पूरा देस भरके मनै ओकर सीपके चर्चा सुनले रठैं । ओस्तहके बरहैयाफें ओस्तेहे सिपार रहठ । ओकर सीपके चर्चाफे गाउँ गाउँ चारुओर हुइल रठिस । केउ कहठ- सोलरा आउर ज्यादा सिपार बा । कोइ कहठ बरहैया सिपार । गाउँ गाउँमे ऐसिन चर्चा सुनके सोलरा ओ बरहैया अपने अपने एक दोसरसे अपने ज्यादा सिपार बटु कहिके सोंचे लग्ठैं ।

एक दिन गाउँमे घुम्ना क्रममे ऊ दुनहुनके भेट हो जैठिन । भेट हुइटिकिल ऊ दुइ जनहनके तै सिपार कि मै सिपार कहिके झगडा सुरु हो जैठिन । सोलरा सोनके काम कर्ना मने आउर जिड्डी बरहैयाइ कहे लागठ । टैं का-का जन्ठे ? तोर ठन का-का बनाइ सेक्ना सीप बा ?

बरहैयाफे का कम । ओहो कहठ- तैं का का जन्ठे जे ? तोर ठन का-का बनैना सीप बा झे ? दुनजाने ओस्तके सोलरा बह्रैयै कहे टै का जन्ठे ? बरहैया सोलरै कहे टै का जन्ठे ? दुनहुनके कहिक कहा हुइट हुइठ मारपिटाहुर झगरा होजैठिन । सोलरा कहठ मै का कम, बरहैया कहठ मै का कम । दुनु जाने आपन आपन जिड्डी करे लग्ठैं । सोलरा कहठ- मै सिपार, बरहैया कहठ मै सिपार । आब दुनुहुन मसे के ज्यादा सिपार कहिके फैसला नै हुइ लग्ठिन् । आब फैसला नै हुइ लग्लिन ते काकरि काकरि ओइने दुनु जाने अपने फैसला नै करे सेकके रजवक दरबारमे जाके रज्वैसे फैसला करैना सल्लाह मग्थैं । बटैना क्रममे सोलरा कहे लागठ-

मै ते बरहैयैसे कैयौ गुना सिपार बटुँ । यी बरहैया का जानठ ? कुछ नै जानठ । ओस्तके बरहैया कहठ- नै सरकार यी सोलरैसे बहुत सिपार मै बँटु । मोर सीपके आगे यी सोलरा का चिज हो ?

जब रजवा दुनहुनके बात सुनठ ते रजवाफे सोंचठ-

बात ते यी दुनुहुनके सही हो । दुनुजाने वास्तवमे सिपार बटैं । मने यी दुनुहुनमसे के ज्यादा सिपार हुइ ? यी फैसला करकलाग ते महि प्रमान चाहि । एकघचिक सोचके रजवा कहठ-

सोलरा कहटा मै सिपार, बरहैया कहटा मै सिपार । टुहिनके बात किल सुनके कैसिक बटाउँ । के बा ज्यादा सिपार ? लेउ बटाउ का-का सीप बा भ्रु टुहिन ठन ? आपन आपन सीपके प्रयोग कैके टोहरे ज्या बनाइ सेक्बो ऊ चिज बनाके मोर आगे नानके देखाउ । टुहिनके बनाइल चिज हेरम तब बटैम कि टुहिन मसे के ज्यादा सिपार बा कहिके । रजवा पहिले सोलरैसे पुछ्ठ-

ले सोलरा बटा तैं का बनाइ सेक्बे ?

सोलरा- हजुर सरकार मै सोनके मछ्रिया बनाके पानीम् पौंरहाके देखैम । सोलरक बात सुनके रजवा कहठ- ठीक बा ।

तबजाके रजवा बह्रैयैसे पुछ्ठ- ले बरहैया तैं बटा का करे सेक्बे ?

बरहैया फे रजवक आगे हाँठ जोर्टि कहठ- हजुर सरकार मै उरन्टा घोरुवा बनाके उहि उराके देखैम । ले यी फे ठीक बा, रजवा कहठ ।

दुनुहुनके बात सुनके रजवा कहठ- लेउ ठीक बा जाऊ दुनुजाने आपन आपन कहल चिज सात दिनके भिट्टर बनाके देखाऊ । दुनु जनहन एक एक हप्ताके मौहलट देठिन ।

एक हप्तक बादमे दुनुजाने आपन आपन कहल बमोजिम सोलरा सोनक मछ्रिया ओ बरहैया चन्दन काठके घोरुवा बनाके लानठ । नानेबेर सोलरा आपन सोनके मछ्रियाहे गोजुम ढारके नानठ । केउनै देखठ । बरहैयक बनाइल चन्दन काठके घोरुवा भारी रहठ, मनैया बैठना । ऊ सब जनहन देखैटी नानठ । जे देखठ ओहे ओकर प्रसंसा करे लागठ । ऊ बह्रैयक घोरुवा ओकर सीपके जे हो जे बरहैयक गुनगान गाइ लग्ठैं । रजवक राजसभाके मनैफे बेढब गुनगान करठैं उरन्टा घोरुवक । अत्रा बह्रिया घोरुवा यी ते जट्टिक घोरुवाहस् बा । महा सिपार बरहैया बा । मने सोलरा का नन्ले बा ते ? छुच्छे आइठ देखटी ।

“टैं का नन्ले बते” सबजाने सोलरै पुछे लग्ठैं । मै नन्ले बटुँ ज्या कले रहु ओहे- सोनक मछ्रिया । देखा ते तोर सोनक मछ्रियाफे हेरदारी । राजसभाके मनै कहे लग्ठैं- मै अब्बेहे नै देखैम । पहिले सात बाल्टी पानी भरे कहि महाराज । तब देखैम मै सोनक मछ्रिया । रजवा आदेस करल अक्के घचिक सात बाल्टी पानी भर डेठैं । ले आब डेखा आपन मछ्रिया, रजवा आदेस डेहल । जी सरकार कहिके पहिले सात बाल्टि पानी एक लाइनसे ढरे कहल । तब गोभ्रुमसे छोटमोट सोनक

मछरिया दारल । मछरिया पौंर्हे लागठ । सबजाने अचम्म परजिठैं । हाँ यार यी सोलरा ते जट्टिसे महा सिपार बा, हेरुइया मनै कहे लग्ठैं । सोलरा कहठ- अत्राकिल नै अब्बे यी मछरिया देखाइ अपन तमासा । ना कटिकिल मछरिया सुरुक बाल्टिम पौंर्हेठ पौंर्हेठ एकघचिक पौंर्हेके दोसर बाल्टिम कुडुक जाइठ । दोसरसे तिसर, तिसरसे चौठा करटि मछरिया जम्मा बाल्टिमे कुडुक्टि पौंर्हेक देखा डेहठ । रजवासे लेके जत्रा रठैं वहाँ हेरुइया सबजाने अचम्म परजिठैं । यी सोलराते जट्टिसे महा सिपार बा रेऊ । सबजाने कहे लग्ठैं ।

एक घचिक पाछे आब बरहैयक ओर ध्यान डेटि कठैं-

टोर घोरुवा ते देख्टि बाटि । अत्रासे आउर कुछ डेखैना बा कि अत्रे हो ? रजवा पुछठ- जी सरकार मोरफे यी घोरुवाहे उराके देखैना बा, बरहैया कहठ । यी सब तमासा रजवक छावाफे आपन राज दरबारके उप्रक टल्लम्से हेरतेहे । ले ते उरा आब रजवा आदेस डेहठ । सरकार उरैना ते मै उरैम् मने बिना मनैक यी घौरुवा नै उरी । के बैठी यी घोरुवक मे ? मै ते नै जिम बैठके यकरमे । क्यो बा घोरुवक्मे बैठके उरुइया कलेसे बलाइ यहाँ । ओ सौंरक कही यी घोरुवक्मे । अब्बे बटैम मै घोरुवै उरैना ओ परैना तरिका । दुनियाँभरके मनै जुटल ऊ सभामे रजवा पुछठ- “कोइ बा यी घोरुवकमे बैठके यीहि उरुइया ?” सबजाने चुमचाम होजिठै । कोइ नै तयार हुइठ घोरुवकमे बैठके उरक लाग । का यी सभामे कोइ नै हो ? घोरुवकमे बैठके घोरुवै उरैना हिम्मत रहल मनै ? रजवा पुछठ् ।

यहे मौका हो आब जाइक परल कहिके रजवक् छावा यानेकि राजकुमार उपरक तल्लमसे दौरट आइठ ओ कहे लागठ- पिताजी अगर आदेस देबी ते मैजिम यी घोरवक्मे बैठ्के यीही उराइ । ले ठीक बा रजवा कहनासे पहिले राजकुमार घोरुवक्मे जाके बैठजाइठ । पाछे रजवाफे अनुमति दैडेहठ । आब सबजाने सहमति जनैठै । राजकुमार कब उरेमिली कब उरेमिलि कहिके मनमने सोंच्ति रहठ ।

ली ते राजकुमार जी अप्ने तयार बटी ते उरक लाग ? बरहैया पुछठ् । हाँ मै तयार बटुँ । राजकुमार जवाफ डेहठ । लि ते ध्यान देके सुनी । यी घोरवाहे उरैना, दाहिनओर खर्कैना, बाउँओर खर्कैना, तरे लैजिना, परैना, उप्पर लैजिना सबमेर बटन फिट करल बा । यकर गति ज्यादा ओ कम कैना सबमेर बटन बा यी घोरुवा बटनसे चलठ । अत्रा कहटि बरहैया बटन देखैटि कहठ-

यी बटन उरैना बटन हो । यीही दबलेसे घोरुवा उर जाइ । बस अत्रै बरहैया बटाइ पाइठ । राजकुमार उर्नावाला बटन दाब डेहठ । घोरुवा उर जाइठ राजकुमारहे लेके । उरते उरते घोरुवा कहाँगिल कहाँ गिल बेपत्ता होगिल । आब घोरुवा उरल करटा राजकुमार बैठाइ जन्बे नै करथो । उरट उरट दिन, हप्ता, अठवार, पाख

बिटगिल । राजकुमार कहुँ नै पटा लागे लागल । भुँखे पियासे ऊ कमजोर हो जाइठ । बेपत्ता होजाइठ राजकुमार घोरुवक्मे बैठके ।

तैं मोर छावाहे कहाँ कैदेले ? कहिके बरहैयाहे कैद कैलेठिस रजवा । जबसम मोर छावा घुमके नै आइ तबसम टुहिन छुट्टि नै मिली रे बरहैया, रजवा कहठ । ओ ओकर पूरा परिवारे लर्कापर्का सब जनहन कैद करुवा देहठ रजवा ।

ओहोरओर राजकुमारके जुन महिना दिनसम पुगगिलिस उर्टि बा उर्टि बा । आबते मै अस्तके उपरे उर्टि उर्टि भुखे पियसले मरजिम कहिके असरा टुट जैठिस । कमजोर होके बैठे नै सेक्के घोरवकमे सुतठ, बस कैसिक कैसिक अपने बिना जनले परैना बटन डाब मारठ । अप्ने ते पूरा लर्तेज हस् हो जाइठ । ऊ बटन घोरुवक घेंचम रठिस । आब अत्रा धेर दिन उरल घोरुवा कौन देस जाके परल । कौन देस नै राजकुमारहे कुछ पता नै रठिस् ।

अत्रा दूर दोसर देसके रजवक् फुलरियम जाके परठ । जौन फुलरियम ऊ देसके राजकुमारी निसभागी रातके आपन सखी सहेलिनसँग फुलरिया घुमे आइठ । ओहे फुलवारके बिच्चे घोरुवा, ऊ फें रातके परठ ।

घोरुवा परलक् कुछबेर रहिके रजवक् छाइ आजाइठ । आपन सक्कु सखी सहेलिन लेके ओहे फुलवार घुमे । हर रातके जैसिन फुलवार घुमना क्रममे जब घोरुवक् लग्गे पुगठ् ते देखट-

यी केकर घोरुवा हो रातके यहाँ आइल बा ? पुछठ । जब आउर लग्गे जाके हेरठ ते राजकुमारहे देख लेहठ, बेहोस घोरवै पोघ्ले सुतल । आब राजकुमारी ओ ओकर सहेलिन सोंचे लग्ठैं 'यी के हो ? केकर घोरुवा हो ? यीहीसे पहिले ते हम्रे यी घोरुवा ओ मनैयै कहुँ नै देख्लक पटा पैठी । कहाँसे आइल हुइ यी अत्रा रातके यहाँ परल बा, ऊ फे बेहोस ।"

राजकुमारी आपन सहेलिनसे तुरुन्ट पानी मगाइठ । फलफूल ओ आउर दोसर-दोसर खैना पिना मगाइठ । पहिले राजकुमारके मुहेमे पानी छिर्कठ ओ उठाइठ । तब एक घचिक रहिके राजकुमारके ठोर ठोर होस अइठिस् । भुख ओ प्यासके मारे बोले नै सेकठ् । तब राजकुमारी पानी पिवाइठ । ताजा ताजा फलफूल खाइ डेहठ । जब राजकुमार फलफूल खाके पानी पिके कुछ घचिक सन्ठाइठ । तब ठोरठोर जाँगर चले लग्ठिस् । जब घोरवै हेरेजैठै साइद ऊ फे बहोस कहिके ते पटा पइठै । ऊ ते कठुवक घोरुवा रहठ । राजकुमार जस्ते फलफूल खैटी जाइठ ओस्तके ओकर चेहरक रंग बदल्टि जैठिस । ऊ ते सुन्दर राजकुमार रहठ । अत्रा सुग्घर राजकुमार हसक् लवण्डा कठुवक् घोरुवकमे बैठके अत्रा रातके का करे

आइल हुइ ? कहाँक हो यी लवन्डा राजकुमारी सोंचे लागठ । पाछे जिउ नै मन्ठिस राजकुमारी चलडेहठ पुँछे-

टुँ के हुइटो ? कहाँसे अइलो ? कहाँ जाइटो ? राजकुमार ते भुखे पियासे महिनौ दिनसे उरट उरट आपन सबकुछ बिस्रा मारठ । ऊ बेढब सोच्ना कोसिस करट । बरे घचिक रहिके उही ठोर ठोर याद आइ लग्ठिस । बट्वाइ लागठ-

मै सुन्दर नगरके राजकुमार सुन्दरसिंह हुँ । मै करिब करिब एक महिना आगे यी घोरुवक् पर बैठके उरल मनै हुँ । ऊ आपन देसमे सोलरा- बह्रैयक हरबड्डक सक्कु बात बट्वाइठ । तब लास्टमे जाके राजकुमारीसे पछुठ्-

टुँ के हुइटो ? कौन देसके हुइटो ? का करे आइल रहो अत्रा रातके यहाँ ? तब राजकुमारी जवाफ डेटी कहठ-

“मै फे चन्डर नगरके राजक् छाइ हुँ । मोर नाउँ चाँदनी हो । मै हर रोज करनिडिया रात यी फुलरियम घुमे अइठु । अस्तके बातचित चले लग्ठिन दुनु राजकुमार ओ राजकुमारीक बीचमे । भित्तरे भित्तरे धिरेधिरे राजकुमारी राजकुमारहे मन पराइ लागठ । धिरेधिरे राजकुमारहे ओहाँसे जाइ नै देना प्लान (सोंच) बनाइ लागठ । आपन घरे लैजिम ते मोर बाबा यकर थर ठेगाना पता लगाके यीही पठा दि । का करना हो ? राजकुमारी सोंचे लागठ । कुछ घचिक सोंचके राजकुमारी कहठ्-

मै टुहिन आपन घर नैलैजाइ सेकम । टुँ यीहे फुलरियम जैसिक टैसिक नुक नुकके रहिजिहो । खैना पिनाके कुछ चिन्ता ना करहो ? ऊ सब मै आपन सहेलिन कहिके पुगादेम । ओ रातके मै रोज यहाँ अइबे करठु । हमार भेटघाट चल्टि रही । लेउ ठीके बा सुन्दर राजकुमारीक् बात सुनके राजकुमार फे सहमती जनाइठ । दुनुहुनके सल्लाह हुइठिन राजकुमारी आपन घरेओर चल जाइठ । राजकुमार जुन ओहे फुलरियम रात रहिजाइठ । राजकुमारीहे देख्के ते राजकुमारफे मने मने मन पराइ लागठ । दिनभर जैसिक टैसिक रहठ । घोरवैभर रुखुवम् टंगा डेहठ । लगभग हप्तां दिनटक ओइनके भेटघाट नुकनुकके रात रातके फुलरियामे चल्टि रठिन । एक दिन राजकुमार सोंचठ- राजकुमारी लवण्डीक जात कहाँसम नुकनुक रात रातके महि भेट करे आइ ? आबते महिफे कुछ उपाय निकारे परी । एक दिन जब रात हुइठ ते राजकुमारीक अइना टाइम पुग्नासे पहिले राजकुमारीक ठन जैना उपाय सोंचे लागठ । राजकुमार सोंच्ते सोंच्ते अचानक ओकर मनमे एकठो आइडिया अइठिस । यी घोरुवा जब बटन डबलेसे उरठ कलेसे कुछ ना कुछ सक्ति ते जरुर हुइहिस यकर ठन । अत्रा सोंच्ती जब सबजाने सुट्ठै तब आपन कठुवक घोरुवम् बैठके कहठ-

ले सट्के हुइबे ते काठेक घोरा महि जहाँ बा राजकुमारी ओहे कोठम लैजाइस । नै ते ऐसा सराप देम चन्दन काठके नाउँ नै रहिजिबे ।"

नाकटिकी घोरुवा अत्रा कहटी कि राजकुमारहे उराके राजकुमारीक् कोठम पुगा डेहठ। राजकुमारी फेन रातके सुनसान हुइलबेला राजकुमारहे आपन कोठम चुप्पेसे आइल देख्के खुसी होजाइठ । दुनुजाने भिटरे भिटरे (मनेमने) मन पराइँट । मने आब ते दुनुजाने आपन-आपन सुख दुःखके बात कर्टि-कर्टि भिन्सार हुइ लागठ । बिहान हुइ लागठते राजकुमारीहे डर चिन्ता लागे लग्ठिस । सोंचठ केउ देखना लेहे ? राजकुमारफे चलाख रहठ । कहठ- लेऊ आज मै जाइटुँ और बाँकी बात काल रातके बट्वाब । अब्बे मै जाइटु फुलवारमे । लेऊ ते ठीके बा बह्रयासे जैहो कहटि राजकुमारी बिदाइ करठ। राजकुमार आपन कठ्वक घोरुवा उराइठ चलडेहठ फुलवारमे । बिहान हुइठिस ते सदाके हस घोरुवाहे लसरीम् बाँधके रुखुवम झुला डेहठ । ओ अप्नेभर नुक जाइठ झंगलीतिर । कलुवा जुन हुइटी किल राजकुमारी पठाडेहठ आपन सहेलीनहे कलुवा लेके राजकुमारहे कलुवा खवाइ । कलुवा खाके सेकठ ते दिनभर ओहे फुलरियम नुकके सुटठ् । जब साँझ परिठस सबजाने सुट्ठै ते फें चल डेहठ उरन्टा घोरुवकमे बैठके राजकुमारीक कोठामे । रातभर दुनुजाने अक्के पठरिम सुट्ठैं । मैया प्रेमके बात कठैं । भिन्सारे राजकुमार फूलरियम लौट जाइठ । लगभग छ सात महिना हो जैठिन । ओइनके जिन्गी नुकछुपके प्रेम कर्टि बिते लग्ठिन ।

मोर छाइक आजकल का हुइठिस बोल्नाफे कम बोलठ । दिनभर जब देखो तब सुट्टि रहठ । रातकेफे अक्को नै बाहर आइठ पता पैठुँ कहटि रजवा सोंच्टी आपन भारदार ओइनहे कहठ- लेउ पटा लगाऊ एकर का कारन हो। पता लगैना कोसिस कर्ते कर्तेफे लगभग महिनौ दिन बिते लग्ठिन । एकठो मनैया चौकीदरुवा जौन रहठ ऊ पता लगा लेहठ । सरकार मै दुई तीन दिनसे देखटु । रातके करनिडिया जुन राजकुमारीक कोठा ठन स्वाँइसे बयालहस् कानिका जुन आइठ । भिन्सारे मनै उठ्नासे पहिले स्वाँइसे चल जाइठ । का आइठ- के आइठ कहिके मै अभिन पता नै लगाइ सेक्ले हुँ । चौकीदरुवा रजवक ठन बटाइठ । ठीके बा आब पताकर के आइठ। हावा हसक राजकुमारीक ठन टुहिन बहुत भारी इनाम मिली । जी सरकार कहटी चौकीदरुवा सहमति जनाइठ । के आइठ राजकुमारीक कोठम कहिके पता लगैना कोसिस करट करट आठ्वाँ महिना बिते लागठ । मने कोइ नै पता लगाइ सेकठ ।

आब अइसिक नै हुइ कुछ औरे उपायफे लगाइक परल कहटी रजवा एकठो अइसिन खटिया बनुइया मनैयाहे बल्वाइठ जे कच्चा ढागाके खटिया बनाइठ । कच्चा

ढागाके खटिया बन्वाके राजकुमारीक कोठम ढरुवा डेहठ । खटियक तरे बरवार टसलम घिंघोरल रंग दार डेहठ । राजकुमारीहे चुप्पेसे राजकुमार पता नै पैना मेरके दोसर कोठम सार देहठ । राजकुमारीक् कोठा खुल्ला छोर देहठ ।

जब राजकुमारीक अइना समय पुग्ठिस ते आइठ पहिलेक जैसिन । आके दुवारे ठन आके बोल्कारठ । कोइ नै बोलठ । दुवार ढकेलठ ते खुल जिठिस । भिट्टर जाके हेरठ ते कोठम कोइ नै रहठ । ऊ सोंचठ सायद राजकुमारी कौनो जरुरी कामसे बाहर गैल हुइ । तबेमारे दुवार बिनासिक्री लगैले छोरके गैल बा । कोठम पंजरेओर हेरठ ते लौवा भाँगल खटिया देखठ । ठीक बा राजकुमारी नै आइटसम यीहे खटियम बैठजाऊ कहिके खटियम बैटठ्ते कच्चा ढागाक खटिया अंगाइ नै सेकठ् । लसरी टुट्के राजकुमार रंग घिघोरल टसलक पानीम गिरजाइठ । उठके हेरठ् । के हो यी टलसम रंग घिंघोरल । लाल लाल पानी डेखठ । तब राजकुमार जान लेहठ । ऊ ते चलाख पक्का फेन महि फँसाइक लाग यी सब जुक्ति लगाइल बा । मोर यहाँ रुक्ना ठीक नै हो कहटि उहाँसे आपन उरन्टा घोरवकमे बैठ्के उरटी चलडेहठ । राजकुमार भाग जाइठ उही केऊ नै पकरे सेकठिस ।

जब नोकर चाकर चौकिदार समेट राजकुमारीक कोठाओर अइठै ते दुवार खुल्ला देखठैं । सोंच्ठै आज ते पकर लेली । कोठम भिट्टर जाके हेरठै ते खटिया टुटल ओ टसलक पानी अँराइल देखठै । यहोंर ओहोंर हेरटी खोज्ठैं किहु नै भेटैठैं । रजवक ठन जाके तुरुन्त बटा डेठैं । रजवा फेन चलाख रहठ । यी खबर पैटिकी रजवा आपन देसके जत्रा धोवी रठिस जम्मा जनहन जुटाके कहठ्-

यी देसके लुग्गा ढोऊइया टुहरे हुइटो । टुहिन मसे चहा जेकर ठन लाल रंग लागल लुग्रा आइ ते मोरठन तुरुन्त खबर करहो । अगर पाछे पटा पैम ते उही हे यी देससे निकाला करदेम । रजवक हुकुम सुन्टिकि सब जाने जी सरकार कहटी सहमति जनैठै । सब ढोबी आपन आपन घाट लाग जिठैं ।

राजकुमार जुन यहोंर यी रंग लागल लुग्गा अस्तहें घालु ते महि पकरलिहिं सोहैनाफे नै सोहाइ कहिके का करूँ, का करूँ सोच्टी जुक्ति निकारठ । यी लुग्गा मै यहाँसे कुछ कोस दूर धोवैम ते पटा नै चली कहटी राजदरबारसे दूर एकठो धोवियक ठन लुग्गा धोइ दैयाइठ ।

जौन धोबियक ठन लुग्गा धोइ देले रहठ् ऊ धोवियक भोज रठिस् । ऊ फे जवान रहठ । धोविया ऊ लुग्गा ढोके सुखुवाइठ मने रज्वै खबर नै करठ । जब लुग्गा सुकाइठ ते देखत् अत्रा सुग्घर लुग्गा बा यिहे लुग्गा लगाके भोज करवालेम ते काहुइ फे ढोक दैडेम । हुइनाफे राजकुमारके लगैना लुग्गा सुग्घर नै रना ते बातै नै हो । ऊ धोबिया ओहे लुग्गा लगाके सपर जाइठ दुल्हा बन जाइठ ।

यहोंर रजवा आपन सिपाहीनहे फे खटैले रहठ । लाल रंग लागल लुग्गक मनैन पकरक लाग । धोवियक पटा ते रठिस मने ढोसेक्नु आब सायद नै चिने सेकही कहिके ओहे लुग्गा घल्ले रहठ । जत्रा ढोइलेसे फे रंग कहाँ छुटि अत्रा पक्का रंग ।

जब धोबिया बरात जाइ लागठ ते रजवक् सिपाही उहीहे देख लेठिस । ओ पकरके पुछे लग्ठिस । टै के हुइस ? यी लुग्गा टोर हो ? तब धोविया रजवक् कहल बात समभ्क लेहठ । माफी मगटी कहठ हजुर माफ कर्बी यी लुग्गा मोर नै हो ? यी लुग्गा महि दोसर जाने ढुई देले बटैं । बरे सुग्घर हुइलक ओरसे सोंच्नु आपन भोज भरिक लगा लिऊँ यी लुग्गा । अबकी अइना अँट्वारके ऊ लुग्गा लेहे आइक लाग बा । ऊ लुग्गा लेहे आइ ते मै खबर कैडेम । तबे पकरलेबी उही । ले ठीक बा ते जा तैं आपन भोज निप्टाले कहटि सिपाहि उही छोर डेठैं ।

धोबिया भोज ओज करवाके सेकठ बसफे ओहे लुग्गा ढोके सुखुवा डेहठ । परेस लगाके ढैडेहठ । जब अटवारके राजकुमार लुग्गा लेहे आइठ ते कहठ्- लुग्गा ते धोके तयार बा मने परेस लगाइ पर्ना बा । एक घचिक बैठी ते परेस लगा लिउँ तब लैबिजी । परेस लगैना बहाना लगाके ढोबिया सिपाहीन बलाइ चलजाइठ । कुछघचिक रहिके धोबिया भिट्टरसे राजकुमारके कपरा लेके निकरठ् । ढोबिया लुग्गा डेटी किल राजकुमारहे सिपाही पकर लेठैं । पकरके ऊहीहे राजदरबारलै जिठैं ।

राजकुमारहे रजवक आगे पेस करठैं । रजवा रिसाइल रहठ् । सारे यिहे लवण्डा हो अत्रा दिन मोर छाइक ठन आए । यीहीहे ते ठोरिक बरवारे सजा डेहक परी कहिके आपन सिपाहिनहे आदेस करठ- जाऊ यीही हे मोर बर्कावाला फुलरियम लैजाके तरे कपार (मुन्टा) ऊप्पर गोर कैके जिन्डा गार डेऊ । तब सिपाही फेन रजवक् आदेस पैटी कि राजकुमारहे बर्का फूलरियम गारे लैजिठै । ओहे फुलरियम जुन राजकुमार दिन कटाए: ओ फुलरियक एःकठो आमके रुखवामे आपन ऊरन्टा घोरुवा टंगले रहे । जब सिपाही ऊही गारक लाग खटाहा ओटाहा कोरे लग्ठैं ते राजकुमार सोंचठ कुछ ना कुछ ऊपाय लगाइक परल नै यीने मही मार डरही । एःक घचि रहिके राजकुमार जुक्ति निकारठ अरे वहाँ हेरो ते यी रुखुवामे बेढब आम पाकल बा । महि खाइते डेऊ एःकचो । नै नै मिली टुहिनते जिन्डा गरना बा । ठीक बा मही जिन्डा गार डेहो । आज ते मोर अन्तिम दिन हो । अन्तिम इच्छा ते जे फे पूरा करठ । मै कौन से भारी अपराध कैले बातु । टुहिन के राजकुमारीसे भेट किल ते कैले बटुँ । मोर अन्तिम इच्छा हो । महि एकचो रुखुवम सौंरके आम खाइ देऊ । बरु मोर घेचम नै ते हाँठेम या गोरम लसरी बाँढ

देऊ। मै नै उत्रे लागम ते लसरी पकरके टान डेहो। राजकुमार बिन्टी करठ। ले ठीके बा तोर अन्तिम इच्छा हमरे जरुर पूरा करब कहिके राजकुमारहे आम खाइ जाइ देना सल्लाह करठैं। ले जा आज टै आपन इच्छा भर आम खाले।

राजकुमार रुखुवम सौंरठ। ओहे रुखुवम ओकर ऊरन्टा घोरुवा रठिस। ऊप्पर जाइबेर आम खाइठ ओ गिराइठ। सिपाही फेन राज कुमारके गिराइल आम खाइ लग्ठै। कहाँ जाइ यी रुखुवमसे कहिके सिपाही यहोंर ओहोंर नेगे लग्ठैं। राजकुमार ऊप्पर जाइठ-जाइठ आपन हाठमसे लसरी छोरके रुखुवम हँगियम बाँढ डेहठ ओ अप्ने भर आपन ऊरन्टा घोरुवकमे बैठ्के ऊरजाइठ सिपाही कोइ पते नै पाइठ।

राजकुमार उरलके बहुत घचिक हो जाइठ। सिपाही हुक्रे आम खाइट खाइट अग्घा जिठैं। तब तरेसे कहे लग्ठै- का करते रे ? जल्डी उटर नै ते लसरी टानडेब गिर जिबे ? तरेसे सिपाही जत्रा ढम्क्यइलेसे फे उप्पर रुखुवमसे कुछ जवाफे नै आइल। लसरी हेर्ठैंते उप्परसे तरे भुँइयाँसम पुगल देखठैं। सिपाही अप्ने अप्ने सोंच्ठै-

का कर्टा मनैया उप्पर ? कोइ कहठ- एक घचिक आउर आम खाइ डेऊ रे कोइ कहठ-अरे टानो यी नै उटरी ओस्तके करट करट टानो कहुइयनके बहुमत हो जिठिन। बस सबजाने उहीहे टन्ना सहमतिमे पुग्ठैं। पहिले ते एकचो आउर जोरसे बोलके चेतावनी देठैं। एकघचिक असरा लग्ठैं, कुछ प्रतिक्रिया नै अइठिन ते भिरजिठै टाने। दुई तीन जाने टन्ठै नै सेक्ठैं। सोंच्ठै यी कत्रा बलगर मनैया बा ? कत्रा डटके रुखुवा पकरले बा। दुई तीन जनहन आउर बलाके जोरसे बल लगाके टन्ठैं। ऊ पगहा तब ऐसा आमक हँगिया टुटठ् ओइने उप्पर गिरे आइठ मने बचजिठैं। सक्कुजाने गिरजिठैं। उठके हेर्ठै ते राजकुमार हे नै डेख्ठैं। पुछापुछ हुइलग्ठिन कहाँगिल कहाँगिल कहिके। पाछे लसरी हेर्ठै ते रुखुवक हँगियम बाँधल देख्ठै। यहोंर ओहोंर रुखुवम चिटैठै केउ नै रहठ्। पाछे सोंच्ठै- 'पक्का ऊ हमरिहिन छकाके गैगिल काहुँ। पाछे सिपाही का करी का करी कहिके सोंच्ठै कुछ उपाय नै निकरठीन सोंच्ठै आब गैगिल ते गैगिल कैसिक पकरना हो उही ?

उरन्टा घोरुवावाला मनै ठोरिक्के दिन रहिके ते ऊ रात रातकेफे राजकुमारीक ठन आइ लागल। राजकुमारीक मैया नै मारे सेक्केफे आइ लागठ। राजकुमारीक गर्भफे बह्रटी जैठिन्। रातके दुनुजाने सल्लाह कर्ठै- कैसिक करी, का करी ? मही यहाँ बैठे नै दिही। बरु टुँ चलो मोरसँग घर जाइ यहाँसे भागके मोरठन घोरुवा पलिबा। राजकुमारीफे राजी हो जाइठ। बस दुनुजाने उरन्टा घोरुवकमे बैठके रात्टी भाग जिठैं। आबते राजकुमारके आपन देससे अइलक साल पुगे लग्ठिस। दुनु जाने उरट उरट बहुत दिन हो जैठिन। उपरे उपरे उरके आइल मनै राजकुमार आपन देस जैना डगरे नै जान पाइठ अन्दाजी उरठैं।

उर्ते-उर्ते बहुत समय होजैठिन राजकुमारीक जुन ओहोंर लरका हुइना समय पुग्जैठिस । उपर उर्टि-उर्टि व्यथा लागे लग्ठिस् । जब राजकुमारी खोब छटपटाइ लागठ तब राजकुमार सोंचठ- आब नै बनी, चहा जहाँ हुइलेसेफे उटरिहिक् परी कहिके उप्परसे हेरठते एक ठाउँसे धुवाँ आइट डेखठ । बस ओहे ठाउँमे उटरक लाग उटरना बटन डाब डेहठ । घोरुवा जब बैठटते अइसिन अनकन्टार बन्वक बिच्चे फँटुवा रहठ । जहाँ बहुत मुस्किले कबु कबु किल छेग्रहुवा, बर्डिवा जिठै । नै ते कोइफे नै जैना ठाउँ रहठ । उटरके जब राजकुमार यहोंर ओहोंर हेरठ ते बर्डिवन डेखठ । राजकुमारीक जुन सुटकेरी व्यथा लागल रठिस । का करु ? का करु ? कहिके सोंचट राजकुमारके कुछ अक्किल नै आइ लग्ठिस । एकठो बुह्राइल बर्डिवा आके उही कहठ- यीही गिनोरेसे झंगली झुंगलाले बेंह्रडेऊ । पाछे ऊ बेरही नै पाइठ ते लर्का होजैठिस । बिना सोह्रिनियक हुइल लर्का आब लर्काहे सेंहर्ना कुछ लुग्गा कपरा नै रठिन । ना खैना पिना कुछु रठिन । राजकुमार सोंचठ- जाउँ एकघचिक बजारसे लुग्गा लयानु । उरके जैम अब्बते आजैम । यी सोचके राजकुमार घोरुवकमे उरके बजारमे सामान लेहे चलडेहठ । कुछ घचिक रहिके बजार पुगठ । बजारमे कैयौं सामान किन्ना रठिस । एकठाउँ घोरुवा ठह्रुवाके अप्ने सामान किने लागठ । सामान किन्ना क्रममे यी दुकानसे ऊ दुकान कर्टि कर्टि कैयो दुकान होजैठिस । ऊ घोरुवासे कुछ दूर बजारमे चल जाइठ ।

यहोंरओर जुन जने कहाँसे एक ग्रुप गँजेहरिन भँगेहरिन अइठै । ओहे घोरुवकठन आके चिलमके गाँजा पिठै । ओहे घोरुवकमे आगी झराके चलजिठै । सुख्खल चन्दन काठके घोरुवा डम्कनहाँ काठ घोरुवकमे आगी लाग जिठीस । अक्के घचिक ते जरके भुवा वन जाइठ् ।

राजकुमार जब सामान ओमान किनके आइठ ते सोंचठ आब जाऊँ । ठोरिक घचिकफें होगिल सामानफे किन सेक्नु कहिके चलठ आपन घोरुवक ओर । जब आपन घोरुवा ढैलक ठाउँ पुगठ् ते यहोंर ओहोर हेरठ घोरुवै नै डेखठ । यीहे ठाउँ ते ढैले रहु कहिके हेरठ ते भुइयाँमे राखी डेखठ । तब सोंचठ पक्का मोर घोरुवा जरगिल । अब कैसिक जाउँ नेंगके ते मै जाइ नै सेकम । डगरफे नै जानम । उहाँ ते केउ मनै फे नै जिठै । किहिसे पुछु ठर ठेगाना, कहिके राजकुमार बरे चिन्तम परजाइठ । आपन भरखरिक जल्मल लर्का जो जन्नी सोंचठ । आँखीमसे छहल बहल आँस आइ लग्ठिस । पाछे ऊ घुमे अउइया मनैनसे पुछठ- कोइ बटाइ नै सेकठ । कहाँ हुइही ओकर जन्नी ओ लर्का । पाछे आपन लर्का ओ जन्नीहे सोंचत सोंचत् बेढव रुइ लागठ । जहोंर जाइठ आहोंर रुइटी आपन जन्नीक (राजकुमारीक) ठन जैना डगर पुछ्टी जाइठ । मने कोइ नै सेकठ ओइनके पटा बटाइ । राजकुमार रात दिन रुइटिक रुइटी रहिजाइठ । खानपिन उठ्ना बैठ्ना कोइ ठेगाना नै

रहिजैठिस। आब ते ऊ सोंचक मारे रुइट रुइट बहुत दिन होजिठिस। ऊ पागलहस हो जाइठ। घनु यहोंर घनु ओंहोर जहाँ जाइठ। जिही डेखठ आपन जन्नी ओ लर्काहे किल पुछ्ठ। अपन दाइबाबा बिस्रा जाइठ। मने आपन जन्नी ओ लर्का नै बिस्राइ सेकठ।

जबफे जहाँफें जिहीसेफे अक्के बात पुछ्ठ। कोइ मोर जन्नी ओ लर्का डेख्ले बटो कि नाइ ? डेख्ले बटो ते बटाऊ। ऊ बजार आँजर पाँजर सबजाने जान लेठैं कि पागल हो। जबफे यिहे बात किल पुछ्ठ्। रातदिन यहोंर ओंहोर घनी बजार घनी गाउँ, बन्वा घुमित रहठ। कहठ- आपन जन्नीहे ओ भर्खरिक जलमल लर्का बन्वम छोर्के आइल रहुँ। ओकरते यिहें घुमट घुमट हप्तासे ढेउर पाख पुगे लग्लिस।

ओहोर बिना मनैक अनकन्टार बीच बन्वामे लर्का जल्माइल लरकोरिया अक्केली आपन ठरुवा (राजकुमार) के असरम बैठल रहठ। अस्रा लागट लागट दिन बिट जैठिस। आब अइही आब अइही कहिके असरम बैठल रहठ। जैसिक टैसिक बर्डिवनके बारल आगी भर लानके सुन्गा लेहठ राजकुमारी। दोसर तिसर दिन कटि कटि हप्ता पाखो बिते लग्ठिस। राजकुमार ना आइठ ना कौनो खबर पठाइठ। राजकुमारी डरा-डरा अक्केली बन्वम आपन लर्का लेले रहिजाइठ। अपन घालल लुग्गा चिंठचिंठ झरबड बनाके आपन लर्का सेंरठ। राजकुमारी ऊ ठाऊँसे कहुँ नै जाइठ। सोंचठ- यहाँसे कहु चलजैमते अब्बे सायद राजकुमार अइही ते भेंट नै होब। हप्तौं बिते लग्ठिस ते राजकुमारी भुख्ले पियसले रुखुवक पटिया खाके ओ डुन्ड्रक पानी पिके रहिजाइठ। नै खैम ते बच्चै दुध कैसिक पिवैम ? कहिके किल राजकुमारी खाइठ्। आपन लुग्गा चिंठके बच्चा सेंरठ सेरठ अप्ने नङ्गा होजाइठ। ऊ फें रातदिन बन्वामे राजकुमारके अस्रामे रुइटी दिन बिटाइठ।

हप्तौ दिनके बाद एकदिन अचानक एक लेंहरा गोरु लेके गयरवन जहाँ राजकुमारी रहठ ओकरे लग्गे पुग्जिठैं। जब बर्डिवन राजकुमारीक कुछ लग्गे पुग्ठै ते रुइट सुन्ठैं। ओइने राजकुमारी हे नै डेख्ले रठैं। सोंच्ठै के हुइ अत्रा दूर भिट्टर बन्वम आके रुइटा। यहाँ ते आसपास कौनो गाउँ नै हो। चलो ते जाइ हेरे। एकठो ठोरिक जवान भोज कैना उमेरके बर्डिवा रहठ। सब छोटछोट लर्का रठै। लर्कावाला बर्डिवन कठैं- टै जा हमरे खेलटी। लर्को टोहरे खेलो ओ गोरु हेरहो मै जाइटु हेरे। जब ऊ बर्डिवा राजकुमारीक ठोरिक लग्गे पुगठ ते लर्का रुइट सुनठ। बिना खैना पिनाके हप्तौं दिनसे रहल महटरियक दुधे नै अइठिस। खाउँ ते का खाउँ, कहाँ पाउँ ? कहिके भुखले राजकुमारी अप्नेहे डोंगिल ओ कमजोर होगिल रहठ।

दाइक दुध नै अइलक ओर्से बच्चाफे एकडम डोंगिल ओ कमजोर हो जाइठ। रुइठै ते दुनुहुनके मजासे आवाजफें नैअइठिन।

बर्डिवा जाइल करठ धिरे धिरे राजकुमारीकओर ते डेखठ रुखुवा तरे अक्केली नङ्गा लरकुरिया कोनम लर्का लेले जुगुर जुगुर कैना आगिक पंजरे बैठल। डेहम लट्टा कपडाफें नै रठिस। बर्डिवा सोंचठ - ओहो ! कौन दुखियारी हो यहाँबीच बन्वामे बिना लट्टा कपडाके छोटमोट बच्चा लेले बैठल बा। कैसिक आइल हुइ यहाँ ? यहाँ हलपट कौनौ मनै नै आइसेक्ठैं। कहाँसे आइल हुइ यी लरकुरिया ? बर्डिवा आउर लग्गे जाके हेरठ ओ सोंचठ- यी दुखियारी अबला हेरलेसे बहुत दिनसे भुखले पियसले हस देखाइठ। रुपसे बहुत सुन्दर बा। मने बिरामी बा कि भुख पियाससे हो येकर चेहरा मुर्झाइल बटिस। गयर्वा राजकुमारीक लग्गे जाके सबसे पहिले आपन चदरी डेहठ।

लाज छोपक लाग ओ ओकर बच्चै छोपक लग। राजकुमारी मजासे बोले नै सेक्ना स्थितिमे रहठ। का हुइटा बेराम बटो कि नेगके मिच्छाइल बटो पूरा चेहरक रंग उटरल बा टोहाँर ? राजकुमारी कहठ- मै पाँच छ दिनसे कुछ खाइ पिए नै पैले हुँ । मै भुँखाइल ओ पियासल बटुँ राजकुमारी साँसे किल बोल्टी कहठ। ओकर मुह च्याप च्याप कर्ठिस मजासे बोली नै फुट्ठिस। बोले नै सेक्के गयर्वाहे मुलुर मुलुर हेरठ। बर्डिवा दयालु रहठ। ऊ तुरुन्त रुखुवक पट्टक खोंकी बनाके डुन्ड्रमसे पानी नानके ठोर ठोर पिवाइठ। तब आपन लग मिझ्नी लैगिल भात खाइक देहठ। राजकुमारी कैयौ दिनसे भुखाइल हुइलक ओर्से गयर्वक देहल भात टिना जैसिन रलेसे उहिहे चौंरासी व्यन्जन पाइलहस लग्ठिस । हुइना ते एकठो कहकुट बा- “भुखक आगे गुल्लर पाके ।” खाना चहाजैसिन रलेसेफे राजकुमारी बहुत मीठसे खाइठ। भात खाके सेकठ ओ ठोरठोर तागत सरीरमे अइठिस । तब राजकुमारी बटाइ लागठ - मै फलाना देसके राजकुमारी हुँ । फलाना देसके राजकुमारके सँग प्रेम करुँ। राजकुमार ओ मै करिब साल भरसे एक्के सँग बैठी। मोर बाबा पाछे जब पता पाइल ते राजकुमारहे बगियामे जिट्टी गारडेना आदेस डेहल । पाछे बरे मुस्किलसे राजकुमार जैसिक टैसिक बचके मोरठन पुग्लैं ते हम्रे भाग गिली। मोर पेटमे यी बच्चा रहे। यकर जल्मना दिनपाट पुगल रहिस। हम्रे उरन्टा घोरुवकमे बैठके राजकुमारके घर जाइ लग्लि ते डगरेमे मही सुटकेरी व्यथा लागगिल। मै उपरे घोरुवकमे बेढमसे छटपटाइ लग्नु ते कुछ उपाय नै लागके राजकुमार यहाँ घोरुवा पराडेलैं।

जब मोर बच्चा जलमके सेकल ते कुछ खैनापिना ओ लट्टा कपडा लेके अइम कहिके बजार गिलै। अब्बे आजैम कहिके तौन हप्ता बिते लागल अभिनसम

राजकुमारके कौनो अतापता फे नै हो । का होगिलिन ? कहाँ गैगिलै ? ऊ राजकुमारहे समझके रुइ लागठ गयर्वक आगे । ऊ गयर्वक भोज नै हुइल रठिस । मनमने सोंचठ यी बिचारी बेसहारा होगिल बा । अस्ते छोर्केफें नैजाइ बनी । घरे लैजाउँ ते राजकुमारी हो । मै ते एकठो गरीब गयर्वा हुँ । औरेक गैया चह्रैठु । का कर्ना हो ? गयर्वा सोंचठ एकचो पुछ लिउँ जे राजकुमारीसे का कहठ ।

गयर्वा जाके पुछठ- टुँ ते राजकुमारी हुइटो । मै औरे जनहनके गैया चह्रुइया गयर्वा हुँ । गरिब बटुँ मने टुहिन बेसहारा देख्के महिन दया लागता । अगर टुँ मोरसँग मोर घर जाइ सेक्बो ते मै लैजिम टुहिन । अपन घर । बरु पाछे टोहाँर मनै मिल्हीते चलजिहो आपन मनैक सँग । कै दिनसे टोहार मनै अभिनसम घुमके नै आइल हुइट । यदि तोहाँर मनै घुमके नै अइही कलेसे ओ ोहाँर इच्छा हुइ कलेसे मै टुहिनसे भोज कैक टुहिन ओ यी बच्चाहे सहारा देना तयार बटुँ । मोर भोजफे अभिनसम नै हुइल हो ।

गयर्वक बात सुन्के राजकुमारीक आँखिमसे आँस गिरे लग्ठिस । आँस गिरैटि राजकुमारी बहुत बेर सोंचठ सोंचठ कुछ बोले सेकठ । तब गयर्वा पाछे फेन कहठ- ठीक बा तोहाँर जैना इच्छा नै हो कलेसे जबरजस्टीक बात नै हो । मने भर्खरिक लरकोरिया ओ छोटमोट बच्चा देख्के अस्तहे छोर्के जैना मोर मन नै मानठो । मने मै ते गरिब हुँ । गैया चह्राके टुहिन बह्रियासे खैनापिना लट्टा कपडा ते नै पुगाइ सेकम । तबे नै जाइक मन करठुइबो । राजकुमारी बरे भित्तर लाग सोंचके कहठ- टुँ मनैन लाग गरिब गयर्वा हुइवो । तोहाँर ठन धन नै हुइ । मने टोहाँर मन गरीब नै हो । औरेक गैया चह्राके खैना मनै- चिन्हल न जानल तबफे मोर दु:ख देखके महि सहारा डेना तयार हुइलो । मही बहुत खुसी लागल । मोर लग ते टुँ भगवान बनके अइलो । नै ते मोर का हालट हुइट कुछ पटा नै हो । ठीक बा टुँ महिन जहाँ लैजाउ, चहा जैसिक बैठाउ, ज्या खवाउ । यी लर्कक ज्यान बचाइक लागफे एकठो सहारक जरुरट बा । मै टोहाँरसँग जिम । गयर्वा राजकुमारीहे लर्कासहित घरे लैजाइठ । ऊ राजकुमारीक सहारा बनठ ।

ओहोंर राजकुमार यहोंर ओहोंर दुनियाँभर पागलहस घुमठ । राजकुमारहे पागलहस यहोंर ओहोंर सड्डे घुमट देख्के बहुत मनै कठैं यी मनैयाँ ते बहुत सुन्दर हस देखाइठ । कौनो बरवार घरानक रना हस देखाइठ । नौजवान बा मने पागल हस काहे घुमठ ? राजकुमारी गयर्वक सँग जाके बैठल घरे ओरफे राजकुमारी डेली घुमे जाइठ । विरहके वेदनामे पर्के राजकुमारीक् चेहरा बदल गैल रठिस । राजकुमारीफे नै चिने सेके लागठ राजकुमारहे । अस्तेक घुमट घुमट राजकुमार

एक दिन मुर्छा पर जाइठ । जौन देसमे यी राजकुमार पागल हस घुमठ ओहे देस ओकर जन्नी राजकुमारीफे गर्यवक सहारामे गैल रहठ । ओइने जौन देसमे गैल रठैं ऊ देसके राजकुमारी राजकुमारहे पागलहस घुमट डेख्ले रहठ । आज ऊही मुर्छा परठ देख्के आपन नोकर चाकर ओइन्हे कहठ- देख्नम ते मनैयाँ सुन्दर देखाइठ । मनै रातदिन पागलहस काहे यहोंर ओहोंर घुमठ ? जाऊ ते यीही उठाके नानो येकर समस्या का बटिस् मै पुछम । पागल फे नै रनाहस बिल्गाइठ । राजकुमारीके आदेस पाके ओकर दरबारमे लानके ओकर दवाइ बिरुवा कराइठ राजकुमारी । ऊ ते अपने बेहोस रहठ पाछे बिरुवा करट करट बलतल ओकर होस अइठिस । जब होस अइठिस ते दरबारमे लानके उहीहे लहुवा खोराके भुट्ली भुट्ला छाँटके लावा लुग्गा लग्वाके माँग मुरी चोंच देठै । आबते ऊ बहुत हेन्डसम डेखाइ लागठ । रनाफे ऊ राजकुमारे रहे । सुन्दर नै देखैना ते बाते नै हुइल । बहुत दिनसम मसाजे ओकर दवा बिरुवा कैके उही खुसी पारक लाग मेरमेर्के राहरंगिक बात बट्वैठै । तब कुछ दिन रहिके राजकुमारके जौन सोंचक मारे पागलहस करे ऊ कुछ कम हो गिलिस । जब राजकुमारके होस अइठिस तब जाके ऊ बट्वाइ लागठ राजकुमारीसे । आपन पूरा परिचय बटाइठ ओ ऊ आपन घरसे यहाँतक कैसिक पुगल कहिके पूरा बात बट्वाइठ । एकठो देसके राजकुमारीसे प्रेम हुइल ओ बच्चा पैना क्रममे बन्वामे पराइल ओ उहीसे बिछरल सक्कु बात एक-एक कैके बटाइठ । ओकर बात सुन्के जौन देसमे गैल रहठ ऊ देसके राजकुमारीक फेन उही ओकर बिछरल राजकुमारीहे खोज देहक लाग सहयोग कैना बात बट्वाइठ । राजकुमार हे ठोरिक खुसी लग्ठिस् ।

राजकुमार कहठ- ऊ राजकुमारीफे पक्का यहोंर कौनो देसमे मोरेहस घुमठुइ । ऊ कौन अवस्थामे हुइ ? मोर बच्चा कैसिन हुइ ? आबते स्कूल जैना उमरेके पुगगिल हुइ । जबसम अपन जन्नी ओ लर्कासे नै भेट हुइम तबसम मै यहाँसे कहुँ नै जैम । कै दिन बैठ्ना बा ठेकान नै हो । जै दिन बैठलेसे फेन बिना कामके कैसिक बैठना हो । काम ते कैना मने का काम कैना हो ते ? राजकुमार मनमने सोंचठ । राजकुमार हुइलक ओरसे पढल लिखलफे रहठ । ऊ राजकुमार राजुकमारीसे अप्नेहे कहठ- मै आउर कुछु काम करे नै सेकम । यदि सेक्बो कलेसे महि कुछ दिनके लाग कौनो स्कूलमे पढैना काम मिलादेऊ ।

राजकुमारके बात सुनके राजकुमारी कहठ- ठीके बा मै पता लगाके टुहिन खबर करम । कुछ दिन रहिके ऊ राजकुमार मस्टरुवक नोकरी करे लागठ एकठो स्कूलमे ।

ओहोंर गयर्वक सँग ओकरे सहारामे बन्वमसे घरे आइल राजकुमारी रुखेसुखे खाके ओहे गयर्वकसँग बैठे लागठ । बैठट बैठट आबते तीन चार वरष हो जैठिस । कोइ खोजे नै अइठिस । गयर्वा कहे लागठ अभिनसम तोहार मनै खोजे नै अइलैं । खोजे नै अइही ते का कर्बो ? कहाँ जिबो ? आब ते तोहार छावा फे स्कूल जैना होगिल । बाह्र वरषसम्म अस्रा हेरम । मोर मनै अइही ते अइही नै ते कुछ उपाय लगाके आपन डगरा हेरम गयर्वासे राजकुमारी कहठ । गयर्वाफे समभ्रुदार मनै रहे । ऊ राजकुमारीक बात सुनके कहठ- ठीके बा १२ वर्षसम टुहिन कोइ नै खोजे आइ ते महिसे भोज कर्बो ? राजकुमारी पतिव्रटा नारी रहठ । बहुत भित्तर लाग सोंचके कहठ- महि पूरा विसवास बा १२ वर्षसम मै अपन बुर्ह्वै भेटाजिम । यदि नै भेटैम तब किल टुहिनसे भोज करम ।

राजकुमार स्कूलमे पढाइ लागठ । जौन स्कूललिम ऊ मस्टरुवा रहठ ओहे स्कूलिम ओकरे छावा फेन पढ्ठिस । ना राजकुमार हे पटा रहठ ना ओकर छावाहे । ओकर ऊ स्कूलिम पढाइट पढाइट छ सात वर्ष बिते लग्ठिस । आब ते राजकुमारीक अस्रा टुटे लग्ठिस । सायद राजकुमार उही खोजे नै अइ कि कहिके

गयर्वा भिटरे भिटरे राजकुमारीहे मन पराइठ । मने गरीब मनै कुछ कहे नै सेकठ । मनमने सोंचठ आबते १२ वर्ष पुग्ना कुछ दिन बाँकी बा । ओकर बादमे मै राजकुमारीसे भोज कैलेम । हम्रे ठरुवा मेढरुवा बन्जाब । तबसेते हमरहिन एक्केठे होकेफे अलग अलग नै बैठे परी ।

स्कूलके पढाइ जारी रहठ । पढाइ लिखाइके क्रममे एक दिन राजकुमार सक्कु लर्कनहे कहठ- काल सक्कु जाने आपन आपन दाइनके नाउ पुछ्के अइहो । दोसर दिन सक्कु जाने आपन आपन दाइनके नाउँ बटैठै । तब दोसर दिन फेन लरकनसे कहठ- लेऊ आब काल्ह आपन आपन बाबनके नाउँ पुँछ्के अइहो । लरका सक्कु जाने हाँ सर कहिके सहमति जनैटी बिदा हुइठैं ।

दोसर दिन सक्कु लर्का अपन अपन बाबनके नाउँ बटैठैं । राजकुमारीक छावैसे टोर बाबक नाउँ का हो ? कहिके पुछ्ठ । नै जन्ले हुँ सर, मोर दाइ मोर बाबक नाऊँ नै बटाइल । ले ठीके बा काल जरुर पुछ्के आइस मस्टरुवा आदेस देहठ ।

दोसर दिनफे लवन्डा आपन बाबक् नाउँ पुछे लागठ । आपन दाइसे अनेक चिरौरी बिन्ती करठ । मने दाइ नै बटैठिस । औरे दिन स्कूल जाइठ ते फेन मस्टरुवा ओकर बाबक नाउँ पुछ्ठिस । मने लवण्डा नै बटाइठ । कैंयो दिनसम लवण्डा जब आपन बाबक नाउँ नै बटाइठ ते ऊ राजकुमार ऊ लवण्डा हे सजाय देटी रिसाके कहठ- सबजाने आपन-आपन बाबनके नाउँ बटैले । टै काहे नै बटाइठुइस ? तब

लवण्डा डरैटी कहठ- सर मोर दाइ महि मोर बाबक नाउँ नै बटाइठ। जा काल जैसिकफे पुछ्के आइस।

लवण्डा घरजाके फेन आपन दाइसे आपन बाबक नाऊँ पुछे लागठ। राजकुमारीहे डेली ओहे बाबक नाउँ किल पुछठ सुनके मिच्छागिल रहठ। लवण्ड जब जिद्दी करे लागठ ते राजकुमारी कहठ- कौन मष्टरुवा हो रोजदिन टुहिनके बाबक नाँउ किल पुछठ ? यहाँ लैयानिस मै बात करम ऊ मस्टरवैसे।

फेन औरे दिन जब लवण्डा स्कूल जाइठ ते फेन मस्टरुवा ऊ लवण्डक बाबक नाउँ पुछे लागठ। लवण्डा नै बटाइठ। तब फेन जब पिते पिते करे लग्ठिस। तब डरैटी कहठ- सर मोर दाइ महि मोर बाबक नाउँ नै बटाइल। अप्नेहे घरे बलैले बा। जब अप्ने मोर घरे जैबी तब मोर दाइ अप्नेक ठन मोर बाबक नाउँ बटाइक लाग बा। नै यहै बटाइ परी मस्टरुवा कहठ। नै सर अप्ने मोर घरे जैबी तबे किल मोर दाइ अप्नेहे मोर बाबक नाउँ बटाइ लवण्डा कहठ। ले ते ठीक बा काल मै तोर घर जैम- मस्टरुवा कहठ।

घरे जाके लवण्डा आपन दाइक ठन बटाइठ सर आइक लाग बटै कहिके। दोसर दिन लवन्डक दाइ गरीब रलेलेफे घरमे जौन रठिन ओहे चिजके बर्हियासे खानापिना परिकार सहित बनाके पकाइठ। पूरा तयारी मजासे करठ।

यहोंर गयर्वा आजफे राजकुमारीक आपन ठरुवैसे बिछरल १२ वर्ष पूरा हो जाय। आज अन्तिम दिन हो कहिके खुसी रहठ। ११ वर्ष ११ महिना २९ दिनसम आपन जनेवै खोजे नै आइल मनै एक दिनमे अइना ते कौनो चान्स नै हो कहिके मख्ख रहठ। अगर आजकिल ठरुवा खोजे नै अइहिस ते कालसे ते मै उहिसे भोज कैना बात आगे बढाइ लागम। गयर्वा सोंचठ। अस्ते अस्ते मीठमीठ कल्पनामे मस्तसे डुबल बेला मस्टरुवा लवण्डक घर आइठ।

जब मस्तरुवा ऊ लवण्डक घर जाइठ, तब लवण्डा आपन दाइहे दौरती बलाइ जाइठ। जाके कहठ- दाइ दाइ बाबक नाउँ पुछ्इया सर आगिलैं। जा बैठ्ना ओ पानी दैया। ओकर दाइफे हलहिल घरमसे निकरके खटिया दरी लेके आइठ ओ अँगनामे बिछा डेहठ। तब हडबड हडतब पानी लेहे चलडेहठ। जब पानी लेके देहे जाइठ तब मस्टरुवक अनुहार हेरठ। ऊ फटसे चिन्ह लेहठ। राजकुमारफे चिन्हलेहठ राजकुमारीहे। तब १२ वर्षके अन्तिम दिन आके दुनहुनके भेट हुइठिन। दुनुजाने अत्रा खुसी हुइठै कि ओइनके खुसीक कौनो सीमा नै

रहिजैठिन । दुनुजाने एक डोसरके आँग लगाके खुसीके मारे रो परठैं । लवण्डा ओ दोसर मनै सबजाने अचम्म परजिठै । पाछे दुनुजाने बटैठै । ओइने थरुवा मेधरुवा हुइटै कहिके । तब लवण्डा जानठ ओकर बाबा आउर केउ नै ओहे मस्टरुवा हो कहिके ।

मस्तरुवा आपन छावा जन्नी भेटाके बहुत खुसी हो जाइठ । पाँच छ वर्ष स्कूलमे पढाके कमाइल तलब जम्मा गयर्वा हे डेटी कहठ- अप्नेे ते मोर ओ मोर परिवारके लाग भगवान हुइटी । अत्रा सहारा देली पल्लि पोसली अप्नेक लगाइल गुन मै कभु नै बिस्रैम । अप्नेक ऋन ते मै तिरे नै सेकम । आब यी भर मोर तरफसे सहयोग स्वरुप ली ।

यहोंर गयर्वा चिन्तामे परगिल रहठ । ओहोर जौन राजकुमारी राजकुमारहे डवा बिरुवा कैके नोकरी डेले रहे । राजकुमारी फे राजकुमारसे बहुत प्रेम करे । राजकुमार आपन परिवार भेटाके बहुत खुसी रहठ । राजकुमार स्कूलमे पढैटी जाइठ । आइल तबलसे गुजारा करैं । ओहे देसमे एकठो घर केराया लेके बैठे लग्ठैं ।

ओहोंर राजकुमारके बाबा आपन सक्कु सेना लगाके राजकुमारहे खोजत खोजत हैरान हो जाइठ । आजतक राजकुमारहे नै भेंटाइठ । राजकुमारके उरन्टा घोरुवम उरलक लगभग पन्ध्र सोह्र वरष हो गैल रठिस । रजवा एक दिन राजकुमारके खोजीके लाग इनामके घोषना करठ । जे मोर छावाहे खोजके नानी उही मै आपन आढा राजपाट दैडेम । क्यौ बा ! जे मोर छावाहे खोजके नानेसेकी ? रजवा जोरसे कहठ । सरकार मै कोसिस कैके हेरु ? मोरे कारन राजकुमार गायब हुइल बटै । अगर सरकार हजुरके इजाजत मिली कलेसे मै एकचो कोसिस कैके हेरम । राजकुमारहे खोजके लैआनम ते ठीके बा हजुर जो चाहबी इनाम डेबी । मोर घरपरिवारके सक्कु जनहन छोर देबी । अगर नै नाने सेकम ते सजा ते हम्रे कट्टी बटि बरहैया कहठ ।

ले ठीक बा । जा खोजके लान टुहिन इजाजट बा रजवा कहठ । ओत्रा रजवक हुकुम पाके बरहैया फेन चलडेहठ चन्दन काठके लकडी लानके फेनसे उरन्टा घोरुवा बनाके उराइठ । ले चन्दन काठके घोडा जहाँ जहाँ हमार राजकुमार घोरुवा लेके उरट गैल हुइही ओहें ओहें लैचल । नै ते ऐसा सराप डेम चन्दन काठके नाउँ नै रहि जिबे । बरहैया घोरुवकमै बैठके सरापठ । अत्रा कहटि किल घोरुवा उर डेहठ । राजकुमार अलभोलेम उरल रहठ । बरहैयाते सब साटुभुक्का बाँढके गैल रहठ । राजकुमार जस्तक जस्तक उरल रहठ ओस्तक ओस्तक बढैयक घोरुवा लैजिठिस । महिनौ दिनसम्म उपरे उरठ । घनी यहोंर घनी ओहोंर कर्टिकर्टि बहुत

दिन बिट जाइठ। बरहैया सक्कुओर खोज आइठ घोरुवक मद्दतसे। जैसिक जैसिक ऊ घोरुवा गैल रहठ, ओस्तक लैजैटी जै दिन ऊ उरल रहठ टैदिन उरठ। बस एकठो सहरमे जाके चिपा जाइठ। उहाँसे घोरुवा ऊरे नै लागठ। तब बरहैया पुछे लागठ उहाँक आसपासके मनैनसे। तब ओटठेंक लग्गेक दुकानवाला मनैया (व्यापारी) बटाइठ। आभ्रसे बाह्र तेह्र बरस पहिले अस्ते घोरुवा लेके एकठो मनैया आइल रहे। अट्ठे घोरुवा ठरुवाके सामान किने गैल। बस जाने कहोंरसे पाँच छ जाने गँजेहरिन अइलैं चिलम पिलक आगी घोरुवक पर झराडेलिस। बस घोरुवा जरके राख होगिलिस। तब पाछे हमार राजकुमारी बिरुवा करैलिस ओ उही एकठो स्कूलमे पढैना नोकरी दैडेलिस। बहुत वर्ष तक अपन जनेवैसे बिछरल रहल मने अब्बे एक होगिल बटै। अगर ओहे मनैया हुइ कलेसे उहीहे स्कूलमे भेटैबी, व्यापारी बटाइठ।

कौन स्कूलिम कहिके उही पटा नै रठिस। ऊ बरहैया यी मोर घोरुवक विचार कैडेबी कहटी चलडेहठ स्कूल स्कूलमे खोजे। खोजट खोजट एकठो स्कुलमे जाके राजकुमारसे भेट हो जाइठ। राजकुमारके अप्नेहे आपन देस जैना ते कौनो उपाय नै रठिस। महिनौ उर्के आइल रहठ।

जब बरहैया राजकुमारहे अपन देसके मनै खोजे आइल देखठ ते ओकर खुसीके सीमा नै रठिस। खुसीसे आपन देस जाइक लाग तयार हुइठ। यी बात राजकुमारीहे आपन छावैफे बटाइठ। तीनुजाने खुसी रठैं।

यहोंर बरहैया राजकुमार ओ ओकर परिवार अटैना एकठो आउर ओस्टहें चन्दन कठ्वक घोरुवा बनाइठ। जब घोरुवा तयार हुइठिस तब बह्रियासे ऊ घोरुवै उराइ ओ पराइ सिखाके सक्कु जनहन बैठाके ऊरा डेहठ। उरट उरट कुछ दिनकेबाद आपन देसमे पुग जिठैं। जब ओइने राजदरबार पुग्ठै ते बरहैया राजदरबारके चौकीदारहे अप्ने घुमके आइल खबर पठाइठ। रजवा आपन छावक घुमके अइना असरामे बैठल रहठ। रजवा तुरुन्त आजाइठ। जब रजवा बाहर डेखठ ते आपन जवान छावा ओकरसँग सुग्घर राजकुमारी पटोहिया ओ नतिया फेन आइल देखठ। रजवक खुसीके सीमा नै रहिजैठिस। मोर छावा किल नाइ बरहैयाते मोर पटोहिया ओ नतिया फेन लेके आइल कहिके ओकर परिवारके सक्कु जनहन जेलमसे छोर्के बरे बरे इनाम देहठ। बरहैयक बहुत मान सम्मान हुइठिस। सोलरा जे खुसीसे बाहर घमुठ उही रजवा तुरुन्त ठुनुवा देहठ। तबसे फेन रजवा ओ बरहैंयक परिवार खसीसे आपन आपन घर बैठे लग्ठैं।

चमौटा राजा

-सीताराम चौधरी

बहुत समय पहिलेक बात हो। एकठो देसमे राजा राज करठ। हुँकार देसमे सक्कु प्रजा सुख ओ चैनसे रठैं। ऊ रजुवक एकठो रानी रहिस। राजा रानिक एकठो छावा हुइठिन छावा (राजकुमार) बहुत सुन्दर रहठ। जस्तके दिन, महिना साल बिटट् जाइठ ओस्तके राजकुमार जवान भोज कैना हो जाइठ। राजकुमार ओस्तेहेफे बहुत सुन्दर रहठ। उप्परसे राजाक छावा उहीसे भोज करुइया लवन्डीन एकसे एक रठैं। मने राजा पटोहिया खोजे देस देस घुमे लागठ। घुमट घुमट एकठो देसके राजक छाइ राजकुमारीहे मन पराके बातचिट कैके आइठ। ऊ जमानामे आजकलके हस लवन्डा लवन्डी एक दोसर हे डेखे फे नै पाइँट। दाइबाबा जैसिन खोजदिन ओस्ते थरुवा मेंढरुवा बनिट। राजकुमारी हुइना ते अपने देसके दोसर लवन्डाहे प्रेम करे। लवन्डा फेन राजकुमारीहे बहुत मन पराए। दुनुजाने भोज कैके थरुवा मेढरुवा बन्ना सल्लाह कैले रठैं। मने लवन्डीक दाइबाबा ओकर भोज राजकुमारसे कैना बात पक्का कैडेले रठैं। राजकुमार फेन भोज करैना राजी हो जाइठ।

दुनु ओरसे बातचिट पक्का पक्की होजैठिन। तब दुनु राज्यमे बहुत धुमधामसे भोजके तयारी कर्ठै। चारुओर देस देसमे नेउटा बात्ठै। भोजके सुभ साइट निकर्ठै। भोजके दिन पुगठ। दुनुओरसे भोज बहुत धुमधामसे कर्ठै। लवन्डक ओरसे आउर विसेस भोज हुइठिन।

भोज होके सेक्ठीन ते राजकुमार ओ ओकर जन्नी युवराज्ञी बन जिठैं। लावा थरुवा लावा मेढरुवा बहुत खुसी ओ सुखसे जिन्गि चले लग्ठिन। ऊ राजपरिवारके राजकुमार भोजकाज कैके आब अइना समयके राजा अप्ने बन्ना सुनिसिचत हुइलक ओरसे राजासे ज्यादा राजकाजके काममे अप्नेहे खते लग्ठैं। ओस्तहके कुछ वर्ष बिट जाइठ। राजा आउर बुह्रा जिठैं। आब ते आउर राजकुमारहे राजकाजके हरेक काम करेक परठिन। ओहेक्रममे एकदिन राजकुमार राजकाजके काम लेके कुछ दिनके लाग बाहेर नैजाके नै हुइलक ओरसे दोसर देस चलजिठैं।

राजकुमारके बाहेर गैलक एक दुइ दिनबाद राजाहे फेन कौनो जरुरी कामसे दोसर देस जैहीपर्ना हो जैठिन। ऊ कामके लाग राजा नैजाके रानीहे बाहेर पठा देहठ। रानी ओ राजकुमार आपन देससे बाहेर रहल बेला एकदिन राजा अचानक बेराम पर जाइठ। घरमे युवराज्ञी ओ राजा किल रठै। ओइने तुरुन्ट राजक सुरक्षाकर्मी

अंगरक्षक हुकहन बलैंठै ओ राजक लाग डाक्टर बलाइ पठैठैं । राजदरबारमे राजवैड, डाक्टर राजगुरु सब आ जिठै । सबजाने आपन आपन ज्ञानअनुसार राजाके बिरुवा कठैं मने राजकमे कौनो डवाबिरुवा नै लग्ठिन । तब राजा बुझ्र जिठैं कि मै आब नै बचम । छावा अभिन अइले नै हो, दोसर देससे । का कर्ना हो ? कहिके राजा बहुत चिन्तामे रठैं ।

एक दिनके बात हो, जब राजा मृत्यु सैयामे अन्तिम सास लेह लग्ठै तब आपन पटोहियै बलाके कठै- हेर पटोहिया हमार राज खजानाके डराजके चाभी हो यी । यी चाभी बिना डराजके भिट्टरके सम्पत्ति किउ नै लैजाइ सेकी । यी चाभी जब टोर ससुइया चाहा मोर छावा आइते दैडिस । आपन पटोहियै चाभी देके रजुवा मर जाइठ् ।

राजा मुलक बादमे रजुवक लावा पटोहिया राजकुमार ओ आपन ससुइया यानीकी रानीक ठन खबर पठाइठ । राजकुमार ओ रानी रुइटी अइठैं । कुछबेर परसे राजकुमार आपन जन्नीसे पुछट- बाबा मरेबेर कुछ देहल कि नै ? कुछ बटाइल कि नै ? तब युवराज्ञी कहठ नै कुछ देलैं । ना कुछ कनै कहिके सच्चा बात छुपालेहठ । ठीके बा ते कहिके रानी ओ राजकुमार मिल्के राजुवक दाहसंस्कार बह्रियासे करडेठैं । ओकरवादमे रानी राजसभाके बैठक बलाके राजकुमार ओ युवराज्ञीहे लावा राजुवा रानी बनैठैं ।

एक दिन राजा पुछ्ठै- बाबा मरेबेर जट्टिके कुछ नै कहल ओ कुछ नै देहल ? ते लावा रानी कठै- नै कुछ कलै ना कुछु देलैं । काहे पुछठो यी बात घोंस घोंस ? लावा रानी चाभीक बात फेन छुपा लेहठ् । ऊ रानीक् खजानाके चाभी हठ्याके यी रजुवैफे छोरके सारा सम्पत्ति लेके आपन पुराने मनरख्नक सँगे सुखसे जिन्गि बिटैना योजना रठिस ।

राज्य चलाइक लाग ते रुपिया पैसा धन सम्पत्ति बिना सम्भव नै हो । राजखजाना के चाभी कहाँ बा पटा नै हो ? कैसिके राज्य चलैना हो, कहिके राजा बहुत सोंचमे परजिठैं । बिना सम्पत्तिके जिन्गि चलैना बहुत कर्रा हो जैठिन । मने जत्रा समस्या अइलेसेफे लावा रानी चाभी मही ढैले बटुँ कहिके बटैवे नै करठ ।

बिना धन डौलटके राजकाज चलाइट चलाइट राज परिवार उधारके राज्य चलाइ लागठ । ओस्तके समय बिटट जाइठ । कुछ सालकेबाद ऊ राज परिवार कंगाल हो के सामान्य परिवार जैसिन बन जाइठ । जब सामान्य परिवारसेफे कमजोर गरिबी हालतमे पुग्ठैं एक दिन ऊ रजुवक दाइ (बुढ्रिया रानी) कहठ- छावा रे ! पटोहिया राजक छाइ हो । हमरे ते जैसिक टैसिक जिन्गि गुजारा कैलेव । मरमजुरी कैके, यी कैसिके जिन्गी काटी ? पटोहियाहे भर एकर लैहर पठा या । जौन दिन

राजखजानाके चाभी मिली ऊ दिन हमरे फेनसे पहिले जैसिन राजा बन्जाब । ओ पहिलेक अवस्था आ जाइ ते लयानिस फेन पटोहिया हे । यहाँ ते यी अवस्थामे यकर बहुत दुःख हुइहिस । हुइना ते एक ओरसे टैंफे बात ठीके कले दाइ कहिके लावा रजुवा आपन जन्नीहे आपन ससरार पठाइ जाइठ । जाइट जाइट ओइने थरुवा मेढरुवा राजुवक ससरार पुग जिठैं । अधा लम्मा डगर राजा रानीक खासे ज्यादा बातचिट नै हुइठिन ।

रानी रुपमे सुन्दर रलेसेफे मनके बहुत कुरुप रहठ् । थरुवा जनीवक सुखदुख सबचीज हेर्ठिस मने जनीवा आपन थरुवा हस नै मानठ । ऊ राज परिवारहे कंगाल बनुइयाफे ओहे रानी हो, चाभी नुकुवाके ।

राजा आब सामान्य मजदूर बनके ज्याला मजुरी करट करट बडल जिठैं । जब ऊ आपन जन्नीहे लेके सस्सार पठाइ जिठै ते रानीभर आपन लहेर पुगटीकिल घरक भिट्टर पेल जाइठ । रानीहे सक्कुजाने चिन्ह लेठैं । राजाहे केऊ नै चिन्हे सेक्ठै । काहेकी ऊ राजासे गरीब मजदूर बनगिल रठैं । आपन छ्वाइहे भर चिन्हलेठैं । आपन दम्दाहे नै चिन्हे सेक्ठैं । सोंच्ठै यी कहाँक भिखारी हो ? राजाफे मोर ऐसिन ओइसिन होगिल कहिके बटाइ नै सेक्ठैं ।

राजा आव आपन सस्सारके नोकर बनके नोकरी करे लागठ । उही सुटक लाग जौन दरबारमे रानी (रजुवक जन्नी सुटिस्) ओहे दरबारके एकठो कोठामे आपन नोकरहुवै (दम्दै) ठाउँ देखा डेठै । रजुवा दिनभर नोकर बनके काम करठ । साँझके सुतेजाइठ ते हली निदा जाइठ । जब थरुवा निदा जैठिस तब रानी आपन पुराने मनरख्नाहे बलाइठ । रोजदिन ओइनके अस्तक् भेटघाट चले लग्ठिन । राजक कुछ पटा नै रहठ् ।

एक दिनफे सड्डे हसक् रजुवा दिनभर काम कैके खानापिना खाके सुते जाइठ । आउर दिनक हस उहीहे निद नै परठिस । ऊ आपन अवस्था सोचे लागठ । कौन पापीक कारन ऐसिन जिन्गी जियक परटा ? कहिके मेरमेरके बात सोचके रजुवा अभिन जग्ले रहठ । रानी सोंचठ अत्रा घचिक परसे रजुवा पक्का काम करल ऊ जीऊ सिहरा लागके निदा गिल हुइ ।

बहुत भुँखाइल हस् देखाइटा कहिके सात दिनिक बसिया खोंटर खाइ दैडेहठ । राजाफे नेगत नेगत भुखागिल रठै । भुँखक आगे गुल्लर पाके यिहे उखान सोंचटी सक्कु खोंटर खा दरठैं ।

एक घचिक रहिके रजुवा पंजरेक कोठामे कोइ मनै बट्वाइ हस् सुनठ । चिप्पेसे ओनाइ जाइठ् ते बातेसे बुझ लेहठ । पक्का यी रानीक मनरख्ना हो । ऊ रानी

आपन मनरख्नै कहठ- यहाँसे दूर देस जहाँ मोर भोज हुइल रहे ओहे देसमे ऐसिन ओइसिन घर बा । ऊ घरम अब्बा बरे गरिब बुढ्रिया किल बैठठुइ । ओइने एक समयमे राजा रहिंट । बुढ्रवा रजुवा बहुत सम्पत्ति जुटाके राजखानामे ढैले बा । मने ऊ खजानाके चावी नैपाके ओइने बहुत गरिब होगिल बटैं । ऊ चावी मै ढैले बटुँ । टुँ जाऊ ऊ बुढ्रियासे बातचिट कैके ऊ घरक खजाना किन लेहो ।

रजुवा सक्कु बात सुन लेहठ । रातीरात ओहाँसे भाग जाइठ । सोंचठ चाभी कहाँ चाभी कहाँ कहिके हमरे यहोर ओहोर खोज्ना चाभी ते यी हरामी रानी ढैले बा । यिनसे बिना बड्ला लेले नै छोरम कहटी रजुवा घर पुगजाइठ । घरे पुग्के रजुवा आपन घरक एकठो कोठम दुइठो बहुत गहिंर गहिंर खटाहा कोरठ । ऊ खट्हक उप्पर छटमेफे डोंडर पार डेहठ । दुनु खटहा पक्की रहठ ।

कुछ दिनकेबाद रानिक मनरख्ना ऊ खजानक चावी लेले घर ओ सम्पट्टि किने पुगजाइठ । रजुवक घर पुगके कहठ- मैते यी घर बेच्ना सुन्ले रहुँ । यी बेच्ना नै हो का ? मोरठन एकठो चाभी बा । सायद उहीसे खुलजाइ कहिके किनक लाग मोल भाऊ कर आइल बटुँ । कटरक देबी यी घर ? रजुवा कहठ- खै जे अप्नेक चाभी पहिले लगाके मभ्का हेरली नै ते खाली डामे किल तिर्बी फे ।

बात ते ठीके हो । चलीजे मभ्का लेहे कहटी रानिक मनरख्ना चावी निकारठ । चाभी देख्टी कि रजुवा चिन्ह लेहठ । खजाना खोल्ठैं सक्कु सम्पत्ति सुरक्षित रठिन । तब रजुवा फेनसे कहठ- बेच्ना ते बेच्ने हो मने किनुइयकफे मन परे परल । आउर ते नै एकठन यी घरक छपरा चुहनाहा बा । डोंडर परल बा । चली हेरली एकचो । ठीके बा चलीते का कहटी रानीक् मनरख्ना ऊ कोठा हेरे जाइठ । रानिक मनरख्ना चुनहा कोठा पुगठ्ते आगे हो जाइठ । रजुवा पाछे पाछे जाइठ ओ उप्पर डेखैटी कहठ यहे डोंडर हो खासे भारी ते नै हो । रानिक मनरख्ना उप्पर घेंचा कैले छते मनिक डोंडर हेरठ । तरक खट्हा ऊ डेख्ले नै रहठ । उप्पर हेरटी नेगट नेगट एकफाले खटहम परके भिट्टर गिर जाइठ । चाभी भर ओकर हाँठमसे निपुचके बाहिरे गिर जैठिस । बस रजुवा आपन चाभीओभी हठियाके रानिक मनरख्ना हे यिहे हो मोर घरबार उजरुइया कहटी उप्परसे भाँठके प्लाष्टर कैडेहठ् । ऊ भिटरे मरजाइठ ।

तब जाके रजुवा चाभी लेले जाके आपन खजाना खोलठ । अठाह धन सम्पत्ति रठिन । ओइने फेन राजा बन जिठैं । फेनसे पहिलेक अवस्था आ जैठिन । फेन एक दिन रजुवक दाइ कठिस- छावारे पटोहियै लयान । आव ते ओकर दु:ख नै हुइहिस । भोज करल बेटी कहाँसम लैहर बैठी ? रजुवा आपन राजाके भेष लगाके चलडेहठ रानीहे लेहे । अब्खी जब रजुवा सस्सार पुगठ्ते ओकर खोब आदर सटकार

करठैं । मनैयाँ ओहे केवल भेष बडलल रठिस । रानीफे तयार हुइठ । दुनु जाने चलडेठैं आपन घरे ओर । राजा रानीके सवारी हाथी घोरामे सवार हुइठिन । बिहानके निकरल सवारी साँहींजुन घर पुगजिठैं । चल मै आज टुहिन हमार सम्पत्ति सक्कु डेखैम कहिके रजुवा रानीहे कोठा कोठा घुमाइठ । खटहा खोडलहवा कोठम लैजाके मनेमने टँही हुइस मोर जिन्गी बिगरुइया कहटी रानीहे हरबरसे दोसर खटहम ढकेलके उहीफे उप्परसे प्लाष्टर कैडेहठ् ।

तबसम रजुवक दाइ बहुत बुह्रागिल रठिन् । ठोरिक दिन रहिके रजुवक दाइफे बुह्राके मर जैठिन । आबते राजा अक्केली होजिठैं । आबते अप्नेहे सबचीज करेक पर्ना अवस्था आ जैठिन । अक्केल्ही कैसिके जिन्गी बिटैना हो बहुत कर्रा बा । कहुँकहुँ जन्नी ते खोजक परल काहुँ नै ते नैबनी कहटी राजा एकठो उपाय निकरठैं जन्नी खोजे जैना । जन्नी खोजे जैनासे पहिले एकठो भैंसा किनके मगैंठैं । ओकर छाला छुटाके चमरैसे एकठो झुलुवा ओ एकठो झोला बन्वैठै । झुलुवा अइसिन बन्वैठैं कि सास फेर्ना नाक ओ हेर्ना आँखीकिल निकरना । बाँकी सब छालक झुलुवाले छोपल रना । छाला मजासे सुखाइल नै रहठ दूरेसे पुइन चमाइन गन्धाइठ् । राजा आपन सोनचाँदी हिरामोटी सारा गरगहना ओ सम्पत्ति बरका छलरक चमैढा झोलम भरके बिना सहेरिक डम्मरुवम लब्डवा डेठैं । ऊ झोलाओर मनै जैटिकिल पुइन गन्ढैठिन बस दूरेसे नाक टुम्ले भग्ठैं । ओहे चमैढा छालक झुलुवा घालके चमौटा बनके जन्नी खोजे चल देठैं ।

राजा घुमट फिरट जन्नीक खोजीमे बहुत दूर दोसर देस पुगजिठैं । ऊ देसके रजुवक तीनठो छाइ रठिन । ऊ रजवा ओहे रजवक फूलरियामे जाके दिनके बैठ जिठै । दिनके जब ऊ रजुवक तीनु छाइन फूलरियम खेले अइठै ते चमौटा रजुवा गन्ढाइ लग्ठिन् । बस बरकी ओ मन्हली जाके ऊ चमौटकमे थुक देठैं । मने छोटकी नै थुकठ । ऊ कहठ- मनैनमे नै थुकठैं । ऊ सोंचत् जे रलेसे फे यी फे ते मनै हो । यिहीहे भगवान अस्तहे जिन्गी डेले बटिस ते का करे ? विचारा कहिके आपन दिदिनके थुकल थुक पोंछ्के चल जाइठ ।

दोसर दिन फेन चमौटा ओहे फूलरियम जाके बैठ जाइठ । फेन ओस्तके बरकी ओ मन्झली उही गन्यइटी ओकरमे थुकके चलडेठैं । पाछे छोट्की आके जब पोछे लागठ ते चमौटा ओकर हाँठ चपसे पकरके कहठ- सक्कु जाने महिन डेख्टी कि दूरेसे छिछी दूर दूर कठैं घिनक मारे । टुहिन घिन नै लागठ बाबु ? टोहाँर दिदिन थुक्के चलजिठैं । टुँ भर पोंछे आइठो काहे ? महिन देख्के टुहीन दया लागठ ?

छोट्की राजकुमारी कहठ्- टुँ फे ते मनै हुइटो । मनै आपन रुप अप्नेहे बनाइ नै मिलठ । टुँ अइसिन बटो यीम्मे टोहार का दोष भगन्वा ते टुहिन अइसिन बना देहल । टुँ अइसिन जिन्गी पैले बटो ते टोहाँर का दोष ?

राजकुमारीक् बात सुन्के चमौटा कहठ- बाबु टुँ महिनसे भोज करबो ? मै राजक छाइ हुँ । हमार देसमे स्वयम्बर कैके किल भोज करे मिलठ । अइना महिनम हमार तीनु दिदी बहिनियनके स्वयम्बर बा । टुँ फे ऊ स्वयम्बरमे आजिहो । ऊ स्वयम्बरमे आज मनै राजा ओ राजकुमार सबजाने बैठक कोठामे बैठल रहीही । हथियक लब्डाइल माला उहाँ आइल मनैन मसे जेकर घेंचम जाके घली उहीसे हमार भोज हुइ ।

ठीके बा ते । मै स्वयम्बरमे जरुर अइम कहिके बिदा होके चल देहठ । दिन हप्ता कर्टी महिना बिट्ना समय पते नै चलठ । स्वयम्बर हुइना महिना ओ दिनफे आ जाइठ । राजा आपन छाइनके भोज करक लाग बरे धुमधामसे स्वयम्बरके तयारी कैके दूर दूरसे राजा रजौटन धनीमानी सक्कु जनहन नेउता देके बलैले रठैं । स्वयम्बरमे आइल सक्कुजाने राजसभाके सभा हलमे बैठल रठैं । ओहे भीरमे एक पाँजर चमौटा बिना नेउतक जाके बैठ जाइठ । जब स्वयम्बर सुरु हुइठ ते महुटियन लन्ठैं हथिया हे । हथिया सुरुमे बरकी राजकुमारीक लाग स्वयम्बर चुनठ । अपन सोह्रेले माला उठाके हथिया घुमठ घुमठ लब्डाइठ माला उप्पर । उप्पर से माला घुमट गिरठ बस परजाइठ एकठो सबसे सक्तिसाली देसके रजवक घेंचामे । बरकी छाइक भोज ओहे रज्वैसे कैडेठैं ।

दोसरचो हथिया माला उठाके घुमठ घुमठ फेन लब्डाइठ ते ऊ माला परजाइठ दोसर बलगर देसके रजवकमे । मन्हली राजकुमारीक भोज फे हो जैठिस । तबजाके पाला अइठिस छुट्की राजकुमारीक । हथिया फेन माला उठाइठ ओ घुमे लागठ । घुमठ घुमठ् हथिया ऐसा लब्डाइठ मालाते जाके पर जिठिस चमौटक घेंचम । सबजाने हेर्ठैं यी के हो ? ऐसिन गन्ढैना । यी ते बिना नेउतक आइल बा । यी कहाँ मान जाइ । हथिया फे एक्के दिनमे कै कैठो वर चुन्ना बउरागिल काहुँ कहिके नै मन्ठैं । दोसर हँथिया लन्ठैं । ओ रजुवा यानिकी राजकुमारीनके बाबा चमौटाहे सभा हलसे बाहर निकरना आदेस देके निकरवा डेहठ । दोसर हथिया माला उठाके घुमठ घुमठ फेनसे लब्डाइठ । हँठियक घुमट घुमट चमौटा फेन सभा हल पुगगिल रहठ । बस माला फेन ओकरे घेंचम घल जैठिस । सबजाने कहे लग्ठै- यी हठियाफे सन्डागिल बा । नै मानब । दोसर हथियक चुनल मानब । यी चमरा कहाँसे आ जाइटा । जाऊ बाहर लैजाके येकर हाँथगोर टुर

आऊ । रजवा आदेस देहठ । सेना बाहर लैजाके चमौटक हाँठगोर टुरके खटहम लब्डा के आजिठैं ।

तिस्रा हथिया लन्ठै छोटकीक दुलहा चुनक लाग । तिस्रा हँथिया उठाइट माला ओ ओस्टहके घुमके लब्डाइठ बरे जोरसे । चमौटक टुटल हाँठगोर फेनसे अप्नेहे मजा होके पहिले जैसिन हो जैठिस । बस फेन सभाहल पुग जाइठ । सबके ध्यान मालम् रठिन । उही आइट किऊ नै डेखट । माला फेन दोसरु उप्परसे घुमट आके चमौटक घेंचम् घल जाइठ । तब सबजाने कहे लग्ठै- बेर बेर येक्रे घेंचमे जाइटिस यी कहाँसे आ जाइटा ? रजुवा रिसैटी कहठ- कैसिक टुरलो रे यकर हाँठगोर ? यी ते फेन आगिल । तब ओकर सेनन् कठैं- टम्ह्ने ते बाहर जाके टुरली अप्ने नै डेख्ली । अब्खी अप्नेक सामने हाँठगोर टुरके लब्डा आब खटहम् । चमौटक दुनु हाँथगोर रज्वक सामने टुरके खटहम लब्डा अइठैं । ओ सबजाने कहे लग्ठैं यी हथियाँ फे सन्डाइल बा । जाऊ चौठा हथियाँ लेके आऊ तब मानव ।

फेन महुटियन चौथा हथिया लेहे जैठै । हथिया लेके सभाहल पुगट पुगट चमौटक हाँठगोर फे चोखाके बढ्िया हो जैठिस । बस फेन चलडेहठ राजसभामे । जाके दोसर कोन्वम ठऱ्या जाइठ । सक्कुहुनके ध्यान हथियकमे रठिन । चमौटै आइट केउ नै देख्ठैं । चौथा हथियाँ फेन माला उठाके ओस्तके घुमके लब्डाइठ बस फेन माला घुमघामके ओहे चमौटक घेंचम घल जैठिस । फेन सबजाने कहे लग्ठैं- यी हथियाँ फे बौरागिल । यी कैसिन मनैया हो बेर बेर आ जाइटा ? येकर चाहा जत्रा हाँठगोर टुरलेसे फे यी ठीक होके आजाइठ । रजुवा फे कहठ- जाऊ दोसर हथिया लेके आऊ ।

पाछे छुट्की राजकुमारी बोलठ- बाबा, सायद मोर भोजे यिहीनसे हुइना भाग्य हुइ ? तबते बेरबेर हिँकारे घेंचम माला जाइटा । चाहा जत्रा कुटपिट कैके हाँठगोर टुरके खडेरलेसे फे यी यहैं आजिठैं । बरकी दिदी ओ मन्हली दिदीक भोज ते अक्के हथिया एक्केचो माला लब्डैटीकिल कै डेलो ? मोर लाग चार चार हाँथी माला लब्डासेक्लैं । हिँकारे घेंचम परटा । आब चाहा जैसिन रलेसे मै यिहकिनसे भोज कैलेम । राजकुमारीक बात सुन्के रजुवा रिसैटी कहठ- यकर घर ना दुवार । कर ना कमाही का खवाइ ? का लग्वाइ ? कहाँ बैठाइ ? कैसिके जिन्गी बिटैबे ?

बरका ओ मन्झला रजुवा आपन आपन जन्नीनहे लेके चलडेठैं । चमौटा भर ओहें पली रहठ । रजवा रीसके मारे कहठ- जाऊ यकर घर टलुवक किनारे हिल्ला उल्लामे बना डेऊ । रजवक आदेसअनुसार चमौटक घर टलुवक किनारे बना डेठैं ।

चमौटा ओ ओकर जन्नी दुनुजाने ओहे घरम बैठे लग्ठैं। कुछ दिन अस्तहक आपन गाउँ घरमे बैठल समय बिटट् जैठिन।

डुई चार महिनक पाछे चमौटक बरका ओ मन्झला सारहु मिल्के आपन लावा लस्कर सहित बन्वम सिकार खेले चलजिठै। ओइने दुनुजाने राजकुमार रठैं। सिकार खेल्ना ओइनके सौख रठिन। दिनभर सिकार खेल्के एकठो बहुत सुन्दर हरिन (मृग) मारके लन्ठैं। सहरमे पूरा हल्ला हो जाइठ। मृग मारके लन्ले बटैं कहिके। हल्ला चमौटक झोपरी सम पुग जाइठ। चमौटक जन्नी अभिनसम मृग नै देख्ले रहठ। सोंचठ भाटुनके मृग मारके लन्ले बटैं जाउँ हेरके आउँ । ठीके ओहे समयमे चमौटा बाहेर गैल रहठ। चमौटक जन्नी मृग हेरे जाइ लागठ ते डगरेमे ओकर दुनु दिदिन भेट हो जैठिस। बहुत दिनकेबाद भेट हुइली कहिके चमौटक जन्नी सेवा ढोग लागे जाइठ। ओइने दुनुजाने हम्रे नै लग्ठी चमारीन हे सेवा सलाम। अइसिन फुहर जातिन कहिके सेवा ढोग नै लग्ठैं। चमरैसे भोज कैले कहिके जम्मा जाने छोट्की हे हेल्हा करठैं। मजासे बोल्ठैं फेन नै ऊहीसे। दूरेसे पुछ्ठै कबु नै बाहेर नेंगघुम कर्ना मनै आज कहाँ जाइते टै ?

भाटुनके मृग मारके लन्ले बटैं काहुँ, हेरे जाइटु। अत्रा सुन्टीकिल ओकर दुनु दिदिन कहे लग्ठैं- भोज करेबेर चमारीनसे करले ते मृग देखे मिली ? राजनसे भोज करते ते नै टोर थरुवाफे मृग मारके लानत्। तब देख्ते मृग ओ खैते मृगक सिकार। कहाँ पैबे आब मृग हेरे ? औरेक मारल सिकार घिंच्चक मारे ते जाइते मृग हेर्ना बहाना लगाके। नै जाइ मिली मृग हेरे। दिदिनके अत्रा बात सुन्के छोट्कीहे दुःख लग्ठिस्। डगरमसे घुम जाइठ। रुइटी आपन घरे पुगठ्। घरे पुगठ ते घरे जाके फेन रुइटी रहठ। एक ते बाबा नै मजा मानठ। दिदिनफे हेलहा करैठैं कहिके रुइटी रहठ छोट्की।

कुछ बेरपाछे जब चमौटा घरे पुगठ् ते दूरेसे देख लेहठ आपन जन्नी हे पिंखाँहीम बैठके रुइट। लग्गे जाके पुछठ। काहे रुइटो आज ? का होगिल ? थरुवै आइट देख्के आँस पोंछके नुकुवैटी जन्नी कठिस- कहाँ रुइटुँ। कुछ नै हुइल हो मोर।

काहे नै रुइबो मै का नै देख्नु आँस पोंछठ ? तब चमौटक जन्नी कठिस- भाटुनके सिकार खेले गैल रहिंट। मृग मारके लन्ले बटैं कहिके सुन्नु। मै अभिनसम मृग नै देख्ले हुँ। सोंच्नु एक घचिक हेर आउँ । जाइलग्नु ते डग्रेम दुनु दिदिनके भेट हुइलैं। सेवा लागे गैनु सेवा नै लग्लैं। उल्ते मृग हेरे जाइटु कनु ते सिकार घिच्चक मारे जाइते नैजाइ मिली कहिके अनाप सनाप कहटी गरियाइ लग्लैं। रुइटी डग्रमसे घुम गैनु।

टुँ मृग नै देख्ले हुइटो ? बस अत्रे बातक लाग अत्रा बात लग्वा पैलो । रुको मैफे आज सिकार खेले बन्वम जैम । तब लानडेम सर्जे मृग मारके । कट्ठुक हेर्बो कट्ठुक खइबो ?

साँझ परठ्ते चमौटा खानाओना खाके निकर जाइठ सिकार खेले । जन्नी घरहिम रठिस् । अप्ने भर चल डेहठ आपन पुरान घरम । ऊ ते रजुवा रहठ । आपन पुरान घर जाके राजसी लुग्गा लगाइठ ओ बलाइठ आपन लावा लस्कर चलडेहठ घोरुवकमे बैठके सिकार खेले । जौन बन्वम ओकर साह्रुन सिकार खेले जैठिस ओहे बन्वमसे एकठो मृग मारके आपन घोरुवम लाडठ । दुइठो मृगनहे पकरके पुछी काटके छोर डेहठ । ओ बाँकी सक्कु जानवरीनहे बहुत दूर खडेर डेऊ कहिके आपन सेननसे खेड्वा डेहठ ।

मृग लेले घरे आइठ । राजसी भेष बडलके फेंन चमौटा बनजाइठ । मृग कन्ढ्याके चल डेहठ । ओहे तलुवा टिरिक घरे ओर । छोटकी राजकुमारी मृग हेरठ ओ काट पनाके सिकार रिझैठैं । आउर सिकार सुखुइठैं । बाँकी सिकार गाउँक लर्कापर्कन ओ गरीब जन्तनहे बाँट डेठैं । बहुत मुस्किलसे सिकार खाइ पइना जनता बिना पैंसक सिकार खाइ पइलक ओरसे बहुत खुसी होजिठैं । लर्कापर्का खेलेबेर कहे लग्ठैं चमौटा हमरहीन सिकार डेहठ । ओस्तके भारी मनैफे बट्वाइ लग्ठैं । अरे चमौटा ते हमरहिन मृगक सिकार ओस्ते बिना रुपियक डैडेहठ । बहुत बढ्िया मनैया बा । गरीबनके हालचाल बुझठ् ।

अस्तके चमौटा जैचो सिकार खेले जाइठ टैचो अप्नेकिल नैखाके आपन आँजरपाँजरके छरछिमकीनहे बाँटचोटके खवाइठ । कुछ महिना अस्तक करट करट चमौटाहे गाउँक मनै सबजाने मजा माने लगिठस् । रज्वइसे ज्यादा ते चमौटा हमार रेखदेख करठ कहिके गाउँक मनै उही राजा जैसिन माने लग्ठैं ।

आँजर पाँजर गाउँक लर्का एकदिन खेले लग्ठैं । खेल्टी खेल्टी रजुवक बात उठ जैठिन । चमौटक गाउँक लर्कनहे खिझ्वाइ लगिठन । टुहिनके रज्वा ते चमौटा हो चमार । चमरक लुग्गा लगैले रहठ । पुइन पुइन गन्ढाइठ । तब चमौटक गाउँक लरका कठैं- अरे हमार रजुवा पुइन गन्ढाए, चहा ज्या करे हप्ता हप्तामे फ्रिमे सिकार बाँटठ । टुहिनके रज्वा का डेहठ ? यी प्रसनक जवाफ नै डेहे सेक्के दोसर गाउँक लर्का वहाँसे चल डेठैं । ऊ लरका आपन घरजाके दाइबाबानसे पुछठैं- चमौटा ते आपन गाउँक मनैन हप्ता हप्तामे सिकार खवाइठ । हमार रजुवा का डेहठ ? ओइनके दाइबाबा फे कठिन- हमार रजुवा ते सिकार मारके लानठ् मने दरबार भिट्टर अप्नेहे खा डारठ् ।

चमौटक प्रसिद्धि आब आपन गाउँसे दोसर गाउँ फैल जैठिस । यी बात चमौटक साह्रुन जेठ सास हुक्रे आउर ससुइया ससुरवा फेन सुन लेठैं । तब चमौटक जेठसास ओ साह्रुनके सोंच्ठै अरे चमौटाते बहुत आगे बह्र जाइटा । ऊ ते हमरहिनसे आगे जाइटा । अगर ऊ सिकारे बाँटके आगे बह्रटा । कलेसे चली हम्रेफे सिकार खेले जाइ ओ लानके बाँटदी । यी देसके जनतनहे जंगली जानवरीनके सिकार । यिहे योजनाअनुसार जब ओइने सिकार खेले निकरठैं ते चमौटाफे यी खबर पा जाइठ । चमौटा आपन सस्रारिक देहल घरमसे निकरठ जन्नीहे घरहिम छोरके । आपन देस जाइठ आपन राजाक भेष लगाके जौन बन्वम ओकर सारहुन सिकार खेले जाइक लाग रठैं ओहे बन्वम पहिले जाके सक्कु जंगली जानवरीन ऊ बन्वमसे बहुत दूर खडेरके दुइठो हरनन्हे किल पुछी काटके छोर देले रहठ । ऊ बन्वम ओइनके सिकार खेल्ना एरिया भिट्रके सक्कु पानीफे आदेस देके सुखुवाइ लग्वा डेहठ । अप्ने भर आपन सारहुनके सिकार खेले जैना डग्रेम राजसी भेष लगाके पाँच बोरा नोन ओ एक ड्राम पानी लेके बैठल रहठ । यिहीसे पहिले सबजाने छालक खोल ओंरहल डेख्लक ओकर सक्कली रुप कोइ नै डेख्ले रठै । ऊ ते बहुत हेन्डसम जवान रहठ । बरे बरे मोंछ गोरहर ओ आकर्षक बहुत सुग्घर बिल्गाइठ ।

जब चमौटक सारहुनके ओ ससुरवनके सिकार खेले जाइ लग्ठै ते जौन डग्रम चमौटा बैठल रहठ ओहे डग्रम झोंपरी बन्वाके आपन राजसी भेषमे बैठल रहठ । ओइने सोझे जाइबेर चमौटाहे डेख लेठैं । ऊ जाके पुछ्ठ- कहाँ जाइटी अप्नेन के ? ते ओइने जवाफ देठैं सिकार खेले । तब चमौटा कहठ- मै यी बन्वम दुइठो मिरगिनियन पल्ले बटुँ । ओइनहे मरबी ते नै मजा हुइ । ओइनके पुँछी काटल बटिन दुनु अक्केमेर बटैं । ओइनहे छोरके ज्या ज्या भेटैबी मार लन्बी । ऊ ते रख्ले रहठ सब जानवरिन खडेर । ओइने कठै ठीक बा हमरे ऊ मिरगिनियन नै मारब । अत्रा कहिके चल डेठै बन्वाओर । चमौटा भर बैठल रहठ मनेमने सोच्टी कहठ- भेटैबो तबते मरबो सिकार ।

रज्वन आपन लावा लस्कर सहित सिकार खेले चल डेठै । भिट्टर बन्वा जाके सिकार खोजे लग्ठैं । खोजट खोजट बल्ल टल्ल भेटैठै ते ओहे पुछी काटल हरनिनियन । ओस्तके दिनभर खोजट खोजट ओहे दुइठो हरनिनियन बाहेक कुछ नै भेंटैठैं । सिकार खोजट खोजट सबजाने मिच्छा जिठैं । पानी प्यास लागे लग्ठिन । पानी खोजे लग्ठै बन्वै बन्वै । यहोंर ओहोर कहुँ पानी नै भैटैठैं । सब ताल तलैया डुन्ड्री डुन्ड्रा सुखल डेख्ठैं । फेन हँकुवा लगैठैं फेन ओहे पुछी काटल मिरगिनियन भेटा लेठैं । कोइ कहठ- चोलो रे यिहे दुनु मिरगिनियन मार लैजाइ । केउ कहठ्- नै ना मारी ऊ मनैया कलेवा ना मरहो । बरवार मनैहस

बिल्गाइ तेहे । का पटा ऊ फे कौनो देसके रजुवा हुइ ते नैमजा हुइ । ओइने कुछु सिकार नै मारके प्यासले च्याप च्याप मुह पर्टी चल डेठैं घरओर । घरे घुमेबेर फेन ओहे चमौटाहे देखलेठैं । ५ कट्टा नोन ओ एक ड्राम पानी लेले बैठल रहठ् ।

ओइने चमौटाहे कठैं- हमरहिन बहुत प्यास लागल बा पानी पिए डेबी ? चमौटा कहठ- ना यी पानी ते मै आपन मिरगिनियन लाग ढैले बटुँ । देखल हुइबो यी बन्वम कहुँ पानी नै हो । रोज दिन ऊ दुनु मिरगिनियन ५ कट्टा नोन खैठै । एक ड्राम पानी पिठैं । तबे मै रोज दिन ओइनहे दारे अइठुँ । प्यासल राजा ओ सेना सक्कुजाने बिन्ती कर्ठैं । नै हजुर आजकका यी पानी हमरहिन पियक डैदी । हमरे बहुत प्यासल बटी । अप्नेहे बहुत धरम लागी ।

ओइनके अनुरोध सुनके चमौटा कहठ- ठीके बा पानी ते मै पिए देम । मने मोर एकठो सर्त बा । ऊ सर्त मानेपरी । तब प्यासल सबजाने कठैं- अप्ने ज्याज्या कहबी हमरे मन्ना तयार बटी । मने पानी भर पिए डेहे परल । चमौटा कहठ- ठीके बा ते सर्त यी हो कि पानी पिनासे पहिले तोहरे सबजे मिल्के यी पाँच कट्टा नोन खाके ओरवाइ परल । तबकिल मै यी पानी पिए डेहे सेकम । प्यासले बोल नै निकरना स्थितिमे पुगल सबजाने पानी पिएक मारे हाँ हाँ कहिदेथैं । हमरे यी पाँच कट्टा नोन खा डारब । पानी पियब कहिके भिर जिठै नोन खाइ । खाली जट रजुवा ओहे चमौटक ससुरवा किल छोरके सबजाने नोंन खाइ लग्ठैं । अत्रा धेर सिपाही डटके सुख्ले नोन खाके एक एकचुटी पानी पिए पुग्ठिन । अक्के घचिक ते सक्कु जनहन आउर प्यास लागे लग्ठिन । रजुवा भर नोन नै खैले रहठ ते उही भर पहिलेकहस सहे सेक्ना प्यास लग्ठिस । फेन उहाँसे पानी ओनी पिके जब घरे चल डेठैं ते सहे नै सेक्ना प्यास लाग्के बोलेओले नैसेक्ना हो जिठैं । धनरमनर डगरक पँजरे पँजरे सुते लग्ठै । रज्वा भर आपन घोरवकमे बैठके चल डेठैं । रजुवा जब आपन दरबार पुगठ ते आपन नोकरहुन पठाइठ जाऊ डगरे डगरे बन्वा सम प्यास लागके सिपाहिन सुटल बटै । जत्रा सुतल मनैन भेटैबो सक्कु जनहन पानी पिवैटी जै हो । तब नोकरहुवन पानी पिवइटी जैठैं । पानी पाके उठ उठ रजुवक सिपाहिन घरे पुग्ठैं ।

ओहोंर चमौटा जुन नोन खवाके पानीओनी पिवाके आपन चमौटक भेष लगाके फेन चल डेहठ घरे । कुछ महिनासम समय बिटट् जाइठ । आपन घरम बैठल रठै आपन कामकाज कर्टी जिठैं सबजाने । ठोरिक दिन बाद गाउँ लग्गे एकठो मेला लागठ सबजाने मेला हेरे जाइ लग्ठैं । चमौटक जन्नीहेफे मेला हेरे जैना सौख लग्ठिन । तब आब आपनठे जौन रठिन ओहे फाटल पुरान उरान लुग्गा लगाके

जाइ लग्ठै मेला हेरे । जैटी जैटी डग्रेमे फेन ओकर दिदिन भेट हो जैठिस । फेन दिदिन कहे लग्ठिस- टै कहाँ जाइते आज ?

मेला हेरे चमौटक जन्नी जवाफ डेहठ । छि ! ऐसिन मनै मेला हेरे जैबे ? भोज करेबेर चमौतेसे करले कहाँ पैबे सुग्घर लुग्गा, गरगहना सिंगार पटार ? टै ना जा हमरे जाइटी आज मेला हेरे । टै जिबे ते हमरहीन लाजेकिल लागि ।

दिदिनके अत्रा बात सुनठ् बस चमौटक जन्नीहे दुःख लाग जैठिस । फेन घरे जाके पिखाँहीम बैठके रुइ लागठ् । चमौटा फेन रुइठ देख लेहठ । आज का होगिल फेन रुइ लग्लो ?

कहाँ रुइटुँ । जन्नी कठिस् ।

काहे नै रुइबो मै का नै देख्नु आँस पोंछठ ?

का बात बा बटाऊ । नै कुछु, जाइटुहुँ बनदेवीक मेला हेरे । जैटी जैटी डग्रेम दिदिनके भेट होगिलै । बस कहे लग्लै लुग्गा न कपरा गर ना गहना ऐसिन लुग्गा लगाके टै ना जा मेला हेरे । नैते हमार बेइज्जत किल करैबे । तबमारे दुःख लागल । बस अत्रे बातक लाग रुइटो ? मोरठन का गरगहना नै हो ? लुग्गा कपडा नै हो ? जाऊ ऊ ! उहाँ बन्वक डम्मरवम एकठो बरे गन्ढैना छलरक झोला हुइ । ऊ झोला लेके अइहो । डग्रम ना खोल्हो, चमौटा कहठ् ।

अत्रा सुनके चमौटक जन्नी चल डेहठ् छलरक झोला लेहे । खोजट खोजट बन्वक डम्मरुवम भेटा जाइठ झोला । झोला अत्रा गन्ढैना रहठ कि माछी भन्कठैं झोलामे । चमरा हो कहिके कोइ नै लैगिले रहठ । अत्रा गन्ढैना झोला कैसिक लैजाऊ ? कैसिक लैजाऊ कहिके सोंचठ चमौटक जन्नी । एकठो लग्गी खोजठ् । ओहे लग्गीमे अँटक्वाके झुलैले लेके चलडेहठ घरेओर ।
मजासे बोक्के लन्ना हो ते ? काहे ऐसिके नैमजा चिजहस लठ्ठीम टँगाके लानटो ? चमौटा पुछठ ।
अत्रा गन्ढैना बा तबे ते जन्नी कठीस् । तब चमौटा ऊ झोला लेहठ ओ घरम जाके खोलठ् । ऊ आपन सब राजसी गरगहना ओ लुग्गा कपरा ढैले रहठ । झोलक भिट्टरसे मेरमेरके गरगहना ओ लुग्गा निकारठ । ओकर जन्नी अचम्म होजैठिस । अभिनसम आपन ठरुवक सही सक्कल फे नै देख्ले रहठ । चमौटक जन्नी हे का पटा, चमौटाफे रजुवा हो कहिके ।

कैसिक जन्लो यहाँ गहना ओ लुग्गा बा कहिके ? जन्नी पुछ्ठिस् ।

मै ढैले रहुँ ते नै जानम् ? अत्रा कहटी बोलठ- जाऊ आब यिहे गरगहना ओ लुग्गा लगाके मेला हेरे । सक्कु लुग्गा लेले जैहो घुमके आइबेर सबसे नैमजा सारीकिल लगाके अइहो । बाँकी सब सारी बाँट अइहो बजारे मनिक मनैन हे ।
हाँ हाँ कहिके चमौटक जन्नी सबसे सुग्घर सारी निकारठ् । मेरमेरके गरगहनाले सजिसजाऊ होके चलडेहठ मेला हेरे । जाइबेर फेन दिदिन देख लेठिस् । काल ते अत्रा फाटल पुरान लुग्गा लगाके जाइटहे मेला हेरे । हमरे गऱ्याओऱ्याके घुमा डेली । आज कहाँ पाइल ऐसिन मेर मेरके गहना ओ अत्रा सुग्घर लावा लुग्गा ? ओइने बट्वाइ लग्ठैं । येकर घरते कुछ्छु नै हुइस् कहाँ पाइल हुइ अत्रा सिंङ्गार कहिके अचम्म हो जिठै । ओकर दिदिनफे बजारे जाइक लाग निकरल रठै । यहोर चमौटा आपन छलरक लुगा ढैके साधारन लुग्गा लगाके चलडेहठ मेला हेरे । चेक करठ् आपन जन्नीहे, का का करठ कहिके ।
चमौटक जन्नी पहिले बनदेबी मन्दिरमे पूजा करठ । ओकर बादमे मेला घुमठ ओ खैना पिना किनठ् । ओकर दिदिन जुन का का करठ कहिके दूरेसे पाछे पाछे हेर्टी रठै । जब साँझ हुइ लागठ ते आब घरे जैनासे पहिले सोचठ मोर थरुवा कले बटै सुग्घर सारी भर जम्मा दान कैके अइहो ।

पाछे यहोंर ओहोंर हेरठ ते एकठो बरे फाटल पुरान लुग्गा लगाके बह्रियाहे बैठल देखठ । सोचठ यीही दान कैदिउँ । बस आपन लगाइल सारी बडलके आइठ ओ दान कैडेहठ । सक्कु सारी बुह्राइल बुह्राइल ओ गरीब मनैनहे दैदेहथ् ।

ओकर दिदिन दूरेसे हेर्हैं ओ कठै येकर घरम ते कुछ नै हुइस ते यी ते दान कर्टी नँगटा । चमौटक जन्नी दान कैके घरे चल डेहठ । चमौटाफे सबचीज आपन कहलहस करल कहिके हेरके आपन जन्नीसे पहिले घरे पुगके चमौटक भेष लगाके बैठ जाइठ । जन्नी पुग्ठिस ते का का हेर्लो ? का का कर्लो मेलामे कहिके पुछठ् । तब जन्नी फे ज्या ज्या कैले रहठ सक्कु सत्य सत्य बटाइठ । साँझ होगिल रहठ खानपिन कैके सुटजिठै ।

ठोरिक दिन बिटठ् । एकदिन रजुवा आपन सक्कु (टीनु) छाइनहे दाइजो देना कहिके निर्नय करैठै राजसभामे । निर्नय होके सेक्ठिन ते दोसर दिन सभा बलैठैं । चमौटक दुनु बरका सारहुन ते ओहैं दरबारेमे बैठ्ठिस । अप्ने भर थरुवा मेहरुवा झोपरीमसे जैठै । जब राजसभा पुगठै ते सक्कु जाने सोफामे बैठ्ठै । चमौटा ओ चमौटक जन्नीक् लाग बरे पुरान टुटल टुटल गोन्डरी बिछ्रा डेठैं ।

चमौटा हुक्रे थरुवा मेढरुवा ओहे गोन्डरिम बैटठैं । तब रज्वा कहे लागठ- छाइनहे दैजाहा डेना हमार निर्नय हुइल बा । दैजाहा हमार सम्पत्तिक् १७ प्रतिसत रकम हमरे तीनु जनहन बाँटके डेब । मने ओम्ने बराबर भाग नै लागी । जौन छाइ

दम्दा सबसे बढ़िया व्यवहार ओ काम देखाइ उहीहे एकलौटी १६ प्रतिसत देब । बाँकी एक प्रतिसत मसे दुइजे आधा आधा पैही ।

रज्वक (आपन ससुरुवक) यी घोषना सुन्के चमौटा आपन जन्नीहे कहठ्- हेरहो जौन १६ प्रतिसत दैजाहा बा ऊ मही पैम ।

टुँ कहाँ पैबो टुहिन ते सुरुसे सक्कुजाने हेलहा करैठैं । नै देख्ठो सक्कु जाने सुग्घर सुग्घर कुर्सीम बैठल बटैं । हमरहिन भर टुटल गोन्डरिम बैठे डेलैं । हमरे भर नै हुइ काहुँ यीनके छाइ दम्दा ? चमौटक जन्नी कठिस । फेन चमौटा कहठ- टुँ हेर्टी जाउ ऊ १६ प्रतिसत दैजाहा मही पैम । ना, टुँ नै पैबो जन्नी कठिस् । टुँ हेर्टी ते जाउ ऊ दैजाहा मही पैम ।

चमौटा दोसर दिन दैजाहा बातना दिन बिहान हुइनासे पहिले आपन चमौटावाला ड्रेस एकठो रुखुवम टँगाके ओकरे तरे खटहा खोडठ । ओम्ने बलुहा धुर भर डेहठ । अप्ने भर लावा लुग्गा लगाके राजसी ठाँतबाँटमे अनगुट्टी जाके राजसभाके एकठो सिटमे बैठ जाइठ । दैजाहा बातना समय पुगठिन ते सक्कु जाने कहे लग्ठै- यी के हो आज लावा मनै आइलहस् डेख्टी ? चमौटा भर आज नै आइल हो । पुछे कोइ नै सेकठ । चमौटक जन्नीफे गैल रठिस अक्केली । सबजाने अक्केठें बैठ्ठै । चमौटक लाग धारल गोन्डरी खाली रहठ । सबजाने अइठैं ते एक सीट आउर नै पुगे लग्ठिन ते रज्वा फेन मँग्वाइठ ।

पाछे चमौटक जन्नीसे पुछ्ठिस्- खै चमौटा आज नै आइल ? काजन कहाँ गिलै आज सक्करहीसे नै हुइटै, चमौटक जन्नी कठिस । चमौटक जन्नीफे पटा नै पैले रठिस । चमौटक असरे असरे बहुत घचिक हो जैठिन । दैजाहा बातना सुरु नै हुइ सकेठ । तब चमौटा कहठ् केकर अस्रा लागतो ? सुरु करो आब कार्यक्रम । तब रज्वा कहठ- चमौटक अस्रा लागटी ।

मै ही ते हुँ चमौटा । सबजाने अचम्म मन्टी उही हेर्ठैं । रज्वा कहठ- ना अप्नै नैहुइ । चमौटा ते चम्माइन गन्धाइठ । चमरक छाला लगैले रहठ ।

नै नै मही हुँ विसवास करी मोर, चमौटा बोलठ । चमौटक जन्नीफे अचम्म परजैठिस । मनेमने सोंच्ठिस मै ते ऐसिन भेषमे कबु नइ देख्ले हुँ आपन थरुवै । का यिहे हुँइट चमौटा ? रज्वा आपन छुट्की छाइसे पुछठ् । खै मै नै जन्ठु छाइ जवाफ डेठिस् । कोइ नै पट्याइ लागठ । अत्रा सुग्घर मनैया चमौटा हुइ कहिके ।

पाछे फेन चमौटा कहठ- चमौटा मही हुँ हजुर । तब रज्वा कहठ- ली यदि अप्नेहे चमौटा हुइ कहिके प्रमान डेहे सेक्बी कलेसे जौन १६ प्रतिसत दैजाहा बा अप्ने

पैबी । बाँकी एक प्रतिसत आधा बाँटके यिने लिही, आपन बरका ओ मन्ला दम्वन देखैटी कहठ रज्वा ।

तब चमौटा कहठ रज्वक सेवादार ओइनहे । जाऊ वहाँ रुखुवम मै आपन चमौटावाला लुग्गा टँगैले बटुँ । निकारके लेके आउ ? रज्वक सेवादार जिठै चमौटक लुग्गा लेहे रुखवम सौरे ने सेक्ठैं । टाँराले निकरना खोब कोसिस कठैं । पाछे बहुत बेर हुइठिन ते का करे लग्लै कहिके चमौटा चल डेहठ । लानो टाँरा मै निकारु । टोहरे का सेक्बो कहठ । उही टाँरा डेठिस । टाँराम अट्काके चमौटा आपन लुग्गा छुटाइठ ऐसा चमरक झुलुवा तरे ओहे खटहा मनिक धुरेम भ्वाकसे गिरठ । चारुओर धुरिया धुख्खुन होजाइठ । सक्कहुनके आँखिम धुर पर जैठिन । आँखी मिसे लग्ठैं । चमौटा ओहे समयमे भेष बडलके आपन पुराने चमौटक लुग्गा लगा लेहठ् । जब सक्कु जाने डेख्नाहा हुइठै ते आपन आगे चमौटै देख्ठैं ।

पाछे सबजाने फेन रज्वक दरबारमे जिठै । रज्वा पुछे लागठ । हमरे चमौटक झुलुवा निकारे नै सेक्ली तब ओहे मै चमौटा हुँ कहुइया गैल रहिट । ओहे निकरलैं ते ऊ लुग्गा धुरम गिरल । हमार आँखिम धुर परगिल नै देखे लग्ली । एक घचिक पाछे जब देख्नाहा हुइली ते यी रहिट हमार आघे । ऊ ते कहाँ गिलै कहाँ नै ।

चमौटा कहे लग्नै- ऊ मनैया मही हुँ । मही हुँ चमौटा । तब रज्वा कहे लग्नै- ना ऊ ते बहुत हेन्डसम बटै । बहुत सुन्दर राजाहस् बटै । अप्नेक ते इट्री इट्री आँखी बा । ऐसिन फुहर डेखाइटी ।

नै नै मही हुँ ऊ मनैया चमौटा फेन कहठ । तब रज्वा कहठ- ली ते यदि अप्ने ओहे मनैया बन्के देखाइ सेक्बी ? अप्नेहे चमौटा हुँ कहिके प्रमानित करे सेक्बी कलेसे मै १६ प्रतिसत किल नाही कि आपन सम्पत्तिके ५० प्रतिसत दैजाहा दैडेम । पक्का हो ? पक्का ।

अत्रा सुन्टीकिल चमौटा आपन चमरक भेष सट्टसे निकरठै । ते सबजाने देख्ठैं । हाँ, यी ते पक्का ओहे हुँइट ।

अत्रा सुग्घर चमौटा बटै कहिके सबजाने छक्क परजिठैं । रज्वा आपन बाचाअनुसार ५० प्रतिसत सम्पत्ति दैजाहा दैडेठैं । बाँकी दुई जनहन भर १ प्रतिसत मसे आधा आधा बाँट डेठैं । चमौटक जन्नीफे अत्रा सुग्घर थरुवा पैलक ओरसे बहुत खुसी हो जैठी । तब चमौटा अप्नेफे एकठो देसके रज्वा रहल बात बटैठैं । तबसे रज्वा लगायत सक्कुजाने चमौटाहे बहुत मान सम्मान करे लग्ठैं । चमौटा आपन जन्नी ओ दैजाहा लेके आपन देस चल जिठै । सुखसे बैठके राजकाज चलाइ लग्ठै ।

बघवक भोज

-सीताराम चौधरी

बहुत बरस पहिले मनै हसक जंगली जानवरिनके फे भोज कैना चलन रहिन । ओहे समयमे एकठो बरवार बन्वक पंजरेक गाउँमे एकठो बरवार जिम्दरुवा बैठे । ऊ जिम्दरुवक बहुत्ते कमैयन रहिस । कमैयनहे काम लगाइक लाग एक जनहन अगुवा बनैले रहे । जिम्दरुवा ज्या ज्या काम कराइ पर्ना रहिस ऊ काम अगहवाहे कहिडेहे । अगहवा सक्कु जनहन काम अह्राए: ।

एक दिनके बात हो, जिम्दरुवा अगहवाहे बलाके कहल- आज सक्कु जनहन बन्वा लैजाइस काठी करवाइ । जार महिना परे लागल काठी ओरागिल । आगीओगी टपनाफे काठी नै हो । अगहवा “हजुर मालिक' कहिके आपन संघरियन जनाइ गैगिल । कलुवा ओलुवा खाके टुम्मम् पानी बोक्के जिम्दरुवक कमैया कम्लह्वी सक्कुजाने काठी करे निकर जिठैं । ओइने बरका बन्वम काठी खोज्ना सल्लाह कैके चल डेठैं । जब बन्वक भिट्टर पेल्ठैं ते काठी ओत्रा नै मिले लग्ठिन् । तब फेन सल्लाह करठै ऐसिक एक्के सँगे नेंगलेसे नै बनी । आब छिट्केक परल । तब ओइने आपन आपन जन्नीन्हे आपनसँग लेके छिटिक जिठैं । काठी खोजट खोजट बहुत बेर हो जिठिन् । तब कुछबेर रहिके कहोर गैगिलै चाल नैपाइठु कहटी एकठो कमैया काठीक सँगसँगे अगहवाहे फेंन खोजे लागठ । खोजट खोजट कुछ बेर रहिके ओकर दोसर कमैया यानिकी ओकर आपन दोसर संघरियासे भेट हो जाइठ । तब दुनु जाने काठी भेटा सेक्ले रहिट । मने अगहवाक चालचुल नै पाइटहिट । तब ओइने अगहवै लग्लै गोहराइ । दुनु जाने पाछे पाछे आपन जन्नीन लेले नेगिट ओ गोहराइँट । अगहवा होइ ! अगहवा होइ ! मने अगहवक कोइ चाल नै मिलल । ओइने अस्तहक गोहराइट चलेजिठै । बहुत घचिक गोहराइट गोहराइट अगहवाते नै सुनठ मने बन्वा मनिक बघुवा सुन लेहठ । बघुवा कुवारा रहे । अभिन भोज नै हुइल रहिस । अगहवा होइ कहिके जब बघुवा गोहराइट सुनल ते मनेमने सोंचे लागल कि अगहवा ते जन्नी बनैठैं । हो न हो यी पक्कै ओहे जन्नी बुनइया अगहवा ते हुइ । जाइक परल काहुँ । सायद मोर लाग फेन जन्नी बना दी । ऊ

दुनु कमैयन आगे आगे अगहवा होइ । गोहरैटी जाइट पाछे पाछे बघुवा अगहवै चिन्हक लाग आइल करे ।

नेगट नेगट बहुत दूर पुगजिठै। जब फेन गोहरैलैं अगहवा होइ कहिके तब अगहवा दूरे बोलठ कू ! कहिके । तब बघुवै ते बहुत खुसी लग्ठिस । आब ते अगहुवा भेंट होगिल। आब पक्का फेन मोर जन्नी बन जाइ कहिके। जब सक्कु कमैयन एक्केठे होके काठी चिरे लग्ठैं ते बघुवा आइ लागठ। ओइनके ओर। बघुवै देख्के सबजाने भागे लग्ठै । बघुवा आउर दौरट । अगहवक ओर भागट भागट सबजाने अलग अगल हो जैठैं । बहुत दूर जाके बघुवा बोलठ- ना भागो मै कुछ नै करैम टुहिन । अगहवा डरैटी बोलठ- कुछ नै करैबो ते काहे आइटो हमार पाछे-पाछे ?

बघुवा कहठ “काम बा टुहिनसे छोटमोट । अगहवा टु हुँ हइटो ?”

“हाँ मै ते हुँ । का ते का काम बा बटाऊ” अगहवा डरैटी फेन बोलठ ।

अगहवा ते जन्नी बनैठै । टुँ फेंन जन्नी बनाइ ठुइबो काहुं ? बघुवा अगहवै से पुछठ ।

अगहवा कहठ “नाइ मै नै बनैठु केक्रो जन्नी वन्नी ? मै मारे जन्नी बनुइया अगहवा हुँ । मैते कमैयनहे काम लगुइया कमैयनके अगहवा हुँ ।”

“चाहे जेकर अगहवा रलेसेफ अगहवा ते अगहवा हुइटो । चाहे जैसिक फेन मोर लगते जन्नी बनैहिक परी । नै ते जब मै रिसैम तब टोहारका हाल हुइ सोंच लेऊ” बघुवा कहल ।

अगहवा डराके कहठ- ठीके बा मै खोजम । यहोर ओहोंर सायद कहुँ मिलजिही कोइ बघुनिया । बघुवा कहठ हाँ ठीके बा मने बढ़ियाके खोज डेहो । हाँ हाँ खोज डेम कहिके अगहवा कहठ “ठीक बा एक्चो कालफे हमरे बन्वा आब ते भेट करहो ।” बघुवा दोसर दिन भेट कैना सल्लाह लेके खुसी हुइटी चाल जाइठ । अगहवक सक्कु संघरियन डरके मारे लगलग कठैं । ओइने सोंच्ठैं कि आज पक्का फेंन अगहवै खा डरहिन काहुँ । मने जब अगहवा लगलगैटी ओइनठे पुगठ ते अचम्म मन्टी कमैयन बोल्ठैं “अरे का कहतेहे हो बघुवा ?”

अगहवा रिसाइहस कर्टी कहठ् “का कहटहे का कहटहे । यी सब टुहिनके काम ते हो । बन्वा भर अगहवा होइ, अगहवा होइ कहटी गोहरैना । हमार का पटा अगहवा

कहिके गोहरैलेसे बघुवा आइ। पटा रहट ते गोहरैबे नै करटी। लेऊ जौन गोहरैना गोहरा सेक्लो आब ना गोहरैहो बन्वामे अगहवा कहिके।

हाँ हाँ ठीके बा। का कहटहे ते बघुवा ? करैना ते कुछ नै कराइल ? अरे का कही जन्नी बना माग टहे। जैसिक फेन जन्नी बना डेहो कले बा। नै बनैबो ते जन्बो कहिके धम्की फेन डेले बा। कैसिक कर्ना हो ? कहाँ जैना हो बघुवक लाग जन्नी खोजे ? बरे कर्रा बा।

आब सक्कु कमैयन जुक्टि सोंचे लग्ठैं। बघुवैसे बच्ना सब जाने मेर मेरके आइडिया निकरठैं। ओइनमसे एकठो कहठ- अरे औरे दिन जब बघुवा आइ ते बघुवाहे बाँधके पितब ओ मारट मारट म्वाँ डेब। छट्पटाइ लागिते कहब- बरात अस्तहेके जैठै। जब बघुवा मर जाइ ते तब केंहका डर। सबजाने येहे बाते पर सहमती जनैटी काठी कैके घर चलजैठैं।

दोसर दिन फेन खाना खाके सबजाने काठी करे बनुवा निकरजिठै। ऊ दिन ओइने बघुवै सुनक डरे कोइ हल्ला नै कैके धिरे धिरे बोल्ठै। मने जब कठुवा काटे लग्ठै ते ठ्याप ठ्याप कुह्वारीक आवाज सुनके आ जाइठ बघुवा। बघुवा ते आज जन्नी मिल्ना बा कहिके अनगुट्टीसे ओइनके अस्रम बैठल रहठ। दूरेसे गोहरैटी बघुवा आइलागठ् ते ओइने सुन लेठैं। तब अगहवा ओ ओकर सक्कु संघरियन बघुवाहे म्वाइँना जुगारमे रठैं। अइटी कि बघुवा कहठ्- मोर लाग जन्नी खोज डेली कि नै हो अगहवा ? "हाँ-हाँ काहे नै खोजम"

"भेटैली ते ?"

बिरकुल काहे नै भेटैम। अप्नेसे के नै भोज करक चाही।

बघुवा खुसी हुइटी कहठ "कहिया जाब ते बरात ?" चाहा आजु चली ते का। अप्नेक विचार जहिया कहबी तहिया लैजाब बरात अगहवा बोलठ। बघुवा मनेमने सोंचठ सोंचठ कहठ- एःक दुइ जिटा ते मारक परल काहुँ भोजहा।

हजुर जिटा ते चाही तब ते बराती सिकार खैहीं। ली, ठीक बा कहिके चल डेहठ जिटा खोजे। यहोंर अगहवा ओ ओकर संघरियन जुन मौहुरैनिक लहरा छुटाके खोब ठूल बल्गर लसरी बनैठैं। करिब एक डेढ घण्टा रहिके बघुवा एकठो बनसुरा ओ एकठो चिट्टर मार्के जिटा पनाइक लाग बलाइ आइठ। अगहवा ओ सक्कु

ओकर संघरियन बघुवक पाछे पाछे जैठैं । बघुवा जिटा डेखा डेहठ । सक्कु जाने जिटा पनैठैं पनैठै ते चल्ठै आपन काठी कर्ना डेराठन । बघुवैफे बलैठैं । बघुवा खुसीके मारे बरे जल्दी चल डेहठ । अगहवा कहठ- हम्रे जैसिक कहब ओस्टक करक परी । नै ते बघुनिया भाग जैहीं ते हम्रे नै जानब । बघुवा कहठ- हाँ हाँ ज्या ज्या कर्ना बा सब टुहरेही करो । मै ते जैसिक कहबो ओस्टहिक करम जटरा कहबो ओटरे करम ।

अगहवा कहठ हमार चलनमे बरात जाइबेर दुल्है खोबसे पिट्ना चलन बा । हम्रे पितब ते रिसाके काटे ते नै छुट्बी ?

नै नै मै कुछ नै करैम, बघुवा बोलठ ।

लेउ ते आब हम्रे बरात जैना तयारी करी ।

तब ओइने बघुवै एकठो बल्गर रुखुवामे मोहरैनिक लहरक लसरीले बाँध लेठैं । बाँधके बरे बरे भट्ठा काट्के लग्लै पिते । बघुवा जन्नी पैना आसमे जट्रा चोट लग्लेसे फे चुपचाप रहठ । सहनासम ते सहठ बघुवा पाछे ते बेहोस हो जाइठ । अगहवा ओ ओकर सक्कु संघरियन मारट मारट ऐसा मार डेठैं कि बघुवा जिट्टी हो कि मुअल कोइ फरक नै हो जाइठ ।

आब ते यी बघुवा कैसिक नै मरी कहिके सिकार बोकके सक्कु जाने बघुवै बाँढल छोर्के घरेओर चल डेठैं । आबसे कबु नै यी बन्वम् आब कहिके सबजाने सल्लाह कर्ठैं ।

जब बघुवा बेहोस पल्टल रहठ ठीके ओहे समयमे ना कहटी की एकठो बघुनिया आपुगठ । बघुनिया बघुवै डेख्के पक्काफे यी बघुवा कुछ मुस्किल मे परल बा कहिके ओकरठे बैठल रहठ । करिब दुई तीन घन्टक पाछे जब बघुवक होस् अइठिस ते आपनठे बघुनियै डेख्के खुसी हुइटी कहठ- आगैलो प्यारी लेऊ जल्डी छोरो महिन यी रुखुवम्से । आजसे हम्रे ठरुवा मेढरुवा हुइली । बघुनियाफे ठरुवक खोजीमे रहे । उहीफे खुसी लग्ठिस । दुनु जाने थरुवा मेढरुवा बनके रहे लग्ठैं ।

दुई तीन दिनके बादमे बघुवा बघुनिया एकठो बरवार चिट्टर मार्के अगौना डेहे जैना सल्लाह कर्ठैं । सल्लाहअनुसार दुनुजाने चिट्टर लेले अगहवक घरेओर साँझ अन्धार हुइठ ते चल डेठै । अगहवा होइ ! अगहवा होइ ! कहटी । अगहवा जब

सुनठ ते के हो ? कहिके हेरे निकरठ । बघुवै देख्के डरके मारे लग लगाइ लागठ । अगहवा सोंचे लागठ कि बघुवा कैसिक बचगिल । आबते बिना बदला लेले नै छोरी । अगहवा आपन जन्नी लर्कापर्कन नुकुवाके अप्नेफे दुवार टाँटी लगाके चुमचाम हो जाइठ । तब बघुवा बाहेरसे कहे लागठ- अरे अगहवा बाहेर निकरो कि मै भिट्टर आउँ ?

नै नै मै निकरटु बाहर अगहवा कहठ् । बघुवा भिट्टर आइते सब जनहन खादारी मै बाहर जैम ते मोर जन्नी ओ लर्कापर्का ते बचजैही कहिके अगहवा निक्रठ । अहगवा डरके मारे बरे धिरेसे दुवार खोल्टी कहठ- बटाइ का काम बा ? अत्रा रातके यहाँ अइली । नै कुछ हम्रे थरुवा मेढरुवा अप्नेहे अगौना डेहे आइल बाती । और ते नै कुछ देहे सेकब । यिहे चिट्टर मार्के लान डेले बटी ।

डर्के मारे पसिना पसिना हुइटी लगलगैटी निकरल अगहवा मारल चिट्टर पाके खुसी हुइठ् । गाउँक मनैन बलाके चिट्टर पनाइ भिरजिठै । बघुवा बुघनिया खुसी होके बन्वम चलजिठैं ।

राजा और बजिर

–इन्द्रबहादुर चौधरी

बहुत पहिलेकी बात हए । एक राजक लौरा रहए और एक बजिरक लौरा । बे दोनो मीत मीत (आर-आर) रहएँ । बे दोनेजनी पढन लिखन छोरदैं । और गुलेल लैके रोज सिकार खेलन् जामए । धौरिया मारके भुज-भुज खामए । रोज जिनकी जहे काम, रोज जहे काम ।

एकदिन राजा बजिरसे कही "बजिर, तेरो लौरा और मेरो लौरा औत्यारी हुइगई हँए, जे पढालिखी सब छोरदैं अब जे धनि कनिँया खेलत हँए । तेरो लौँरा पढैगोना तव बजिरी कौन खिलाबैगो और मेरो लौँरा नापढैगो तव राज कौन खिलाबैगो । अब यिनके कैसे करै बजिर बताओ ।" बजिर कहानलगो की "अब राजा तुमही हव तुमही जैसे करओ ।"

राजाके गुस्सा लागो । राजा तीन धिउतन (जादुबारी) बुढियन् के बुलाई । तीनव धिउतन् बुढियन् आइगए । बिनके बुलाईके एकसे पुँछी : "ले बता तिर बुद्धिमे कित्तो जोरको हय" बा कही "मेरी मे इतना जोर हए की मै बादरमे तक छेद कर्देङ्गो ।" राजा कही "तवता तए मेरी कामकी ना हए ।"

दुसरी बुढियासे पुँछि "तिर्मे कित्ता जोर हए ।" बा बुढिया कही की "बा बादरमे छेद करियाइ तव मए बैठके चिट्की दियाङ्गो ।" राजा कही ओहो जोडता बहुत है तुम दोनौमे पर दोने मिर कामक् नाहौ । तव फिर राजा तिसरी बुढ्ढिसे पुँछि 'तिर्मे कित्ता जोर हय ।' बा बुढ्ढि कही 'मय हसत्के रुब्बाइ देङ्गो और रूठेके (रोतेके) हस्बाइ देङ्गो ।' तव राजा कही 'अच्छा ठीक हए । तए मिर कामकी हए ।'

राजा अग्गुक दुई बुढिएनके पठे दै । अब राजा तिसरी बुढ्ढिसे कही की "मिर लौँरा और बजिरक् लौँरा आरआर हँए । यिनकी यारी बहुत लग्गइ हए । अब यिनकी यारी कैसे छुटामओ ?' बा बुढ्ढि कही 'मए एक घडिम् छुटाए देङ्गो ।' 'कैसे ?' राजा कही ।

'एक डोली बनाओ, फूलसे खुब सज्बाओ, खुब अच्छो बन्बाओ पर अपनी लौरनके मत दिखइयो ।' बा बुढ्ढी कही । और बे दोने कल गुलेल, धनही लैके सिकार खेलन पक्का जामङ्गे । पर, कितय मुहके जामङ्गे तके रहियो । और डोली

बोकनके ताँही चार कधाँ ढुँरलियो । राजा कही 'ठीक हए ।' राजा दिनभरेमे डोली सज्बाइदै और चार कँधौ ढुँरलै । सब तयार कर्लै ।

भोरभओ राजक और बजिरक् दोनो लौंरा सिकार खेलन् चल्पनी । अब दोनो जात जात एक बगियामे पुगिँ । फटाँइँ दिना दोनो गुलेल चलाए रहेहँए । बा बुढिया आइ और कही ।

चलौ डोली लैके बे कितए मुहुके गए हँए । बे जितए गएहए उतइ चलाव । बा बुढिया डोलीमे कुच्लई और बाके लौजाय रहेहँए । बुढिया कही ध्यान करियो, बे दोनो लौंरन्से थुड् दुरए धरियो डोली । और तुम चलेजैयो फिर एक घण्टक् रहिके अइयो । बे चारओ जनी एकए बोलीमे कहीँ 'अँहाँ' और बे चलेगए झाडे, पिसाबके ताहिँ ।

दोने मितनके देख्के बुढिया डोली मैसे बिनके हाँतकी सान मारी और बुलाई । बे दोनो देख्लैं । बजिरक् लौंरा कही 'आर तुम जाबओ' और राजक् लौंरा कहेरहो 'आर तुम जाबओ ।' बजिरक् लौंरा कही 'ना तुम राजा हव तुमही जाओ । मै ता बजिर हँव ।' राजक् लौंरा चलपरो । बा बुढ्ढि हातकी सान मारी और बाके लौटारदै ।

बुढ्ढी फिरके हात मारी और बुलाई । राजक् लौंरा कही 'मय ता हबइ जाइके आव हँव । मोके लौटारदै आर अब तुम जाबओ ।' अब् बजिरक् लौरा गओहए । बा हुँवा जाएके बैठोहए और बा बुढिया डोली भितर बजिरक् लौंराके बैठारके बाकी कानमे मुह डटाइलै । डटाय डटाय एक घण्टा हुइगओ । बातचित कुछु नाए । डटाय डटाय कुछु ना भओ ।

डोली बोकनबारे झाडे पिसाब कर्के चारय जनी आइगए । तव बुढिया लौंराके छोंरदै और कही 'जा' । बजिरक् लौंरा चलोगओ । डोली उठाएके घरे लाँइ और डोलीसोली सब विगार्दैं । डोली विगार बुगुरके खेँप्दैं ।

राजक् लौंरा बजिरक् लौंरासे पुँछि 'बताबओ आर बा बुढिया तुमसे इत्तो देरले का बत्काइ ?' बजिरक लौंरा कही 'कुछु ना कही खाली मुहु डटाए रहए ।' यित्तो देरले खाली मुहु इकल्लो डताई ! ना कुछु ता पक्का कही होग्गो । थारी गुस्साइके राजक लौरा कहीँ । बजिरक लौरा कही 'ना आर बा कुछु ना कही ।'

राजक् लौंरा कही 'ना बा सुतरी होइगी तए बाके बैयर करैया हए तही मारे मोके ना बताएरहो हए ।' बजिरक् लौंरा कही 'ना यार कछु ना कही मै का बत्काएदैंओ ।' राजक् लौंरा कही ना... । बा हुँवाँसे टुन्न हुइके चलोगओ ।

घरे जाएके लै खाट पर्रहो । अब एकघरी पच्छु राजा घरे आओ कचहेरीसे । रानी राजासे कही 'लौँरा आइके खटियामे परोहए का भौ है बाके ? खाना उना नाखाई का हुइरहो पुछओ ता जाइके ।' राजा अप्नी लौँरक् जौँने जाइके कही 'बेटे जान क्या हो रहा हए बताओ ।' बक् लौँरा कही 'हमारा सर दुखरहा हए ।' राजा कही 'तो सरको नाना देओ ।' लौरा गुस्साएके कही 'क्या दें ।' और अपनी बाबासे कही 'आज बजिरक् लौराके मार्के बाकी नयन करेजा निकार्के लाओ तव खाना खइहँव नत खाङ्गुवयना ।' राजा कही 'अइसे ना कहाओ ।' लौरा अपनी जिद्दी पकरलइ ।

राजा अप्नी सब नोकर चाकरके हुकुम दै, कही, 'जाओ बजिरक् लौँराके पकरके विया बान जङ्गल लैजाओ और हुँवा लैजाएके बक् मार्के करेजा निकारके तर्वामे घिचके छाँहींमे खैं दियो । राजक् हुकुम मानके सब गए । बे बजिरक् लौराके पकरलैं और कहीँ 'चल तिरता अइसो उइसो हुइरहो हए ।' बजिरक् लौँरा कही 'ठीक हए चलओ मए जाए रहो हँव ।'

अब लैजात लैजात वियाबान जङ्गलमे पहुँच गए । औ बे कहीँ मारओ जाके । बजिरक् लौँरा कहेरहो हए मोके मत मारओ फिर मीर चाह हुइहए तव कहाँ पएहव । अगर मोए मारइगे ता तुम कोइ नाबचनबारे हव । तव बे कुइ कहामए रहानदेव यार, कुइ कहाए मार्देय । नत जा जिन्दा हए कहीके राजा जो जानिगव बा हम सबके मार्देहए । कुइ कहाए ना यार । तव बजिरक् लौँरा कही अइसे करओ एक लट्ठा लाबओ और आगी सुल्गाइदेओ, आगी सुल्गाएके मए हिँया चिम्टा अँदाएदओ हँव । मए हिँअए बैठो राहाङ्गो । और कहुँ मिर चाह होए तव तुम हिँअए अइयो । मोके हिअए पाबइगे । बजिरक् लौँरा आगीउगी सुल्गाएके हुँवए बैठ गओ ।

बजिरक लौँरा कही 'तुम जाओ कुइ सौजा मारओ, कुइ मृगा मारओ । सब भुज भुज खाओ और करेजा लैजाबाव । मृगाकी करेजा हए कि मेरी करेजा हए कहीके बो का जानएगो ससुर । बस् बे मृगा माँरी, सौजा माँरी भुजभाजके खाइके करेजा लए चल्दैं । घरे जाएके तर्वामे घिसाएके राजक् लौँरा के दैदैं । राजक् लौँरा कही मराए डारो साले । खुब बैयर करैया रहए ।

इतए राजक् लौँरा पढाइ लिखाई करन लग्गओ । और पढिगओ, उतए बजिरक् लौँरा बनको बनएमे रहिगओ । राजक लौरा सिकार खेलन जाबए । बा सिरे, पछार, अगार सबघेन खेलडारी रहए । एकदिन राजा कहीँ 'सबघेन सिकार खेलन जैए पर, दखिन मत जैए । लौरा कहीँ 'ठीक हए' ।

राजक् लौँरा पछार, सिरे, अगार रोज चिरैयाँ मारत् मारत् सब निभ्टाइडारी । बाके अब दखिनघेन जवासी लगो । घोडामे बैठी और चलपरो । बनमे एक मायावी

हिरन मिलिगओ। बहे हिरनकी पछ्छु लग्गओ। मारन ताहीँ तकए की बा सरफट दिना भाज्जाबए। फिर रप्टाबए फिर भाज्जाबए। रप्टाट् रप्टाट् बहुत दूर पुग्गओ। पर बाके मार नापाई। बनमे रात हुइगओ। वनमे एक वर्गतको पेन रहए। बहेक किनारे एक तलौवा फिर रहए। तलौवामे घोडाके पानी पिवाई और अपनओ पिई। बहे रुखा तरे बैठरहो।

बनमे बहे रात नाच हुवैया रहए। आदमी हुँवा सफा करत रहएँ। सबसे पहिले झाडुबाले (भंगी) आए। अइसी कर्के छिँच्चा आओ। बढारबुढुरके भुरो कर्के चले गए। थोरी देरमे कुर्सी, खटपल्खा, मुढा सब लैके नाच आइगओ। रातभर नाच भओ। मुर्गावाङ् हुइगओ रहए। एक नचनियाँ राजक लौँरा ठिना आई और बक माथेमे हात धरी और चलिगई। नाची नाची फिरके आइ और लौराकी अपनी हात नाकमे धरी फिर्के लौट्गई। नाची नाची फिरके आई औरु बक दाँतमे उँगरिया दबाइके बतउनी दैके चलिगई। थुर देरमे नाच खतम हुइगओ। राजक लौरा कही 'जा का कहीगई ? मिर यार हुइतो ता बा बतइतो।' नचनिया जौन बतउनी कही बाकी मतलब का हए कहीके लौरा बहुत चिन्तामे परिगओ।

उजियारो भओ तओ लौरा घोडामे बैठी और हाए यार, हाए यार करत करत घरे पुगो। राजा कही 'का हुइगओ ? काहे यार, यार कररहो हए ? अपनी यार के ता तए मराए डारो। ' लौरा घोरा मैसे उतरो और खटियामे लेट गओ। बा कहीँ 'मेरी यारके ढुँरके लाबओ तब मय उठंगो नत नाए उठंगो।'

बाके घोडा मैसे उतारीँ और खटियामे बैठारीँ। राजक् लौँरा कही- मिर आरके ढुँरके लाबओ तव खानु खएहओ। नत नाखएहओ। राजा कही आरके ता मराए डारो अब कहाँ मिलएगो। राजक् लौँरा कही ना चहुँ जहाँसे लाबओ लाओ। बाकी अग्गु राजाकी कछु ना चलो। बेही चार जनीके ढूँरन पनारी। अगर ढुँरके नालाबैगे तव तुमर सब बालेबच्चे कोल्हुमे पेरदेङ्गो।

तव बे गए। बे बतकात जाएरहे हँए। कहुँ यार बो भाज ता ना गओ हुइहय ? हुँवए चलएँ। अगर नाभओ तव आपन ता खतम हएँ अब। बे पहुँचे हए बहे ठिहा। बजिरक् लौरा हुँवए बइठो पल्ठी भिरे बैठो रहए। और बाके बार डुबर्रा हानी पहुँरेपरे हँए। तव बे कहान् लगे अरे चल् यार बजिरा हमरसँग।

बजिरक् लौँरा कही पहिले ता तुम कहात रहओ की माड्डारएँ, माड्डारएँ, मए ता कहात रहओ मोके चाहा होइगो ता कहा पाबैगे। बजिरा कही अब जाओ घरे और पिरे जाओ कोल्हुमे। चारए जनि कही यार बजिर अइसे मत करए यार चल यार चल। बजिरक् लौँरा कही चलओ। आते आते बजिरके राजक् घरमे पुगाँइ।

अपनी मित (राजक् लौँरा) के खटियामे परो आरआर करत देखी । बजिरक् लौरा मितके हलाई । बा पतए नापाई । एक थप्पर कर्रेसे चुतरमे मारी । तव उठो हए झर्पट्टदिना । अपनी मितके देखि चेहेट गओ । बजिरक् लौरा कही-

अरे यार कुछु बात है ता बत्का खाली आरआर कर्रहोहए, अब मए आइगओ हव । राजक् लौँरा मितके देखी लम्बे लम्मे बार, पुरो मैलियानो परो । हँदान ताहीँ पानी धिकान धर्दै, बार कट्बान ताँही नौवा बुलाई और नयाँ लत्ता सिल्बाइ कही चलओ आर खानु खान्के । खानु उनु खाँइँ ।

राजक् लौरा कही यार एक बात बत्कान हए तुमसे । और बत्कान लगो । 'एक बर्गत की पेन रहए, हुँवापर नाच भओ, तव एक नचनिया आइके मोके एक बतउनी दै । मुर्गक् वांग रहए बा बेरा । माथेम ढरी हात, और नाकम धरी, और दाँतम उँगरी दबाइके चलिगई । का कही कहीके मए सम्की नापाओ ।'

बजिरक् लौँरा कही सुनओ आर बा का कही की 'की हाँथी दंन्त लड्की हय, सुर्वेदा मेरो नाउँ हय, तय बैयर करए तव आजइए ।' कही हए तोसे । बैयर करएगो ता चल । राजक् लौँरा कही चल चलएँ । बे दोनो खाना उना खाई और घोडा साँजीँ और बे चलपडे । चल्ते चल्ते । बजिरक् लौँरा कही देख धरम् करन परैगो । धरम् नाकरैगो तव बैयर नाकरपएहए । राजक् लौँरा कही 'अहाँ' ।

चल्ते चल्ते डगरमे एक नदिया परी । तव बे नदिया उखरीँ । उखर्के देखीँ नदियामे चिटी पुहतरहएँ । बजिरक् लौँरा कही ले यिनकी धरम् कर । राजक् लौँरा एक लग्घा लै और पानीमे धरदै । पानी मैसे सब चिटी नदियासे उखर्गए । चिटी कहीँ ओहो ददा तै हमय बचाओ अगर तय नाहोतोता हम् जिन कहाँ पहुँच जैते और मरजैते । बे चिटी कहीँ ददा हमहु जांगे तुमरसँग । तौ बा कही- अच्छा, तुम यितका छोटे छोटे मए कैसे लैजाओ ।

चिटी कहीँ- अगर तोके हमर काम परए तव हातगोर धोइके कहीए की 'चिटी आइजा हम तुरुन्त आइजांगे' । राजक् लौरा कही-

अच्छा ठीक हए और बो चलपरो ।

जाते जाते फिरके एक नदिया परो । नदियामे एक मुसो पुहुत रहए । बजिरक् लौँरा कही मित अब धरम् कर । जा मुसोके निकारदे । फिरके एक लकरी (लग्घी) लइ

और नदियामे डटेदै । सब मुसो लग्घीक अडास लैके सब निकरगए । मुसो कहीँ - ददा हमहु तुमरसँग जांगे । बा कही हम घोडामे हएँ तुम नेगट कैसे जैहओ । मुसो कही- नाए तव काहै हम नेगट चलेजांगे ।

मुसो कही- कछु काम परए तव हातगारो धोइके कहीए मुसो आज मिर काम परो हए जल्दीसे आइजाओ । हम जल्दी आजामंगे । ठीक हय कहीके दोने यार यार हुँवासे चल्परे । चल्ते चल्ते फिरसे एक नदिया आइगओ । बामे एक डानो (डनमा/आँधी) पुहुत आबए । बजिरक लौँरा कही मित देख रे बाके धरम् कर । फिर्के लकरी लगाई और नदिया उखर्बाइ । बहु कही ददा महुँ तुमरसँग जैहओ । आज तै नाहोतो तव मै जिन कहाँ जातो । तव राजक् लौँरा कही कहाँ जैहए मत जाए कहुँ हुँवा जाइके विनके खाइउइजैहए । तव मिरता आफत हुइहय । डनमा कही मै का खैहओ । और कही तव तय ना लैजाथए तव अगर मिर काम परइगो तव हातगोरो धोइके कहीए डानो आजा मए तुरुन्त आजामंगो । अच्छा ठीक हय बे जानलगे ।

जाते जाते बे सुर्वेदाकी सहरमे पुग्गए । एक नदिया किनारे डेरा धरी । खाना उना खाइके घोडाके चुगान मैदानमे छोर्दै । अपना हँदानके गए । हँदाय हुँदुइके बे लेटरहे । बजिरक् लौँरा अप्नी आरसे कही ‘हबइ सहरमे नाकुचएँ, पहिले यितइए पत्ता लगाइ लेमएँ । बरु अइसे कर सबसे पहिले मुसो के बुला । हातगोर धोइके कही ‘मुसो आज मोके तिर काम परो हय जल्दी आइजाओ ।’ एकघडी मे कितनो मुसो आइगय कजमओ कजमओ ।

मुसोसे कही जहाँ सुर्वेदाकी मकान हय तुम जायके भितरै भितर भार खोल्देबौ और सुर्वेदाके खटिया तरे पतरो से रखाइदियो की मुर लरामै तव फुट जाबै । मुसो आधी रात नाहोन पाओ रहए खोदखादके तयार कर्दै । जहाँ रकम हुँवय सट्ट भार लैचले जाँयँ । बे जाइके कही हम खोद्दै हय । राजक् लौरा कही ठीक हय तौ अब तुम जाओ ।

बजिरक् लौरा अप्नी मितसे अव तुम जाबौ जहे सुराङ्गै सुराङ् । और बासे कहीयो की बर्गत तरे नाच करतपेटी तए बुलाओ रहय मए आइगओ । राजक् लौँरा गओ । भारए भार गओ धिरेसे मुर लराई खिना भसक गओ । कौन आइगओ कहीके सुर्वेदा डराई । जा कौन हए, कौन हए, भाज भाज कहीके चिल्लान

लगो । हियाँ मिर दौवा जान पइहए तव काट्देगो । राजक् लौँरा कही तही ता बुलाओ रहए । बा बर्गत तरे तुम नाच करे रहओ । तय बतउनी देन आओ रहय । तहीमारे मए आओ हओ । सुर्वेदा कही- ठीक हय ।

राजक् लौँरा कही तेरी हालचाल का हए तेरो ? बेहा ना हुइरहो हए ? सुर्वेदा कहीँ देख हिया मन्त्री लोग का करथएँ । जामे चार अनाज मिलाथएँ भुन्टा, लाही, धान और मसुर जा बंगरामे बुब्बाथएँ । वंगरामे बुबाइके तौल तौलके धरथएँ । और अगर कम थहेरगओ तव घेँट काट देथएँ ।

एक लोहेक खम्मा है बाके कुर्हारीसे एक चोटमे कट्बाथएँ । एकचोटमे सात खण्ड करेहए तव बेहायलेहए नत घेट काट्देंगे । दही और कुर्हारी मए तोके देंगो । और रकम तिर बाँट छिमट्बान्के । राजक् लौँरा कही ठीक हय । तव बो हुँवासे निकरगओ ।

अपन मितके सब बात वत्काई । बा कही वंगरामे अनाज बोना हय और सब सिमटबान के हय । बजिरक् लौँरा कही अच्छा और का का करन हय ? कही और मुरमे दही धरके नेगन हय अगर थोरी किना फिर दही नागिरान हए और कुर्हारीसे एकचोटमे लोहेके सात खण्ड नाकरेसे मुर काट देमङ्गे । बजिरक् लौँरा कही अच्छा चल ठीक हय अब कल घुसङ्गे ।

राजक् लौँरा कही- कुर्हारी और दहीक बारेमे सुर्वेदा बात दैदइ हय । बजिरक् लौँरा कही- चल तव अब घुसएँ । बे दोने मीत मीत घुसगय । अब दरबारमे मन्त्री लोग सब बैठे हय । सब कहेरहे हय अब वेहा होबइगी । मन्त्री कहेरहे हय की कहाँ हवइ हुइहय, अभय बहुत काम बाकी हय । चलौ वंगरामे रातभरेम जाके बोना हय और समेट्ना हय । अगर थोरी रकम कम परी तँही घेँट काटलेना हय । वंगरामे धरयाँइ और कहीँ ले बो ।

बजिरक लौरा कही- मित डानो के बुला आब । राजक् लौँरा अपनो हातगोरो धोइ औ बुलाई डानो के 'कही आइजा डानो तिर काम हय ।' डानो एकघरीमे आइगओ । डानो कही बता ददा का बात हय । कही जा रकम बोइदे । बा बोरा पकरी और धरी काखीमे मार छराछर मार छराछर एक घरीमे बोइदै । बोइबाइके राजक लौरा बाके पठादै । राजक् लौँरा कही- अब कैसे करै ? बजिरक लौरा कही- अब चिटीन्के बुला । चिटिन्के बुलाई एकघरीमे कितनो चिटी आइगय ।

चिटी कही- का बात हय ददा बता । बा कही जा धान, भुन्टा, लाही सब अलग ठीहा लगाइके समेटओ । कम नाहोबय । बे चिटी सब बटोरके लियाइ । सब जमा

कर्दै । रातभरेम सब काम कर्के बे चलेगय । उतए मन्त्री कहेरहे हए चलओ देखन बे बटोरी की ना बटोरी हय । अगर नाबटोरो हुइहय तौ सारेके घेँट काट्लेना हय ।

आइके देखथै थो सब अलग अलग जमा परो है । बे कही तौलओ कहीँ कम ता नाहोबै । उतए जनता हतौरी पिटन लग्गय अरे वेहायले वेहायले । मन्त्री कही हबय कहाँ उइसी वेहामंगे हवय कितनो काम हय । बा कही लाओ दही लाओ ।

मलैयामे दही लाइँ । और बासे कहीँ ले चढ, अगर एक बुन्दा दही गिरैगो तव घेँट काट्लेमङ्गे । तरेसे मन्त्री लोग चद्दर फैलाए परेहएँ । राजक् लौरा सब दही मलैयामे डारदै । एकुना गिराई । उपर चरहत गओ उतै मुरै मुर देखि कितनो आदमीनके घेट काटके टँगलाए परे रहय । रोन लगो बा । रोन लगो तव बक आँसु झरो चद्दरमे पट्टदिना बाजो । तरेसे कही साले दही खेँ दौ । उतर उतर घेँट काटलेओ घेँट । अब भैया बा उतरो हए तव सब कहेरहे है काटौ काटौ घेँट ।

सुर्वेदा काहान्लगी हे होससे कटियो घेँट । दही देखओ कैसि हय गिरनबाली दही और बक चाटौ नुनान हय कि मिठी । चाटी तव नुनान रहय कहीँ उइसी घेँट काटाकाट कर्ररहे हओ । तौ बे कही ले एक काम और हय ले कुर्हारी और जा लोहेके एक चोटम् सात खण्ड बना । मारी एक कुर्हारी धराकदिना सात खण्ड हुइगौ । सब कहान लगे विहाले विहाले तव उनकी वेहा भओ हय । राजक् लौरा वेहायके अपनी घरे लैगो । दाइजो मे हाथी घोडा सब लिआई । तौ अपनी घरे आइके अपनी राजपात करन लगे । बजिर अपनी बजिरी खिलान लगो ।

लेओ भैया बात गओ सपड, लाओ टाफी बाँटके खामए ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

राजा नल

–इन्द्र बहादुर चौधरी

एक राजा रहए । नाउँ रहए नल । एक दफ्फेर देसमा बर्खा सुखा परो । तव राजाके दिन गिरन्लगो । राजा रोज गरिबसे गरिब होन् लगो । राजाके चिन्ता होन लगो की ‘अब जनता का खामंगे ।’ जनताओ ‘राजा साब राजा साब हमए बचाव, हमए कुछ देबव, कुछ सहायता करव’ कहीके राजाके सतान लगे । देसके सबजनि कट्टा लए लए राजक् ठिना आँमए । सबके चामर बाँटत बाँटत राजक् जौंरे कछु ना रहिगओ । राजाके चिन्ता होन लगो कि आज ता जिनके दओ जे जनता कल आमङ्गे तओ का देमङ्गो । कौनके खबामंगो और कौनके ना खबामंगो । बाँटत बाँटत सबचीज निमट्गव ।

राजाके बहुत समस्या हुइगव । तव एकदिन राजा रानीसे कही- ‘चल अब आपन भाज चलएँ । रानी कही थोरी किना चुन रहिगौ हए अब का करएँ । राजा कही- पुटरी बाँध और खुर्रा नुन लैले और चलएँ । रानी सब पुटरी बाँधी और बे दोनो मुर्गाबाङ् चलपनीँ । चलते चलते... बहुत दूर जाइके उजियारी भओ हए ।

सबेरे सब जनता राजा ठिन गए । और कहान लगे ‘राजा साब राजा साब हमर रक्षा करओ ।’ पर, राजा नामस्कि । दरबारमे फाटक लगो परो रहए । एक कही अए राजा त हैयय नैया । बे सब निन्यारो मुँन लए हुँआसे लौटगए ।

राजा और रानी जाते जाते बहुत दूर पुग्गए । बे दोनो एक गह्वैयाठिन जाइके सैंताँन लगे । राजा नल रानीसे कही ‘ले मए जा गह्वैयामे हँदएहओ और तय रोटी उटी पका । हँदात पेती कहुँ मछरी मिल्गए तव चटनी बनाइके खाइलेङ्गे ।’ राजा हँदाय हँदुइके चार बजरिया लैके निकरो हए । राजा रानीसे कही-

तय रोटी बनाए चल मै सिन्नी पूजा करलैंओ तओ भुजके खांगे । राजा सिन्नी पूजा करके बजरिया भुजनताँहीं आगिम डारी । बजरिया भड्भड्भड् फर्ड्फर्डाएरहे हए ।

राजा भुजत जाय और डिँरम निकारत जाय । भुजत जाय डिँरम निकारत जाय । अइसी करत करत सब मछरी भुजडारी । भूजभाजके आगिक ढिँगइ

धरी। सब मछरी फुद्फुद् कुदके गह्नैयामे चलिगइँ। हत्तेरी जा का हुइगौ। राजा कही 'जा का हुइगओ। भुजी मछरी गइँ !'

"अरे राजा नलके विपत परो रे दैया, विपत परो

भुजी री मछरिया तालमे जावन रे"

राजा रानी खुर्रा नुन पिसीँ और रोटी खाइखुके चलपनीँ। चलते चलते चलते... बे बहुत दूर पुग्गए।

जाते जाते डगरमे एक तितुरा चिरैयाँ मिल्गओ। राजा रानीसे कही 'पकर जहु लइचलएँ। जहे भुजके चखना बनाइके खांगे।' रानी तितुरा लइलइँ। चलते चलते, चलते.... सन्जी हुइगओ। राजा कही- अब हिँयए सैँताए लैँए। फिरके राजा रानीसे कही- मए हँदायलैँओ और तए रोटी पका। राजा हँदाए हुँदुइके सिन्नी पूजा करलइ। अब बा तितुरा भुजन लगो। भुजभाजके धरी खिना तितुरा भुर्र दिना उर्गओ। राजा कही 'हत्तेरी अरे जा का हुइगओ !'

"अरे राजा नलके विपत परो रे दैया विपत परो

भुजो रे तितुरा उरिजाबैन रे।

राजा कही देखौ ता भुजिभुजाओ तितुरा उर्गओ ! बे फिरके खुर्रा नुन पिसीँ और बहेसे रोटी खाइँ। रात हुइगओ रहए। बे हुँवए सोइँ। भोर भव फिर चलपनीँ। चलते चलते चलते चलते..... बे बहुत दूर एक पिङ्गल देस पुगे हँए।

राजा रानीसे कही- मै एक नोकरी ढुँड यामओ। नोकरी ढूँरत ढुँरत राजा पिंगलकी राजाके घरमे पुगो हए। पिंगल देसकी राजासे कही 'राजा साब मोके नोकरी देबओ।' पिंगल देसकी राजा कही-

मिल चलान परइगो।

बा कही 'अच्छा ठीक हए, मए जहे काम करंगो।'

राजा नल अब हुँवएपय नोकरीमे लग्गओ।

राजा नल अब हुँवा राहत खात, राहत खात रहए। बा अपना मिल चलाबए और पिंगलके राजा सेठ जौँरे पासा खेलन जाए करए। राजा रोज हारए। पासे खेल्ते खेल्ते पुरो राज हारगओ। बाँकी रहिगओ बहे मिल। एकदिन राजा नल राजासे

पुछि 'राजा साब तुम रोज कहाँ जाथव ।' पिंगल राजा कही 'यार पासे खेलन जाथवँ । सो मै सब हारगव हव । अब एक जहे मिल बचो हए ।' राजा नल कही 'राजा साब पासे खेलन ठीहा मोके लइचलव । और पासा खेलत पेती मनैमनसे कहीयो । 'राजा नलके पासे जुगबाह्वा ।'

पिंगल देसकी राजा अपनी नोकर राजा नलके लैके पासे खेलन ठीहामे गव । खेलत पेती राजा कही 'राजा नलके पासे जुगबाह्वा' । राजा सब जितन लगो । राजा जितत् जितत् फिरके पुरो राज जित गव । अब सेठ सब हारन लगो । खेल्तए खेलत सेठ राजाकी हात पकरलइ और कहान लगो-

'कहाँ हए राजा नल ? कहाँ पाइगव राजा नलके ?' बा राजा कही- 'मेरे मिलमे नोकर हए ।' सेठ कही 'बाके लिआ ।' राजा नल राजासे कही 'साब मएता कहो रहव की जोरसे मत कहीएव । अब भइँ मेरी आफत । मै ता गरिब आदमी हौँ । मए जुवा कासे खेलंगो ।'

सेठके आदमी राजा नलके पकरके लइगए । और सेठ कहीँ 'ले बैठ राजा नल अब तोसे मेरी पासा चलइगी ।' राजा नल कही 'महाराज मै कासे खेलवँ । मिरठिना एक रूपैयाफिर ना हए । मिर एक बैयर हए ।' सेठ कही- 'चल मेरियो बैयर हए ।' सेठ कही 'और कछु ना हय ता एक सर्त लगामएँ ।' राजा नल कही 'कैसो सर्त ?' सेठ कही 'तेरो लौरा और मेरी लौरीया हुइगय तव आपन सम्धी सम्धी । और लौरैलौरा हुइगए तव दिलबर जुराइदेंगे । अगर लौरीया लौरिया हुइगए तव गुञ्ज जुराइदेंगे । राजा नल कही 'ठीक हय' । अब दोने पासा खेलन सुरु करीँ खेल्ते खेल्ते सबेरे हुइगव ।

इतए सेठकी बैयर जतकाली होन लागो और उतै राजा नलकी बइएरव जतकाली होन्लगो । दोने जतकालीन सँगए बइठीँ । अब दोनेके बच्चा होनलगे । गाउँबारे सब कहाँनलगे की कौनक लौरा और कौनक लौरिया ? होतए होत राजा नलके लौंरा और सेठकी लौंरिया हुइगए । लौंरक नाउँ 'ढोला' और लौंरिएक नाउँ 'मारू' धर्दइँ । दोने जनिक् डलएडलवामे ब्यहा कर्दइँ । अब राजा नल और सेठ सम्धी सम्धी हुइगए ।

'अरे मारु के व्यहामे बाजैन रे सबै रे बाजा

और ढोला के व्यहामे बाजयन पुटला ढोलन रे '

हुँवा राहते खाते, राहते खाते । दिन लौटन लगो तव राजा नल और रानी कहीँ 'अब घर चलएँ ।' राजा नल और रानी अपनी घरे आइगए ।

ढोला अब ज्वान हुइगव । ढोलाकी घरमे एक दर्जिनियाँ (चमरनिया) और एक ढोलनियाँ (भगनिया) राहत रहएँ । बिनको नाउँ रहए रिबिया और सिबिया । बे दोने बहेक घर रहामै और खामएँ । बे दोने ढोलाके आँखी लगाइलैं ।

इतए मारू फिर ज्वान हुइगइ । ढोला मारूसे डलएडलवामे ब्यहा भवहए कहीके भुलगव रहए । मारू एकदिन 'मए अब ज्वान हुइगव हव मोके लेन नाअइहव' कहीके चिठ्ठी लिखि और सुवाकी घेँटमे बाँधके पनार्दै । राजक आँगनमे एक रुखा रहय । रिबिया सिबिया बहे रुखामे दिनभर पड्रिहामए । टेँए टेँए टै टै.... करत करत सुवा आइगव । सुवाकी घेँटमा चिठ्ठी बँधी रिबिया सिबिया देखलइँ । बे दोनो ढोलासे कहीँ 'दौरो राजा साब दौरो । जा सुवा आथए तव हमर पेट गजब पिराथए, पेट कटो जाएरहो हए ।' ढोला उठाइँ बन्धुक, ठाँइँ दिना मार्दै । सुवा गिर्गव । रिबिया सिबिया दौरीँ और चिठ्ठी फारफुरके आगीम डार्दइँ ।

इतए घरमे 'सुवा काहे ना आओ आइतो ता कुछ खबर लैतो' कहीके मारू सोचमे परो हए । मारू दुसरी चिठ्ठी लिखके फिरके कौवाके पठेइ । काँइ, काँइ, काँइ करत करत पुग्गव । रिबिया सिबिया फिरके कही 'राजा साब दौरो जा कौवा आथए तव हमर मूर फूटो जाय रहो हय ।' ढोला दौरो बन्धुक चलाई ठाइँ दिना बक मार्दै । बे दोने चिठ्ठी नोचनाचके आगीम डार्दइँ । इतए मारू कौवाकी आस्रामे बैठो हए । कौवा आउवए ना ।

अइसि करते करते । दुई चार करहा रहएँ । बे पिंगल देसमे चुगन जामए । रिबिया सिबिया जेहीँ कराहा ढोलाके ब्यहामे ब्यहानके जांगे कर्के पिंगल देसमा जानबारे करहानके ढुँर ढुँरके मारन लगे । एक दुई करहा रहएँ बे पिंगल देसमे जाइके पान खाइके आमए । और इतए आइके छुल्ल दिना लाल हगएँ । बिनके देखके रिबिया सिबिया कहीँ 'जे ता उइसी खुन हगरहेहए जिनके का मारना' ।

एकदिन एक करहा ढोलासे कही 'तेरी होनबारी बैयर सुतरी हए। खाली चमरनिया भगनियाँके पिछु लगो हए। उतए जाइके अपनी वैयरके देख ता, हुँआ मारु चमक रही हए।

ढोला कही-

'कैसे जामएँ।' करहा कही 'मै पान खानके रोज जाथव हुँवा। मै रोज तिर बैयरके देखियाथव।' ढोला कही- 'अच्छा चल ठीक हए, कैसे चलएँ तव।' तव करहा कही- जानक ता कर्री हए। जे रिबिया सिबिया मोके जात देखंगेता माड्डरहए। अब तए जिनके रातदिन पासा खिला चहूँ महिना कटजाबए सोनए मत दिए। जब बे कर्रेसे सोइजैहय तव आपन चलंगे। ढोला कही तव ता मोहुके निद लगइगो ? करहा कही- तए मिर पिठमे सोतए चलोजइए। ढोला बिनके १५ दिनले खुब पासे खिलाइ। अब बे ऊँघात ऊँघात लेटगए। पर बे दोने ढोलकसँग सोइँ। जब बे कर्रेक निदाइगए तव ढोला उठके अपनि बराबर केरा काटके बिनकी बीचमे सुबाइदैं। और अपना करहक पीठमे बैठके चलपडे।

हरे बायँ गुडैया करहा दैय गव और निकरगव सौवय कोष न रे

करहा दै बायँ गुडैया और निकरगव सव कोष। तले इतए रिबिया सिबिया जग्गए। करहा लैगव कहीके बे पता पाइगए। अब बेहू दौरि हएँ पकरनके।

हरे पानको डिब्बा रिविया खोलदइँ

और निकरगइँ सौवय कोष न रे ।

रिबिया सिबिया पानकी डिब्बा रहय जादु करेके बाके खोलदइँ और निकरगइँ सव कोष।

हरे पानको डिब्बा रिविया खोलदइँ रे

और आगु लगादै भदइँया बेर न रे

तले करहा बेर खाबैगो तले हम पहुँच जामंगे करके बे डगरम बेर लगाइदइँ। डगरम बेर देखके ढोला कहानलगो 'करहा मै बेर खामंगो।' करहा कही 'जा डगर मै रोज नेगथव, हिँया बेर सेर कछु ना हय। जा सब रिबिया सिबियाकी काम

हए ।' तोके खानए मन हए तव एक हँगा काटले और खातए चल । नत बे आइयएजात हबए । ढोला एक हँगा काटलै और करहा फिरसे

हरे बायँ गुडैया करहा दैय गव

और निकरगव सौवय कोष न रे

करहा फिर निकरगव सव कोष । अब रिबिया सिबिया पुग्गए । बिनके नादेखिँ । फिरके

पानको डिब्बा रिबिया खोलदै

और आगु लगादै बजारै न रे ।

डगरमे बजार लग्गव । जलेबी टुट रही, गट्टा टुट रहीँ । जलेबी देख्के ढोला कही 'करहा रुक यार जलेबी खाइलेएँ ।' करहा कही 'मए जा डगर रोज पान खानके जाथव हियाँ बजार सजार कछु ना हए । जा सब रिबिया सिबियाकी काम हए । खानए मन हय तव दुकादारी पुँछ और लैले । मिर पिठमैसे उतरए मत' करहा फिरसे

हरे बायँ गुडैया करहा दैय गव

और निकरगव सौवय कोष न रे

करहा सव कोष निकरोखिना । रिबिया सिबिया आइगइँ । बिनके नादेखिँ । बे फिरके अरे पानको डिब्बा रिविया खोलदै

और आगु बैठारदइँ बहिनिया रे ।

आगु अँटा बनिगव । अँटामे बहिनिया बैठो हए । एक घल्ला पानी धरेपरे हए । तले करहा हुँआ पुग्गव । बा कहे रहो 'जिजा बैठलेओ बैठलेओ पानी पिलेओ । हमर मडैया छाएँ जा ।' करहा ढोलासे कही- 'तय अइसे कहा कच्चे धागाके टोपी बिन्दे तव मए एक झुँड्काम सव पूरा निकारदेहव । और छाए जैहव ।' बहिनिया कही- 'हम बिनिना पैहय ।' ढोला कही 'महु ना निकार पैहौं ।' फिर करहा

हरे बायँ गुडैया करहा दैय गव

और निकरगव सौवय कोष न रे

हुँवासे करहा बायँ गुडैय दै खिना बे आइगए ।

अरे पानको डिब्बा रिबिया खोलदै

निकरगै सौवय कोषै न रे ।

करहा नदिया उखरन डटिगव । करहा बीच धारमे पुगो तले रिबिया सिबिया आइगए । झबोएँ दिना नदियामे आइके करहाक् पुँछ पकरलइँ । करहा कहेरहो 'अरे ढोला पुँछ काट र जल्दी पुँछ काट । जरसे मत काटदिए यार, पर काट तए जल्दी काट नत बे पकर लेहए । ढोला पुँछ काटी आधी पुँछ कटिगइ । रिबिया सिबिया नदियामे पुहिगइँ ।

करहा ढोलाके लैगव पिंगल देसमे । बकरेह्नीमे जाइके ढोला कही 'बिडि पिबाए देबौ बिडी ।' बे कही-

हम बिडी ना पिथए । ढोला कही 'ओहो ललो, तुमता भुकभुकान गिन्धाथव । बैरी तहीँ गिन्धाथुइहए । करहा कहीँ ललो बाके गरियाबव जा तुमर जिजा लगइगो । एक बैठी रहए लोटामे पानी लए । ढोला कही- 'ललो पानी पिबाए दे, मोके प्यास लगि हए । पानी पित पेती सब पानी ऊँगरिया हुइके तरे गिरगव । लौरिया कही- 'मर्जा बैरी पानी सब तरे खेँ रहो हए । हमर पानी खराब कर्बाथए ।' करहा कही- 'गरियाबव मत ललो । जा तुमर जिजा परैगो ।' लदबद ढोला अब ससुरार पुगो हए । खटियामे बैठो । बक बैयर निकरी करहा कही- 'देख जहे हए तिर बैयर, कितनी सुन्दर हए ?'

अइसी एक दुई रात रहो, तीन रात रहो । ढोला कही अब भोर भय मय घरे जैहव । तब मारूकी दिदी कही 'चलरी दिदी अब सामनको डोला डोलीयामए । अब मए कब अइहव कब ना । तव बे दोने दिदी बहिनीया समरके गइँ । मारु जो समरी तओ तारु चकमक दिना होबए । तारु समरय तव मारू चमक दिना होबए । करहा कही 'देख कितना सुन्दर हय ।' डोला डोलके आइँ, भोर भओ बिदाबारी भओ हए ।

ढोला मारुके लैके अपनी देस चलो गओ । रिविया सिविया पुहिगइँ । अब जे अपनीअनुसार राज खिलान लगे ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर

करमुआ और सपनो

–इन्द्र बहादुर चौधरी

एक देसमे एक राजा रहए । राजाकी दुई बैयर रहएँ । एक ब्यहाता और दुसरी ल्याहाता । राजा दोने रानीके अलग-अलग धरनके सौंची । तओ बा ब्यहाताके ताहीँ सहरमे एक मडैया बनाइदै । और कही- 'तए हुना कौवा डलैए । हुनए तेरी ताहीँ रासन, पानी पुगाइदेङ्गो ।' तओ रानी हुनए रहान चलो लगो ।

ल्यहाता रानी जतकाली रहए । कुछ दिन पिच्छु लौडा (राजकुमार) जलम दै । अब बक नाउँ धरन बेरा हुइगओ । जाकि नाउँ का धरएँ कहीके सोचन लागे । तओ रानी कही- 'जा अपनि करमसे जरमो हए । जाकि नाउँ मए करमुआ धरंगो ।' बहे दिनसे राजकुमारकी नाउँ करमुआ हुइगओ । करमुआ थोरी बडो हुइके बरधौरा हानि हइगओ रहए ।

उतए, बडी रानीक् दुई लौडा रहएँ । बिनके रानी बगियामे लखबारी करन पठेबए । बगियामे इन्द्राखानी (इन्द्र लोक) कि परिन्कि घोडा चुगनके आए करएँ । बे सब आम चुगडारएँ । बे दुई लौडा नाबचापामएँ । तओ, एकदिन करमुआ अपनि अइयासे कही, 'अइयो महु जैहओ बगियामे लखबारी करन' तओ रानी कही, 'तए निक् बडो हए । का जएहए । बे उत्ते बड्बड् हएँ तहुँता लखबारी ना करपात हएँ । तए का करैगो ' बा महु जैहओ कहीके जिद्दी करन लगो । तओ रानी 'अपनि दौवासे पुँछले और चलो जा,' कही । करमुआ दौरत अपनि दौवा ठिन् गओ और कही- 'दौवा जान, दोवा जान्, आज लखबारी करन महु जएहओं ।' राजा कही 'अरे बेटा बे उत्ते बड्ब्ड आदमी ता लखबारी नाकरपाइँ तओ तए छोटो हए कैसे करैगो ।' करमुआ जिद्दी करन लगो और कहान लगो कि 'मोके आज्ञा देबओ मए लखबार करंगो ।' राजा बाके जानके आज्ञा दैदइँ । तओ बा अपनि अइया ठिना गओ और कही, 'अइयो मए अब लखबारी करनके जाए रहोहओ । पिता जी मोके आज्ञा दैदइँहएँ ।' तओ रानी करमुआके लखबारी करन पठेदै ।

करमुआ अपनि अइयासे कही- 'अइयो मिरताहिँ खुब महिनसे मिर्चा पिसदे । बुकनी (मसला/तर्कन) बनाइदे और मोके एक चक्कु दैदे ।' अब करमुआ चक्कु और बुकनी लैके लखबारी करन बगैचाघेन चलपडो । बगियामे पुगो हए । बगियामे जितनो रुखादेखि बे सब चुगो रहएँ । सिर्फ एक रुखा रहए बामे थोरिथोरि हरो बचो रहए । आज जहे चुगन आमंगे कहीके करमुआ रुखाकि चुटियामे

चढिगओ । अब करमुआके निद लगन लगि । बाजो रहो चक्कुसे एक उँगरिया चिरके बहेमे मिर्चा बाँधलै । अब बक तीतो लगन लागो । उँगरिया पकरके 'सि..सि..सि..' कररहो हए । निदसिँध सब हराइगओ । एकघडी रहिके तीन घोडा चुगनके आइगए । और बहे रुखामे बैठगए । बे पड्पड् चुगनके डटिगए । जा जो रहो हुनासे कुदि और बीचबारी घोडामे बैठलै । और दुई घोडनकि बार पकड्लै । घोडा उडए फिरके करमुआ तरे लिआबए । फिर उडनक् करएँ फिरके तरे आइगए । अइसी करत करत घोडा थक गए । तओ बे भीँमे ठाडे हएँ । घोडा कहामए, 'हमए छोड दे' करमुआ कही- 'मए तुमए छोडनबालो नाहओं । तुम पुरो बगैचा उजाड्के फेँकदए हओ । तुमए राजा ठिना लैजांगो ।' घोडा कही- 'राजा ठिन् मत लैजाए । हमारी बहुत सजाए होबैगी । अइसे कर हम तीन हएँ । तए हमर तीन बार नोचले । हात गोडो धोइके तए जब जब हमके बुलाबैगो तओ हम हुनए आजैहएँ ।' तओ करमुआ तिनओ घोडाकि बार नोचलै । 'और अब जो हिना चुगनके आबैगे तओ मए ना छोरंगो,' करमुआ के घोडन्से कही । बे तीनओ घोडा 'हम नाआमंगे' कहीके चलेगए । एक सेतो, एक लाल और एक कारो घोडा रहएँ । करहमुआ रुखा मैसे उतरो और मस्तसे सोइगओ । अब रातभरेम सबए रुखा झकाझक हुइगए । बामे चिरैयाँ, कुइली, सब चिरैयाँ दिखान लगे ।

राजा अपनि नोकर चाकरन्के करमुआ लखबारी करपाइ कि नाकरपाइ कहीके देखन पठाइ । बे बगिया जो पुगिँ झकाझक बगिया देखिँ । चैनारो हुइगओ । नोकर चाकर करमुआके जगाइँ । और भाजगए । घर जाइके नोकर राजासे कही- 'राजा साब आज ता बगिया चकाचक हए । चिरैयाँ बास रहे हएँ । हुना ता बहुत चैनारो हुइरहो हए ।' राजाके फिर दिखासी लगो और सबके 'चलओ देखन्' कही । राजा देखन् गओ । और कही 'जा करमुआ बगियाके जरुर बचाए पडे हए ।' कुरमुआके मस्ता सोत देखी तओ राजा बाके जगाइ । और बे सब सँगए घरे आइगए ।

बा दिन अइसी करत-करत कटो । रातके सब सोइगए । राजा एक सपनो देखी । सपनोमे 'एक चाँदीक् रुखा हए । सोनेक हँगाडँगा हएँ । मखमल गौदा लग्गए हएँ । और सोनेक मुर्गा बैठके भडभडाएके रहिजात हए । पर बासत ना हए ।' अब राजाके जा सपनो सचमे दिखासी लगो । तओ राजा अपनि लौडनसे सपनाकि बात सुनाइ और कही- 'जाओ मिर सपनो ढुंड लाबओ ।' राजक् लौडा अब बा सपना ढुंडनके चले । अपनि अपनि घोडा साज लइँ । और चलपडे ढुँडन्के ।

बिनकी सब बात करमुआ सुनलै । करमुआ अपनि अइयासे कही- 'अइयो पिता जी कि सपनो ढुंडन्के महु जएहओं ।' रानी कही, 'तए का जैहए । तए निकना बडो हए । बे ता बडे हएँ । बोरा भरभरके रुपियाँ लैजाए रहे हएँ । तए का लैजाइगो ?' करमुआ कही, 'आज्ञा दे अइया, तय और कछु नाए ।' रानी करमुआके राजासे आज्ञा मागनके पठाइ । करमुआ राजा ठिना गओ और कहन लगो, 'पिता जी हमहुके आज्ञा देबओ । हमहु तुमर सपनो ढुँडन चलंगे ।' 'राजा तए छोटो आदमी कहाँ जएहए तिर ददाउदा गए हएँ' कहीके कही । करमुआ फिरके कही- 'ना ना पिता जी हमहु जांगे ।' तओ राजा बाके दुई सओ रुपिया दइ और कही, 'लेओ जाओ तओ ।' अब करमुआ राजासे 'पिताजी मिर मम्मीके रेखदेख करियो । हम जाए रहेहएँ अब कब जिन लोटंगे । पर पक्का तुमारी सपनो ढुंडके लौटंगे,' कही और करमुआ हुनासे चलो गओ । करमुआ अपनि अइया जौंडे जाइके 'मै जानलगो,' कही । बक अइया सओ रुपिया दइदइँ । अब बक ठिना तीन सओ रुपिया हुइगओ । चद्दर लै और चलपडो ।

भाजत जाए रहो हए । 'ददा रे ददा रे... असियाय लेओ' चिल्लात जाए रहो । बे गजब दूर पुग्गए । बे सुनलइँ और कही- 'जा कौन चिल्लाए रहो हए ? जाता करमुआकि बोल हानि हए ।' एक ददा आपन घोडा रप्टामए जा इतका बडो हए । हम जाके सम्हारंगे कि सपनो ढुंडेहएँ । और एक ददा कहाबए असियाए लेमएँ । आपनयक मजा होबैगी, बा खाना पकैबो, घोडन्के पानी देबैगो । आपन ढुँडत रहांगे । तओ बे असियाइ लइँ । बे सँगए लैगए ।

चल्ते चल्ते एक नदिया मिलो । नदियक् बा पार एक आमक् रुखा रहए । बामे गजब आम फरो रहए । बे घोडा हुनए पर ठर्बाइके करमुआसे कही- 'रुखामे चढ्ता, भैलु आम तोरन् । खट्टो खबासी लगि हए ।' तओ करमुआ आम तोरए ओर बिनके देबए । बे सब आम कच्चे निकरएँ और करमुआ खाबए तओ पके निकरएँ । बक ददा कही- 'अपना पको पको खात हए और हमए कच्चो देत हए ।' करमुआ पको आम तोरके देबए । बे पकडएखिना बे कच्चो हुइजाबए । आम खाइखुइके बे फिरके चलपडे । चल्ते चल्ते एक वन आइगओ । वनके बा पार एक चौबाटा आइगओ । तओ कही- 'अब कौन डगर चलएँ, कौन्छी डगरमे सपनो मिलैगो ?' बे जो रहे सहेरबारी डगर पकरलइँ । जातेजाते बजारम पुगे ।

बजारमे एक रानीकि दुकान रहए । बा दुकानमे बिष (जहेर) बाली पुटरी टलँगाए रहए । बाके कोइन तोड पाबए । एकदिन रानी कही- 'जा पुटरीके तरबारसे जौन काटैगो मए बहेसे व्यहा करंगो ।' करमुआक् ददाउदा हुनए गइभए । और बासे व्यहा करन ताहिँ रोज बा पुटरी काटन् जामए । बे सपनो ढुंडन् छोड्के हुनए

भुलगए । एकदिन करमुआ कही- 'जे रोज कहाँ जात हएँ ? आज महु जएहऔं ।' झटपट खाना पकाइ खबाइपिबाइके बे चलेगए । भाँडाकुडा धोएधाइके करमुआ गओ तलौवामे और हातगोडो धोइके घोडोकि सेतो बार निकारके कही- 'सत्सत्के परिक् घोडा हएँ कहेसे आजाओ हातहतियार लैके आएजाओ मोके तुहार चाहा हए ।' इतका कहीखिना एकघडिमे सेतो घोडा आइगओ । घोडा कही- 'बता का बात हए । ले जा लत्ता पैंधले और चल कहाँ चलैगो ।' लत्ता पैधके घोडामे बैठके चलपडो । करमुआ दुकान पुगो । अुना दुकानकि आसपास घोडकमारे अपाबएँना । बहे भीडमे करमुआ अपनि ददाउदाके ढुँडन लगो । अपनि दोने ददानके देखलइ । करमुआ अपनि घोडा ददन्बीच कचोरदइँ । बक ददा कही- 'ओहो ! जा कौन राजा आइगओ । आज जहे ब्यहाबैगो ।' करमुआ घोडाके मारी कुर्रा घोडा उडिगओ और चट्टदिना बिसबारी पुटरी काटदइँ । और उतइसे भाजपडो । रानी बाके चिन ना पाइ । तलौवामे जाइके घोडाके पठेदइँ । और अपनि लत्ता पैंधके डेरामे चलो गओ । खानुउनु पकाइडारी, तले बक ददाउदा आइगए । अब बे खानक बेठि और बत्कान लगे- 'अरे आज जिन कौन रहए । हमए अपनि घोडासे एक एक लात लगबाइ और उडाइके बिसकी पुटरी काटके चलोगओ ।' हिन हमार पिराए रहो हए । तओ करमुआ मनएमन हसि और बिनकी गोडो मिसलदइँ । और सोइगए ।

दुसरी दिन फिरके बक ददा हुनए गए । करमुआ फिर खानु पकाइ और तलौवामे गओ । लाल बार निकारके फिरके घोडाके बुलाइ और आइगओ लाल घोडा । लत्ता पैंधि और चलपडो । जाइके फिरके अपनि ददाठिन् कचोरी और दोनोके दुई दुई लात घोडासे लग्बाइ और मारी कुर्रा घोडा उडिगओ चट्टदिन पुटरी काटके गिराइदइँ । आज फिरके बाके ना पकरपाइँ । तलौवामा जाइके घोडाके पठेदइ । बा पुटरीबारी रानी 'मए चोरके ना पकरपाओ कहीके दुसरि दिन फिरके बुलाइ ।' घोडा छोडछाडके डेरा जाइके खानुउनु पकाइकै बैठो तले बक ददा आइगए । बे कही- 'जिन कौन राजा जाए करत हए । हमारी ठिन घोडा ठडबात हए । कल एक लात लगबाइ रहए । आज २/२ लात लग्बाइदै । हमर ता गजब पिरात हए ।' करमुआ कही- 'लाबओ ददा मिसलदेमओ ।' मिसलदइँ । सब सोइगए ।

करमुआ कही- 'दादा तुम कहाँ जात हओ ? चलओ सपनो ढुँडनके' बे बक् बातए ना सुनिँ और सबेरे फिरके खाना जल्दी बनाइदइँ । खाइखुइके चलेगए । तलौवामे जाइके फिरके कारो घोडा बुलाइ घोडामे बैठके चलोगओ । बा अपनी ददा जौडे गओ । बे कही- आज कारो घोडा लैके आओ हए । करमुआ घोडाके कुर्रा लगाइँ । घोडा जो तडपो भंगदिन उडिगओ । फिरके अपनी ददनके लात

लगबाइँ । अब बा पुटरीबारी रानी करमुआके मारी तीर बक जाँघम लग्गओ । पर, करमुआ भाजगओ । डेरामे आइके खानाउना पकाइके बैठगओ । तले बक ददा आइगए । उतए रानी ‘सब धनी आदमीनके ताहिँ हटकना हए कहीके खबर करि ।’ सब हुनए खान गए । तीरके निसान देखन ताहिँ जौनजौन खाइके निकरए बाके लत्ता खुल्बाए । पर कोइकेमे तीरको दाग नादेखि । काहेकि करमुआ ना गओ रहए ।

रानी सबसे पुँछन लगि और कही- ‘कौन नाआओ हए ? तओ करमुआके ददाउदा ‘हमर एक भैया नाआओ हए । बहे हए का बक ठिन् ता घोडा नैया कैसे अइहए ।’ अब नोकर चाकर करमुआकले लेन गए । जाइके कही- ‘चल आज रानी घर हटकना हए ।’ करमुआ कही- ‘मए ना जएहओ । मिर टाङमे घाउ भओ हए ।’ बे बाके जबरजस्ती लैगए । बाके खानाउना खबाइँ । बा लगडात जाबए । तओ रानी जहे हए कहीके पता पाइगओ ।

तओ बा रानी कहान लगि मए अब जहेसे ब्यहा करंगो । अब करमुआकि व्यहा हुइगओ । व्यहा करके करमुआ कही- ‘ब्यहा ता हुइगओ पर मए अभए तोके नलैजांगो । मए हबए अपनो दौवक सपनो ढुँड रहो हओ । जब सपनो पाइजैहओ तओ आइके तोके लैजांगो ।’ रानीफिर मन्जुर हुइगइ । तओ करमुआ अपनि डेरामे गओ । अब मक ददा कहान लगे कि ‘तए घोडा कहाँ पाइगओ ।’ अब ता ब्यहाफिर करलओ । मनएमन बे गुस्साइगए । बार रात बे सब सोइगए ।

दुसरि दिन सबेरे भओ । करमुआकि ददा कही- ‘जा हमए कछु नाबताइ और ब्यहा करलै । जागे छोरके भाजएँ आपन ।’ बे दोने करमुआके छोडछोडके भाजगए । करमुआ जगि ता कोइके नादेखि । करमुआ हुनए रहिगओ । अब करमुआ मनएमन सोँचि, ‘हिना सपनो मिलनबारो नाहए । जा सपनो होबैगो तओ कोइ गुरु ठिना होबैगो ।’ बक ददा सहरकि डगर गए और करमुआ जंगलकि डगर गओ । जातेजाते वनमे एक बाबाकि कुटी देखी कुटी मैसे धुँवा निकरए । दूरएसे बाबाफिर जानगओ कि कोइ आएरहो हए । बाबा तीन टिकिया (तीनकुने रोटी) पकाएरहए । आगिमे सेँकके दुई खाइलै और एक जौन आएरहो बहे खैहए कहीके टिकेदै । और अपना खाइखुइके सुतरीमे लेटर हो । बाह्रा वर्षक निद सोइगओ । तले अरमुआ पुग्गओ । कुटिमे देखि तओ बाबा ता सोएरहो हए । एक टिकिया धरो

रहए बहे खाइलइ । और पानी पिके बहु हुनए सोइगओ । करमुआ १२ वर्षले हुनए रहिगओ । गुरुकि सेवा करी ।

बाह्रा वर्षपिच्छु अब बाबा जगो । गुरु कहान लगो, 'ओहो बच्चा तुम खुब सेवा करे हओ । जो मांगना हए सो मांगलेओ ।' तओ करमुआ कही- 'मए जो मागंगो बा पाए ना तओ का हुइहए ।' गुरु जो मागैगे सो मिलेगा कहीके मागन कही । तओ करमुआ कही- 'मए अपनो पिता जी कि सपनो मागरहो हओ ।' गुरु कैसा सपनो हए बतओ गुरु पुँछि । करमुआ कही, 'एक चाँदीक् रुखा हए । और बामे सोनेक हँगाडँगा हएँ । मखमल गौडा लागगए हएँ । और सोनक् मुर्गा बैठके भडभडाइके रहिजात हए, और बाङ्ग नादेत हए ।' तओ बाबाजी कही- 'जा सपनो ता मेरे पास ना हए । और कछु तए मंगतो ता मए देपातो । जा चीज ना हए । मोसे पहुँचबारे एक गुरु आगे हएँ । उसको पास सायद होबए ।' तओ करमुआ खाना खाइके दुसरो गुरु ठिना गओ ।

करमुआ आगे फिरके एक कुटि देखलइ । बहे कुटिमे चलोगओ । बहु बाबाजी खाना खाइके १२ वर्षके ताहिँ सोइगओ । करमुओ बाकेफिर १२ वर्षले सेवा करी । बाबाजी जगो और करमुआकि सेवा देखके खुसी हुइगओ । बाबाजी कही- 'बच्चा तए मेरो इतनो सेवा करो तोके जो मांगना हए मांगले ।' करमुआ अपनि पिता सपनो मंगइया हओ कहीके बताइ । बाबाजी बताओ का हए कहीके कही । तओ करमुआ कही- 'एक चाँदीक् रुखा हए । और बामे सोनेक् हँगाडँगा हएँ । मखमल गौडा लागगए हएँ । और सोनक मुर्गा बैठके भड्भडाइके रहिजात हए, और बाङ्ग नादेत हए ।' बाबाजी जा मिरपास ना हए कहीके बताइ । बाके एक और गुरु हए कहीके पठेदइ । तओ करमुआ गओ ।

करमुआ फिरके एक कुटिमे पुग्गओ । बाबाजी कोइआइरहो कहीके जानगओ और दुई टिकिया अपना खाइ और एक धरदइ । और अपना खाइखुइके सोइगओ । करमुआ पुग्गओ । तले बाबाजी सोइगओ रहए । फिरके बा हुना सेवा करन लगो । १२ वर्षपिच्छु बाबाजी जागो । फिरके करमुआ अपनि दौवाकि सपनो बताइ और मांगी । बाबाजी कही, 'जा सपनो मिलैगो जरुर तोके पर कर्रो हए ।' करमआ कही, 'बताबओ गुरु बताबओ ।' बाबाजी एक कुइँया देखाइके कही, 'बा कुइँयामे दुई/तीन लौडिया हएँ । बेही हियाँ एक खेल करिहोङगे ।' गुरु कही, 'एक

ठिन ७ ददाभैया लोहारा हएँ । बे चमगादर बनाँत हएँ । बासे बन्बा ला ।' करमुआ गओ और पुँछत-पुँछत बिनके घर पुग्गओ । बडो बालो लोहरा हसिया बनानके बैठो रहए । तओ करमुआ कही, 'चमगादर कौन बनात हए ?' बा मए बनात हओ कहीके बताई । करमुआ कही-'मिर ताहि चमगादर बनाए दे ।' लोहरा एकघडिमे चमगादर बनाइके दैदइ । करमुआ बा चमगादर लैके गुरु ठिन आओ । कही, 'गुरु कहाँ धरओ ?' बाबाजी कही, 'जा बा कुइयाँके किनारे धरदिए ।' बा जाइके कुइँया किनार धरदै । अब डानो साँप बनके निकरो । बाकि मनि पजररहो हए । बहे चमगादर जौडे पुगोखिना बा सात खन्ड हुइओ । और नाग मरिगओ । तओ बाबाजी कही, 'जा अब तए बा कुइँया भितर चलो जा और बे लौडियसे बात बतइए ।' करमुआ मरो भओ साँपकी पुँछ काटके गोझामे धरके गओ ।

बे तीनओ लौडिया अगल अगल रहएँ । लौडिया करमुआके देख्के कही, 'पापी हिना कहाँ आइगओ ? तए कौन हए ? मिर पिता आबैगो तओ तोके खाइजाइगो । भाज तए भाज ।' करमुआ कही, 'नाए अब बचानबारो तहिँ हए । करमुओ बाके पुँछ निकारके दिखाइदइ ।' जा ता मिर दौवाके मारके आओ हए लौडिया कही, 'अब हमए कौन पालैगो । अब जहेक लोगा करनपडो ।' अब बे उडनखटोला लइँ और एक पिटरिया बर्गत लैलइँ । अब बे मझली दिदी घर गए । हुना पुग्गए । बक दिदी कही- 'आज ता तुम दुई जनि हओ ।' तओ बा लौडिया कही, 'जा हमर दौवाके माड्डारी अब हमए कौन पालैगो ? चलएँ आपन जहेकसँग ।' अब बे हुनासे उडनखटोलामे बैठके बडी दिदीक् जोडे गए । बडी दिदी कही, 'आज ता तुम तीन जनि आए हओ ।' बे कही, 'जा ता हमर दौवाके माडडारी अब हमए पालैगो कौन ? अब जहेकसँग चलएँ । जहे पालैगो ।' तओ करमुआ कही- 'मए लएता जैहओ ।' अब बे तीन मैसे एक लइलइँ 'बर्गत पिटरिया' एक लइलइँ, 'बर्गत टमेनिया (बटुली)' और बडी ठिना गइ तओ अब का लेमए कहीके कही । बे हुनासे एक 'बर्गत टंका (ट्यांकी)' लइलइँ । अब करमुआ कही, 'ठीक हए तुम जएहओ मै लैजांगो पर मिर दौवा कि सपनो मए ढुँडनके आओ हओ । बा सपनो ढुँडन हए । जा खेल कौन करो हए । तुम करे कि कौन करो ?' तओ बे तीनओ जनि कही- 'हाँ, हम बा तलौवा किनारै करे रहएँ । बहेबेरा तीर दौवाको हंसा आओ हुइहऐ तओ देखि हुइहएँ ।'

तीनओ बाबाजी करमुआसे अगर तए सपनो पाबैगो तओ हिना मोहुके दिखाजइए कहीके कही रहएँ । तओ करमुओ और बे तीनओ लौडिया बाबाठिन गए । तओ बाबाजी कही, 'अब सपनो दिखाइदे ।' करमुआ बडीके सराकदिन मारी तओ बा चाँदीक् रुखा दिखानो । मझलीके मारी तओ सोनेक हँगाडँगा हुइगए । और छोटिके मारी मखमल गौडा हुइगए । और बा पुँछके मारी सोनेक मुर्गा बनिगओ । गुरु कही 'सपनो ठीक हए' । फिरके करमुआ सबके मारी सपनो बिगडगओ । रात हुइगओ बे अब सोइगए । भोर भओ गुरु कहान लगो, 'भैया रे जा सपनो हमए दैजा । और तए जा सैली और सौँटा लैजा । जासे तए जो मागइगो बहे मिलैगो ।' तओ करमुआ बा सपनो दैदइ ।

अब करमुआ सौटा लैके चलपडो । जाते डगरम जाइके सोचन लगो, 'सपनो ता हुनए रहिगओ । जा सौँटासे मए का करंगो ।' तओ सैलीसे कही-

'सैली रे सैली तुम गुरुके हओ कि मेरो हओ ?' तओ सैली और सौँटा कही, 'अब गुरुक थोनि हँए । अब ता हम तेरे हुइगए । अब तए जो कहाइगो बहे काम करदेहएँ ।' तओ करमुआ कही, 'जाओ तुम बे तीन बैयरनके लिअइयो और गुरुके बाँधके चटकैयो ।' तओ सैली और सौँटा कही, 'हम हबई लिआत ।' सैली गइ सर्र दिना खुँटामा बाबाजीके बाँध दइँ । सौँटा गओ चराचर मारए । बाबाजी कही- 'तुम ता मेरो सौँटा और सैली हओ । मोके कहो मारत हओ ।' बे 'हम ता अब करमुआकि हएँ' कहीँ । तओ बे सपनो लिआइँ । अब करमुआ ठिना सैली, सौँटा और बे तीनओ बैयर आइगए ।

अब बे दुसरी बाबाजी ठिना गए । बा गुरु कही, 'सपनो लिआए ?' करमुआ लिआओ कहीके बताइ । गुरु कही 'हमके फिर दिखाइजा । तओ करमुआ बडबालीके मारी डण्डा चाँदीक् रुखा हुइगओ । मझलीके मारी डण्डा तओ सोनेक हँगाडँगा हुइगओ और छोटिक मारी मखमल गौडा लग्गओ । और पुँछके मारी तओ सोनेक मुर्गा बनिगओ । बाबाजी खुसी हुइगओ । अब खानु खाइखुइके सोइगए । अब भोरभओ गुरु कहान लगो, 'जा सपनो हमए दैजा और जा गुडरिया लैजा ।' करमुआ कही, 'जक किमत का हए ? जा मिर काम काम लगैगो ?' गुरु कही, 'जा गुडरियाके तए जितना हलाबैगो उतना असर्फी, मोती, चाँदीक् रुपिया गिरंगे ।' तओ करमुआ 'ठीक हए,' कहीके गुडरिया और सैली सौँटा लैके चलोगओ । बीच डगरमे पुग्गके कहान लगो 'सपनो ता उतइ रहिगओ मए ता बहे लेनक आओ

रहओ बहे रहिगए' । फिरके सैली सौंटासे कही, 'तुम मेरो हओ कि गुरुकि हओ,' बे हम तेरे हएँ कही । करमुआ कही 'तओ जा सपनो लिआबओ ।' सैली सौंटा गए । गुरुको बाँधे चराचर लगामएँ । गुरु कही, 'मारओ मत, काहे मार रहे हओ ।' बे कही, 'सपनो दे ना देहओ तओ हम तोके मारिदरेहएँ ।' तओ बा सपनो दैदइ । अब बे फिरके चलपडे । अब दुसरो गुरु ठिना पुगो । फिरके उइसी बात भाओ । हुनासेफिर सपनो लैके चलेगए ।

अब बे हुनासे चलपडे । जातेजाते एक बगियामे पुगे । बगियामे हुना बक ददा फिरन डटे रहएँ । बे करमुआके तीन बैयर लैके आत देखिँ । और कही, 'जा ता तीन बैयर लिआइ और एक इतए हए । जक ता ४ बैयर हुइगए । अब अइसे करएँ । जब बैयर छिनाइके आपन दुई/दुई बैयर लैलेमएँ ।' तओ भैयाके कुइँयामे पानी भरन पठेइके बहेमे धकेलनकि सोचिँ । और धकेल्दइँ । और बे भाजगए । तओ बक तिनओ बैयर करमुआ मरिगओ कहीके छोंड दइँ । और उडन खटोलामे बैठके कही, 'जहाँ हमर सास हएँ हुनए पुगाए दे ।' तओ बे अपनि सास ठिना पुग्गए । और काम करनके सघान लगे ।

एकदिन लाखा बन्जारा आओ और बगियामो डेरा धरलै । बा गैयाँ चुगाबए । बक एक लौडिया फिर रहए । तओ बा लौडिया कुइँयामे पानी भरके गओ । तओ करमुआके देखि और बाल्टी पकरके निकारदइ । तओ बा अपनि घरे चलोगओ । घरे जाइके देखि तीनअओ बैयर हएँ । एक चौथी बैयरफिर गए । तओ करमुआ अपनि दौवा ठिना गओ और कही, 'राजा साहब मै तुमारो सपना लिआओ हओ । कल ढुँडरु पिटाएबओ और दौसमे मए सपनो दिखांगो ।' दुसरो दिन एक बंगरामे पुरो गाउँभरेक आदमी सपनो देखन आइगए । अब बडी बैयरके सराकदिना मारी चाँदीक् रुखा हुइगओ, मझलिक् मारी सोनेक हँगाडँगा हुइगए ओर छोटिक मारी मखमलकी गौडा हुइगओ । और बा पुँछमे मारी तओ सोनेक मुर्गा हुइगओ । भडभडाइके रहिगओ ।

तओ करमुआ अपनि दौवासे कही, 'पिता जी तुमारो सपनो जहे हए कि नाए ?' बक दौवा कही, 'ठीक हए जहे हए मिर सपनो ।' फिरके करमुआ कही, 'लेओ जा गुदरिया लैजाओ और हलाबओ ।' बे हलान् लगे । हलात गए चाँदीक् रुपिया निकर जाबए । पुरो बंगरा भरिगओ । तओ करमुआ सबके खानु, लड्डु खानके कही । सबके खाइखुइको घर गए ।
अब राजा संजीखिन घर आइके बा रुपिया सबके बाँट दइँ । बहे दिनसे करमुआ राजा बनगओ ओर राजपात चलान लगो । और सब नोकार चाकर हुइगए ।
(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

जिमा लडैती

–इन्द्र बहादुर चौधरी

एक देसमे एक राजा रहए। बाके एक लौडा और एक लौडिया रहएँ। लौडाकि ब्याहा हुइगओ और लौडियाकि डलयडल्बामे ब्याहा हुइगओ। लौडियक नाउँ रहए, जीभा। जीभा धिरे-धिरे बडि हुइगइ। एक दिन कुटना पिसना भइ। जीभाकि भौजी कही 'चुन निभटगओ हए। आज चुन पिसाए लामाएँ। तओ फिर पानी लेन चलंगे।' नन्दभौजी चकियामे बैठि हएँ।

भौजी : 'हरे कोदा मकौनाक पिसनो और फलकत आमए चुन जी,

हरे कोदो मकौनाक पिसनो और फलकत आमए चुन जी'

जीभा : हरे, कोदा मए हुम्को जब पिसनो भौजी फलकत आबए पिसनाए जी

हरे, उरदा मए हुम्को जब पिसनो भौजी फलकत आबए पिसानाए जी,

जीभा : हरे चुन उठाइ भौजी कुठलामे धरि और पनियाकि सुरता लगाबए

हरे चुन उठाइ भौजी कुठलामे धरि और पनियाकि सुरता लगाबए जी।

चुन पिसपासके नन्दभौजी दोने चुन उठाएके धरिँ। और बे दोने पानी भरनक् समह्रीँ। अब बे दोने पानी भरनके गए।

हरे नओ कमरकि जा इनलि और दस मनकि जा गागरी जी

हरे नओ कमरकि जा इनलि और दस मनकि जा गागरी जी

नन्दभौजी पानी भरनके जाए रहे हएँ। बायँ डगरमे कौवा बासी और दायँ डगरमे एक सेरा बिनकी डगर काट दै।

हरे बाय डगरिया काग जो बोली और दायँ डगर रि स्याल जी,

या त नन्द घैल रि फुटए या त बढंगे रारए जी

बायँ डगरमे कौवा जो बोली और दायँ डगर सेरा डगर काट दै। तओ भौजी नन्दसे कही, 'जे हमरी डगर काट दइँ। अब नन्द या त घैला फुटएगो या त तगार बढैगो जरुर'। तओ बे पानी भरन चल्ते गए। भौजी एक घल्ला भरए। तओ जीभा एकए हात धोबए खिना सब पानी निभट जाबए। दुसरि भरए बहु एकए हात धोबए निभट जाबए। फिरके भरए ता एकए टाङ धोबए एक घल्ला पानी निभटजाबए। तओ जीभाकि भौजी कही-

हरे तुमरि ता ननदी और ख्याल रचो और घरमे ता रोमए झारोका बालक जी,

कितरि ननदि कुलकि उतारि गौनोकि सुदहिए नाय जी ।

हरे नैया डलैयास ब्याहु कारो और गौनकि सुदनाही जी

हरे जीभा त भइहए जहानतनी और भाजक जरिवाना जाएजी ।

अइसी करत करत ३ दफ्फे पानी निकारदारी अब चौथिम चलि । अब बे पानी भरके घरे आइगइँ । घल्ला, उडला लैके ।

'बिचरी जा नेगए जा बिचरी जा दौरए बिचरी तितुरा जैसी चालए जी

बिचरी जा नेगए जा बिचरी जा दौरए बिचरी तितुरा जैसी चालए जी

जीभा पानी भरके आतपेती घरि दौरए और घरि नेगए । तितुरा हानी चरहए और मटकत नेगए । अब बे पानी भर्के घरमे आइगए और गगरी सगरी उतारीँ ।

गगरी उतारी ता गगसारमए और इडुला फेकि सान द्वारए जी

गगरी उतार ता गगसारमए और इडुला फेकि सान द्वारए जी

सिरियना सिरियना जीभा जो चढी गइँ जाए पुगि हए चित्रा अँटारी जी'

तओ जीभा जो रही पानीकी गगरी उतारी और पानी धरी और इँडुला (बेर्रा) एकघेन खेँप दै । बाकी १० मनकी गगरी रहए और ८ कमरकी इडुला रहए । जीभाकि भौजी खिजबात लाई तओ जीभा घर आइके गगरी उगरी धर्के गुस्साके मारे चलि गइ चित्रा अँटारीमे ।

अँटारीमे टुटी खटिया रहए । बहेमे पडरही बा । सन्जी हुइगओ । इतए घरमे जीभाकी अइया 'जीभा कहाँ गइ कहाँ गइँ' कर्के ढुँडए । खानु उनु पकगओ जीभाकि पतए ना हए ।

हरे आस रे ढुँडो परोस रे ढुँडो और जीभाको पतुहए नाही जी

हरे आस रे ढुँडो परोस रे ढुँडो और जीभाको पतुहए नाही जी

बक अइए आसपरोस सबघेन ढुँडदारी बाकि पतए ना चलरहो हए । बक अइया अपनि नोकर टिकुवाके ढुँरन पनारी । कही 'टिकुवा भइया रे जा ता जीभाक ढुँडके ला ।' टिकुवा गओ ढुँडनके । ढुँरत ढुँरत चित्रा अँटारीमे गओ ।

सिरियना सिरियाना टिकुवा जो चढिगइ धरीहए भमरबीच पाउ जी

टिकुवा कही, 'उठाओ बेटी घर चलओ' । खानु खानके चलओ ।' जीभा कही 'हम ना खांगे' । जीभा घरे ना आइ । टिकुवा लौट गओ । घर जाइके जीभाकी अइयासे कही,

'हरे टुटी रे खटिया बान पुरानी और जीभा री सोइगइ समसम निनदइ जी'

तुमर लौडिया चित्रा अँटारीमे टुटी खटियामे पडि हए ।' तओ बक अइया (रानी) गइ हए । जाइके कही, 'बिटिया उठओ । भोजन लेओ ।'

हरे बासी रि भोजन बे बिलकएँ और दूध कटोरा तयारए जी

जीभा कही- 'हम ना जियंगे । ना खांगे ।' काहे गुस्सात हए कहीके रानी कही, 'तोके तेरि कौन का कही बता ।' जीभा कही, 'मोके कोइ कछु ना कहो । मिर भौजी मोके ताना मारी । कही , 'या त ननदी तुम कुलकी उतारी हओ तही तुमके गौनक कोइ ना सुदनैया । या त तुमर दौवा फट नंगा (गरिब) हए । तबही ता तुमके कोइ बुझ्ा ना लेतहए ।' रानी जीभाके घर ना लैजाइ पाइ ।

तओ राजा गओ हए । राज कही, 'चलओ बिटिया घर चअलो । हम दमदाके चिठिया लिखंगे ।' राजा बाके फुसलाइ फुसलुइके लैचलो गओ । तओ जीभा अपनी साससुरा, जेठ जिठनीयाके और अपनी लोगाके (स्वामी) के अगर लेन नाआबए तओ तलाख कहीके खबर लिखि ।

'हरे सास ससुरके पाएँ लागनु, और जेठ जेठननियाके दुअरे सलामए जी,

स्वामीके सत्त तलाकए जी'

सास ससुरके पाएँ लागनु और जेठ जेठननियाके दुअरे सलामए जी,

स्वामीके सत्त तलाकए जी'

जीभा इत्तो खबर लिखि तओ राजा अपनि नोकर टिकुवाके बुलाइ और कही- 'जारे टिकुवा दम्दाकि घर जा चिठी लैजा ।' टिकुवा कही 'ठीक हए मै लैजएहओ । मए ता गरिब आदमी हओ । मोके ता कछुकछा देन परैगो ।' तओ टिकुवा राजासे कही,

'हरे आठ पुत नओ नातिया बेटि सिधो लगत माना रोजए जी,

चार पसेरी जा दार लगतहए, लगती अढैना नुनए जी'

'हरे आठ पुत नओ नातिया बेटी सिधो लगत माना रोजए जी,

चार पसेरी जा दार लगत हए, लगती अढैना नुनए जी '

मेरे आठ पुत, नौ नतिया हएँ, और एक मन रोज सिधो लगत हए, चार पसेरी दार और अढैयाभर नुन लगत हए ।' तओ राजा देनके तयार हुइगओ । कही, 'ठीक हए इतका देन का हए । मए देङ्गो । तय चिठी ता लैजा ।'

टिकुवा राजासे जोजो चिज मागि बा सब पाइगओ । और घर जाइके पुरी पकाबए खाबए आरामसे परोरहाबए । छक्कल उडाबए । चिठीउठी देनके पतए नाए । फिरके जीभा कही, 'जा गओ कि ना ?' टिकुवा त इतए सेल पकाबए खाबए । टिकुवा अपनी बैयरसे कही 'कोइ मोके ढुडन आबए तओ बा चिठी देन गऔहए कहीके कहीदियो । और मए जा कुठियामे डुकजामंगो ।'

बहेबेरा जीभाके आत देखि । और अपना कुठियामे घुसिगओ । जीभा कही, 'कक्की कक्की टिकुवा कक्कु कहाँ गए ?' टिकवाकि बैयर कही, 'पता ना बे ता कबके तुमरि चिठी देनके गए हएँ ।' जीभा कही 'अच्छा ठीक हए ।' टिकुवा डरके मारे कुटिया हलाएडारी । कुठिया हालए । जीभा कही, 'कक्की कक्की जा कुठिया काहे हालत ?' कक्की कही, 'कोदो मकौना हएँ । जे फुलेहएँ तही कुठिया हाल रही हए । चटकन ताहिँ ।' जीभा जो रही बा कुठया धकेल्दै । कठिया गइ फुट भितरसे निकरो टिकुवा । तओ जीभा कही, 'जहे हए कोदो मकौना, हएँ ।' तओ टिकुवा कही, 'ललो तए मोके चिठी नादओ हए तओ मए कैसे चिठी पुगानके जामओ । तय दौवएनाए ।' तओ फिर्के जीभा चिठी लिखि ।

'हरे बाँय उँगरियाकि कलम बनाएदइ और रोसनकी की मसी डोरए जी'

'हरे सास ससुरके पाएँ लागनु, और जेठ जेठननियाके दुअरे सलामए जी,

स्वामीके सत्त तलाकए जी'

चिठि लिखके जीभा कही, 'लेओ लैके जाबओ ।' टिकुवा फिरके कही, 'जान ताहिँ रुयियाँ दे ललो ।' जीभा बाके चाँदीक् सओ रुपिया दइदई । अब टिकुवा पाने चलपडो ।

जाते-जाते टिकुवा जडाजडौली पुगो हए । जडाजडौलीमे उवदेव और उभनाक् दौवनकी बीचमे लडाइँ रहए । बे 'दखाभैया' रहएँ । बा डगर ना बे जामए और ना बे आमएँ । और डगर बहे रहए । जडाजडौलीक् राजा टिकुवा पानेकी मुमा रहए । टिकुवा भुखानो रहए । राजाक् घर पुग्के टिकुवा कही, 'अब मुमा घर जाएके खानु खएहओ ।' बक मुमा कही, 'कैसो खानु खाबएगे हो भनेजा ? चटपट खइहए कि खटपट खइहए ।' टिकुवा कही, 'मुमा जा चटपट और खटपट कैसो होत हए मए ना जानत हओं ।' राजा कही, 'खटपट खाबएगो तओ मए पुरी, मिसौला खबांगो । और चटपट खाबैगो तओ रोटी पकाइके नुन धरदेहओ । जल्दी खा और

भाज जा । तओ, टिकुवा कही, 'म चटपट नाए मुमा खटपट खामंगो ।' बक मुमा खटपट खबाइ । टिकुवा खाइखुइके सिको तओ राजा पुछिँ, 'तए कहाँ जाए रहो हए ।' टिकुवा कही, 'उवदेव और उभना ठिना जाए रहो हओ मए ।' जडाजडौलीक् राजा कहान लगो, 'ले तए जा सओ रुपिया लैजा । बराइत तए जहे डगर अइए । अबखिर लौटक आबैगो तओ मए तोके गैयाँ दान करंगो ।' टिकुवा कही, 'मुमा जा ता मिर हातम् हए । मए लांगो ।' अब टिकुवा चलो हए ।

चल्तेचल्ते फिर उतए जाइके कुमडा (घैला बनाँत हएँ) जौडे पुगो । कुमडा घैला बनामए और बालक डगरम खेलएँ । टिकुवा कही, 'रे भइया रे इतका कुचरवा लिआबओ । तुमर अइया दौआ नादेहएँ ।' बालका कहीँ, 'काहे ना देहएँ ।' बालका अपनि अइया ठिना गओ और कही, 'अम्मा कुचरवा दैदे । फुटिफुटाइ दैदे ।' बक अइया कही- 'अच्छि लैजा आपन ता कुमार हएँ ।' टिकुवा कही- 'लेओ भइया रे अपनि आँखी मुँदओ ।' एक काना रहए और एक अच्छो । अपनि एक आँखी बिगरा कर्लै । टिकवा जो रहो सओ रुपिया निकारी कुचरावामे डारी और खोदाखादके जमिनमे अँदे दइ । बे बालका कहान लगे, 'का अँदेदओ ?' टिकुवा कही, 'भइया जामे कोदो मकौना हए ।' अब टिकुवा हुँआसे चलोगओ । काना लौडा अपनि अइया दौवाठिन गओ और कहान लगो - 'अइया रि बा एक आदमी रहए का चाँदी अँदे गओ हए । कुचरवा (मलैया) मे और कही कोदो मकौना हए ।' बक ठाउँमे कोदो मकौदा दारके अँदेआबओ और बाके निकारके लिआन कही । बालका गओ और रुपिया निकारलाइँ और कोदो मकौना दारियाए ।

टिकुवा जातेजाते उभना और उवदेवकि घर पुगो हए । हुना कोइ बर्धौना लौडा हएँ । कोइ बकरेह्नी मिलो । टिकुवा बिनसे पुँछि, 'उभदेवकि घर कहाँ हए ?' बे कही-

हरै एकत उवदेव और गाउँ बसो और एकत हए रि रजबाड जी

गाउँबाले कही, 'कौन्छो उवदेव पुँछ रहो हए ? एक राजा उवदेव हए और गाउँमे हए ?' टिकुवा कही, 'मोके राजा उवदेव चाहिए ।' बे कहान लगे राजा ता घरे मिलैगो नाए । बा 'अट्टी न गट्टी' मे मिलैगो । अब टिकुवा राजाकी घरमे पुगो । हुना उभना मिलिगओ । टिकुवा उभनाके चिठी दइ । तओ उभना कही- 'जा ता मेरी लहुरी कि चिठी हए । अब भइ आफत ।' बा कहान लगो भैयाके देहओ तओ भैया मनहीयए ना । जा ता बहुट मुस्किल हए । कैसे करओ । उभना जो रहो चिठी चराचर फारदइ । टिकुवा सब समेटलै । फिर गोझामे धरलै । उभना पहुना हए कहीके टिकुवाके दारु पिवानके लैगओ । टिकुवा कही 'मए दारु न पित हओ ।' उभना पहुना आदमी ना पिबैगो । पीले कहीके जबरजस्ती पिबान लगो ।

हरे देती रहओ जब नारी पिअए अब पित घटाकेघटाकए जी अब टिकुवा पाने टिल्ल नसा हुइगओ ।

दुसरि दिन टिकुवा घर जानलगो । जातेजाते नदिया किनारे पुगो । हुनए पर उवदेव भैसियाके हँदबान डटो रहए । और हडबाएहँ डबुइके कँधामे धरके डिँनम धरे करए । तले टिकुवा पुग्गओ । भैसिया भडभड भाँजि । उवदेव कही, 'मेरि सब भैसियके भडकाए दओ । इतनो अच्छेसे हँदबाए रहओ । कौन हए तए ।' तओ बा चिठीकि टुक्रा उवदेवके दिखाइ । जोडजाडके पढी । और कही, 'जा ता मेरी जीभा की चिठी हए । जाता मोके कसम दैदइ हए । तलाख कि कसम । अब लेनके जानए पडो ।' उवदेव टिकुवासे कही, 'भुखो हए कि अघानो हए ।' टिकुवा कही, 'कौन दैदेहए खानके ।' उवदेव कही, 'अब मिर भैसियाकी दूध तए खइए ।' अब पड्डा दूध पिन लगे तओ झाक (पिँज) निकरए । टिकुवा बहे झाक पिलेबए । उवदेवदेखि तओ कही जाता झाक खाए रहो दूधउध ना खाएरहो । तओ उवदेव गओ और दूध खबाइ ।

उवदेव टिकुवाके घरे लैगओ । पहिले बे दोने ददा भैया (उभना और उवदेव) एकए थरियामे खात रहएँ । अब सन्जीके भैँसिया सारमे बाँधबुँधके खानके बैठे । अब खानु कोइ ना खबैया । खानु कोइ नाखाइँ । उवदेव कही, 'ददा रे मए ता गौनो सुध लेन जैहओ ।' उभना कही, 'भैया रे तए मत जाबए । तेरी दुसरी बैयर करदेहएँ ।' उवदेव कही- 'ना मए ता जएहओ ।' तओ बा कहानलागे -

हरे ददा तए साजन करलओ ब्याहु और तेरी त आबए और बातए जी

अरे ददा तएता साजम बेहा करलओ और तेरी ता और बात आइरहो हए । और हुआ मेरि रुकी पडी हए । बक तए खबर नाए । उवदेव कहान लगो, 'ददा मए ता जीभाके लेन जएहओ ।' उभना कहाबए, 'तए मत जाबए ।' उवदेव मानए ना । उभना कहान लगो -

हरे आधो त बटेहओ रे भौजी मए आधो रे आधो और रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

और आधो त बटेहओ रे भैसिया मै आधी रे आधी और रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

हरे मए मए घोडीरे बटेहओ चाहे रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

हरे गङनपिताकी बन्धुक री बाँटओ आधो रे आधो चाहे रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

हरे गङनपिताकी बिस्तर बटेहओ आधो रे आधो रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

हरे गङनपिताकी तरबार रे बटेहओ आधो रे आधो रुन्ड लिए चाहे मुन्डए जी

तओ उभनाकि भौजी कहान लगि- 'दैदेओ तओ लापैहएँ तओ ठीक हए नालापैहएँ तओ ठीक हए। अब देनता देनए पडो।' तओ उवदेव कही- लैजा तओ अब का कहामओ।' तओ बा बिचारो उडन बछेरी लइ, सिल्लुसाँपको बिस्तर लइ, सबचीज लैलइ।

अब बक भौजी कहान लगि, 'देखओ दिउरा अइसो हए। जइयो जब। पर मए नचनी पैधंगो मए और नचनी हुइके सात चीज छिराइदियो। तओ मए जानंगो कि हाँ मिर दिउरा बेहाइके लांगे जीभाके' उवदेव अपनि भौजीसे ठीक हए कही। 'मए हबए छिराएदेगो पैधओ नथुनी। तओ बा नथुनी पैधओ। तओ हुन सातओ चीज छिरिगइँ। हाँ अब मेरे दिउरा बेहाइके जरुर लांगे कहीके बक भौजी कही। बक भौजी कही- 'दिउरा देखओ जा कुइयाँमे मिर पिछौडा फैलाएरहो हओ। तुम जाक चारो कोनो दाबदिए तओ ता मए जानंगो कि तुम दुउरनियाके लिआबैगे।' उवदेव अपनि भौजीसे फैलानके कही। भौजी फैलाइदइ। अब बा घुडियाके चौतर्फा दौराइ हए। उडनबारी घुडिया रहए। चारओ कोना बा दाबदइ। तओ बक भौजी कही- हाँ दिउरा तुम दुउरनियाके लिआबैगे। अइसी करके तमान परीक्षा लइ। उवदेव कही चहुँ जितनो खतरा होबए डगरमे अब मए जीभाके लेन जैहओ। नत मेरी तलाख हुइजाबैगो। जाना जरुरी हए।

अब बे चलपडे। टिकुवा पाने आगुआगु जाएरहो हए। पिछुपिछु उभना जाए रहो हए। अब चौबाटा पुगे। उवदेव कही, 'अइसे चलएँ रे अइसे।' घोडनबारे कही, 'अइसे कहाँ जैहएँ। उवदेव बडे हग्गा। जा हएकि बा हए। कौन तमए जानैगो। पट्टी बाँधलियो ससुर। तओ ता नाचिन पैहए।' उवदेव कही ठीक हए। टिकुवा पाने लैगओ जडाजडौली हुइके। कही, 'तुम बहुत डरात हओ। तुमके सब चिन्हत हएँ तओ तुम सब पट्टी बाँधलेबओ, आँखीमे।' सब पट्टी बाँधलैं। टिकुवा लैजाइके राजए घर ठडबाइदइ। और कही, 'मुमा मए ता लिआओ।' अब बे तरबारमे सान चढाएरहे हएँ। काटन ताहीँ। घुडिया ठाडी हए। तओ घुडिया कही-

हरे अइसो रे उवदेव तए भोँदुवा और पट्टी खोल तुम देखओ जी

हरे अइसो रे उवदेव तए भोँदुवा और पट्टी खोल तुम देखओ जी

उडन घुडिया कही, 'अरे तुम अइसो भोँदु हओ। पट्टी खोलक ता देखओ कहाँ तुम ठाडे हओ। हिना तरबारमे सान चढरहीँ हएँ। तुमरी आइगइ हए अब।' पट्टी खोलक देखिँ तओ राजक घरमे ठाडे पडे हएँ। तओ घुडिया कहान लगि कि अब तुम का देर लगाए रहेहओ। एक कुर्रा लगाबओ। मए अभइ भाजत। अब उवदेव

जो मारी कुर्रा घुडिया भर्र दिन उडिगओ । अब जे देखरहे हएँ । जडाजडौलीकी राजा देखतए देखत रहिगओ ।

हरे मनै होतो ता मार दिखइतो और पवनके मारो ना जाबए जी

उवदेव बहुत दूर जाएके घुडिया बैठाइ । तओ टिकुवा फिर पुगो । और कही, 'ओहो उवदेव इतनो हग्गा तुम । देखओ त तुम डरके मारे भाजपडे । हम लड्ते-लड्ते देखओ ता सब फुट गए ।' अब आगुआगु टिकुवा पाने जाएरहो हए और पिछुपिछु उवदेव जाएरहो । बे जीभाकी घरमे पुगे ।

अब जीभाके निद ना परए, कब कक्कु आएरहो कहीके । कक्कु ता आइगओ । उवदेव थोरी पिछु रहए । जीभा जा मोहटो झाँकए कहुँ बा मोहोटो झाँकए । कि कब आबैगो कब आबैगो । जीभाकी भौजी कही- 'आज ता जीभा तुम गजबए झाँकत हओ, काहे ।' तले तले उवदेव पुग्गओ ।

राजा पलङ गद्दा बिछाबए । बिनके बैठन ताहीँ । बक साला बैठन ताहीँ मुढो डार रहेहएँ । अब सन्झि हुइगओ । खानापिना भओ । अपनि दम्दाके दूध, दही पूरा दैके पहुना मान करिँ । खातपेति उवदेवके अपनि ददाकि याद आइगओ । बा मनएमन सोचिँ, 'हम ददा भैया एकएमे खात रहएँ । आज मए इकल्लो खाए रहो हओ ।' रोन लगो । तओ बक सास कहान लगि, 'ओहो दम्दा खाइलेबओ । जल्मक तुम भैसेरा हओ । कब दूध पाए, कब घिउ पाए, कब दही पाए खानके । भैसोरा आदमी हओ ।' तओ उवदेव कही, 'अइसो भोज ता हम कितनो खामएँ । और पवन पुहात हएँ । अइसो दूधसे ता हमर हुँआ नदिया बनोपडो हए । तुमर जा दूधक् हम भरोसे हएँ ।' बाजो रहो खातएखात उठके भाज पडो । कही, 'खैहुँ ना' । तओ राजा रानीसे कही- 'दमदासे का तए कहीदेत हए ।' रानी कही, 'मए कछु ना कहो हओ । राजा कही, 'बिनके घरमे गैयाँ भैसिया कि कमि हए ? । तोके अइसो ना कहान रहए । राजा जैसो आदमी हएँ बे ।' राजा अपनि दम्दा ठिना गओ और कही, 'मत गुस्साबओ दम्दा चलओ खानु खाएलेओ ।' फिर उवदेव गओ और खानु खाइँ और सोइगए ।

अब भोरभओ टिकुवा पाने आओ । 'अरे बैठे बैठे जे खटिया तोर रहे हएँ । जा ना कहात हएँ कि सासक ताहिँ बेना बिनदेमएँ । खटिया तोर रहे हएँ,' टिकवा एकबरी बरबरान लगो । उवदेवके दिक्क लगो और कही, 'हम का बेना बिनन् आए हएँ ?' बा उठो और चलपडो । टिकुवा फिर बाके लौटारि । फिर दुसरी रातके फिर खानापिना खाइके सोइगओ । फिर आइगओ टिकुवा पाने । कही, 'परे परे खटिया तोरदेत । जा ना कहात कि मुदरा बिन्देमएँ । सासक ताहिँ ।' उवदेवके फिर दिक्क लगो फिर भजो । अब ता बा लौटइए ना । अब मोके बैयर उइयर नाचहिए । हम

चलदए । कहीके उवदेव चलपडो । तओ रानी जीभाके पठेइ । कही, 'जा जीभा तही लौटरेहए ।' तओ जीभा गइहए । जीभा उवदेवसे कही, 'चलओ घरे, कल सँगए चलेहएँ । टिकुवा पाने अइसी हए । बक बात लेत हो तुम छोडओ बिनकी बात । बा उल्टा त आदमी हए बा । चलआ आपन कल चलंगे ।' तओ जीभा बाके लौटार लाइ । अब बे एकदुई रात ससुरार रहे । अब बे हुँआसे बिदा भए । बिदा होत पेति बरात साँजी ।

डोली बनाइँ, लैजाए रहेहएँ । आगुआगु उवदेव जाएरहो हए । पिछुपिछु जीभा जाएरहिहए । जातेजाते चोबाटामे पुग्गए । टिकुवा पाने बिनके जडाजडौली हुइके जान नादिबैया । उवदेव नामानी बा बहेडगर हुइके लैगओ । अब डोली आगु पुगाइदइँ । अब जडाजडौलीमे खबर पुग्गओ कि उवदेव आएरहो हए । अब हुनाकी राजा तरबार तयार करके धरे हए । सब सम्हारके तयार । जडाजडौलीके लौडा आगु डगरमे आइके बैठलइँ । तओ उवदेव आइरहो हए । कही, 'जा तेरी बन्धुक गजब अच्छी हए । ला ता जिजा देखएँ ।' बे बन्धुक लैलइँ । फिर बे कहीँ, 'यार जिजा तेरी तरबार गजब अच्छी हएँ । ला ता देखएँ यार ।' बे सब हतियार लैलइँ । घुडिया रहएँ । घुडिअओ लैलइँ । अब डगरम बैठी हए बैयर । तओ जीभा कही, हरे अइसो रे स्वामी तुम भौँदुवा अब हातहतियार रे सबए दैदए

तुम ता बहुत भौँदु हओ सब हतियार ता दैदए । और तुमए मारन ताँही सब तयार हएँ । अब कासे लडैगे । फिर बक बैयर कही, 'कटारो रहिगओ । अब तुम डेर मत करओ । अब लडाइ सुरु करओ ।' तओ उवदेव लडपरो । आसपास पुरो फोर्स लगो पडो हए । कटारोसे सब काटत जाबए । फिरके लौटए सब काटत जाबए । पुरो सेना काट दइँ । कतए थकगओ । जडाजडौलीकि राजाकि लौडा, और राजा बचो । उवदेव मरिगओ । तओ जीभा सामने आइ । बेहोस हुइगओ ।

फिरके एक बुढिया आइ और कही, 'सबके तिर लोगा मारडारी हए । अब जे तिर लोगाके छोरंगे नाए । घैँट काटंगे जरुर । तए जा लीलक डोरा बान्दे तओ ज्यान निकरजाबैगी । और काया नाबिगडइगि ।' जीभा लीलक डोरा बाँधदइँ । अब राजा, राजक् लौडा आए । भाजगए । भाजनेक बादमे तओ फिरके घुडिया गइहए । घुडिया जाएके उभनाठिना पुगो हए । उभना दारु पिन डटो रहए । हुँनासे एक बुन्दा खुन गिरिगओ । कही- 'बा देख खतरा हुइगओ । मए कहाओ मत जाए रे मत जाए ।' एक बैयर छोरके सात बैयर बनाएदित्तो ।

अब उभना हुँनासे चलो हए । अपनि मुमक् लैके उवदेवकि खबर लेन । हुँआ पर एक भंगीक् बैयर (भंगनिया) सोरा चुगाबए । बा भंगनियासे कही, 'जा गाउँकी भुइँया (देवथान) कहाँ हए ?' । भंगनिया कही, 'बा देख बा उतए हए ।' तओ बे

भुइँयामे गए । भंगनियाके फिर लैगए । और भंगनियासे कही, 'जा देवता कि नाम बता लहुकके' भंगनिया जो लहुकके बताइँ । उभना निकारी तरबार और खटदिना घैंट काटदइँ । घैंट काटके कही- 'ले भुइँया भूपाल माता जा भंगनियाकि भैंट मए तोके दएरहो हओ । मेरो काम सफल होए । ले भुइँया माता ।' अब बा पुग्गओ जडाजडौली ।

जडाजाडौलीक राजाकि सब खजाना निभटगओ । अब उभनाके समूहबारे सबके मारिँ । तओ जाइके अपनी भैया उवदेव और लहुरी जीभा ठिना पुगो । तब उभना लहुरीसे कही, 'लहुरी अब कैसे करएँ । भैया ता बितगओ ।' बे उवदेवके हुँनए पर क्रियाकरम करएँ । जीभा कहीँ, 'जिनकी दफन मत करओ । मए अपनि पतिकेसँग मर्जाङगो ।' तओ उभना अपनि लहुरीके घरे चलओ कहीके कही । जीभा कही, 'ना ना मए जहेकसँग सती जामंगो ।' तओ बे चलेगए ।

बहेक चिन्तासे निकरे गौरा और पार्वती । नदिया किनारे जीभा रोबए । पार्वती कहान लगि, 'आपन भले बुरे देखन ताहिँ आए हएँ । नत आपनकी काम काम रहए ।' महादेव कही, 'जाओ देखके आबओ कौन रोएरहो हए ।' बे आइगए । पार्वती जीभासे कही, 'का बात हए । काहे रोएरहो हए ?' जीभा कही, 'जा मेरो पति मरिगओ हए ।' पार्वती महादेवसे कही, 'देखओ महादेव साहब, जाके जिम्बाएदेबओ ।' तओ महादेव अपनि कानी अंगरियासे उवदेवकी मुहमे अमृत चुब्बाइदइ और बाके जिब्बाइदै । उवदेव 'रामराम' कहात उठगओ । बक घैंट नाकटो रहए । फिर महादेवकी हात पकरलै और कही- 'महाराज, अब हम जाएँ कहाँ ? हमए कोइ डगर दिखाबओ ।' तओ महादेव पार्वतीसे कही- 'मए कहो ता रहओ, अब जिनके कहाँ लैके घुमएँ ।' पार्वती और महादेव हुँआसे अलोप हइगए ।

जीभा और उवदेव फिर अपनि घरे पुगे । उवदेव घर पुग्के कही, 'ददा भौजी फाटक खोलओ ।' उभना मनएमन कही 'जा ता मरगओ रहए कैसे आइगओ ? कहुँ जा ता भूत ता नहए ।' उभना फाटक खोलन आओ । फाटक खोली बे दोनेके देखि । अब बे आराम करीँ । बहेदिनसे बे मिल्के खुसीसे रहान लगे ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

सदासुर्का और सदाबिर्छ

–इन्द्र बहादुर चौधरी

एक गजब बडो तलौवा रहए। तलौवाकि बीचमे एक ढुको रुखा रहए। बा रुखामे बँदरा और बँदरिया बैठे रहएँ। एक रातकि बात हए। मैना और तोता एक कहानी बट्कान डटे रहएँ। मैना कहान लगि 'तोता कुछ कहाओ रैन कटाए।' तोता कही, 'ना मए ना कहामओ तए कहा। काहेकी तए बैयर हए, तेरो बोल मिठो लगैगो।' तओ मैना एक बात सुनान् लगि 'देखओ अइसी पर्बि आइहए कि जे दुई पंक्षी रुखामे बैठे पडे हएँ। अगर जे तलौवामे कुद जाएँ तओ एक १२ वर्षक् लौडा हइजाइगो और एक १२ वर्षकि कन्या हुइजाइगी।'

रुखामे बैठे बँदरिया जगि रहए र और बँदरा रहए सोत। बँदरिया मैना तोताकि सब बात सुनलइ। तओ बँदरिया बँदरासे कही, 'ए उठ् उठ् उठ्, जल्दि उठ्' तओ बँदरा कही- 'होत का हए तेरो, सोनता दे मोके।' बँदरिया कही, 'चल आपन जा तलौवामे कुद जामएँ। तओ १२/१२ वर्षकि मनैन्कि जलम पामंगे।' बँदरा कही, 'एक ता ठन्डी महिना हए और मरनक ताहिँ जामे कुद जामए। मए ना कुदंगो।' बँदरिया कही, 'ना ना चल कुदएँ एक पर्बि आइगइ हए।' बँदरा तहिँ कुद जा कहीके बँदरियाके तलौवामे धकेलदइ। तओ बँदरिया १२ वर्षकि लौडिया हुइगइ। तओ बक् लौडिया बनिदेखि तओ बदँरओ कुदि पर अब बा होबए ना। काहेकि पर्बि निकरगओ रहए।

बहे देसमे एक राजा रहए। राजा भोर भए रोज सिकार खेलनके जबाए। एक दिन राजा सिकार खेलन निकारो। दिनभर सिकार खेली। लौटत पेति बहे तलौवामे पानी पिनके गए। तलौवा किनारे बहे लौडिया नंगी ठाडि रहए। तओ बा राजासे कही, 'राजा साब हम नंगी हएँ तुम दुरए रहिओ।' राजा मनएमन सोचि जा ता गजब सुथरि लौडिया हए। अब जाके दरबारमे लैचलएँ। राजा बाके पकरके हँथियामे चढाइके लैचलो गओ। अब बँदरा इकल्लो रहिगओ। बँदरा घरि इतए कुदए घरि उतए कुदए। बा लँगडा हइगओ।

एक दिन गाउँमे जिँधबा (कपरिया/बँदरा नचानबाले) आइगए। बँदरा रुखामे बैठो रहए। जिँधबा कही, 'जहु बदारके पकरलेमएँ।' बे बहु बँदराके पकर लैगए। गाउँ-गाउँमे बँदरा नचाइके भिख माँगत जामए। जातेजाते बे बहे राजाकि घर पुग्गए। जिँधवा बँदराके नचान लगे। तओ बहे १२ वर्षकि लौडिया कही, 'जहु बँदराके नचा ?' तओ जिँधवा कही, 'जाके हम हबइँ पाए। जा लँगडा हए ना नाच पाबैगो। नाचन सिको फिर ना रहए।' रानी बहेक् नचानके जिद्दी करन लगि। तओ जिँधवा बँदरोके लठ्ठी मारए तओ बा उतए भाजए और फिरके लठ्ठी मारए तओ इतए भाजए। तओ लौडिया कही,

'हरे तेरे ता बँदरा लागए हो लकडी रे प्यारे हमरे करेजा होए साल जी

हरे तेरे ता बँदरा लागए हो लकडी रे प्यारे हमरे करेजा होए साल जी'

तओ बा बँदरा कही-

'हरे तेरे करम रनिया राज लिखो रे प्यारी, हमरे करम लिखो लकडी जी

हरे तेरे करम रनिया राज लिखो रे प्यारी, हमरे करम लिखो लकडी जी'

बे दोने गीत गाइके गीत गाइके अपनि अपनि बात बतामएँ।। बँदरा कही, 'तेरे करममे राज लिखो हए और मेरे करममे लकडि खानके लिखो हए।' तओ रानी कहान लगि, 'देखओ रे जिँधवा जा बँदरा मोके दैजाबओ।' रानी साब जहेसे ता हम पेट पालत हएँ। तुम जहु लैलेहओ तओ हम कैसे जियंगे। भर्खर ता लाए हएँ। हबए नाचनओ ना जानत हए। रानी फिरसे कही, 'ना-ना जा बँदरा मोके दैजाओ। कितका रुपिया लेहओ ?' जिँधवा देनके मनए नाकरए। तओ रानी बिनसे कहान लगो, 'तुम देहओ ता देओ नत् मए जबरजत्ति लैलेहओ। फिर तुम रुपैयओ ना पैहओ।' तओ बा रानी रुपिया दैके बँदरा लैलइ।

बा लौडिया (रानी) बँदरा छोंड दै और देसभर ढँडेरु (सूचना/हल्ला) पिटाइदै कि, 'जा बँदराके जौन कोइ लकडी मारैगो तओ बक मए हात काट देहओ। और जौन कोइ गारी देइगो बाकि मए जिभ काट देहओ। जा बँदराके कोइ हात लगान नापैगे। जौन आँखी लगाबैगो तओ आँखी नकरबाइदेङ्गो।' बा बँदराके छोडदइ। अब बा बँदरा कोइसे नाडराबए। दुकानमे जाइके कहुँ जिलेबि खाबए

कहुँ फलफूल खाइलेबए । बाके कोइ नादलाबए । बँदरा कुछ दिनमे तजाइके मस्त हुइगओ ।

एक दिन बँदराकि मौत आइगइ । बा दुसरे घरकि छतमे मरिगओ । बा घरबालो अब जहे मारी कहीके रानी हमए का करैगी कहीके डरान लगो । तओ बे बहे लौडिया (रानी) के 'तेरो बँदरा मरिगओ' कहीके खबर दइँ । रानी कैसे मरो कहीके पुँछि तओ बा कहीप, 'हमए कछु पता नाहए ।' रानी राजासे कही, 'राजा साब चलाओ जाकि रचाआमएँ ।' तओ राजा कही, 'कोइ बात ना चलाओ ।' तओ सब लह्रियामे कठिया भरिँ और बँदराके लह्रियामे धरिँ । अब बे चलपडे ।

मसानघाटमे एक लह्रिया तरे धरिँ और बीचमे बँदराके धरके आगी लगाइदइँ । जैसी आगी दम्की बहेमे रानी कुदगइँ । अब राजा कहीरहोहए, 'देखओ रानीके देखओ बँदराकि पिछु ज्यान दैदइँ ।' राजा जो रहि बहु आगीमे कुद गओ । तीनओ जनि मरिगए ।

अब बे तिनओ जनि नयाँ जलम लैहएँ । राजा ढौरा नगरी गाउँमे जलम लै, बँदरा और बँदरिया एकए गाउँमे जलम लइँ । बँदरिया लै सेठके घरमे जलमी और बँदरा राजाक् घरमे ।

लौडियाकि नाउँ धरिँ सदासुर्का, बदरक् नाउँ धरिँ सदाबिर्छ । अब बे दोने एकए स्कुलमे लिखापढी करन लगे । पढत्-पढत् बे अब चिठी लिखनके सिकगए । सदासुर्का और सदाबिर्छ एकएठिना बैठएँ । अब बे दोने चिठी लिख लिखके पठामएँ । अब बे दोने मन परान लगे । एक दिन बिनके चिठी पुगात मास्टर देखलै । मास्टर राजासे कही, 'तुमर लौडा अब नापढैगो' और सैँठसे कही, 'तुमर लौडिया अब नापढैगी ।' सदासुर्का और सदाबिर्छ दोने प्यारमे हएँ । अब जिनकि व्यहा करदेबओ कहीके मास्टर राजा और सेठसे कही ।

तओ सैँठ कही- 'जाओ अब सदासुर्काकि मंगनी करियाबओ । तओ बे मंगनीके ताहिँ गए । जातेजाते । धौरानगरी गाउँमे पुग्गए । बहे राजा घर जाइके टिकोबिनो खैचके आइगए । दिनओ धरियाए । बा दिन सदासुर्का पढनके नाआइ । स्कुलमे सदाबिर्छ मास्टरसे पुँछि, 'आज सदासुर्का काहे पढन नाआइ ?' मास्टर कही, 'बक आज मुँड गजब पिरात रहए तही नाआइ ।' दुसरी दिन फिरके पुँछि और मास्टर

कही, 'आज बाकि पेट गजब पिरात रहए तही ना आइ ।' तेसरी दिन सदासुर्का पढनके गइ ।

अब सदासुर्काकि व्यहाकि दिन आइगओ । आज चौका लगन और कल बरात रहए । चौका लगन दिन फिरके सदासुर्का पढन नागइ । इतए सदाबिर्छ मास्टरके सदासुर्का पढन काहे नाआइ कहीके पुँछि । तओ मास्टर कही- 'अरे आज बक मुँड पिराइके फुटो जाए रहो हए । तहि नाआइ ।' दुसरि दिन फिर सदासुर्का स्कुल नाआइ तओ सदाबिर्छ मास्टरसे 'काहे नाआइ ?' पुँछि । मास्टर कही, 'आज ता बक व्यहा हए । बक ता बरात आओहए ।' अब सदाबिर्छ पहिले काहे नबताओ कहीके मास्टरसे गुस्साइगओ ।

अब सदाबिर्छ गुस्सक्मारे टुन्न हुइके सदासुर्काकि घर गओ । अपनि सरीरमे किँच लगाइके गओ । और बराइतबारो भीडमे घुसगओ । सबजनि अरे जा कौन आइगओ कहीके भाजन लगे । दुलहा दुलहिनठिना घुसाघुस करए और पुग्गओ । सदासुर्का कही, 'मेरी गाँठी खोलदेबओ । मए जाके सम्झांगो । तओ सदासुर्काकि दुलहक्मैसे गाँठी खोलदइँ । तओ सदासुर्का सदाबिर्छके अल्गट्ट लैजाइके सम्झान लगि और कही- 'देख तए हबए हिना कछु मत करए । हँदाए हुँदुइके सफा हुइजा । कल मए देवी पुजन जांगो । तए बहे देवीक् मठमे जाइके बैठलिए । आपन हुनएसे फुटलेङ्गे ।' तओ सदाबिर्छ गओ । देवीमठमे बैठो । भोरभओ बा सोइगओ । इतए बरातबारे खाइखुइके निकरे । बरातबारेन्से सदासुर्का कही, 'तुम एकघडि इतए रुकलेबओ मए देवी पुजयामओ ।' बा मठमे गइ और देखि सदाबिर्छ मस्ता सोइरहो हए । बा सदाबिर्छ के जगाइरहि हए । बा जगइ ना । तओ कही-

'कि त रि देवी तेरो सत्त घटो रि प्यारी, कि त रि डसी करिया नाग रे जी

कि त रि देवी तेरो सत्त घटो रि प्यारी, कि त रि डसी करिया नाग रे जी'

तओ देवी कही,

'हरे नै ता रि देवीको सत्त घटो रि प्यारी ना रि डसी हए करिया नाग रे जी,

रातके कनमा कि चिताइ अपनए गओ हए रि सोए जा ।'

सदासुर्का देवीसे कही, 'जाके का हइगओ उठइया नाहए, कि ता देवी सत्तो घटिगओ हए कि ता जाके करिया नाग डसिगओ । तओ देवी सदासुर्काके कही, 'मे मेरो

सत्तो घटो हए ना जाके नाग डसिहए । जा ता भोरभओ सोइगओ हए ।' सदासुर्का बाके जगातजागत ठकगइँ । सिदाबिर्छ जगि ना । तओ बाकि हातमे लिख दै,

'उचसे खेरो डिगमिगी धौरानगरी गाउँ,

गर्ज परै ता आ जैए बहे ससुरको गाउँ'

बा हातम् लिखके सदासुर्का डठरभर अपनि धोती चिरत गइ । ठोरि दुर एक गन्ना पेरनबारी बुढिया रहए । सदासुर्का बुढिया जौंरे पुगि और बासे कही, 'एक हाए सुर्का हाए सुर्का कर्त आबैगो बाके तए जैसीतैसी करके बक् लौटारदिए ।' बुढिया ठीक हए कही । बा अब चलिगइ । इतए लदबद सदाबिर्छ जागो और कहान लगो, 'सदासुर्का काहे नाआइ । जा मोके ठगदइ ।' बो जो रहो हुँनासे निकरो हए । उतए जाइके चिर पाइगओ । और मनएमन सोचि, 'आइ ता रहए, महि सोइगओ ।' अब बहे चिर देखत हाए सुर्का हाए सुर्का करत भाजत जाए रहो हए । अब चिरओ निभट गइ ।

सदाबिर्छ गन्ना पेरनबारी बुढिया ठिना पुगो । बा बुढिया 'हाए सुर्का हाए सुर्का करत जाए रहो जहे सदाबिर्छ होबैगो' अनुमान लगाइ और कही, 'रे भैलु, हिना आ हिना' बा मोके देर हुइरहि हए कहीके रुकैया ना । बुढिया फिरके बुलाइ और गन्ना खानके दइ । सदाबिर्छ चरएचर चरएचर गन्ना खाइ और अघाइगओ । 'गन्ना नखैहए तओ ले जा खुसला खा ता,' बुढिया बासे कही । तओ सदाबिर्छ कही, 'जा का खइहओ मए । रसा मए खाइगओ जा सिटि रहिगओ ।' तओ बुढिया कही, 'ओहो भैलु सिटी गइ हए, रसा त तए लैलओ । अब तए बक पिछु कहाँ जैहए ।' सदाबिर्छ हुनासे भाजपडो । भाजते-भाजते गओ । अब बीचमे एक नदिया पडि । बा नदियामे मुहु डटेइके पानी पिन लगो । टिकराघेन दुई लौडिया हँदान डटे रहएँ । एक लौडिया कही, 'जा कौन हए ना हात धोइ ना मुहु धोइ गौवा मुख पानी पिन लगो ।' दुसरी लौडिया कही, 'देख जाके दूर जाना हए । तहि जा झटपट पिके भजैया हए ।' अब बे दोनो लौडिया बासे कही, 'अरे अपनि हात पाउ ता धोइले भैया ।' हात धोन डटो तओ सदासुर्का बक हातमे जो लिखि रहए बहे देखलइ । पढी-

'उचसे खेरो डिगमिगी धौरानगरी गाउँ,

गर्ज परै ता आ जैए बहे ससुरको गाउँ'

सुर्का जरुर आइरहए कहीके पता पाइगओ । तओ हात गोडो धोइके चलपडो । जाते-जाते धौरानगरी गाउँ पुग्गओ । अब बाके सुर्काके कैसे मिलओ कहीके चिन्ता होन लगो । सदाबिर्छ जो रहो बाबा जी (जोगी) बनके भिख मागन लगो । एक घरमे भिख मागन गओ । तआ भिख देनके एक बैयर आइ । तओ बा कही, 'मए नयाँ ब्यहाताकि हातसे सिधा लेत हओ ।' बैयर कही, 'मर्जा बैरी हिना कहाँ हएँ नयाँ ब्याहाता बा राजा घर हबई ब्यहाइके आइहए उतइयए जा ।' तओ बा चलोगओ । राजा घर पुग्गे भिख मागन लगो । सदासुर्काकि सास अपन लौडियासे कहान लगि, 'जारी ललो देआ तओ बा लौडिया गइ देनक ।' सदाबिर्छ नालइ और कही, 'मए नयाँ ब्याहातक हातसे लेत हओं । और कोइक हातसे ना लेत हओ ।' लौडिया बरबरात फनक्कदिना लौटके चलिगइ । फिर बक सास कहान लगि, 'जारी बहु तहिँ दिया ।' तओ बा देनके गइ । बे दोने चिन्लइँ ओर सदाबिर्छ मए तोके लेन आओ हओ कैसे भाजएँ कहीके कहान लगो । तओ सदासुर्का कही, 'मए फलाने कोनेमे सोत हओ । हुना एक भार हए । तए रातके एक साँप मार लैए और पुँछमे लसरी बाँधलिए । बहे भार सुदन मए खटिया डारलेहओ । तओ रातके तइ चुप्पए चढजैय और बहे भार जौरे साँपके लट्काइदिए ।' अब सब लेटगए तओ साँप लट्काइके उपर चढिगओ । साप काटगओ कहीके सदासुर्का चिल्लान लगि सब दौरके आइगए और देखि साँप सरसर भारघेन छिरए । सदाबिर्छ तानत जाबए । सदाबिर्छ हुनासे भाजगओ । सुर्का सास बन्द करलै । सबेरे बक लास नदिया किनारे लैगए । पाटन ताहिँ गड्डा खोदन डटे रहएँ । ठौरए एक वन रहए । सदाबिर्छ रुखाके लै चढो हए । अब बा रुखामैसे भद्दिन कुदो । भड्भड् बकरियाकि खाल हलाइ । अब जे सबके खाइजांगो

कहीके रप्तान लगो । गड्डा खोदनबारे डरकेमारे सब भाज पडे । अब सदासुर्का और सदाबिर्छ हुनासे अपनि गाउँ चलेगए ।

सदाबिर्छकि दौवाकि नाउँ रहए दीपचन्द्र राजा । बा सदाबिर्छकि खबर लेन ढुँरन डटो रहए । घोडामे चढके बा आत रहए । डगरम् सदासुर्का और सदाबिर्छ रुखातरे बेठे रहएँ । सदासुर्काकि गोदीमे सदाबिर्छ लेटो रहए । दीपचद्र राजा बिनके देखलै और कही 'बा गजब सुथरि लौडिया हए । राजा हुना कुर्रा (लकडी) गराइदइँ और कही, 'जा कुर्रा लम्काइदे लल्ला ।' सदासुर्का कही, 'ना ना मेरो लोगा जगजाइगो तओ बहुत गुस्सा होबैगो मए ना लम्कएहओ ।' राजा जबरजस्ती लम्कान कहान लगो बहु नामनए । तओ राजा बाके पगाह दैदइ और कही, 'ले जाकि सिरहन लगाइदे ।' तओ बा सिरहन लगाइदइँ औ कुर्रा लम्काइ । बाजो रहो हात पकडके घोडामे बैठारके सदासुर्काके लैगओ । सदाबिर्छ हुनए सोत रहिगओ ।

सदाबिर्छ लदबद उठो तओ कोइके नादेखि । कहाँ गइभइँ कहीके ढुँडन लगो । नापाइ तओ बा घरे चलोगओ । राजा दीपचन्द्र सदासुर्काकि ताहिँ कचिया महल बनान् डटो रहए । महल बन्बात बन्बात सदाबिर्छ घरे पुग्गओ । बा हुनए पर काम करन लगो । तओ सदाबिर्छ कही,

'दीपकचन्द्र राजा जो कहीयो प्यारी धोती हएँ इँटा गिला बाबा जी'

जा सुनके राजा कही ओहो जाता मेरो लौडा हए । और सदासुर्का कहान लगो जाता मेरो लोगा हए । सब चिनलइँ और बे खुसीसे राजपाट चलान लगे ।

(स्रोत व्यक्ति : कलैया राना, देखतभुली (लंगारा टोल), कञ्चनपुर)

ढिलबधना

–इन्द्र बहादुर चौधरी

देसमे एक राजा रहए । राजाकि चार लौडा रहएँ । सबके व्यहा हुइगओ रहए । सबसे छोटो लौडाकि बचोर रहए । बक नाउँ रहए ढिलबधना । ढिलबधना भगता रहए । व्यहा करनके मन ना करए । बा बगियामे कुटी बनाइएके बैठो रहए । बक अइया जाबए कलबा दिआबए ।

एक दिनकि बात हए ढिलबधनाकि तीनओ भौजी ढिलबधनाके कलबा देन 'आज मए जैहओ, आज मए जैहओ' कहीके कहामएँ । बक अइया कही, 'तुम मत जाबओ बा तुमरी हातकि ना खएहए ।' और बे तीनओ भौजी 'आज ता हमहि जएहएँ' कहीके जिद्दी करन लगे । काहेकि बे अपनि दिउराके कबहु ना देखिँ रहएँ ।

तओ एक दिन तीनओ भौजी ढिलबधनाके कलबा देनके गए । ढिलबधना जानगओ कि 'आज भौजी कलवा देनके आइरहे हएँ ।' बक् कुटी जौडे एक ढुको रूखा रहए । बा बहे तरे घुसके डुकगओ । अब तिनओ भौजी कुटीमे आइगए । कुटिमे देखिँ हुना कोइ नैया । अब बे अपनि देबरके ढुँडन लगे । ढुँडत ढुँडत बे ढुको रूखा तरे डुको पाइगए । अब ढिलबधनासे बक भौजी कहाँमए, 'देबर निकरओ आबओ खानु खानके ।' ढिलबधना निकरैया ना । अब तिनओ भौजी हात मेलिँ, और अपनि दिउराके कुतकुतान लगे । ढिलबधना कही, 'का कुतकुतात हओ दभेना कैसो गुना मार खरखरो धरो तुमरो हात ।' बे कहीँ अब हमर हात दभेना हुइगओ । तमए ककुवाए रहोहए । तब ढिलबधना निकरो हए ।

बिनकी भौजी कहीँ, 'एक रानी हए फूलदेव नाउँकी बाकी हात रुवा हानी हए । बाके बेहाइके लिआबओ तओ हम जानंगे कि हमर दिउरा एक मर्द हएँ ।' जा बात कहीके बे चलिगइँ । अब ढिलबधना सोँचन लगो, 'मिर भौजी मोके सराप दैगए । अब फूलदेव रानीले ना व्यहाएसे सुख नाहए । अब जानए पडैगो ।' अब बा मनमनए सोँचलइ कि 'अब व्यहाएके लामंगो ।'

अब ढिलबधना अपनि अइयासे कही 'मोके फूलदेव रानीके लाना हए । बहेसे व्यहा करंगो । तिनओ भौजी मोसे कहीँ हएँ । नत मए मर्दकि लौरा नैयाँ ।' तओ बक अइया कही, 'ठीक हए ।' अब ढिलबधना घोडा पकडि और चलपडो । चल्ते-चल्ते वनमे पुग्गओ । बनमे सन्धुकिया लए एक आदमी मिलो । बा ढिलबधनासे कही, 'जा सन्धुकिया लैले । लेहए तओ पछताबैगो और नालेहए तओ पछताबैगो ।' ढिलबधनाके बड आफत हुइगओ । लेमओ कि नालेमओ सोचमे

पडिगओ। एकघडि सोचि और बा लैलइँ। जब सन्धुकिया खोली तओ बामैसे एक निक्कना बडो आदमी और एक बित्तकि डाँडि निकरपडो। ढिलबधना डराइगओ। जा ता राक्षस हए कहीके डराइगओ। अब बा निक्कना बडो आदमी सन्धुकिया मैसे निकरो और कहान लगो, 'अब मए तिरसङ जामंगो।' ढिलबधना कही, 'तए निक्कनाबडो हए। मए घोडामे जैहओ कैसे जइहए।' तओ बा कहानलगो 'अरे तए चलता मए उइसी तेरी धाँप ना छोरंगो।' अब बे दोने चलपडे। जाते-जाते बीच वनमे एक गुरुके बुट्टी खान डटे आदमीनके पाइगओ। ढिलबधना कही, 'जा का कररहे हओ ?' तओ बे बताइँ, 'हमर गुरु रहएँ। हमके गुरु 'अगर मए मरजामओ तब मेरी बुट्टी निँधके खाइजैयो। तुमए सब ज्ञान आइजइहए', कहीके कहीरहएँ। तही हम बुट्टी निँधके खाइरहे हएँ।' तओ ढिलबधना कही, 'मनैक बुट्टी खात हओ ? गरियान लगो।' बा कही, 'तुमर गुरु तमए का सिकाइ रहए दिखाबओ ता ? मत खाबए। जाओ नदियामे पुहाइके आबओ।' बे सब पुहाइदइँ। नदियामे हड्डी पुहत जाबए। तरे नदियामे चमरा हँदान डटे रहएँ। बे पुहुके आत बुट्टी खाइलइँ। बहे दिनसे चमरनकि ज्ञान ज्यादा भओ हए।

अब ढिलबधना बिनसे कहान लगो, 'अच्छा बताबओ ता तुमरो ठिन काका ज्ञान हए ?' तओ बे कहीँ, 'हम पल्कियामे बैठके उडलेत हँए।' बे उडके दिखाइदइँ। ढिलबधना कही, 'हाँ तुमरठिन ज्ञान ता हए। बा कही जा पलकिया ता मोके दैदेओ।' बे ढिलबधनाके पलकिया दैदइँ। तओ ढिलबधना फिरके कही, 'और कुछ जान्थओ ?' तओ बे कहीँ 'ले जा सुँघ ता' बा सुँघलइँ। बा घिटमिटियारो (तिरमिराइगओ) हुइगओ। और बाकी सिङ निकररहो और पेट कठौवा (ठूलो/भारी) हुइगओ। मुड फिर गजब भारी हुइगओ। फिर ठीक हुइके जहु मेरी काम लगैगी कहीके कही। और मागलइँ। अब बा हुँआसे चलपडो।

चल्ते-चल्ते अब फूलदेव रानीके ठाउँमे पुग्गओ। बा हुँआ एक बुढिया रहए। बक कोइ नारहए। बा बुढिया फूला गुँदत रहए। तओ गुँदके लैजाबए तओ फूलदेव रानी रोज तखरीमे तौलए। एक घेन माला धरए और एक घेन अपना बैठए। बराबर तौलए। एक दिन ढिलबधना बुढियासे कही, 'माता जी, माता जी जा फूलाकि माला गुँदके लैजात कहाँ हए ?' बुढिया कही, 'बा फूलदेव रानिक् ठिना लैजात हओ। और जहे मालासे बा तुलत हए।' ढिलबधना मनमनए ठीक हए कहीके सोँचि। अब तिसरो दिन भोरभओ ढिलबधना बुढियासे कही, 'ला ता जा माला मए गुहिदेमओ।' बुढिया तोसे नाहुइहए कहीके कही। ढिलबधना कही, 'तोसे कम ना गुँदंगो मए ला मोके दे।' तओ ढिलबधना गुहिँ दै।

अब बा लैगओ । बा बुढियासे सुथरो बनाइदइँ । अब फूलदेव रानी बहे मालासे तुली तओ अपना भारी निकरी । माला हुलको निकरगओ । तओ बा रानी बुढियासे पुँछि 'तिर घरमे कौन हए ? जा माला कौन गुँहि ?' बुढिया कही, 'एक लौरा हए मिर घरमे डेरा धरे हए । बा मानी नाए, मए गुहिँ देहओ कहीके जिद्दी करन लगो । तओ मए दैदओ ।' तओ रानी बाके अपनि ठिना पनारनके कहीके चलोगओ । अब ढिलबधना फसादमे पडिगओ कैसे जामओ कहीके । डरान लगो । तओ बुढियासे कही, 'अब मए फूलदेव रानी ठिना कैसे जामओ ? कोइ देखलइँ तओ मोके मारडरेहएँ ।' तओ ढिलबधना अपनीसँगमे आओ भओ बिलानबडे (छोटो आदमी बक्साबारो) से कही, 'अब कैसे चलएँ ।' बा कही, 'तए का चिन्ता कररहो हए । चलना हए तओ बता ।' जब बे सब सोएजामंगो तओ आपन चलंगे कहीके ढिलबधना बासे कही ।

बा छोटो आदमी कही, 'चल तए पल्कियामे बैठले और मए तोके उडाए लैजएहओ ।' बा अपना तरे ओर पल्किया उडात लैजाए रहो हए । चित्राअँटारीमे बा ढरिआओ । अब ढिलबधना रानी ठिना गओ । बा फूलदेव रानीके जगाइ । 'कहाँ आइगओ । अगर और आदमी पता पाइग तओ ताके माड्डारंगे,' फूलदेव रानी कही, 'तए जब बा फूला गुहीँके दओ तओ मए बासे भारी निकरगओ । रानी कही मए तोसे व्यहा करंगो ।' रानी बाके भजानताहीँ उपाय सिकाइ । कही, 'तए घोडा लिअइए तओ रस्सा पकरके मए आजैहओ । और आपन भाज चलंगे ।'

चौकीदार ढिलबधना और फूलदेव रानीको बत्कात गुनमुन गुनमुन पता पाइगहए । 'चोर हए, चोर हए' कहीके सब चिल्लान लगे । ढिलबधना जो रहो पल्कियामे बैठो ओर लैगओ उडात । बा पल्किया लैके रुखामे बैठगओ । तओ बा दिन अइसी रात कटगओ । अब दुसरी दिन ढिलबधना घोडा लैके गओ । दरबारमे रस्सी टलँगो रहए । अब फूलदेव रानी पता पाइगओ ओर बा ढिलबधना आइगओ कहीके । घोडामे बैठारके बा लैचलो गओ ।

ढिलबधना फूलदेव रानीके घर लाइके अपनि भौजीनके दिखाइ दइँ । बे सब खुसी हुइगए ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

रूवाकी घोडा

–इन्द्र बहादुर चौधरी

बहुत अग्गुकी बात हय । एक गाउँमे बडहीक डेरा रहय । बे सब कहुँ खटपल्का, कहुँ पहिया, कहुँ फाटक बनाए बनाए बेचयँ । और अपनी गुजारा चलामयँ । जिनमैसे एक गजब अल्छी रहय । कछु काम नकरय । बक बैयर धान कुटके लाबय, खानु बनाबय । और बा खाइखुइके लेटरहाबय । दिनभर सोबय ।

एकदिन बक बैयर गजब गुस्साइगई और कहीँ 'कामउम करनताहिँ उइसी परोरहाथय । औरनके देखाओ दिनभर काम करथँय और मुर्गाक बुट्टी लाइके खाथयँ । जा उइसी परोरहाथय । कुछुनकछा ।' अपनी बैयरकी गारी सुनके बा हसी और कही 'जा बजारसे एक कट्टा रुवा लिआ । बासे मय उरनबालो घोडा बनादेहओ । तओ बेचन चलंगे और मुर्गाक बुट्टी खामंगे ।'

बजारसे रुवा लाईके घोडा बनाइके बे अब कडियामे दोनोघेन टलँगाइके बेचन चले । जाते जाते बहुत दुर पुग्गय पर एकु घोडा नाबिको । नेगत नेगत बे एक राजक दरबारमे पुगे । 'जे सब घोडा उरथयँ' कहीके पता पाइके राजा सब घोडा अपनी लौरक ताहिँ खरिदलै । बे दोने गजब खुसी भइँ । राजकुमार दिनभर घोडासे खेलय । बाके घोडामे बैठके उडनके मन लागो । 'जा कसै उरथय ?' बा लौरा कही । बंगरामे लैजाइके 'लैचल मोके हवाकी सहारासे उपर' कहीय तओ जा उरैगो कहीके घोडा उडानकी मन्तर सिकाइदयी ।

राजकुमार बंगरामे लैजाइके 'लैचल मोके हवाकी सहारासे उपर' कही का रहय घोडा उपर उपर उमसन लागो । हवक सहारै सहारामे जाएरहो उपरय उपर । पर, बाके घोडा फिर्ता करनके मन्तर पता नारहय । जाइके बा दुसरी राज्यमो गिरो । घर आइएनापाइ ।

बहुत दिन हुइगओ घर नाजापाइ तओ राजकुमारके आफत परिगओ । अब बा उतइ नोकरी ढूँरन लगो । पर, नोकरी कहूँ नापाइ । नोकरी ढुँरत ढुँरत एकदिन राजाकी दरबारमे पुगो । राजासे नोकरी मागी । पर, अपना राजकुमार हौं कहीके

नाबताई । राजा कही 'और काम नाहय हुक्का भरके काम हय करैगे ?' 'ठीक हय' राजकुमार कही । अब बा काममा लग्गओ । राजा दौसभर कचहेरी चलो जाबय, तओ रोज सान सबेरे बो हुक्का भरय ।

राजाकी एक बहुत सुतरी लौरिया (राजकुमारी) रहय । राजकुमारसे बाकी प्रेम हुइगओ । एकदिन राजकुमारी राजकुमारसे कही 'मय तोसे ब्यहा करंगो ।' राजकुमार कहीँ 'मय एक नोकर हओ । मोसे ब्यहा करनके मत सोचौ राजकुमारी राजा मोके निकार्देहय ।'

राजकुमारी अपनी बाबा राजक ठिना गओ औरु कही पिता जान हम तुमसे एक बात कहैया हय । राजा कही- कहाओ । राजकुमारी कही पिता जान हम जहे नोकरसे ब्यहा करंगे । राजा कहीँ ठीक हय तुमर मन हय तओ कर्लेओ । राजा बिनकी ब्यहा कर्दै ।

बिनके ताहीँ राजा एक अलग मकान बनाइदइ । बे हुवय रहानलगे । रहामय खामै, रहामय खामय । राजकुमारी जतकाली हुइगओ । कुछ समय पिच्छु बच्चा फिर हुइगओ । बच्चा नेगन लगो, खेलन लगो । अइसिय राहते खाते रहाते खाते राजकुमारी फिरके जतकाली हुइगइ । राजकुमारी कही चलाओ मैके चलय हियाँ ठीक नाहय । और अपनी घर लैचलओ । राजकुमार कही- ठीक हय । पर, राजकुमारके अपनी घर जानकी डगर पता नारहय ।

राजकुमारी फिरके लरकोरी होन बेरा आइगओ । राजकुमार कही कुछ दिन पच्छु जैहयँ । राजकुमारी नामानी । बा कही- चलैया हय ता चल नत् मय फाँसी लैदेङ्गो । घोडाके बंगरामे लैजाइके तिनओ जनी बैठके कहीँ 'लैचल मोके हवाकी सहारासे उपर' घोडा फिर हवामे उरनलगो । हवामे उरत उरत जाय रहो । घोडा सात समुन्दर बीचकी टापुमे जाइके गिरो । राजकुमारी कही 'जल्दी उतार जल्दी उतार' बा ब्यानलगि रहय । बिनके उतारके आगी लेन गओ । गाउँ गाउँमे जाइके आगी मागय । एक लुघटा आगी पाइगओ ।

फिर घोडा उराइ हय और चलपरो । हवाके मारे पछार मुहके लुघटाक आगी भरभर
पजरय । पुगनके थोरीकिना रहिगओ रहय तले घोडामे आगि लग्के भरभर दिना पजरिगओ । आपनओ गिरिगओ समुन्दरमे । समुन्दरमे कुलबुतिया मछरी मारत

रहयँ । कुलबुतिया जाएके बाके पानीमैसे निकारी और बचाई । पर, बा अपनी परिवारसे भेटा नकरपाइ ।

यितय बालबच्चा लय राजकुमारी छटपटाइरही हय । उतय राजकुमार छटपटाबय । राजकुमारी दुसरी लौरा फिर जन्माइडारी । बे दोने बच्चा भुखकेमारे ऐया दौआ-ऐया दौआ रोज चिल्लामय । बहे डगर नैयासे मन्त्यार रोज जाय करय । चुरी, भुजा बेंचे करय । मन्त्यारके हातमे भुजा देखके दोनै लौरा कहान लगे- 'अइयो भुजा-अइयो भुजा' ।

राजकुमारी मन्त्यारसे कही 'भइया रे एक पोका मिर लौरक दैदे तोके धरम लगइगो ।' मन्त्यार कहीँ 'तय आपय लैजा' । राजकुमारी भुजा लेन गई हात नफाइखिना मन्त्यार नैयामे तानके लैचलोगओ । अब हुँवा दुई ददा भैया रहीगय । अब अइयो दाउओ अइयो दउओ रोइरहो हय दोनो बच्चा ।

बहे डगर एक बुढिया फिर छिरे कर्त रहय । बहु बजारमे सामान बेचन जाय करय । बुढिया बच्चाके रोत सुनी और एकके फिरत देखी बा बुढिया बे दोनेक बटारलाई । घरमे लाइके बिनके सेवा सत्कार करी । अइसी करत करत बे ज्वान हुइ गए ।

अब बे दोने ददा भइया बा बुढीयासे कहीँ 'ऐया हम अब नोकरी ढुँर लामै । तय हमय बहुत दुख कर्के पालो हय । अब हम तोके पालंगे ।' बुढिया कही हबए मत जाओ । तुम छोटे हओ । थुर और बडे हुइलेबै तओ करियो नोकरी । हबय मय तुमय खबाइए रहो हो जैसे तैसे कर्के । बे कहीँ ना हमय सरम लागथय । अब हम नोकरी करंगे । दोने ददा भैया नोकरी ढुँरन चले । जाते जाते बे बिनकी अइया के लैजानबारो मन्त्यारके घरमे पुग्गय । पर, बिनके पता नरहय ।

बे दोने रातकी चौकीदारी करने नोकरी पाइगय । बे रोज रातके डिउटी करयँ । बालक आदमी एक छोटो रहय । डिउटी करत करत छोटे खुब सोनके मन करय । तओ छोटेके बक ददा रोज कहानी सुनाबय । भितर कोनेमैसे बिनकी ऐयाफिर रोज बिनकी कहानी सुने करय । एकदिन बडोबालो कही 'भैया रे, रोज औरकी कहानी का बत्कामय । आज अपनि बिति बत्काएँ हाय ।' 'ठीक हय' भैया कही ठीक हय बत्काओ ।

अपनी घरकी कहानी सुरु करी- 'देख आपनकी दौवक एक रुवाकी घोडा रहय । बा घोडामे बैठके दौवा हमर मुमाकघर पुगो रहय । हुँवा पर ऐवा और दौवाकी प्रेम हुइगओ और बे ब्यहा करीँ । तओ मय जल्मो । तय गरभमे रहय । एकदिन ऐया दौवासे कही- अब हम अपनी घर चलएँ । हिना अच्छो नाहय । तओ दौवा हमय घोडामे बैठारके लैजान लगो । जाते जाते बीच समुन्दरमे पुगेखिना तै जल्मन लगो । दौवो घोडाके समुन्दरकी टापुमे बैठारी । और गाउँघेन आगी लेन गओ । आतपेती घोडामे आगी लग्गओ और दौवा उतै हराइगओ ।

ऐयाके एक आदमी पकरके लैचलो गओ । तय और मय रहिगय । बहेबेरा एक बुढीया आई और हमय लैजाएके यित्तो बडो कर्के पाली । अब हम बहेके सेवा कर रहेहयँ ।'

जिनकी कहानी बन्धक बनके बैठी बिनकी ऐया (राजकुमारी) रोज सुनय । पर, जे मिर लौरा हयँ कहीके पता नारहय । आजकी कहानी सुनके बाके पता भओ । बा सोची मिर लौरनके यितनो दुःख हयँ । अब जिनके मै मरायदेहओ । अब रातभर कहाँसे फिरके सबेरे मन्त्यार आओ । राजकुमारी कहीँ 'जाओ यिनके फाँसी लगाइदेओ । जे नोकर ठीक ना हयँ । ' मन्त्यार राजी हुइगओ । बहेदिन मन्त्यार बिनके फाँसी देनबारो ठाउँमे लैके गओ । फाँसी देनबारो ठाउँमे बिनको दौवा (राजकुमार) काम करय । दौवा और लौरा एकठीना हुइकेफिर बे नाचिनपाइँ ।

मन्त्यार कही 'जिनके फाँसी लगाओ ।' राजकुमार कही' जे बच्चा तेरे का खराबी करीँ ?' । बे दोने बालका फिरके अपनी कहानी सुनाइ । राजकुमार जे मेरो लौरा हय कहीके जानगओ । राजकुमार कही 'अग्गु अपनी बैयरके लिया' । मन्त्यार बैयर लैके आओ । बा चिन्डारी । जहे मन्त्यारके कारनसे हमर परिवार खतम भओ कहीके बे सब मिलके मन्त्यारके फाँसी चढाइदैँ ।

और बे सब एकठिहामे सिमट्गय । बुढीयाके फिर अपनी घरमे लैजाइके सबय जनी खुसी और सुखी हुइके रहान लगे । और अपनी राज्यमे जाइके राजपाट खिलान लगे ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

करन और लक्ष्मी

–इन्द्र बहादुर चौधरी

बहुत अग्गुकि बात हए । एक दिन करम और लक्ष्मीकि लडाइ भइरहए । करम कहाए मए बडो । लक्ष्मी कहाए मए बडो । तओ करम कहान लगो - ठीक एक तहीँ बडो । करम लक्ष्मीसे कही, 'चल अब चौराहोमे चलएँ आपन । कोइ गरिब आबए तओ तए बाके कुछ दिए । लक्ष्मी कही, 'ठीक हए ।' बे दोने चौराहोमे जाएके बैठगए ।

एक गरिब कँधामे कुह्नारी धरे आए रहो हए । कठिया करन ताहिँ । गरिब कठिया बेँचके अपनि गुजारा चलाएबए । करम कही, 'ए लक्ष्मी बा गरिब आए रहो हए देख । जाके कछ्छु दे । जा बिचारो कित्तो कठिया करैगो ।' लक्ष्मी कही 'अच्छा ठीक हए । आन्दे तओ मए देङ्गो ।' तओ लक्ष्मी गरिबके हीरा दै । लक्ष्मी गरिबसे कही, 'ले जा हीरा लैजा । जहे बेँचके खइए । तए कठियक् मत अइए अब ।' तओ गरिब हीरा लैके गओ । गरिब खुसी होत गओ ।

गरिब नदिया किनारे गओ । ढाओ किनारे धरलै । और अपना गोडो (खुट्टा) धोएरहो और मनएमन कहेरहो, 'जा ता मोके बहुत मान मिलिगओ ।' बहे बेरा एक लचिया आओ ओर हीराके कप्प दिना खाएगओ । गरिबके पतए नैयाँ । हात गोडो धोएके देखि ता हीरए नैयाँ । कही- 'कहाँ गओ ? अब बाके बहुत आफत पडिगओ । कठिया करन जाओ तओ ना हुइरहो । तओ बा घरे चलोगओ । बक बैयर कही, 'ए बुढ्ढा का लाओ ?' गरिब कही, 'लाओ ता मए गजब रहओं । पर जिनकौन खाएगओ ।' बा दिन बे घरमे जो कुछ रहए बहे खाइके रहिगए ।

दुसरी दिन सबेरे भोरभए फिरके चलपडो । करम और लक्ष्मी दोनो बहे चौराहोमे बैठे रहएँ । करम कही, 'तए बा गरिबके का दओ रएह ? अगर कछ्छु दओ रहए तओ बा गरिब आज नाआबएगो । और नादोहोबएगो तओ बा जरुर आबएगो ।' फिर बहे गरिब आए रहो हए कँधामे कुह्नारी धरे । बाके आत देख्के करम लक्ष्मीसे कही, 'बा देख गरिब ता आजफिर आएरहो हए । तए बाके का दओ रहए ? तओ बाके कुछ दैके का फाइदा हए । कितका दओ बाट अँठअए ना ।' लक्ष्मी कही, 'हाँता जा का हुइगओ, हीरा ना अँठो जाके ।' तओ लक्ष्मी गरिबसे कही, 'तए फिर आए गओ ? मए कल दओ ता रहओ । ना अठो ?' गरिब कही 'बा ता मए नदिया किनारे धरके हातगोडो धोत रहओं । जिनकौन लैचलो गओ । अब का करओ । मए ता आजओ भुँको हओं ।' करम कही, 'दे रि लक्ष्मी दे । तए ता बडो हए ।'

फिर लक्ष्मी बाके नौलखा हार दैदइ । और कही- 'ले जा हार लैजा और जाके बेंचके खइए । कठिया करन मत अइए ।' गरिब खुसीके मारे दौरत चलो गओ । फिरके नदिया ढाहो किनारे भिंगरामे टलंगाएके गोडो धोन लागो । फिरके चिलरिया लैगइ । बके पतए ना हए । हात गोडो धोइके देखि ता हारए नैयाँ । बा कही- 'जा कौन लैगओ । कल्लएसे भुखो हओ । आज का बेँचके खइहओ ?' घरे गओ तओ बक बैअर गजब गारी दै ।

घर जाइके घरमे अब जो कुछ रहए, मार, काँजि बनाइके खाइँ । बा रात जैसोतैसो कटिगओ । बा मनमनए सोचिं, 'अबखिर बे चहुँ जितनो देमएँ । मएता लेहुँ नाए । तासे ता कठिया बेँचके एक पहार ता खानके हुइजात हए ।' अब फिरके भोर भओ बा गरिब निकरो और गओ । लक्ष्मी कही, देख बा गरिब फिरके आन लगो । करम लक्ष्मीसे कही, 'तए बाके का दओ रहए । बा ता फिरके आन लगो । कैसे देथए ।' लक्ष्मी बा गरिबसे कही, 'मै तोके ता हार दओ रहऔं बहु ना अठो तए । का बात हए ? का करत हए तए ?' गरिब कही, 'मै का करओं मिर करम टेंढो हए । ढाहोमे धरो जिनकौन लैचलो गओ । फिरके भिंगरामे टलगाएदओ बहु जिन कौन लैचलो गओ । और कछु ना मेरो कर्मए टेंढो हए ।' फिरके करम लक्ष्मीसे कही, 'विचारोकि कछु गल्ती ना हए । अब का देबैगो । कछु देहए तओ दैदे ?' लक्ष्मी कही, 'अब तहिँ दे । तेरि पावर देखओ ।' करम कही, 'ले ठीक हए अब म जाके दे रहो हओ । कलसे जा घुमके ना आबइगो ।' लक्ष्मी कही, 'अच्छा दे ।' करम गरिबसे कही, 'जा कठिया फारके लैजा । २ सओ फारैगो तओ तेरो ५ सओ होबइगो ।' लक्ष्मी और करम हुआसे गए । गरिब कठिया फारके लैचलो गओ, सओ कठिया फारी ताओ ५ सओ निकरो । बासे नुन, तेल, चामर सबै खरिद लइ ।

गरिबके मछरी खानके मन भओ । बा लचिया फिर लैलइ । अपनि बैयरसे कही, 'लेरि जाके अच्छेसे पकइए । अब मए कठिया करलामओ । जौन रुखाके काटी बहेमे चिलरिया बैठो रहए । चिलरिया देखि । और हार फिर पाइगओ । उतए घरमा लचियाभितर फिर हीरा (लाल) निकरो । बा गरिब खुसी हुइगओ । और अच्छेसे दिन बितान लगे ।

एकदिन करम लक्ष्मीसे कही, 'चल आज चलएँ देखन बा गरिब कठिया करन आत हए कि नाए ।' बे दोने चौराहेमे गए । बा गरिब नाआओ । तब लक्ष्मी कही, 'तए बडो, मए छोटो हओ ।' सबसे बडो करम हए ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

राजा और साथ बेटी

–इन्द्र बहादुर चौधरी

एक देसमे एक राजा रहए। बाकि ७ लौडिया रहएँ। एक दिन बे सातए लौडिया नदियामे हँदानके गए। राजा कहान लगो - 'आज जिनकी परीक्षा लेङ्गो मए।' सातए लौडिया हँदाएके आतरहएँ। तओ राजा डगरमे जाएके बैठगओ। आगुआगु बडो लौडिया रहए। राजा अपनि बडि लौडियासे कही, 'बेटी कौनक भागसे खात हओ ?' बडी लोडिया कही- 'पिता जान हम् तुमरि भागसे खात हएँ।' ६ लौडिया सबए जहे कहीँ। सबेसे छोटि लौडिया कही, 'पिता जी मए ता अपनि भागसे खात हओ।'

बे सब घर गए। राजा अपनि नोकर चाकरके बुलाइ और कही, 'कल मुर्गक्‌बाङ जाके बियाबान जंगलमे लैजइयओ ओर छोड अइयो। चाहे सेरा मिलए। चाहे बघटा मिलए, चाहे हतिया मिलए चाहे साँप मिलए। बहेक पिछु लगाइदियो। अपना करमसे खबैया हए जा।' नोरक चाकर आए और बाके लैचले गए।

एक लौरा रहए। बा बनके रहए। बनमे आगि लगि। सबघेनसे आगि लगनलागो और बीचमे रहए साँप। बा निकर ना पवैया डुँगो जात रहए। बा साँप लौरासे कही, 'मोके निकारदे मए डुँङ्जएहओ ?' लौरा कही, 'मए तोके ना निकारंगो तए मोके काटएगो।' साँप कही, 'ना काटंगो।' साँप घरिघरि कहान लगो। तओ बा लौरा एक बरंगा लै और बाके निकारदै। जब साँप निकरो तओ लौरासे कहान लगो, 'मए तोके काटंगो।' साँप कही, 'जा गैया चुकाए रहे एक बुढी ग्याँरेसे जाइके पुँछ। अगर बा काटन कहाएगो तओ मए काटंगो।' तओ बा लौर गैयाँ ठिना गओ और कहान लगो, 'गैयाँ माता ! गैँया माता !' गैयाँ कही, 'का, कहे रहो हए बता।' लौरा कही, 'आज बनमे आगि लागो रहो रहए। एक साँप डुँगतरहए। मए बाके निकारदओ अब बा मोके कटैया हए।' गैयाँ कही, 'भैया रे, जैसी करैगो नेकी और लगैगी ढेँकि, बा ता तोके जरुर काटैगी।' लौरा कही, 'काहे काटेगो ?' गैयाँ कही, 'देख अब मए बुढो हइगओ, मए नेङ ना चिकत हओ। ग्यारो जो आत हए बा मोके चराचर मारत हए। मए बुढी केसे जल्दी

जल्दी नेगओ ? मोए ना मारके छोड जातो मए अपनए धिरेधिरे आए जातो ।' बाता तोके जरुर काटैगो । बा लौरा साँप ठिना गओ । तओ साँप कही, 'गैयाँ का कही ?' लौरा कही, 'बा ता कही काटैगो ।' अब साँप कही 'हाँ मए ता काटंगो ।'

साँप फिरेक बासे कही, 'जा बा हुँआ एक बडो और ठुल्लो रुखा हए । बा रुखासे पुछिए । अगर रुखा कहाइगो नाकाटएगो तओ मए नाकाटंगो, और अगर बा कहएगो काटैगो तओ मए काटंगो ।' बा लौरा रुखा ठिन गओ और कही, 'रुखा रे मए साँपके आगीसे निकारदओ । अब बा मोके कटैया हए । का कहएगो तए बा मोके काटएगो कि ना काटएगो ?' रुखा कही, बा ताके जरुर काटएगो' लौरा कही, 'काहे काटएगो ?' रुखा बासे कही, 'देख मेरि हिना ठाडो पचासो बरस हुइगओ । देख आदमी मोके कहुँ टकुला मारत हएँ, कहुँ हसिया मारदेत हएँ । देखता मेरो कितना घाउ हएँ । आरामे मिरे छाहिँमे बैठेसे का हुइतो । उनकी गुनए नैया । भैया साँप ता तोके जरुर काटएगो ।' लौरा साँप ठिना गओ । साँप कही, 'रुखा का कही ?' लौरा कही, 'काटएगो कही ।' साँप फिर्के कही, 'हाँ मए ता काटंगो ।' तओ साँप कही 'ले मए तोके नाकाटंगो तए मुह बा मए भितर घुजांगो ।' बा जोरसे आँ करि और साँप बक पेटमे घुसगओ । अब बा लौराकी पेट पिराबए 'हए हए दैया' कहीके चिल्लाबए ।

बहेबेरा मुर्गाबाङ राजाकी छोटी लौरियाके बनके छोडनबारे बहे लौरासे भेट हुइगए । बे बहे लौरासँग लगाइदैं । बे लौरियाँसे कहीँ 'ले अब जहेकसङ रहिए ।' बा लौरा कही, 'महाराज मिरठिन मत छोरओ । मए ता अपनएआप मरोजाए रहो हओं जाके कैसे पालंगो ?' बे कहीँ 'तए मर चहुँ जो कर, हम ता लगाए जैहएँ ।' बे चलेगए । बा लौरिया अब बहेक पिच्छु लग्गओ । लौडाकि पेट घुसोभओ साँप डमए ना देरहो हए ।

अइसी करते करते । एक बिडीँमे मुड धरि तओ साँप बोली । कही, 'तए खटाइ (चुक) लिआ एक टिपा और एक करहा लिआ । और जाके रिझा । और हल्का गरमगरम पिले । तिर पेटभितर रहोभओ साँप मरजाबैगो ।' मोके मारन्ताही जा सिखाएरहो हए कहीके पेट भितरबारो साँप मस्की, 'तए लिआ एक टिपा तेल । और रिझाएके डारदे जा भारमे कितनो धन लेबैगो ? जा भितर माया हए । और खोदले । कितना माया हए ।' बा लौडा र और लौडिया जो रहे खटाइ लिआइँ ।

लौडा तताइके पिलै । पेटभितरकी साँप मरिगओ । और कटकरके निकारदैं । तओ एक टिपा तेल लैके आए । तताएक भारभिर डारदैं । बहू साँप मरिगओ । फरह्वा लाइके खोदिँ तओ बे छकरन माया चाँदिक मारे पूरो भरो परो । तओ बे दोनो अब गाउँ जैहीँ ना । हिनाए रहंगे । एक कोँदामे बे बैठलैं । हुअएँ रहएँ खामएँ ।

एक दिन राजा वनमे सिकार खेलन गओ । इतए उतए फिरते फिरते बाके लगि, प्यास । पानी कहाँ मिलए । एक रुखामे बहुत भयंकर साँप अट्को रहए । बाके बाज मारमुरके टलंगाए रहए । बहे साँप सडो रहए । तओ तपतप रस चुचियाबए । राजा बहुत पियासो रहए । अपनि नोकरसे कही, 'पानी लाबओ पानी लाबओ ।' बे नोकर साँपमैसै चुचियानो रस भरन ताहिँ दुन्का धरदैं । बाज उपर बैठके देखए । बाज कही, 'राजा जो जा पिलै मर जाबैगो । बीस चुहिरहो हए ।' बाज आइके बा दुन्कामैसे गिराइदैं । फिरके धरदइँ । बाज फिरके धुड्काइदैं । राजाके गुस्सा लगो पटदिना मारदैं । और कही, 'जाओ फिरके जाओ लौटा लैके जाओ और जल्दि लिआबओ ।' नोकर चाकर पानी भरनताँही उपर गए तओ । गजगजाने साँप देखि । नोकर कही, 'राजा साप जा ता साँप कि बिस हए । अगर पिते तओ मरजाते ।' तओ राजा बाज मारके पछुतानो ।

अब बे हुनासे फिरके नेगी । नेगतनेगत बीच वनमे अपनि लौडियाकि घर पुगे । हुआ जाइके बेठे । लौडिया ता जानगै कि जा मिर पिता हए कहीके । राजा ना जानपाइ । सबके पानी पिबाई । दुसरी लत्ता पैँधके आइके गोरो धुबाइ । गोरो धुबाइके खानु पकाइ । जब पानी देनके आइ तओ दुसरी लत्ता पैँधके आइ । खानक गए । खाना देत पेति दुसरी लत्ता पैँधके आइ । फिर तेसरी दाउँ खाना चलान गइ तओ दुसरी लत्ता पैँधके गइ । अब राजा अपनि दम्दासे कही, 'यार तिर कितनो बैयर हएँ ?' जा बात बक लौडियाफिर सुनत रहए । तओ लौडिया अपनि दौवासे कही, 'देखओ पिता जी तुम कहेरहो कि कौनक भागसे खात हए । तओ मए अपनि भागसे खाएरहो हओ । मए तेरि छोटी लौडियाँ हओं ।' तओ राजा अपनि लौडियाके वनमे पठेके लजानो । और बक अच्छो देख्के खुसी हुइगओ ।

(स्रोत व्यक्ति : चैतराम राना, देखतभुली, कञ्चनपुर)

दानी राजा

संकलनः बासमती राना

पुनर्वास न.पा. १, कञ्चनपुर

कोइ एक सहरमे बडो राजा बैठत रहए। बो बहुतए दयालु और दानी रहए। कोइ दुसरो सहरमे एक जोडी बुढ्ढा बुढिया बैठत रहएँ और बे विचारे गजबए गरीव और दुःखी रहएँ। बे दिनभर भिख मँगते बडी मुस्किलसे सन्झी और सबेरे पहारको पेट भरते। प्रायः ऐसिए रोजिना बिनको गुजर पसर चलत रहए। एक दिन बुढिया अपन बुढ्ढस् कहि -"बुढ्ढा बुढ्ढा ! एक सहरमे कोइ एक बहुतए दयालु और गजबी दानी राजा हए। बे बहुतनके दान करे करत हएँ। नाहोएत तुमहुँ दानी राजा ठिन जाबओ। बे आपनौक दान दैदेहएँ, फिर बेहे दओ भओ दानसे गुजर पसर करलेहएँ, हएकी नाएँ ? ऐसे आपन कितनो दिन भिख माँगत रहेहएँ ?" बुढियक बात सुनके बुढ्ढाके ठिकए लगि। और बो दानी राजा ठिन जानके ताहिँ तयारओ हुइगओ।

बुढिया दिनभर माँगके लाओ भओ सिधो 'जौ' को चुन पिसके अपन बुढ्ढक दएदइ और प्रेमसे कहि -"डगरमे जानपेति जितनो दाओँ प्यास लगए उत्निए दाओँ जा जौको चुन पानीमे घोरके सतुवा बनाएके पिइ लियौ। जासे तुमर भुँख मरजएहए, डगरमे कौन दैदेहए तुमएँ खानक ? खानियाँ चिज कहाँ पएहओ ?" बुढ्ढा बुढियक कहि बात सब सुनि और जौको चुन झोरामे धरके दानी राजासे मिलन घरसे निकरपडो। बुढियक बताइ निर्देसन अनुसार जैए दाओँ प्यास लगए उत्निए दाओँ पानीमे सतुवा घोरके पिइ लेबए। तमान चढाइ हुराइमे सैतात नेगत बियावान जङ्गलकी गजबी लम्बी डगरकी यात्रा पुरी करत हए। बो बुढ्ढा बडी दुःख और मिहेनतसे दानी राजा घर पहुँच जात हए। जब बो राजा ठिन पहुँचत हए बेहे बखत राजा कोइ दुसरेके सोनो दान देत देख लेत हए। बडी दुरसे आओ बुढ्ढाको मन हरो हुइ जात हए। जब बुढ्ढक पाली आइ, बो अपनि सारी दुःख और समस्या राजाके सुनाइ। और गुजर करन ताहिँ हात फैलात हए। राजा सब बात सुनि और बुढ्ढाके फिर सोनो दान दैदइ। गरीव बुढ्ढाको मन हरियाए रहो और बहुतए खुसी हुइके सोनो झोरामे धरि। विदाबारी माँगके हुँनासे घरे लौटपडो।

बियावान जङ्गलकी लम्बी डगरमे लौटनपेति अचानक तिन चार जनी अन्जाने आदमी मिले । बे अन्जाने आदमि हातमे लकडी लैके डगर गँसे बैठे रहएँ । बे हौंनएँ बुद्ढाके रोकीँ और कहीँ -

"देबओ सोनो । हिँया धरओ, जा सोनो हुँना हम देत हएँ और हिँया हम लैलेत हएँ ।" विचारो गरीव बुद्ढा कछु ना कही । चुपानो राजाको दओभओ सोनो बिनके दैदेत हए । हुँनासे बुद्ढा फिर राजा ठिन लौटयातहए । डगरमे भइ सबए बात राजाके सुनात हए । बाकी बात सुनके राजा फिर बुद्ढाके सोनो दैदेत हए । सोनो झोरामे धरके बुद्ढा फिर हुँनासे घरघेन लौट पडत हए । लौटनपेती बेहे बियावान जङ्गलमे फिर पहिलिएके अन्जाने आदमि बुद्ढाके रोकत हएँ और सोनो फिर माँग लेत हएँ । विचारो बुद्ढा हुँनएसे फिर तिसराएके राजा ठिन माँगन लौटयात हए ।

तिसराएके जब बुद्ढा राजा ठिन फिर पहुँचत हए । तओ राजा कहत हएँ -

"मएँ तुमए दुई दुई दाओँ सोनो दएडारो हओँ, अब कए दाओँ देमओँ ?" तओ बुद्ढा राजासे फिर कहत हए -

"महाराज ! हेना तुम मोके सोनो देत हओ, और बियावान जङ्गलमे तुम फिर बेहे सोनो माँग लेतहओ, मोके गुजर पसर करनके बहुतए आफत हए, महाराज ! मोके दया करओ, सोनो दएदेबौ ।" इतका बात सुनके राजा फिरहुँक तिसरो दाओँ गरीव बुद्ढाके सोनो दैदेत हए और जा चोटि राजा अपनओँ बुद्ढएसँग जान तयार हुइजात हए ।

राजा बुद्ढासे कहत हएँ -

"मएँ तुमएँ सोनो दान त देतहओँ पर फिर्ता त मएँ ना लेतहओँ । डगरमे बे कौन हएँ, तुमसे सोनो लेनबारे ? चलओ महुँ तुमरसँग जएहओँ । बिनके मोहुँके देखन मन हए ।" इतकए कहत राजा अपनो घोडा सम्हारीँ और गरिव बुढढएसँग चलपडे । गरिव बुढा अग्गु अग्गु और राजा घोडामे सबार पिछु पिछु जाए रहेहएँ । जब बे बिच जङ्गलमे पहिलिएक ठावँमे पुगत हएँ, पहिलिके तिन चार अन्जाने आदमि लकडी लैके डगर गँसे बैठे होत हएँ । हुँना पुगतए बुद्ढा बेहि अन्जाने आदमि दिखातए राजासे कहत कही -"देखओ महाराज ! जेहीँ आदमी हएँ, सोनो लेनबारे । जेहिँ कहत हएँ, हुँना हम सोनो देत हएँ और हिना हम बेहे सोनो फिर्ता लैलेत हएँ ।"

फिर राजा बिनसे पुछीँ -"तुम कौन हओ ? मेरो दओभओ सोनो जा गरिवसे काहे माँग लेतहओ ?"

बे अन्जाने आदमी जवाफ लौटात हएँ -

"हम जा बुढ्ढक सुक सनिचर (सनिदसा) हएँ ।" बिनसे राजा फिर कहीँ

"तुम औरु कोइ ठिन जाएसे ना हुइहए ? जाके छोड देबओ, जाके जान देबओ । जा विचारो बहुतए गरिव हए, जाकी बुढिया विचारी घरमे भुँकी प्यासी आसरा देखके बैठी हए ।"

इतकएमे बे एकए अवाजमे कहत हएँ -

"अहँ हुइजएहए, हम जाके छोडके औरुसँग फिर चले जएहएँ, पर जामएँ कौन ठिन हो ?"

राजा फिर कहीँ-

"ऐसे करओ, तुम बाह्र वरसतक मेरीसँग आए जाबओ । मेरिएसँग तुम रहबओ । जा बुढ्ढाके जान देबओ ।" फिर सुक सनिचर (सनिदसा) जो रहे बो गरिव बुढ्ढाके छोडके राजा ठिन आएगए । गरिव बुढ्ढा सोनो लैके घरे आएगओ । कुछ सोनो बेँची कुछ पच्छुके ताहीँ धरलइँ । अब बुढ्ढा बुढियनके भिख माँगन ना पडए । सोनो बेँचके आइभइ रुपिया टकासे नुन तेल खरिदके गुजर पसर कर लेमएँ ।

जबसे सुक सनिचर राजा ठिन आए तौसे बे दानी राजौकी धन सम्पती धिरे धिरे सत्यानास करन लग्गए । कुछदिन बाद राजक सब धन सम्पती सत्यानास हुइगइ । अपनि भै सम्पती सत्यानास होत देखके दानी राजा बो सहर छोडके कुइ औरी सहरमे जाएके बैठन ताहीँ सोंच बनाइ । फिर कुछदिनमे दानी राजा बो सहर छोडके औरी सहरमे जाएके बास करन लगो ।

एक दिन राजा घोडा लैके जङ्गल किनारे घुँमत फिरन निकरो । घुँमत फिरत थकिगओ और एक रुखाकी छाहिँमे विश्राम करन लगो । घोडाके अपन टाङक उँघटामे बाँधके राजा विश्राम करतए करत रुखा तरे सोएगओ । दानी राजा बेहे रुखा तरे सोत रहए । बेहे बखत बेहे सहरको कोइ औरो राजा पुगो । दानी राजक टाङक उँघटामे घोडा बँधो देखी । बो राजा जो रहो अपनो घोडा दानी राजक टाङक उँघटामे बाँध दइ और दानी राजक घोडा चुराएके लियाइ । फिर बो सहरको राजक दरबारमे राजाको घोडा चोरी हुइगओ कहिके एक कान दुई कान मैदान हुइगओ । चारौघेन हल्ला फैलगओ । "घोडा कहाँ गयो हुइहए ? कौन चुराए लैगओ हुइहए ?" कहिके दरवारमे बहुतए चर्चा भइ । फिर राजाके सेना और भाई भारदार सबए मिलके राजाको घोडा ढुडन लगे । सहरमे चारौघेन चप्पा मारन लगे । चारौघेन ढुडत ढुडत सेना लोग राजाको घोडा त दानी राजक टाङको उँघटामे

बँधो पाएगए । बे दानी राजासे चुट्टा कहीँ, हुँनए मारीँ पिँटीँ और घोडएसँग पकडके दरवारमे लियाइँ ।

दरवारमे लाएके दानी राजाके खुब मार पिट करीँ । "कोइ कहएँ, जा बैरी चुट्टा हए । जाको हात काट देमएँ त कोइ कहएँ टाङ काट देमएँ ।" इतकए कहतए कहत दानी राजक दुने हात टाङ जो रहएँ काट दइँ और बिच डगरमे फेँक दइँ । विचारो दानी राजा त डुंडा हुइगओ । अब त बिच डगरसे कहुँन जाए पबैया, हुँनए पडो रहो विचारो दानी राजा । डगरके निगैया चहुँ जौन फिर आमएँ, "जा चुट्टा हए कहिके लातसे धकेलके गुडमुडिया खबाए देमएँ ।" भुँखो प्यासो डुंडो बनो दानी राजा सैरोभर पडो पडो लुढकत रहाए । विचारो दानी राजा का करए, बाके उपर सुक सनिचर (सनिदसा) जो चढे रहएँ । बेहेमारे नाहोनियाँ नाहोनियाँ दोस, दुःख और कस्ट बिरोग भुगतन् पडो रहए ।

बेहे सहरमे राजक दरवारके परोसमे एक जोडी तेली और तिलनियाँ नावँके तेल व्यापारी बैठत रहएँ । बे रोजिना बेहे डगरमे तेल बेचन जाए करे करत रहएँ । बिच डगरमे पडो पडो डुंडा दानी राजा बेहे डगरए डगर नेंगत जात देखके तेली और तिलनियाँसे कहन लगो -"सुनओ त हजुर ! तुम बेचन लैजाए रहे बो मलैया भुलरा मैंको तेल थोरि थोरि मेरे कटे जे हात टाङनमे लगाए देबओ, "कृपा करौ हजुर ! गजबए पिराए रहो हए । तुमर बो मलैयाको तेल कबहुन खाली हुइहए, बो सदा भरि रहेहए कहिके आसिर्वाद फिर दैदेत हए ।" पर तेली तेल लगानके बदला दानी राजाके उल्टए गऱ्याइ और अपन बुढिया तिलनियाँसे कहीँ -

"जा चोर हए, ऐसि होन दे जाके । हिनए मरन दे, जक बात मत सुनिए ।" इतकए कहत बे विचारो डुंडा राजाके होनए छोडके तेल बेचन सहर घेन निकरगए । तिलनियाँ सहरमे तेल बेचन लगि, दिनभर तेल बेची पर बाकी तेलकी मलैया खालिन भइ, पुरी डबाडब भरिए रही । एकए मलैया तेल बेचके उठी रुपिया टका त बोकनके फिर बोझ हुइगओ, गजबी आमदानी भइ । तिलनियाँ मनए मन खुबए विचार करत हए -"आज जा कैसो अचम्मो भओ, दिनभर बेचे तहुँ मलैया मैको तेल त एकुन घटो, कहुँ बेहे डुंडक आर्सिवाद त नाएँ लग्गइ, कुछ त जरुर हए बक बोलीमे ।" इतकए सोचके बो मनए मन बाके घरे त जरुर कैसुहुँ उपाव ढुडके लैजान पडैगो करके मनमे धरलइ ।

अखबन्नि बेरा तेल बेचके लौटक आत हएँ, जब बे डुंडा राजा ठौन पुगे, बो विचारो बिच डगरमे आंसु टप्कात सुस्कत रहए । तेलनियाँ अपन बुढ्ढा तेलीसे कहीँ -

“बुद्ढा बुद्ढा ! ना होएत जा डुंडाके घरे लैचले जामएँ, जाके कोल्हुक (गन्ना पिरनिया मसिन) लाठमे बैठाए देहएँ, दिनभर जा बरधा दलात रहेहए, कि कैसो ?”

“हाँ जा बात त तए ठिकए कहो री बुढिया । लैचले जामएँ तओ,” तेली कहत हए ।

इतकए कहत तेली जो रहो डुंडा दानी राजाके कँधहामे बैठाइ और घरे लियाइ । घरमे पुगतए तिलनियाँ बक कटे हात टाङमे हर्दी देल लगाए दइ और कोल्हुक लाठमे बैठार दइ । काम पडोत पडो हरदी तेलसे कुछ कटे हात टाङकी पिर त कम भइ कहिके दानी राजा मनए मन थोरी थोरी खुसी हुइजात हए । रोजिना साँझ सबेरे तिलनियाँ राजक कटे हात टाङमे तेल लगाए देबए । विचारो डुंडा राजा कोल्हुक लाठमे बैठके रातदिन बरधा घुँमातए इँख पेरत रहबए ।

कुछदिन बाद दानी राजाके डुंडा हात टाङके घाव ठिक हुइगए, पर बो डुंडए रहिगओ । एकदिन विचारो दानी राजा कोल्हुक लाठमे बैठो बैठो गित गान लगो । बो गित जौन हात टाङ काटि रहएँ बेहे राजाकी लौंडिया फिर जानत रहए । जैसी डुंडा दानी राजा गित गान सुरु करी । बेहे बखत राजक लौंडिया सोनबारो बङ्गलामे इकबरी दिया पजरन लगीँ । राजक लौंडिया अपन बाँदिन (नोकरानीन) से कहत हएँ -“का आज तुम दिया ना बुताएहओ ?, दिया त पजर रहीँ हएँ ।” फिर बाँदि जवाफ लौटात हएँ -

“महारानी साहेबा दिया त हम बुताए दए रहएँ, पर जे फिर कैसे पजर गइँ ? बडा अचम्मो भओ आज ।” “बुताए देबओ सबए दिया,” राजक लौंडिया बाँदिनसे फिर कहत हएँ । दानी राजा कोल्हुक लाठमे बैठो बैठो फिर गित गुन गुनान लगत हए । और रानीक दरवारमे बे दिया फिर पजर पडत हएँ । राजक लौंडिया बाँदिनसे फिर दिया बुतान कहत हएँ और बाहिर का हुइरहो हए कहिके भेव लेन कहत हएँ । बाँदी दिया बुतात हएँ और बाहिर का हुइरहो हए कहिके निकरके आँगनमे ठाडके छनक लेत हएँ । बाहिर छनक लेनपेती तेलीके घरसे गितकी गुन गुन आवाज सुनाइ देत हए । बेहे बात बाँदी महारानी सहेबाके सुनात हएँ । और फिर सब अपने अपने कोनेमे सोन चली जात हएँ ।

राजक लौंडिया रातभर खुब अच्छेसे सोइन पात हए । थुर थुर मुँड पिरानो जैसो महसुस होत हए । तबहि रानी सबेरे देरतक खटियए ना छोडत हए, लेटि रहत हए । सबेरे देर तक कोनो पकडे लौंडियक देखके रानी (ऐया) मस्कात हए -

"बेटी रानी साहेबा उठओ अब देर हुइगै । स्नान करलेओ । पुजापाट करलेओ, और भोजनको समय हुइगओ हए, जल्दी उठओ ।" लौंडिया ऐया (रानी) के जवाफ लौटात हए -

"आज मेरो सिर पिराए रहो हए ।" ऐया (रानी) फिर कहत हए -

"सिर पिरानको भ्याना का हए ? बतबओ त ।" लौंडिया फिर जवाफ लौटात हए -"मिर व्याह करन मन हए, मेरो व्याह करदेबओ ।"

रानी राजाके लौंडिया बडी हुइगइ हए, बक सङ्गिन सब व्याह करडारीँ हएँ कहिके सुनात हए और लौंडियाको व्याह करदेमएँ कहिके बात फिर धरत हए। राजा और रानी बिच सरसल्लाह पाछु बाको व्याह करन ताहीँ समर जात हएँ। फिर राजा अपन लौंडियक ताहीँ दमदा ढुडन देस विदेसके बडे बडे राजा महाराजनके दरवारमे सन्देसो भेजके निउतो देत हए । एकदिन राजक दरवारमे राजक लौंडियक व्याह करन सजधजके देस विदेसके राजनके तमान सद्दी मुसद्दी लौंडा रथ और सजे घोडा लैके आएजात हएँ ।

राजक दरवारमे धुमधामसे बाजागाजाको अवाज गुन्जन लगत हए। परोसी तेली घर बैठो डुंडा दानी राजा फिर राजाके दरवारमे गुन्जरहो आवाज सुनलेत हए । फिर तिलनियाँसे पुँछत हए -

"तिलनियाँ तिलनियाँ आज गावँमे का हुइरहो हए ?, बडा कोहराम बित रहो हए, का को अवाज गुन्ज रहो हए हैं ?, तोके पता हए का ?" तिलनियाँ दानी राजासे कहि -

"आज जा सहरमे राजाकी लौंडियाको व्याह हुइरहो हए । बडे बडे माइक और धाधडा बाज रहे हएँ, बेहेक अवाज आए रहो हए ।" इतकए सुनके दानी राजा व्याह देखन जान मन करन लगत हए। तिलनियाँसे कहत हए -

"तुम व्याह देखन जएहओ ? महुं जएहओं ? हला ।"

फिर तिलनियाँ कहत हए -

"तए कहाँ जएहए, बे राजक सेना और भारदार तिर दुने हात टाङ काटी रहएँ, होना जएहए त तोके फिर बे लुढकाए लुढकाए मारङ्गे, अहँ तए मतही जैए होना ।"

तिलनियक बात सुनके दानी राजा उँचो उँचो ठिहा दिखातए फिर कही -

"बो गोवरको सुको माँदको उँचो उँचो ढिहो हए। मोके होनए बैठार देबओ। मए होनए बैठके व्याह देख लेहओं ।"

तिलनियाँ अपन बुढ्ढा तेलीसे कही -

"नाहोए बैठार देबओ हो, हुँवा उँचुओ हए। विचारो बहु देख लेहए छोटी महारानीक व्याह।"

तेली डुंडा राजाके उठाइ और बेहे उँचो उँचो माँद उपर लैजाएके बैठाए आओ। थोरी देर बादम राजक लौंडिया नइँदुलहिन बनी सजिगजी हातम वरमाला लैके हथिया उपर सवार आँगनमे निकर पडी। सोह्र सिँगार करे हार घुँघटमे सजी नइँदुलहिन बिकट सुथरी दिखात रहए। दरवारमे आएभए देस विदेसके सद्‌दी मुसद्‌दी राजा स्वर्गकी अप्सरा जैसि नइँ दुलहिनके देखके लल्च्याए जात हएँ। और सबए मनए मन बो वरमाला मिर घेँटम डार देती कहिके सोँचत हएँ। हथिया उपर सवार रानी नइँ दुलहिन इतए उतए देखि और डगर किनारे उँचो माँद उपर बैठो डुंडा दानी राजा घेन हथियाके लैगइ। हुँना पुगतए रानी हातम लए वरमाला डुंडा राजक घेँटम पैंधाए दइ। डुंडा राजाके वरमाला पैंधात देखके इकबरि सबजनि किकियाए पडत हएँ और कहन लगत हएँ -

"हत्तेरी ! देखओ त रानी नइँ दुलहिन त भुलगइँ यारौ, इतने सुथरे सुथरे राजनके छोडके, कहाँ बा डुंडाके वरमाला पैंधाइ दइ।"

राजाके सेना, भाई भारदार जो रहे डुंडा राजाके गुडमुडिया खबात पिटन लगत हएँ और घेँटको वरमाला निकारके रानी नइँ दुलहिनके पकडाए दइँ। विचारो डुंडा राजा घिसटत घिसटत फिर बेहे गोबरको सुको माँद उपर पहुँच जात हए। फिर नइँ दुलहिन इतए उतए देखत हए और बेहे डुंडा राजा ठिन फिर हथिया लैचलि जात हए। हुँना पुगतए वरमाला बेहे डुंडा राजक घेँटम फिर पैंधाए देत हए। फिरहुँक सब किकियाए पडत हएँ -

"हत्तेरी ! रानी नइँ दुलहिन त फिर भुलगइँ, वरमाला फिर बेहे डुंडएके पैंधाइँ दइँ।"

वरमाला फिर डुंडा राजक घेँटसे निकार देत हएँ। और नइँ दुलहिनके दैदेत हएँ। एसिए नइँ दुलहिन रानी वरमाला बेहे डुंडा दानी राजाके घोँटम तिन चार चोटी पैंधाए देत हए। लौंडियक हरकत देखके राजा कहत -

"जा भुलतउलत नाहए, जक गौसक मन्सिए लगो हए बो डुंडा, मनएसे जानबुझके बरमाला बहे डुंडाके पैंधात हए। जक मरन देओ, करम जानए जाको, जैसी करए, करन देओ बेहेक मनको।"

फिर राजा अपन लौंडियक व्याह बेहे डुंडासँग करदेत हए। और राजा अपने सातौ लौंडनसे कहत हए -

"यिनको घरबार कछु ना हए । लौंडियए हए अपनो खुन हए, यिनके रहन बैठन ताहिँ बो घोडसार किनारेको एक कोनो दएदेओ, हुँनए बखत काट लैंहएँ ।"

फिर डुंडा दानी राजा और नइँ दुलहिन राजाकी लौंडिया (रानी) घोडसार जौडेको कोनोमे रहिके जेनतेन जिवन गुजरा करन लगे । धिरेधिरे बखत कटत गओ और राजा उपर बास करत आओ सुक सनिचर (सनिदसा) को समयफिर खतम होन लगो रहए । फिर एक दिन बो डुंडा दानी राजा अपन रानीसे कही -"जा अपन दौवासे घोडा, बन्दुक और ढाल तरवार माँग ला । आज मएँ सिकार खेलन जङ्गल जएहओं ।" रानी अपन दौवा ठिन गइ और कही -

"दौवा दौवा, तुमर दमदा घोडा, बन्दुक और ढाल तरवार मँगाइ हए, बो आज सिकार खेलन जङ्गल जबैया हए ।"

राजा अपन सातौं लौंडनसे कहत हए -

"जौन्छो घोडाके तुम बाँससे खानु पानी देत हओ, बेहे घोडा दैदेओ ताकी बो घोडा जिनके मार डारए । और जौन बन्दुक और ढाल तरबार आपन पकडत हएँ तओ साँप बन्जात हएँ बेहि दैदेबओ जिनके डसके मार डारए ।"

राजाकी लौंडिया सब बात सुनि और अपन खुइँदा डुंडा राजाके दौवक सबए बात सुनाइ । डुंडा राजा अपनि गसती निकारी और कही -

"ले जा गसती लैके जा, गसती घोडा, बन्दुक और ढाल तरवार सबके दिखाए दिए और सबके लियैए, कुछ नाहोबैगो, हबैए चलो जा और लिया ।"

रानी राजक गसती लइ और घोडा, बन्दुक, ढाल तरवार लेन गइ । राजक कहो अनुसार सबके गसती दिखाइ, फिर सहजए घोडा, बन्दुक और ढाल तरवार सबए लैके आएगइ । लौंडियक घोडा, बन्दुक और ढाल तरवार सबए सहजए लैजात देखके राजा दौवा और लौंडा सबए अचम्मो मानगए । बे मनएमन सोचन लगे -

"हम त हातले घोडाके अन्न पानी दैएन पात रहएँ, घोडा त मारन दौरत रहए और बन्दुक ढाल तरवार छुतए खिना साँप बन्जात रहएँ । जाके त कछुन भओ । सहजए पकडे लएजाइ रही हए । कैसो अचम्मो, बड गजब दिखाइ दइ !"

फिर रानी अपन डुंडा राजक घोडा उपर बैठारी बन्दुक, ढाल तरवार घोडामे धरी और कर्‍रेस् रस्सिसे घोडामे बाँध दइ । अब घोडामे सबार डुंडा राजा सिकार खेलन जङ्गलघेन निकर पडो । बेहे दिन दानी राजाको सनिदसाको बाह्र वरस फिर पुरो हुइगओ । और जङ्गल पुगतए खिना दानी राजक सबए हात टाङ पहिली जैसे

ठिक हुइगए । बो सहि सलामत हुइगओ । पहिली तरहा हुइगओ । इतए घरमे फिर राजाको घोडसार बडो भारी महलमे बदलगओ । महल भितरके सबकुछ सर-समानन्से सजी सजाउ हुइगओ । बो घोडा और बे बन्दुक, ढाल तरवार सब दानी राजयके रहएँ । फिर दानी राजा जङ्गलमे खुब सिकार करी । दानी राजा कैयौं चितर, डढैया, सौजा मार गिराबए । और बिनको कान, पुँछ इकल्लो काटके अपन झोरामे धरत जाबए । बिनकी पुरी सरिर हुँनए छोड देबए । ऐसिए राजक सातौ लौंडा फिर बेहे दिन सिकार करन जङ्गलमे आए रहएँ । बियावान जङ्गलके बीचमे राजक लौंडा उइसि मडरात फिरएँ । बे अपना कोइ सिकार ना करपाइँ । पर बे दानी राजक सिकार करे भए सौजा, डढैया उठात गए । भुँके प्यासे पिटागुन बने घुँमत फिरत बे बहुतए व्याकुल हुइगए । आगु चलत चलत अचानक एक ठावँमे धुँवारो होत देख लेत हएँ । फिर बेहे धुँवारो होत ठावँघेन चल पडत हएँ । हुँना त बिनहीको बहानुइँया डुंडा राजा धुँवारो करे बेफिकर अरामसे बैठो होत हए । बो डब्बा भर पानी फिर लए होत हए । राजक लौंडा प्यासके मारे व्याकुल हुइगए हएँ कहिके सुनात हएँ । फिर कान और पुँछ कटि सौजा डढैया दिखातए जे सिकार हम मारे हएँ हो जिनकी कान और पुँछ त हमर बन्दुक उडाइ दइ कहिके बतात हएँ ।

दानी राजा मनएमन खुब हँसत हए और बिनसे कहत हए -"ठिक हए हो, पानी त मएँ तुमएँ पिबाए देहऔं पर एक मिर सर्त हए । मानन् पडएगो, मएँ तुमएँ पानी देहऔं और बदलामे तुमर चुतरमे तत्तो तत्तो तामेक सिक्कक सात सात छाप लगएहऔं, अगर मञ्जुर होबओ तओ जा पानी पएहओ ।"

प्यासक मारे व्याकुल बने राजक लौंडन मैसे कोइ कहत हएँ तत्तो तत्तो तामेक छाप त गजब पिरबएहए, कोइ कहमएँ पिराबए त पिराबए । पानी पिन त मिलैगो । हिना प्यासक मारे साँस रुकि जाए रहि हए । एक घडि पाछु राजक सातौ लौंडा पानी पिन ताहीँ सर्त मानन मञ्जुर हुइजात हएँ । उनको बहानुइँया दानी राजा तामेक सिक्का तत्तबात हए और एक एक करके सातौ जनिन्के चुतरमे सात सात छाप लगाएके पलिसपाला पानी फिर पिन देत हए । पानी पिके राजक सातौ लौंडा दानी राजक मारे भए सौजा डढैया घोडामे धरके घरे आएजात हएँ । घरे पुगतए दौवा राजासे कहत हएँ -

"देखओ महाराज । हाम कितनो सौजा, चितर, डढैया सिकार करके लाए हएँ, और हमर बन्दुककी पावरसे यिनकी कान, पुँछ त कहाँ उडगइँ कहाँ, पतए न चलो ।"

दानी राजा फिर पिच्छु पिच्छु धिरे धिरे घरे पुग्जात हए । घर पुगतए सब चिजसे भरो पहिली दरवार देखत हए । बैयर रानी तरहा बनेके बैठि बहुतए खुसी देखत

हए । सबघेन पहिली जैसो भरो देखके अपनऔं फिर बहुतए खुसी होत हए । उतए सास सुसरो राजारानी दानी राजक दरवारमे भओ बदलाओ देखके बेहु बहुतए खुसी हुइजात हएँ । खुसी होतए अच्छो दमदाके रूपमे मानन् लेत हएँ । राजक लौंडा सिकार करके लाइभइँ चितर, डढैयक बुट्टिक अनेक परिकार बनबाएके राजा लैंडिया और दमदाके खानक ताहिँ हटकना करत हएँ । दानी राजा और रानी दुने जनी खानक जात हएँ । दानी राजा अपना सिकार करेभए चितर डढैयक कान और पुँछ फिर सँगए झोरामे धरे होत हए ।

बे दुने पुगतए राजा कहन लगत हए -

“देहओ त दमदा मेरे लौंडा त कितने बडे सिकारी हएँ । यितनो सौजा, डढैया सिकार करके लाइँ हएँ, देखओ त बे टँलगे हएँ । और यिनकी कान पुँछ त कितए उडगइँ कितए । बन्दुककी पावरसे कान पुँछ त अग्गास उडाए दइ । तुमहुँ गए रहओ सिकारके, तुम त एकओ सिकार ना पाए । अपन जिठन्मनन्से सिक लियौ, अरे बहुत सिकारी हएँ लौंडा मेरे ।”

दानी राजा खक्का मारके हसन लगत हए और कहात हए -

“सुनओ बबा ! जे जितनो चितर, सौजा और डढैया हएँ, बिनके महिँ सिकार करो हओं । तुमर लौंडा त मेरे छोडे भए जे सब सिकार उठाएके लाइँ इकल्लो हएँ । ना मानओ त देखओ जिनकी कान और पुँछ जे मिर झोरामे हएँ । और अपन सब लौंडनकी चुतरमे देखओ तामेक सात सात डाम छपे हएँ ।”

राजा और राजक सातौ लौंडनकी सोसादम हुइगइ । बे सब अपनी राजसी ठाटबाठ, बढप्पन और घमन्डकी आत्मग्लानी करके दानी राजा दमदाके अग्गु झुक जात हएँ । दानी राजक महानता, धैर्यता और आत्मबल देखके राजा बहुत हरसित होत हए । फिर अपनी लौंडिया और दमदा दानी राजाके दिलसे सलाम करके एक असल धिरिया दमदाके रूपमे स्विकार करलेत हए ।

राम राम ।

स्रोत : गुलावी राना

श्रीकृष्णपुर न.पा. ३, देखतभुली, कञ्चनपुर ।

राजा हरि भर्थरी

– बासमती राना

ब्रम्हलोकमे एक दिन राजा हरी भर्थरी ओ रानी पिङ्गलाके सत्वादीताके चर्चा चलैत रेहे । सब देवता कहे, “पृथ्वी लोकमे राजा हरी भर्थरी छै, बडा सत्वादी छै । रानी पिङ्गला बडा सती छै । दुनुमे बडा प्रेम छै, दुनु एक दोसरसे अलग नै हैछै” । ब्रम्हा सिष्य गोरखनाथ केहे, “हम हरी भर्थरीके चेला बन्याके ब्रम्हलोकमे ल्याआनबै” ।

ब्रम्हा सिस्य गोरखनाथ जोगीके भेषमे हरि भर्थरीके दरवारमे येलै । “अलख निरन्जन, भिक्छा दे” कैहके पुकार लगैलकै । नौरिया चौरिया भिख दैले येलै, गोरखनाथ नै लेलकै । रानी पिङ्गला येलै सोनाके थारीमे भिख (असर्फी, हिरा, मोती, बस्त्र्, मिस्टान, पकवान आदि सब) ल्याके । गोरखनाथ नै लेलकै । रानी मधुर बचनमे पुछलकै, “की लेबही भिखमे” ?

जोगी गोरखनाथ कहैछै, “हमरा सिर्फ राजा हरी भर्थरी चाही । हम ओकरा चेला बनैबै” ।

रानी पिङ्गलाके देहमे बजर खसल नहाइत झट्का लाइग ग्याल, गोरखनाथके बात सुइनके । रानी घुइमके महलमे चैल गेलै । राजा हरि भर्थरी येलै बात बुजहैले ।

राजाके कहैछे गोरखनाथ, “चल हरिया तों हमर सङ्गे, हम तोरा चेला बन्याके ब्रम्हलोकमे ल्याजेबौ” । राजा नै मान्लक, घुइमके दरवारमे चैलग्याल ।

गोरखनाथ दुरेसे राजाके कहलकै, “गोरखनाथके झोली तोहर दरवारमे लटक्या दैचियौ । जै दिन तौहर मन भोरतौ राजसुखभोगसे, रानी पिङ्गलासे तै दिन यी झोली उठ्या लिहे । अलख निरन्जन, जय गुरु गोरखनाथ कैहके पुकारिहै । हम तुरन्त हाजिर हेबौ” । गोरखनाथ चैलग्याल ।

गोरखनाथ ओहै राजमे एकटा गरिबके घरमे डेरा जम्याके बैठल । दिन भोइर भिक्छाटन करे, राइतके गरिबके घरमे भोजन बन्याके ख्या, आरामसे रेहे । गरीब दुनु परानी दिनभोइर रोजीरोटी करे ज्या, जनबोइन । आइनके आपन बालबच्चाके खानापीना करे, आपन दिन गुजर चलाबे । गोरखनाथ ओई गरिबके भोरेभोर सिखाबे, “जय गुरु गोरखनाथ” । गरिब कहे, “जय गुह गोबरनाथ” । गोरखनाथ सिखाबे, “अलख निरन्जन” । गरीब कहे, “अलन खलन भन्जन” । गरीबके कतबो सिखेलकै त ऊ नै सिखे सकलकै । एक दिन गोरखनाथ एकटा अमरफल सृजना

केलक आ ओई गरिबके देलक । कहलक, “यी अमरफल चियै । यी फल खेबही त अमर भ्याजेबही” । गरिब केहे, “तौं हमरा मारैके बुद्धी करैछ्या, बिखमाहुर खिय्याके माइर देब्या” । गोरखनाथ एकटा सुखल गाछमे अमरफल भिऱ्याके देख्या देलकै, गाछमे तुरन्त हरियाली लाइग गेलै । गरिब अमरफल लेलकै आपन घरबालीके दैले गेलै, खाइले कहलकै । गरिबके घरबाली कहलकै, “अमरफल ख्याके अमर भ्याज्याम आ दर्जनके दर्जन बच्चा जन्म्याम । गरिबी और बरह्याम । तैसे अमरफल नै खेब्या” । गरिब दुनु परानी राइतके सरसलाह केलक आ अमरफल राजारानीके द्याके धन लैके निर्नय कर्लक । काइल भोरमे गरीब दुनु परानी राजदरवारमे ग्याल, रानी पिङ्गलाके देखेलक, सब बात कहलक । ओहो सब एकटा सुखल गाछमे भिऱ्याके देखेलक, गाछ तुरन्त हरिहर भ्याग्याल । रानी खुसीसे राइख लेलक आ गरिब दुनु परानीके बहौत धन द्याके पठैलक । रानी पिङ्गला राजा हरि भर्थरीके अमरफल देखेलक, सब बात कहलक । सुखल गाछमे जाँच्लक त राजा खुसी भ्याल ।

राजा रानीके बहौत प्रेम करे । रानीके बरी प्रेमसे कहलक, “रानी पिङ्गला, तों अमरफल ख्याले आ अमर भ्याजो । हम मोइरके जतेक बेर जनम लेबौ त हम तोरे सङ्गे रहबौ” । रानी खुसीसे राइख लेलक ।

ओने गोरखनाथ गरीबके पुछ्लकै, “अमरफल खेलही कि नै” ।

गरिब कहैछै, “हमरौरके अमरफल ख्याके की करबै ? अमर हेबै । दर्जनके दर्जन बच्चा जन्मतै, गरिबी और बढतै, तैसे बढियाँ त राजा रानीके द्याके धन आनलियै” ।

आब गोरखनाथ दोसर योजना बनेलक । राजा दरवारमे नै रहल घरी झोली ल्याके फेर राजाके दरवारमे ग्याल । “अलख निरन्जन, भिक्छा देही, अलख निरन्जन, भिक्छा देही” करे लागल । नौरिया चौरिया याल भिख ल्याके । गोरखनाथ नै लेलक । रानी पिङ्गला याल सोनाके थारीमे बहौत धन ल्याके । गोरखनाथ नै लेलक । रानी पुछ्लक, “तोरा की चाही” ? गोरखनाथ कहलकै, “पहिले एक भिक्छा माङै छेलियौ, आब दुई भिक्छा माङैचियौ । एक राजा हरी भर्थरी, दोसर अमरफल । दुनु देब्या कि एक देब्या, दे नैत तोहर दरवारमे अनसन करबौ” । रानी संकटमे पैरग्याल । राजा दरवारमे नै छ्याल । दरवारमे आइबके जोगी हडताल करे लागल । नौरिया चौरिया सब रानीके सलाह देलक । “अमरफल किह्यात द्यादियौ आ राजा बच्यालिय, कमसेकम राजा त सङ्गमे रहत” । रानी नौरिया चौरियाके सलाह माइनके तुरन्त घरसे अमरफल लाइबके गोरखनाथके

हाथमे द्यादेलक । गोरखनाथ लौटके चैलग्याल । रस्तामे राजा आबैत रेहे, गोरखनाथसे भेंट भ्याल ।

गोरखनाथ झगर लगेलक राजा हरी भर्थरीके । ऊ कहलक, "रानी पिङ्गला तोरेटा विसवास पात्र चियौ ? हमरो विसवास पात्र चियै । यी तोहर अमरफल हमरा एक बचनमे द्यादेलक" । राजाके गुस्सा येलै । ऊ चुपचाप राज दरवारमे गेलै । गुस्से गुस्सामे रानीके गरियेलकै, उन्टा सिधा कहलकै, विसवासघाती कहलकै, रानीके एको बिन्ती नै सुनलकै आ गोरखनाथके लटक्याल झोली दुवारसे लेलकै । राज पोसाक उतारलकै आ तुरन्त जोगी बैनके गोरखनाथके चेला बनैले चैल देलकै । रानी पिङ्गला राजाके प्यार पकैरके बहौत बिन्ती कर्लक । कानल खिजल राजा नै मान्लक । ऊ रानीके झटैकके चैल देलक ।

राजा हरी भर्थरी गोरखनाथ लग ग्याल त गोरखनाथ पुछलकै, "रे हरिया भर्थरिया, राजपाटसे मन भोरलौ" ?

हरी भर्थरी कहैछै "हँ राजपाटसे मन भोरल" ।

गोरखनाथ फेर पुछ्लक, "रानी पिङ्गलासे मन भोरलौ" ?

हरी भर्थरी फेर उत्तर देलक, "हँ, रानी पिङ्गलासे मन भोरल" ।

गोरखनाथ फेर पुछ्लक, "जोगी बनबिही, गोरखनाथके चेला हेबही" ?

हरी भर्थरी उत्तर देलकै, "हँ, जोगी बनबै, गोरखनाथके चेला बनबै" ।

गोरखनाथ कह्लक, "जोगी बनैले पहौनका भिख घरबालीसे माङे परैछै, माता कैहके पुकारे परैछै । जो रानी पिङ्गलासे माता कैहके भिख माइङके लाबिहे" ।

हरी भर्थरी राजदरबारमे ग्याल, गोरखनाथके झोली फैल्याके रानीके पुकारे लागल । माता पिङ्गला कैहके भिख माङे लागल ।

रानी पिङ्गला हफान झफान कानैत याल, डलामे आपन सिरके मकुट, आपन राज पोसाक, गरगहना सब ल्याके हरि भर्थरीके झोलीमे द्यादेलक । अपना हरी भर्थरीके चरनमे पैरके काने लागल । हरी भर्थरी रानीके झटैकके कात केलक आ चैलजाइत रहल । रानी बहौत विलाप केलक । रानीके कानैत कानैत आइंख फुइलग्याल ।

हरी भर्थरी राइतके गोरखनाथके सेवामे रहल । गुरु चेला बातचित करे लागल । गोरखनाथ पुछलकै भर्थरीसे, "रानी पिङ्गला सती कि असती छै" ?

हरी भर्थरी उत्तर देलकै, "असती छै । हमर विसवासघात केलक । ओकरा हम अमरफल खाइले कहने छेलियै । अमरफल अपना नै ख्याके तोरा द्यादेलकौ" ।

गोरखनाथ कहलकै, “रानी पिङ्गला बरी सती छै । ऊ आपन सुहाग बच्याके अमरफल हमरा द्यादेलक । अमरफल त हमर रचल एक काल्पनिक रचना चियै । तोरौरके अलग करैले हम नाटक रचने छेलियै” ।

हरी भर्थरीके मन छटपट करे लागल । “कखनी बिहान हेतैत हम रानी लग ज्याम । बेकारमे हम रानी उपर संका केलियै । काइल भोरे ज्याके ओकरसे छमा माङबै आ ओतै ओकरे साथ रहबै” ।

भोर भ्याल हरि भर्थरी उठल आ गोरखनाथके झोली फेकलक आ रानीके पास दौरल । गोरखनाथ कैहते छै, “हरी भर्थरी, आब राजदरवारमे तोहर जेनाई बेकार छौ, घुइम जो” । हरी भर्थरी घुइमके नै ताक्लक, सरासर अगामाथे भागे लागल ।

ताबे रानी पिङ्गला राजदरवारमे सब दरवारीके बोलेलक, कहलक “राजा हरी भर्थरी बिना हम असगरे राजपाटके योग्य नै रहलियै । हमर उपरमे अविसवासके आरोप सेहो लागल छै । हम अविसवास नै करनेचियै । आपन सुहाग बचाइले अमरफल जोगीके द्यादेलियै । राजा भर्थरी राजपाट छोइरके जोगी भ्यागेलै । हम राजपाट छोइरके सती भ्याजेबै । जारनकाठी आन, अछिया लगाब, घी ढार, हम ओइमे सुतबै, आइग लग्यादिह” कहलकै । दरवारी सब तहिना केलक । रानी आइगमे जैरके भसम भ्याग्या, सती भ्याग्याल ।

हरी भर्थरी दौरैत राजदरवारमे याल, “रानी पिङ्गला, हमरा माफ करिह । रिसके कारन हमर मन भस्ष्ट भ्याग्याल रेहे । आब हम कहियोने तोहरमे अविसवास कर्ब । तों सती चहक, रानी पिङ्गला कोने चहक” ? कहैत पागल नहाइत दरवारके तरफ ज्या लागल । दरवारिया सब रोकलक, “रानी त अखैन भर्खर राजा वियोगसे आइग अस्लान कैर लेलकै, रानी त भसम भ्यागेलै” । राजा फेर निरास भ्यागेलै । आइगमे जरल रानीके भसम भोइर देह लगेलक आ फेर गोरखनाथके पास लौटग्याल ।

गोरखनाथ हरी भर्थरीके ब्रम्हलोक ल्याग्याल । ओइठनाके सभामे हरी भर्थरीके सत्वादी राजाके नामसे घोस्ना केलक । एकटा सिंहासनमे बिराजमान करेलक । ओनेसे सती रानी पिङ्गला सेहो आइबके राजा हरी भर्थरीके सिंहासनमे विराजमान भ्याग्याल ।

कथा कहैवालाके फुलके माला, सुनैवालाके सोनके माला, राजारानी दुनु बैकुन्ठ चैलगेला ।

रानी सरङ्गा

-सागर कुश्मी

पुरान जबानक् बात हो । एकठो बहुट भारी लडिया रहे । ऊ लडियक् किनारे एकठो बहुट भारी रुखवा रहे । ओहे रुखवामे एक जोरी बन्द्रा ओ बँदिन्याँ बैठिंट । ओइनके घरडुवार कलक् ओहे रुखवा रहिन ।

एक दिनके बात हो । एकठो बरा बुह्राइल मनैंयाँ नेंगट घुमट ओहे रुखवाठन् आपुगठ । ऊ मनैंयाँ महा सिहरल रहठ । ऊ सोंचठ एकघरी अठ्ठहन रुखवक् छाहींम् बिसालिउँ । मुन्टी घुमैटी उप्परओर हेरठ तब रुखवक् डँरियम् डेखठ बन्द्रा ओ बँदिन्याँहे बैठल । तब ऊ मनैंया बन्द्रा ओ बँदिन्याँहे कहठ- जे यी लडिया नाँघके ओहपार जाईसेकी ऊ मनैंक जलम पाई । यी बात सुनके ओहे बन्द्रा ओ बँदिन्याँ सल्लाह कर्ठें । हम्रे यी लडिया नाँघके मनैंक जलम पाबी कलेसे हमार मजा होजाइ । कुछ काम करके खाइ सेक्ना होजैबी । अत्रा कहटी दुनुजाने लडिया नँघना निर्नय लेथैं ।

तब दुनुजाने संगे लडियम् कुदजैठें । लडियम् जुन यी डिउँसे उ डिउँ पूरा भरल बार्ह रहठ । ठिक बिच लडियम् पुग्ठैं कि बुह्रे मुए लग्ठैं । नाँघे नैसेक्के दुनुजाने घुम जैठैं । दोसर दिन फेन बन्द्रा ओ बँदिन्याँ सल्लाह कर्ठैं कि आज यी लडिया जैसिक फेन नाँघे परी । तब दुनुजाने लडिया नाँघे चलदेठैं । बँदिन्याँ भर जैसिक टैसिक बुह्रेउह्रे मुके लडिया नाँघ जाइठ् । बन्द्रा भर नाँघे नै सेक्के घुम जाइठ् । ऊ मनैंक जलम पाइ नै सेकठ । बँदिन्याँ जुन मनैंक जलम पालेहठ । भर्खरिक् जवान बठिन्याँ महा सुग्घुर होजाइठ् ।

विचारी बँदिन्याँ (बठिन्याँ) का करी ? बल्तल मनैक जलम पाकेफें घर ना घाटके होजाइठ । दिनभर अक्केली लडियक् ढिकुवम् बैठल दिन बिटाइठ । साँझ होगैल रहे । वन्वम्से गयर्वन भैंसर्वन गोरु भैंस लेले घरेओर आइ लग्ठैं । ओइने लडियक् ढिकुवम् पुग्ठैं ते, ऊ बँदिन्याँहे टुसर-टुसर रुइट देख्ठैं । तब सक्कु गयर्वन भैंसर्वन गाँउमे जाके रज्वक्ठन बटा देठैं ।

तबजाके रज्वा अपन सिपाहिनहे लेहे पठाइठ् । रज्वा अपन घर लानके उहिसे एकदिन मजासे भोजकाज करके अपन रानी बना लेहठ । ओहोरजुन बन्द्राहे कर्ल्कहवन् पकरके लैजिठैं । बन्द्राहे गाउँ गाउँ नचाके भिख माँगे लग्ठैं । बन्द्रा अक्को नाचे नैजानठ । विचरा बन्द्रा काकरी । पिट्वा पाकेफें नाचे परठिस् । बन्द्रा नाचत नाचत डट्कर जाइठ । डट्के मारफें पाइठ । ऊ रुइठ ओ भिख माँगठ ।

एक दिन भिख माँगत माँगत रज्वक् दरबार पुग्जैठैं । तब छटके उप्परसे रानी डेखट ते बन्द्राहे मोर ठर्वा हो कहिके चिन्ह लेहठ् । तब रानी तरे उटरके बन्द्राहे कहठ-

तब ते कहुँ बन्द्रा जलमे ठिक बा । बन्द्रा मन पस्टाइल । गलामे लागल बा रेसमके डोरी, उपरेसे कल्कर्हवनके लठ ।

बन्द्रा जुन ढरढर ढरढर आँस गिराइठ ओ नाचे लागठ । ओम्हें कल्कर्हवन जुन खोब पिट्ठिस् । ऐसिक पिट्वा पाइट देख्के रानीहे महा सोग लग्ठिस् । तब रानी ऊ बन्द्राहे माँगे लागठ । कल्कर्हवन जुन बन्द्रा अक्को देहक मन नैकठैं ।

रानी अपन सेक्नासम् चिरोरी, बिन्ति करठ । कल्कर्हवन बन्द्राहे देहक मन नै कठैं । तब रानी रज्वासे बन्द्रा मगा मागठ । रज्वा कहठ-ओइनसे बन्द्रा माँगके तै का करबे ? रानी कहठ- कुछु नै करलेसेफें मगादेउ ना । रानीक् बात काटे नैसेक्के रज्वा बन्द्रा माँगे चलदेहठ । कल्कर्हवन जुन बन्द्रा नचाइट-नचाइट बरा दुर पुग्गैल रठैं । रज्वा कल्कर्हवनठन् जाके बन्द्रा माँगे लागठ । कल्कर्हवन कठैं- हमार घर ना दुवार । जग्गा ना जमिन । हमार पेट पल्ना, हाँठगोर जोर्ना यिहे बन्द्रा किलते बा । यिहिहे दैडेब ते हम्रे अपन जिउ कैसिक पालब महाराज ?

यी बात सुनके रज्वा फेन कहठ- यी बन्द्रा मोर रानीहे दैडेउ, यकर सत्तामे बैठक लाग घर, खेती पाती करक् लाग जग्गा, हँर जोटक् लाग् गोंइ डाँगर सब चिज मै देहम । रज्वक् बात काटे नै सेक्के कल्कर्हवन ऊ बन्द्रा रानीहे दैडेठैं । रानी ओ रज्वा फोहैटी बन्द्रा लेके घरेओर चलदेठैं ।

रानी अपन पहिल ठर्वा बन्द्रा हुइलक् ओरसे रज्वासे ढेर मैंयाँ बन्द्रांहे करठ । रानी रज्वक् खाइल खाना कुक्राहे डारठ ओ बन्द्रक् खाइल खाना अप्ने खाइठ । अइसिक खाइट देख्के रज्वक् नोक्रहुवन नैमजा लग्ठीन् । रोज दिन रानीक् ओहे चाल देख्के रज्वक् नोक्रहुवन एक दिन रज्वक्ठन् बटाडेठैं ।

रज्वाहे यी बात सुनके नैमजा लग्ठिस् । रानीहे गर्याइ लागठ । यी बन्द्रा तोर के हो ? एकर डुठाहा खैबे तब टोर पेट भरी ? यी बात सुनके रानीहे महा रिस लग्ठिस् । रिस पचाइ नैसेक्के ऊ बन्द्राहे उठाके पटक देहठ । बन्द्रा ओट्ठेहे मर जाइठ । अप्नेफे ओट्ठेहे आत्महत्या करलेहठ् ।

कुछ समयक् बाद दुनु जाने मनैक रुपमे जलम लेठैं । बन्द्रा राजा पृथके जन्नीक कोखमे गर्भ रहठ । रानी जुन औरे रानीक् पेटमे गर्भ रहठ । राजा पृथके छावा जर्मठिस । ओकर नाउ“ छेदाबृख रठिस । औरे रानीक् छाइ जर्मठिस ओ ओकर नाउ“ रानी सरङ्गा रठिस । दिन, महिना बरस बिटठ । कुछ बरस बाद ओइने

सयान होजिठैं । स्कुल जैना होजैठैं । दुनु जाने संगे स्कुल जाइ लग्ठैं । दुइ जहनके जोरी एकदम मिलल रठिन । जहाँ गैलेसे फेन संगे जैना, संगे घुम्ना कर्ठें ।

छेदाबृस ओ रानी सरङ्गा जस्तक बह्रटी जैठैं, ओस्तक दुनहुनके सम्बन्ध लग्गे हुइटी जैठिन । एकठो कहाइ बा- जे आइठ लग्गे ओहे हुइठ संग्गे । ओइने दुनुजाने डौना बेबरी फुला हस् फुलके मगमग मगमग महके लग्ठैं । दुनु जाने एक दोसरके जवानीसे हिरोल्ना झुले लग्ठैं ।

जब ओइने दुनुजाने स्कुल जैठैं, दिनभर चलिकचला करके दिन कटैठैं । दुनु जहनके पर्हना लिख्ना कुछ मतलब नैरठिन । स्कुलमे मस्तरुवनफें ओइनहे देख्के हैरान होजैठैं । राजनके लर्का हुइलक ओरसे ओइनहे कोइफें कुछ कहे नै सेकठ् ।

ओइनके चाल देख्के मस्तरुवन कक्षा कोठाके बिचमे डेवाल उठाके लौंडा लर्का अलग ओ लौंडी लर्का अलग कैके कोठा छुट्या देठैं । तबमारे कठैं कि चोरनके जीउ डलामल । दुनुजाने दुनु पाँजरसे सोझीक सोझा डेवालटिर बैठे लग्ठैं । ओइने पह्रही का पह्रही । पह्रक छोरके दुनु पा"जरसे चक्कु लेके डोंडर पारक टन डेवाल खोले सुरु करदेठैं ।

दिनभर खोलट-खोलट डोंडर यहपारसे ओहपार छिरा दर्ठैं । स्कुलमे दिनभर कागतमे ज्यात्या लिखके चलिकचला कर्ठैं । असिक करट देख्के मस्तरुवनकेफें कौनो उपाय नै रहिजैठिन् ।

एकदिन मस्तरुवन सल्लाह कर्ठैं कि छेदाबृख ओ रानी संरगा यी स्कुलसे पास होगैलैं कहिके स्कुलसे निकार देठैं । रानी संरगा जवान बठिन्याँ हुइलक ओरसे घरक् मनै भोजक लाग बात करे लग्ठैं । ठकौनी फेन खा दर्ठैं ।

समयफें बिट्टी जाइठ । धिरेधिरे भोजक् दिनफें आजैठिन । ओहोर छेदाबृष जुन अपन बनाइक टन सोंचटी रहठ । भोजक दिनफें आजाइठ । भोज सुरु होजाइठ । बरातफें आजाइठ । बरात बैठाके सब काम करके रानी संरगाहे फेन दुलही बनाके पठाडेठैं । ओहोर जुन छेदाबृषहे बरा कर्रा परजैठिस् ।

छेदाबृष का करी विचरा । ऊ फें अपन घोरुवक् पर चहुँरट ओ चलडेहठ । जाइट् जाइट् डगरीम् बरात भेटा लेहठ । बरात भेटाइठ ते घनी डोलीक् आघे, घनि डोलीक् पाछे घोरुवाहे नेंगाइ लागठ । तब फेन कौनो उपाय नै लग्ठिस् । गाना गैटी कहठ-

तोरे घोरीला मोरे घोरिला एकेरे उमरिया, मोरे घोरीला दिलके छोटा जी, मोरे घोरिला जे दस हाँठ फाँडट लेटुँ, हौडासे निकारो जी ।

छेदाबृख ठठाइट अपन घोरुवा डोलीक् उप्परसे चिठ्ठी जकाके आघे चल्डेहठ घोरुवा डौरैटी । ऊ चिठ्ठीमे लिखल रहठ-

प्रिय रानी सरङ्गा, धेर मैंया ।

मै आघे जाके झोंपरीमे साधु बनके बैठल रहम । ओहैं महिन भेंट करहो । मै डट्करल फे बटुँ । निदाइफें सेकम । जैसिक फेन जगैहो ।

टोंहार हृदयके राजकुमार छेदाबृख ।

छेदाबृख जुन ना खाना खैले रहठ, ना सुट्ले रहठ । कै कै दिनिक् भुखासल, पियासल डुपहरक् घाम लेके डट्कर जाइठ । जाइट जाइट एकठो कुट्नी बुह्रियक् घर पुगठ् । ऊ कुट्नी बुह्रियक् घर पुगठ ते बुह्रियाहे कहठ- बुडी पानी पिवा महिन, महाँ पियास लागटा । तब बुह्रिया पानी देहट । उहिहे बरा डट्करल देख्के बुह्रिया एक टाँरा खुभ्मी काट्के लानट । सबसे पहिले जरे ओरिक् गिन्डा खाइक् डेहठ । ऊ खुभ्मी खाके फेन सेकडारठ । तब बुह्रिया पुछठ- नतिया कैसिन बा खुभ्मी ? बुडी महाँ मिठ बा खुभ्मी, छेदाबृख जवाफ देहठ ।

फेन कुट्नी बुह्रिया बिच्का गिन्डा खाइक् देहठ । ऊ फेन खा डारठ । फेन कुट्नी बुह्रिया पुछठ- अपखरिक् गिन्डा कैसिन बा नतिया ? छेदाबृख कहठ- अप्खर ओत्रा मिठ नै हो । टनिक पहिलेक लेके नोन्खल्ला बा ।

कुट्नी बुह्रिया फेन तिसर गिन्डा खाइक डेहठ । ऊ फेन खाइठ् । तब कुट्नी बुह्रिया पुछठ- अप्खरीक कैसिन लागल ते नतिया ?

छेदाबृख कहठ- अप्खर ते और अक्को मिठे नै लागल । खाइल नै खाइल बराबर । बुडी पेट नै भरल और डे खाइक लाग कहठ् ।

यी काहो ते चिबा बा, यिहेखाले कुट्नी बुह्रिया कहठ । फकाइल चिबा केउ खाइ ? मै नै खैम ? मै का सुवर हुँ । छेदाबृख जवाफ देहल ।

हेर नतिया कुट्नी बुह्रिया सम्झैटी कहल- हाँ बुडु पहिले जरगिन्डा खैले ते बरा मिठ रहे । ओस्टक तोर ओ रानी सरंगक् सम्बन्ध महाँ लस्गार रहे । तब बिच्का गिन्डा खैले ठोरठोर फिक्कल रहे । तोहरे खोब जवान हुइलो ते टुहिनके सम्बन्धफें ढिरेढिरे फिक्कल हुइ लागल ।

तब पोंकी खैले ते एक्को नैमिठ लागल । ओस्तेक रानी सरङ्गाके मंगनी होगैलिस् ते तुहिनके सम्बन्धफें फिक्कल होगैल । तुहिनके भेटघाट नैहुइ लागल । जब चिबा खाइ कनु ते, तैं कले फकाइल चिज कहुँ खैम ? ओम्ने ते रस फेन नैरहठ । हाँ, ओस्तेक रानीहेफें बना सेक्लैं । आब ते ओहे फेकाइल चिबा सरह होगैल बाती ।

ओकरपाछे लागके कौनो उपाय नै हो । ओस्तेक भुखे पियास अत्रा दुःख करके का पैबे ? आप जौन हुइना होगैल । अट्ठेसे अपन घर घुम जा नतिया ।

मने छेकाबृख कुट्नी बुह्रियक बात नैमानके जाइ लागठ । तब कुट्नी बुह्रिया कहठ- (अपन पालल सुगुवा डेटी) ले नतिया यी सुगुवा लैजा । संग्गे कहुँ डग्गरघाटमे साठ दी ।

तब छेकाबृख सुगुवा लेके चल देहठ । जाइट जाइट मिच्छ्रा जाइठ । तब सुनसान बनुवाँमे बिच डगरिम झोंपरी बनाके जोगिया बनके गाजाँ भाँग पिके दुवारीम सोझे सुगुवाहे टँगाइठ । सुगुवाहे कहठ- कोइ आइ ते महिन जगाइस् । ओत्रा कहिके सुट्जाइठ ।

कैंयो दिनके भुखाइल पियासल गाँजक् मट्वार । बरा डटके निनमे डुबजाइठ । ठिक्के ओहोरसे बरातफें पुग जाइठ । तब रानी सरङ्गा अपन डोलबोकुवनहे डोली ढारे कहठ । झोंपरी भिट्टर पेलके छेदाबृषहे जगाइ लागठ ।

रानी सरङ्गा छेदाबृखहे जगाइट-जगाइट मिच्छ्रा जाइठ । टबफेन छेदाबृष नैजागठ । रानी सरङ्गा अपन सेकटसम एकसे एक उपाय लगा-लगा जगाइठ । तबुफे ऊ नैजागठ । कौनो उपाय नै लागके ऊ ओकर दुनु हाँठमे जम्मा बात लिखके ओहाँसे निकरठ । सुगुवाहे कहठ-

हरियार पंखी सारी सुगुना काल कटाके स्वामी मोर जगही बटयाना कहो जी ।

तब सुगुवा जवाफ देहठ - तैं ते महिहे अपन देवरुवा हस् नैमन्ले । मै नै बटैम । महिनहे देवरुवा कोह तब बटैम । तब फेन रानी सरङ्गा कहठ-

हरियर पंखी रे सारी रे सुगुना तुँ ते हुइतो सग्गे मोर देवर जी । काल कटाके स्वामी मोर जगही बट्याना कहो समझाए जी ।

तब सुगुवा फेन कहठ- हाँ बटादेम । रानी सरङ्गाफें चलदेहठ । बलटल छेदाबृख भुरेभुरसुन जागठ । डग्गर ढुरिया ढुर्खुन डेखठ । बरात गैल देख्के महारिस लग्ठिस । रिस नै ठाम्हें सेक्के सुगुवाहे गर्यैटी कहठ-

तैं फेन नै बटैले ? सुगुवक दुनु गोर पकरट ओ पटके लागठ कि ओकर हाँठेमसे सुगुवा निपुच्के भुरसे उर जाइठ । रुखुवक उप्परसे सुगुवा जवाफ देहठ- मै बटाइक लाग ते रहुँ । तैं एकफाले मारे लग्ले । मै फें तुहिनसे कबु ना कबु जरुर बड्ला लेम । सुगुवा ओहाँसे चल डेहठ । फेन छेदाबृष अक्केली रहि जाइठ ।

छेदाबृख अपन डगर लागठ । ऊ जाइट जाइट एकठो लडियामे पुगठ । ऊ बरा पियासल रहठ । पानी पिए जाइ लागठ ते अपन हाँठेम जम्मा कहानी लिखल डेखठ । ऊ मेटके पानी पिए लागठ । ओकर टिकरा सरङगक् दिदी लुग्गा धोइटिहिस् । ओकर दिदी छेकाबृषहे देखठ चिन्ह लेहठ । उही हे ओइनके बारेमे जम्मा पत्ता रठिस । तब पानी पियट देख्के ऊ कहठ-

ना मै देखुँ आँखके अंढरा रे,

ना मै देखुँ हवाके जुलरी जी,

यिहे ते कहे छैला छैलीसे भुलल,

मुह भुमका पानी पियट जी ।

तब उहीहे बरा लाज लगठिस । ऊ बहना बनाई लागठ ।

ना मै हुइटुँ आँखके अन्धरा रे, ना मै हुइटुँ हाँठके लुल जी । मै ते हुइटुँ गारीके चलुइया, हाँठमे लगी मसियानी जी ।

अत्रा कहिके छेदाबृख चल देहठ । जाइट जाइट जौन सहरमे रानी सरंगाके सस्रार रठिन् ओहे सहर पुगजाइठ । तब ओक्रे बगियामे कुट्टी बनाके बैठ जाइठ । दिनभर भिख मागके खाइठ । कबु भुख्ले सुतठ् ते कबु पियसले ।

एकदिन भिख मागट मागट रानी सरङ्गाके दरबार पुगजाइठ । तब रानी सरंगाहे देखठ । रानी सरङ्गा पुछ्ठैं-

कहाँ बैठठो ? तब छेकाबृख कहठ्

तोहाँरे बगियामे बैठठुँ ।

एकदिन रानी सरङ्गाके बगिया घुमे जाइठ ते दुनुजाने सल्लाह करठैं । तुँ सपुवा मारके मोर पठरिम ढार देहो । तब छेदाबृष एकदिन डोमिनियाँ सपुवा मारके रातके रानी सरङ्गक् पठरिम ढार आइठ । रानी सरङ्गा ओहे रातसे साँस बन्द कैके मुवलहस हुजाइठ । तब रज्वा देखठ पठरिम डोमिनियाँ सपुवा ओ सरङ्गाहे मुवल । ओहे सपुवा कटले हुइ कहिके गुरुवा बैडवा खोजे लागठ । जत्रा गुरुवा बैडवा रहिंत् कोइफें विस झारे नैसेक्लै ।

राजा सहरमे डुग्गी पिटाइ लागठ। जत्रा गुरुवा रहिंट सारा जहन बलाके ऊ काम करे लगाइल। कोइफें कुछ करे नैसेक्लैं। तब गरुवन कहलैं- आब अन्तिम एक्केठो उपाय बा। यी बगियामे एकठो जोगिया आके बैठल बा। जाउ बलाइ। सेकी ते ओहे सेकी नै ते कोइ नैसेकी।

छेकाबृखहे बलाके नन्ठैं। ऊ आइठ ओ भिट्टर हेरे जाइठ। चब छेकाबृख कहठ- सक्कुजे यी घरमन्से निकर जाउ।तब सक्कुजे राजक घरेम् (दरबार) से निकर जैठैं। ऊ भिट्टर पेलठ।

एकठो कहाइ बा 'ढुंगा खोजेबेर भगवान मिल्ठैं'। कैयौ दिनिक भुखासल, पियासल छेदाबृख अपन मन परल परी भेटाइ ते का खोजी। बिस झरना ते बहना किल रहठ्।

छेदाबृख अपन भोगलार सुइ निकारठ ओ रानी सरंगकमे लगाइ लागठ। पचपच पचपच सुइ भिट्टर पेलाइठ। एक घचिक रहिके रानीक होस् आजैठिन्। रानीक होस आगिलिन् कहिके छेदाबृख चल डेहठ। ओठेहेसे ओइने मजासे बैठे लग्ठैं।

कुछ दिनकेबाद फें दुनु जाने सल्लाह करठैं। छेदाबृख फेन दोसर सँपुवा मारके रानी सरंगक् पठरिम ढार आइठ। रानी सरङगा फेन साँस बन्द कैके सुतजैठी। तबफें सकारे राजा देखठ। पठरिमे सँपुवा ओ रानी सरङ्गाहे बेहोस हुइल। रजुवा फेन गुरुवा बैडवा खोजे लागठ। सहर भर डुग्गी पिठाइठ जम्मा गुरु जुटाइठ। सब गुरुवन विष झारट-झारट मिच्छ्रा जैठैं। कोइ नै झारे सेक्ठैं। अन्तिममे कौनो उपाय नैलागके ओहे जोगियाहे बोलाके नन्ठैं। तब दुनुजाने पहिलेक् नन्हे कामकाज ओरुवाके जोगिया बाहर निकरजाइठ्। रानी सरङ्गा नैजिना सल्लाह फें करठैं। तब छेदाबृष आब मै जिवाइ नै सेकम कहिके दरवारसे चलदेहठ। रानी सरङ्गा मरगैल कहिके ओकर दाहसंस्कार कर्ना सुरु करे लग्ठैं। जौन बगियामे छेदाबृख कुट्टी बनाके बैठल रहठ। ओहे बगियामे रानी सरंगक् लास जराइ जैठैं। ठिक्के ओकर लास जराइ जाइ लग्ठैं ते छेदाबृख देख लेहठ।

तब चिम्टा लेले रखेदे लागठ। ओ कहठ- जहाँ साधुके धुनी जरटा ओहाँ मुर्दा जरैना कहिके सक्कुहुन रखेडे लागठ। तब आगी लगाइ छोरके सक्कु जाने अपन अपन घर भाग जैठैं।

छेदाबृख यहोर ओहोर मनैन चिटाइठ। किहु नै देखठ। रानी सरङगक् हाँठ पकरके उठाइठ। ओहाँसे दुनु जाने भाग जैठैं। भागट भागट दुनुजाने बरा दुर घनघोर बनुवाँमे पुगजैठैं। ओहाँ पुगत् पुगत् रात होजैठिन। रातभर रुखुवा तरे सुट्ठैं।

रुखुवक उप्परसे सुगुवा देख लेहठ। सुगुवा आपन पुरान नैबिस्रैले रहठ। तब ऊ बद्ला लेहक लाग उप्परसे आम गिराइठ। भोक्से बोलठ ते मनै आगैनै कहिके दुनु जाने झरफराके उठके भागे लग्ठैं। फेर दोसर रुखुवा तरे सुते जैठाँ। थोर थोर निदाइल हस करठैं ते फेन ओइनके पन्जरे आम गिरठ। फेन कोइ आगिनै कहिके दुनु जाने भागे लग्ठैं। ओस्तेक करट करट ओइनके रात बिट जैठिन। दुनुजाने अक्को सुते नैपैठैं। ओजरार हुइठ ते फेन ओइने भागे लग्ठैं। भागट भागट बरा दूर पुगजैठैं। कै कै दिनक निदासल, भुखासल, पियासल छेदाबृख डटकर जाइठ। तब ऊ रानी सरङ्गाहे कहठ -

अत्रा दुर कोइ नै आइ आब। एकघची बिसाली।

रानी सरङ्गा बैठल रठी। ओकर जांघक् सिह्रन लेके छेदाबृख सुत्जाइठ। डटकरल जिउ ऊ अक्के घची निदाजाइठ। ठिक्के छेदाबृख निदाइठ, ठिक्के ओकर बाबा भौरानन हाँथिक पर बैठके सिकार खेलठ खेलठ ओहैं पुगजाइठ। तब देखठ रानी सरङ्गाहे। अत्रा सुग्गर रानी सरङ्गाहे देखके मन परजैठिस। छेदाबृषके लाग कठुवक् सिह्रन धारठ। रानी सरंगाहे हँथियक पर बैठाके लेके चलदेहठ। छेदाबृखहे जुन कहियक देखल जम्मा डाह्री मोछ पाकल। मोर छावा हो कहिके नैचिन्हठ्।

रानी सरङ्गाहे लैजाइ लग्ठिस ते काकरु काकरु कहिके छेदाबृखहे जनाइकटन् चुरिया फोर फोर सैल डग्गर चुरियक् टुक्रा गिरैटी जाइठ।

छेदाबृख बल्टुनके जागठ ते कठुवक् सिह्रन ढैके सुतल चाल पाइठ। एहोर ओहोर चिटाइठ किहु नै देखठ। बरा दुःख लग्ठिस। अक्केली चलदेहठ डगरी डगरी खोज्टी। डगरीमे हँथियक पैला देखट्। चुरियक टुक्रा देखथ्। छेदाबृख जान लेहठ पक्का मोर बाबा लैगैल हुइ कहिके। नै ते यी बनुवाँमे कोइफें सिकार खेले नै आइठ। ऊ नेंगट नेंगट अपन घर पुग्जाइठ। ओहाँ पुगठ ते कोइ नै चिन्ठिस्।

तब छेदाबृख अपन घर कमैया लाग जाइठ। दिनभर ओहैं काम करत्। राजक् लर्का कै दिन काम करी, काम करट करट मिच्छा जाइठ्।

एकदिन काम करट करट डट्करके बैठके सगत गाइलागठ-

राजा पृथके बेटवा हुँ सड्डे छेदाबृख मोर नाउँ,

पाँच टका महिन्वाँरी इँटिया बोकी कन्धा ढुरियाइ ।

तबजाके काम करुइयन सुन्ठै ते रज्वक् ठन् जाके कहठैं-

लावा काम करुइया ते बरा मिठ महा सुग्घुरसे गीत गाइठ ।

रज्वा छेदाबृखहे कहठ -

गा गा भैया मै फें सुनु तोर गित । गित नै जन्ठुँ ते का गाउँ छेदाबृख कहठ । कबु कबु मन लागल बेला गुन्गुनैठुँ । राजा पृथके बात काटे नै सेक्के छेदाबृख गित सुनाइठ-

राजा पृथके बेटवा हुँ सड्डे छेदाबृख मोर नाउँ, पाँच टका महिन्वाँरी इँटिया बोकी कन्धा ढुरियाइ ।

राजा पृथ ते मोर नाउँ हो । छेदाबृख ते मोर छावक् नाउँ हो । राजा सोंचत् छेदाबृखके घर छोरल बहुत बरस होगैल । पक्काफें मोरे छावा हो । जान लेहठ रानी सरङगा यक्रे जन्नी हुइस । मै यक्रे ठनसे नन्ले रहुँ ।

तब राजा पृथ छेदाबृख ओ रानी सरंगक् दुनु जन्हनके धुमधामसे भोज कैडेहठ । ओट्ठेसे सक्कु परिवार मजासे मिलके बैठे लग्ठैं ।

हँसिया लेबो कि बेंट, टोहाँर ओ मोर सड्ड दिन हुइ भेंट ।

कैलारी ८ दखिन टेंहीं, कैलाली

बुर्हिया ओ गेक्टा

-सागर कुश्मी

एक गाँउमे एकठो बुर्हिया रहे । ओकर लर्कापर्का नातपात अपन मनैं कलक् कोइ नै रहिस । एकदिन बुर्हिया गैल मच्छी मारे । दिनभर मच्छी मारट मारट मिच्छा गैल । अक्को मच्छी फेन नै मारे सेकल । बलटल एकठो गेक्टा अइलिस टापीमे । बस ओहे गेक्टाहे अपन छावा बनैम कैहके घरे लैयानठ । तब ऊ बुर्हिया ऊ गेक्टाहे अपन छावा बना लेहठ । पैह्लेक् मनैं जा चहलेसे ओहे बनाइ सेक्ना सक्ति रहिन् ।

दिन, महिना, बरस फेन बिट्टी गैल । गेक्टा फेन कामधन्धा करे लायक होगैल । तब गेक्टा एकदिन बुर्हियाहे कहठ-

री दाई मै फेन आब जवान होगैल बाटुँ । काम धन्धा फेन ढिरेढिरे कैदारम । मोर लाग एक गुँइ बर्डा किनदिस । महिन खोब हर जोट्नास लागठ ।

बुर्हिया कहठ अरे छावा बर्डा का करबे ? हर जोते सेक्बे का ? फेन गेक्टा कहठ- हाँ हाँ काहे नै सेकम ? धिरेधिरे सब काम कैदारम । तैं पहिले बर्डा ते किनदे ।

ठिके बा ते कहटी बुर्हिया दोसर दिन गेक्टक् लाग एक गुँइ बर्डा किनडेहठ । अस्ते करत् करत् दिन बिट्टी जाइठ । एकदिन गेक्टा चलदेहठ हर जोते । गेक्टा हरक् हठनारीमे बैठके खोब भिरल रहठ् सजना गाई । फेन अँह अँह टक टक कैलेहता । फेन सजना गा लेहठ् । अस्ते गेक्टा अपन मन्का हर जोटे भिरल रहठ ।

गेक्टाहे सजना गित गाइट सुनके औरे मनैं फेन छक्क पर्थैं । मनैं कहिट के गाइटा अत्रा सुहावनके ? हर जोटुइया मनैंया फेन कोइ नै हो । खाली बर्डा किल बिल्गैठैं । मनै लग्गेसे हेरे जाइट ते गेक्टा जोतल कुँरीमे नुकजाए । मनै दूर जैटिकी फेन हर जोते लागे ।

अस्ते हर जोट्ती जोट्ती सिपाही आजिठैं । सिपाही लोग गेक्टाहे सजना गाइट सुनलेठैं । लग्गे जाके हेरठैं ते किहुँ नै देख्ठैं । सिपाही अइटिकी गेक्टा फेन नुकगैल । सिपाही एहोर ओहोर हेरठैं किहु नै देख्ठैं । बस ओहे गेक्टक् बर्डा लेके

चलडेठैँ। बिचारा गेक्टा का करी सिपाही बर्डा लैगिलैँ कहिके मन मरले भोह्र्याइल मन लेले घरे जाइठ्।

घरे पुगठ ते गेक्टक् दाई बुर्हिया पुछ्ठ- अरे छावा का होगैल ? मन मरले बटे ?

का कहबे डाई सिपाही बर्डा लैगिलैँ। तब फेन गेक्टा कहठ तैं चिन्ता जिन कर दाई। मै जैसिक फेन बदला निकारलेम। मोर लाग एकठो लाऊ बन्वा दे। एकचुटी भक्का उठाडिस। मैं अप्नही जैम बर्डन्हे खोजे। गेक्टा बुर्हिया हे कहठ।

दोसर दिन बुर्हिया गेक्टक् लाग एकठो लाऊ ओ भक्का उठादेहठ। तब गेक्टा अपन सक्कु सरसामान उठाइट ओ चलडेहठ बर्डा खोजे।

गेक्टा जाइट जाइट महादूर पुगजाइठ। जैटी जैटी बिच डगरीमे हारन् भेटा लेहठ। तब हारा पुछ्ठैँ- अरे गेक्टा दाडु कहाँ जाइटी, बरा हडबडमे ?

अरे भैयन् कहाँ जैबी रज्वक्ठे जाइटुँ। ओकर सिपाही लोग मोर बर्डा लैगिल बटैँ। गेक्टा हारन्हे जवाफ देहठ।

हारा कहठैँ- तबते गेक्टा दाडु हम्रहिनफे संगे लैचोली। हम्रेफेन अप्नेक् सँगे जाबी।

गेक्टा कहठ- नाही, अप्नेन्के कहाँ जैबी। खाली दुःख करे। मै अक्केली चलजैम।

तब फेन हारा कहठैँ- अक्केली कहाँ जैबी ना। संगे हम्रे फेन जाबी। बरु सँगे लैचली।

तब दोस्रे गेक्टा हारन्हे कहठ- चली ते सबजे सँगे। गेक्टा सक्कु हारन्हे अपन चोल्यम् भरठ ओ चल देहठ।

जाइट जाइट जौन ठाँउमे सिपाहीन्के धोबिया लुग्गा धोइना ठाँउमे लुग्गा धोइठ। ओहैं गेक्टा पुग जाइठ। गेक्टा नुक्नार ठाँउमे नुकके धोबियाहे गित गैटी कहठ-

धोबिया रे धोबिया रुइबे कि धोइबे,

धोबिया रे धोबिया रुइबे कि धोइबे ।

कि राजा हे बलैबे ।

धोबिया खोब सिपाहीन्के लुग्गा धोई मचल रहठ । गीत गाइत सुनके धोबिया मनमने कहठ- कौन मनैया आइल बा ऐसिक कहटा ?

फेन गेक्टा गीत गैटी कहठ-

धोबिया रे धोबिया कि अपने राजाके सहरके मनै बलैबे ।

कि यिहे घाटमे हुई लराई ॥

धोबिया रे धोबिया कि अपने राजाके सहरके मनै बलैबे ।

कि यिहे घाटमे हुई लराई ॥

धोबिया सरासर गैल अपन राजक् ठन । जाके राजाहे कहल-

राजा साहेब, राजा साहेब । घट्वामे जाने कौन मनैया आइल बा । खोब अपनेहे ज्याट्या कहटा ।

धोबिया रे धोबिया रुइबे कि धोइबे,

धोबिया रे धोबिया रुइबे कि धोइबे ।

कि राजा हे बलैबे ।

घनि का घनि का कहटा ।

घनी अपन राजाहे बला कहटा । घनि अपन राजाके सहरके मनै बला कहटा । धोबिया राजा साहेब के ठन खोब चिब्ली खाइठ् ।

राजा अपन सक्कु सिपाहीन् अह्रैटी कहल-

जाउ जाउ सक्कुजे जाउ । के आइल बा ओहाँ ? ऐसिक कहटा । पत्ता लगाउ ते के हो ? कौन दुसमन हो आइल बा ?

सक्कु सिपाहीन् आपन सरसामान गोलीगठ्ठा लेके चलदेठैँ गेक्टा नुकल ठाँउमे । सिपाही ओहे घट्वामे पुगजिठैँ । सिपाही लोग धोबियाहे पुछ्टी कहठैँ-

खै कहाँ बा ? कहाँ बोलठ ? एहोरे ते नुकल हुई । खोजो अब्बे भेटाजिबो । एहोरे ते बोलठ ।

गेक्टा चिप्पेसे चोल्या खोलठ । सक्कु हारन् छिट्का देहठ । हारा अइसा गन्गनाई लग्ठाँ कि ओहाँ आइल सक्कु सिपाहीन्हे काटे लग्ठैं । कट्वा पाइट पाइट सारा सिपाही घाहिल होजिठैं । सिपाहीन् कट्वा पाके भागत भागत रज्वक् दरबार पुगजिठैं ।

रज्वा सिपाहीन् कट्वा पाइल देख्के हार खाजाइठ । रज्वा कुछ उपाय नै लागके गेक्टासे माफी मागठ । तब गेक्टा कहठ-

तोर सिपाही मोर बर्डा काहे नन्लै ? के कहल सिपाहीन् हर जोट्टी जोट्टी बर्डा नानक् ? आब कैसिन हैरान पाइतो । हेरो राजा साहेब, कबो ते तोहाँर सहरके सारा मनैन् काट्के मुवादेम् । तब ते कहकहुट बा 'राजा अपने मुराढी गाँर कटाई ।'

तब राजा कहठ-

होगैल हजुर होगैल । हमारे गल्ती हो । हम्रे नैजन्ली । माफ कैदेऊ । बरु ज्या माँगन बा मागो । मै सबचिज देम । तोहाँर माँगन पूरा करम ।

गेक्टा कहल-

सक्कु चिज माँगम । सबचीज देहे परी । रज्वा अपन ठन् रहल जग्गा, जमिन डैदेहठ । बरवार मकानफें बनादेहठ । गुँइ, डाँगरसे लेके सोनाचाँदी हिरामोती सबचिज देहठ । अपन छाईसे धुमधामसे भोज फेन करा देहठ ।

तबसे ऊ बुर्हियक्, गेक्टक् ओ रज्वक् छाईक् जिन्गी सुख चयनसे बिटे लगठिन् । सहरमे सबजे दिलग्गी करे लग्ठैं । राजदरबार प्रजालगायत सबके मुहारमे खुसियाली आजिठिन् ।

बुर्हिया ओ बुर्हुवा

-सागर कुश्मी

पैहलेक् जवानक् बात हो। एकठो गाँउमे एकठो बुर्हिया ओ बर्हुवा बैठिंट। बुर्हिया मुर्गी, चिङना, चिरै चुरंगन पल्नामे महा सौकिन रहे। ऊ बुर्हिया सौकिन हुइलक् ओरसे अपन घरम् बहुट मुर्गी पल्ले रहे।

ओइनके लर्कापर्का कोइ नैरहिन्। दुनुजाने परानी किल जिन्गी गुजरटी रहिंट। बुर्हिया अत्रा ढेर मुर्गी पल्ले रहेकि ओकर मुर्गी जेहोर जाइस ते गुरगुर गुरगुर बगालके बगाल।

अंगना भरके मुर्गी रलोपर ऊ बुर्हिया आज एकठो मारके खाडारी कैह्के नै कहे। बुर्हिया महानिसट रहे। बुर्हुवा जुन मिठमाठ खोज्टी रना मेरके रहे। बुर्हुवाहे झर्साइन बिस्साइन चाहिस। बुर्हुवा अपन घरक् मुर्गी कैसिक खाउँ कैहिके रोजदिन जुगार लगैटी रहे।

एकदिन बुर्हुवा बन्वाँओर नेंगे चलल्। बन्वम् नेंगटी नेंगटी एकठो बरेभारी रुख्वम् डोंडर परल देखल। लग्गे जाके हेरल ते मनै छिर्ना मेरके डोंडर देखल। डोंडर ठनिक् लम्मा रहे। बस ओहे डोंडर देख्के बुर्हुवा मुर्गी खैना जुगार सोंच लेहल।

बुर्हुवा बन्वाँ घुमट घुमट घरे साँझके पुगल। पानी ओनी पियल, सिहरा मारल। तब आपन बुर्हियाहे बन्वाँ घुम्लक् बात बट्वाइल। बात बट्वाइट बट्वाइट फेन ओहे डोंडर परल रुख्वा समझ लेहल। आपन बुर्हियाहे पुछल -

अरी बड्डी सुग्गक् बच्चा पल्बे ?

सौकिन बुर्हिया, नै कना बाटे नैरहे। बुर्हिया सोच्टी कहल-

कहाँ बटै सुग्गक् बच्चा ? फेन बुर्हुवा कहल-

मै देख्ले बटुँ। मने ठोरिक् दिन ओहैं अहरा डारे जाइपरी। ठोरठोर बरही तब लानब।

बुर्हिया भित्रेभित्रे सुग्गक् बच्चा पल्ना खुसामट होजाइठ। ओहोर बुर्हुवा जुन खोब मनमने फोहाइठ। आब ते गँठगैल कहिके सोच्टी मनमने मुन्टा फेन हिलाइल।

फेन बुर्हुवा अपन बुर्हियाहे कहल-

मै डगरा देखादेम, तैं अप्नही जाइस् । हाँ हाँ मही जैम कहती बुर्हिया हामी भरल ।

दुई दिन परसे बुर्हुवा अपन बुर्हियाहे कहल-

काल्ह ठोरठोर अन्गुट खाना पकाइस् । सुग्गक् ठाँठ देखाई लैजिम ।

अई बुर्हुवा सुनो ते

सुग्गक् बच्चनके लाग का अहारा बनैम ? बुर्हिया पुछ्ल ।

बुर्हुवा कहल- सिकार भात किल खैठैं ।

फेन बुर्हिया कहल-

ते का चिजके सिकार लैजिम ते ?

अरी का चीजके लैजिबे ? अत्रा ढेर घर भरके मुर्गी पली बटैं । ओहे मुर्गीक् सिकार लैजिबे ते होजाई । एकठो मरबे ते साँझ बिहान ठिक्के हुई ।

दोसर दिन बुर्हिया अन्गुट्टी उठके कल्वा पकाइल । मुर्गीक् टिना सिकारभात उठाइल ओ अपन बुर्हुवाहे कहल-

चोलो जाइ बड्डा सुग्गक् बच्चन् अहरा दारे ।

दुनुजाने चलदेठैं ।

बुर्हुवा चलाकी कैलक्मारे बरा घुमाहुर डगरा लैजाइठ । बलटिउक् ओहे ठाँउमे पुग्लै । बुर्हुवा दुरहीसे डोंडर देखैटी कहल-

ओहरे ओहे डोंडरमे बटैं सुग्गक् बच्चा । दुरहीसे टठियक् भात अर्गरवाके आजाइस् । बच्चनहे ना हेरीस् नै ते रिसाजैही ।

बुर्हिया जाइठ् ओ दुरहीसे सिकारभात डोंडरठन् ढारके आजाइठ । बुर्हुवा कहठ-

आब तैं डग्गर जानलेबे काहुन । तैं तल्हुक चोल । मै एकघचिक् बन्वाँ घुमके अइम् ।

बुर्हिया सरासर घरेओर चलदेहथ् । ओहोर चिप्पेसे सिकारभात खाखुके डोंडरे पर टठिया ढारके बुर्हुवा चलदेहठ । अस्तक् बुर्हिया रोजदिन अहारा डारल करल । ओहोर बुर्हुवा चिप्पेचिप्पे सोझमटिया डग्गर जाके रोजदिन सुटुक्से सिकारभात खाके मजा लेती रहल् ।

महिना दिन पुग गैल । बुर्हिया कहल-

अहोई बड्‌डा ! सुग्गा ते अभिन नै बह्रलैं झे ?

बुर्हुवा कहठ-

अभिन ते छोट हुइही । ठनिक् दिन बार्हे डे, पाछे नानब ।

सिकार भात खवाके बुर्हियक् सक्कु मुर्गी ओरागैल रहिस । कैह्या सुग्गक् बच्चा बर्ही ते पालम कैहिके बुर्हिया खोब अस्रा लागके मिच्छागैल रहे ।

एकदिन बुर्हिया अहरा डारे गैल ते सुग्गा बर्हलैं कि नै कैहिके डोंडर झाँकके हेरल । आपन बुर्हुवाहे नुकल देखल । तब बुर्हिया जान लेहल । यहाँ सुग्गा उग्गा कुछ नै हुँइट । महिन बुर्हुवा ठागल । मुर्गी खैना जुगार रहिस् कोह्रियक् ।

बुर्हिया रिसागिल । रिसाके हाँठी बान्हलेहल । बुर्हुवा जुन पैलही घरे आके भौंकक् भिट्‌टर पेलके नुक गैल । बुर्हिया आपन भौका उठाइल चल डेहल । रिसक्मारे घरम्से निकर गैल । बुर्हिया अक्केली भौका बोक्ले जाइट जाइट बहुत दुर पुग गैल । ओहोर भौंकक् भिट्‌टर बुर्हुवाहे बरा डट्‌के मुटास लगलिस । बुर्हुवा काकरु काकरु सोंचल । उकुस मुकुस कर्टी आहे भौंकक् भिट्‌टर मुट डेहल ।

जब मुट बुर्हियक् कपारीम् चुहे लगलिस् तब पटा पाइल । मनमने सोचल । एहरी मोर महकनी तेल अँरागैल काहुन ? बिरचीन उभुकगैल कि का ना ? बुर्हिया भौका भुँइयम् ढारल ओ खोल्के हेरल । भौंकम् अपन बुर्हुवाहे देखल ।

बीच डगरीम् डुनहुनके झगरा होजैठिन् । कहाँसम् झगरा खेल्ही । फेन दुनुजाने मिलगैलैं । दुनुजाने अपन अपन गल्ती हुइल कहिके मनन् कैलैं । आबसे अइसिक नै करब कहिके मिलगैलैं । दुनजाने गोचा भिरके अपन घर लौटगिलैं । मजासे जिन्गी बिटाइ लग्लैं ।

हँसिया लेबो कि बेंट, तोहाँर ओ मोर सदा दिन हुइ भेंट ।

गिडरा

–सागर कुश्मी

गाउँक एक बगाल बठिन्यँन बैर टुरे जैठैं । बैर टुर्ना क्रममे एकठो खौराइल गिड्रा बठिन्यँनके बगालीओर आइल । तब बगालीमसे आवाज आइल । अइया दाई ! हेरो ते गोही खौराइल गिड्रा आइता ।

ऊ आवाज गिड्रक् कानम् पर्ठिस । तब गिड्रा कहल-

खौराइल खौराइल ना कहो । मै सात गाउँक् देसबन्ढीया हुँ । बगालीक् बठिन्यँन गिड्रा गिड्रा कहटी गुरगुरहिंक भग्ठैं । एकठो बठिन्याँ नैडराके जवाफ डेहल-

देसबन्ढिया हुइस् कलेसे खै तोर गाउँ ? खै तोर घर ?

गिड्रा कहल-

अगर मै सात गाउँक् देसबन्ढिया नैहुइम कलेसे महिनसे भोज कर्बो ? बठिन्याँ मन्जुर हुइल । गिड्रक् पाछे पाछे गैल । बरा दुर जाके एकठो बरा भारी डोँडरमे पेलाइल । भिट्टर बरा भारी सुग्घुर गाउँ देखा परल । ओहे गाउँमे गिड्रक् बरा भारी सुग्घुर घर रठिस । ऊ घर गाउँक् बठिन्यँइफे खोब मन परैलैं । दुनुजाने भोज कैके खुसीसे जीवन बिटाइ लग्लैं ।

कुछ सालबाद एकदिन गिड्रा अपन जन्नीहे कहल-

अरे बड्डी ! कबु सस्रार तो लैजिहो ? मै ते सस्रारफे नै देख्ले हुँ । जन्नी कठिस-

हाँ । जैहो सस्रार । खोब मजा मनही टुहिन गिडार मनैंन् ।

गिड्रा कहल- तुँ महिन लैचोलो ते । भला मजा मन्ना नैमन्ना ते पाछेक बात हो । जन्नी कठिस-

ठीक बा । नै मनबो ते चोलो लैजिम । महिनफे जैनास ते लागता । गिड्रा सस्रार जैना सुरसार करल । दोसर दिन दुनुजाने लर्का लेके पहुनी खाइ गैलैं ।

जन्नी आघेआघे लर्का लेले । गिड्रा पाछे पाछे झोला बोक्ले नेंगटी गाउँ पुग्ठैं । गाउँक कुक्कुर गिड्राहे देखके जिभ निकार निकार भुंके लग्लैं । ठोर्चे दुर गिड्रक ससरार आजिठिस । घरक मनै बरा मजासे अङ्गनम् खटिया बिछाके बैठ्ना ओ पानी देठैं । गिड्रा बरा खुसी हुइल । एकघची पाछे घरक मनै अपन छाइहे भिट्टर बलैठैं । जन्नी कठिस-

कहुँ ना जैहो । फे कुक्कुरिनसे रखेड्वा पैबो । मै भिट्टर जाइटुँ । गाउँक् कुक्कुर मौका पैटिकी एकघचिम चिठ बकोट कैके गिड्राहे मुवाडरठैं । ठनिक बेर रहिके मिझनी तयार हुइठ । जन्नी बलाइ अइठिस । गिडरा मुगैल रहठ । जन्नी बोल्करठिस् । निडागिल कि का मनैयाँ ? भिट्टर चोलो मिझनी खाई । गिडरा चाल नैकरल । अभिन नैउठ्बो ना । देम एक लाट लगा । बरा निन परट हुइ काहुँ ? जन्नी लाटले उस्टाइ हस कर्ठिस । गिडरा ठेट्कार होरहट । जन्नी रुइ लग्ठिस् । घरक मनै बाहर अइठैं । गिडरा हे मुअल देख्ठैं । घरक मनै गिडराहे बेन्ढ्वाँतिर भँठार डेठैं ।

समय बिट्टी जाइठ । कुछ दिन रहिके गिद्रक् छावा अपन दाइहे कहठ-

दाइ तैंफे अपन बठा जग्गा माँग ना मामासे । मैफे खेती करम । ओस्ते ते मजा नैमन्ठै जग्गा दिहीँ ? तोर बाबा रटैं ते कमैने रहैं । तैं फे छोट बटे । का करे सेक्बे ? छावा कहठ-

तैं एकचो माँग ते भला । देठैं कि नाइ ? जन्नी डरा डरा अपन भैयाहे छावक् बाट कहठ । तब भैया कठिस-

गिडरक् लर्का बरा खेती करुइया । नैमिली जग्गा सग्गा । ज्या मिलता ऊहे खाउ । ज्या मिलता उहे लगाउ । मामक् बात सुनके गिडरक् छावा चिमचाम होजाइठ । दोसर दिन बिहान खेलेबेर गिडरक् छावा एकठो घिरौलक् बिया भेटाइल । आपन बाबा भठारल ठाउँमे गस्का डेहल । घेरौला बरा मजा भोग्लार होके जामल । धिरे धिरे सारा बेन्ढुवा घेरौला किल होगैल । झलमलैले फरल ।

धान पक्ना समय रहे । एकदिन बिहन्नी गिडरक् छावा मामनके खेत्वा घुमे गैलरहठ । तब खेत्वम् मुस्वा लागल डेखठ । घर आके अपन दाइहे मामासे कोदरा मगाडे कहल । दाइ मुस्वा कोरक लाग बटुँ कहठ । फे गारी दिहुइबे काहुँ । काहाँ कोरक् लाग बटे मुस्वा ? तैं मगा ते डे । मुस्वा कोरम ते, हुइल । तब दाइ अपन भैयाहे कहल-

भैया रे, अपन भान्जाहे कोदरा डैडे । मुस्वा कोरम कहटा । मामा कठिस-

गिडर्क लर्का मुस्वा कोरही । ले यी कोडल्ची लैजा । बरा आइल मुस्वा कोरुइया । डाइ कोडल्ची लेके अइठिस । दोसर दिन बिहन्नी उठके गिडरक् छावा मुस्वा मारे गैल ।

दिनभर कोरट कोरट साँझ दिनबुर्वा मुस्वा भेटाइल । च्याप्पसे मुस्वइ पकरके टोरी मुस्वा आज पर्ले मोर फेला । मोर मामनके सारा खेत्वक् धान खउइया टहीँ हुइस ना ? पटकडिउँ कि का । मुस्वा हाँठ जोर बिन्ति करे लागठ । महिन छोरदेउ

महराज । मै यहाँसे दुर चलजैम । अभिन दुर चलजैम कठे । दोसरके धान खाइक लाग । पट्कुँ ? मुस्वा कहठ-

ज्या कबो मै मन्ना तयार बटुँ । महिन छोरदेउ महराज । ले ठिक बा । मै ज्या कहम उहे मन्बे कलेसे छोरम । नैकी अब्बे पटक देम । मुस्वा कहल-

का करक परी हजुर । मै कर्ना तयार बटुँ । महिन छोरदेउ । सुन- ऊ बेन्ढुवम् घेरौला फरल देखटे कि नाइ ? ऊ घेरौला आज रातभरिम् जम्मा खोलक परी । नैसेक्बे तो आज तोर सिकार खाडारम । मुस्वा कहल-

हजुर मै मन्जुर बटुँ । काल्ह बिहान सब घेरौला खोलल देख्बो । महिन छोरदेउ महराज । रात भरिम् खेत्वक सारा मुस बेन्ह्वँक घेरौला खोलदेठैं ।

दोसर दिन फे खेत्वा घुम्ना क्रममे एकठो फुड्यक ठाँट देखल । दिनभर चिमा ढुक्टि रहल । साँझ जुन बसेरा लेना जुन फुड्या ठाँठम् आइल । तब च्यापसे पकर लेहल । टोरि फुडिया मोर मामनके धान खैठे ? मोर मामनके धानमे घर बनैठे ? पटक डिउँ । फुडिया हाँतजोर बिन्ति करे लागठ-

महिन छोरदेउ महराज । ज्या कबो मै मन्ना तयार बटुँ । मै ज्या कहम उहे मनबे कलसे छोरम । नैकि अब्बे पटक डेम । फुडिया कहल-

का काम हो महराज । बताउ, मै कर्ना तयार बटुँ । ऊ बेन्ढुवम् घेरौला खोलल देखटे कि नाइ ? आज रातभरिम सारा घेरौलम् चाउर भरे सेक्बे तो ठीक बा । नै ते सिकार खा डारम आझ तोर । फुडिया कहल-

ठीक बा महराज । मै सक्कु घेरौलम चाउर भरडेम । महिन छोरदेउ । तब आपन संघरियन बलाके रातभरिम सारा घेरौलम फुडिया चाउर भर डेहल ।

गिद्रक छावा बिहान उठल । सक्कु घेरौला भरल डेखल । नलमे मु ढोइ गैल । तब नलक् आँजर पाँजर भैंभैंभैंभैं कुमन्ह्याँ घुमट डेखल । च्याप्पसे पकर लेहल । टोरि कुमहन्याँ, मोर मामनके माटी चोरैठे । मुवाडिउँ कि का । कुमहन्याँ हाँतजोर बिन्ति करे लागठ-

महिन नैमारो महराज । ज्या कबो मै मन्ना तयार बटुँ । महिन छोरदेउ । ऊ सक्कु घेरौलम चाउर भरल देखटे ? ऊ घेरौला चब्डे सेक्बे तो ठिक बा नैकी अब्बा मुवाडेम तुहिन् । कुमहन्याँ कहल-

ठिक बा महराज । मही छोरदेउ । आज दिनभरिम मै सक्कु घेरौला चबड्डेम । ना कती, दिन भरिम सक्कु घेरौला टुमगैल ।

घरक मनै धान कट्ना सुरसार करे लग्ठैं । दिन बिट्टी जाइठ । हप्तादिनमे घरक् अंगनम् धानक् रास लागजाइठ । एक दुई दिन बिसाके धान सपट्ना सुरसार कर्ठैं । गिडरक छावाफे घेरौला टुरके कुरह्या राखट । धान सप्टना दिन गिडरक छावाफे घेरौला सप्टे लागठ । एकओर मामन धान सप्टठिस । ओइनके कट्कर्रि किल धान निक्रठिन । दोसरओर ऊ घेरौला सप्टट । चाउर किल निक्रठिस । गिडरक छावाहे घेरौलम्से चाउर निकारट देखके मामाहे आसचर्य लग्ठिस् ।

अपन धान कट्कर्री किल रहलमे गिडरक झोपरिम् चाउरके बखारी डेखके मामा सारा खेती गिडरक छावाहे डेखके घेरौला लगैना सोच बनाइठ । समय बिट्टी जाइठ । फे खेतीक समय आइठ । तब मामा कहठ-

भैने ! असौं मोर सक्कु खेती तुँ लगाउ । मही तोहाँर ठाउँ घेरौला लगाइ डेउ । गिडरक छावा खुसी हुइठ । छावादाइ खुसियाली मनैटी बरा जोस जाँगरसे खेती कर्ठैं ।

समय बिट्टी गैल । जस्ते धान बाह्रट, ओस्तक् घेरौलाफे पहुँरटी जाइठ । जस्ते धान फुटट् ओस्टेक घेरौला फे फरटी जाइठ । धान लम्मा लम्मा गुद्गर बाली हुइठ । घेरौलाफे झलमलैले फरल रहठ । खेत्वक् धान देखके छावादाइ खुसी रठैं । घेरौला फरल देखके मामाफे खोब खुसी रहठ । एकओर छावादाइ धान कट्नामे लागल रठैं । दोसरओर मामाफे घेरौला टुर्नामे लागल रहठ ।

हप्तादिन भिट्टर सारा धान अंगनामे रास लागठ । छावादाइ धान सप्टना सुरु कर्ठैं । मामाफे घेरौला ठठाइट । घेरौलमसे करियइ बिया किल निक्रठ । मामा बहुट जोर रिसाइठ । गिडरक लर्का मही धोखा डेलो फसैलो कहिके । गिडरक झोंपरिम् आगी लगाडेहठ् । कुछ बेरमे झोंपरी जरके राख होजाइठ । तब गिडरक् छावा मामाहे कहठ-

मामा झोपरी ते जराडेलो । गोंइ लरहिया देऊ भुवा बेंचे जाऊँ ।

ओकर बात सुनके मामा हाँसठ् । गिडरक लर्का महिनसे जोरी खोज्लक घर ना घाटके होगिलो । आब भुवा बेचके कमाल कर्बो । लैजाउ लैजाउ कसिक बेच्ठो

मैफे हेरम । छावादाइ बोरीमे भुवा भरके लरहिया मचियाके चलडेठैं । बरेदुर जाके गिडरक छावक् नजर खोब सेँठ पैसावाला मनैनमे परठिस । लरहिया ओहँरी सोझारठ । ओइनठे छोटमोट लर्का रठिन । ना कटिकी ऊ मनैं हम्रहिन फे बैठालेउ कहेलग्ठैं । गिडरक् छावा कहठ-

नाइ, नैहुइ । काजे महराज ? हमरे जाटसे मिछ्यागिल बटी । बरु भाडा डेबी जे । गिडरक् छावा कहठ-

नाइ, नैहुइ । मनै कठैं हम्रहिन नै बैठैलेसेफे हमार लर्का बैठालेउ । मिछ्यागिल बटी । गिडरक छावा फेन कहठ-

बैठैना ते बैठालेम । यी बहुट अमुल्य चिज लैजाइटुँ । छोट लर्का हो कहुँ पाड डि ते यी सब भुवा बनजाइ । तबमारे नैबैठाइठुँ । मनैं कठैं -

बैठालेउ नै पाडी । गिडरक छावा कहठ-

अगर लर्का पाड दी कलसे मोर सामान भुवा बनजाइ । यी सामान बरावर सक्कु बोरिम रुपियाँ भरके देबो कलेसे बैठालेम ।

मनैं कठैं - का पाडी कहुँ । अइसिन हुइ कलेसे डैडेबी बैठालेउ । तब सबजे बैठके जैठैं । सेँठ घरेक लर्का मजै मजै खैलेक लरहियम नैबैठलेक एक्के घचिम पेट खलभलाइ लग्ठिन् । बस भूँकसे पाड मारट । गिडरक् छावा कहठ-

ऊ हेरो । पाड डेहेल । मोर सब सामान भुवा बना डेहेल । लरहिया रुकाके बोरा खोलखोल हेरे लागठ । सबका सब बोरीमे भुवा निक्रठ । छावादाइ रुइ लगठैं । हमार सब समान भुवा बनाडेलो, आब पैसा भरेक परी कैहिके । मनैं कठैं - ना रोउ । आब हुइगिल तो हुइगिल । हमार घरओर चलो । पैसा भरके पठादेप ।

साँझके दिनबुर्वा जुन घरे पुग्ठैं । छावादाइ बोरी भरभर रुपियाँ लेके अइठैं । रुपियाँ लानल देखके मामा डंग परल । ओहो भैने, भुवा गजब बिकठ कि का ? बोरी भरभर रुपियाँ लन्लो ? गिडरक् छावा कहठ- अरे मामा । भुवा ते लुटे नै पुगठ् । ओमने घरक् भुवा ते सबसे महंङ्गा बिकठ । आज पुग्बे नैकरल । काल्हफे मंगले बटैं । कैसिक कर्ना हो । नानडेम ते कनु । मोर ते सब ओराइगिल । ओहो भैने । का चिन्ता करठो ? मोर घरमे आगी लगादेउ । काल्ह मै अपनहँ जिम बेचे । गिडरक छावाहे मौका मिल्ठिस । काजे मामा अत्रा भारी घर बा रातभर ते

जरट लगहिस। बोरीम भरके बिहानलाग बेचे जैना ठिक्के हुइ। होजाइ भैने कहटी सलाई निकारके डेहठ। रातभर घर जरके भुवा बनजाइठ। बिहान बोरीमे भरके लरहिया मचियाके मामा भुवा बेचे चलडेहठ। यी गाउँसे ऊ गाउँ भुवा लैलेउ भुवा। मोर घरक् भुवा हो कहटी नेंगट। लेकिन ओकर भुवा कोइ नै किनल।

सब जाने कहठैं-

पागल हुइस तै ? भुवा बेचे आइल बटे ? तोर भुवा लैके का करब ? दिनभर बेचके एक मुट्ठा भुवा नै बेचपाइठ। दिन बुरे लागठ मामा गिडरक् छावक् पर बहुट जोर रिसाइठ। घरे आके गिडरक् छावइ मारे लागठ। महिन घर ना घाटके बनैलो कहिके गद्दार गिडरक छावा कहटी। भैसीक छालामे उहीहे मोट्री बाँधके लडियामे पुहा डेहठ। गिडरक छावा पुहट पुहट बरे दुर पुगट। लडियक् किनारे गोरु चरहुइया गयरवक् नजर पुहटी रह मोट्रीम परठिस। का हो कहिके गयरुवा लडियमसे बाहर निकारट। निकारके मोट्री छोरट ते गिडरक छावा निक्रत। गिडरक छावा गयरुवाहे ज्यान बचैलेकमे बहुट धन्यबाद डेहट। घरे आइठ। साहिँजुनफे घरे गिडरक छावइ देखके मामा आसचर्यमे परठ। अरे मै ते लडियम् पुहाडेहल रहुँ, कसिक बचगिल गिडरक लर्का ? अरे मामा तुँ कहटो महिन पुहाडेहल रहुँ कैह्के। मै सोचटुँ कि मामा महिन सात गाउँक नाच हेरे पठैले रहैं। ऊ भैसीक छालामे ते ओहो बाटे ना बट्वाउ। मामा का कहुँ टुहिन। कैसिक बुझाउँ टुहिन अट्ना सुग्घर सुग्घर बठिन्यँन पैँया लग्ना। अइसिन मेरमेरिक गित गैना। ओहो महिन ते अइनासे नैलाग टेहे। का कर्ना हो। अपन मनैन बिस्राई नैसेक्नु। मामा टबे मारे आगैनु।

ओहो भैने ! अइसिन देख्लो ? बरे सुग्घर सुग्घर बठिन्यँन। पक्का हो ? अरे मामा तोहाँर कसम। मै का अपन मामै ठागम् जे ? जोन टठियामे भात खैनु ओहे टठियामे फोंग पारम कि का ? अइसिन हो कलसे तो आज मै फे सात गाउँक नाच हेरे जैम। महिनफे मोट्री बानाऊ भान्जा। चलो लडियावर जाई हाली। लडियामे जाके मोट्री बाँधके गिडरक छापा अपन मामई लडियामे पुहादेहेठ। तबसे अपनही करुइया अपनही खउइया। लावा घर बनाके मामक् सारा सम्पत्ती लेके खुसी जिन्गी बिटाइठ्। खिस्सा ओराइल।

गिडरा ओ गोहुवा

–सागर कुश्मी

गिडरा ओ गोहुवा मित मिलैले रहिंट । गिडरा रोज लडियक् ओहपार डोंगर खाइ जाए । गोहुवा जुन अपन मिट गिडराहे लडिया नघैनामे सहयोग करे । ओस्तक् ओइनके काम धन्दा चल्टि रहिन् ।

एकरोज गोहुवा गिडराहे कहल-

मितजी मोर लाग जन्नि बनादेबी । तब गिडरा कहठ्-

अरे मित जी जन्नि बनैना का बा ? अपने महिन रोज लडिया नघाडेठी । अपन मितके लाग अत्रा काहे नै करे सेकम ? ली चिन्ता ना करी । मै अपनेक् लाग जन्नि बनादेम । गिडरा गोहुवाहे सम्झाइल ।

अस्तक् गोहुवा रोजदिन घोस्ले रहे गिडराहे । गिडरा जुन सुनट सुनट मिछ्छा गैल रहे । गिडरा गोहुवाहे कहठ्-

अरे मित जी मुहक् कौरा ठोरे ना हो ? जिन्गिक् सौदा हो काहुन् । एकदिन मिल्बे करी जे ।

एकरोज गिडरा डोंगर बिटोरके एकठो मनैंया बनाके ठरह्वाइल । उहीहे बरा च्वाँक बठिनियाँ हस् बनाइल । तब गिडरा पानी पिए लडियामे गैल । ओहाँ जुन धोबिया रानिक् धोटी सारी धोइ आइल रहे । गिडरा जुगार लगाइल । यी धोबियक् सारी छिने परल । ऐसा मुह बाके डाँट काटे छुटल कि धोबिया डरक् मारे गँर किट्टैले भाग गैल । तबजाके गिडरा सारी लेके चल देहल । डोंगरके बनाइल मनैयाँहे सारी पेहवा डेहल । सिंगार पटार कैके चमचम करना बरा डेख्नौस सुग्घुर बठिनियाँहस् बिल्गाइ लागल ।

आब गिडरा चलल् अपन मित गोहुवक् ठन । जाके कहठ् -

मितजी मै अपनेक् लाग जन्नी खोज देले बटुँ । चलि जाइ हेरे । गोहुवा खुसी हुइल । हाली चल डेहठ् जन्नी हेरे । गिडरा दूरेसे डेखाके चल देहठ् । गोहुवा लग्गे जाके कहल-

अरी चोल जाइ हाली । मै टुहिन लेहे आइल बटुँ । ऊ डोंगर बोली का बोली ? मनैयाँ रहट् ते बोलट् ओलट् । तब गोहुवा ऐसा हाँठसे पकरल कि डोंगर पुरा खलमलसे ढलगैल । गोहुवा रिसक् मारे चुर होगैल । सारेक गिडरा महिन ठग्ले बा । रहिले, टुहिन बिना नै खैले नैछोरम । गोहुवा गिडराहे खैना जुगार लगाइठ् ।

गिडरा लडियामे पानी पिए आइल । गोहुवा च्याप्पसे गिडरक् गोरा पकर लेहल । गिडरा बरा चलाक रहे । कहे लागल-

अरे मितजी, गोरा पकरक् छोरके जरकोर पकरले बटी । गोहुवा फेन बाट पट्या जाइठ । गिडरक् गोरा छोर देहठ् । तब गिडरा बँचके भाग जाइठ् ।

गोहुवा फेन जुगार लगाइल गिडराहे खाइक लाग । एक दिन गोहुवा लाहिक् कुनारामे घोल बनाके बैठल रहे । आब गिडरा आइ ते खैम कहिके । खोब असरा लागठ । गिडरा जुन आगि टापक् लाग ठेट्िकक् आगि लानके ओहे कुनारमे लगाडेहठ् । गिडरा आगि टापे लागल । गोहुवा जुन जरके घाहिल होगैल । बलटल भागल पानीमे ।

बिहानके गिडरा फेन पानी पिए गैल । गोहुवा डाँट गिज्रैले पानीमे रहे । गिडरा पुछल्-

मिटजी का करटि ? हाँसटी कि डाँट गिज्रैले बटी ? गोहुवा जुन मुगैल रहे । गिडरा पानी पिके अपन डगर लाग जाइठ् । खिस्सा ओराजाइठ् ।

कुट्नी बुर्हिया

–सागर कुश्मी

एक्ठो गाउँ रहे । ऊ गाउँमे एक्ठो कुट्नी बुर्हिया फेन बैठे । डसिया आइ लागल रहे । बुर्हिया डसैंहियाँ सामाजामा करक् लाग दारु बैठैना सुरसार करल । दारु चुहाइक् लाग काठी करे बनुवँम् गैल । ओहाँ ऊ एक्ठो सुखाइल रुख्वा भेटाइल । मनमने सोंचल । यिहे रुख्वा काट्के आगी बनाके डारु चुहैम । ऊ रुख्वा बरा पुरान रुख्वा रहे । रुख्वामे मैना, सुग्वा, बघुवा ओ सुरा बसेरा बनैले रहिंट । ओइनके बासस्थान ओहे रुख्वा रहिन् ।

एकदिन कुट्नी बुर्हिया उहे रुख्वा काट्के दारु चुहाइ भिरल । जब साँझ हुइल ते सबजे बसेरा लेहे आइ लग्लैं । सबसे पहिले मैना आइल । देखल अपन घर रलक रुख्वा जरट । देख्के बरा सोच पर्लिस । ऊ बहुट सोचल ओ कहल-

मोर घर डुवार सारा जरगैल । आब मैकिल जिके काकरुँ ? यिहीसे यिहे आगिम कुड्के मुले ठिक रही । मैना आगीम् कुद जाइथ् । एक घचिक रहिके सुग्वा आइल । उहो फेन अपन बसेरा जरट देखके आगिम कुड परल । फेन एक घचिक रहिके बघुवा आइल । ऊ फे सारा घर जरट देखके खिसैक् मारे आगिम कुड् जाइठ् । ओस्तेक दिन भरिक डट्करल सुरा आइल । उहो फेन डेखट सारा घर जरट । ऊ फे सारा संघरियन मरल देखके कुड्के मरगैल । बुर्हियक् दारु आउर डट्के टरटरहिक् चुहे लग्लिस् ।

ओहोर डसिया फेन आगैल । बुर्हिया अपन देउ देउतन्हे छाँकी बुँदीफे चर्हाइल । डसिया माने अउयन फेन ओहे दारु पियक देहल । मनै एक गिलास पिलै ते मैनाहस बोले लग्लै । जब डुसरा गिलास पिलै ते सुग्गा हस टाँइ टाँइ बोले लग्लै । ओस्तक तिसरा गिलास पिलै ते पूरा बाघ हस गर्जे लग्लै । मही हस कोइ नै करे लग्लै । झगरा लराइ करे लग्लै । जब चार गिलास पिलैं ते गोराफे अरगराइ नैलग्लिन । फेच्कुर ओच्कुर आइ लग्लिन । कोइ अपन घरे पुगे सेकल ते कोइ डगरिम ढन्मना गैल । ओइनके मुहेम गाउँक् कुक्कुर मुटिन तो भइल सम्धी भइल कहैं ।

अइसिक् दारु पिलक् कारन मैना, सुग्गा, बघुवा ओ सुरिनके गुन मनैनमे सर्लिन । तबमारे मनै दारु पिठै ते ना होस रठिन् ना जोस । ना ते डिमाग ।

सरज़ुल चिरैंयाँ

-सागर कुश्मी

सहरमे एक्ठो रजुवा रहे । ऊ रजुवक् दुइठो जन्नी रहिस । बर्का जन्नीक् दुइठो छावा लर्का रहिस । छुट्की जन्नीक एकठो छावा लर्का रहिस । छोट्कीक लर्का हेल्हा रठिस । एकदिन बर्का जन्नीक लर्का गोली खेलतहैं । छोट्कीक जन्नीक लर्का जुन हेर तिहिस् ।

छोटकीक लर्का कहल- महिन फे मिलाउ ना । उहीहे मिला लेठैं । फेनसे ओइने टिनु दादा भैया मिलके गोली खेले लग्ठैं । तब ओइनके खेल सुरु हुइजैठिन । सुरुमे बरकक् पाला अइठिस । बरकवा झुक्डेहठ । तब मन्हलक् पाला अइठिस । ऊ फेन झुक्डेहठ । तब छोट्कक् पाला अइठिस । ऊ सबके गोली मारके फोर डेहठ । फेनसे ओकार दादा ओइनहे गरियाइ लग्ठिस् । फेन उहिहे हिगार डेठिस ।

एक दिन राजा सिकार खेले जाइठ बनुवाँमे । एकठो सरजुल चिरैयँक गुह भेटाइठ । राजा उहे गुह चाट लेहठ । ऊ कहठ- गुह तो अत्रा मीठ बटिस । ओकार सिकार कत्रा मीठ हुइहिस ? फेनसे ऊ गुह लेले चलजाइठ अपन घर । राजा अपन बर्का जन्नीक लर्कन फेन उहे गुह चटाडेहठ । छोट्कीक लर्काहे नैडेहठ ।

राजा दोसर बिहान उठके अपन छावनके लग तिर ओ धनुस बना डेहठ । दोसर बिहान उठके चलजैठैं सिकार खेले । जाइट-जाइट एक ठाउँ सातो सखियन् पानी भरके आइटहैं । ओइने पुछ्ठैं-

भैया हुक्रे कहाँ जाइटो ? भैया हुक्रे कठैं-

सरजुल चिरैयँक् सिकार खेले ।

तब सातो सखियन कठैं - यी सातठो गग्री फोर देउ ओ टुहरे सरजुल चिरैयाँ मार ढरबो । नैफोरे सेक्बो टो नैमार पैबो । गग्री फोर्ना कोसिस कर्थै मने सक्कु जाने दादा भैया नैसेक्ठैं फोरे । हम्रे मार धारब कहिके ओहाँसे नेंगडेठैं ।

जाइट-जाइट एक ठाउँ कोल पेर्ना कोलिया भेटा जैठैं । ऊ कोल पेर्ना कोलिया पुछ्ठ-

भैया हुक्रे कहाँ जाइटो टुहरे ?

हम्रे सर्जुल चिरैयक् सिकार खेले जाइटी, ओइने कठैं ।

कोलिया फेनसे कहठ-

भैया टुहरे यी कोल फरचाडेबो तो टुहरे सरजुल चिरैया मार ढरबो। ओ एक जोरी बरडाफे लैजैबो । फरचाइ नै सेक्बो कलसे चिरैया मारे नै सेक्बो । दादा भैया प्रयास कर्थै । मने कोल फरच्वाई नै सेक्थैं । ओइने ओहाँसे आघे नेंगठै । ओइने कठैं - हम्रे पक्काफे मारब ।

जाइट जाइट एक ठाउँ कुट्नी बुरहीयक् घर भेटा जैठैं। कुट्नी बुरहिया पुछठ-

भैया हुँकरे कहाँ जाइटो ?

दादा भैया कठै-

सरजुल चिरैयक् सिकार खेले ।

कुट्नी बुरहिया कहठ-

भैया हुँकरे टुहरे आज मोरे घर रात बैठो । काल्ह मै बिहानके सुक्खुन डारम । सुक्खुन खाई चिरैया आई तो मरहो । दादा भैया उहैं रात बैठ्जैठैं । कुट्नी बुरहिया कहठ-

भैया हुँकरे अपन अपन तिर धनुस मजासे ढरहो ना । घरम बरे बरे मुस बटैं ।

ठिके बा कहटि चलजैठै सुटे ओइने ।

कुट्नी बुरहिया ठीक १२ बजे रातके ओइनके सक्कु तीर धनुष काट्के धर डेहठ । बिहान हुइठ । कुट्नी बुरहिया बिहन्नी उठके लर्कन् जगाइठ् । भैया हुक्रे आब उठो । अपन अपन तीर धनुस हेरो । मुस काट् डेहेल हुइहि तो बनैहो ।

अत्रा कहटि ऊ चलजाइट सुक्खुन डारे । फेनसे कुट्नी बुरहिया पुछठ-

भैया तीर धनुस काट्डेले बटैं कि बचैले बटैं ?

दादा भैया कठैं - बुदी सब काट्डेले बटै ।

कुट्नी बुरहिया कहठ-

अट्ठें बैठके बनाउँ । मै सुक्खुन डारुँ । कुट्नी बुरहिया सुक्खुन डारे लागठ । ओइने अपन अपन तीर धनुस बनाई भिर्थैं ।

सरजुल चिरैयाँ घुघुसुघु घुघुसुघु कर्टी ओहैं आइठ् । ऊ अँगनम् पुग्जाइठ । राजक् लर्कन डेख लेहठ । सरजुल चिरैयाँ ऊ लर्कनह् गभ्फगभ्फ लिल लेहठ ।

कुछ समय पाछे छोट्की रानी आपन रज्वाहे कहठ-

महाराज, मोर छावक लाग फे तिर धनुस बना डेहो । मोर छावा फेन सिकार खेले जाइ । राजा दोसर बिहान छोट्कीक् छावक लाग तिर धनस बना डेहठ । छोटकीक् छावाफे चल जाइट सिकार खेले । ऊ फेन जाइट जाइट एक ठाउँ सातठो सखियन भेटा जाइठ ।

ओइने पुछ्ठैं-

भैया कहाँ जाइटो ?

भैया कहट-

मै सरजुल चिरैयँक् सिकार खेले जाइटुँ ।

तो भैया यी सातठो गग्री फोर डेबो तो सरजुल चिरैयाँहे मार ढर्बो । नैसेक्बो तो मारे फेन नैसेक्बो ? सात गग्री फोर डेबो तो हमहन फेन लैजिबो । ऊ तिर चलाइठ् ओ सातठो गग्री फोर डेहठ । सिकार खेलके घुमम् ते लैजिम कहिके चलदेहथ् । जाइट जाइट एक ठाउँ कोल पेर्ना कोलियाहे भेटा जाइठ ।

कोलिया पुछठ- भैया कहाँ जाइटो ?

भैया कहठ-

मै सरजुल चिरैयँक् सिकार खेले जाइटुँ ।

कोलिया फेन कहठ- भैया तैं यी कोल फार डेबे तो मै टुहिन एक जोरी बर्डा डेम । ऊ आपन तिरसे ओकर कोल फँरचा देहथ् । ओहाँसे आघे बढठ् । जाइट जाइट कुटनी बुर्हिया रहल ठाउँ पुगजाइथ् ।

कुट्नी बुरहिया पुछठ-

भैया कहाँ जाइटो ?

भैया कहठ- मै सरजुल चिरैयँक् सिकार खेले जाइटुँ ।

कुट्नी बुरहिया कहठ-

भैया तैं आज मोर घर बैठ जा ? काल्ह मै सुक्खुन डारम तो सरजुल चिरैंया सुक्खुन खाई यहाँ आई ।

भैया ओट्ना बात सुनट टो उहैं बैठ जाइठ । तब जाके सुट्ना जुन हुइठ । कुट्नी बुरहिया कहठ-

भैया अपन तीर धनुस मजासे धारिस । हमार घर बरा बरा मुस बटैं ।

भैया कहठ-

ठीक बा बुदी, मजासे ढरले बटुँ । ओट्ना कहिके ऊ सुटजाइठ । कुट्नी बुरहिया रातके ठीक १२ बजे तीर धनुस काटे चलठ् । तीर कट्टी कट्टी ओकार दाँत टुट जैठिस । ओट्ठही ढारके सुते चल जाइठ । दोसर बिहान उठ्के भैया आब बिहान होगिल उठो कहठ् । अपन तिर धनुस हेरो ? मै जाइटुँ आब सुक्खुन डारे कहठ् ।

कुट्नी बुरहिया सुक्खुन डारे लागठ । भैया जाइठ् तिर धनुस लेहे ।

कुट्नी बुरहिया पुछठ्-

भैया तिर धनुस मजा बा कि मुस काटढरनै ? नै बुडी काटे जाइटेहे मनो दाँत टुट गैलिस । कुट्नी बुरहिया सुक्खुन डार सेकठ । सरजुल चिरैयाँ आइ लागठ । घुघुसुघु घुघुसुघु कर्टी । कुट्नी बुरहियक् अंगनम बैठजाइठ । भैया टानके तिर मारठ् । ओटठेंहे सरजुल चिरैयाँ गिरजाइठ । भट्भटाइ लागठ । नै मरल देखके एक तिर फेनसे कपारीम् मार डेहठ । सरजुल चिरैयाँ मर जाइठ । भैया यी चिरैयँक् तैं पेट चिर । तोर दादन खैले बा कुटनी बुह्रिया कहठ् । पेट चिरट तो निकरठैं ओकर दादन । सरजुल चिरैयाँहे लेले आइ लग्ठैं । छोट्की लौरा पाछे पाछे आइठ । बस आइट आइट कोल पेर्ना कोलियक् ठन पुग्जैठैं । कोलिया पुछठ-

के मारल रे सरजुल चिरैयाँहे ? दादा भैया कठैं-

हम्रे मर्ली । उहाँसे एक जोरी बर्दा फेन लैजैठैं । फेन उहाँसे नेंगे लग्ठैं । जाइट जाइट सातौं सखियन भेटा जैठैं । सातौ सखियन पुछ्ठैं-

के मारल सरजुल चिरैयाँहे ? दादा भैया फेनसे कठैं-

हम्रे मर्ली । फेनसे ओइन लेले चलडेठैं । जाइट जाइट अपन घर पुग्जैठैं । राजा पुछ्ठ-

के मारल रे ? सरजुल चिरैयाँहे ? दादा भैया कठैं-

हम्रे मर्ली महाराज ।

तबजाके छोट्की छावाहे पुछठ-

तैं मरले कि टोर दादनके ? छोट्की लौरा कहठ-

मै मर्नु । यिनहे तो खालेले रहिन ।

मै चिरैयाहे मारेक एकर पेट चिर्नु तो ओइने निकरनै ।

यिने कोलफे नैसेक्नै फारे । यी भैया फार डेनै । हाँ हम्रे फेन कली सात गग्री फोरे । मने नैसेक्नै । यी भैया सेक्नै । हमहन लागठ् यिहे भैया मारल हुइही । ओइनके बात सुनके राजाहे फेन विसवास हुइठि्स् । छोट्कवा मारल हुइ कहिके । राजा अपन छोट्की छावाहे राज पद दैडेहठ ।

चत्तुर बर्का भैया

-हिमलाल चौधरी

एकठो गाउँम एक जोरी जन्नी-थरुवा रलह । हुकनके पाँच भाइ छावन् रलहन् । बर्का छावा देखाइम बर स्वाभ्क, कम बोल्ना, अनावसयक बातचित नैकर्ना रलहन् । और चार भाइ बरा चलाक, जन्नाहा ओ ज्यादा गफगाफ लगैना रहल । यी चार भाइ आपन बर्का दादुहन स्वाभ्क ओ गन्जावा कैख हेलाहा करत । यी चार भाइ हुक्र आपन दाइ बाबक् मृत्यु पाछ्र आपन बर्का दादुहन घर अलग कैदेल । उफटघामट, कम उब्जनी हुइना जग्गा ओ टुटल वग्गर ओ एकठो बुह्राइल बर्दा भाग छुट्यादेल । भैयनके बात काट नैसेक्ख भैयन ज्या देहल वह श्रीसम्पत्ती सहेरख बर्का चित्त बुभ्काइल । घर अलग हुइलक एक हप्ता पाछ्र बर्का दादुक बर्दा मुजैठिन् । दोस्र आपन खोब मिल्ना संघरेनके सहयोगसे ऊ मुवल बुह्राइल बर्दाहन एकठो गाउँक धनी मनैयक गहुँम जुगार लगाख रातख ठऱ्हयादेठ । विहानख धनी मनैया आपन गहुँम ठऱ्हयाहल बर्दाहन हाँक जाइठ ।

एक पठरा ग्वाम्म मारत मुवल ठऱ्ह्याइल राखल बर्दा गिरजाहठ् । ऊ तमासा बर्कावाला भैया हेर्ती रहल । पाछ्र ऊ धनी मनैया कहत - "त्वार गँहु नोक्सान हुइल रहत महिसे क्षतिपुर्ति लेत्या । म्वार बर्दाह काजे मरल्या । आब मै पुलिसम उजुर कर जाइतु ।" धनी मनैया कहल - "भैया महिसे नै जान्ख गल्ती होगैल । पुलिसम उजुर बाजुर जिन कर । बेन्से क्षतिपुर्ति (बर्दाके) स्वरुप एक लाख रुपियाँ ल्या कहल । बर्कावाला भैया मान्दारल । बर्कावाला भैया पैसा पाइल त वाकर तामभ्काम बहरगैलस् । वाकर रबाफ देख्ख वाकर चार भाइ दंग पर्ल । यी अत्रा धेर पैसा कहाँ पाइल कैख वहिह सोधपुछ्र कर लग्ल । ऊ कहल - घर फुटबेर एकठो बुह्राइल बर्दा देरख्लोहो । उह बर्दाफे एक हप्ता पाछ्र मुगैल । वह बर्दक सिकार गाउँ गाउँ दुलाख बेच्ख मै पैसा बनैनु । चार भाइनके उल्टा दिमाग चल लग्लिन । ओत्रा बुह्राइल गोरुक सिकार बेच्ख त यी अत्रा ध्यार पैसा बनाइल । हमार भ्कन जवान जवान बर्दा बाट । हिकनके सिकार त भ्कन महङ्ग विकि कैख

एकठो जवान बर्दा काट्ख चार भाइ गोरुक सिकार ब्याँच गाउँ गाउँ गैल । पाछ गाउँक मनै गोरु काट्ख सिकार ब्याँच अइलो कैख चार भाइन् हाँत ग्वारा बाहानख खोव सजाय देख पिटलन । ओ समाजम कागज कराख संन्भ्या छोर देलन । त हुक्र जन्लकि यी हमार बर्का हमन बेवकुफ बनाइल कैख । चार भाइ आपन दादुसे रिसाक वाकर घरम आगी लगादेल । विचारा घरम आगि लग्लीस त फेन कंगाल होगैल । भैयनसे परेसान होक एक ब्वारा आपन जरल घरक भुवा उठाख अनिसिचतकालिन गन्तव्यम न्यागल । जाइत जाइत रात हो गैलस । चिनजान किहुसे नै हो, कहाँ बैठना, कहाँ खैना ठेगान नै हो । वहाँ च्वार डाँकनके फेन डर बा । डगरीम एकठो आमके बगियाम बास बैसना विचार करल । तर बैठलसे च्वार ओ डाँकाके फे डर बा । वह वर्से ऊ उप्पर रुख्खोम आपन ब्वारक भुइ संग लेक सौरल ओ वैठल । रातिक् १२ बजेओर च्वार हुँक्र गाउँमसे चोरी कैक वह आमक बग्यक तर रुपिया बाँट लग्ल । वह ब्याला बर्कावाला भैया उपर रुख्वमसे दुस्स ब्वारक भुइ खसा देहल । च्वार डरकमार भागा भाग कैख बेपत्ता हुइल । पाछ ब्वारक भुइ खाली कैख वह ब्वारम च्वारनके छ्वारल रुपिया भरख रातारात घर आइल । विहानक वाकर चार भाइ आपन दादु हन ब्वारा भर रुपिया आनल डेख्ल । दंग पर्ल ओ पुछ्ल । 'अत्राधेर पैसा कहाँ पैल्या' कैख । बर्का दादु कहल- तुह्न महि देख नैसेकठो, कहुँकि नैकहुँ । को दादु, कल चार भाइ । दोस्र ऊ कहलागल- तुँह्न म्वार घर जराडेलो । ओह घरक् भुइ गाउँ गाउँ बेच्ख पैसा कमाख अन्नु । पाछ हुक्रेफे आपन घरम आगी लगाक भुइ ब्याँच गैल । हमार आगलागी हुइलक घरक भुइ लेओ कहती । गाँउ गाउँक मनै हुकन गऱ्याइत ओ थुकट । कोइ कोइ दुई चार झापरफे पिट्लिन । हमार बर्का हमन फे फसाइल कैख चारु भाइ दुन्डैटी आपन दादुकथे ऐल । यहीह मारख फाँक परल योजना बनैल । उहिह पकरख खहरा भिर पखवम लैगैल । एकठो बोरीम दारख बोरिक मोहटा वाहान्क धरल । ओ सोंच्ल यी जसिन हुइलसे हमार दादु हो, हाँथले छुक यिहीह भिर पख्वमसे भह्वादेवी त पाप लागी । ओह वर्से घाराघोच्चा काटख वह घाराघोच्चाले ढकेल्क भह्वादेवी कैख घाराघोच्चक काट गैल । वह ब्यालम वह डगर बहुत तगरा जुवारी मनैया सुटबुट लगाख स्वानक मुन्द्री, स्वानक सिक्री, घरी बाहान्ख कौनो ठाउँ जुवा ख्याल जाहटह । वह ब्याला बोरक भित्तरसे बर्कावाला भैया तिर्कि छक्का

पञ्जा कैख बरा जोर जोरसे चिल्लाइल। ऊ जुवाडी आवाज सुनख आपन चौह्नल घोरा रोकख कहल।

ए हजुर एक दाउँ महिफे ख्याल दी जे। त बर्कावाला भैया कहल नै मिली। भख्खर त म्वार दाउ लागल बा। जुवारी फेर अनुरोध करल। नही हजुर एक दाउ ख्यालदी। बर्कावाला भैया कहल- अप्न ठाउँ बैठटी कलसे यी बोराके मोहटाके दौंरी छोरी ओ मै ब्वारमसे निकरु। दोस्र अप्न यी बोरम पैठबी ओ मै बोरक मोहरा बाँधम। जुवाडी बर्का भैयक कहल बमोजिम करल। जुवाडी बोराके भित्तर पैठल बर्कावाला भैया बोराके मोहता बाहान्के जुवाडीक सुटबुट कपरा, चस्मा, औंठी, सिक्री लगाख गाउँवर चल्देहल। चार भाइ घाराघोच्चा काट्ख ऐल ओ बोरक् मनैयह घाराघोच्चासे ढकेल लग्ल। जुवाडी मै नै हुइटु। महीहँ ना मारो कह लागल। चार भाइ हमन चुटिया बनाइत्या सारे मरजा कैख घाराघोच्चासे भिर पख्खवम ढकेल्ख घर ऐल। घर ऐल त हुकन्के बर्का दादु त सुटबुट लगाख घरी, चस्मा, स्वानके आँठी, सिक्रि लगाक घोरोम छमछम सवारी करता। हुँक्र आपन दादुह देख्ख फे चकित पर्ल। फेर पुच्छल। तुहीह त भिरम ढकेल्ख मुवाक ऐली। तै यहाँ कसिक ऐल्या ? बर्कावाला दादु जवाफ देहल- तुह्र महिह मुवादेलो। मै स्वर्गम गैनु त दाइबाबा महिहन यी सब चिज, सुटबुट, कपरा, स्वानक मुन्द्री, सिक्रि, घरी, चस्मा, सवारी करना घोरा देक सुखसे जिन्दगी बिताइस् छावा कैख फे पठाडेल। चार भाइनके लोभ पल्हैलिन। हम्रफे मुवी त स्वर्गम रहल दाइबाबनसे सुटबुट कपरा, चस्मा, स्वानक् मुन्द्री, सिक्री ओ सवारी करना घोरवा पैवी कैख। आपन दादुह मार लैगैलक भिरम जाख दादुह कराइल बमोजिम बोराम पैठक बोरक मोहटा बन्धाके आपन दादुह घाराघोच्चाले भिरम आपनहन गिराइ लगाक मुल। तब पाछ बर्कावाला भैया आपन बाँकी जिन्दगी सुख सयलसे बाँचल।

बाह्रो बर्दिवा

–डा. कृष्णराज सर्वहारी

धेर बरस आघक बात हो । बर्दिवन गोरु चह्राइ बन्वा गैल रहिँट । थारू समुदायमे बर्दिवा प्राय: भर्खरके लौंरन रठाँ । या ते बुह्राइल मनै । मने उ दिन संयोगले गैया चह्राइ १२ जनहनके समुहमे लच्पच्हे लौंरन जो रहिँट ।

गोरु बछरु अपन धुनमे चह्रटि रहिँट । कबो कबडी, कबो छुर लगायत खेल खेल्ना बर्डिवन्हे उ दिन खै का सुर जग्लिन, गुरै कैलक (गुरूवन्के झारफुक) खेल खेल्ना सल्लाहमे पुग्लाँ । धार्मिक अन्धविसवास बल्गारसे जर गारके बैठलक थारू समुदायमे भुत बोक्सिनमे धेर विसवास कैना चलन अभिन फेन बा । केउ बेराम हुइलेसे सामान्य टन्टर मन्टर, झारफुँकले मजा नै हुइलेसे गुरै कैना चलन बा । जेम्हे देउतनके माँगलअनुसार मुर्घा, सुवर, पठ्वा, बोक्वा बली देहे परठ ।

बर्का गुरूवा अभिनय कैना बर्दिवा अपने सुस्वइटी सहायक गुरूवा (केसौका) हे आछत छिट्टी अपनसँगे सुस्वइना बनाइल । मुख्य गुरूवा बनुइया पुछे लागल-

कोह, रोगिहे मजा पारक टन तुही का का, कट्ना कट्ना भोग देहे परी ? केसौका सुस्वइटी अपने सैलिमे कहल-

बोक्वा एकठो, सुरिक पठरू डुइठो ओ मुर्गि सातठो चाही ।

मुख्य गुरूवा केसौकाके माग बमोजिम एकठो बर्दिवाहे बोक्वा, दुई जनहनहे सुरिक पठरु ओ ७ ठो बर्दिवन्हे मुर्घक अभिनय कैना संकेत देहल । सक्कु जाने खुसी हुके अपन भुमिका अनुसार बोल निकरटी चिल्लाइ लग्लाँ । बली देना मुख्य गुरूवा कुसक पटियाले सक्हुनके घेँचम रेट्लक अभिनय कैल । मने अचम्म कुसक पटियाले

रेटके सक्हुनके रकतके खोल्हुवा बहल । अक्के घचिक बोक्वा, सुरा पठरु, मुर्घा बन्लक दस जाने बर्दिवनके परान गैलिन् ।

गुरैके खेल खेलमे फोहैती रलक संघरियन हेर्टि-हेर्टि मुलक ओरसे बाँकी बच्लक गुरूवा ओ केसौका टोंटा फार फार रोइ लग्लाँ । रोइट-रोइट मिच्छैला ते सक्कु लहासहे एक ठाउँमे जम्मा कैलाँ । आब का कैना हो कहिके ओइने दुई जाने सल्लाह कैला । घरे घुम्लेसे दाइ-बाबा अत्रा धेर संघरियन कैसिक मुला कहिके पुछेबेर का कना ? सोंचे नैसेक्के गुरूवा ओ केसौका फेन संघरियनसँगे जैना बिचार कैलाँ । ओइने दुनुजाने फेन कुसके पटियाले घैँचा रेट्ला । ठोठोर किल रेटले पर फेन ओइने मुँ गैलाँ । अइसिके बाह्र जाने बर्दिवन अक्के चिहान हुइला ।

बर्दिवनके बेल्सलक लठ्ठि ओ पौवा रूखवम परिनत हुइल । ओइनके जोरल जिउ बरवार ढुंगा बनल । बर्दियाके बारबर्दिया नगरपालिकामे बाह्रो बर्दिवाके नाउँले एक मन्दिर बना गइल बा । जौन गँवल्यनके साझा देवस्थलके रूपमे बा । अजंगके बरवार ढुंगा अभिन बा । लठ्ठिसे बन्लक रूख्वा कहिके बिसवास कैजैना एकठो बुह्रवा जामक रूख्वा फेन उहाँ बा । प्रत्येक अघनके पन्चमिके दिन गुरुवन बाह्रो बर्दिवनके सम्झनामे गुरै कैठाँ । अखरिया (गुरूवनके नाच) खेल्ठाँ । उहे बाह्रो बर्दिवन खेल खेलेबेर चह्राइहस देउठन्वामे अभिन फेन प्रत्येक बरस मुर्घा, सुरा, बोक्वक बली चह्रा जाइठ । अइसिके बाह्र बर्दिवनके यिहे कहकुटअनुसार बर्दिया जिल्लाके नामकरन हुइलक हो कना कहाइ बा ।

हँर जोट्ना मछरिया

-डा. कृष्णराज सर्वहारी

एकठो देसमे बन्वक किनारे छुट्नक झोपरिम बुह्रिया बुह्रवा बैठिँट । ओइनके छोटमोट बारी ओ झोपरि बाहेक लर्कापर्का केउ फेन नै रहिन् ।

एकदिन बुह्रिया कहली-

'सुन्लो बुह्रवा, मोर लग हेल्का बिन्डेहो । मै मच्छि मारे जैम ।' बुह्रवा कहल-

'ले ले, बिनडेम, जहिया फेन पानिक झोर किल खवाइठ, बरे मच्छि मर्नाहा हुइल बा ।'

बुह्रिया चिल्लाइल-

'फाटल हेल्का रहि ते कैसिक मर्ना ते ?' अट्ने कहटि ऊ हुक्का टाने लागल ।

बुह्रवा एकठो लावा हेल्का बिन देहठ, अपन बुह्रियक लग । बुह्रिया फौँहैटी खोलह्वामे मच्छि मारे गइल । मने दिनभर मच्छि मारके एकठो टेङना मच्छि किल मारे सेकल । बुह्रियाहे आइट देख्के लसरी बट्टी-बट्टी बुह्रवा पुछल-

'खै खै तोर मारल मच्छि हेरूँ, कत्रा धेर मर्ले ।'

'कहाँ पाउँ, एकठो टेङना मच्छि किल पैलुँ' कहटि बुह्रिया चटनि रलेसे कुल बनाइ परल कहिके उहे मछरियाहे मारे लागल । अचम्म ऊ मछरिया चिल्लाइल-

'बुह्रिया दाइ, बुह्रिया दाइ महिना मारो । मै टुहिन मोर कमाही खवइम ।'

'तैं मछरियक जात का कमाही खवइबे ?' कहटि बुह्रिया ऊ मछरियाहे मारक टन बुह्रवइ अह्राइल । जब बुह्रवा मारे जाइ लागल, मछरिया फेन उहे कहे लागल-

'बुह्रवा बाबा, बुह्रवा बाबा महि ना मारो । मै टुहिनहे फुरहन्ने कमाहि खवइम ।'

तब बुह्रिया बुह्रवा ऊ मछरियाहे नैमारके अपन लर्काहस सहेरे लग्ला ।

एकदिन मछरिया बुह्रवइ कहल-

'बुह्रवा बाबा, बुह्रवा बाबा, मोर लग गोरू किन देहो ओ हर बनादेहो । मैं हर जोतम ।' बुह्रवाहे बिस्वासे नैलग्लिस ओ कहल- 'तैं मछरियक जात कैसिक हर जोटे सेक्बे ?' मछरिया कहल-'जोट देम कि । पहिले सरजाम बना ते देउ ।' बुह्रवा बाट काटे नैसेक्के पिरा ओ ढौरा गोरू किन देहल ओ हर फेन बनादेहल । मछरिया फौँहैटी हरेम गोरु डोरके जोटे गैल । ऊ हरक चिरैयम बैठ्के गित गइती हर जोते

लागल । केउ मनै अइलेसे खेट्वक हिलामे दौरटी नुकजाए । मनै दुर पुग्लेसे फेन हरक चिरैंयम बैठके जोते लागे ।

उहे समयमे ऊ देसके रजवा गाउँक खबर बुझ्क लाग अपन सिपाहिनहे खटइले रहे । मनै बिना अपनेहे हर जोट्टी रलक देख्के सिपाहिन छक्क परटी कहे लग्ला- 'आहा, कट्ना सिपार गोरु बटाँ, बिना मनैयक हर जोट्टी बटाँ । हम्रे रजवाहे देखाबी ते कट्ना खुस हुइहीँ ।' अस्ते बिचार कर्टि ओइने गोरुन छोरके लैजइठाँ ।

ढेबर बिगरटी मछरिया घरे आइठ । मछरिया छावाहे बिना गोरुक देख्के बुढिया पुछल-

'खै ते भैया गोरु, कहाँ गैलाँ ?'

मछरिया सक्कु बात बट्वाइल ओ कहल-

'बुढिया दाइ, बुढिया दाइ मोर लग सटुवा बनादेउ । मै जइम गोरु खोजे ।'

'मछरियक जात कहाँ जैबे खोजे ? हुगैल ना जा । ओहरे बिस्राके हेराजैबे, बेन दोसर गोरु किनलेबी ।' बुढ्वा कहल ।

मछरिया बुढिया बुढ्वक आघे रिसाइ लागल । यी देख्के बुढ्वा कहल-

'बना दे ना ते का हुइ । गोरु खोजे जाइक टन बा ते जाइ दे । खोजे सेकठ कि हेरी ना ।'

मछरिया सटुवक पोका पारके गोरु खोजे निकरल । जइटि-जइटि एकठो लडियक किनारमे रलक रुख्वक छाँहिम सिट्टर पानिमे सुस्टाइ लागल । उहे रुख्वम लागल मढ पुछ्लाँ-

'कहाँ जाइटो मछरिया डाडु ? बहुत निरास बिल्गाइटो झे ?'

मछरिया कहल-'अरे का कना हो मढवा भैयु । मोर पिरा ओ ढौरा गोरु हेरा गैलाँ । ओ मै ओइनके खोजिमे निकरल बटुँ ।'

मढनके अगवा कहल-

'मछरिया डाडु हम्रिहिन् फेन लैजाउ, हम्रे फेन जाबि तुहिन सघाइ ।'

मछरिया फोहैंटि कहल- 'जाइ ते संघरियन, एकसे दुई हुइबि ते झन मजा ।'

ओइने जैटी-जैटी एकठो रुख्वक छाहिम बिसाइ लग्ला । तबेहे उहे रुख्वम लग्लक हारा पुछ्ला- 'कहाँ जाइटो मछरिया डाडु, बहुट उदास बिल्गाइटो झे ?'

‘अरे हारा भैयु मोरे पिरा ओ ढौरा गोरु हेराइल बटाँ, तब खोजे निकरल बटुँ ।’ उ कहल ।

‘डाडु हमरिहिन फेन हँसियाउ, हमरे फेन सँगे जाबी ।’ सँगे जाइक टन हारन फेन तयार हुइठाँ ।

मछरिया आउर फोंहाइल- ‘जाइ ते दुई जानेसे तिन जाने रबी ते झन मजा ।

जैटी-जैटी एकठो लडियक किनारमे पानी पिटी बिसाइ लग्ला । झोंरियम रलक सारा (हाराहस बिस्हा किरा) पुछ्ठाँ-

‘कहाँ जाइटो मछरिया डाडु ?’ मछरिया फेन उहे उत्तर देहल । ओ सारालोग फेन सँगे जैना तयार हुजैठा । मछरिया कहठ-

‘जाइ ते भैयुन तिनसे चार हुइबी ते झन मजा ।’

जैटी-जैटी ओइने रज्वक सहर लग्गे पुग्लाँ । सहरके किनारमे रलक लडियामे एक ढोबिया रज्वक कपरा ढोइ आइल रहठ । मछरिया ढिरेसे पानीम पैंठठ् । मढ, हारा ओ सारा उहे लग्गे रलक रुख्वम बैठ्ठाँ । जब ढोबिया कपरा भिजाइ लागठ, तब्बेहें मछरिया गित गाइठ-

‘ढोबिया रे ढोबिया, रोइबे कि ढोइबे ? कि रोइटी ढोइबे ?

कि अपन सहरके रज्वा बलैबे । यिहे घाटसे करु लराइ’

कपरा भिजइटी भिजइटी ढोबिया रुकठ, ओ मने मने कहठ- ‘आझ के हो बोले हस करटा ।’ ओ फेन लुग्गा भिजाइ लागठ । तब फेन उहे गीतरुपी आवाज गुन्जे लागठ ।

गित गउइया किहु नैदेखल ते ढोबिया अपन सुनल सक्कु बात रज्वक ठेन जाके कहल । ओ रज्वा अपन फौज तयार कैके बन्दुक, गोला बारुद बोक्के उहे ठाँउमे

आइठ । रज्वा लल्कारठ- 'के हो मही आफ्न हेपुइया ? हिम्मत बा ते सामने आ ।'

मछरिया धिरे धिरे बोलठ-

'हजुरके सिपाहिन मोर गोरू नन्ले बटाँ । मै उहे गोरु लेहे आइल बटुँ । चुप्पैले देउ, नै ते मै लरके कुल लैजैम । रज्वा फेनसे गर्जे लागठ-

'ले तै अपन सक्ति देखा । पठा अपन फौज ।'

मछरिया हिम्मतके साथ बोलठ-

'तुँ चलाउ गोला बारुद कट्ना सक्तिसाली बा ?'

रज्वा अपन सिपाहिहे आदेस देहठ । गोलि पर्र पर्र चले लागठ । मने मछरिया कठ्वक संघुवा तरे नुकठ । उही कुछ फेन नैहुइठिस् । जब रज्वक गोली ओरैठिस् ओ बोलठ-

'आब छोर मछरिया अपन फौजहे ?'

सुरुमे मछरिया मढुवइ छोरठ । मढुवा सिपाहिन काटे लग्ठाँ । ओकर परसे हाराहे पठाइठ । हारा फेन काटे लग्ठाँ । सिपाहिन छटपटैटि यहोर ओहोर भागे लग्ठाँ । सब्से पाछे साराहे छोरठ, ओ सिपाहिन ढले लग्ठाँ । रज्वा हार स्विकारके मछरियक गोरू फिर्टा देहठ ।

मछरिया अपन सक्कु संघरियनसँगे घरे घुमठ । बुह्रिया-बुह्रवा गोरुसँहित मछरियारुपी छावाहे पाके दंग हुइठाँ । टेङना मछरिया फेन हर जोट्टि खेतिपाती करे लागठ । ओ, बुह्रिया-बुह्रवन पाले लागठ ।

स्रोटः सयामकुमार थारू

ढुंग्रहवा, बर्दिया

डेढबिट्वा

–डा. कृष्णराज सर्वहारी

एकठो गाउँमे गरिब बुढ्वा बैठे। ओकर छाइछावा नै रहिस्। बुढ्वा बारिमे खिरा लगैले रहे। खिरा पौढ्के मनके फुला फुल्याइल रलेसे फेन खिरा अक्केठो किल फरल। बुढ्वा छक् परल।

फरल खिरा फेन डेढ बिट्टक रहे। ऊ देख्के बुढ्वा रिसाइल। ऊ सराप देहल कि यी खिरा खउइयक लर्का फेन डेढ बिट्टक होए।

एकदिन एक छिमेकी जनेवा बुढ्वक बारिम पैठल। खिरक डन्गाम ऊ एक बिट्टक खिरा देखल। 'छिहा आउर खिरा नै बिल्गाइठो, इहे फेन खाइ परल' कहटि ऊ टुरके खा लेहल।

ऊ जनेवक फेन लर्कापर्का नैरहिस। अचम्मे हुइल। खिरा खैलक कुछ दिनिम जो ऊ पैनाहा हुगैल। नौ महिना परसे छावा जन्मलिस्। बच्चा डेढ बिट्टक रहे। टुकुर टुकुर नेङ्ना बेलासम लर्का बढ्बे नै करल।

उमेर बढ्लेसे फेन लर्कक सरिर 'जट्रा रहिस ओट्रे' रहिगैलिस। उहेमारे दाइ महा चिन्तित रही। ओकर जिउ देख्के सक्कुजाने उही 'डेढबिट्वा' कहिके बलाइस। समय बिट्टि गैल। डेढबिट्वा ग्यारा बरसके हुइल। एकदिन ऊ अपन दाइहे कहल,

'दाइ, मै टुही सहयोग करम ना।'

दाइ झरकके कली, 'तै का सहयोग करे सेक्बे झे, भैया ?'

ऊ फेन झरकके कहल,

'पहिले काम अह्राके ते हेरो।'

ख्याल ख्यालमे दाइ कली,

'अँट्वा परसे ठोरचे पैंरा लेके आउ, भैंसिन्या भुख्ले बा।' छावा अट्ना फेन करे सेकि कना हुँखिन नै लागल रहिन।

कुछ बेरमे अँग्नमसे एकबिट्टे चिल्लाइल, 'दाइ, पैंरा नन्लुँ, कहाँ ढारुँ ?'

दाइ भिट्टरसे चिल्लैली,

'भैसिन्यक आघे डारडेउ ।'

'भैसिन्या सक्कु पैंरा नैखाइ सेकी, ढैना ठाउँ देखाइ आउ ना,' डेढबिट्वा चिल्लाइल ।

'ठैचारिक पैंरा लानके घरे उठैना मेरिक चिल्लाइटा यी लवन्डा,' दाइ भुन्भुनैटी बाहेर निकरली ।

'मोर बुडिक चोंच । यी का जाडु हो ?' डेढबिट्वा खेरहन्वम्से अक्के खेपमे सक्कु पैंरा बोक्के नन्ले रहे । ऊ छावा डेढबिट्टक् रलेसे फेन बलमे लटरपटर नै हो कहिके बल्ले चाल पैली ।

डेढबिट्वा घरक सक्कु काम अकेली कैडेहे । छावा सक्कु काम सहजिलेसे कैडेना हुइलक ओरसे दाइहे बहुत फर्छ्वार हुइलिन् । पहिलेसे दुःख नैकरे परलक ओरसे हुँकारिक मुहार ओजरार हुइटी अइलिन ।

कुछ बरस परसे दाइ डेढबिट्वा मोंछ भौंऱ्याइट देख्लि । एकदिन बलाके कली, 'छावा, तुँ आब जवान हो रख्लो । मही पतुहियक मुह हेर्ना मन बा । जाउ मजा पटुहिया खोजके आउ ।'

दाइक बात मानके डेढबिट्वा दुल्हनिया खोजे निकरल । जैटी जैटी एक बनबिलरासे ओकर भेट हुइलिस । डेढबिट्वा उही अपन यात्राके बारेम बटाइल । तब बनबिलरा कहल,

'मही फेन सँगे लैजाउ । कौनो समयमे मै फेन काम अइम की ?'

डेढबिट्वा कहल,

'चोलो ना ते, मही डगरेमे संघरिया फेन हुइ ।' उ बनबिलराहे एक कानक भिट्टर हुसल ।

आउर आघे गैल ते गिडरासे डेढबिट्वक भेट हुइलिस । गिडरा फेन ओकरसँगे जैना कहल । डेढबिट्वा गिडराहे अउरे कानक भिट्टर हुँसल ओ फेन आघे बढ्ल ।

कुछ बेरिक नेंगाइ परसे एकठो भारी लडिया आइल । डेढबिट्वा ऊ लडिया नै नांघे सेके । ऊ लडियाहे बिन्ति कैल,

'हे गंगामैया, हजुर फेन मोरेसँगे आइ ।' तब लडियक पुरे पानी कानेम ढैके डेढबिट्वा आघे लागल ।

डेढबिट्वा एकठो बरवार राजधानी सहरमे पुगल । उ देसके रजुवक भोज कैना उमेरके एक सुन्दर छाइ बटिन् कना ऊ पता पाइल । दरबारओर लागल ।

दरबारमे रजुवकसँगे दर्सनभेटमे डेढबिट्वा कहल,

'महाराज ! मै हजुरके छाइसे भोज करक चाहटु ?'

डेढबिट्वा ओइसिक कहल ते रजुवा महा जोरसे रिसाइल । 'हैसियत नै रहुइयन ऐसिन आँट कैना ?' झोक्कैटी रजुवा सैनिकन्हे अह्राइल,

'यिही मुर्घिनके खोरेम डारडेउ । मुर्घि खोंटक्के जो ठिक पारदिही ।'

डेढबिट्वाहे सैनिकलोग खोर भिट्टर ढकेल देलाँ । सैनिकलोग घुम्ला ते डेढबिट्वा बनबिलराहे कहल, 'संघारी मही टोहार सहयोग चाहल ।'

कानेमसे बाहेर निकरटि बनबिलरा कहल, 'कही संघारी, का काम परल ?' डेढबिट्वा कहल, 'एकचो टुँ चिल्लाउ ना ।'

डेढबिट्वक आदेस पैटी साइट बनबिलरा जोरसे चिल्लाइल । बनबिलरा चिल्लैटी किल खोर भिट्टर भागडौर मचल । ओइसिक हुके खोर जो भसक गैल ।

मुर्घि खोरेमसे बाहर निकरला । बनबिलरा फेन डेढबिट्वक कानक भिट्टर पैठल । ओ, डेढबिट्वा फेन उहाँसे निक्रल ।

भिन्सरही हेरे जाइबेर रजुवा मुर्घिक खोर भस्कल डेखल । कुछ मुर्घि बाहर चह्रटी रहिँट । ढेउर मुर्घि नै रहिँट । डेढबिट्वा हँस्ति बैठल रहे । ओ फेन रजुवा सैनिक लोगनहे अह्राइल,

'आब यिही छेगरिनके खोरेम बगा देहो ।'

खोरेम बगाके सैनिक फिर्ला ते डेढबिट्वा गिडराहे बाहर निकरके एकचो जोरसे चिल्लाइ कहल । कानेमसे निकरटी गिडरा चिल्लाइल, "हुँइया..।" गिडरा चिल्लैलक आवाजसे छेगरि झझक्के कुड्गेबेर खोर भसक्गैल ओ छेगरी भग्लाँ । गिडरा फेन डेढबिट्वक कानक भिट्टर पैठल ।

दोसुर दिन रजुवा छेगरिनके खोर हेरे गैलाँ । डेढबिट्वा ओठ्ठे बैठल देख्के छक्क परलाँ । आब रजुवा डेढबिट्वाहे आगिम बगैना बिचार कइल । ऊ सारा सहरवासिनहे कन्डा नन्ना आदेस देहल । सहरके खुला ठाउँमे कन्डक पहाड जो ठह्रवा गइल ।

कन्डामे आगी बारगैल । आगी बरे लागल ते दरबारके सैनिक डेढबिट्वाहे उहे आगिम बगाके दरबार फिर्ला । आगिम बगाइ बेर डेढबिट्वा कहल, 'गंगामैया बाहर निकरके मही सहयोग करी ।' ओइसिक कटी किल गंगा लडियक पानी फोहोरा हस ओकर कानेमसे बाहर निक्रल । पानी आगिहे अक्के घचिक बुटा डेहल ।

आगी बुट्लेसे फेन पानी भर नैरुकल । सहर पुरे जलमग्न हुइ लागल । एकबिट्टे आरामसे उ दृस्य हेरटी रहे । सहर बुर्ना स्थिती अइलक ओरसे रजुवा अक्टटी कहलाँ, 'हे डेढबिट्वाज्यु ! हजुरके महानता पता नैहुइलक ओरसे गल्ति हुइल । पानी रोक्दि ।'

डेढबिट्वा मौका छोप लेहल, 'राजकुमारिके भोज मोरसँगे कैडेना वाचा करी । तब किल पानी रुकि । नै ते नैरुकी ।' रजुवा वाचा करल ।

डेढबिट्वा कहल, 'गंगामैया आब भिट्टर जाइ ।'

गंगामैया फेन डेढबिट्वक कानक भिट्टर पैठली । सहर धिरे धिरे पहिलेहस हुइ लागल ।

डेढबिट्वक बल ओ बुड्ढी दख्के रजुवा अचम्मित हुइलाँ । 'जिउ छोट हुके का हुइल ते ? छमता ते कट्ना धेर पो रना । हजुरके साहस ओ बुड्ढी देख्के मै धेर खुसी हुइलुँ ।' उ डेढबिट्वइसे छाइक भोज कैडेना निसचय कैलाँ । राजकुमारी फेन डेढबिट्वक पराक्रम देख्के धेर प्रभावित हुइली । राजधानीमे भोजक तयारी हुइ लागल ।

रज्वा राजकुमारी ओ डेढबिट्वक भोज धुमधामसे कैडेलाँ । रजुवा डेढबिट्वाहे युवराज घोसना कैलाँ ।

युवराज हुइल ते डेढबिट्वा अपन दाइहे फेन सहरमे बलाइल । रजुवक सेसपाछे उ फेन रजुवा हुइल । लम्मा समयसम ऊ देस ओ जनतनके सेवा करल ।

स्रोतः अयोध्याप्रसाद दहित, बगरापुर, दाङदेउखुरी

गुलप्पन रज्वा

–डा. कृष्णराज सर्वहारी

एक देसमे गुलप्पन राजा रहिट । ओहकार भोज हुइल रहिन । मने भैवक भोज हुइल नै रहिन । भैवक लग बाबा दुलहि बनैलिन । टिकाफुना लगाके भोज फागुन महिनामे ठन्ला । नातपातनहे नेउता बँट्ला । भोजके दिन फेन आगैल । बरात जैना हुइलिन, सब सामा जामा खानपिन बनैला, सब नेउतहरिन जुटला । गुलप्पन राजा कहला कि बाबा भैवकसँगे बरात तै जा, मैं घरे पहुना पहुनी सहेरम । तब बाबा कहलिन, ठिके बा ते महि जाउँ भोजुवा बन्के, तै रोह घरे ।

तब बरात सजला, जौन रहिन आपनठिन फौजफंकर, हाँथी, घोडा सब सजला । तब गुलप्पन राजा कहलाँ, बाबा ससरार दुर बा । एक दिनमे पुगे नै सेकजाइ । कहु मजा ठाउँ हेरके रातमे वरतियनहे बैठोइहो । सब ठाउँमे बैठोइहो- बैठोइहो, एक ठाउँमे महा भारी बनुवा बा । उ वनुवा बिचमे महाभारी तलवा बा । उ जगा पर भर बास ना लेहो । ओटना कहिके गुलप्पन राजा बरात पठैला । ठिके बा ते हम्रे ओट्ठे भर बास नै लेबि कहिके बाबा बरतियन लेके चल्लाँ ।

चल्टे चलावट, चल्टे चलावट जहाँ भारी तल्वा रहे, ओहें पहुँचला । सब वरतियन कहलाँ, आब महा रात फेन हो गैल । यहाँ खोब मजा ठाउँ बा । खानपिन बनैना, हाँथी घोडा बँढ्ना लहैना खोब मजा ठाउँ बा, यिहें बैठी । गुलप्पन राजक बाबा कहलिन् कि बर्का छावा कहले बा, यी ठाउँमे बास ना लेहो, और जहाँ फेन लेहो ।

तब बरतियन कहलाँ,

ठिके बा ते उहाँसे चल्लाँ । चल्टे चलावट, चल्टे चलावट फेन एकठो छोटनक तल्वा पुगला ते कहला कि वहाँ महा मजा रहे नै बैठली, यहाँ फेन मजे बा, यिहे बैठी । उहें बैठला, खानपिन कैके बिहान फेन बरात चल्लाँ । चल्टे चलावट चल्टे चलावट दुल्हनियक घर (ससरार) पुग्ला । वहाँक मनै बरटियनके लग सब व्यवस्था बनैला । खानपिन सब हुइल, रातभर रहला । बिहान राजा बिदाइ कैला । जट्ना रुपिया पैसा फौज फंकर, हाँथी, घोडा, सोना, चाँदि, दान दच्छिना देना रहिन्, सब देहला । छाइहे फेन सँपराके डोलबोकुवा, चौठेरुवनहे पठैला ओ सम्धिसे सेवासलाम लेके छाइहे पठैलुँ कहिके बिडावारि हुइला । बरतियन दुलहनिया लेके घुमला, चल्टे चलावट चल्टे चलावट फेन उहे बर्का तल्वा पुगला ते सब

बरतियन कहला कि अबखरिक यिहे तल्वा ठन बैठि । यहाँ सब कुछके व्यवस्था बा । सब फौज फंकर हाँथि, घोडा, बँढला, खानपिन बनैला, खैला ओ सुट्लाँ ।

दिनभरिक नेङ्गलक सब मिच्छाइल रहिट । एक घचिकमे सब निदागैला । खोब मन्के निंद पर्लिन । जब बिहान जग्ला ते उहे तल्वा मन्से सपराज निकरके पहाडघट सारा ओरसे बरतियनहे घेर्ले रहिट । बरटियन गिनोर हेरटटा ओ कहटटा कि ओहो, यी का हु गइल, पहाडघट हमरहिन घेर लेहल । रातके ते नै रहे, पहिले जाइबेर फेन नै रहे । खैली पिली सुटली कुछ नै रहे । सपवक ढुजाहस बिल्गाइटा ते संपवै हो । कहुँ नेगे घुमे लाइक ठाँठ नै हो । सब छेक परगैला । सब सपवक मुह खोजटटा । खोजटे खोजट बलटल सपवक मुह भेटैला ।

तब गुलप्पन राजक बाबा कहला-

हे सँपराज ! टोहार माँगन का बा ? बताउ मोर ठेन । हम्रे का गल्ति कैले बटी ? सपराज कहला-

टुहरे कुछ गल्ति नै कैले हो । बरात गैलो, अइलो तल्वा आँरितिर बैठलो, खैलो, पिलो । मोर एक माँगन बा, ऊ माँगन पुरा कैबो ते मै टुहरिन छोरम नै ते सक्कुहुन लिलडारम ।

राजक बाबा कहलिन-

हाँ सपराज ! मै पुरा करम ।

-पुरा कर्बे ?

-जि ! मै करम ।

-मोर माँगन बा महि गुलप्पन राजासे भेट करुवा देउ ।

-ठिके बा सँपराज ! छोरदेउ मै आपन छावाहे अब्बे पठादेम ।

-लेउ ते मै छोरदेम । भर आजु झट्टे पठाइक परी । आजु उकहिनसे काम बा ।

तब सँपराज बलटल डगरा छोरल । गुलप्पन राजा विद्वान रहित । जन्नाहा रहित । सब बात पता पा रख्ले रहित् । यहाँ बरतियन ओट्ठेसे चल्लाँ । चल्टे चलावट चल्टे चलावट बरतियन दुलहनिया लेके घरे पहुँचला । पहुँचटी साइट, किहुसे बिना बातचित कैल घरे मन्से गुलप्पन राजा सँपरके आपन सवारीवाला घोडा कसके निकरत रहित् । बरतियन गोटगाट अभिन पुग्ले नै रहित् । ते बरतियन कहे लग्लाँ,

'हे राजा । हम्रे भरखर तोहार टन बहुरिया नानटी । तुँ पर्छुवा लेउ । अब्बेहे तुँ कहाँ निकरटो ?'

गुलप्पन राजा कहला-

नाही, नाही समयमे सँपराजके ठेन पहुँचना बा । जाइ देउ नै ते समय खसक जाइ ते काम नै बनी ।

अत्रा कहटी किल आपन घोडवा लेके गुलप्पन राजा निकर गैलाँ । सब मनैन्के छोट मन होगैलिन । सोचमे परगैला, बरतियन पस्टाइ लग्ला । गुलप्पन राजा चल्टे चलावट चल्टे चलावट बर्का बनुवा मनिक उहे बर्का तल्वा ठेन पुग्ला । पुगटी साइट घोरवाहे वर्गदके रूखवामे बाँढके अपने तल्वामे कुद पर्ला ।

ते घोडवा यहाँ हहनाइटा । छटपटाइटा, रोइटा कि आब मै बाँढल बटुँ । महि के छोडि, खानपिन के डि ? मोर मालिक तल्वामे कुदगैलाँ ।

गुलप्पन राजा सपराजके ठेन पुग्लाँ । 'हे सपराज ! सुनाउ का माँगन बा महिसे ?' सँपराज महा खुसी हुइल । झट्टे आइल देखके कहलाँ, 'गुलप्पन राजा टुहिनसे मोर मागन बा । महि नकबिलरी रानीसे एकचो भेट करवादेउ । मोर मुना समय आगैल । नकबिलरी रानीसे एकचो भेट हुइम ते मै बैकुण्ठपुरि बास पैम । बात मोर अत्रे हो, गुलप्पन राजा तुँ जाउ ।

राजा तल्वा मनसे ढिकुवा पर डरिअइलाँ । ओ घोडवाहे कहला-

तुहि खोब भुख्ले रख्नु । ले मै तोर पिठ ठठा डेलु, आब तोर पेट भरजाइ । रुख्वा मन्से घोरवाहे छोर्ला ओ चौंढ्ला । घोरवा बँढ्लक बर्गदके रुख्वा भकसे उखारके ओंढ्ला । एक हाँठले लगाम पकर्ला । एक हाँठले छाटा हस बर्गद ओढ्ले, एक हाँठ लगाम पकरले नकविलरि रानी खोजे चल्ला । खटखट-खटखट चल्टे चल्टे एकठो मनैयाहे देखला । ऊ महा वीर रहे । अकेली तल्वा खोडट रहे । राजा कहला-

'कम खोड टुँ का करटो ? अत्रा भारि तल्वा खोड डरलो ।'

ऊ कहल

राजा साहेब । मै महा खोडुवान बटुँ । ढेउर कहबो ते ढेउर, कम कहबो ते कम खोड्ठु । तब दुनु जाने हाँठ मिलैला । कम खोड कहलस, 'गुलप्पन राजा तुँ कहाँ जाइटो ?' राजा कहला, मै नकबिलरी रानीसे भेट करे जाइटुँ ।' कम खोडुवा कहल- हे गुलप्पन राजा ! महि फेन लैचोलो ।

'नाहि, तुँ आपन काम करल करो, मोर सँगे का करे जैबो ?' राजा कहलाँ ।

'नाहि मै तोहार संगे नै गैले नै छोरम् । कबो कबो काम लागम कि ।' कम खोडवा कहल । राजा कहला, लेउ ते आब नै मन्बो ते चलो ।

दुनु जाने घोरवक पर चल्लाँ । चल्टे चल्टे एक कमदेखवाहे देख्लाँ । तब राजा कहलाँ

'ओ कमडेख, तुँ का हेरटो महा उप्पर ?' कमडेखवा कहल

'राजा टुँ नै जन्लो । यी समय इन्द्रासनमे परी लोग नाच करटि बटाँ । हो, मै उहे नाँच हेरटुँ ।'

'कैसिक हेरटो कमडेख ?' राजा पुछ्ठ । 'महि दूर हेरे कबो ते महा दूर हेरठु । लग्गु कबो ते महा लग्गु हेर्ठु,' कमडेख आगे कहल

'तुँ कहोर चलटो ?' गुलप्पन राजा कहला-

मैं नकबिलरी रानीसे भेट करे जाइटु ।

'ते मही फेन लैचलो गुलप्पन राजा,' कमडेख कहल ।

राजा कहलाँ, 'नाहि तु नाच हेरल करो । मोर सँगे का करे जैबो ।'

ऊ नै मानल । ऊ फेन गैल । तीनु जाने चल्टे चलावट चल्टे चलावट एकठो मनैयाहे मुतट् देखला । ऊ मनैया खच खच-खच खच मुतट रहे । राजा कहलाँ

'का करटो कम पेसाबि ?' ऊ फेन ओस्टक कहल । राजा फेन बटैलाँ, कम पेसाबि फेन राजाके सँग जैना हुइल ।

आब चारु जाने सवार हुइलाँ । चल्टे चलावट चल्टे चलावट एकठो बख्खरिया देख्ला । ऊ मनैया एक गोरा यी पहाड, एक गोरा ऊ पहाडमे ढैके घेचामे बखारि टाङके धान बोइट रहे । 'का करटो बख्खर राज ?' राजा कहला । बख्खर राज कहल, 'मै धान बोइटु राजा साहेब । तुँ कहाँ जाइटो गुलप्पन राजा ?'

राजा कहलाँ, 'मै नकविलरिहे भेट करे जाइटुँ ।'

'महि फेन लैचलो ते,' बख्खर राज कहल ।

नाहि झुठे दुःख खाडे काहे जैबो । जिन जाउ ।

नाहि मैं जैम कि कबो काम लागम कि ।

ठिके बा ते आब नै मानठो ते चलो ।

राजा अत्रा कहटि पाँच जाने घोरवक पर सवारि हुइलाँ । चल्टे चलावट चल्टे चलावट जहाँ नकबिलरी रानीक राज रहिस, वहाँ पुगलाँ ।

नकबिलरी रानीहे चाहे जत्रा बोलकारो कबो नै बोले । तरे मुन्टि कैले चिमचाम रहे । नकबिलरी रानीक बाबा कले रहिस, 'जे मोर छाइहे वोलकारे सेकी, ऊ मोर छाइसे भोज करी । नै सेकी ते ऊ भसम हुजाइ ।'

गुलप्पन राजा अपन सँग लैगैल चारु जनहन माछि बनैला ओ नकबिलरी रानीक ठेन गैला । एक मछियाहे टिकुलिमे बैठोइला । एक मछियाहे सुटियामे बैठोइला । एकठोहे हुमेलमे और एकहे ठोसियामे बैठोइला । सक्हुन ओकर पहिरलक गहनामे बैठ्वा देला । तब गुलप्पन राजा टिकुलिहे कहलाँ

'हे टिकुली रानी, तुँ महारानीसे कुछ बात कहो, कुछ चिट कहो, तब ते रैनि रात कटि ।'

तब टिकुली मनिक मछिया बोलल्

का कहबो हे राजा ! अत्रा अभागिक हाँठेम परल बटुँ । रातदिन महि लगैले रहठ, कबो नै छुट्टि देहठ ।

तब गुलप्पन राजा सुटियाहे कहलाँ-

हे सुटिया रानी, टुँ महारानीसे कुछ बात कहो, कुछ चिट कहो, तब ते रैनी रात कटी ।

तब सुटिया मनिक मछिया बोलल्

का कहबो, हे राजा । अत्रा अभागिक हाँठेम परल बटुँ । रातदिन महि लगैले रहठ, कबो नै छुट्टि देहठ ।

अस्तक अस्तक हुमेलहे, ठोसियाहे फेन कहठाँ ते अेम्ने मनिक माछि सब बोलठाँ, का कहबो हे राजा ! अत्रा अभागिक हाँठेम परल बटुँ रातदिन लगैले रहठ कबो नै छुट्टी देहठ ।

नकबिलिरी रानी हे महा रिस लग्ठिस । तब बोलल्

'सब गहना महिहे अभागी कहटटाँ, सब निकारके बगाडेम' कहिके बगाडेहठ । सारा राज्यमे सहरमे हल्ला हुगैल कि कहाँक देसके राजा हो । हमार नकबिलरी रानीहे बोलकार डारल । कट्ना बरा बरा राजा ते बोल्कारे नै सेक्के भसम हो गैला । तब गुलप्पन राजा गीत गैला :

एक टेलहल ते मै देखलु रानीके टिकलिया है ।

एक टेलहल नौलखा हारे ‼

एक टेलहल ते मै देखलु रानीके सुटिया हे !

एक टेलहल नौ लखा हारे ‼

एक टेलहल ते मै देखलु रानीके हुमेल हे !

एक टेलहल नौ लखा हारे ‼

एक टेलहल ते मै दैखलु रानीके ठोसिया हे !

एक टेलहल नौ लखा हारे ‼

तब नकबिलरी रानीक बाबा कहलिन

यी कहाँक राजा हो ? मोर छ्वाइहे बोलकरले किल ते बा । मोर छ्वाइक नौ लखा हार इन्द्रासनपुरिमे बटिस । ऊ जे लाने सेकि, तब किल मोर छ्वाइसे भोज करे पाइ ।

अत्रा बात सुन्लाँ ते गुलप्पन राजा कमदेखहे कहला-

कमडेख तुँ हेरो ते । नकबिलरी रानीक नौ लखा हार कहाँ ढैल बटिस ?

कमदेख इन्द्रासनपुरीमे हेर्ला ओ देखैलाँ । बख्खर राजाहे राजा लेहे जाइ कहला । बख्खर राज एक टाङ भुइयामे एक टाङ इन्द्रासनपुरिमे ढैला तब लप्पसे नकबिलरी रानीक नौ लखा हार उठाके लैअन्ला । तब फेर सारा सहर हल्ला फैलगैल कि इन्द्रासनपुरि मनसे नकबिलरी रानीक नौ लखा हार फेन लान दारल, बरा वीर राजा हो ।

फेन नकबिलरी रानीक बाबा कहलिस

नाहि अभिन नै हुइ । मै जहाँ तक देखैम वहाँसम तल्वा खोडक परी कहिके नाप देहल ।

राजा कमखोडहे खोडे कहला-

एक घचिकमे फिट कै डारल । फेन सारा सहर हल्ला हो गैल । आब ते ऊ राजा नकबिलरी रानीहे लैजाइ भोज करी कहिके ।

नकबिलरी रानीक बाबा फेन कहलिस

यी तल्वामे जे मुतके भराइ सेकी ते मोर छाइसे भोज करी ।

तब गुलप्पन राजा कम पेसाबिहे मुते कहलाँ । एक घचिकमे तल्वा भरगैल । तल्वा छल्के लागल । कम पेसाबी गुलप्पन राजाहे कहल

राजा साहेब । आब अम्ने पेसाब नै अटाइठो । मोर पेसाब नै ओराइठो कहाँ मुटु ?

जाउ सारा सहरमे मुतदेउ । सारा राज्य उत्रा जैहिस । गुलप्पन राजा कहला ।

कम पेसाबि मुतके सारा राज्य उत्राई लागल । नकबिलरी रानीक बाबा हाँथ जोर बिन्ति करे लागल-

आब ना मुतो, बेन आब मोर छाइहे भोज कैलेउ ।

ओहोर राज्यमे हलचल मचगैल । सारा जनता मुतमे बुरे लग्ला । राजा आपन छाइहे पठाइक लग दान दच्छिना सोना चाँदि हाँथि, घोडा फौज फंकर रुपिया जुटाइल ओ पठाइल । गुलप्पन राजा कहलाँ

तोर सम्पतसे मोर कोइ मतलब नै हो । मही खाली तोर छाइसे किल मतलब बा । सब सम्पत ढार, मै नकबिलरी रानीहे किल लैजैम ।

तब नकबिलरी रानी सहित ६ जने वहाँसे चल्ला । चल्टे चलावट चल्टे चलावट कमखोड, कमडेख, बख्खर राज ओ कम पेसाबी आपन आपन घरे ओर लग्ला । सेवा सलाम लेके नकबिलरी रानी ओ गुलप्पन राजा भर सँपराजके घरओर सवारी हुइला ।

सवारी हुइटी जब उहे तल्वा पुग्ला । पुग्टिकिल गुलप्पन राजा ओह्रलक वर्गडके रुख्वाहे उहे ठाउँ पर गारडेला ओ घोडवाहे उहे रुख्वामे बाँढ डेहला । नकबिलरी रानी सहित गुलप्पन राजा तल्वामे कुड्ला । गुलप्पन राजा सपराजसे भेट कइलाँ ।

सपराज पुछ्ला कि मोर माँगन लन्लो कि नाइ ?

नकबिलरी रानीहे देखैटि कहलाँ

'लन्ले बटुँ सपराज जी ! यिहे हो नकबिलरी रानी ।' नकबिलरी रानीहे देखके सपराजहे महा फोही लग्लिन, भेट हुइला ओ गुलप्पन राजाहे सँपराज कहला-

मै नकबिलरी रानीक मुह देख रख्लु । मोर अत्रे काम रहे । आब मै मुवटुँ । जत्रा सिरी सम्पत तल्वामे बा, यी गुलप्पन राजा तोहार लागी । आब मैं बैकुन्ठपुरी बास पैम । अत्रा कहटी किल सँपराज विलोप हुगैल । सारा तल्वा सुखागैल । सँपराजके सारा सम्पत सोनक सहर जम्मा गुलप्पन राजक लगलिन ।

ओकरवाद गुलप्पन राजा ओ नकबिलरी रानी घोडवक पर घरेओर फिर्ति सवारी हुइला । घरे पुगला ते सारा आपन राज्यक मनैन्हे कोइ बेराम, कोइ लाङ्गर लुल, कोइ आँधर, बहिर कुँज देखला । ओइने राजा गैलक सोकमे डुबके ओइसिन हुइल रहित । सब राजक ठेन हहनैति बलजवरि हुटमुटैटि अइलाँ, राजासे भेट करे । गुलप्पन राजासे भेट हुइला ते फेन सारा जनता मजा हुगैला । फोहिक साँढ नै रैहगैलिन । राजा मजासे राजकाज चलाइ लग्लाँ ।

बट्कुहि अट्ने हो । बाट गैल बनमे, ढारो आपन मनमें ।

स्रोटः टेकप्रसाद सत्गौँवा, राप्ती गाउँपालिका, बड्का सिसहनिया, दाङदेउखुरी

हग्गु कहाँ ?

-डा. कृष्णराज सर्वहारी

सन्झ्या समय रहे । दुइठो चोर कौनो गाउँमे प्रवेस कैलाँ । नै चिन्हलक ठाउँ, केकर घर जैना हो ? कहिहे का नात लेके बलैना हो ? ओइनहे अप्ठ्यार पर्लिन । भुँख जुन मनके लागटिहिन । जैसिनपरी कैहिके एकठो घरेम पैठ्लाँ । भिट्टरसे एकठो १२-१४ बर्सक लवन्डा निकरल । ओइने मने-मने सोच्लाँ भैने कलेसे ठीक परि काहुन् ! 'भैने होइ ! भिट्टर के-के बा होइ ?' लवन्डा कहल, 'दाइ किल बा ।'

चोर कलाँ

जाउ ते बला देउ । चोर मने मने खुसी हुइलाँ ओ कलाँ

अरे गँठ गैल । जन्नि मनै किल बा । लवन्डा सरासर भिट्टर गैल ओ कहल, 'दाइ ! कहाँक जुन मामन्के आइल बटाँ, तुहि बलाइटटाँ ।' भिट्टरसे जन्नी मनै निकरल । दुनु चोर 'दिदी राम-राम' कहलाँ ।

राम-राम भैयवनके, जन्नी मनै कहल- मै ते भैयवनहे नै चिन्हे हस कैलु भ्रे ?

चोर (अन्खनैटि) ओहो ! दिदी फेन सही बिस्रैनहा बा (बाट बनैटि) । तोर भोजेम हम्रे फेन बरात खेले आइल रही कि ! तै डोलिक भिट्टर, वहाँ लैगैला ते फेन कोन्टिएमे मज्जासे देखबे नै करल हुइबे । अब्बे भाटु रटाँ ते फटसे चिन्ह लेटाँ । जनेवा कहल, 'चिन्हे हस ते लागल । अइसिन धेर बरस फेन होगैल, ओहे फेन नै चिन्ह जाइठ कि । कहाँ जाइटो ते भैवनके ?'

गाउँ बा हमार महा दूर, लागल महा भुख । ओहेक ओरसे दिदिहे दुःख देहे हस । इहे दुइठो बटैं चिरै नन्ले बटी । यक्रे टिना निन्हदे ओ जाँर गिज्ला दे । जनेवा ठिक बा भैयवनके कहठ । यकर बाबा अपन सस्रार गइल बटाँ । तौन अभिन नै आइल हुँइट । कहिया अइठाँ ? अट्ना कैहके ऊ भिट्टर पैठ जाइठ । चोर निस्चिन्त हुके बैठल रठाँ ।

छ्वावा रे ! मै पानी भरे जाइटुँ । टिना बैठा डेले बटुँ । अपन मामन्के नानल सिकार हेर्डिस् नै ते बिलरिया कुल खा दि, दाइ कलिस । 'हाँ हाँ दाइ' कहिके लवन्डा चुल्हि ठन बैठ गैल ।

मौका इहे हो कहिके लवन्डा चुल्हिपर बैठाइल एकठो बटैयक सिकार चप्का लेहल । चोर बहरिमसे हेर्टि रहिँट । एकठो चोरुवा कहल-

ओहरो होइ ! एकठो सिकार ते लवन्डा खा लेहल । जब दाइ पानी भरके अइठिस ते लवन्डा कहठ- 'दाइ रि दाइ ! बिलरिया एकठो सिकार खा देहल ।' ते दाइ कलिस-

'अरे कैसिक खाइल ?' 'अस्तके खाइल' कहिके लवन्डा दोसर बटैयक सिकार फेन खा देहल । बिना नै बटैले सारक लवन्डै दोसर चोरुवा फुस्फुसाइल । न न ।

'लेउ भैयनके मिझनी खाउ । तुहिनके भैने सिकार खवा मारल बिलरियासे । यिहे लर्चक ओर्चक साग खाउ,' जनेवा कहल । चोर कहलाँ-

'खाब ते दिदी, भुँख फेन मनके लागटा ।' भिटरे भिटरे भर झोक लागिन । बटैयक सिकार गवाइ परलक ओरसे । 'आज रात हो राखल भैयनके यिहे सुत जैहो,' जनेवा कहल । चोरनहे चहलिन का, 'ठिके बा दिदि' कहलाँ ।

बेरिओरि खाके चोर निडाइल भेख ढैके सुट्लाँ । रातके कोन्टि कोन्टा खोज्लाँ तौनो कौनो फेन सामान अइसिन हाथ नै पर्लिन जौन लैजाइ लाइक रहे । लवन्डक हाँठेम चाँदिक बाला रहिस् । लेकिन निकरना कैसिक हो । फेन ओस्ते सुत गैला ।

सकारे उठ्ला ते चोर कलाँ-

दिदी हम्रे जाइति भैनेन्हे एक घचिक बजार खेल्वाइ । बजार फेन लग्गेहे बा । मिठाइ उठाइ लेहवाके पठा देब । 'लैजाउ ते' जनेवा कहल । चोरनके आँख जुन लवन्डक बालापर परल रहिन् ।

लवन्डा खेल्टि ठनिक आगे आगे नेगे । चोर खुस्फुसाइट 'यी लवन्डक बाला बिना नै बेच्ले, ना होइ ?' दोसर चोरुवा कहल

'हाँ होइ, सारक गडाहा दुनु बटैया खा देहल ।' चोरन खुस्फुसाइट देख्के लवन्डा मने-मने सोचल दालमे जरुर करिया बा । यिनसे होसियार रहे परल । जब बजार आइठ ते चोर कहठाँ- भैने होइ ऊ बाला (ओकर हाँठे ओर देखैटी) बेच्बो ?

'नैबेचम् कि मामा' लवन्डा कहल ।

'बेच ढारो धेरे रुपिया आइ ।'

यिनसे बचे नैसेक्जाइ कुछ उपाय करे परल कैहके लवन्डा 'बेचम ते का' कहिके कहल । चोर कहलाँ-'जाउ तुँ बेचे, हम्रे यिहे निमक रुखवा तरे रहब ।' जब लवन्डा बाला बेचके पैसा लानि ते सब अछोर लेब कहिके बटवाइ लग्ला ।

लवन्डा एकठो सेठवक घर पुगठ ओ कहठ

'सेठजी, हम दो आदमी लाए हैं । कोइ खालि ठाउँ है तो रख्लो ।' सेठवा लवन्डाहे हेरठ ओ नै पट्यइना बात हस करठ, 'अरे आदमी कि तो हमे सख्ट जरुरट है । कलहि ३-४ नौकर नौकरी छोरकर चले गए, क्या तुम करोगे काम ?' लवन्डा कहठ, नही नही हम नहि करेंगे । वह वहाँ डिख रहे है ना ? निमके पेडके पास दो आदमी बैठे है । वहि है काम करने वाले । लवन्डा ओहेसे गोहराइठ, 'अरे ! मामा दुनु बेचु कि एक्के ठो ?'

चोर कठा, 'दुनु बेचो दुनु ।' ओहोर लवन्डा कहठ-

'डेखिए सेठजी, आप अप्ने हि कानोसे सुन लिए है । अब तो विस्वास हुआ ।' सेठवा कहठ, 'हो गया, हो गया ।' सेठवा लवन्डाहे पैसा बुझ्रा देहठ ते लवन्डा सँकिरकी गल्ली ओर खुसिट जाइठ ।

सेठवक नोकर चोरन ठेन जाके कहठाँ-

'एकठो लवन्डा तुहिन बेच रख्लस । आबसे तुहरे हमार नन्हे नोकर होउ, चलो ।' दुनु जाने चोर फँस जैठाँ ओ पस्टाके रैह जैठाँ । कब्बु भेट हुइलेसे बदला लेना बिचार करठाँ । लवन्डा चोरन बेचके रलक पैसा लेके घरे नैजैना विचार करठ । २-४ बरस एहोर ओहोर टहरना, मिल गैलेसे नोकरी कुल कर्ना मन हो जैठिस ।

बिना उदेसयक एकदिन लवन्डा नेंगटी रहठ । नेगट-नेगट बनुवा अइठिस । बनुवामे लवन्डक भलुवासे भेट हो जैठिस । भलुवा लवन्डाहे चिमोठे लागठ । ओकर गोझुमे रलक पैसा छिटिक जैठिस् । उहे डगर एकठो पुलिसवा आइटेहे । पुलिसवा ओट्ठे पुगल ते लवन्डा कहल-

होइ गोचा ? का करटो होइ ? ऊ पैसा बिटोर देउ । नै हेर्ठो भलुवाहे नचैबो ते पैसा हग्गठ । ऊ पुलिसवा झटपट पैसा बिटोर देहठ । ओ अपने पैसा पाइक मारे भलुवासे लर परठ । ओहोर लवन्डा पैसा लेके टाप कस देहठ । भलुवा पैसा हग्गि का हग्गि । पुलिसवा बरा मुस्किलसे आपन ज्यान बचाके भागठ ओ मने-मने लवन्डासे बदला लेना बिचार ओकर मनमे जर गार लेठिस ।

जैटे-जाइट जैटे-जाइट लवन्डा मिच्छा जाइठ । ओहरे गाउँ ओर फलफुल किनके खाइठ । दिन बुर गैलक ओरसे सुट्ना ठाउँ पट्टा लगाइ लागठ । ओकर संगसंगे एकठो कुकरा फेन आइल रठिस् । दुरसे एकठो बगिया देखठ । रात ओहैं बिटैना बिचार कैके चल परठ । कुकराहे सिरन्नहि ओर कैके पुस-माघक जार तौन नंगटे ढोंढा सुट परल । बगियक एक कोनवामें गोरु भैंस सटुइया जागा फेन बास बैठल रहिट । ओट्ना जारेमेफे लवन्डाहे सब झुलुवा निकारके बिन ओढनिक सुतल देख्के

ओइने छक्क परगैला । जबकि ओइने गुडरिक भिट्टर चपकल रहिट । तौन जार पछेरले रहिन् । एकठो जगुवा पुछ बैठलस 'ओ, डोसुवा टुहिन जार नै लागट ?' लवन्डा कहठ- कहाँ लागि, हमार सब जार तो यिहे कुकरा लै लेहठ ।

'अच्छा ऐसा बाट है । कुकरा तो बहुट बढ़िया है,' दोसर जगुवा कहठ । सब जागा एक घचिक गनगन-गनगन कैठाँ । ओ सल्लाह करठाँ यी कुकराहे ते खरिडे परल । यी रही ते ना हम्रहिन गुडरि गुन्टा बोक्ना झन्झट रहि ना कुछ । सक्हुनके जार उहे कुकरा लैली । तब जगुवक अगुवा कहठ, 'ओ डोसुवा ! यि कुकरा हम लोगन का डेबो ?'

लवन्डा कहठ- 'का डे जाइ । अटना बढ़िया कुकरा ।'

'अरे दुइ सयक डै डेउ ।'

तब्बो लवन्डा मन नै करठ । कट्नामे देहबो ते जागा कठाँ । 'अरे पाँच सयक लैजाउ । हमार घाटा न टोहार घाटा ।'

जागा ऊ कुकराहे किन लेठाँ । ओ आपन सिरहन्नि खुटी गारके बाँढ लेठाँ । एकठो जगुवा लग्लगैटी कहठ-

'खै हो, डोसुवा जार तो नै रुकठै ।' लवन्डा कहठ- अरे ! बँढ्टि किल कहाँ रोके सेकी । बिचारा मालिक लावा भेटाइल, एक घचिक ते चिन्हटी लगहिस् । कुछ घचिक रहिके रोकबे करी ।

तब जागा कठाँ- ठिक कहठौ डोसुवा । जागा जारक मारे ठुरठुरैठाँ ओ ओहोर लवन्डा एक घचिक रहिके टाप कस देहठ । रात कौनो गाउँमे बिटाइठ । जब जागनके जार आधा रात फेन नै भगठिन ते सोच्ठा, पक्के लवन्डा हम्रहिन ठगके भाग देहल । बरे ठगुवन ते हम्रहिन लागठ । भेटाब ते बिना नै बदला लेले, ओइने गल्मलइठाँ ।

एक दिनके बात हो । लवन्डा एकठो लडियक ढिकुवा पर बैठके भँवरी खाइटेहे । लडियामे एकठो ढोबिया लुगरा ढोइटहे । सँगे आपन छोट्नक छावाहे फेन नन्ले रहे । ढोबियक छावा कहलिस, 'बाबा हम भि भँवरी खाव ।' तब ढोबिया कहल, 'ओ डोसुवा, हमार लड्कवाहे फेन भँवरिया खाइक डै डेउ हो ।' तब ऊ लवन्डा कहल- अरे बनुवामे तमान भँवरिवा फरा है, हमसे का माँगठौ ।

ढोबियक छावा जिद्दि करे लग्लिस ते छावाहे लेके लग्गक बनवामे भँवरी खोजे गैल । तब लवन्डा मौका यिहे हो कहिके मजा-मजा लुगरा ढोबियक ढोइक नन्लक घालल ओ ओकरे घोरवा पर सवार होके टाप कस डेहल । जब बनुवा ओरसे

ढोबिया आइठ ते देखठ घोरुवा नै हो । भँवरि ते नै मिलल्, नै मिलल्, घोरुवा, मजा मजा लुग्रा फेन गायब । ऊ भेटैम ते बदला लेम कहिके चल देहठ ।

कुछ दिन होके लवन्डा घोरुवक पर सवार होके सहर घुमें जाइटेहे । डगरेमे एकठो बुह्रिया आपन जवान नतिन्याहे लेके सहरमे सौदा करे जाइटेहे । तब लवन्डा घोरुवक चाल ढिरे कैके पुछठ- 'अरि बुदि, ऐसिन सुग्घर जोन्हिया अस नतिन्याहे ऐसिन घामें-घामें नेगाके कहाँ लैजाइटे ?' तब बुह्रिया खेलवारे बुढी कहठ- अरे ! टुहि ओट्ना सोग लागटा ते चौह्राले आपन घोरुवामे ।

लवन्डा एक हाँठ नफाइठ, बठिन्याहे घोरुवामे चौह्राके सरपट्टा ठोंक डेहठ । बुह्रिया पाछे-पाछे डौरठ, कहाँ लग डौरी बुह्राइल मनै । पस्टाके रहि जाइठ । मने-मने खुसी फेन लग्लिस । यी ओरसे कि आखिर एकदिन भोज कर्ने रहे । लेकिन दु:ख फेन लग्ठिस, कैसिन लवन्डा हो कैसिन, पालठ कि नै ? लेकिन एक न एक दिन पट्टा लगाके नै छोरम् कैहके बुह्रिया ओट्ठेहेसे घरे घुम जाइठ ।

समय बिट्टी जाइठ । लवन्डा आब जवान हो रख्ले रहे । २०-२२ बरसके लक्का जवान । बुह्रियक नतिन्याहे ऊ आपन जनेवा बना रख्ले रहे । घरक मनै भोज नै कैठिस् । ओहेक ओरसे ऊ फेन दुलहा पाके अट्ना खुसी रहे कि मानो उही हिरा मिलल् बटिस । ऊ आपन ठरुवक सेवामे अटना जुटल रहे कि लवन्डा आब ठग्ना ओग्ना बिचार छोरके मज्जा जागिरके तलासमे रहे । कब्बु घुमे जाए ते भेस बडलके जाए ।

एकदिन सहरमे बरुवार मेला लागल रहे । सब जाने आपन कामसे छुट्टी माँगके मेला हेरे आइल रहिट । सहर मनैन्ले गजागज रहे । लवन्डा फेन आपन जनेवाहे लेके मेला हेरे चलल् । मेलामे एकठन अइसिन हुइल कि दुनु चोर, पुलिसवा, जागा, ढोबिया, बुह्रिया ऊ लवन्डासे एकफाले भेट हो गैलाँ । लवन्डाहे अइसिन लग्लिस कि मोर काल आ गैल । चोर कला-

भैने होइ, खोब बेचके भागल रहो ना । आब बेच्ना पाला हमार बा ।

पुलिसवा कहल-

भालुक नाच सम्झना बा गोचाली, आज नचैम ।

ओहोर जागा बोल्लाँ-

ओ डोसुवा टोहार कुकरा तो मर गवा । आब उसिका गोस खिलाएंगे, और मारेंगे ।

ढोबिया कहल-

ऐ लवन्डे, टुम्हे इटना मार मारुगां कि भँवरि हि भँवरी डेखेगा ।

बुह्रिया कहल-
नाती दमाड, टु ते बरे चलाख निकरलो । नतिन्या लेके भाग गैलो । आज ऊ चलाखी निकारम ।
सब जाने लवन्डाहे मारे छुट पर्ला । मनैन्के भिर ओहोर अइलिन । ओइने बाट बुझला ते कहलाँ, 'टुहरे अइसिन जिन करो । मरओर जाइ ते दोसर बवाल होजाइ । यिही राजक ठन लैजाउ । यी डन्ड फेन भेटाइ । टुहरे ठगुवा पैलक हर्जाना फेन भेटैबो । सब जाने उहिहे दरबारमे लैगैला ।
जब राजक दवारि पर लवन्डाहे पुगैठाँ ते रात हो राखठ । सब जाने आपन ठगुवा पैलक, फँसुवा पैलक बात सुनैठाँ । रजवा कहठ-
आज रात हो गैल । सब मन्त्री लोग फेन आपन-आपन घरे गैरख्लाँ, फैसला काल्ह हुइ ।
सब मनैनके पर्ठिन सुट्ना फसाड । अन्जान सहर कहाँ जैना हो । यी बात ओइने राजकठन बिन्ति कैठाँ । रजुवा कहठ- इहे एकठो कोन्टि खली बा, इहें सबजाने सुट जाउ । लेकिन अट्ना बात याद राख्यो, कोइ हग्ना भर ना हग्यौ ।
'हवस सरकार ।' सब जाने कहठाँ ।
ठकाइक मारे सब जाने निदा जैठाँ । लेकिन लवन्डक निंद कोसौं दुर भागल रठिस । एक कोनवामे बुह्रिया ओ ओकर नतिन्या सुतल रठाँ । बुह्रिया फेन सोंटा परल रहठ लेकिन ओकर नतिन्यक निंद ओहिसे विदा लेले रठिस ।
रातके लवन्डा चुप्पेसे उठठ ओ एकठो टेलियक घर पुगठ ओ कहठ
'ओ टेली दाइ ! मही एक दुई किलो सम खरी देउ ते । पैसा ते अब्बे नै हो बिहान दै डेम । मै राजक कोठिम काम करठुँ ।' टेलिया कहठ, 'अरे ! हम टुमको पहचानते हि नही है ।' तब लवन्डा कहठ, 'अरे ! लावा लावा आइल बटुँ, का चिन्हबे टेलिया ।'
ठिक है जब राजाके यहाँ काम करटे हो टो देना हि पडेगा । तब टेलिया लवन्डाहे खरी देहठ ओ पुछठ- 'हाँ भैया ! तोहर नाम का है ?' लवन्डा कहठ- 'हग्गु कहाँ ।' टेलिया ऊ नाउँ सुनठ ते कहठ 'बडा अजिब नाम है, हग्गु कहाँ ।'
लवन्डा सरासर सुट्ना कोठामे आइठ, खरी भिजाइठ । जब खरि फुलठ ते सक्हुनके गाँरिटिर ढिरे-ढिरे ढै देहठ । अपने भर बुह्रियक नटिन्याहे लेके राती टाप कस देहठ ।

रातके सबसे पहिले बुढ्िया जागठ । गाँरिटिर गिलगिल हस लग्ठिस । आपन नतिन्याहे कुल ख्याल नै करठ । ओहर सुतल मनैन गोहराइ लागठ, 'अरे ! भैया ! मोरते गुहे आ गैल रेउ । आब ते राजा साहेब बाँकि नै रखहि भागे परल ।'

ओहोर एकठो चोरुवा जागठ । ऊ फेन गाँरितिर गिल्गिल भेटाइठ । आपन संघरियनहे जगैटी कहठ, होइ गोचा मोरते गुहे आगैल । दोसर चोरवा कहठ, ओहो ! मोरो गुह आगैल । डरक झारे ते सुंघ्ना कुल ख्याल नै कैठाँ । सजाय पाइक डरे सबजाने राती भाग डेठाँ । 'कहाँ न्यायँ, कहाँ निसाफ ।'

सकारे रजुवा मन्त्रीहे कहठ, 'काल्हिक झगडियनहे लै आनो । जबकी सब जाने गै रख्ठाँ । मन्त्री कहठ, सरकार वहाँ ते कोइ नै हो । कहाँ गैल हुइही ते कहिके रजुवा सोच्ति रहठ कि दवारी पर टेलिया आ पुगठ । राजासे पुछठ, 'राजा साहेब, हग्गु कहाँ ?'

रजुवा कहठ, 'अरे टेलिया ! तै पागल ते नै हुरख्ले ? तमान ओर हग्ना ठाउँ बा । नै भेटैले हुइस ? यहाँ हग्ना ठाउँ पुछे आइल बटे ?'

टेलिया फेन डोहोर्‍याइठ, 'नाही नाही राजा साहेब हग्गु कहाँ ?'

रजुवा झोक्काके कहठ, 'पागल, हराम बेइमान, गधा । पाले लैजा यिहिहे झयालखानामे दार दे । बरा राजासे खेलवार करुइया । ऐसिन मनै आज पहिलिबार देख्टुँ । सक्करहि सक्करही दिमाग खराब कै डेहल ।' पाले टेलियाहे झयालखानामे ते नै दारठ लेकिन धक्का मारके जरुर भगाइठ ।

ओहोर टेलिया सोचठ, 'आझ राजक दिमाग खराब बटिन काँहुन । नै ते आपन कोठिमे काम करुइया हग्गु कहाँहे ते चिन्हक चाही । अरे एक दुई किलो खरी जाइ ते का हुइ ? किहु ठगके मै ३-४ किलो बना लेम ।' अट्ना सोच्टि आपन पिठ सुहरैटी घरेओर चल डेहठ ।

ओहोर लवन्डा बुढ्ियक नतिन्याहे लेके घरे पुगठ । ओकर दाइ, बाबा बर्सोसे हेराइल आपन छावाहे भेटाके मन्के फोहैठाँ । उपरसे झक-झक बरलहस पटुहिया भेटाके ओइनके भुँइयम गोरा नै रठिन । ओइने सपरिवार हाँस खेलके दिन बिटैठा ।

-अट्ने हो बाट, अट्ने हो चिट, हँसिया लेबो कि बेट ? तोहार ओ मोर एकदम होए भेंट ।

स्रोत: निबुलाल चौधरी, लमही नपा-४, छुटकी घुम्ना, दाङदेउखुरी

फाडिल प्रयास

-डा. कृष्णराज सर्वहारी

एकठो रहे खेंउरचिया । एकदिनके बात हो, ऊ महा भुंखाइल रहे । ऊ चह्रट चह्रट एक दाना चाना भेटाइल । चाना लेके ऊ कठवा पर गैल । कठवा रहे खोख्राहा । चाना फोरके दुइ डिउलि कराइ लागल ते गिरके खोख्रेम पैंठ गैलिस । खाइ नै पाके ऊ खेउँरचियाहे महा कसिन जुन लग्लिस । तब्बो पर ऊ चानाहे कसिक निकारे सेक्जाइ कना उपाय सोचे लागल । सोचत सोचत ऊ उपाय निकारल । सोच्लक उपाय अनुसार ऊ गैल बढैयक ठन । ओकरठन जाके 'बह्रैया रे मोर कठवा चिर डे, मोर चाना हेरा गैल, भुंख लागटा, मै चह्रुँ का !' कहल । तब बह्रैया कहल, 'मै नै चिरम ।'

यी पहिला उपाय खेंउरचियक काम नै लग्लिस । तब ऊ दुस्रा उपाय सोंचल । ओ गैल रज्वक ठन । तब ओकरठन जाके कहल, राजा साहेब बह्रैया छोरो । बह्रैया नै कठवा चिरल, कठ्वामे चाना हेरा गैल, भुंख लागटा, मै चह्रुँ का ?

ते रज्वा कलिस, 'मैं का करे बह्रैयाहे छोरुँ ।' तब ऊ रानीक ठन गैल ओ कहल- रानी जि रजवा छोरो, रजवा नै बह्रैया छोरल, बह्रैया नै कठवा चिरल, कठ्वामे चाना हेरा गैल । भुँख लागटा, मै चह्रुँ का ? रानी कलि- मैं का करे रजवाहे छोरुँ ?

खेंउरचियक चाना मिल्ना समस्याके समाधान नै हुइलिस । जौन हुइलेसे फेन ऊ दोसर जुक्टि सोचल ओ गैल सपवक ठन । सँपवक ठन जाके कहल- संपवा रे रानीहे डस । रानी नै रजवा छोरल ।

सँपवा कहठ- मै का करे रानीहे डसुँ ?

अभिन ओकर जुक्टि काम नै लग्लिस, तब ऊ गैल लाठिक ठन । लाठिक ठन जाके कहल- "लाठि लाठि रे सँपवाहे मार । सँपवा रानीहे नै डसल, रानी नै....मै चह्रुँ का ?

लाठि कहल, मै का करे सँपवा मारुँ ?

लाठी फेन ओकर कहल बात नै मान देलिस । तबो पर ऊ हिम्मत नै हारके आपन काम सफल पर्ना प्रयासमे जुटल । उहेअनुसार अपकी बार ऊ आगिक ठन

गैल ओ जाके कहल- आगी आगी रे लाठी जरा। लाठी नै संपवा मारल। संपवा नै...... मैं चह्रुँ का।

आगी कहल- मै का करे लाठी जराउँ ?

तब ऊ निरास हुइटी पानीक ठन जाके कहल- पानी पानी रे आगी बुटा, आगी नै लाठी जराइल। लाठी नै सँपवा मारल। सँपवा नै रानी डसल। रानी नै रजवा छोरल, रजवा नै बह्रैया छोरल, बह्रैया नै कठवा चिरल। कठवामे चाना हेरा गैल, भुँख लागटा मै चह्रुँ का ?

अन्तमे पानी खेंउरचियक भिट्री वेडना बुझ्र डेलिस। ओकर कहलक काम अर्थात कैलक विन्ति ओ आग्रहहे मानके पानी कलिस-

कहाँ बा आगी बुटाउँ। अत्रा कहट सुन्टि किल आगी डरा उठल। कहे लागल "हम्मै बुटाउ उटाउ ना कोइ, हम टो लाठी जरा लेब।

आगीक बात सुनके लाठी हे फेन डर लग्लिस ओ कहल- हम्मै जराउ ओराउ ना कोइ हम टो सँपवा मारब लोई।

लाठीक बात सुनके सँपवा कहल- हम्मै मारो ओरो ना कोइ, हमटो रानी डासब लोइ।

तब रानी कहल- हम्मै डासो ओसो ना कोइ, हम तो रजवा छोडब लोइ।

तब रानीहे छोडक डरे रजवा कहठ- हम्मै छोरो ओरो ना कोइ, हम टो बह्रैया छोडब लोइ।

रजवक बात सुनल ते बह्रैया फेन डराके हम्मै छोडो ओरो ना कोइ, हम टो कठ्वा चिरब लोइ कहठ। कुह्रार उठाके खेंउरचियक चाना अँटकल कठवा चिर डेहठ।

तब कठवामेसे निकरलक उहे चाना खाके ऊ खेंउरचिया चिरैयाँ आपन जिउहे सन्टुस्ट करा लेहठ। अन्तमे ओकर कैयन ठाउँमे डौरढुपके वावजुद फेन जाके उहे बह्रैयासे काम हुइलिस। जबकि ओटना डौरढुपमे लग्ना समय ऊ आउर धेर चाना खोजे सेकट।

चाना हजम, खिस्सा खट्टम।

स्रोटः मुक्ति नारायन चौधरी, राप्ती गाउँपालिका, बगरापुर, दाङ देउखुरी

दंगीसरन रज्वा

–डा. कृष्णराज सर्वहारी

द्वापर युगके बात हो। दाङ जिल्लाके सुकौरा कना ठाउँम दंगिसरन थारु नाउँके एक रज्वा रलह। हुँकाहार बहुट वैभओरसे फुलरिया, पर्खाल, कुवा आदी फेन दरबारके आसपासमे रलहन। ऊ रज्वक राज्यके सिमाना आपन जनजातिके मनै बैठलक उपत्यका रलहन, ऊ समयम दाङ उपत्यका बहुट घना जङ्गलले भरिभराउ रह। बीचबीच मन गाउँ ओ और सक्कु ठाउँमन जंगलले घ्यारल ओरसे जंगलम बहुट मेरिक जनावर ओ जिवजन्तु मिलट।

यिह क्रममे एकदिन दंगिसरन आपन फौज फक्करन लेक सिकार ख्याल हालके भार गन्जरी गाउँक आसपासके खोल्लोम् गैल। जब रज्वा हुँकाहार फौजफक्कर सिकारके खोजिम लग्ल, ओह ब्यालाम एकठो बहुट सुन्दर घोरी फ्याला परल। ऊ सुन्दर घोरी स्वर्गके अप्सरा उर्वसी रलही।

एक दिनके बात हो। देवराज इन्द्र खानपिन कैख सेख्के नाचगान हेर्ख मनोरन्जन कर लग्ल। ओह दिन उर्वसी अप्सरा आपन नाचके सजिसजारक सामान छुटाइ टलही। सामान गरगहना जिउमसे छुटैना काम ओरागैल रह। उहे समयम एकठो ऋषि महर्षि देवराज इन्द्रजीके पहुनक रूपमे स्वर्गम आ पुग्ल। इन्द्रजी ऋषि महर्षिह बहुट मजा मान सम्मानसे भोजन ज्युनार करैल। भोजन ज्युनार कैख सेखके मनोरन्जनक लग नाच फेन देखाइ परल। नच्ना पाला वह दिनके उर्वसीक अप्सराहे नच्ना अनुरोध कर लग्ल।

उर्वसी सजिसजाउक सामान गरगहना छुट स्याकल ओर्से नै नच्ना बटोइली। तब फेन इन्द्रजिके आग्रहले हुकहिन नचहि परलिन। रिसले उर्वसी अप्सरा घ्याँचम घल्ना गहना ग्वारम घल्लि। ग्वारम बहन्ना घुंग्ना पुट्ठम वहन्लि। पुट्ठम बहन्ना सजिसजाउक सामान घ्याँचम बहन्लि। ओ स्वर बेस्वरसे टालम बेटाल नाचके ऋषि महर्षिह देखैली।

असिक स्वर बेस्वरसे तालम बेताल नाच देखाइल ओर्से ऋषि खुब रिसैल ओ उर्वसी अप्सराहे सराप देल- हे उर्वसी आज महिह अभद्र नाच देखाके म्वार अपमान कर्लो। म्वार इज्जटसे तुँ खेलवाड कर्लो। ओह ओर्से मै आप तुहिन सराप देहटुं कि मत्स्यलोकमे जाख दिनभर सुन्दर घोरिक जरम पाके रबो। रातके फेन सुन्दर अप्सरा बन्बो। यी म्वार सरापसे तब टुँ छुटकारा पैबो, जब मत्स्य लोकम बहुट बरा राजा महाराजा टुहार कारनसे लडाइ झगडा करहि। तब टुँ बल्ले फेन अप्सराके पुराने रूप लेख स्वर्गम अइबो।

ऋषिक सराप पाके मत्स्यलोकम सुन्दर घोरिक रूप लेहल उर्वसी जो राजा दंगीसरनके सिकार फ्याला परल रही।

दोसर रोज राजा दंगिसरन आपन फौज फक्करसे सुन्दर घोरिहे घ्यार लग्ल। भल्भाग रज्वक ठाउँसे घोरी भाग सफल हुइल। ऊ घोरीक पाछ डौरट डौरट डख्खिन ओरिक पर्वटवा काटके ओल्हाइ लग्ल। घोरीह, फौज, कुकुर रगेटट रगेटट रात होगिल। ऊ सुन्दर घोरी रातमे त सुन्दर अप्सरा बन गैल। अप्सरा बनल बेर केल पक्र सेक्ल। घोरिहे पक्र जाइबेर कुकुर फेन गैलओर्से पठराम कुकुरके पौला परल ओरसे आजकल फेन ऊ डगरिक चली चलाउ नाउँ कुकुर गौंरक डगर कना बाट। पाछ अप्सराह पकरके राजा दंगिसरन एकठो बहुट सुन्दर क्वाठम आपन रानीक रूपमे ढरे लग्ल। ऊ अप्सरा दिनम सुन्दर घोरीक रूप फेरट ओ रातम अप्सरा बनट।

यी बात देस विदेससम फैलल्। विसवके राजा महाराजा हुक्र फेन थाहा पैल। भारतके द्वारिकामे बैठना श्रीकृस्नजी फेन यी बात थाहा पैल। बहुट मनै हुकहिन हौसैलिन कि हे कृस्नजी, अपने तीन लोकके राजा हुइति। फेन दाङके दंगिसरनके बराबर बहुट बहुमुल्य रत्न अप्नकठे नै हो। दंगीसरनके दरबारम असिन सुन्दर घोरी बा कि वाकर टुलनाम अप्नकठे कुच्छु नै हो। यी मेरके बात कृस्नजी सुन्ख दंगिसरनकठे सुन्दर घोरी माङ्ग अइल। दंगीसरन कल कि इच्छा बा कलसे म्वार राजपाट सब कुछ लैजाओ। मने मै यी घोरी नै देहम। यी मेरके बात दंगिसरन करल। कृस्नजी लरके विजयी होके अछिन्क घोरी लैजैना विचारम गैल।

दुनु राजनके लडाइके तयारी हुइल। लडाइ रनभुमी सुर्खेत ओ दाङ्गके सिमाना कालिमाटीठे हुइल। लडाइ सुरु हइल, घमासानसे युद्ध चलल। वह समयम ऋषिक सरापअनुसार उर्वसी अप्सरा मोक्ष प्राप्त कैख स्वर्गम उर्ख गैगैली। यिह हल्ला युद्ध हुइना ठाउँम गैल। जौन चिजके लाग लडाइ हुइटह, ओह चिज जो अलोप हुइल ओरसे दुनु पक्ष ओरसे लडाइ ठम्ह गैल। पाछ दंगीसरन आपन दरबारम अइल।

सुन्दर घोरी नै देख्ल ट हुकहिन बहुट दुःख ओ पिर लग्लिन। जब फेन ओह अप्सराके सम्झनाले सटाइ लग्लिन। आपन चिन्ता हटाइक लाग ओ जुगजुग समफे अप्सराके सम्झना हमार जनजातिम कायम रह कैख आपन राज्यभरके मनैन माटिक कुछ घोरी पार्ख आपन दिउँतक रूपम पूजा करहो कना सल्लाह देल। ओहअनुसार जनतन जो पुजा सुरु कर्ल। आज फेन हम्र थारु घोरवा पुज्ना काम कर्टि बाती।

स्रोटः हिमलाल चौधरी, तुलसीपुर उपमहानगरपालिका-१५, गब्डहवा, दाङ